तिब्बे नब्वी सल्ल॰
(इलाज नब्वी)
और
जदीद साइंस
(आधुनिक विज्ञान)
डा॰ ख़ालिद ग़ज़्नवी
Maktabe Ashraf

तिब्बे नब्वी
सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
और
जदीद साइंस

डा० ख़ालिद ग़ज़्नवी

ख़ान पब्लिशर्ज़
गली गढ़य्या, कूचा चैलान, नई दिल्ली-2

तिब्बे नब्वी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और जदीद साइंस

लेखकः डा० ख़ालिद ग़ज़्नवी

प्रथम संस्करणः 2006

पृष्ठः 512

प्रकाशकः

ख़ान पब्लिशर्ज़

गली गढ़य्या, कूचा चैलान, नई दिल्ली-2

KHAN PUBLISHERS

Gali Garhaiya, Kucha Chellan,
New Delhi-110002

Tibb-e-Nabawi *Sallallahu Alaihi Wasallam* Aur Jadeed Science

Author: **Dr. Khalid Ghaznavi**

1st Edition: **2006**

Price: **Rs. 130/-**

विषय सूची

पेशे लफ़्ज़

तिब्बे नबवी सल्ल० दुनियाए इस्लाम का एक मुक़द्दस मौज़ूए फ़िक्रो मुताला है। अहले इस्लाम ने हर दौर में तिब्बे नबवी सल्ल० से इस्तिफ़ादा किया है। इस हक़ीक़त से इनकार मुमकिन नहीं कि मुख़्तलिफ़ अदवार इस्लामी साइंस में मैदान हाए तिब्ब व साइंस में जो पेश क़दमियां हुई हैं और मुफ़क्किरीन और माहेरीन साईंस ने जो इक़दामात किए है वह लाज़मन तालीमाते क़ुरआन से मुतास्सिर और उसके आईनादार रहे हैं। नबातात के मैदान में मुसलमान उलमाए तिब्ब ने मुहीरुलअक़ूल इनकशाफ़ात और इक्तिशाफ़ात किए हैं और इनका सबूत वह सब कुतुबे नबातात हैं कि जो दस्तबर्द ज़माना से तो बच रही हैं और ज़ेरे मुताला आ चुकी है। जबकि हनूज़ लातादाद कुतुबे नबातात फ़क़त कुतुब ख़ानों की ज़ीनत बनी हुई हैं। या ग़फ़लतों की बिना पर ख़ुराके दीमक उनका मुक़द्दर बना है। इलाज इमराज़ के लिए नबातात के इस्तेमाल को ज़बरदस्त अहमियत हासिल रही है। इस अहमियत की वजह यक़ीनन वह निज़ामे क़ुदरतो फ़िक्र है कि जो इस सरज़मीन पर हरसू कारफ़र्मा है। कौन है कि जो इस हक़ीक़त से इनकार करे कि जिस ख़ित्तए ज़मीन पर जो हालात हुए हैं और वहां जो–जो इमराज़ वजूद ज़हूर में आते हैं क़ुदरत फ़य्याज़ और फ़ितरत नब्बाज़ से उनके इलाज के लिए इस ख़ित्तए अर्ज़ में इस मुनासिबत से नबातात को वजूद बख़्शा है। क़ुदरत का यह निज़ाम कल भी बरसरे अमल था और आज भी है।

मैदाने तिब के अकाबिर रिजाल हक़ीक़त आशना थे और रमूज़ क़ुदरत के शनास थे। शिफ़ा बख़्शी के बाब में नबातात ही उनकी तवज्जा का अहम मरकज रहे और जब वह तालीमाते इस्लामी से पूरी सरशारी के बाद और ...बादियात तिब्ब से शनासाई के बाद ख़िदमते ख़ल्क़ में मसरूफ़ हुए तो उन्होंने फ़िक्रो इलाज बालनबातात को ऐसे ख़तूत पर मुरत्तिबो इस्तिवार किया कि जो अहमियत के एतिबार से आज भी वाजिबुत्तसलीम हैं और असरी साइंस भी अकाबिर तिब के इन इनकशाफ़ात और इक्तिशाफ़ात की नफ़ी नहीं करती।

अफ़सोस कि तैरगी ख़ुर्द ने और नीरंगीए असरे हाज़िर ने आज की दुनियाए इस्लाम के ज़माए तिब्ब को मरकज़ गुरेज़ बना दिया और वह ख़ुद भी आवाज़े मग़रिब से ऐसे मरऊब हुए कि अपने विरसाहाए इल्मी नाक़िद बन गए। फिर यह तनक़ीद तनक़ीस में बदल गई। बई हमा आज भी पुख़्ता ईमान माहिरीन तिब और रासिख़ुल अक़ीदा मुस्लिम उलमाए साइंस ने तिब्ब नब्वी पर अपनी तोज़ीहात को ब–हमः जहत मरकूज़ रखा और इलाज बिन्नबातात का सिलसिला ग़ैर मुनक़ता रहा हत्ता कि अब मग़रिब को अपनी बेख़बरी का अहसास हुआ है और

इन्सान को महज़ मुसन्निफ़ए गोश्त क़रार देने वाले मग़रिबीन इस नतीजे पर पहुंच गए है कि तिब्ब को आग़ोशे फ़ितरत से बाहर नहीं जाना चाहिए और इनसान को रूहो मादा का एक अशरफ़ वजूद समझ कर उसके साथ मुआमला करना चाहिए। जिस्म इनसानी की फ़हम ने उनको बिलआख़िर इस नतीजे पर पहुंचा दिया है कि शाफ़ी मुतलक़ ज़ात बारी ताला है। मआलिज की हैसियत सिर्फ़ यह है कि वह अपने महदूद इल्मो अक़्ल की बिना पर जिस्म इनसानी को बराए शिफ़ा जिन दवाओं से रोशनास कराता है बसा औक़ात ख़ुद उसे इल्म नहीं होता कि उनकी शिफ़ा बख़्शी का राज़ क्या है इसलिए एक हक़ीक़त पसंद साइंसदां यह समझता है कि शिफ़ा ही उसका मक़ाम नहीं है।

तिब्बे नब्वी सल्ल0 पर मश्रिक़–व–मग़रिब दोनों जगह माहिरीन ने इल्मी पेशरफ़्त की है और असरी साइंस को भी रहनुमा बनाया है। मुतअद्दिद किताबें आम वजूद में आई हैं और बेदारी मुस्लिम के साथ–साथ इस मैदान में साइंसी पेश रफ़्तें हो रही हैं। जामिया कराची में मोहतम जनाब डा0 अताउर्रहमान साहब कलोंजी पर काम कर रहे हैं। जिसका तिब्बे नब्वी सल्ल0 से बड़ा गहरा ताल्लुक़ है। उनकी तहक़ीक़ यह है कि कलोंजी में जो अलक़लाइड मिलें हैं वह अपनी उफ़ादियत में लासानी हैं।

डा0 ख़ालिद ग़ज़नवी तिब्बे असरी के हामिल हैं और इस हैसियत से वह पाकिस्तान में पहले मआलिज हैं कि जिन्होंने बेहम ख़ुलूस व फ़हमी तिब्ब नबवी को अपना रहनुमा बनाया और अपने मआलजात को तिब्ब नबवी के दाएरे से बाहर नहीं जाने दिया अब तक वो अट्ठाइस नबातात तिब्बे सल्ल॰ अमली और इलमी एतबार से काम कर चुके हैं औन उन नबाबात के अफ़आल व ख़वास पर सेर मालूमात हासिल कर चुके हैं। उन्होंने इस मैदान तहक़ीक़ात में असरी कीमिया को भी रहनुमा बनाया है और उन नबातात पर असरी तहक़क़ीात का मामला करके नया रास्ता बनाया है।

डा॰ ख़ालिद ग़ज़नवी ने एक अच्छे इन्सान और एक दर्दमंद मआलिज की हैसियत से तहक़ीक़ो तदक़ीक़ के मैदान में अपने मुशाहिदातो तजुर्बात साइंसी और तिब्बी मुसल्लिमात के साथ पेश करने का शर्फ़ हासिल किया है। उनकी यह तहक़ीक़ कई एतिबारात से लाइक़ तारीफ़ो तब्रीक और सज़ावार तहसीन है। लेकिन इसकी एक नुमायां अहमियत यह है कि मुआलिजीन के लिए इससे रहनुमा उसूल मिलते हैं अब अस्पताल में इन नबातात तिब्बे नब्वी से मुआलिजात में इस्तिफ़ादा मुमकिन हो गया है और साइंस दानों को अब वह मटेरियल मिल गया कि वह आगे बढ़ कर फ़ारमाकोलोजी के मैदान में कल के लिए इक़दामात मज़ीद करें।

हकीम मो0 सईद
20 मई, 1987

दीबाचा

सेहतमंद ज़िंदगी गुज़ारने की सबसे आसान तरकीब इस्लाम को दिल से क़बूल कर लेना है। क्योंकि यह एक मुकम्मल ज़ाब्ताए हयात है जिस पर अमल करने वाला हमेशा तंदरुस्त रहता है, जिसने अपने जिस्म और दांतों को दिन में कम–अज़–कम पन्द्रह बार धोना हो और हफ़्ते में एक मर्तबा नहाना, खाने–पीने की चीज़ों को ढांप कर रखना हो, साफ़ पानी इस्तेमाल करना हो, रात का खाना जल्द और ज़रूर खाकर चहल क़दमी करने वाला किसी शदीद बीमारी में मुब्तिला ही नहीं होता। मुसलमान बिस्यारख़ोर नहीं होता। इसलिए वह चिकनाई की ज़्यादती और पेट की बीमारियों से महफ़ूज़ रहता है। तवानाई के यह गुर जिन्हें आज जदीद साइंस इतनी अहमियत दे रही है। हादीए बर्हक़ ने चौदह सौ साल पहले बताए। वह पहले तबीब थे जिन्होंने दिल के दौरे की तशख़ीस की और दिक़ को पिलोरसी का बाइस क़रार दिया। मरीज़ को भूखा रखने से मना किया और बीमारियों से बचाओ के लिए जिस्म की अपनी क़ुव्वते मुदाफ़िअत को अहमियत दी।

नफ़्सियात के मग़रिबी माहिरीन को इस्लाम में हलाल और हराम के मसले पर सख़्त एतराज़ है जब कोई मुसलमान झटका या सुअर का गोश्त खाने से इनकार करता है तो वह इस अमल को Psychological Taboo से तअबीर करते हैं। हालांकि यह बात इल्मी नुक्तए नज़र से ग़लत हैं क़ुरआन मजीद ने "आयत हुर्मत" में मुरदार, ख़ून, सुअर के गोश्त– इन जानवरों के गोश्त से मना किया है जो बुलंदी से गिरे हों, टकराए हो, लाठी से मजरूह किए गए हो या दरिंदों ने फाड़ा हो। यह तमाम गोश्त इनसानी सेहत के लिए मुज़िर है। सुवर को वह तमाम बीमारियां लाहिक़ हो सकती हैं जो इन्सानों को होती है। उसे दिल के दौरे से हैज़ा तक होता है। इसलिए यह दूसरों में बीमारियां फैलाने और अपने खाने वालों को बीमार करने की इस्तेदाद दूसरे जानवरों से ज़्यादा रखता है। इसका गोश्त खाने वाले ख़ून की नालियों और जोड़ों की बीमारियों में दूसरों की निस्बत ज़्यादा मुब्तिला हुए हैं। नबी सल्ल0 ने गंदगी खाने वाले हलाल जानवर के गोश्त और दूध को भी हराम किया है। यह भी ख़ालिस सेहत का मसला है और मुसलमान को इस रहबरी पर बजातौर पर फ़ख़्र करने का हक़ हासिल है।

यह बात हाल ही में मालूम हुई कि खसरा, दिक़, चेचक, काली खांसी, मरीज़ की सांस से फैलते हैं। नबी सल्ल0 ने इस सूरते हाल को महसूस फ़रमाया और मरीज़ से बात करते वक़्त एक मीटर का फ़ासला रखना ज़रूरी क़रार दिया है और मरीज़ों को हिदायत फ़रमाई है कि वह खांसते और छींकते वक़्त मुंह के आगे कपड़ा या रुमाल रखें। इसका फ़ाएदा यह है कि जरासीम दूसरों तक न जा सकेंगे।

कुरआन मजीद ने फ़रमाया है कि हमने नबी को इल्म और हिक्मत सिखा दी है। किसी चीज़ का इल्म उसके बनाने वाले से ज़्यादा और कौन जान सकता है? फिर ख़ुदा तो वैसे भी अलिम और हकीम हैं जिस ने इससे बराहे रास्त सीखा उसकी क़ाबलियत का कोई किनारा न होगा।

उन्होंने अपने इरशादात में इनसानी सेहत के किसी भी पहलू को फ़रामोश नहीं किया। वह सेहतमंद ज़िंदगी गुज़ारने के असलूब सीखने के बाद जब वबाई इमराज़ की रोकथाम पर आए तो तारीख़े तिब में कुरंतनिया को ईजाद कर गए। उन्होंने बीमारियों से बचाओ का मुकम्मल और क़ाबिले अमल निज़ाम मरहमत फ़रमाया। जब वह मरीज़ की सिम्त आए तो निगहदाश्त और उसकी हीज़ानी कैफ़ियत से गिज़ा तक बता गए।

तिब के बारे में इरशादाते नब्वी सल्ल0 को अलाहिदा करने की कोशिशें दूसरी सदी हिजरी से जारी हैं। आइम्मा और मुहद्दिसीन ने इस बाब में क़ाबिले क़दर ख़िदमात सर अंजाम दी हैं। मगर मुश्किल यह रही कि इन हज़रात के पास तिब का बाक़ाएदा इल्म न था। इसलिए यह तिब्बे नब्वी सल्ल0 को क़ाबिले अमल सूरत में पेश करने से क़ासिर रहे। आज का मआलिज जिस्म इनसानी से मुकम्मल वाक़फ़ियत पाने के लिए इलमुल इमराज़ और इल्मुल अदविया सीखता है और उसके बाद वह इलाज करने के क़ाबिल होता है। यह अदविया नबविया के नामों से तो आगाह थे मगर इन की माहियत केमिस्ट्री असरात और फ़वाइद से आशना न थे इसलिए हमारा यह अहम क़ौमी विरसा कुतुब ख़ानों की ज़ीनत बना रहा। हुज़ूरे अकरम सल्ल0 का अपना इरशाद है कि दवाई का असर उस वक़्त होता जब उसके असरात बीमारी की माहियत के मुताबिक़ हों। लोग दवाई के असर और तरीक़ए अमल से वाक़िफ़ न थे। अब डा0 ख़ालिद ग़ज़नवी ने इस कमी को पूरा करके पूरी मुसलमान क़ौम पर एहसान कर दिया है।

नबी सल्ल0 के इरशादात अहादीस की दो सौ से ज़्यादा किताबों में बिखरे हुए हैं इन तमाम में से मुतअल्लिक़ा अहकाम की तलाश, उनकी तदवीन फिर उनकी साइंसी हैसियत का पता चलाना कोई असान काम न था मगर में देखता रहा कि मेरे दोस्त डाक्टर ख़ालिद ग़ज़नवी ने एक–एक दवाई के बारे में मालूमात इकट्ठी करने के लिए डाक्टरों से लेकर उलमा तक और साइंस दानों से गिज़ाई माहिरीन तक कई–कई दिन सर्फ़ किए उन्होंने जिस मुहब्बत, मेहनत और इश्क़े रिसालत से उसे जमा किया है मैं इस पर इनको मुबारक देता हूं और मैं यह बात पूरे वसूक़ से कह सकता हूं कि उनकी यह किताब पूरी दुनिया के लिए इस्लामी इल्मे तिब का अज़ीम शाहकार होने के अलावा हमारे अपने मुल्क की सरबुलंदी का बाइस होगी कि पाकिस्तान में कैसा–कैसा जोहरे क़ाबिल मौजूद है।

मैं डाक्टर ग़ज़नवी का मशकूर हूं कि उन्होंने मुझे इस का दीबाचा लिखने की इज़्ज़त दे कर इस कारे ख़ेर में शिरकत का मौक़ा फ़राहम किया।

इफ़तिख़ार अहमद

अलहमदुलिल्लाह

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तंदरुस्ती की बका और बीमारियों के इलाज के बारे में बड़ी अहमियत की लाज़वाल हिदायात फ़रमाई हैं मुहद्दिसीन ने "किताबुत्तिब" के उनवान से हदीसे की हर किताब में अलाहिदा अबवाब मुज़य्यन किए हैं। अब्दुल मलिक बिन हबीब उंदलुसी रह0 ने इमराज़ के मुताल्लिक़ इरशादाते नब्वी सल्ल0 को "अत्तिब्बे नब्वी सल्ल0" के नाम से दूसरी सदी हिजरी में अलाहिदा मुरत्तिब किया। उनके बाद इमाम शाफ़ई रह. के शार्गिद मुहम्मद बिन अबू बकर रह0 इब्नुस्सुन्नी और उनके हमअस्र मुहद्दिस अबू नईम रह0 असफ़हानी हैं, जिन्होंने तीसरी सदी के अवाख़िर में तिब्बे नब्वी के ऐसे मजमूए मुरत्तिब किए जिनकी अकसर रिवायत उन्होंने रावियों से ख़ुद हासिल कीं। आइम्मए अहले बैत में अली रह0 बिन मूसा रह0 रज़ा और इमाम काज़िम रह0 बिन जाफ़र सादिक़ रह0 ने इसी मौज़ू पर रिसाइल लिख कर शोहरत दवाम पाई। चौथी सदी में मुहम्मद बिन अब्दुल्ला मफ़तूहुल हमीदी, अब्दुलहक़ अश्शिबली रह0, हाफ़िज़ अलख़ावीरह और हबीब रह0 नेशापुरी ने तिब्बे नब्वी के मजमूए अपनी ज़ाती कोशिशों से मुरत्तब किए मगर नाक़दरी आलम से यह सारे मजमूए अब नापेद हैं। अलबत्ता उनके हवाले इस ज़माने की दूसरी किताबों में मिलते हैं।

सातवीं से नवीं सदी हिज़री के दौरान अबी जाफ़र रह0 अलमुस्तग़फ़री, ज़ियाउद्दीन रह0 अलमुक़द्दिसी, असय्यद मुस्तफ़ा रह0 लित्तीफ़ाशी, शमसुद्दीन रह0 अलबाअ़ली, कहाल इब्ने तुरख़ान रह0 मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी रह0 मुहम्मद बिन अबू बकर इब्नुक़य्युम रह0, जलालुद्दीन रह0 स्यूती रह0 और अबदुर्रज़्ज़ाक़ बिन मुस्तुफ़ा अंताकी ने इरशादाते नब्वी के गुलदस्ते बनाए। अलहम्दुलिल्लाह कि इन सब की काविशें अब जेवरे तबा से आरासता होकर मौजूदा दौर में मौजूद हैं। अलबत्ता इब्नुलक़य्युम रह0 का मजमूआ सब से ज़ख़ीम, सक़्क़ा और क़बूल है। उन्होंने अपने उनवानात का इन्तिख़ाब बड़ी मुहब्बत और ख़ुलूस से किया है जैसे कि:

मुहम्मद अहमद ज़हबी रह0 का मजमूआ भी अच्छा है। मगर वह दर्जनों ऐसी दवाओं का तज़किरा कर गए जिनकी नबी सल्ल0 या असहाबा किराम तक उनके पास कोई सनद नहीं। उन्होंने कुछ इलाज अपनी जानिब से शामिल किए हैं निजी उफ़ादियत महले नज़र है। अस्सयूती रह0 ने तिब्बे रूहानी के मुआमले में ज़ाती मुशाहिदात को ज़्यादा शामिल किया है और "तिब्बे नबवी" बराए नाम है।

हलब की लाइब्रेरी में अब्दुर्रज़्ज़ाक़ रज़ि0 अंताकी का मख़्तूता "तिब्बे नब्वी सल्ल0 फ़ी मुनाफ़ा अलमाकूलात सल्ल0 एक मुफ़ीद और क़ाबिले क़दर तालीफ़ है। जमालुद्दीन बिन दाऊद की तिब्बे नब्वी सल्ल0 की सिर्फ़ एक जिल्द इस्तंबूल की लाइब्रेरी में है। किताब मुख़्तसर मगर मुफ़ीद है।

अल्लाह तआला इन बुजुर्गाने किराम पर अपनी रहमतें नाज़िल करे कि उन्होंने हमें सच्चाई और हक़ीक़त का रास्ता दिखाया। मगर साइंसी उलूम में सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि उनमें रोज़ाना नए मुशाहिदात होते हैं। अगर इन पर नज़रसानी न हो तो उनकी उफ़ादियत ख़त्म हो जाती है। इल्मुल अदविया में नए इनकशाफ़ात, अदविया की कीमयावी नोइयत का इज़हार ऐसी चीजें थी जिनका अदविया नब्विया सल्ल0 में इज़ाफ़ा ज़रूरी था। दवाओं के असर को जांचने के लिए अब कुछ हालात भी मौजूद हैं। भारत में इन पर तहक़ीक़ी काम हो रहा है। जिसमें बहुत सी अदविया नब्विया सल्ल0 भी आ गई हैं हालात का तक़ाज़ा है कि नबी सल्ल0 की मुफ़ीद तिब को जदीद उलूम की रौशनी में मुकम्मल मुरत्तब किया जाए। ज़मानए क़दीम में तबाअत मौजूद न थी इसलिए तिब्बे नबवी सल्ल0 के किसी भी मजमूए में मुकम्मल अहादीस मौजूद नहीं इस अम्र की ज़रूरत भी थी कि हर दवाई के मुताल्लिक़ इरशादाते बारी और इरशादाते नब्वी सल्ल0 को भी शामिल कर दिया जाए। इरशादाते ग्रामी को कुतुबे अहादीस से दोबारा तलाश किया गया कोई मदरसा या लाइब्रेरी ऐसी नहीं जहां पर अहादीस या इल्मुल अदविया की तमाम किताबें मौजूद हो। इसलिए इनको जगह–जगह तलाश करना और उन उलूम के माहिरीन की शफ़क़त से इस्तिफ़ादा करना ज़रूरी हो गया। हदीस की मादूम किताबों अज़क़िस्म, इराक़ी, इबनुस्सनी, अबू नईम, इब्ने असाकर के तमाम हवाले "कंज़ुल आमाल" फी सुन्नवल अक़वाल" से लिए गए हैं।

उज़े तालीफ़ के बारे में मुझे जो कुछ कहना था वह मुहतरम हकीम मुहम्मद सईद और प्रिंसिपल इफ़तिख़ार अहमद साहिबान फ़रमा गए। मैं इन हज़रात की मुशावरत और मसाइदत के लिए शुक्रगुज़ार हूं।

उलमाए किराम में मौलाना अताउल्ला हनीफ़ मरहूम रह0, मौलाना अब्दुलमन्नान, उमर हाफ़िज़ अब्दुर्रशीद, प्रोफ़ेसर अब्दुल क़य्यूम बट, मुफ़ती मुहम्मद हुसैन नईमी, हाफ़िज़ सलीम लाबानी साहिबान ने अपना अलताफ़े मुसलसल जारी रखा डा॰ मोहम्मद ताहिर अलक़दवी और डा॰ इसरार अहमद साहेबान ने हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई और पीर सय्यद मुहम्मद करम शाह साहब अज़्ज़हरवी ने तिब्बे नब्वी का मौज़ूअ अपने गिरामी जरीदे से शुरू कर दिया।

पाकिस्तानी कोन्सिल बराए साइंसी उमूर लाहौर के डाएरेक्टर डा0 सय्यद फ़र्रुख़ शाह और डा0 हनीफ़ चौधरी, ख़ालिद लतीफ़ शेख़, डाक्टर सलाहुद्दीन, डा0 सरवर चौधरी और डा0 बेगम सरवर चौधरी ने अदविया की कैमिस्ट्री में साथ दिया जनाब अताउर्रहमान ग़नी ने खजूर की माहियत अता की। गवर्मिंट पब्लिक अनालिस्ट, मुहम्मद अब्दुलबारी और शहज़ादा नसीर अहमद ने भारती किताबें मुस्तआर दीं। पब्लिक अनालिस्ट पीर आरिफ़ शाह और मुहम्मद इसहाक़ ग़ौरी और उनका सारा अमला अशयाए ख़ुर्दनी की कैमिस्ट्री मुहय्या करने में लगा रहा।

मलिक शब्बीर अहमद ने छांगा–मांगा से तजज़िये के लिए उमदा शहद के दरजनों नमूने दिए।

अतिब्बाए किराम में हकीम उबैदुर्रहमान ख़ान शरीफ़ी और बेगम उम्मत लतीफ़ ताहिरा ने अदविया की तहक़ीक़ में रहबरी के साथ दामे दिरमे भी मुआवनत फ़रमाई।

हकूमत पाकिस्तान की कोन्सिल बराए तिब के सदर मियां मुनीर नबी ख़ान ने अपने इल्मुल अदविया के इल्म को बड़ी फ़य्याज़ी के साथ अता किया और किताब की पज़ीराई में अपने फ़ाज़िल अराकीन कोन्सिल की मैयत में महरबानियाँ फरमाई।

अल्लाह तआला इन तमाम असहाब को जज़ाए ख़ैर दे कि उन्होंने मुझ पर शफ़क़्क़त और तिब्बे नबवी से मुहब्बत की बदौलत अपने तमाम ज़राए मेरी तहवील में लगा दिए और ऐसे करम फ़रमाओं के ख़ुलूस ने मुझे हौसला दिया है कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तरीक़ए इलाज के ज़रिए जिस्म की तमाम बीमारियों पर अगली किताब मुकम्मल करूंगा। इनशाअल्लाह यह ज़ल्द आ जाएगी।

इस किताब में होम्योपैथी का हिस्सा जनाब ख़ालिद मसऊद कुरैशी और डाक्टर बशीर अहमद फ़िसूरी की मुहब्बत का मज़ाहिरा है।

किताब की तबाअत और नज़रसानी जनाब मौलवी मुहम्मद इकराम और फ़ैसल साहिबान की मुहब्बत है। फ़ज़ल महमूद मुफ़ती ने बड़े ख़ुलूस से नज़रसानी की और तमाम अंग्रेज़ी नाम अपने हाथ से लिखे।

मुझे तिब्बे नब्वी की सलाहियत मुहय्या करने में मेरे वालदेन की इस्लाम से मुहब्बत ही असल सबब था। उन्होंने मुझे साइंस पढ़ाने के साथ उस वक़्त के जय्यद उलमा को आमादा किया कि वह मुझे इल्मे दीन से बे–बेहरा न रहने दें। शैख़ुल हदीस मौलाना नेक मुहम्मद और मौलाना मुहम्मद हुसैन रह0 हज़ारी रह0 ने ख़ुद तकालीफ़ उठाकर भी अहादीस की तालीम दी। अल्लाह तआला उनके दरजात बुलंद करे। आमीन। ?

ख़ालिद गज़नवी

हैदर रोड कृष्ण नगर

लाहौर

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक तबीबे हाज़िक़

इन्सान जब ज़मीन पर आबाद किया गया तो उसे वहां पर रहने का सलीक़ा सिखाने और सहूलतों से फ़ाएदा उठाने का तरीक़ा सिखाने के लिए तारीख़ के हर दौर में रसूल आए। यह लोगों को अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने का असलूब सिखाते थे जिनमें से एक सेहतमंद रहना भी रहा है। तंदरुस्ती को क़ायम रखने और खोई हुई सेहत को वापस लाने की ज़िम्मेदारी एक रूहानी इल्म समझा जाता रहा है और तारीख़ के हर दौर और हर मज़हब में इलाज करने वाले मज़हबी पेशवा नज़र आते हैं। मिस्र क़दीम में माबदों के पुरोहित इलाज करते थे। शास्त्रों के मुताबिक़ इलाज का इल्म बृह्मण को था उसने इन्सानों के फ़ाएदे के लिए भारद्वाज और उसके बाद असनी कुमार को एक लाख अशलोक याद करवा दिए ताकि वह लोगों का भला कर सकें। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम इल्मुल अदविया के बानी थे। क्योंकि जब वह चलते थे तो हर दरख़्त और पत्थर उनसे मुख़ातिब होकर अपना नाम और फ़ाएदा बताता था। वह इनको लिख लिया करते थे और इस तरह इल्मुल अदविया पर पहली किताब मोरिज़े वजूद में आई।

कुरआन मजीद ने हिकमत के इल्म की अहमियत पर इरशाद फ़रमाया।

ومن یوتی الحکمت فقد اوتی خیراً کثیرا (البقرہ– ۲۶۹)

तर्जुमाः हम जिसे हिकमत सिखाते हैं उसे लोगों की भलाई का बहुत बड़ा ज़रिया अता कर दिया गया है।

और भलाई का यह ज़रिया जब एक बरगुज़ीदा बंदे लुक़मान को अता हुआ तो इरशाद हुआ।

ولقد اتینا لقمان الحکمت ان اشکر لله (لقمان – ۱۰)

तर्जुमाः हमने जब लुक़मान को हिकमत का इल्म अता किया तो इस अतिये पर इस के लिए शुक्र वाजिब हो गया।

लुक़मान को हिकमत का इल्म ऐसा शानदार मिला कि लोग आज भी अपने आप को तिब में लुक़मान कहलवाना फ़ख़्र की बात जानते हैं। उनकी यह शोहरत इतनी क़ाबिले रश्क थी कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने लोगों की भलाई के लिए ख़ुदा का पहला घर बनाया तो इस ख़िदमत गुज़ारी के बाद अपने परवरदिगार से जिन इनायात के लिए मारूज़ हुए वह दिलचस्पी से ख़ाली नहीं।

ربنا وابعث فیهم رسولاً منههم یتلو علیهم آیاتک ویعلمهم الکتاب والحکمت
ویزکیهم، انک انگ العززی الحکیم– (البقرہ–۱۳۰)

तर्जुमः ऐ हमारे पालने वाले उन लोगों में उन्हीं में से अपना एक रसूल मबऊस फ़रमाया रसूल उनको तुम्हारी आयात सुनाए उनको तुम्हारी किताब का

इल्म सिखाए हिकमत सिखाए और पाकीज़ा करें क्योंकि तू ही सबसे बड़ाई वाला और हिकमत वाला है।

किताब और आयात से बिलवास्ता मुराद यह है कि इस पर अपनी किताब नाज़िल फ़रमा हज़रत इब्राहीम के ख़ुलूस, मेहनत और ईमान की क़दर अफ़ज़ाई में से अल्लाह ने उनकी पूरी की पूरी दुआ क़बूल फ़रमाई इसी शहर में वहां के रहने वालों में से अब्दुल मुत्तलिब के घराने में अब्दुल्ला के बेटे को नबुव्वत अता हुई। उनके ज़रिये ख़ुदा की मबसूत किताब नाज़िल हुई। जिसे उन्होंने लोगों को समझाया और उसके साथ ही उनको हिकमत का इल्म मरहमत हुआ। इस इल्म और आसमानी हिदायात के साथ उन्होंने लोगों को पाकीज़गी सिखाई क्योंकि अल्लाह तआला सबसे बड़ा और हिकमत वाला है। उसने इन इनायात के अता की बात कुरआन मजीद में यूं वाज़ेह की

وانزل الله علیک الکتاب والحکمت وعلمک مالم تعلم، وکان فضل الله علیک عظیما۔ (النساء-۱۱۳)

तर्जुमा: हमने तुम पर अपनी किताब उतारी, हिकमत सिखाई और हर वह इल्म सिखा दिया जो इस आयत ने यह वाज़ेह कर दिया कि वह इब्तिदा में अगर तालीम याफ़्ता न थे तो अब वह जुमला उलूमो फ़नून में पूरी तरह मुस्तनद कर दिए गए हैं। यह बात तय है कि ख़ुदा को हर चीज़ का इल्म है और उसकी सिफ़ात में शिफ़ा देने वाला और हिकमत वाला शामिल है। वह कि जो अलीम, हकीम, शाफ़ी और आला है अगर किसी को यह उलूम ख़ुद सिखाए तो फिर उसके इल्म और हिकमत में किसी कमी का सवाल ही पैदा नहीं होता। उनकी इस सलाहियत पर इमाम मुहम्मद बिन अबू बकर इबनुल कैय्युम रह० लिखते हैं:

"इल्मे तिब एक क़याफ़ा है। मुआलिज गुमान करता है कि मरीज़ को फ़लां बीमारी है और उसके लिए फ़लां दवाई मुनासिब होगी। वह इनमें से किसी चीज़ के बारे में भी यक़ीन से नहीं कह सकता।

इसके मुक़ाबले में नबी सल्ल० का इल्मे तिब और उनमें महालिजात क़तई और यक़ीनी हैं। क्योंकि उनके इल्म का दारोमदार वही इलाही पर मबनी है जिसमें किसी ग़लती और नाकामी का कोई इमकान नहीं है।"

(ज़ादुलमुआद)

उन्होंने इलमुश्शिफ़ा के बारे में सबसे पहला उसूल जो मरहमत फ़रमायाप उसे हज़रत अबी रमशा रज़ि. उनकी ज़बानी गिरामी से यूं इरशाद फ़रमाते हैं:

انت الرفیق والله الطبیب (مسند احمد)

तर्जुमा: तुम्हारा काम मरीज़ को इत्मीनान दिलाना है। तबीज अल्लाह ख़ुद है।

यह इरशाद कुरआन मजीद के इस इरशाद की तफ़सीर में है।

واذا مرضت فهو الشفين (اشعرا)

इसके बाद उन्होंने इल्मुल इलाज का अहम तरीन उसूल अता किया जिसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ि० बयान करते हैं।

واذا اصبب الدواء برأی باذن الله (مسلم)

तर्जुमाः जब दवाई के असरात बीमारी की माहियत से मुताबक़त रखें तो उस वक़्त अल्लाह के हुक्म से शिफ़ा होती है।

यह एक अहम इनकशाफ़ है कि इल्मुल इमराज़ और इल्मुल अदविया को बाक़ाइदा जाने बग़ैर नुस्ख़ा न लिखा जाए मर्ज़ की कैफ़ियत समझे बग़ैर दवाई के असरात की मुताबक़त मुमकिन न हो सकेगी। इसके ये भी हैं कि वह तिब का इल्म जाने बगेर इलाज करने की इजाज़त न देते थे।

हज़रत उमरू बिन शुऐब रह० अपने वालिद और दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया।

من تتبب ولم يعلم منه طب قبل ذالک فهو ضامن
(ابوداؤد-ابن ماجہ)

जबकि इन्ही से यह रिवायत दूसरे अलफ़ाज़ में इस तरह से है।

من تطبّب ولم يكن بالطب معروفا فاذ اصاب نفسا فمادونها فهو ضامن
(ابن السنی-ابونعیم)

जिस किसी ने मतब किया कि वह इलमे तिब से इससे पहले मुस्तनद न था। और उससे किसी को तकलीफ़ हुई या इससे भी कम तो वह अपने हर फ़अल का ज़िम्मेदार होगा।

मुफ़स्सिरीन का कहना है कि मरीज़ को अगर किसी अताई मआलिज से नुक़सान हो तो यह क़ाबिले मुवाख़िज़ा तो ज़रूर है मगर उसके साथ किसी मरीज़ को मुद्दत अलालत या अज़िय्यत में अपने इलाज की वजह से इज़ाफ़ा करने या मुस्तनद मआलिज के पास जाने से रोकने पर भी अताई को सज़ा हो सकती है।

मुसलमानों के लिए इस्लामी तर्ज़े मुआशरत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने के उसूल जारी किए गए तो इनमें से हर एक सेहत मंद ज़िंदगी गुज़ारने की सिम्त एक क़दम है हाथों पैरों और मुंह को दिन में कम–अज़–कम पंद्रह मर्तबा वुज़ू की सूरत में अच्छी तरह साफ़ करने वाला मुतअद्दी बीमारियों से महफ़ूज़ रहता है। जब किसी शख़्स के पेट में कीड़े हों या तिप मुहर्रिफ़ा का पुराना मरीज़ हो तो बैतुल ख़ला से वापसी पर उसके हाथों को यह कीड़े और जरासीम चिपक जाते हैं। जब वह अपना हाथ अपनी या लोगों की खाने पीने की चीज़ों को लगाता है तो बीमारी के फैलाओ का बाइस बनता है। उसे इल्म तिब में Carrier कहते हैं। हाल ही में न्यूयार्क में पुराने तबे मुहर्रिक़ा के एक मरीज़ की दुकान से आइसक्रीम खाने वाले 39 बच्चे इस बीमारी में मुब्तिला हुए। उन्होंने इसका हल यूं किया कि मुसलमानों को तहारत सिखाई। फिर फ़रमाया कि इस्तिंजा में दायां हाथ हरगिज इस्तेमाल न हो और खाने में बायां हाथ इस्तेमाल में न आए। नाख़ुन काट कर रखे जाएं। पानी के ज़ख़ीरों के क़रीब और साया दार मक़ामात पर रफ़ा हाजत न की जाए।

सुबह का नाश्ता जल्द करना। रात का खाना ज़रूर और जल्द खाना और इसके बाद चहल क़दमी, बिस्यार ख़ोरी की मुमानिअत तंदरुस्ती की बक़ा के लिए उनके अहम कमालात है।

जब वह इमराज़ की बराहे रास्त रोक थाम के मसले को लेते हैं तो हिदायात वाज़ह और आसान देते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ी रज़ि0 ने फ़रमाया:

كلّم المجذوم، بينك وبينة قدرح اور محيں

(तर्जुमा: जब तुम किसी कोढ़ी से बात करो तो अपने और उसके दरमियान एक से दो तीर के बराबर फ़ासला रखा करो)

यह एक जदीद साइंसी इन्कशाफ़ है कि मरीज़ जब बात करता है तो उसके मुंह से निकलने वाली सांस में बीमारी के जरासीम होते हैं जो कि मुख़ातिब की नाक या मुंह के रास्ते दाख़िल होकर उसे बीमार कर सकते हैं। तपेदिक, ख़सरा, काली खांसी, सुआल, चेचक, कनफेड़ और कोढ़ इसी सूरत में फैलते हैं इस अमल को Droplet Infection कहते हैं। कोढ़ वाला यह इरशादे नब्वी सल्ल0 अगर तवज्जह में रहे तो इतनी बीमारियों से बचाओ हो जाता है।

उन्होंने बीमारियों के बाइस मुतअय्यन किए। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 नबी सल्ल0 से रिवायत फ़रमाते हैं।

المحدة حوض البدن والحرق ايهاواردةٌ فاذا صحت العدة صدرت العروق
بالصحة وازافسدت المحدة صدرِت العروق بالسفنم- (بیہقی)

तर्जुमा: मेदे की मिसाल एक हौज़ की तरह है। जिसमें से नालियां चारों तरफ़ जाती हों। अगर मेदा तंदरुस्त हो तो रगें तंदरुस्ती ले कर जाती हैं और अगर मेदा ख़राब हो तो रगें बीमारी ले कर जाती हैं।

एक दूसरी रिवायत में फ़रमाया:

अगर ख़ुराक ठीक से हज़्म न हो या आंतों से जज़्ब होकर जुज़्व बदन न बने तो जिस्म की मुदाफ़िअत मांद पड़ जाती है। दूसरे अलफ़ाज़ में जिस्म ठंडा पड़ जाता है। जबकि बिस्यार ख़ोरी नालियों पर चरबी की तहों, मोटापा, दिल की बीमारियों, गंठिया, गुर्दों की ख़राबियों और ज़ियाबेत्स का बाइस बनती हैं हज़रत अबी दरदा रज़ि0, अनस रज़ि0 बिन मालिक, हज़रत अली रज़ि0, हज़रत अबी रहैल रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्ल0 ने फ़रमाया:

اصل كل داء البرو---

तर्जुमा: दारकुतनी, इबनुस्सिन्नी, अबू नईम, इब्ने असाकर, अकीली।

(हर बीमारी की असल वजह जिस्म की ठंडक है।)

गुर्दों की बीमारियां हमारे आजकल के डाक्टरों के लिए मुसीबत का बाइस बनी हुई हैं। इस ज़िम्न में सारी कोशिशें अब तक बेकार जा चुकी हैं।

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ि0 रिवायत फ़रमाती हैं कि नबी सल्ल0 ने फ़रमाया:

ان الحاصرة عرق الكلية اذا تحرك اذى صاحبها، فداوها بالماء المحرق
والعسل- (ابوداؤد)

(तर्जुमा: गुर्दे की जान इसकी Pelvis में है। अगर इसमें सोज़िश हो जाए तो यह गुर्दे वाले के लिए बड़ी अज़िय्यत का बाइस होती है। इसका इलाज उबले पानी और शहद से करो।

बीसवीं सदी के वुस्त तक दिल और गुर्दे की बीमारियों, नफ़ख़, खांसी और ज़ुकाम के अलावा नमूनिया की बेहतरीन दवाई ब्रांडी समझी जाती रही है। जब तारिक़ बिन सुवैद रज़ि0 ने सरकारे दो आलम सल्ल0 से अंगूरों की शराब से इलाज के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया।

"यह दवाई तो नहीं। बीमारी है।"

अब इलमुल इमराज़ के माहिरीन कहते हैं कि ब्रांडी जिस्म के दिफ़ाई निज़ाम को मफ़लूज करती है। इसे पीने के बाद फेफड़ों में हिफ़ाज़ती इक़दाम मफ़लूज हो जाते हैं दिमाग़ के ख़लिये मुस्तक़िल तौर पर ज़ाया हो जाते हैं और जिगर तबाह हो जाता है। इसी उसूल के तहत हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 नबी सल्ल0 का यह इरशाद बयान करते हैं।

نهیٰ عن الدواء الخبیث— (ترمذی-ابوداؤد-احمد)

(तर्जुमाः उन्होंने मुज़रत रसां अदविया के इस्तेमाल से मना फ़रामाया)

उन्होंने एक मर्तबा लोज़तीन की सोज़िश में मुबतला एक बच्चे को देखा। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ि0 उसका गला दबाकर मलने वाली थीं वह इस ग़ैर साइंसी इलाज से कबीदा ख़ातिर हुए और फ़रमाया।

لاتعذب الصبیان بالغمز— وعلیکم بالقسط— (ابن ماجہ)

(तर्जुमाः बच्चों को ऐसे तरीक़ों से अज़ाब न दो। जबकि तुम्हारे लिए क़िस्त मौजूद है)

हज़रत उम्मे क़ैस बिंते मुहसिन रज़ि0 रिवायत फ़रमाती हैं कि जब उन्होंने बच्चे को पानी में घिस कर क़िस्त पिलाई तो वह तंदरुस्त हो गया। उन्होंने क़रार दिया कि पिलोरसी तपेदिक़ की क़िस्म है और इसका इलाज किया जाए। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि0 रिवायत करते हैं।

امرنا رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم ان نتداوی ذات الجنب بالقسط البحری والزیت— (ترمذی-ابن ماجہ)

दूसरी रिवायात में इसी ग़र्ज़ से वर्स भी तजवीज़ फ़रमाई।

मुहम्मद रसूलल्लाह सल्ल0 दुनिया के पहले तबीब हैं जिन्होंने दिल के दौरे की न सिर्फ़ तशख़ीस की बल्कि इलाज भी किया जबकि ऐसा मुअस्सर इलाज आज भी मुमकिन नहीं। उन्होंने आलात तनासुल के सरतान से बचाओ के लिए ख़तना जारी किया। दिल और गुर्दों की बीमारी से पैदा होने वाली सारे जिस्म की सूजन का इलाज किया। बवासीर का अदविया से इलाज किया। पेट से पानी निकालने का ऑप्रेशन ईजाद किया। दुनियाए तिब को असमद से लेकर वरस तक चालीस ऐसी अदविया मरहमत फ़रमाई जिनके ज़ैली असरात नहीं। जिसने इनसे तिब का इल्म सीख लिया इसको किसी भी इलाज में कमी नाकामी न होगी।

अंजीर......... तीन

FIG - FICUS CARICA

अंजीर बुनियादी तौर पर मश्रिक़े वुस्ता और एशियाए कोचक का फल है। अगरचे अब यह हिंदुस्तान में भी पाया जाता है मगर मुसलमानों की हिंद में आमद से पहले इसका सुराग़ नहीं मिलता। इसलिए यक़ीन किया जाता है कि अरब से आने वाले मुसलमान अतिब्बा या एशियाए कोचक से आने वाले मंगोल और मुग़ल इसे यहां लाए छः सौ साल गुज़र जाने के बावजूद हिंद में इसकी इतनी काश्त नहीं होती कि मक़ामी ज़ुरूरयात को पूरा कर सके। एक तहक़ीक़ के मुताबिक़ इसका पौधा सबसे पहले समरना में मिलता था और वहां से मुख़्तलिफ़ मुमालिक में लाया गया। इसकी पैदाइश के मशहूर मराकिज़ तुर्की, अतालिया, स्पेन, पुर्तगाल, ईरान, फ़लस्तीन, शाम, लबनान हैं। पाकिस्तान में चितराल के दरख़्त साल में दो मर्तबा फल देते हैं। इनकी अंजीर बड़ी और सफ़ेद होती है जबकि दूसरे मक़ामात का फल नीलगूं होता है।

मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि ज़मीन पर इंसान की आमद के बाद इसकी उफ़ादियत के लिए सबसे पहला दरख़्त जो मोरिज़े वजूद में आया वह अंजीर था। एक कहानी यह भी है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा अलैहिस्सलाम ने अपनी सतरपोशी के लिए अंजीर के पत्ते इस्तेमाल किए।

फलों में यह सबसे नाज़ुक फल है। पकने के बाद पेड़ से अपने आप गिर जाता है और इसे अगले दिन तक महफ़ूज़ करना मुमकिन नहीं होता। लोगों ने इसको फ्रिज में रख कर देखा मगर शाम तक फट कर टपकने लगता है। इसके इस्तेमाल की बेंहतरीन सूरत इसे ख़ुश्क करना है। अंजीर को ख़ुश्क करने के अमल के दौरान इसे जरासीम से पाक करने के लिए गंधक की धूनी देते हैं और आख़िर में नमक के पानी में डुबोते हैं ताकि सूखने के बावजूद नर्म और मुलायम रहे। क्योंकि नमक भी महफ़ूज़ करने वाली अदविया में शामिल है।

अंजीर के दरख़्त की छाल, पत्ते और दूध अदविया में इस्तेमातल होते हैं आम लोग इसकी इलाजी अहमियत से इतने आगाह नहीं जितना कि वह इसे बतौरे फल और वह भी मौसमे सरमा में जानते हैं। इल्मे नबातात की रू से अंजीर का जिस तख़लीक़ी ख़ानदान से ताल्लुक़ है इसी कुनबे से बड़े, पीपल और गूहलर भी हैं इनमें से हर एक मआलिजाती दुनिया में अपनी अहमियत रखता है। अतिब्बाए यूनान में बुक़रात ने इसका सरसरी सा ज़िक्र किया है और तौरेत में फ़सल के तौर पर मज़्कूर है।

इसकी दो अहम क़िस्में दस्तियाब हैं वह जिसे लोग बाक़ाएदा काश्त करते हैं बसतानी कहलाती है। दूसरी ख़ुदरो जंगली कहलाती हैं। जंगली हजम में छोटी और ज़ाएक़े में इतनी लज़ीज़ नहीं होती। जबकि बसतानी में काश्त कारों ने मुख़्तलिफ़ तजुर्बात से मुतअद्दिद क़िस्में पैदा कर ली हैं।

कुरआन मजीद का इरशादः

अंजीर का ज़िक्र कुरआन मजीद में सिर्फ़ एक ही जगह है। मगर भरपूर है।

والتين والزيتون- وطور سنين- وهذا البلدالامين- لقد خلقنا الانسان فى احسن تقويم-
(التين-١٠٣)

(तर्जुमा. क़सम है अंजीर की और ज़ैतून की, और तूरे सेना की और इस दारुल अमन शहर की कि इन्सान को एक बेहतरीन तरतीब से तख़्लीक़ किया गया)

हज़रत बरा रज़ि० बिन आज़िब रिवायत फ़रमामाते हैं कि सफ़र के दौरान की नमाज़ों में नबी सल्ल० एक रकअ़त में सूरह तीन ज़रूर तिलावत फ़रमाते थे। इमाम मालिक रह० की तहक़ीक़ात के मुताबिक़:

عن براءؓ عازب انه قال صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم العشاء فقرافيها بالتين والزيتون-

(موطا امام مالكؒ)

इमाम मालिक रह० का ख़याल है कि तिलावत में उसकी पसंदीदगी सूरह के सौती असरात की वजह से थी। जबकि इसके मआनी की अहमियत को फ़रामोश नहीं किया जा सकता। मुफ़स्सिरीन के एक गिरोह का ख़्याल है कि यह सूरत तारीख़ के मुख़तलिफ़ अदवार की निशानदही करती है। अंजीर से मुराद वह वक़्त है जब इन्सान ज़मीन पर आबाद हुआ और उसे तन ढांपने के लिए अंजीर के पत्ते इस्तेमाल करने पड़े दूसरा अहम मरहला उस वक़्त आया जब तूफ़ाने नूह में पूरी आबादी सिवाए मोमिनीन के ग़र्क़ हो गई। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम अपनी उम्मत को लेकर कशती में कई दिन सफ़र करते रहे। उन्होंने एक रोज़ फ़ाख़ता को हिदायत की कि वह पानी के ऊपर परवाज़ करे सैलाब की सूरते हाल का जाएजा ले। फ़ाख़ता जब लौट कर आई तो उसकी चोंच में ज़ैतून की डाली थी। इसका यह नतीजा निकाला गया कि पानी इतना उतर गया है कि पौधे नंगे हो गए हैं और इसी रोज़ से ही मुहावरे में फ़ाख़ता और ज़ैतून की शाख़ अमन और सलामती के निशान क़रार पा गए।

हाफ़िज़ इस्माईल इब्ने कसीर रह० ने तहक़ीक़ की है कि अंजीर से मुराद दमिश्क़ और उसका पहाड़ है। जबकि उन्हीं ने अब्दुल्लाह रज़ि० बिन अब्बास की एक रिवायत बयान की है कि अंजीर से मुराद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की वह मस्जिद है जो जोदी पहाड़ पर बनाई गई। मुजाहिद भी इसी मस्जिद को अंजीर से इसतिआरा क़रार देते हैं जबकि क़तादा रज़ि० ज़ैतून से मुराद बैतुल मुक़द्दस की मस्जिदे अक़सा लेते हैं। मुजाहिद रह० और अक्रमा इससे ख़ालिस ज़ैतून का फल मुराद लेते हैं जबकि तूरे सीनीन से दीगर इशारात के अलावा कोहे तूर पर वह झाड़ियां भी मुराद हैं जिनमें रौशनी देखी गई थी और यह झाड़ियां सना मक्की की थीं। इन्हीं झाड़ियों की बोहतात की वजह से पहाड़ का नाम सना की झाड़ियों वाला यानी सेना पड़ गया।

तफ़सीरी इशारात के अलियुर्रग़्म अगर सीधी बात देखें तो अल्लाह तआला ने अंजीर को इतनी अहमियत अता फ़रमाई कि इसकी क़सम खाई। जिसका वाज़ेह मतलब यही है कि इसके फ़वाइद का कोई शुमार नहीं

इरशादे नबवी सल्ल0:

हज़रत अबू दरदा रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं:

اهدی الی النبی صلی الله علیه وسلم طبق من تین، فقال کلوک، واکل منه وقال لوقلت ان فاکهة نزلت من الجنة، قلت هذه– لان فاکة الجنة بلاعجم– فکلوامنها– فانها تقطع البواسیر، وتنفع من النقرس" (ابن ابوبکرالجوزی–الطب النبوی)

(तर्जुमा: नबी सल्ल0 की ख़िदमत में कहीं से अंजीर से भरा हुआ थाल आया। उन्होंने हमें फ़रमाया कि "खाओ"! हमने इसमें से खाया और फिर इरशाद फ़रमाया "अगर कोई कहे कि कोई फल जन्नत से ज़मीन पर आ सकता है तो मैं कहूंगा कि यही वह है। क्योंकि बिलाशुबा जन्नत का मेवा है। इसमें से खाओ कि यह बवासीर को ख़त्म कर देती है। और गंठियां (जोड़ों के दर्द में मुफ़ीद है)।

इसी हदीस को इमाम मुहम्मद अहमद ज़हबी रह0 ने भी तक़रीबन इन्हीं अलफ़ाज़ में बयान किया है। मगर हदीस का माख़ज़ बयान नहीं किया। जबकि कंज़ुलआमाल में अलाउद्दीन अलहिंदी रह0 ने यही रिवायत मामूली रद्दो–बदल के साथ इसी सूरत में हज़रत अबू ज़र रज़ि0 से बयान की है।

کلوا التین فلو قلت ان فاکهة نزلت من الجنة قلت هذه– لان فاکهة الجنة لاعجم فیها– فکلوها فانها تقطع البواسیر وتنفع من النقرس–

(الدیلمی–ابن السنی–ابونعیم–)

यही हदीस हज़रत अबूज़र रज़ि0 के हवाले से कंज़ुल आमाल में मसनद फ़िरदौस दीलमी के ज़रिए से दूसरी जगह बयान करते हुए "तक़ता अलबवासीर" की जगह "यज़हब बिलबवासीर" की तबदीली की है।

अगर यह रिवायत सिर्फ़ एक ही किताब में एक ही ज़रिए से मिलती तो मुहद्दिसीन किराम के उसूल के मुताबिक़ सक़ाहत पर शुबा किया जा सकता था। मगर दो मुख़्तलिफ़ रावी और कम–अज़–कम तीन मजमूओं में इसे बयान करते हुए नज़र आते हैं। रिवायत का यह तवातुर इस पर यक़ीन दिलाने के लिए काफ़ी ज़्यादा है।

रिवायत पर ग़ौर करें तो मालूम होता है कि अंजीरों से भरा हुआ थाल हुज़ूरी में मौजूद है। अंजीर मदीना मुनव्वराह में नहीं होती और न ही मक्का में इसकी ज़राअत होती है। अलबत्ता ताइफ़ में होती होगी। थाल नागिहां ज़ाहिर होता है। फिर इरशादे गिरामी इसकी अहमियत के बारे में सादर होता है और अगर जन्नत से कोई फल ज़मीन पर आ सकता है तो यही है। फिर फ़रमाया कि बिलाशुबा यह जन्नत का फल है।"

अंजीर को बतौर फल अल्लाह तआला ने अहमियत दी और नबी सल्ल0 इसे जन्नत से आया हुआ मेवा क़रार देने के बाद इरशाद फ़रमाते हैं कि यह बवासीर को ख़त्म कर देती है। इल्मी लिहाज़ से यह एक बड़ा एलान है जो आमतौर पर इल्मे तिब में फ़ाज़िल अतिब्बा बड़ी मुश्किल से करते हैं। मगर जोड़ों के दर्द में इसको सिर्फ़ मुफ़ीद क़रार दिया। यह उमूर अंजीर से फ़वाइद हासिल करने के सिलसिले में पूरी तवज्जह और अहमियत के तलबगार हैं।

क़ुतुबे मुक़द्दिसा में अंजीर की अहमियत:

तौरेत और इंजील में अंजीर का ज़िक्र मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर 49 मर्तबा आया है।

> .... तब दरख़्तों ने अंजीर के दरख़्त से कहा कि तो आओ और हम पर सलतनत कर। पर अंजीर के दरख़्त ने कहा क्या मैं अपनी मिठास और अच्छे-अच्छे फलों को छोड़ कर दरख़्तों पर हुक्मरानी करने जाऊं? (क़ज़ात-9:10-11)

इसी ज़िम्न में ज़ैतून और अंजीर का ज़िक्र फिर मिलता है।

अंजीर के दरख़्तों में हरे अंजीर पकने लगे

और ताकें फूटने लगीं

इनकी महक फैल रही है।

(ग़ज़ल अलग़ज़लात 3:13)

यरमियाह को जब शाह बाबुल असीर करके ले गया तो उसे ख़ुदावंद का जलाल नज़र आया और गुफ़्तुगू की जो तफ़सील उसने बयान की उसमें मिसाल के लिए अंजीर का फल इस्तेमाल हुआ। अच्छे अंजीर की मिसाल नेक लोगों से दी गई और टोकरे में ख़राब अंजीरों से मुराद नाफ़रमान लोग थे जिनसे साया ईज़दी उठ जाएगा।

...तब हर आदमी अपनी ताक और अपने अंजीर के दरख़्त के नीचे बैठेगा और इनको कोई न डराएगा। (मेकाह- 4:4)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मैयत में इनके हवारियों में से मरक़स अपने एक सफ़र की रूदाद बयान करता है।

> ....दूर से अंजीर का एक दरख़्त जिसमें पत्ते थे। देख कर गया शायद इसमें कुछ है। मगर जब उसके पास पहुंचा तो पत्तों के सिवा कुछ न पाया। क्योंकि अंजीर का मौसम न था। (मुरक़्क़स- 11-13)

मुहद्दिसीन के शाहिदातः हाफ़िज़ इब्ने क़य्युम रह० लिखते हैं कि अंजीर अर्ज़ हिजाज़ा और मदीना में नहीं होती बल्कि उस इलाक़े में आम फल सिर्फ़ खजूर ही है। लेकिन अल्लाह तआला ने किताबे जलील में इसकी क़सम खाई है।

और यह इस अम्र की बिलाशुबा दलालत करता है कि इससे हासिल होने वाले उफ़ादात और मुनाफ़े बेशुमार हैं इसकी बेहतरीन क़िस्म सफ़ेद है। यह गुर्दा और मसाना से पथरी को हल करके निकाल सकती है यह बेहतरीन ग़िज़ा है और ज़हरों के असरात से बचाती है। हलक़ की सोज़िश, सीने के बोझ, फेफड़ों की सूजन में मुफ़ीद है। जिगर और तिल्ली को साफ़ करती है। बलग़म को पतला करके निकालती है जिस्म को बेहतरीन ग़िज़ा मुहय्या करती है।

जालीनूस ने कहा है कि अंजीर के साथ जोज़ और बादाम मिलाकर खालिया जाए तो यह ख़तरनाक ज़हरों से महफ़ूज़ रख सकती है।

इसका गूदा बुख़ार के दौरान मरीज़ के मुंह को ख़ुश्क होने नहीं देता। नमकीन बलग़म को पतला करके निकालती है। इस लिहाज़ से छाती की पुरानी सोज़िशों में मुफ़ीद है। जिगर और मरारा में अटके हुए पुराने सुद्दों को निकालती है। गुर्दा और मसाने की सोज़िशों के लिए मुफ़ीद है।

अंजीर को नहार मुंह खाना अजीबो–ग़रीब फ़वाइद का हामिल होता है। क्योंकि यह आंतों के बंद खोलती है। पेट से हवा को निकालती है। इसके साथ अगर बादाम भी खाए जाएं तो पेट की अकसर बीमारियां दूर भागती हैं। फ़वाइद के लिहाज़ से अंजीर शहतूत सफ़ेद के क़रीब है, बल्कि इससे अफ़ज़ल है। क्योंकि तोत मेदे को ख़राब करता है।

इमाम मुहम्मद अहमद ज़हबी रह० फ़रमाते हैं कि अंजीर में तमाम दूसरे फलों की निसबत बेहतरीन ग़िज़ाइयत मौजूद है। यह प्यास को बुझाती और आंतों को नर्म करती है। बलग़म को निकालती है। पुरानी बलग़मी खांसी में मुफ़ीद है। पेशाब आवर है। आंतों से क़ौलंज और सुद्दों को दूर करती है। इसे नहार मुंह खाना अजीबो ग़रीब फ़वाइद का बाइस होता है। क्योंकि इससे आंतों की ग़िलाज़त निकल जाती है और इनका फ़एल एतिदाल पर आ जाता है। अगर ऐसे में इसके साथ जोज़ और बादाम हों तो और बेहतर है।

इन फ़वाइद का मुवाज़िना करें तो हर जगह यह यकसां ही शक्ल में मज़कूर है। जिससे मालूम होता है कि यह फ़ाएदे वाक़ई मौजूद हैं

कीमयावी साख़्त: अंजीर की कीमयावी साख़्त मौसम के मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ होती है। फ़रवरी के इब्तिदाई दिनों में रतूबत ज़्यादा होती है जबकि इस माह के आख़िर में रतूबत कम होती है। अप्रैल की फ़सल में रतूबत और ज़्यादा होती है। जबकि यह कच्ची अंजीर में और ज़्यादा होती है। मुवाज़ना कुछ यूं है:

	नमी	गल जाने वाली मिठास REDUCING SUGARS	कुल मिठास
बाज़ार की आम अंजीर अप्रैल में	63 से 74 फ़ीसदी 18 से 87	54 से 29	18 – 60 31–01
दरख़्त पर पकी हुई तैयार अंजीर	00.47	73.55	45–59
कच्ची अंजीर	8.87 +	91.7	76.8
दरआम्दा खुश्क अंजीर	45.19	07.24	30.46

इनकी उमदा तरीन क़िस्म समरना से आती है।

अंजीर की इस आम हैसियत में अहम बात यह है कि इसकी मिठास दो क़िस्म की है। एक क़िस्म वह जो मिठास होने के बावजूद दूसरी मिठासों को गला सकती है। इसका मतलब यह है कि जिस्म में जाने के बाद वहां पर मौजूद ज़ाइद मिठास को हल करके उसे अज़िय्यत रसानी से बाज़ रख सकती है। दूसरे अलफ़ाज़ में ज़ियाबेत्स के मरीज़ों के लिए मुफ़ीद है। जूं–जूं अंजीर दरख़्त पर पकती है इसमें मिठास कम होने लगती है।

इसमें मौजूद कीमयावी अज्ज़ा का तनासुब यूं है।

लहमियात	निशास्ता हिद्दत	सोडियम	पोटाशियम	कैलशियम	मिगनेशियम के हरारे
5.1	0.15	6.24	288	05.8	20.26
फ़ौलाद,	तांबा,	फ़ास्फ़ोरस,	गंधक,	किलोरीन	
18—1	7	26	9—22	1.7	

एक सौ ग्राम ख़ुश्क अंजीर में आम कीमयात का यह तनासुब इसे एक क़ाबिले एतिमाद गिज़ा बना देता है। इसमें खजूर की तरह सोडियम की मिक़दार कम और पोटाशियम ज़्यादा है। एक सौ ग्राम के जलने से हरारत के 66 हरारे हासिल होते हैं। हरारों की यह मिक़दार आम ख़याल की नफ़ी करती है कि खजूर या अंजीर तासीर के लिहाज़ से गर्म होती है। विटामिन आई और विटामिन जे काफ़ी मिक़दार में मौजूद हैं। जबकि बी और डी मामूली मिक़दार में होती हैं।

ख़ुराक को हज़्म करने वाले जोहरों की तीनों अक़साम यानी निशासता को हज़्म करने वाले लहमियात को हज़्म करने वाले PROTEOSE और चिकनाई को हज़्म करने वाले LIPASE एक उमदा तनासुब में पाए जाते हैं। इसके अलावा CRAVIN भी है। इन अज्ज़ा की मौजूदगी अंजीर को हर तरह की ख़ुराक को हज़्म करने के लिए बेहतरीन मददगार बनादेती है। अहम अनासिर तरकीबी में एमूनाई तिर्शे P-TYROSIN ALBUMIN जौहर CRAVIN शामिल हैं। इसमें गुलुकोज़, चिकनाई, गोंद और मादनी नमक, जबकि अंजीर का अपना या दरख़्त के दूध में लहमियात को हज़्म करने वाला जौहर PEPTONISIN FERMENT पाया जाता है। हाल ही में कीमया दानों ने इसमें एक जौहर BROMETAIN दरयाफ़्त किया है। जो बलग़म को पतला करके निकालता और अलतहाबी सोज़िशें कम करता है। यह जौहर इसके अलावा अनन्नास और पपीते में भी मिलता है।

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदातः भारती हुकूमत के तिब्बी शोबे तहक़ीक़ात के मुताबिक़ यह मलय्यन है, मदरुलबोल है। इसलिए पुरानी क़ब्ज़, दमा, खांसी और रंग निखारने के लिए मुफ़ीद है। पुरानी क़ब्ज़ के लिए रोज़ाना पांच दाने खाने चाहिएं। जबकि मोटापा कम करने के लिए तीन दाने भी काफ़ी हैं। अतिब्बा ने चेचक के इलाज में भी अंजीर का ज़िक्र किया है। चेचक या दूसरी मुतअद्दी बीमारियों में अंजीर चूंकि जिस्म की कुव्वते मुदाफ़िअत बढ़ाती है और सोज़िशों की वरम को कम करती है इसलिए सोज़िश ख़्वाह कोई भी हो अंजीर के इस्तेमाल का ज्वाज़ मौजूद है।

तिब्बे यूनानी के मशहूर नुसख़ा सफ़ूफ़ बर्स का जुज़्व आमिल अंजीर है। पोस्त अंजीर को अर्क़ गुलाब में खरल करके बर्स के दाग़ों पर लगाया जाता है। जबकि आध छटांक अंजीर इसके साथ खाने को भी दी जाती है।

हकीम नजमुल ग़नी ख़ान ने इसे मुलय्यन, रियाह को तहलील करने वाला क़रार दिया है। यह जिगर और तिल्ली को कुव्वत देता है। वरम को दूर करता

है। सीने के दर्द को नाफ़े है। मिर्गी, फ़ालिज, ख़फ़क़ान और दमे में मुफ़ीद है। ज़्यादा मिक़दार में दस्त आवर है। सुद्दे दूर करता है। बादाम और अख़रोट मिलाकर खाना ज़्यादा मुफ़ीद है। बवासीर को मिटाता है। गुर्दों के दुबले पनं को दूर करती है।

इब्ने जुहर ने लिखा है कि बादाम और सिदाब के पत्तों के साथ अंजीर खाने वाला जहरों के असरात से महफ़ूज़ रहता हे। (इब्नुल क़य्युम ने यही बयान जालीनूस से मंसूब किया है) एक दूसरे नुसख़े के मुताबिक़ अंजीर और कलौंजी नहार मुंह खाने से इस दिन ज़रहों का असर नहीं होता। अफ़नितीन– जौ का आटा और अंजीर मिलाकर देने से मुतअद्दिद दिमाग़ी इमराज़ में फ़ाएदा होता है। मैथी के बीज, अंजीर और पानी को पकाकर ख़ूब गाढ़ा कर लें। इसमें शहद मिलाकर खांसी की शिद्दत कम हो जाती है और दमे में मुफ़ीद है बलग़मी प्यास में मुफ़ीद है।

अंजीर खाने से हैज़ के ख़ून में इज़ाफा होता है और दूध ज़्यादा पैदा होता है। वैद कहते हैं कि अंजीर खाने से चहरे पर निखार आता है। बाओ गोला को नाफ़े है। और हवासे ख़म्सा को कुव्वत देती है। इसके गूदे को शकर और सिर्का के साथ पीस कर बच्चों को चटानें से नरख़रे का वरम उतर जाता हैं इसके खाने से कमर का दर्द जाता रहता है।

अंजीर के दरख़्त के दूध में रोटी भिगोकर दांत के सूराख़ में रखें तो दर्द मिट जाता है। अंजीर के जोशांदे से कुल्ली करने से मसूढ़ों और गले की सोज़िश कम होती है। इसके दूध में जौ का आटा गूंध कर बर्स पर लगाने से इसका बढ़ना रुक जाता है। चहरे के दाग़ों पर भी इसका लगाना मुफ़ीद है। इसके दरख़्त की छाल की राख को सिर्के में हल करके माथे पर लगाने से सर दर्द जाता रहता हैं सूखे अंजीर को पानी में पीस कर इसको फोड़े या पट्ठों की अकड़न वाली जगह पर लेप करें तों पट्ठों की अकड़न जाती रहती है। इसी तरह इसका लेप जोड़ों के दर्दों में भी मुफ़ीद है।

जदीद मुशाहिदात:

नदकारनी ने. अंजीर में फ़वाइद का ख़ुलासा करते हुए बताया है कि यह भूख लगाने वाली सुकून आवर, दाफ़े सोज़िश और वरम, मुलय्यन, जिस्म को ठंडक पहुंचाने वाली और मुख़रिजे बलग़म है। अंजीर के दूध में गिज़ा को हज़्म करने वाले जौहर PAPAINE की मानिंद होते हैं। यह ग़िज़ा में मौजूद निशास्ता को मिनटों में हज़्म कर देते हैं इन फ़वाइद के साथ–साथ इनमें बड़ी उम्दा ग़िज़ाइयत भी मौजूद है।

गुर्दों, मसाने और पित्ते में पथरी पैदा होने के असबाब का लम्बा क़िस्सा है बल्कि माहिरीन अभी तक इस अम्र पर मुत्तफ़िक़ नहीं कि उनका असल सबब क्या है कहते हैं कि पित्ते की पथरी या उसमें सोज़िश आमतौर पर ऐसी ख़्वातीन को होती है जिनकी उम्र चालीस साल से ज़ाइद, मोटी, बदहज़मी में हमेशा मुब्तिला

और बच्चों वाली होती हैं जिसे अंग्रेज़ी में FAT-FLATULENT- FERTILE-FEMALE- FORTY जिस ख़ातून में यह पांचों चीज़ें हों और वह पेट दर्द और बदहज़मी की शिकायत ले कर आए डाक्टर उसे आमतौर पर अलहिताब मुरारा या CHOLECYS तशख़ीस करते हैं। अगर्चे पित्ते की सोज़िश ख़त्म करने और इससे सुफ़रा के इख़राज को बढ़ाने के लिए मुतअद्दिद अदविया मौजूद हैं मगर ऐसा कोई वाक़िआ दोस्तों के इल्म में भी नहीं जहां किसी मरीज़ा को मुस्तक़िल फ़ाएदा हुआ हो। पित्ते की सोज़िश का सिर्फ़ एक इलाज है और वह यह कि इसे ऑप्रेशन करके निकाल दिया जाए। और उसके बाद बदहज़मी एक दूसरी सूरत में उम्र भर की रफ़ीक़ बनती है। गुर्दों में पथरी या जोड़ों के दर्द का असल बाइस जिस्म में OXALATES & URATES की ज़्यादती है। यह कीमयावी नमक बदहज़मी की वजह से पैदा होते हैं और इख़राज के दौरान गुर्दों में रुक कर वहां पथरी बना देते हैं इस ग़र्ज़ के लिए पहले लेथीम साइट्रेट LITHIUM CITRATES ईजाद हुआ। जिसे लोग घोल कर फ्रूट साल्ट की मानिंद पीते थे। अब इंगलिस्तान की वैलकम कंपनी ने ZYLORIC गोलियां तैयार की हैं जिनके खाने से यूरेट और ऑक्सलेअ खारिज होते हैं इस इलाज के दौरान मरीज़ को गोश्त, अंडा, कलेजी गुर्दे, मग़ज़, चावल साग और टमाटर खाने से मना कर दिया जाता है। क्योंकि यह नमकियात इन ग़िज़ाओं में होते हैं। दिलचस्म बात यह है कि यह नमकियात जब पेशाब के रास्ते ख़ारिज होते हैं तो इनकी सफ़ेदी अलाहिदा नज़र आती है। इस सफ़ेदी को अनपढ़ मुआलिज और इश्तिहारी हकीमों ने जरयान का नाम दिया है। हालांके इस दहशत नाक तशख़ीस की असलियत मरीज़ का पेशाब टेस्ट करवाकर मालूम की जा सकती है।

पित्ते की ख़राबियों और गुर्दे की पथरी के इलाज़ में यूरेट निकालने के मुतअद्दिद ज़रिए इख़्तियार किए जाते हैं मगर एक अहम बात रह जाती है वह यह कि अमल इनहज़ाम को ऐसा दुरुस्त किया जाए कि ऑक्सलेट और यूरेट पैदा ही न हों। यह मक़सद किसी जरीद दवाई से पूरा नहीं हो सकता। अल्लाह तआला ने जब अंजीर की क़सम खाई तो फिर इसके असरात के लिए शानदार होना ज़रूरी हो जाता है अंजीर वह मुनफ़र्द दवाई है जो हाज़मे को ठीक करके सहीह नतीजा पैदा करती है। अंजीर गुर्दों और पित्ते से पथरी को हल करके निकालने की सलाहियत रखती है।

एक ख़ातून को पित्ते की पुरानी सोज़िश थी एक्सरे पर मुतअद्दिद पथरियां पाई गईं बतौर डाक्टर उसे ऑप्रेशन का मशवरा दिया गया। वह दर्द से मरने को तैयार थी मगर ऑप्रेशन की दहशत को बरदाश्त करने को तैयार न थी। इस मजबूरी के लिए कुछ करना ज़रूरी ठहरा। चूंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कलोंजी को हर मर्ज़ की शिफ़ा क़रार दिया है। इसलिए कासनी और कलोंजी का मुरक्कब सुबह नहार मुंह छः दाने खुश्क अंजीर खाने को कहा गया। दो माह के अंदर न सिर्फ़ के पथरियां निकल गई बल्कि सोज़िश जाती रही।

अलामात के ख़त्म होने के एक माह बाद के एक्सरे से पित्ता मुकम्मल तौर पर सेहत मंद पाया गया।

यह इत्तिफ़ाक़ नहीं बल्कि हक़ीक़त है कि अंजीर बिलाशुबा ख़ुराक को मुकम्मल हज़्म करने की सलाहियत रखती है। दर्द जहां पर भी हो उसे दूर करती है। झीलों की जलन को रफ़ा करती है। और पेट को छोटा करती है। भारती माहिरीन भी मुत्तफ़िक़ हैं कि अंजीर पथरी को हल कर सकती है।

नदकारनी तजवीज़ करता है कि ताज़ा अंजीरों को रात शबनम में रख कर किसी मिठास और बादामों के साथ अगर सुबह नहार मुंह खाया जाए तो यह मुंह के ज़ख़्मों, ज़बान की जलन और जिस्म की हिद्दत को पंद्रह दिन में ठीक कर देतीहै। हालांकि यही नुस्ख़ा हमारे मुहद्दिसीन किराम पिछले तेरह सौ साल से बयान करते आए हैं।

अंजीर और बवासीरः नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंजीर के फ़वाइद में दो अहम इरशादात फ़रमाए हैं।

यह बवासीर को ख़त्म कर देती है।

जोड़ों के दर्द में मुफ़ीद है।

इसमाईल जरजानी और इब्नुलबेतार वह तबीब हैं जिन्होंने ख़ून की नालियों पर अंजीर के असरात की वज़ाहत की हे। अगर्चे बू–अलीसेना ने भी इस क़िस्म का ज़िक्र किया है मगर वह इस बाब में वाज़ेह बात नहीं कहता। बवासीर के तीन अहम असबाब हैं पुरानी क़ब्ज़, तबख़ीरे मेदा और कुर्सी नशीनी। इन चीज़ों से मक़अद के आस–पास की अंदरूनी और बैरूनी वरीदों में ख़ून का ठहराओ हो जाता है। जिसकी वजह से वह रगें फूल कर मस्सों की सूरत में बाहर निकल आती हैं या अंदर की तरफ़ रहती हैं बाज़ लोगों की बवासीर बयक वक़्त अन्दरूनी और बैरूनी दोनों होती हैं फ़ुज़ले की नाली पर जब दबाओ पड़ता है तो उसके साथ ख़ून की नालियों में भी दबाओ बढता है। चूंकि यह पहले ही फूली हुई होती हैं। इसलिए फट जाती हैं और उनसे ख़ून बहने लगता है। यह अमल आमतौर पर बैतुल ख़ाला में इजाबत के दौरान होता है। हमारी ख़ुशक़िसमती है कि इस्लाम ने हवाइज़ ज़रूरयात से फ़रागत के बाद हम को पानी से तहारत की हिदायत की है। इसकी तहारत के नतीजे में ख़ून जल्द बंद हो जाता है और आमतौर पर इस ज़ख़्म पर न तो सोज़िश होती है और न ही फोड़ा बनता है। क्योंकि ज़ख़्म दिन में कई बार धुल जाता है इस्लाम पर अमल करना तंदरुस्त ज़िंदगी गुज़ारने का बेहतरीन तरीक़ा है। इन तमाम मसाइल का एक आसान हल अंजीर है। अंजीर पेट में तब्ख़ीर होने ही नहीं देती। अंजीर क़ब्ज़ को तोड़ देती है। अंजीर ख़ून की नालियों से सुद्दे निकालती है और इनकी दीवारों को सेहत मंद बनाती है। हमने इस्लामिक कान्फ्रेंस बराए तिब्ब के लिए इस मसले पर तवील अर्से तहक़ीक़ात की। नताइज के मुताबिक़ एक लम्बा अरसा अंजीर खाने के बाद बवासीर के मस्से ख़ुश्क हुए हैं आम तौर पर यह अरसा चार माह से दस माह तक मुहीत होता है जिन लोगों को तकलीफ़ ज़्यादा हो उनको सुबह नहार मुँह शहद के शर्बत के साथ पांच से छः दाने ख़ुश्क अंजीर बताए

गए। जिसकी तकलीफ़ कम थी और बदहज़मी ज़्यादा उनको हर खाने से आधा घंटे पहले अंजीर खिलाई गई और जिनको सिर्फ़ पेट में बोझ होता था। इनको खाने के बाद अंजीर खानी होती। हाफ़िज इब्नुल क़य्युम रह0 ने हदीस शरीफ़ की तशरीह में बड़ा ख़ूबसूरत फ़िक़रा कहा।

अंजीर पुरानी क़ब्ज़ का बेहतरीन इलाज है। इसके गूदे में पाया जाने वाला दूध मुलय्यन है। और इसमें पाए जाने वाले छोटे-छोटे दाने पेट के हमूज़ात में फूल कर आंतों में हरकात पैदा करने का बाइस होते हैं। पुरानी क़ब्ज़ के मरीज़ अगर कुछ दिन बाक़ाएदा अंजीर खाएं और बैतुल ख़ला जाने का बाक़ाएदा वक़्त मुक़र्रर करें तो यह तकलीफ़ हमेशा के लिए रुख़सत हो सकती है। अंजीर में ख़ुराक को हज़्म करने वाले अनासिर की तरकीब निहायत उमदा है। जिन लोगों को आंतों में हमेशा सड़ांद रहती है उनके लिए इससे बेहतर कोई दवाई मौजूद नहीं। इसकी फ़आलियत का अंदाज़ा इस अम्र से लगाया जा सकता है कि अगर इसे पीस कर या घोट कर कच्चे गोश्त पर लेप कर दिया जाए तो यह गोश्त दो घंटों में इतना गल जाता है कि उसे उंगलियों से तोड़ा जा सकता है।

अंजीर ख़ून की नालियों में जमी हुई ग़िलाज़तों को निकल सकती है। और इसकी इसी उफ़ादियत को हजूर नबी सल्ल0 ने बवासीर में फूली हुई दरीदों की इसलाह के लिए इस्तेमाल फ़रमाया। अकसर औक़ात ब्लड प्रेशर में ज़्यादती ख़ून की नालियों में मोटाई आ जाने से होती है। अंजीर इस मुश्किल का बेहतरीन हल है। क्योंकि यह जिस्म से चर्बी को गलाकर भी निकल सकती है। बुढ़ापे में जब ख़ून की नालियां तंग हो जाती हैं और दिमाग़ में ख़ून की क़िल्लत मरीज़ को नीम बेहोश या मख़्बूतुल हवास बना देती है। आज़ा में भी फ़ालिज की सी कैफ़ियत होती है। इस बीमारी में अंजीर अकसीर का दरजा रखती है। मगर शर्त यह है कि मरीज़ एक कसीर मिक़दार पांच-छः महीने मुसलसल इस्तेमाल करे।

गुर्दों के फ़ेल हो जाने के मुतअद्दिद अस्बाब हैं। इसमें मर्ज़ की अंदरूनी सूरत यह होती है कि ख़ून की नालियों में तंगी की वजह से गुर्दों की कारगुज़ारी मुतास्सिर होती है। यही कैफ़ियत पेशाब में कमी और ब्लड प्रेशर में ज़्यादती का बाइस बन जाती है इन हालात में अगर ज़िंदगी को इतनी मोहलत मिल सकी कि कुछ मुद्दत अंजीर खाई जा सके तो अल्लाह के फ़ज़ल से वह बीमारी जिसमें गुर्दे अगर तब्दील न हो सकें तो मौत यक़ीनी है शिफ़ायाबी पर मुंतज होती है।

ख़ून की नालियों की मोटाई के अलावा वह हालात जब किसी वजह शरयानों या वरीदों के अंदर ख़ून जम जाए अंजीर अजीब फ़वाइद की हामिल है। नबी सल्ल0 ने इस कैफ़ियत में जब यह दिल में हो तो खजूर की गुठली और मरहमत फ़रमाई हैं। जिसकी तफ़सील खजूर के उनवान में मौजूद है। लेकिन ऐसे मरीज़ों को कुछ मुद्दत खजूर देने के बाद वक़फ़ा दिया गया। इस वक़फ़े में अंजीर दी गई नतीजा बहुत बेहतर रहा। ख़याल यह था कि एक ही वक़्त में खजूर और अंजीर मिलाकर दिए जाएं मगर इब्नुलक़ैय्युम ने रसूलललाह सल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक रिवायत मंसूब की है जिसके मुताबिक़ अंजीर और खजूर को जमा करने की मुमानिअत फ़रमाई गई। इस राहनुमाई की वजह से दोनों यकजा तो न किए जा सके अलबत्ता नहार मुँह खजूर की गुठलियां देने के बाद

अस्र के वक़्त बाज़ मरीज़ों को अंजीर दी गई। फ़वाइद किसी एक के इस्तेमाल से बहुत बेहतर रहे। ख़ुश्क अंजीर को तवे पर जलाकर दांतों पर इस राख का मंजन किया जाए तो दांतों से रंग और मैल के दाग़ उतर जाते हैं। मसूढ़ों की सोज़िश के लिए जितने भी मंजन बनाए जाते हैं अगर उनमें अंजीर की राख शामिल कर ली जाए तो फ़ाएदा ज़्यादा जल्द और अच्छा होता है।

अंजीर के ताज़ा फल से निचोड़ कर दूध निकाल कर अगर मस्सों WARTZ पर लगाया जाए तो वह गिर जाते हैं। इसके पत्तों को कूट कर फोड़ों को पकाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

बही......सफ़रजल

QUINCE- AEGLE MARMELOS

यह सेब की शक्ल का फल है। जो जंगलों में ख़ुदरू भी है और काश्त भी किया जाता है। हिंदी में इसे बेल–बल– फ़ारसी में शुल अंग्रेज़ी में QUINCE कहते हैं। संस्कृत में इसके नाम के माने वुसअत की देवी हैं। हिंदी देवमाला के मुताबिक़ तो यह फल ज़रख़ेज़ी, वुसअत रिज़्क़ और फ़ारिग़ुलबाली की अलामत है। उसे भगवान शिव का परतू क़रार दे कर हिंदू उसकी पूजा करते हैं और मंदिरों में पूजा के दौरान उसकी मौजूदगी बाइसे बरकत ख़याल की जाती है।

यह फल दुनिया के अकसर मुमालिक के पहाड़ी इलाक़ों में कसरत से पाया जाता है। भारत में आसाम, जनूबी हिंद, बंगाल उसके बड़े मिस्किन है। जबकि पाकिस्तान में आज़ाद कशमीर, मरी, स्वात और मरवान के इलाक़ों में पाया जाता है मगर अब इसके दरख़्त नापैद होते जा रहे हैं क्योंकि लोगों को इसका सही मफ़हूम मालूम नहीं। फल की मंडियों में आम तौर पर सितम्बर–अक्तूबर के दौरान यह फल मिलता है। जबकि पक जाए तो लज़ीज़ मगर जापानी फल की तरह क़ाबिज़ होता है। इसका दरख़्त चार मीटर के क़रीब बुलंद होता है और इसके तमाम हिस्से दवाओं में इस्तेमाल होते हैं। बाज़ अतिब्बा इसे बेलगिरी के नाम से जानते हैं।

अहादीसे नबवी सल्ल0

हज़रत तलहा रज़ि0 बिन उबैदुल्ला रिवायत फ़रमाते हैं:

دخلت علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم وبیدہٖ سفر جلة، فقال: دونکها یا طلحة،
فانها تجم الفواد
(ابن ماجہ)

इसी इरशादे ग्रामी को अन्निसाई ने उन्ही के अल्फ़ाज़ में दूसरी सूरत में बयान किया है:

اتیت النبی صلی الله علیه وسلم وهوفی جماعة من اصحابه، وبیده سفرجلة
یقلبها– فلما جلست الیه: رحابها الیّ، ثم قال: رونکها اباذر، فانها تشدالقلب،
ویطیب النفس وتذهب بطخاء الصدر–

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो वह उस वक़्त अपने असहाब की मज्लिस में थे। उनके हाथ में सफ़रजल था जिससे वह खेल रहे थे। जब मैं बैठ गया तो उन्होंने उसे मेरी तरफ़ करके फ़रमाया "ऐ

अबाज़रा! यह दिल को ताक़त देता है। साँस को ख़ुश्बूदार बनाता है और सीने से बोझ को उतार देता है।)

हज़रत जाबिर रज़ि0 बिन अब्दुल्ला रिवायत फ़रमाते हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

كلوا ابسفرجل فانه يجلى عن الفواد ويذهب بطخاء الصدر – (ابن السنی - ابونعیم)

(सफ़रजल खाओ क्योंकि वह दिल के दौरे को ठीक करके सीने से बोझ उतार देता है।

हज़रत अनस रज़ि0 बिन मालिक रिवायत फ़रमाते हैं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसललम ने फ़रमायाः

اكل السفرجل يذهب بطخاء القلب ("القالی" فی امالیہ-حوالہ کنزل العمال)

(सफ़रजल खाने से दिल पर से बोझ उतर जाता है)

इन्ही से सफ़रजल खाने की सही वक़्त की निशानदही यूं मिलती है।

सफ़र जल को नहारमुंह खाना चाहिए। كلوا السفر جل على الريق

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

كلوا السفرجل، فانه يجلى عن الفواد، ومابعث الله نبياً من الانبياء الاء اطعمه من سفرجل الجنة) فزيدفى قوته قوة اربعين رجلاً (ابن ماجہ)

(सफ़र जल खाओ कि दिल के दौरे को दूर करता है। अल्लाह तआला ने ऐसा कोई नबी नहीं मामूर फ़रमाया जिसे जन्नत का सफ़र जल न खिलाया हो। क्योंकि यह फर्द की कुव्वत को चालीस अफ़राद के बराबर कर देता है।)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

اطعمو حبالكم السفرجل، يجم الفواد، ويحسن ازولد (ازذہبی)

(अपनी हामला औरतों को सफ़र जल खिलाया करो। क्योंकि यह दिल की बीमारियों को ठीक करता है और लड़के को हसीन बनाता है।)

कंज़ुल ईमान फ़ी सुनन वलाक़वाल ने सफ़र जल के बारे में इस हदीस का हवाला दिया हैः

औफ़ रज़ि0 बिन मालिक रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

كلوا السفرجل فانه يجم الفواد ويشخع القلب (مسند فردوس)

(सफ़र जल खाओ कि यह दिल के दौरे को ठीक करता और दिल को मज़बूत करता है।)

यही इरशादात तिबरानी और मुस्तदरिकुल हाकिम और बैहिक़ी ने दीगर ज़राए से बयान किए हैं।

इन रिवायत में एक ही फल के तवातुर से मालूम होता है कि सरकारे दो आलम सल्ल0 सफ़र जल के तिब्बी कमालात के क़ाइल थे। उन्होंने इसे नहारमुँह खाने की हिदायत की और दिल की मुख़तलिफ़ बीमारियों के लिए इसे अकसीर क़रार दिया।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

अहादीस में फ़वाइद के सिलसिले में दो अहम इरशादात नज़र आते हैं "तजमुल फ़वाइद" और "अलतख़ा" इसकी तशरीह में मुहद्दिस अबू उबैद कहते हैं कि जैसे आसमान पर अब्र आते हैं और पर्दा पड़ जाता है इसी तरह अत्तख़ा दिल की वह कैफ़ियत है जिसमे दिल के परदे धुंधले हो जाते हैं और उन पर पानी पड़ जाता है।

आमतौर पर फ़वाइद के माने दिल का दौरा है जो कि दलिया के फ़वाइद में हज़रत आइशा रज़ि० की रिवायत में फ़व्वाद का लफ़्ज़ अकसर जगह इस्तेमाल हुआ जिसका अमूमी मफ़हूम दिल पर बोझ या दौरा ही समझ में आता है।

जब यह लफ़्ज़ "तजमुल फ़वाद" की सूरत में सफ़र जल के बारे में मज़कूर हुआ तो हाफ़िज़ इब्ने लक़ीम रह० इसकी तशरीह में कहते हैं कि यह दिल में सुद्दों को निकालता, उसकी नालियों रुकावट को दूर करना और उन्हें वसी करना है। इससे दिल की वह कैफ़ियात भी मुराद हैं जब वहां पर पानी इकट्ठा होकर उसकी कारगुज़ारी को मुतास्सिर करे। मुहम्मद अहमद ज़हबी रह० भी तजमुल फ़वाद को ख़ून की नालियों और दिल के अपने मशमूलात की तक़वियत और तौसी क़रार देता है।

इन हज़रात ने यह मुशाहिदात उस वक़्त किए जब लोग इस अम्र से भी ठीक से आगाह न थे कि दिल को कौनसी बीमारियां लाहिक़ हो सकती हैं। तारीख़ तिब में दिल के दौरे की पहली तशख़ीस अबूदाऊद की रिवायत के मुताबिक़ सअद रज़ि० बिन अबी विक़ास की बीमारी में न सर्फ़ की गई बल्कि मरीज़ का चंद दिनों में मुकम्मल इलाज भी किया गया।

इन अहादीस में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिल के दौरे के अलावा दूसरी बीमारियों के बारे में इज़हारे ख़याल फ़रमाते हुए इन कैफ़ियात और अलामात का ज़िक्र फ़रमाया जिनके बारे में इल्मुलइमराज़ के माहिरीन को बीसवीं सदी के निस्फ़ के क़रीब जाकर वाक़फ़ियत हुई। इब्ने क़य्युम रह० ने जिन अलामात का ज़िक्र किया है वह CARDIAC INFARCTION के अलावा PERICADITIS और ENDOCARDITIS का एक मुकम्मल बयान है। दिल के मरीज़ों को जब कभी दौरा पड़ता है तो इसकी इब्तिदा छाती में बोझ की कैफ़ियत से होती है और इस ग़र्ज़ के लिए मरीज़ों को हिदायत की जाती है कि वह ANGISED या ISORDIL की गोली हर वक़्त पास रखें। जैसे ही बोझ महसूस हो ज़बान के नीचे गोली रख लें। मगर नबी सल्ल० इसी सूरतेहाल का बेहतर इलाज यह फ़रमाते हैं कि गोलियां खाने की बजाए बही जैसा लज़ीज़ फल खा लिया जाए।

मीठा सफ़र जल ठंडक पहुंचाता है। जबकि खट्टा क़ाबिज़ है। मेदे के लिए मुक़व्वी और मुसल्लह है। प्यास को कम करता है। क़ै को रोकता है। पेशाब आवर है। नफ़सुद्दम और पेट के अलसर में मुफ़ीद है। हैज़े का बेहतरीन इलाज है। जबकि इसकी जड़ों का जोशांदा या पत्तों का अर्क़ भी अपने फ़वाइद में तक़रीबन ऐसे ही हैं। ग़िज़ा को हज़्म करता है और अगर खाने के बाद खाया

जाए तो पेट से बोझ को उतार देता है। मुहद्दिसीन के बयान के मुताबिक़ इसे खाने से पहले खाना ज़्यादा मुफ़ीद है।

ताज़ा सफ़र जल या इसका गूदा तिब्बी ज़रूरयात के लिए काफ़ी है। लेकिन इसको भून कर या भूनने के बाद शहद के साथ मिलाकर खाया जाए तो ज़्यादा मुफ़ीद होता है। शहद इसकी क़ौलंज पैदा करने की मुज़रत को दूर कर देता है।

यह सांस से घुटन को दूर करके इसे ख़ुश्बूदार बनाता है। ज़हबी रह० के मशवरे के मुताबिक़ अगर इसके साथ अंबर भी शामिल कर लिया जाए तो उफ़ादियत में इज़ाफ़ा होता है। इसे खाने से पित्ते की सोज़िश में कमी आती है। इसे खाने से जिस्म के अकसर मक़ामात के वरम तहलील हो जाते हैं। ख़ासतौर पर वह कैफ़ियात जिनमें रतूबत भी हों इस ग़र्ज़ के लिए इसे भून कर गर्म रेत के साथ मिलाकर मक़ामी तौर पर लेप भी किया जा सकता है। इसके बीज हलक़ की सोज़िश को रफ़ा करते हैं और सांस की घुटन दूर करते हैं। इसका शहद में मुरब्बा बेहतरीन गिज़ा और दवा है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

उस्तादाने फ़न ने इसके जुमला असरात को इमराज़ बतन तक महदूद रखा है। हर तबीब ने इम्राज़े हज़्म में इसके असरात को मुख़तलिफ़ इतराफ़ से देख कर इनकी तारीफ़ की है।

बही ख़ून पैदा करती है। क़ै को दूर करती है। प्यास बुझाती है। मेदे को ताक़त देती है। दिल और जिगर को तक़वियत देती है। भूख बढ़ाती है। इसको भून कर खाने से जिनको भूख न लगती हो लगने लगती है। जिगर के सुद्दे खोलती है। जिन औरतों को मिट्टी खाने की आदत होती है अगर वह बही खाएं तो मिट्टी खाने की आदत जाती रहती है। पकी हुई बही खाने से ख़ुराक जल्द हज़्म हो जाती है। बाज़ अतिब्बा ने लिखा है कि ज़्यादा बही खाने से जज़ाम पैदा हो जाता है। (यह बात क़तअन ग़लत है। क्योंकि जज़ाम एक मुतअद्दी बीमारी है जो जरासीम की वजह से पैदा होती है। इसलिए बही या किसी और चीज़ के खाने से कभी पैदा नही हो सकती।) ज़्यादा खाने से हिचकी आती है। रेशा पेचिश और क़ौलंज पैदा होता है। ऐसे में पूरा फल खाने की बजाए अगर इसका अर्क़ निकाल कर पी लिया जाए। कुव्वत ज़्यादा देती है। मगर क़ब्ज़ पैदा करती है।

इसको भून कर खाने से पुराने दस्त बंद हो जाते हैं। आम ख़ुराक तीन से छः माशा है। इसका पानी पीने से हामला औरत के पेट के अंदर जुनैन को सेहत हासिल होती है। शहद के साथ भून कर खाने से दस्त बंद होते हैं। मगर क़ब्ज़ पैदा नहीं करती। इसका पीना या हक़ना पेशाब की जलन को दूर करता है।

बहीदाना का लुआब, शकर मिलाकर देने से भी पेशाब की जलन जाती रहती है। बही का मुरब्बा या शर्बत मनशियत के नशे को ज़ाइल करने में बेहतरीन है।

मुंह की बदबू जाती रहती है।

वैदिक तिब में इसका पानी कै और प्यास को कम करने के लिए दिया जाता है और इसका लेप जले हुए ज़ख़्मों के लिए मुफ़ीद क़रार दिया गया है।

गीलानी ने इसके दरख़्त के तमाम हिस्सों को क़ाबिज़ क़रार दिया हैं इसकी राय में बही के जितने भी मुज़िर असरात हैं। उसके साथ शहद मिलाकर देने से ख़त्म हो जाते हैं।

इसके दरख़्त का गोंद पानी में घोल कर चींटियों के और पिस्सुओं के बिलों पर छिड़क दें तो वह तमाम मर जाते हैं।

अतिब्बा ने बही या इसके फूलों को रौग़न ज़ैतून में डाल कर इक्कीस रोज़ धूप में रखने के बाद इसका रौग़न भी तैयार किया है। इसे उबालने के बाद इमराज़ बतन में जलन करूह और सुद्दों को खोलने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

बही के रुब और शर्बत के असरात भी बही की मानिंद हैं। अगर्चे यह ख़ुश ज़ाएक़ा होते हैं मगर इनका फ़ाएदा ख़ालिस फल की निस्बत कम होता है।

बहीदाना का लुआब खांसी की शिद्दत को कम करता है। सांस की नालियों को खोलता है अगर किसी और दवाई की वजह से पेट में जलन हो या इसके इस्तेमाल के बाद ऐसा होने का अंदेशा हो तो यह लुआब इससे महफ़ूज़ रखता है। इससे मुँह और गले के छाले मुंदमिल हो जाते हैं। वैदिक तिब में जड़का जोशांदा दिमाग़ी इमराज़ में सोज़िश वाले मक़ामत पर पत्तों का लेप, फल का अर्क़ नजार। इख़्तिलाज क़ल्ब में, भारत की क़दीम तरीन दवाई है।

कीमयावी माहियत:

फल के अहम अज्ज़ा के बारे में मालूम हुआ है कि यह टैनिक एसिड पेक्टन और लेसदार मादे हैं। इस फल में एक जुज़्वे आमिल MARMELOSIN नाम का पाया जाता है। बीजों को पीस कर अगर उनका जोहर एथर के साथ निकाला जाए तो उनसे ज़र्द रंग का एक फ़राज़ी तेल बरामद होता है जिसे एक माशा की मिक़दार में अगर किसी को ख़ालिस पिलाएं तो इस्हाल हो जाते हैं बाज़ माहिरीन ने फल में एक लेसदार मादे को भी मालूम किया है जो अपनी माहियत के लिहाज़ BALSAM OF PERU से मिलता जुलता है। इसी लेसदार चीज़ को बाज़ लोग रोग़न बिल्लिसान क़रार देते हैं।

इसके जुज़्वे आमिल मारमेलुसीन की मिक़दार आमतौर पर 5.37 फ़ीसदी के क़रीब होती है मगर यह आबोहवा और ज़मीन की ज़रख़ेज़ी से मुतास्सिर भी हो सकती है। जैसे कि बंगाल ओर आसाम में पैदा होने वाले फलों में यह जौहर पंजाब से पांच गुना ज़्यदा होता है। यह ज़्यादातर फल के मरकज़ी मीठे गूदे में होता है। इस की 0.05 ग्राम की मिक़दार भी पेशाब और दस्तावर है। नींद लाता है, मगर ज़्यादा मिक़दार में दिल की रफ़्तार को कम करता है।

बिहार और उड़ीसा के दरख़्तो की छाल से कोकोई शक्ल का एक जौहर FAGARINE हासिल हुआ है। इसके अलावा चेटरजी ने इससे COUMARIN-

UMBUFERONE SKIMMIANINE- MARMINE अल्कलाइड हासिल किए है।

फल से हासिल होने वाले फ़राज़ी रौग़न के अज्ज़ा में आम शहमी तिरशों के अलावा ज़रासीमकुश सलाहियत पाई। इसके बीजों में गुलोबोलीन पाई जाती है। और इसके पत्तों और शाख़ों से दूसरी अक़साम के तेल हासिल होते हैं जिनमें से एक की साख़्त संगतरे के तेल की मानिंद है। इसलिए यह तेल या पत्ते और शाख़ें जलाकर कीड़ों मकोड़ों को भगाने का काम लिया जा सकता है।

अतिब्बा जदीद के मुशाहिदातः

अर्युवैदिक के 10 बूटियों के नुस्ख़ा "वासा" का एक जुज़्व है। आजकल यूरोप में बही का जूस बड़ा मक़बूल हैं QUINCE JUICE और QUINCE SQUASH के नाम से बिकने वाला यह मशरूब मुफ़र्रह, मुसल्लह कबद और प्यास की शिद्दत को कम करने वाला क़रार दिया गया है।

इसका फल ख़ुश्क करके महफ़ूज़ किया जा सकता है। जो कि क़ाबिज़ और पुरानी पेचिश में बहुत मुफ़ीद है। यह नुस्ख़ा बच्चों के दस्तों में ख़ास तौर पर मुफ़ीद है और क्रीम तज्वीज़ की गई है। यह दोनों चीज़ें इस्हाल की शिद्दत में इज़ाफ़ा कर सकती हैं। खांड की वजह से जरासीम को अफ़ज़ाइश के बेहतर मौक़े मिलते हैं जबकि क्रीम की चिकनाई वहां पर सड़ांद और गैस पैदा करने का बाइस बनती है। इसी नुस्ख़े को जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीमात की रौशनी में मुरत्तिब किया गया तो हर क़िस्म की पेचिश पर मुअस्सर हो गया।पहले नुस्ख़ों में शहद की आमीज़िश से इनका ज़ाएक़ा भी दुरुस्त हो गया और तासीर बेहतर हो गई। जबकि शर्बत में खांड की जगह शहद मिलाने से यह फाएदामंद दवाई बन गई।

भारती हुकूमत के तिब्बे यूनानी की तरवीज के इदारे ने बही को तीन सूरतों में इस्तेमाल की सिफ़ारिश की है। ग़ालिबन यह भी करनल चोपड़ा से मुतास्सिर हैं।

1. मग़ज़ बिलग्रामी को ताज़ा पानी में अच्छी तरह हल करके शकर मिलाएं। इस्हाल व पेचिश के लिए एक अच्छा शर्बत तैयार है।
2. कच्चा फल ले कर उसे भूमल में रखें जब सुर्ख़ हो जाए तो निकल लें। इसका 24 से 40 ग्राम (माशा) गूदा सुबह नहारमुँह खिलाएं। निर्मन इस्हाल में मुफ़ीद है।
3. ख़ुश्क बेलगिरी को जोश दे कर इसका जोशांदा इस्हाल के लिए पिलाएं सफ़रजल के बारे मग़रिबी मुमालिक में जो तहक़ीक़ात हुई इसका ख़ुलासा यह है कि यह दिल-दिमाग़ और मेदे को ताक़त देता है क़ाबिज़ है जर्यान ख़ून को बंद करता है। इस्हाल और पेचिश में मुफ़ीद है और मुक़व्वी बाह है।

नदकारनी ने कच्चा सफ़लजल ले कर उसे राख में दबाकर ऊपर आग जलाकर सुर्ख़ किया। फिर इसका गूदा निकाल कर उसमें पानी में उबाली हुई सौंफ़ का जोशांदा मिला दिया। उन्हें अच्छी तरह मिलाने के बाद छान कर यह शर्बत इस्हाल मज़मन के मरीज़ों को दिन में चार-पांच मर्तबा चम्मच भर दिया जाता है। मगर इसके साथ खाना-पीना मना कर दिया जाता है। ताकि दवाई ख़ाली अंतड़ियों पर पूरी तरह असरअंदाज़ हो सके।

सफ़रजल के गूदे को ख़ुश्क करके इसे पानी में उबाल कर इसमें खांड मिलाकर

कर्नल चौपड़ा ने बही के असरात का ख़ुलासा करते हुए बताया है कि हिंदुस्तान मे आ कर मतब करने वाले योरोपी डाक्टरों को बही ने बड़ा मुतास्सिर किया। जब इस्हाल और पेचिश बुख़ार के बग़ैर हो तो बही देने से फ़ाएदा होता है। इनकी मुसलसल तारीफ़ की वजह से बही को ब्रिटिश फ़ार्माकूपिया में बतौर मुस्लिमा दवाई के शामिल कर लिया गया। इस ज़माने में बही को इन तीन सूरतों में इस्तेमाल किया जाता है।

1. ताज़ा कच्चे फल को उबालकर इसका जोशांदा दिन में कई बार पिलाया जाए।
2. कच्चे फल को ख़ुश्क करके इसके जोशांदे का एक बड़ा चम्मच दिन में कई बार।
3. फल का गूदा निकाल कर इसको ख़ुश्क करके हवा से महफ़ूज़ डिब्बों में रखा जाए। इस सफ़ूफ़ का आधा छोटा चम्मच दिन में दो से तीन मर्तबा।

बर्तानवी माहिरीन के मुशाहिदे के मुताबिक़ बही का पेचिश की एमीबियाई क़िस्म पर कोई असर नहीं बल्कि ये शदीद इस्हाल में भी इतनी मुफ़ीद नहीं मगर पुरानी पेचिश और इस्हाल मर्ज़ में कमाल की चीज़ है उनके नज़दीक ये असर इस लेसदार मादे की वजह से है जो बही में पाया जाता है बही से पेचिश और इस्हाल का इलाज करने से पाख़ाने में आने वाले लेसदार मवाद आहिस्ता–आहिस्ता कम होने लगते हैं। बार–बार की हाजत से कमी आने लगती है और शफ़ा हो जाती है।

भारती माहिरीन ने आंतों पर इसके असरात का तफ़सीली मुताला किया है। इनके मुशाहिदात के मुताबिक़ बही से जरासीमी पेचिश BACILLARY DYSENTRY में यक़ीनी फ़ाएदा होता है। इनकी सराहत के मुताबिक़ ऐसे मरीज़ों को साथ में क़ब्ज़ भी होता है जो आंतों की सोज़िश को ख़त्म नहीं होने देता। ऐसी सूरत में बही का शर्बत ज़्यादा मुफ़ीद होता है। शर्बत बनाने के लिए पके हुए फल को मलमल के कपड़े में मसल कर निचोड़ते हैं। जिससे बीज और छिलके छन कर बाहर हो जाते हैं। फिर इसमें खांड मिलाकर देते हैं। इसको लज़ीज़ बनाने के लिए दही या क्रीम भी शामिल की जा सकती है।

इन तमाम नुस्ख़ों में दवाई के ज़ाएक़े पर तवज्जह नहीं दी गई। शर्बत बनाने में खांड शर्बत के तीन चार चम्मच दिन में चार मर्तबा देने से हैज़ा और इस्हाल में फ़ाएदा होता है। हैज़ा और इस्हाल से सेहत याबी के बाद सफ़रजल का गूदा नाश्ते में खाना तंदरुस्ती के लिए मुफ़ीद और हैज़े की वबा के दिनों में बीमारी से हिफ़ाज़त करता है। ख़ुश्क फल का गूदा एक माशा नहार मुंह पेचिश में अक्सीर है। इससे ज़्यादा मिक़दार दें तो क़ै आ सकती है तजुर्बात से मालूम हुआ है कि बीमारी अगर पुरानी हो तो ख़ुश्क फल का सफ़ूफ़ ज़्यादा मुफ़ीद होता है। जबकि नई बीमारी में शर्बत या जोशांदा मुफ़ीद होते है सफ़ूफ़ देने से अमीबाती पेचिश में बतदरीज सेहत हो जाती है।

इस्तवाई बीमारियों के इलाज में आलमी शोहरत रखने वाले डाक्टर मैनसन बाहर ने सफ़रजल को पेचिश इस्हाल और आंतों के ज़ख़्मों की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों में अक्सीर क़रार दिया है। भारती माहिरीन और वैदों ने बेलगिरी को अज्वाइन,कथ, अदर, पोस्त अनार, सुपारी आम की गुठली के मग़ज़ के साथ मुख़्तलिफ़ सूरतों में मिलाकर मुतअद्दिद नुस्ख़े तरतीब दिए हैं जिनमें हर एक उमूमी तौर पर पेचिश और आंतों की सोज़िश के बारे में है।

सफ़रजल के दरख़्त की छाल, जड़ों की छाल और पत्तों का जोशांदा दिमाग़ी इमराज़ ख़ास तौर पर मालीख़ोलिया, मराक़ और हिस्टीरिया में मुफ़ीद क़रार दिया गया है। इसी जोशांदे के इस्तेमाल से इख़्तिलाजे क़ल्ब को भी फ़ाएदा बताया जाता है।

बंगाल में सफ़र जल की जड़ों का जोशांदा तीसरे और चौथे के बुख़ार, (मलेरिया) के लिए एक मशहूर दवाई है। इसके पत्तों को कूट कर मरहम सोज़िश वाले हिस्सों पर लगाने से फ़ौरी सुकून मयस्सर आता है।

बही का मुरबा:

इब्ने लक़ीम रह0 ने बही की बेहतरीन क़िस्म इसका मुरब्बा क़रार दिया हे। यह बात ठीक भी है, क्योंकि फल साल में सिर्फ़ दो माह मिलता है। इसलिए अगर बही का मुरब्बा बना लिया जाए तो वह सारा साल काम दे सकता है। मुरब्बे की एक शक्ल तो वह है जो आमतौर पर बाज़ार में मिलती है। यहां बही को खांड के साथ पकाकर मुरब्बा तैयार करते हैं। मगर इस अमल के दौरान फल को नर्म करने के लिए जिस पानी में पकाया जाता है। वह पानी फैंक देते हैं।

इनकी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ बही फल को धो कर छिलका उतारे बग़ैर इसको छोटी–छोटी क़ाशें बनाली जाएं इन क़ाशों को पानी में डाल कर अच्छी तरह पकाया जाएं जब नर्म हो जाएं तो उस पानी में शहद मिला कर फिर पकाएं जब इसकी मुरब्बे की मानिंद तार बंध जाए तो उसे उतार कर किसी उबले हुए बर्तन में डाल दें।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ा वह इरशादे गिरामी जो हज़रत अनस रज़ि0 की वसातत से मयस्सर आया के मुताबिक़ उसे नहार मुंह खाया जाए। यह मुरब्बा दिल के मरीज़ों के अलावा आंतों में अलसर, अलहताब, पुरानी खांसी, दमा, दिल के फैलाओं और पुरानी पेचिश के मरीज़ों को दिया गया अकसर औक़ात मुरब्बा की चंद क़ाशों और शर्बत के दो तीन चमचों के अलावा मरीज़ को किसी क़िस्म की कोई और दवा दी दी गई और वह फ़ज़ले इलाही के बदौलत इतने में ठीक हो गया।

मुहद्दिसीन ने बही के इस्तेमाल में "तजमुल फ़वाद" के तर्जुमे में दिल की झिल्लियों की जिस सोज़िश का तज़किरा किया है। इसमें बही का गूदा सुखाकर सफ़ूफ़ करके छोटा चम्मच सुबह–शाम शहद के शर्बत के साथ खाना ज़्यादा मुफ़ीद है।

तरबूज़-अलबतीख़
WATERMELON- CITRULLUS LANATUS

अरबी में बतीख़ तरबूज़ को कहते आए हैं। मुहद्दिसीन ने बतीख़ को तरबूज़ क़रार दिया है। मगर आजकल की अरबी में यह गड़बड़ हो गया है। अरब में बतीख़ ख़रबूजे को कहा जाता है और तरबूज़ को जबजब कहते हैं। हिजाजियों ने इन दोनों अरबी के और अल्फ़ाज़ में भी मुश्किल पैदा कर दी है जैसे कि लबन पुरानी अरबी में लबन दूध को कहते आए हैं। आजकल दही को लबन और दूध को हलीब कहा जाता है। अलबत्ता बाज़ लोग सराहत के मद्देनज़र दही को "लबन हामिस" कहते हैं।

तरबूज़ दुनिया के अकसर मुल्कों में कसरत से पाया जाता है। मश्रिक़ वुसता के हर मुल्क में पाया जाता है। हिंद–पाकिस्तान में भी आम मिलता है। अमरीकी रियासत केलीफ़ोरनिया का तरबूज़ अपनी सुर्ख़ी और हलावत में मशहूर है। कहते हैं कि रेतीले इलाक़ों का तरबूज़ ज़्यादा मीठा होता है। नजद, हिजाज़ के बाज़ इलाक़ों का तरबूज़ वाक़ई बड़ा लज़ीज़ होता है मगर हिजाज़ में ख़लीजी इलाक़ों से दरआमद हुए तरबूज़ इतने उमदा नहीं होते दुनिया में इस वक़्त पाकिस्तान के ज़िला सिखर के इलाक़ा गढ़ी यासीन के तरबूज़ ज़ाएक़े और हजम में बेहतरीन माने जाते हैं।

तरबूज़ की उम्दगी इसके गूदे की सुर्ख़ी और मिठास पर क़रार दी जाती है। मिलावट के इस दौर में देखा गया है कि फल फ़रोश सुर्ख़ रंग में सकरीन मिलाकर तरबूज़ों में इंजकशन लगाकर इनको मसनूई तौर पर सुर्ख़ और मीठा कर लेते हैं।

बुनियादी तौर पर यह अफ़रीक़ा का फल है जो सय्याहों की बदौलत दुनिया भर में मक़बूल हो गया। आजकल पाकिस्तान में चीन के दरआमदी बीज से छोटे क़िस्म के ऐसे तरबूज़ कसरत से पैदा हो रहे हैं जो लज़ीज़ भी हैं। फल वज़नी होने की वजह से इसका पौदा ज़मीन पर रेंगने वाला है। बीज बोने से चार माह में फल पक कर तैयार हो जाता है पके हुए फल की पहचान में कहा जाता है कि अगर इस पर हलका हाथ मारें तो जवाब में मद्धम आवाज़ इसकी अलामत है।

माहिरीन ज़राअत ने इसके हजम और छिलके के बैरूनी रंग की मुनासबत से इसकी कई क़िस्में बयान की हैं। जिनके नाम इलाक़े में मुख़तलिफ़ हैं। इसका ऊपर का छिलका तक़रीबन दो सेंटी मीटर मोटा होता है। अंदर नर्म गूदा जिसमें काफ़ी तादाद में सख़्त छिलके वाले बीज पाए जाते हैं। फल जल्द ख़राब नहीं होता। अगर इसे ठंडे और ख़ुश्क कमरे में रखा जाए तो श्क्ल और ज़ाएक़ा 15–20 दिन तक क़ायम रहता है।

इरशादाते नबवी:

मुहद्दिसीन की अकसरियत तरबूज़ के बारे में सिर्फ़ एक हदीस को सक़्क़ा

क़रार देती है। हज़रत सहल बिन साद रज़ि0 अस्साइदी रिवायत फ़रमाते हैं।

ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان یا کل الرطب بالبطیخ (ابن ماجہ۔ترمذی)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताज़ा पकी हुई खजूरों के साथ तरबूज़ खाया करते थे।)

इस हदीस के अलफ़ाज़ में सुनन अबूदाऊद में यह इज़ाफ़ा मिलता है।

ويقول يكشر حرا هذا ببرد هذاء بردا هذا بحرا هذا

(और फ़रमाया करते थे कि इसकी गर्मी को इसकी ठंडक मार देती है और इसकी ठंडक को इसकी गर्मी मार देती है)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

البطيخ طعامٌ و شرابٌ و ريحان: يغسل المثانة. ينظف البطن، ويكسر ماء الظهرويعين على الجماع، وينقى البشرة ويقطع البردة

(مسند فردوس۔الرانی کتاب البطیخ ابوعمر)

तरबूज़ खाना भी है और मशरूब भी रैहान के साथ यह मसाने को धो कर साफ़ कर देता है। पेट को साफ़ करता है कमर से पानी निकाल देता है। बाह में इज़ाफ़ा करता है। चेहरे को निखारता है और जिस्म से ठंडक को ख़त्म करता है)

ज़हबी रह0 ने यह रिवायत इसी तरह बयान की है जबकि कंज़ुल अमाल ने हदीस की इब्तिदा "فی البطیخ عشر خصال" से शुरू किया है। बाक़ी इबारत वही है। अलबत्ता तरबूज़ के साथ रेहान का तज़किरा नहीं। अम्मात नबी सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम इन्म्मे रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया:

البطيخ قبل العوام يغسل البطن غسلاً ويذهب بالداء اصلا ۔(ابن عساکر)

(खाने से पहले तरबूज़ खाने से पेट धुल कर साफ़ हो जाता है और यह बीमारियों को निकाल देता है)

इब्ने असाकर इस हदीस के सिलसिले को यक़ीनी क़रार देता और इब्ने क़य्युम इस इबारत का अतबाक़ा क़ौल बयान करते हैं।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

अकसर मुहद्दिसीन ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फलों में अंगूर और तरबूज़ पसंद थे और वह उन्हें शौक़ से खाया करते थे।

तरबूज़ का हर हिस्सा मदरबोल है। जल्द हज़्म होता है। गुर्दा और मसाना से पथरी को निकालता है। मेदे से ग़िलाज़त को निकल कर पेट को साफ़ करता है। बुख़ार के मरीज़ों को इसे सिरके की सिकंजीन के साथ देना मुफ़ीद रहता है। और सूए हज़्म में अदरक या सौंठ मिलाकर देने से और मुफ़ीद हो जाता है। इसे खाने से चहरे का वरम उतर जाता है और रंगत साफ़ हो जाती है। अबूमुसहरुल अनानी की आदत थी कि वह जब भी तरबूज़ खाने लगते तो काटने से पहले नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को याद कर लेते और तरबूज़ हमेशा

मीठा निकलता।

कुछ लोगों ने इसे खीरे और ककड़ी से ज़्यादा मुफ़ीद क़रार दिया है। अगर किसी को जिस्म में ठंडक महसूस होती हो तो वह इसे अदरक के साथ खाए। यहां पर ठंडक से मुराद जिस्म की कुव्वते मुदाफ़िअत में कमी है। रिवायत से पता चलता है कि इसे खाने से जिस्म में बीमारियों का मुक़ाबला करने की इस्तेदाद् में इज़ाफ़ा होता है।

कीमयावी माहियतः

तरबूज़ के पकने की अहम अलामत यह है कि बेल के साथ जोड़ने वाली शाख़ डंडी से ख़ुश्क होकर सूख जाती है इसके कीमयावी अज्ज़ा में ज़्यादा तर प्रोटीन और एक जोहर सड़ोलीन बयान किए जाते हैं। बाज़ लोगों ने इसमें से एक तेल भी निकाला हैं इस तेल के अलावा तरबूज़ में तमाम वटामिन माक़ूल मिक़दार में पाए जाते हैं। एक तंदरुस्त शख़्स को रोज़ाना तीन मिली ग्राम विटामिन बी की ज़रूरत होती है जबकि एक सौ ग्राम में यह विटामिन तीस मिली ग्राम होती है। इसी तरह वटामिन बी मुरक्कब के दूसरे तमाम अज्ज़ा और विटामिन एल और जे भी पाए जाते हैं। इसमें फ़ौलाद की क़ाबिले हज़्म शक्ल मिलती है। आंतों की जलन को रफ़ा करने वाले जौहरों के अलावा इसमें इस्हाल को रोकने वाले अनासिर भी मिलते हैं। इसमें पाई जाने वाली मिठास पकने से बढ़ती है और इसका इस्तेमाल ज़्याबेत्स के मरीज़ों के लिए नुक़सानदे नहीं होता। इसके जौहर भूक लगाते हैं।

जदीद मुशाहिदातः

बुनियादी तौर पर तरबूज़ मुफ़र्रह पेशाब आवर, पेट से जलन और सोज़िश को रफ़ा करने वाला। ग़िज़ाइयत से भरपूर है। इसके बीज पेट से कीड़े निकालते हैं। इसका जूस प्यास को बुझाता है। इसके जूस में खांड और ज़ीरा मिलाकर गुर्दा, मसाना और पेशाब की नाली की सोज़िशों में देना मुफ़ीद है। यह नुस्ख़ा जिगर की सोज़िश और यरक़ान में भी मुफ़ीद है। तरबूज़ खाने से मेदा और आंतों के ज़ख़्म मुंदमिल हो जाते हैं। इसमें बही की तरह PECTIN की मौजूदगी इसे इस्हाल और पेचिश में भी मुफ़ीद बना देती है। सिंध में पाया जाने वाला जंगली तरबूज "करब्त" कड़वा होता है मगर वह भूक बढ़ाता और क़ब्ज़ में मुफ़ीद है। हकीम सफ़ियुद्दीन ने इसे मिस्किन हरारत, मदरबोल क़रार दिया है कसरत सुफ़रा और प्यास की ज़्यादती, सोज़िशे मेदा पेशाब की नालियों की सोज़िश, ख़ुश्कंत हलक़, गुर्दा और मसाने की पथरी और तपे मुहर्रिक़ा में मुफ़ीद बयान किया है। इसमें ग़िज़ाई अनासिर की मिक़दार से जिस्म के लिए मुक़व्वी बल्कि वज़न को बढ़ाने वाला बना देती है। इस ग़र्ज़ के लिए आबे तरबूज़ के अलावा इसके तुख़्म का शीरा भी कारआमद है। तरबूज़ से एक मशहूर यूनानी दवाई लऊक़ आबे तरबूज़ वाला तैयार की जाती है। इसके बीजों से एक रौग़न भी हासिल किया जाता है।

जौ............शईर

HORDEUM VULGARE

जौ ख़ुर्दनी अजनास मे से एक आम चीज़ है जो एक गंदुम से पहले तैयार की जाती है। गंदुम के खेतों में जौ भी पाए जाते हैं अरबी और फ़रसी में इन्हें शईर, संसकृत में "बावा" और अंग्रेज़ी में बारले कहते हैं। अगर्चे यह काश्त किए जाते हैं। मगर इसकी ख़ुदरौ क़िस्म भी पाई जाती है।

जौ के बारे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादातः

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जौ बहुत पसंद थे। इनकी ज़ाते ग्रामी के साथ इनका वास्ता बतौर रोटी, बतौर दलिया और बतौर सत्तू अहादीस से पता चलता है।

जौ की रोटी:

अहदे रिसालत में आमतौर पर लोग जौ की रोटी खाते थे। या गंदम और जौ मिलाकर रोटी पकाई जाती थी बल्कि गेहूं की रोटी तक़रीबात तक महदूद थी।

मस्जिद नबवी सल्ल० के दरवाज़े पर एक ख़ातून चुक़ंदर की जड़ें और साबुत जौ मिलाकर इनकी शब देग पका कर नमाज़े जुमा के बाद बेचने आया करती थी। असहाबा किराम रज़ि० को यह पकवान ऐसा पसंद था कि लोग जुमे वाले दिन का इंतिज़ार किया करते थे।

हज़रत उम्मुलमंज़र रज़ि० बयान करती हैं कि मेरे पास नबी सल्ल० हज़रत अली रज़ि० के हमराह तशरीफ़ लाए हमारे यहां खजूर के लटके हुए ख़ोशे मौजूद थे वह इनकी ख़िदमत में पेश किए गए। इसमें से दोनों ने तनावुल फ़रमाया। जब हज़रत अली रज़ि० थोड़े खा चुके तो रसूलल्लाह सल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोक दिया और फ़रमाया कि तुम अभी बीमारी से उठे हो और कमज़ोर हो। मज़ीद मत खाओ। इसके बाद

ثالث بعد لت لهم لقاد الشعير فقال النبیؐ صلی الله علیه وسلم یا علی من هذا فاکصب فانه اوفق لک (ابن ماجہ۔مسند احمد۔ترمذی)

(उस ख़ातून ने उनके लिए जौ और चुक़ंदर तेयार किए नबी सल्ल० ने अली रज़ि० को कहा कि तुम इसमें से खाओ कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है।)

इस वाक़िए में हज़रत अली रज़ि० बीमारी से उठे थे और उनकी कमज़ोरी को दूर करना ज़रूरी था जिस के लिए जौ की रोटी और चुक़ंदर को बेहतरीन ग़िज़ा क़रार दिया।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० बयान करते हैं कि एक दरज़ी ने नबी सल्ल० की दावत की और उसने जौ की रोटी के साथ कद्दू गोश्त पकाया।

हुजूर सल्ल॰ ने बड़ी मुहब्बत के साथ सालन से कद्दू के टुकड़े तलाश करके तनावुल फ़रमाते रहे। (बुख़ारी–मुस्लिम)

عن يوسفؒ بن عبدالله بن سلام تال رايت النبی صلی الله عليه وسلم اخذ كسرة من خبز الشعير فوضع عليها ثمرة فقال هذه ادام هذهوا كل (ابوداؤد)

(यूसुफ़ बिन अब्दुल्ला बिन सलाम रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि आपने जौ की रोटी का टुकड़ा लिया उसके ऊपर खजूर रखी और फ़रमाया कि यह इसका सालन है और खालिया।)

जौ का दलियाः

जौ कूट कर इसे दूध में पकाने के बाद मिठास के लिए इसमें शहद डाला जाता है। इसे तलबीना कहते हैं। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ि0 बयान फ़रमाती हैं।

كان رسول الله صلی الله عليه وسلم اذا اخذا من اهد الوعک امر بالحسامن الشعير فضع، ثم امرهم فحسومنه، ثم يقول انهٔ يرتو فواد الخرين ويسرو فوادالسقيم كما تسروا احدكن الوسخ باالماء عن وجهها. (ابن ماجه)

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एहलख़ाना में से जब कोई बीमार होता था तो हुक्म होता था कि इसके लिए जौ का दलिया तैयार किया जाए। फिर फ़रमाते थे कि बीमार के दिल से ग़म को उतार देता है और इसकी कमज़ोरी को यूं उतार देता है जैसे कि तुम में से कोई अपने चहरे को पानी से धो कर इससे ग़िलाज़त उतार देता है।

इसी मसले पर हज़रत आइशा रज़ि0 की एक रिवायत में इसी वाक़िए में इज़ाफ़ा यह हुआ कि जब बीमार के लिए दलिया पकाया जाता था तो दलिये की हंडिया उस वक़्त तक चूल्हे पर चढ़ी रहती थी जब तक कि वह या तो तंदरुस्त हो जाए या फ़ौत जो जाए।

इससे मालूम हुआ कि गर्म–गर्म दलिया मरीज़ को मुसलसल और बार–बार देना इसकी कमज़ोरी को दूर करता है और उसके जिस्म में बीमारी का मुक़ाबला करने की इस्तेदाद पैदा करता है।

عن عائشه انها كانت تامر بالتلبينة وتقول هو البغيض النافع (بخاری)

(हज़रत आइशा रज़ि0 बीमार के लिए तलबीना तैयार करने का हुक्म दिया करती थीं। और कहती थीं कि अगर्चे बीमार इसको नापसंद करता है लेकिन वह इसके लिए अज़हद मुफ़ीद है।)

परेशानी और थकन के लिए भी तलबीना का इरशाद मिलता है। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 रिवायत फ़रमाती हैं।

انها كانت اذا مات الميت من اهلها. فاجتمع لذلک النساء ثم الفرقن الاهلها وخاصتها امرت ببرمة من تلبينة فطبخت. ثم وضع ثريد فصبت التلبينة عليها. ثم قالت كلن منها فانی سمعت النبی صلی الله عليه وسلم يقول التلبينة مجمة لفواد المريض تذهب بعض الحزن (بخاری، مسلم، ترمذی، النسائی، مسند احمد)

(जब हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 के घराने में कोई वफ़ात होती और दिन भर अफ़सोस करने वाली औरतें आती रहतीं! जब बाहर के लोग चले जाते और घर के अफ़राद और ख़ास–ख़ास लोग रह जाते तो वह तलबीना तैयार करने का हुक्म देतीं। फिर सरीद तैयार किया जाता तलबीना की हंडिया को सरीद के ऊपर डाल देते। और कहा करती थीं कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि यह मरीज़ के दिल के जुमला अवारिज़ का इलाज है। और दिल से ग़म को उतार देता है।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 की एक रिवायत में जब कोई नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भूख की कमी की शिकायत करता तो आप इसे तलबीना खाने का हुक्म देते और फ़रमाते कि इस ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है यह तुम्हारे पेटों से ग़िलाज़त को इस तरह उतार देता है जिस तरह कि तुम में से कोई अपने चेहरे को पानी से धो कर साफ़ कर लेता है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी ज़िंदगी में सबसे पसंद खाना सरीद था और इसके बाद मरीज़ के लिए उन्हें तलबीना से बेहतर कोई चीज़ पसंद न थी। इसमें जौ के फ़वाइद के साथ–साथ शहद की अफ़ादियत भी शामिल हो जाती थी। मगर वह इसे गर्म–गर्म खाने, बार–बार खाने और ख़ाली पेट खाने को ज़्यादा पसंद करते थे।

सत्तू:

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सत्तू बहुत पसंद थे। यूं तो अरब में सत्तू गंदुम से भी बनाए जाते थे मगर इनको जौ से बने हुए सत्तू पसंद थे। ग़ज़वाते नबवी सल्ल0 में एक जंग "गज़वतुस्सवीक़" के नाम से मशहूर है। जंगे उहद के फ़ौरन बाद अबी सुफ़ियान 200 आदमी लेकर इस ग़र्ज़ के लिए मदीना आया कि वह मक़ामी यहूदियों की इम्दाद से मसलमानों पर शबे ख़ून मारेगा यहूदी अभी तज़बज़ब में थे कि दुश्मन की आम्द की इत्तिला बारगाहे नबवी सल्ल में हुई। हुज़ूर अपने लशकर के साथ सवार होकर उनके मुक़ाबले को निकले तो दुशमन मुक़ाबले के बग़ैर भाग गया। मारे दहशत के वह अपना सामान हत्ता कि रास्ते का खाना भी छोड़ गए। यह खाना सत्तुओं के थैलों पर मुश्तमिल था। इस तरह मुसलमानों के हाथ सत्तुओं की एक मिक़दार आई और यह जंग इसी मुनासबत से "जंगे सवीक़" कहलाई।

फ़तह ख़ैबर के मौक़े पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सफ़िया के साथ निकाह फ़रमाया। अगले रोज़ हज़रत अनस बिन मालिक को हिदायत फ़रमाई कि वह लोगों को सफ़िया के वलीमे की दावत पर बुला लाएं। तिर्मिज़ी और इब्ने माजा की रिययात के मुताबिक़ वलीमा में खजूरें और सत्तू थे। बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ सत्तू, खजूर और मक्खन से हलवा बनाकर मेहमानों की तवाज़े की गई।

अन्निसाई और मुसनद अहमद बिन हंबल रह0 की रिवायत यही नबी सल्ल0 ने रोज़ा खोलने में अकसर सत्तू का शर्बत नोश फ़रमाया। अबू दाऊद की एक

रिवायत में नबीज़ के मुक़ाबले में किसी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० का ताना दिया कि इनके चचेरे भाई लोगों को शहद, सत्तू और दूध पिलाते हैं।

عن ابی بودة قال قدمت المدینة خلقی عبدالله بن سلام فقال لی انطلق الی المنزل فاسقیک فی قدح شربه فیه رسول الله صلی الله علیه وسلم فی مسجد صلی نبه النبی صلی الله علیه وسلم، فانطلقت معه فاسقانی سریقا واطعمنی ثمراً و صلیت فی مجسه (بخاری)

(हज़रत बरदा कहते हैं कि मैं मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुआ तो मेरी मुलाक़ात हज़रत अब्दुल्ला बिन सलाम रज़ि॰ से हुई उन्होंने मुझे अपने पास उतरने की दावत दे कर फ़रमाया मैं तुम्हें इस प्याले में पिलाऊंगा जिसमें रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पिया और इस मस्जिद में नमाज़ पढ़वाऊंगा जिसमें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ी। पस मैं उनके पास उतर गया और उन्होंने मुझे सत्तू और खजूर खिलाए। और मैंने इन की मस्जिद में नमाज़ पढ़ी।

इसी हदीस को मुख़्तसर सूरत में भी बुख़ारी ही ने सईद बिन बरदा से बयान किया है जिन्होंने इसे अपने वालिदे मोहतरम से रिवायत किया है।

اتیت المدینة خلقیت عبدالله بن سلام فقال الاتجی فاطعمک سوبقارتمه

सत्तू पीने के बारे में अन्निसाई, अबू दाऊद, बुख़ारी, इब्ने माजा, तिर्मिज़ी और अहमद बिन हंबल ने इक्कीस अहादीस बयान की हैं जबकि सत्तू उनके अलावा दूसरी अहादीस में भी मज़कूर हैं।

जंग के दौरान मुजाहिदीन का राशन सत्तू और खजूर पर मुशतमिल रहा है। और इस गिज़ा से इनको इतनी तक़वियत हासिल हुई थी कि वह सफ़र की सऊबतें बरदाश्त करने के अलावा दुशमन से मुक़ाबले में जिस्मानी बरतरी साबित करते थे। दिन भर के रोज़े की कमज़ोरी को रफ़ा करने के लिए अफ़तार के लिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमेशा सत्तू पसंद फ़रमाए।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

जौ खाने से कुव्वत हासिल होती है। शायद यही मुशाहिदा था जिसे अल्लामा इक़बाल ने अपने एक शअर में बयान किया है।

है जहां में नाने शईर पर मदार कुव्वते हैदरी

जौ जिस्मानी कमज़ोरी के अलावा खांसी और हलक़ की सोज़िश के लिए मुफ़ीद हैं। मेदे की सोज़िश को ख़त्म करते हैं। जिस्म से गिलाज़तों का इख़राज करते हैं। पेशाब आवर हैं। प्यास को तसकीन देते हैं। इब्ने लक़ीम रज़ि० ने जौ के पानी को पकाने का जो नुसख़ा बयान किया है। उसके मुताबिक जौ ले कर इनसे पांच गुना पानी इनमें डाला जाए फिर उन्हें इतना पकाया जाए कि पानी दूधिया हो जाए और इसकी मिक़दार में कम–अज़–कम एक चौथाई की कमी आ जाए... इस गर्ज़ के लिए अगर साबुत जौ का इस्तेमाल करने की बजाए जौ का दलिया इस्तेमाल किया जाए तो जौ से हासिल होने वाले फ़वाइद और ज़्यादा हो जाएंगे।

यह अम्र सही है कि पकने के बाद जौ का पानी फ़ौरी असर करके तबीअत को बश्शाश बनाता, जिस्म को कमज़ोरी का मुक़ाबला करने के लिए गिज़ा मुहय्या करता हैं अगर इसे गर्म–गर्म पिया जाए तो इसका असर फ़ौरी शुरू होकर जिस्म में हरारत पैदा करता है। मरीज़ के चहरे पर शगुफ़्तगी लाता है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जौ के फ़वाइद में दो अहम बातें इरशाद फ़रमाई हैं।

मरीज़ के दिल से बोझ को उतार देता है

ग़म और फ़िक्र से निजात देता है।

कीमयावी साख़्तः

बरतानवी मुहक़्क़िक़ चर्च ने जौ का इन अलफ़ाज़ में कीमयावी तज्ज़िया बयान किया है।

ALBUMINOIDS	11.5
STRACH	70
FAT	1.3
FIFRE	2.6
ASH	2.1
WATER	12.5

इसमें चिकनाई तेल की मुरक्कब सूरत लहमियात LEUCOSIN-GLUTEN ALBUM, नाइट्रोजन के कम्पाउंड SILICIC- PAUMATIC PHASPHORIC-LAURIC ACID और इनके अलावा HYPOXANTHINES भी मिलते हैं निशास्ता खुर्दनी अजनास का लाज़मी हिस्सा है। निशास्ते के वह दाने जो गंदम में पाए जाते हैं जौ से बड़े होते हैं।

ब्रिटिश फ़ार्माकोपिया ने जौ से MALT EXTRACT तैयार करने मशवरा दिया है जिसमें लहमियात की मिक़दार चार फ़ीसदी, निशास्ता और शकर को हज़्म करने वाले जौहर और विटामिन पाए जाते हैं। आम हालात में माल्ट एक्स्ट्रेट बदमज़ा, दवाईयों ख़ासतौर पर मछली के तेल के ज़ाएक़े की इसलाह के लिए इस्तेमाल किया जाता है। मगर ब्रिटिश फ़ार्माकूपिया की तारीफ़ के मुताबिक़ यह बज़ाते ख़ुद भी तवानाई का ज़रिया है।

बाज़ कीमयादानों ने जौ में संखिया की मौजूदगी का ज़िक्र किया है। नदकारनी ने हकूमत उत्तर प्रदेश के हवाले से जौ में संखिया की मिक़दार एक हज़ार ग्राम में पचास मिली ग्राम बयान की है। जबकि बरतानवी मेयार से दस लाख में इसका ज़्यादा से ज़्यादा एक हिस्सा हो सकता है।

कुतुब मुक़द्दिसा में जौ का ज़िक्रः

तौरेत, ज़बूर और इंजील में जौ का ज़िक्र इक्कीस मर्तबा आया। जिनसे इनकी अहमियत वाज़ेह होती है।

...अगर कोई शख़्स अपने मोरूसी खेत का कोई हिस्सा ख़ुदावंद के लिए मुक़द्दस क़रार दे तो क़ीमत का अंदाज़ा करते वक़्त यह देखना इसमें कितना बीज बोया जाएगा। जितनी ज़मीन में एक होमर के वज़न के बराबर जौ बो सकें इसकी क़ीमत चांदी की पचास मिस्क़ाल

हो।   (अहबार 27–16–17)

वही में मज़्कूर अच्छी चीज़ों का एक तज़किरा तौरेत में इनके फ़वाइद के साथ यूं मज़्कूर है।

.... वह एसा मुल्क है जहां गेहूं और जौ और अंगूर और अंजीर के दरख़्त और अनार होते हैं। वह ऐसा मुल्क है जहां रौग़नदार ज़ैतून और शहद भी है। इस मुल्क में रोटी तुझ को बाइफ़रात मिलेगी। और तुझको किसी चीज़ की कमी न होगी क्योंकि इस मुल्क का पत्थर भी लोहा है।   (इस्तसना 8:8–9)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनके हवारियों में आम ख़ुराक जौ की रोटी और मछली थी। इनके इज्तिमाई खाने की रोएदाद इंजीले मुक़द्दस में यूं मज़्कूर है।

.... यहां एक लड़का है जिसके पास जौ की पांच रोटियां और दो मछलियां हैं मगर यह इतने लोगों में क्या हैं?

.... चुनांचे उन्होंने जमा किया और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से जो खाने वालों से बच रहे थे बारह टोकरियां भरीं   (यूहनात 6:9/13)

इसी हज़क़ीएल में भी जौ की रोटियों और इनको पकाने के साथ मुख़तलिफ़ दालों का ज़िक्र मिलता है। मगर अहम तज़किरा पहली रिवायत का है जिसमें वह तमाम चीज़ें आ गईं जिनका कुरआन मजीद और बारगाहे नबुव्वत से बतौर अच्छी चीज़ों का ज़िक्र हुआ। इसके बाद इनके फ़वाइद का तज़किरा करते हुए फ़रमाया गया कि इस मुल्क में जहां यह चीज़ें हैं पत्थर भी फ़ौलाद की तरह मज़बूत हो हो जाते हैं। फिर वह इन्सान जो इन चीज़ों को खाएगा कैसे कमज़ोर रह सकता है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

जौ के बारे में हुकमाए क़दीम ने बड़े अहम तजुर्बे किए हैं। बू अली सेना ने लिखा कि जौ खाने से ख़ून पैदा होता है वह मोतदिल, सॉलेह और कम गाढ़ा होता है। फ़िरदौसुल हिकमत में लिखा है कि जौ को इसके वज़न से पंद्रह गुना पानी में इतनी देर हलकी आग पर पकाया जाए कि तीसरा हिसा उड़ जाए। यह पानी जिस्म की तक़रीबत सौ बीमारियों में मुफ़ीद है। शम्सुद्दीन समरक़ंदी इसे फ़वाइद के लिहाज़ से गंदम से कम तर दरजा देता है। मगर वह गंदम से फ़ज़ीलत देता है कि जिस्म की गर्मी और तपिश को कम करता है।

वैदिक तिब में इसे भारी पन को कम करने वाला चहरे को निखारने वाला पेट को कम करने वाला क़रार दिया जाता है। बदन को मज़बूत करता है। चूंकि यह जल्द हज़्म हो जाते है इसलिए कमज़ोरी और बदहज़्मी के मरीज़ों के लिए ग़िज़ा और दवा है। वैद इसे भूख बढ़ाने का बाइस मानते हैं। पेट से हवा निकालना और मुलय्यन है। इसका गर्म पानी पीने से गले की सोज़िश में कमी आती है।

इसका हरीरा क़ाबिज़ दवाओं के साथ दस्त रोकता है। जौ का आटा गूंध कर इसमें छाछ मिलाकर पीने से सुफ़रावी क़ै, प्यास की शिद्दत और मेदे की सोज़िश में फ़ाएदा होता है।

अतिब्बा ने आसाबी दर्दों औराम, सोज़िशों और ख़ारिश की मुख़तलिफ़

अक़साम में जौ के इस्तेमाल को मुफ़ीद बताया है। जौ का आटा सिरके में गूंध कर हर क़िस्म की ख़ारिश में लगाना मुफ़ीद है। सर की फफूंदी को दूर करता है। जौ के आटे को शहद के पानी में गूंध कर लेप करें तो बलग़मी औराम तहलील होते हैं। सफ़रजल (बही) का छिलका उतार कर इसे जौ और सिरके के साथ पीस कर जोड़ों के दर्द और आसाबी दर्दों पर लगाना नफ़ा आवर है। जौ के साथ तुख़्म ख़ियारैन पीस कर पिलोरसी, पिस्तान के दर्द पर लगाना मुफ़ीद है।

जौ और गेहूं की भूसी को पानी में उबाल कर इस पानी से कुल्लियां करें तो दांत का दर्द जाता रहता है।

जदीद तहक़ीक़ातः

अपने अफ़आल और असर के लिहाज़ से जौ मुक़व्वी गिज़ा, मक़ामी तौर पर क़ाबिज़ और तपिश को मक़ामी तौर पर तसकीन देने वाले हैं

अंग्रेज़ी जौ के चार बड़े चम्मच (2 औंस) चार सेर पानी में इतनी देर पकाए जाएं कि पानी निस्फ़ रह जाए यह पानी बुख़ारों की तपिश, पेशाब की जलन, मुकद के नासूर की जलन और आंतों की सोज़िश में मुफ़ीद होने के अलावा गिज़ाई कमी में भी मददगार है। इस पानी में दूध और खांड मिलाए जा सकते हैं। बाज़ लोग इसमें लीमूं निचोड़ लेते हैं अगर लीमू डाला जाए तो फिर दूध शामिल न किया जाए। इस नुस्ख़े का मुवाज़ना नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नुस्ख़े से करें तो इसकी उफ़ादियत में इज़ाफ़े की अच्छी राह निकल आती है। हुज़ूर सल्ल0 के नुस्ख़े में जौ का दलिया दूध और शहद पकाया जाता है। इसी तरतीब से जौ उबाल कर इनमें शहद मिला कर दिया जाए तो इसमें गिज़ाइयत भी बढ़ेगी और मक़ामी तौर पर ज़्यादा सुकून आवर होगी।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि रिवायत फ़रमाती हैं कि नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः

ان الخاصرة عرق الكليه اذا تحدك اذى صاحبها فداوها بالماء المحدق والعسل. (ابوداؤد مستدرک الحاکم۔ الحارث۔ ابونعیم)

(गुर्दे का मरकज़ इसकी जान है। अगर इसमें सोज़िश हो जाए तो जिसका गुर्दा है उसे बड़ी अज़िय्यत होती है। इसका इलाज उबले हुए पानी में शहद मिलाकर देने से करो।)

पानी को उबालते वक़्त अगर इसमें जौ भी शामिल कर लें तो फ़वाइद तीन-गुना हो जाएंगे। यह लज़ीज़ शर्बत गुर्दों की हमः अक़साम की सोज़िशों, मसाना की सोज़िश और मेदे के अलसर में किसी भी दवाई से ज़्यादा मुफ़ीद और फ़ोरी तौर पर मुअसिसर पाया गया।

भारती माहिरीने ज़च्चा के दस्तों में जौ के साथ मसूर की दाल को उबाल कर या यख़नी में जौ डाल कर देना कमज़ोरी के लिए भी मुफ़ीद बयान किया है। उन्होंने मेदा, आंतों और गले की सोज़िश के लिए यह नुस्ख़ा बड़ा मुजर्रिब बयान किया।

अंजीर ख़ुश्क (तोड़ कर)	2½ औंस
मुनक़्क़ा	2½ औंस
सफ़ूफ़ मुल्ठी	2 चम्मच

जौ का पानी 2 सेर

सादा पानी 1 सादा पानी

जब यह पानी पकने पर आधा रह जाए तो उतार कर छान लें। आधा प्याली चाय वाली गर्म दी जाए। यह नुस्ख़ा एक तारीख़ी नुस्ख़े से हासिल किया मालूम होता है। मक्का मुअज़्ज़िमा जब हज़रत सअद रज़ि0 बिन अबी विक़ास बीमार हुए तो इनके लिए हकीम हारिस बिन कुल्दा ने एक नुस्ख़ा तजवीज़ किया जिसे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मशवरे के बाद इस तरह तैयार किया गया।

अंजीर ख़ुश्क, मुलेहटी, मैथरे, शहद पानी।

यह फ़रीक़ा मरीज़ को नहार मुंह गर्म-गर्म पिलाया जाता है। भारती माहिरीन के नुस्ख़े में जौ की आमीज़िश है जबकि इस नुसख़े में मेथरे हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंजीर और मुनक़्क़ा को बयक वक़्त देने से मना फ़रमाया है। और यही वजह है कि भारती नुस्ख़े में अकसर मरीज़ों को इसहाल शुरू हो जाते हैं।

बाहर का दूध पीने वाले बच्चों को अगर दूध में जौ का पानी मिलाकर दिया जाए तो इनकी आंतें ज़्यादा तनोमंद रहती हैं। गुर्दा, मसाना और पेशाब की नाली की सोज़िश में भारती माहिरीन जौ के पानी में समग़ अरबी (कीकर की गोंद) का सफ़ूफ़ भी शामिल करते हैं जिससे जलन को जल्द आराम आजाता है। नबी सल्ल0 के नुसख़े के मुताबिक़ अगर जौ के पानी में शहद मिला कर दिया जाए तो इसके फ़वाइद ज़्यादा बेहतर होते हैं। इसी नुसख़े में हम ने तो इरशादे नबवी सल्ल0 की तामील में मुनक़्क़ शामिल किया। फ़ाएदा ख़ूब रहा। अगर इसके साथ कीकर की गोंद भी शामिल करें तो फ़ाएदा ज़्यादा बेहतर हो जाएगा।

मुंम्बई के माहिर ग़िज़ा डाक्टर हरीरा की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ यूरोप से आने वाले PEARL BARLEY की निस्बत देसी जौ ताज़ा होने की वजह से ज़्यादा बेहतर होते हैं। जौ के दाने और छिलके के दर्मियान विटामिन बी की ख़ासी मिक़दार मौजूद होती है। अगर जौ को धो कर छिलका उतारा जाए और इसके बाद उसे चमकाने के लिए चमड़े के रोलरों से पालिश किया जाए तो इस अमल से विटामिन बी ज़ाया हो जाती हे। पाकिस्तान के शिमाल मग़रिबी सूबे के जौ ग़िज़ाइयत के एतबार से विलायती जौ से ज़्यादा सेहत मंद और मुफ़ीद होत हैं।

नदकारनी ने जिस्मानी कमज़ोरी और ख़ासतौर पर बुख़ारों के बाद जौ का एक मुरक्कब पुडिंग की सूरत तैयार करने का नुस्ख़ा बयान किया है। जौ के बारीक आटे के चार बड़े चमचों में उबला हुआ दूध आहिस्ता-आहिस्ता मिलाकर लई सी बना लें। इसके ऊपर उबले हुए गर्म दूध के चाय वाले चार प्याले डाल कर हिलाया जाए। फिर इस में थोड़ा सा मक्खन मिलाएं एक बड़ा चमचा खांड मिलाएं। फिर इसमें संगतरे या नीबू के छिलके बारीक काट कर ख़ुश्बू के लिए मिलाएं। दूसरे बर्तन में दो अंडे तोड़ कर उन्हें बिलोनी या चमचे से इतना हिलाएं कि झाग-झाग हो जाएं। इन अंडों को दूध और जौ वाले बर्तन में मिला कर यह सारा मुरक्कब केक बनाने वाली भट्‌टी या ओवन में मिलाकर डेढ़ घंटे हलकी आंच पर पकाएं। बाज़ लोग इसके ज़ाएक़े को संवारने के लिए थोड़ा सा संगतरे का जूस भी मिला लेते हैं यह पुडिंग बड़ी

मुफ़ीद बताई जाती है। इस तवील नुसखे के मुक़ाबले में नबी सल्ल0 के तलबीना का नुसख़ा देखिए कि कटे हुए जौ में पानी डाल का उसे उबाल कर नर्म कर लें। या हस्बे ज़रूरत दूध और शहद में मिलालें। तलबीना या पुडिंग तैयार।

क़दीम यूनान में जब ओलम्पिक खेलें शुरू हुई तो खिलाड़ियों में तवानाई को पैदा करने के लिए जो ख़ास ख़ुराकें तजवीज़ की गईं इनमें जौ की रोटी ज़्यादा अहम थी।

ब्रिटिश फ़ारमाकोपिया ने जौ को भिगोकर फिर इससे कोंपलें निकल कर ज़्यादा फूटे हुए जौ से एक मुरक्कब MALT EXTRACT तैयार करने का नुस्ख़ा बताया। यह माल्ट एक्सट्रेट कमज़ोरी में मुफ़ीद है। इसमें गिज़ा को हज़्म करने वाले जोहर और विटामिन पाए जाते हैं।

ब्रिटिश फ़ार्माकोपिया ने इस माल्ट एक्सट्रेक्ट को बदमज़ा अदविया ख़ास तौर पर मछली के तेल में मिलाकर इसके ज़ाएक़े की इसलाह का मशवरा दिया है। हाल ही में एक पाकिस्तानी इदारे ने इसी माल्ट एक्सट्रेक्ट से सिरका तैयार किया है। इसमें सिरके के जुमला फ़वाइद के साथ–साथ जौ की गिज़ाइयत और माल्ट एक्सट्रेक्ट के हाज़िम असरात शामिल हैं।

हकूमत मुम्बई के महकमा ज़राअत ने जौ के आटे से गोले बनाकर इनको पकाने के बाद इज़ाफ़ा ख़ुराक के तौर पर इस्तेमाल करने का मशवरा दिया है। और इसी महकमे ने क़रार दिया है कि घोड़ों और मवेशियों के लिए जौ का भूसा एक अच्छी ख़ुराक है मगर इसकी अफ़ादियत गंदम से कम है। इसके बरअक्स पंजाब में घोड़ों की ख़ुराक में मक्की और जवी को तजुर्बात से ज़्यादा अफ़ज़ल पाया गया है।

शराब और जौ:

जौ के के पानी में ख़मीर उठाकर इसमें हाप्स के फूल डालकर बिअर शराब तैयार की जाती है। जिसमें एलकोहल की मिक़दार 3--8 फ़ीसदी के दरमियान होती है। यह मशरूब इंग्लिस्तान जरमनी और सिकंडे नीविया में मौसमे सरमा के दौरान भी बड़ी रगबत से इस्तेमाल किया जाता है। इन्ही मुमालिक में बाज़ नाख़्वांदा उलमा की राए में जौ का यह पानी जिसमें मामूली ख़मीर उठा हुआ इस्तेमाल करना हराम नहीं। क्यूंकि इसकी मामूली मिक़दार से सकर की कैफ़ियत पैदा नहीं होती। इस मशरूब को जब बाक़ाएदा कशीद किया जाए तो इससे व्हिस्की तैयार होती है जो कि तेजतरीन और मुनस्सी शराबों में सरेफहरिस्त है।

एलकोहल वाले तमाम मशरूबात के बारे में नबी सल्ल0 का बुनयादी उसूल यह है कि (इनकी मिक़दार ख़्वाह थोड़ी हो या ज़्यादा मतलक़न हराम है।)

एलकोहल और मनशियत में किसी बीमारी से कोई शिफ़ा नहीं। इनकी मामूली मिक़दार जिगर, दिमाग़ और गुर्दों को ख़राब करने की अहलियत रखती है। इसलिए इनको किसी भी सूरत में दवा क़रार देना तिब्बी नुक़तए नज़र से दुरुस्त नहीं।

जदीद मुशाहिदात:

अहादीस में जौ के फ़वाइद की रौशनी में मेदे और आंतों के अलसर के मरीज़ों को सुबह के नाशते में सरकारे दो आलम सल्ल0 के अज़ीम नुसख़े के मुताबिक़ तलबीना दिया गया। अलसर का हर मरीज़ दो से तीन माह में तंदरुस्त हो गया। एक ख़ातून को अलामात के ख़त्म होने पर यक़ीन न आया तो वह मज़ीद मुआएनों के लिए अमरीका गईं। वहां पर उन्हें बताया गया कि मेदे और आंतें मुकम्मल तौर पर ठीक हो चुके हैं जबकि बेहतरीन इलाज के ज़रिए यह मक़ाम दो साल से कम अरसे में नहीं आता।

पेशाब में ख़ून और पीप के मरीज़ों में वजह जो कोई भी हो मुनासिब इलाज के साथ जौ का पानी अगर शहद डाल कर पिलाया जाए तो यह तकलीफ़ पंद्रह रोज में ख़त्म हो जाती है । बाज़ औक़ात यही तरीक़ा पथरी निकालने का बाइस भी हुआ।

पुरानी क़ब्ज़ के लिए जौ के दलिया से बेहतर और महफ़ूज़ कोई दवाई देखी न गई।

हब्बुर्रिशाद...... अस्सफ़ा
WATER CRESS
LEPIDIUM SATIVUM

हब्बुर्रिशाद एक क़दीम दवाई है जिसका ज़िक्र पुरानी किताबों में मुख़्तलिफ़ नामों से मिलता है। मुहद्दिसीन ने इसे हर्फ़ का नाम दिया है। जबकि अहादीस में इसे अस्सफ़ा का नाम मेयस्सर है। यह आधा मीटर से कम बुलंदी की झाड़ियां हैं जो सारे ऐशिया में काश्त की जाती हैं। इसके पत्तों को खाने में सलाद के तौर पर शौक़ से खाया जाता है। कहते हैं कि इस पौधे का असल वतन हबशा है। जहां से लोग इसे फ़वाइद की बिना पर एशियाई मुल्कों में ले आए। इसके पत्तों का जोशादा बड़े शौक़ से पिया जाता है। अरब में इन सूखे हुए पत्तों को 'अशीह' कहते हैं। अफ़ग़निस्तान की एशीह ज़्यादा ख़ुश्बूदार होती है। मज़ार शरीफ़ के इलाक़े में पाए जाने वाली यह घास क़हवा में इस्तेमाल होती है। आजकल पाकिस्तान के बाज़ारों में अफ़ग़ानिस्तान क़हवा के नाम से बड़ी मक़बूल हो रही है। जिसकी ज़्यादा वजह इसकी इलायची के मानिंद ख़ुश्बू है। योरोप में इसे CARDEN CRESS कहते हैं।

इन झाड़ियों को फलियां लगती हैं जिनमें गुलाबी रंग के छोटे-छोटे बीज होते हैं। इन बीजों को हब्बुर्रिशाद हालियों या हर्फ़ कहते हैं। बाज़ अतिब्बा ने इसे जरजीर भी क़रार दिया है। जरजीर असल में ERUCA SATIVA है जिसे सफ़ेद सरसों भी कहते हैं और यह इसी की अक़साम में से है। नबी सल्ल0 से मुहम्मद अहमद ज़हबी रह0 ने एक रिवायत मंसूब की है।

"الجرجير بقلة خبيثة، كانّي تنبت فى النار" (الطب النبوی)

(जरजीर एक अज़िय्यत देने वाली नबातात है। मुझे ऐसा लगता है कि जैसे कि यह आग से पैदा होती है)

अहादीस में हब्बुर्रिशाद की तारीफ़ की गई है। जबकि जरजीर की शदीद मज़म्मत की गई है। इन दो चीज़ो से भी दोनों का अलाहिदा होना वाज़ेह हो जाता है।

इरशादाते नबवी सल्ल0

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि0 और हज़रत अबान बिन सॉलेह बिन अनस रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

بحزو بيوتكم بالشيح والمرو الصعنز. (بیہقی شعب الایمان)

(अपने में हब्बुर्रिशाद। मर और सअ़तर से धूनी देते रहा करो।)

इसी मुअल्लिफ़ ने अब्दुल्ला बिन जाफ़र से एक रिवायत नक़ल की है। बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

بحزو بيوتكم باللبان والشيح (بیہقی سعب الایمان)

(अपने घरों में लोबान और हब्बुर्रिशाद की धूनी देते रहा करो)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः

عليكم بالثفاء فان الله جعل فيه شفاء من كل داء (ابن السنی۔ ابونعیم)

(तुम्हारे पास अस्सफ़ा मौजूद है। इसमें अल्लाह तआला ने हर बीमारी से शिफ़ा रखी है।

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः

ماذاد فی الامرّین من الشفاء الشفاء والصبر (ابوداؤد)

(क्या तुम नहीं जानते कि किन दो कामों में शिफ़ा है। अस्सफ़ा और सब्र में) (यही रिवायत हज़रत क़ैस बिन राफ़े अलक़ैसी से भी मज़कूर है।)

मुहद्दिस अबूउबैदा रह0 कहते हैं कि अस्सफ़ा से मुराद हर्फ़ है। मुहम्मद अहमद ज़हबी इसी तहक़ीक़ को अबू अब्दुल्लाह से भी मंसूब करते हैं। अबू हनीफ़ा रह0 दीनोरी अस्सफ़ा की तशरीह में बयान करते हैं।

"هذا هو: الحب الذى يتداوى به، وهو: الثفاء، الذى جاء فيه الحبر عن النبى صلى الله عليه وسلم: ونباته يقال له: الحرف، وتسميه العامة: حبّ الرشاد."

(यह वह बीज हैं जिनसे लोग इलाज करते हैं। इसे अस्सफ़ा कहते हैं यह वही है जिसके मुताल्लिक़ नबी सलल्लाहो अलैहि वसललम ने इरशाद फ़रमाया। यह वह नबातात हैं जिसे हर्फ़ कहते हैं और अवामुन्नास में हब्बुर्रिशाद के नाम से मशहूर है।)

अतिब्बा क़दीम में सब ही ने अस्सफ़ा को हर्फ़ और हब्बुर्रिशाद क़रार दिया है। तिब्बे नबवी सल्ल0 के मुतक़मीन मुहम्मद बिन अबू बकर इब्नुलक़ैम और मुहम्मद अहमद ज़हबी ने भी इसे हर्फ़ के उनवान से बयान किया है। मुहक़्क़ीन जदीद में नदकारनी ने हर्फ़ को हब्बुर्रिशाद क़रार दिया है। अलबत्ता कर्नल

चोपड़ा ने हर्फ़ का तज़किरा नहीं किया।

सिब्र से मुराद मिस्बिर है। जिसकी ताईद में अबूदाऊद ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 से रिवायत बयान की।

"دخل علي رسول الله صلى الله عليه وسلّم حين توفي ابو سلمة جعلت الى صبراً فقال: ماذا يا ام سلمة؟ فلقت: انما هو صبر يا رسول الله، ليس فيه طيب. قال: انهٔ يشب الوجه، فلا تجعليه الابالليل. ونهى عن النهار.

(अबू सलमा रज़ि0 की वफ़ात के बाद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो उन्होंने सिब्र मेरे सामने रखा और पूछा कि यह क्या है? मैंने अर्ज़ की कि यह सिब्र है और इसमें ख़ुश्बू नहीं उन्होंने फ़रमाया कि यह चेहरे को निखारता है। लेकिन इसे रात के अलावा न लगाना। उन्होंने इसे दिन को लगाने से मना किया है।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

इसकी धूनी कीड़ों–मकोड़ों को हलाक कर देती है इसे शहद में मिलाकर अगर पेट पर लेप किया जाए तो तहाल के वरम को दूर करती है। इसका जोशांदा सिर में डालने से गिरते बाल रुक जाते हैं। इसे जौ के आटे में मिलाकर सिरके में हल करके किसी चोट या वरम पर लेप किया जाए तो पट्ठों की अकड़न और अर्कुन्निसा को दूर करती है। इसे पानी में घोल कर फुंसियों पर लगाया जाए तो वह बैठ जाती हैं। इसी तरह यह कमर और कूल्हों के दर्द में भी मुफ़ीद है। अगर इसे जलाकर बर्स पर लगाया बल्कि साथ खिलाया भी जाए तो इसे दूर करता है। फुलबहरी के अलावा इसका लगाना छीप में भी मुफ़ीद है।

जालीनूस के हवाले से इसे इब्नुल क़य्युम रह0 कहते हैं कि यह राई की मानिंद है। इसलिए फ़वाइद भी तक़रीबन एक जैसे हैं यह तबीअत की ठंडक को दूर करती है। और पेट से छोटे बड़े तमाम कीड़े निकाल देती है। कुव्वते बाह में इज़ाफ़ा के साथ तिल्ली के वरम को दूर करती है।

इसे मेंहदी के पत्तों के साथ पकाकर पिया जाए तो सीने के अंदर जमी हुई बलग़म को उखाड़ कर निकाल देती है। इसी जोशांदे को पीने से क़ीड़ों के काटे का ज़हर उतर जाता है। इसका खाना भूख बढ़ाता है। दमे के दौरे को कम करता है। सांस की नालियों को खोलता है। फेफड़ों को साफ़ करता और पट्ठों की अक़ड़न को दूर करता है। इसके पीने के बाद बलग़म पतली होकर निकल आती है। अगर हैज़ का ख़ून कम आ रहा हो तो इसको बढ़ा देती है।

हब्बुर्रिशाद का जोशांदा गर्म–गर्म पीने से क़ब्ज़ दूर होती है। पेट से रियाह निकल जाते है। और क़ौलंज की दर्दों को दूर कर देती है। इसके गर्म पानी से कुल्लियां करने से मसूढ़ों की सूजन जाती रहती है और यह पानी अगर सर में डाला जाए तो सर से फफूंदी और बफ़ा निकल जाते हैं।

कीमयावी माहियत:

हब्बुर्रिशाद के बीजों में एक गाढ़ा नबाताती तेल होता है और दूसरा फ़राज़ी

यानी VOLATILE OIL होता है। इसके अनासिर तर्कीबी में कोबाल्ट आयोडीन, फ़ास्फ़ोरस, पोटाशियम और गंधक के अलावा कई एक मादनी नमक और विटामिन बी पाए जाते हैं इसमें लेसदार माद्दे और कड़वे अनासिर भी शामिल हैं। इसमें लहमियात का सुराग़ भी मिला है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

भारत के सूबा उत्तर प्रदेश और पंजाब में इसे हालियों कहते हैं इस के सौ तोला बीजों से 57 तोला तेल निकल सकता है। अगर्चे यह ख़ुदरौ भी होती है। लेकिन वैदिक तिब की भोज चिकित्सा और "तालीफ़ शरीफ़" में मज़रूआ क़िस्म के फ़वाइद के लिहाज़ से बेहतर क़रार दिया गया है।

इसका लेप चहरे से दाग़ धब्बे उतार देता है। बग़लों की बू को रफ़ा करता है। और दाद और छीप में मुफ़ीद है।

इन बीजों को अंडे की ज़रदी के साथ खाने से जिस्म फ़रबा हो जाता है। यह बीज मुक़व्वी बाह हैं बच्चे वाली औरतों के दूध में इज़ाफ़ा करते हैं। बाज़ अतिब्बा ने इसके बीजों को दूध में उबाल कर पिलाने से औरतों के दूध में इज़ाफ़े की निशांदही की है। वैदों ने इसको मुसफ़्फ़ी ख़ून क़रार दिया है।

इसके बीज पीस कर खाने या इनका जोशांदा पीने से सीने में रुकी हुई बलग़म निकल जाती है। सर्दी की वजह से जो भी आरिज़ा हो दूर हो जाता है। मेदे का दर्द रफ़ा हो जाता है मेदे में कुव्वत आ जाती है। हामला औरत को यह जोशांदा देना नुक़सानदह हो सकता है। इसके जोशांदे से ज़ुकाम रफ़ा हो जाता है। यह हल्की और मुलय्यन है मगर आंवल के दस्तों को रोकती है। वर्मों को तहलील करती है। इसका पीना सोज़िश और खुजली के असरात को दूर करता है। अंदामे निहानी और बग़लों से आने वाली बदबू को ठीक कर देता है।

इसकी टहनियों का जोशांदा पीने से सूखी खांसी और दमे को फ़ाएदा होता है। इसके शर्बत से बवासीर में बहने वाला ख़ून रुक जाता है।

हब्बुर्रिशाद का जोशांदा बनाने की सक़्क़ा तर्कीब यह है कि इसके दो तोला बीज नीमकोब करके इसके साथ नीमकोब पोने चार माशा मुलैठी शामिल कर ली जाए। फिर साढ़े बारा छटांक पानी में डाल कर बर्तन को पूरी तरह गुले हिकमत कर दिया जाए। इस तरह दस मिनट पकाने के बाद उतार कर छान लें।

जदीद मुशाहिदात:

भारती हकूमत के महकमा तिब की सरकारी किताब में इसे मुनफ़्फ़स, बलग़म, मुशतही, मदरबोल व मदर हैज़ और मुहर्रिके बाह क़रार दिया गया है। जिसकी वजह से इसे सुआल, दमा, ज़अफ़े हज़्म इश्तिहा, ज़अफ़े बाह, एहतिबास बोल, पेशाब की कमी और हैज़ की कमी में मुफ़ीद क़रार दिया गया है।

इसे छीप और बर्स पर लगाना मुफ़ीद है। इसके पत्ते पेशाब और दूध लाते हैं। भाओ प्रकाश के नुस्खे के मुताबिक इसके बीजों को पानी की आठ गुना मिक़दार में आधे घंटे उबाल कर पानी के दो बड़े चम्मच उस वक़्त देते रहें जब तक कि हिचकी दूर न हो जाए। बीज पीस कर इनमें खांड मिलाकर इस्हाल और बदहज़मी में मुफ़ीद है। भारत में आम कमज़ोरी के लिए इसे खांड मिला कर घी

में भून कर सर्दी के मौसम में बतौर मुकव्वी इस्तेमाल करते हैं। हुब्बुर्रिशाद को दूध में पकाकर इसकी फ़िरनी सी बना ली जाती है। इसको खाने से दूध में इज़ाफ़ा होता है जिसमानी दर्द में ठीक हो जाती है। सैलानुर्रहम में फ़ाएदा होता है। अतिब्बा के नज़दीक यह फ़िरनी मादा मुनव्विया को गाढ़ा करती है। जबकि एक बरतानवी मुहक़्क़िक़ BELLEW ने मुशाहिदा किया है कि दूध में हब्बुर्रिशाद मिलाकर पका कर देने से हामला औरतों को इस्तिक़ात हो सकता है। इसलिए यह दवाई हामला औरतों को न दी जाए।

ताज़ा पत्तों में हयातीन "जे" काफ़ी मिक़दार में होती है। उत्तर प्रदेश के लोग इसके साथ गंदम, जाएफ़ल, जलोतरी, इलाएची ख़ुर्द और ज़ाफ़रान दूध में पकाकर बरफ़ी की तरह की डलियां बना लेते हैं जिनको सर्दी के मौसम में ज़अफ़े बाह और रहम को ठंडक से महफ़ूज़ रखने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

बैरूनी इस्तेमाल में लीमूं के अर्क़ के साथ हब्बुर्रिशाद का सफ़ूफ़ ओराम को दूर करने में मुफ़ीद है। जर्मनी के डाक्टर HONIG-BERGER ने इसे दमे में मुफ़ीद पाया।

सऊदी अरब में अश्शीह का क़हवा दवा के तौर पर बड़ा मक़बूल है। अगर किसी के पेट में दर्द हो यह दर्द ख़्वाह किसी वजह से भी हो उसे अश्शीह का क़हवा पिलाया जाता है अजीब बात यह है कि दर्द मिंटों में जाता रहता है।

हब्बुर्रिशाद को मर और सअ़तर के साथ कोयलों पर डाल कर कमरों में जब धूनी दी गई तो हर क़िस्म के कीड़े मकोड़े हलाक हो गए। बाज़ार में मिलने वाली तमाम कर्मकश अदविया से यह नुस्ख़ा ज़्यादा मुफ़ीद और महफ़ूज़ है।

हिना-हिना HENA
LAWSONIA ALBA

मेहंदी का पौधा दो मीटर के क़रीब बुलंद और हिंद--पाकिस्तान में हर जगह पाया जाता है। इसे आमतौर पर घरों और खेतों के इर्द-गिर्द बाड़ लगाने के लिए लगाया जाता है। रात को ख़ुश्बू देता है। भारत में फ़रीदाबाद और पाकिस्तान में भीरा और हैदराबाद की मेहंदी ज़्यादा मक़बूल है। इस पौधे के पत्ते, शाख़ें और फूल दवा और ज़ेबाइश के लिए इस्तेमाल होते हैं।

इरशादाते नबवी सल्ल0:

उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 रिवायत करते हैं।

كان لايصيب رسول الله قرحة ولاشوكة الاوضع عليها الحناء. (ترمذی۔مسنداحمد)

(सलमा नाम की मुनासबत से यह बात मुख़्तलिफ़ किताबों में सलमा रज़ि0 जो कि उम्मे राफ़े और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ादमा थीं से भी मुरव्वी बताया गया है।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़िंदगी में न तो ऐसा कोई ज़ख़्म हुआ और न ही कांटा चुभा जिस पर मेंहदी न लगाई गई हो।

ان رسول الله صلى الله عليه ماشكا اليه احد وجعاً فى راسه، الاقال: احتجم،

ولاشكا اليه وجعاً رجليهم الاقال له: اختصب بالحناء (بخاری، ابوداؤد)

(रसूलल्ला सल्ललाहो अलैहि वसल्लम के पास जब कोई सर दर्द की शिकायत लेकर आया तो आप ने इसे पछने लगवाने की हिदायत फ़रमाई और जो पैरों में दर्द की शिकायत ले कर आया तो आपने इसे मेहंदी लगाने का मशवरा दिया।)

एक दूसरी रिवायत में सर दर्द के लिए भी मेंहंदी तजवीज़ फ़रमाई गई। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं।

قال النبی صلی الله علیه وسلم ان الیهو دوالنصرىٰ لایصبغون فخالفوهم. (مسلم۔ بخاری)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यहूदी और ईसाई ख़िज़ाब नहीं करते तुम इनकी मुख़ालफ़त करो)

दूसरे राावियों के ज़रिये यही इरशाद निसाई और तिर्मिज़ी ने बयान किया है। उसमान बिन अब्दुल्ला इब्ने मोहिब बयान करते है।

ارسلنی اهلی الیٰ ام سلمة بقدح من ماء و قبض اسرائیل ثلث اصابع من قصبة فیه شعرٌ من شعر النبی صلی الله علیه وسلم و کان اذا اصاب الانسان عین اوشیٍ بعث الیها محضبه ناطلعت فی الجحل فرایت شعراتٍ حمزاً (بخاری)

(मेरे घर वालों ने मुझे पानी का प्याला दे कर उम्मुल मोमिनीन सलमा रज़ि० के पास भेजा।

(इस पर हदीस के रावी इसराईल ने अपनी तीन उंगलियाँ बंद करके कहा कि यह प्याला चांदी का था) इसमें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बालों में से चंद बाल थे। अगर किसी को नज़र लग जाती या कोई और तकलीफ़ होती तो वह प्याले में पानी उम्मे सलमा को रवाना करता। (जिसमें वह प्याली डुबो देती थीं।) मैंने झोले में झांक कर देखा कि वह बाल सुर्ख़ थे।)

यह हदीस दूसरे वास्तों से बुख़ारी मुहद्दिसीन ने तवातुर से नक़्ल की।

अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत है कि अब्दुर्रहमान बिन अस्सौद यगूस इनका हम जलीस था। इसके सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे एक रोज़ सुबह आया तो बालों पर सुर्ख़ ख़िज़ाब (मेहंदी) लगी थी। लोगों ने इसकी तारीफ़ की तो बताया कि मेरी मां आएशा रज़ि० ज़ौजह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी लौंडी नख़ीला के हाथ क़सम दे कर हुक्म दिया कि मैं अपने बाल रंगूं। और फ़रमाया कि अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० भी ख़िज़ाब लगाया करते थे।

(मौता इमाम मालिक रह.)

बुख़ारी और तिर्मिज़ी में हज़रत अनस रज़ि० बिन मालिक की रिवायत से पता चलता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सरे मुबारक में सफ़ेद बालों की तादाद बीस से कम थी। इसकी गिंती में

तिर्मिज़ी के पास जाबिर रज़ि० की इज़ाफ़ी शहादत भी मौजूद है।

अब्दुल्ला रज़ि० बिन उमर भी इनके हमनवा हैं।

سئل ابو هريرة هل خضب رسول الله صلى الله عليه وسلم، قال نعم. (ترمذ)

(अबू हुरैरा रज़ि० से किसी ने पूछा कि क्या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़िज़ाब लगाया करते थे। उन्होंने फ़रमाया हां)

बशीर रज़ि० बिन हज़ासिया की बेगम जहज़्मा रज़ि० रिवायत करती हैं।

روايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يحزج من بيته ينعض راسه وقد اغتسل وبراسه روغ اوقال ودغ من حناء. (ترمذی)

(मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसललम को घर से निकलते देखा वह गुस्ल करके तशरीफ़ ला रहे थे इसलिए अपने सर को झाड़ रहे थे। आप के सर पर मेहंदी का रंग नज़र आ रहा था।

अब्दुल्ला बिन अब्दुर्रहमान, उमरू बिन आसिम और रहमान बिन सल्लमहू ने इमाम ईसा तिर्मिज़ी की रिवायत के मुताबिक़ अनस रज़ि० बिन मालिक के पास नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाल देखे जिन पर ख़िज़ाब लगा हुआ था।

वासिलत रज़ि० रिवायत करते है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

عليكم بالحناء فانه ينور رؤسكم ويطهر قلوبكم ويزيد فى الجماع وهو شاهد فى القبر (ابن عساكر)

(तुम्हारे पास मेहंदी मौजूद है। यह तुम्हारे सिरों को पुर नूर बनाती है। तुम्हारे दिलों को पाक करती है। क़ुव्वते बाह में इज़ाफ़ा करती है और क़ब्र में तुम्हारी गवाह होगी)

अबी राफ़े रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं।

كنت عند النبى صلى الله عليه وسلم اذمسح يده على راه ثم قال: عليكم بسيد الخصاب الحناء، يطيب البشره، ويزيدفى الجماع (ابونعيم)

(मैं बारगाहे रिसालत में हाज़िर था। हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने अपना हाथ सर पर फेरते हुए फ़रमाया तुम्हारे लिए तमाम ख़िज़ाबों की सरदार मेंहंदी है। जो के चहरेको निखारती है और क़ुव्वते बाह में इज़ाफ़ा करती है।) हज़रत अनस रज़ि० बिन मालिक रिवायत करते हैं।

اخضبوا بالحناء فانه يزيد فى شبابكم وجمالكم ونكاحكم (ابونعيم)

(मेंहंदी का ख़िज़ाब लगाओ कि यह जवानी को बढ़ाती हुस्न में इज़ाफ़ा करती और बाह को बढ़ाती है।)

हज़रत अबू ज़रग़फ़ारी रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ان احسن ماغيرتم به الشيب الحناء والكنتم، ويكره السواد

(ابوداؤد۔ترمذی،نسائی،ابونعیم،ابن ماجہ)

(बुढ़ापे को बदलने की बेहतरीन तर्कीब मेहंदी और वसमा हैं। मगर

उन्होंने स्याह रंग से नफ़रत फ़रमाई।)

कतम के पत्ते ज़ैतून की मानिंद होते हैं। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि0 और कतम का ख़िज़ाब लगाया करते थे। (बुखारी मुस्लिम) मुस्लिम की रिवायत के मुताबिक़ जब हज़रत अबूबकर रज़ि0 के वालिदे मोहतरम फ़तेह मक्का वाले दिन दरबारे रिसालत में हाज़िर हुए तो उनकी सफ़ेद दाढ़ी देख कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि इनको मेहंदी और वसमा लगाया जाए। मगर इससे वह वसमा मुराद नहीं जो हमारे यहां आमतौर पर मिलता है। जिससे बालों का रंग बिलकुल सियाह हो जाता है। कतम का एक हिस्सा तीन गुना मेहंदी में मिलाकर ख़िज़ाब लगाया जाए तो मेहंदी की सुर्ख़ी गहरे बादामी रंग में तब्दील हो जाती है।

मेहंदी के बारे में एक ग़लत फ़हमी:

करीमा बिंते हुमाम रज़ि0 रिवायत फ़रमाती हैं

ان امـراة سالت عائشةؓ عن خضاب الحناء فقالت لاباس. ولكنّى اكرمه كان حبيبى يكرهٗ ريحه. (ابوداؤدالنسائی)

(एक औरत ने हज़रत आइशा रज़ि0 से मेंहंदी का ख़िज़ाब लगाने के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कोई मज़ाइक़ा नहीं लेकिन मैं इसे इसलिए पसंद नहीं करती कि मेरे महबूब (नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को इसकी बू नापसंद थी)

अल्लामा शिबली नोमानी रह0 ने इस हदीस को सनद बनाकर मेंहंदी लगाने को नापसंदीददा क़रार दिया। जबकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मेंहंदी लगाना मुतअद्दिद अहादीस से साबित है। हज़रत आइशा रज़ि0 ही से रिवायत है।

قـالـت اومـت امـراةٌ من وزاء ستربيدها كتابٌ الى رسول الله صلى الله عليه ولسـم فـقـبـض الـنـبى صـلـى الله عليه وسلم يدهٗ فقال مادرى ايدرجل اويد امداة قات بل امراة قال لو كنت امراة تغيرن اظفارکِ يعنى بالحناء .

(ابوداؤد۔النسائی)

(एक औरत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को परदे के पीछे से ख़त देने लगी उन्होंने अपना हाथ खींच लिया और फ़रमाया मैं नहीं जानता कि यह हाथ मर्द का है या औरत का। उसने कहा कि औरत का। फ़रमाया कि अगर तू औरत है तो फिर कम अज़ कम अपने नाख़ुन ही महंदी से रंग लेती।)

इन्ही दो किताबों से यह हदीस इस अम्र का सबूत है कि करीमा बिंत हुमाम रज़ि0 वाली हदीस मुश्तबा है।

कुतुबे मुक़द्दिसा:

मेहंदी ज़माना क़ब्ल अज़ तारीख़ से मुस्तैमिल है। मिस्र क़दीम में इसे मक़बूलियत हासिल थी। मिस्री औरतें चूना मिलाकर इसे हाथों और बालों पर लगाती हैं। माबदों में लोबान और दूसरे अज्ज़ा के साथ मेहंदी मिलाकर ख़ुश्बू के लिए जलाई जाती थीं। माहिरीन मिस्रियात का ख़याल है कि आराइश जमाल

के अलावा मेंहंदी का इस्तेमाल बरकत हासिल करने के लिए किया जाता था। फ़राईन मिस्र मेंहंदी को पसंद करते थे। वह ख़ुद महंदी लगाते थे महंदी में रंगे कपड़े इस्तेमाल करते थे अपनी ख़वातीन के जिस्म से मेंहदी की ख़ुश्बू पसंद करते थे और मरने के बाद अपने मक़ाबिर में मेंहंदी के पत्ते ख़ुश्बू और कीड़ों–मकोड़ों को दूर रखने के लिए इस्तेमाल करते थे। जब क़दीम मक़बरों को अब खोला गया तो अकसर बादशाहों के कफ़न महंदी से रंगे हुए मिले और यह रंगाई इन पत्तों से अलावा थी जो ताबूतों में रखे गए थे।

यहूदी उलमा को मेंहदी का रंग और ख़ुशबू नापसंद थे। इसलिए जब बनी इसराईल दरियाए नील के किनारे पहुंचे तो इन उलमा ने ख़वातीन को मेंहंदी लगाने से रोक दिया। यही कैफ़ियत ईसाई उलमा की रही है। इनकी मेंहंदी से नफ़रत उन्हें बुढ़ापे में ख़िज़ाब लगाने से माने रही है। हालांकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की कलीसाई तस्वीरों में उनकी ज़ुलफ़ों और दाढ़ी पर मेंहदी का रंग ग़ालिब मालूम होता है।

इसी पसे मंज़रे के पेशे नज़र पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसललम ने फ़रमाया मेंहदी लगाकर यहूदियों और ईसाइयों की मुख़ालफ़त करो।

यूनानी हुकमा मेंहदी से वाक़िफ़ थे। बुक़रात ने करोमा नाम की जिस नबातात का ज़िक्र किया है अतिब्बा ने उसे मेंहंदी क़रार दिया है। किंग जेम्स ने जब तौरैत और इंजील का तर्जुमा किया तो मेंहंदी के लिए कैमफ़ाइर का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया जबकि यूनानी ज़बान में इसे कपरस कहा जाता है।

महंदी को हिंदू मज़हब, जैन मत और बुद्ध अक़ाइद में अहमियत रही है। मंदिरों में जलाई जाने वाली ख़ुश्बुओं में मेंहदी मिलाई जाती रही है। दुलहन के हाथों में मेंहदी और बाज़ ख़वातीन सुहाग की मांग भरने में सिंदूर के साथ मेंहदी भी मिलाती रही हैं। क़दीम संस्कृत किताबों में मेहंदी का ज़िक्र इतनी अहमियम साथ मिलता है कि दुलहन के सरपर सोने के साथ मेंहंदी के पत्तों का हाशिया लगाकर उमरा अपनी बेटियों को ताज पहनाते थे।

तौरेत मुक़द्दस में मेंहदी का ज़िक्र मुतअद्दिद मक़ामात पर आता है।

मेरा महबूब मेरे लिए ऐन जदी के अंगूरिस्तान से मेंहदी के फूलों का गुच्छा है।

(ग़ज़ल अलग़ज़लात ब–14–15–1)

दूसरी जगह इसी किताब में मज़कूर हुआ।

तेरे बाग़ के पौधे लज़ीज़ मेवा दार अनार हैं। मेंहदी और सुंबुल भी हैं। (ब–13–4)

कीमयावी साख़्त:

इसके पत्तों में 12–15 फ़ीसदी रंग होता है। जो कीमयावी सनअत में HENNA DYE के नाम से मुस्तेमिल है। इसमें पीले रंग की एक गोंद पाई जाती है जो कि अलकोहल और ईथर में हल पज़ीर है। मक़ामी तौर पर क़ाबिज़ टानिक एसिड की क़िस्म HANNO-TANNIC ACID पाया जाता है। इसके अलावा एक GLUCOSIDE भी मौजूद है।

इसकी कीमयावी साख़्त की रौशनी में दरख़्त के अज्ज़ा के अमल को

कीमयादानों ने यूं तख़सीस किया हैं दरख़्त की छाल मक़ामी तौर पर क़ाबिज़, मिस्किन और मफ़रूह है। जबकि इसके पत्ते दाफ़े तअफ़्फ़ुन, बदबू को मारने वाले, मुहर्रिक हैं। मेंहदी के फूल ठंडक पैदा करने और ख़ाब आवर हैं। इसकी जड़ें छाल की मानिंद हैं जबकि इसके बीज दाफ़ तअफ़्फ़ुन हैं

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जानिब से मेंहदी की बार-बार तारीफ़ और इमाम बुख़ारी रह० की जानिब से किताबुत्तारीख़ की इस रिवायत

مامن شجرة احب الى الله من الحناء

अल्लाह के नज़दीक दरख़तों में सबसे प्यारा मेंहदी का पौधा है के बाद मुहद्दिसीन ने पूरी तवज्जह और अहमियत दी। असहाब रज़ि० और ताबईन में अबू बकर रज़ि०, उमर रज़ि०, अबू उबैदा रज़ि० मोहम्मद इब्नुलहनीफ़ा रह० मुहम्मद इब्ने सीरीन रह० अपने बाल मेंहदी से रंगते थे।

मुहद्दिस अब्दुल्लतीफ़ रह० बग़दादी कहते हैं कि इसका आतिशी रंग दिल पसंद होता है। इसका रंग और ख़ुश्बू मुहर्रिक आसाब हैं। इसके लगाने से आसाब को तहरीक होती है। अब्दुल्लतीफ़ का यह मुशाहिदा महज़ ख़याल आराई नहीं बल्कि जदीद नफ़सियात में मुख़्तलिफ़ रंगों और ख़ुश्बुओं के बसरी और ज़हनी असरात के बारे में ख़ासी तहक़ीक़ हुई है। और अब यह बात साबित है कि ख़ुश्बू और रंग आसाब और बाह को तहरीक देने की अहलियत रखते हैं। इसके लगाने से नाख़ुनों का फटना ठीक हो जाता है।

मोहम्मद अहमद ज़हबी रह० बयान करते हैं कि किसी भी ज़ख़्म के इलाज का बुनयादी उसूल यह है कि इस में मौजूद रतूबत निकल जाए मज़ीद पैदा न हो और इसमें तंदरुस्त गोश्त पैदा होकर शिगाफ़ को भर दे. मेंहदी के असरात में यह तीनों सिफ़ात बदरजा उत्तम मौजूद हैं। मेंहदी के पत्तो रात पानी में भिगोकर सुबह निचोड़ कर इनका रस मिलाकर अगर चालीस दिन लगातार पिया जाए तो यह न सिर्फ़ जज़ाम का इलाज है बल्कि ज़ख़्मों को मुंदमिल कर देगा।

हाफ़िज़...... अपने तजुर्बात में बयान करते हैं कि यह आग से जले हुए का बेहतरीन इलाज है इसको पानी में मिलाकर अगर ग़रारे किए जाएं तो गले, मुंह और ज़बान के तमाम ज़ख़्मों और मुह पक जाने में अज़हद मुफ़ीद है। इसका लेप गर्म फोड़ों और सोज़िशों को कम करता और अगर फोड़े में पीप न पड़ गई हो तो इसे मुंदमिल कर देता है। अगर इसमें गर्म करके मोम और गुलाब का तेल मिलाकर सीने के इतराफ़ और कमर दर्द वाले मक़ाम पर लेप करें तो दर्द जाता रहता है।

यह हक़ीक़त मुजर्रिब और आज़मूदा चेचक के मरीज़ के पैरों के तलवों पर अगर मेंहंदी सुबह-शाम लगाई जाए तो इसकी आंखें बीमारी से महफ़ूज़ रहती हैं और चेचक के आबले जल्द ख़ुश्क हो जाते हैं

अगर इसके पत्ते गर्म कपड़ों में रखे जाएं तो इनको कीड़ा नहीं खाता। इसकी एक अजीब सिफ़त यह है कि इसका ख़सारा शकर मिलाकर अगर चालीस दिन पिया जाए तो इब्तिदाई जज़ाम ठीक हो जाता है। इस जूस के साथ मरीज़

को मुर्गी का गोश्त खाना चाहिए।

मेंहदी को अगर नाख़ुनों पर बाक़ाएदा लगाया जाए तो इनको चमकदार और ख़ूबसूरत बनाती है। पैरों पर लगाने से इनकी जिल्द नर्म होती और टांगों की फुंसियां मुंदमिल हो जाती हैं। वह नाख़ुन जो चोट लगने से सियाह पड़ जाए या फफूंदी लग जाने से मुतवरम हो जाए इस पर महंदी लगाने से नया नाख़ुन साफ़ और ख़ूबसूरत निकलता है। इस ग़र्ज़ के लिए हमारे तजुर्बात के मुताबिक़ अगर महलूल में थोड़ा सा सिरका मिला लें तो फ़ाएदा जल्द हासिल हो जाता है।

अतिबाए क़दीम के मुशाहिदात:

चीनी तरीक़ए इलाज में मेंहदी का ज़िक्र पहली मर्तबा शाह कियासंग KIATSUNG की मुरत्तिबा किताबुल अदविया में बतौर मुक़व्वी मिलता है। अतिब्बा यूनान इसके क़दरदान थे जालीनूस ने मेंहंदी का लेप लगा कर चेचक के मरीज़ों की आंखें बचाने का नुस्ख़ा बयान किया है। मिस्र, भारत, मश्रिक़े वुस्ता और उंदलस में इसे अहमियत हासिल थी। यूरोप में इसका पहला ज़िक्र ब्रिटिश फ़ार्माकोपिया की पहली इशाअत में मिलता है जिनके मुताबिक़ इसके ताज़ा पत्ते कूट कर मेदा के अलसर और पेचिश के लिए मुफ़ीद बताए गए।

इब्ने ज़ुहर कहता है कि नाख़ुन अगर टेढ़ा हो जाए तो महंदी के पत्ते पीस कर मक्खन में मिलाकर लगाने से ठीक हो जाता है। आग से जले हुए पर इसको पीस कर लगाना मुफ़ीद है। मेंहदी को रौग़ने ज़ैतून में मिलाकर लगाने से सर की फुंसियां ठीक हो जाती हैं।

हकीम कबीरुद्दीन ने मेंहंदी को मुसफ़्फ़ी ख़ून क़रार दिया है। मसीहुल मुल्क हकीम अजमल ख़ां ने कसरते हैज़ की एक ऐसी मरीज़ा को जिसका ख़ून पूरा महीना जाता रहता था को मेंहंदी और पखां पीस कर दी। यह मुरक्कब पानी में हल करके इसकी हथेलियों पर लेप किया गया। कहा जाता है कि जरयान ख़ून दस मिनट में बंद हो गया। फोड़े फुंसियों के लिए ख़ानदान शरीफ़ी के अतिब्बा ने मेंहदी का जोशांदा पीने में और इसका लेप लगाने में तजवीज करके अच्छे नताइज हासिल किए हैं।

मेंहदी का फूल सूंघने से गर्मी से होने वाला सर दर्द जाता रहता है। मेहंदी के फूलों को रोग़न या रोग़ने ज़ैतून में मिलाकर धूप में रख कर हलकी आंच पर पका कर मेहंदी का तेल तैयार किया जाता है। जिसकी मालिश से पट्ठों की अकड़न जाती रहती है।

मेंहदी के पत्तों को पानी में रात भर भिगोकर सुबह इसका पानी शकर में मिलाकर यरक़ान के मरीज़ को देना मुफ़ीद है। इसी पानी के पीने से बढ़ी हुई तिल्ली भी क़म हो जाती है।

जदीद मुशाहिदात:

अतिब्बा क़दीम और मुहद्दिसीन ने मेंहदी के मक़ामी इस्तेमाल से जिन फ़वाइद का ज़िक्र किया है। जदीद तहक़ीक़ से इनमें से हर बात साबित हो गई है।

मेंहदी में रंग की मौजूदगी से लोगों ने ख़िज़ाब का काम लेने की कोशिश

इसलिए भी ज़्यादा की है कि दौरे हाज़िर में मिलने वाले ख़िज़ाबों में पाया जाने वाला रंग कसरते इस्तेमाल से जिल्द का सरतान पैदा करने की एहलियत रखता है। एक नुस्ख़े के मुताबिक़ मेंहदी के पत्तों को साबुनों के पानी में हल करके सर पर लगाएं तो बाल सियाही माइल हो जाते हैं। क़दीम मुशाहिदात में मेंहदी के साथ सना मक्की के पत्ते पीस कर सर पर लगाना बेहतरीन ख़िज़ाब है।

भारती माहिरीन ने हाल ही में ख़िज़ाब के लिए महंदी में चाए की पत्ती और काफ़ी मिलाकर इसे खांड डाल कर उबाला और इसमे तेज़ाबियत पैदा करने के लिए लीमूं का अर्क़ या सिर्का मिलाकर इस्तेमाल करने की तलक़ीन की है। यह नुस्ख़ा बिलाशुबा मुफ़ीद अर्ज़ा और महफ़ूज़ है। इस नुस्ख़े में सबसे बड़ी बात यह है कि मेंहदी और सिर्का गिरते बालों का इलाज भी हैं और इनके लगाने से सर से सीकरी (बफ़्फ़ा) भी ख़त्म हो जाती है।

हमने मेंहंदी के साथ हुब्बुर्रिशाद, हल्बा और सना मक्की मिलाकर इसे सिरके में जोश दे कर सर की फुंसियों और बफ़्फ़ा में निहायत उम्दा नताइज के साथ आज़माया है। यह नुस्ख़ा जिस्म में किसी जगह भी फफूंदी के लिए मुफ़ीद है। खासतौर पर नाख़ुनों की FUNGUS INFECTION जहां किसी भी दवाई का आसानी से मुअस्सिर होना साबित नहीं। यह लोशन बेहतरीन पाया गया। 1959 में एक भारती साइंसदान लतीफ़ ने NEPHTHA QUINONE के ख़ानदान का एक मुरक्कब इसमें से अलाहिदा किया है। कर्नल चोपड़ा बयान करते हैं महंदी बेहतरीन मुसफ़्फ़ी ख़ून है। इसके मुसलसल इस्तेमाल से बढ़ी हुई तिल्ली कम हो जाती है।

बरतानवी साइंसदान जोंज़ ने मेंहदी के पत्तों के जोशांदे को पेट के अल्सर में मुफ़ीद पाया। इस अम्र की तसदीक़ अमरीकी मुहक़्क़िक़ हनरी से भी ममीर है।

मेंहंदी का जोशांदा जर्यान में मुफ़ीद पाया गया। इसके अलावा मसाने में गर्मी और जलन को भी फ़ाएदा हुआ दौरे हाज़िर के अतिब्बा जरयान को पुरानी तारीफ़ के मुताबिक़ बीमारी नहीं मानते। इनकी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ पेशाब में आने वाली सफ़ेद रतूबत आम तौर पर हाज़मे की ख़राबी की वजह से आने वाले मादनी नमक होते हैं। मेंहंदी के जोशांदे से इनमें फ़ाएदा का मतलब यह हुआ कि मेंहंदी ने आंतों में भी अपनी कुव्वते शिफ़ा का मज़ाहिरा किया।

मरीज़ के तकिए में अगर मेंहंदी के पत्ते भर दिए जाएं तो उसे जल्द और अच्छी नींद आती है। मेंहंदी के फूलों और पत्ते से निकाला हुआ तेल या इनका जोशांदा कोढ़ की इब्तिदाई सूरत में मुफ़ीद पाया गया है। इसी क़िस्म का तेल यहूदियों की इबादत गाहों में जलाया जाता था और अब वह अपने मुर्दों को सड़ांद से बचाने के लिए जिस्म पर इस तेल की मालिश करते हैं।

मसीहुल मुल्क हकीम जमील वाला तजुर्बा भारती साइंसदानों ने भी किया है। वह कसरते हैज़ के अलावा अंदाम नहानी की सोज़िश और लीकोरिया में भी मेंहदी का सफ़ूफ़ मक़ामी तौर पर इस्तेमाल करने के साथ-साथ इसका जोशांदा पिलाते हैं।

ज़रीरा .... ज़रीरा

ACORUS CALAMUS

यह एक नीम आबी पौधा है। जो बुनयादी तौर पर यूरोप और अमरीका में होता था। मगर अब हिंदुस्तान में भी दरयाओं, नदी नालों और ऐसे आबी ज़ख़ीरों के किनारे होता है जहां बारिश ज़्यादा होती है। पाकिस्तान में यह कागान और हंज़ा के इलाक़े में मिलता है। जबकि तुर्की में इतना ज़्यादा होता है कि इसे तिब्बे यूनानी में वज तुर्की का नाम दिया गया है इसके तुर्की नाम का बिगाड़ ही लातीनी में अकोरस बन गया।

यह एक ख़ुश्बूदार पौधा है। जिसकी जड़ें ज़्यादा ख़ुश्बूदार होती है। क़द इसका एक फ़िट से कम, ज़ाएक़े में तल्ख़ और रंगत में सफ़ेदी माइल होता है। "फ़ारसी में इसे "अगरतुर्की" अरबी में ज़रीरा, संस्कृत में अगर ग्रिंथी और अंग्रेज़ी SWEET FLAG कहते हैं हिंदी और उर्दू नाम बाछ कर बिगाड़ कर बिछ या विछ हैं।

अतिब्बा यूनान इससे आशना थे। और क़दीम अदबी कुतुब में इसे क़सबुज़्ज़ीरा के नाम से बयान किया गया है। अरबी से उर्दू में तर्जुमा के दौरान नाम का मुग़ालता दूसरी सूरत इख़्तियार कर गया और क़सबुज़्ज़ीरा से मुराद चराइता से लिया गया। चुनांचे जवारिश जालीनूस के असल नुस्ख़े में जहां क़सबुज़्ज़ीरा मज़कूर था लोगों ने चराइता शीरीं डाल कर नुस्ख़े में उफ़ादियत को कम कर दिया। हालांकि यहां ज़रीरा होना चाहिए था।

इरशादाते नब्वी सल्ल0:

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुश्बू को पसंद फ़रमाते थे और आमतौर पर इस ग़र्ज़ के लिए कस्तूरी ज़्यादा मक़बूल थी। इनके ज़ाती इस्तेमाल के सुर्मे में भी कस्तूरी शामिल होती थी इसलिए वह अस्समदुलमरूह कहलाता था। मगर हुज्जतुल विदा के अहम मौक़े पर उन्होंने एक दरआमदी ख़ुश्बू इस्तेमाल फ़रमाई हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 रिवायत फ़रमी हैं:

طیّبت رسول الله صلى الله عليه وسلم بيدى بذيرة فى حجة الوداع، للحل والاحرام (بخاری۔مسلم)

(मैंने हुज्जतुल विदा के मौक़े पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहराम और दाढ़ी पर ज़रीरा की ख़ुश्बू लगाई।)

दूसरी रिवायात से पता चलता है कि इनको पिसा हुआ ज़रीरा जिस्म और एहराम पर जब लगाया गया तो इसके सफ़ेदी माइल ज़र्रों की चमक सर की मांग में नज़र आ रही थी।

इस वक़्त तक लोगों में ख़ुश्बू का तसव्वुर धूनी देने की हद तक था। यूरोप में ख़ुश्बू को जो मक़बूलियत मयस्सर आई वह बुनियादी तौर पर ईसाई राहिबों की वजह से थी। चूंकि वह बरसों नहाते न थे। इसलिए इनके जिस्म से बदबू आती थी। इस बदबू को रोकने के लिए इनके यहां ख़ुश्बू का रिवाज हुआ

जिसकी अब तक की तमाम अक़साम यमडीकोलून, पर नब्नी हैं। कैमिस्ट्री के उसूलों पर जब भी कोई तिर्शा किसी एल्कोहल से मिलाया जाता है तो एक ख़ुश्बूदार मुरक्कत बन जाता है। जदीद तरीन ख़ुश्बूएं भी इसी उसूल पर बनती हैं। जिनमें एक नई अज़ाफ़त ख़ुश्बू का सफ़ूफ़ है। बग़लों और रानों के दरमियान मुसलसल पसीना, ज़्यादा गर्म कपड़ों के इस्तेमाल और ग़िलाज़त की वजह से आने वाली बदबू को कम करने के लिए ख़ुश्बू की एक जामिद क़िस्म SOLID UDU DE COLOGNE के नाम से अब मुरव्विजा हुई है। मगर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन तमाम दरयाफ़्तों से पहले ज़रीरा के सफ़ूफ़ को ख़ुश्क ख़ुश्बू की सूरत में इस्तेमाल करके इस मज़मून में एक नए रास्ते का सुराग़ बताया। बल्कि वह कसीरुल फ़वाइद हुई थी।

वह जब भी किसी चीज़ को इस्तेमाल फ़रमाते थे वह सिर्फ़ एक ही मक़सद के लिए न होती थी। बल्कि वह कसीरुलफ़वाइद हुई थी। जैसे के ज़ैतून का तेल, कलोंजी, क़िस्त, शहद और अब ज़रीरा। अज़वाजे मुतहिरात रज़ि. अन्हा में से एक मुहतरमा ने रिवायत फ़रमाई है:

دخل علی رسول الله صلی الله علیه وسلم. ودخرج فی اصبعی بثرة فقال: عندکِ ذریرة؟ قلمت: نعم، قال ضعیها علیها. وقال: قولی: الهم مصغر الکبیر، ومکبر الصغیر، صغرمابی" (ابن السنی۔ مستدرک الحاکم)

मेरे पास रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। मेरी उंगली पर फुंसी निकली हुई थी। उन्होंने पूछा कि क्या तेरे पास ज़रीरा है? मैंने कहा। हां! उन्होंने फ़रमाया कि इस फुंसी पर ज़रीरा लगाओ और यह दुआ पढ़ो:

"ऐ अल्लाह तू बड़ों को छोटा करता है और छोटों को बड़ा। मेरे जो निकला है तू इसको छोटा कर दे।"

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

उन्होंने बताया है कि ज़रीरा एक हिंदुस्तानी दवा है जो तासीर में गर्म और मक़ामी तौर पर क़ाबिज़ है। सोज़िश की वजह से पैदा होने वाली सूजन में मुफ़ीद है। मेदे, जिगर और आंतों की सोज़िश को दूर करती है। जिगर की इसलाह करके पेट में भरे हुए पानी को निकालती है। मदरबोल है। दिल को ताक़त देती है। इसकी ख़ुश्बू दिल में ख़ुशी लाती है तबीअत से तकद्दुर को दूर करती है।

कीमयावी तजज़िया:

बुनियादी तौर पर इसमें एक तेल, निशास्ता, गुलोकोसाईड और केलामैन पाए जाते हैं। केलामेन आंतों को सुकून देता है और सोज़िश को रफ़ा करके इस्हाल में कमी लाता और रियाह को ख़ारिज करता है। थोड़ा सा लुआब भी पाया जाता है। इसमे रोग़न फ़राज़ी की मिक़दार एक फ़ीसदी के क़रीब होती है। मगर जड़ों और इनकी गाठों में इस तेल की मिक़दार तीन फ़ीसदी से ज़ाइद होती है।

इसका रोग़ने फ़राज़ी एक पेचीदा मुरक्कब है जिसमें गाढ़े तेलों वाले अज्ज़ा के साथ लोंग के तेल का अंसर भी मौजूद होता है। इसके अलावा एक जुज़्वे आमल ICORETIN भी पाया जाता है। जो ज़ाएके में तल्ख़ लेकिन जरासीमकश है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

यह ओराम को तहलील करता है। बर्स हौर बहक़ में इसका लगाना मुफ़ीद है। इसका पानी उबाल कर कुल्लियां की जाएं तो मसूढ़ों की सूजन की वजह से होने वाला दांत दर्द ख़त्म हो जाता है। इसकी जड़ों को चबाने से दांत दर्द को फ़ाएदे के अलावा पेट का दर्द और नफ़ख़ जाते रहते हैं इसको ऊनी कपड़ों में रखें तो इनको कीड़ा नहीं लगता। इसको सरसों के साथ पीस कर दुखंते जोड़ों पर लेप करने से इनका दर्द और वरम जाते रहते हैं। बच्चों के पेट पर बाछ का लेप करने से पेट का दर्द जाता रहता है। एक दूसरे वैदिक नुस्ख़े के मुताबिक़ बाछ को जलाकर इसकी राख को नारियल के तेल में मिलाकर बच्चे के पेट पर मलने से पेट का दर्द जाता रहता है।

बाछ का जोशांदा शहद में मिलाकर पीने से पेट की तमाम तकालीफ़ ख़त्म हो जाती हैं। इसका ताज़ा असारा आंखों में डालने से नजूले उलमा में फ़ाएदा होता है।

बाछ का जोशांदा दस्तों में फ़ाएदा देता है। अगर उबालते वक़्त थोड़ी सी मुलैठी शामिल कर ली जाए तो ख़ुश्क खांसी में मुफ़ीद है। शहद के साथ इसका सफ़ूफ़ बच्चों को चटाने से वह जल्द बातें करने लगते हैं। इसके पीने हाफ़ज़े की कुव्वत में इज़ाफ़ा होता है और तशन्नज में मुफ़ीद है।

मदरबोल और मदर हैज़ वाली की वजह से हैज़ की क़िल्लत को दूर करता है। और गुर्दों में सोज़िश की वजह से अगर पेशाब में कमी आ गई हो तो उसे दूर करता है। इसका यही असर इस्तस्क़ा को कम करता है। इसका मुरब्बा फ़ालिज और मिर्गी में मुफ़ीद है।

दमे का दौरा ख़त्म करने के लिए पहली ख़ुराक एक माशा देने के बाद हर तीन घंटे के बाद पांच रत्ती देने से सांस की घुटन ख़त्म हो जाती है।

जालीनूस ने बाछ की जड़ को इसका मुफ़ीद तरीन हिस्सा क़रार दिया है और इसकी राए को अब कीमयावी तजज़िये से ताईद मयस्सर है। क्योंकि बाक़ी पौधे की निस्बत जड़ों में रोग़ने हराज़ी की मिक़दार में तीन गुना से भी ज़्यादा होती है। इसके मुशाहिदात के मुताबिक़ यह भूख बढ़ाती और अक़्लो फ़हम में इज़ाफ़ा करती है। इसको भुनी हुई हींग के साथ देने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

बाछ का सफ़ूफ़ शहद मिलाकर चटाने से मिर्गी जाती रहती है। यही नुस्ख़ा बच्चों के गले की सोज़िश में मुफ़ीद है। बाछ को ज़्यादा मिक़दार में क़ै दिलाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। यह अकसर ज़हरों और ख़ास तौर पर जमाल गोटे का तिर्याक़ है।

जदीद मुशाहिदात:

हकूमते हिंद के शोबे तिब यूनानी की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ यह हाज़िम का

सरल रियाह, मदरबोल, क़ातिल करम शकम है। मुक़व्वी होने की वजह से आसाबी इमराज़, फ़ालिज, निस्यान, लक़वा, तशन्नज, मिर्गी और हिस्टीरिया में मुफ़ीद है। राज़ी की मशहूद दवा माजून मुलिय्यत के अज्ज़ा में बाछ भी शामिल थी जिसे वह लक़वा और फ़ालिज के लिए बड़े एतिमाद से दिया करता था। नदकारनी और चोपड़ा ने इसे मुहर्रिके आसाब, मुख़रिश मेदा और क़ै क़रार दिया है। बाछ का तीस ग्राम सफ़ूफ़ खाने से क़ै होने लगती है। यह क़ौलंज को रफ़ा करती, सुद्दों को खोलती, मुख़रिजे बलग़म, मुक़व्वी मेदा और दाफ़े अफ़ूनत है। आसाब पर मिस्किन असर की वजह से मुक़व्वी है। वैदिक तहक़ीक़ात में इसे जुनून में भी दिया जाता है।

एक हिस्सा सफ़ूफ़ को दस गुना पानी में उबाल कर जोशांदा बनाते हैं अगर 10 ग्राम सफ़ूफ़ लिया जाए जो इसके जोशांदे के दो बड़े चम्मच दिन में तीन से चार मर्तबा दिए जाते हैं। आसाबी दर्दों के अलावा इस मिक़दार ने तीसरे दिन चढ़ने वाले मलेरिया, बुख़ार में भी फ़ाएदा दिया है। जोशांदे में मुल्ठी की चुटकी मिला देने से सांस की नालियों को खोलती और बलग़म का इख़राज करती है। इसकी जड़ें थोड़ी मिक़दार में चबाने से मुंह में गर्मी महसूस होती है और थूक निकलती है। इसका इस्तेमाल ज़हरों और ख़ासतौर पर सांप के ज़हर का तिर्याक़ है। वबाओं के दौरान इसे खाने से शख़्सी बचाओ हो सकता है।

इसका लेप जोड़ों के दर्दों में मुफ़ीद है। इसकी राख नारियल के तेल या कस्टर ऑइल में मिलाकर पेट पर मलने से क़ौलंज दूर होता है। छाती पर लेप करने से पट्ठों का दर्द और एंठन जाते रहते हैं।

छोटे बच्चों को जड़ों की राख के तीन ग्राम पुराने इस्हाल में मुफ़ीद है। अज्वाइन और बाछ का सफ़ूफ़ मफ़लूज हिस्सों पर मालिश के लिए मुफ़ीद है।

ज़ैतून..........ज़ैतून OLIVE
OLEUM OLIVIAE
OLEUMEUROPAE

ज़ैतून का दरख़्त तीन मीटर के क़रीब ऊँचा होता है। चमकदार पत्तों के अलावा इसमें बेर की शक्ल का एक फल लगता है जिसका रंग ऊदा और जामनी ज़ाएक़ा बज़ाहिर कसैला और चमकदार रहता है। बुनियादी तौर पर यह दरख़्त एशियाए कोचक, फ़लस्तीन, बहीरए रौम के ख़ित्ता यूनान, पुर्तगाल, स्पेन, तुर्की, इटली, शुमाली अफ़रीक़ा, अल्जज़ाइर, ट्यूंस, अमरीका में केली फ़ोर्निया, मैक्सिको, पेरू और ऑस्ट्रेलिया के जनूबी इलाक़ों में पाया जाता है। ज़ैतून का तेल बतौर सनअत और बरआमद के फ्रांस, इटली, स्पेन, तुर्की, अल्जज़ाइर, त्योंस और यूनान से आता है। हाल ही में बिलोचिस्तान से भी ज़ैतून का तेल डिब्बों में बरामद किया गया है।

मुफ़स्सिरीन की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ ज़ैतून का दरख़्त तरीक़े का क़दीम तरीन पौधा है। तूफ़ाने नूह के इख़्तिताम पर पानी उतरने के बाद ज़मीन पर जो

सबसे पहली चीज़ नुमायां हुई वह ज़ैतून का दरख़्त था। इसलिए ज़ैतून का दरख़्त सियासत में अमनो–सलामती का निशान बन गया है। फ़लस्तीनी रहनुमा मोहम्मद अब्दुर्रऊफ़ यासर अरफ़ात ने जब अक़वामे मुत्तहिदा के इज्लास से ख़िताब किया तो सबसे पहली बात यह कही।

"मैं आपके पास ज़ैतून की डाली लेकर आया हूं"

इससे मफ़हूम लिया गया कि वह अक़वामे मुत्तहिदा में अमनो सलामती का पैग़ाम ले कर आए हैं। मिस्र क़दीम में भी ज़ैतून का तेल खाना–पकाने बल्कि अशया को महफ़ूज करने, जिस्म पर लगाने और इलाज में इस्तेमाल होता था। मिस्री मक़ाबिर से बरामद होने वाली अशया में ज़ैतून के तेल से भरे हुए बरतन भी शामिल हैं। तौरेत में तेल मिलने का ज़िक्र मिलता है।

ज़ैतून का फल गिज़ाइयत से भरपूर है मगर अपने ज़ाएक़े की वजह से फल की सूरत में ज़्यादा मक़बूल नहीं। इसके बावजूद मश्रिक़े वुस्ता, इटली, यूनान और तुर्की में बहुत लोग यह फल ख़ालिस सूरत में और योरप में इसका अचार बड़े शौक़ से खाते हैं। यूनान से ज़ैतून का अचार सिरके में आता है और मग़रिबी मुमालिक में बड़ी मक़बूलियत रखता है। सऊदी अरब के पहले फ़रमांरवां जलालुल मलिक अब्दुल अज़ीज़ इब्ने सऊद मग़फ़ूर का नाशताः खजूर, ऊंटनी का पनीर, ताज़ा ज़ैतून और ऊटनी के दूध पर मुश्तमिल होता था। इसी लिए वह जब तक ज़िन्दा रहे अपनी तवानाई में ज़रबुल मसल थे। इसकी ज़्यादातर शोहरत फल से बरामद होने वाले तेल से है। डब्बों में फ़रोख़्त होने वाली सारडीन और दूसरी मछलियां महफ़ूज़ रखने के लिए ज़ैतून के तेल में रख कर पैक होती हैं। इस तेल की मुनफ़रिद ख़सूसियत यह है कि बोतल ख़्वाह खुली भी रहे इस पर चींटियां नहीं आतीं और जब इससे दिया जलाया जाए तो दूसरे तेलों की तरह धुआं नहीं निकलता।

कुरआन मजीद ने ज़ैतून और इसके तेल का बार–बार ज़िक्र करके शोहरते दवाम अता कर दी है।

والنخل والزرع مختلفا اكله والزيتون والرمان متشابها
وغيرمتشابها. كلوامن اثمره االذا اثمرو (١٤١۔م۔الانعام۔٦)

(....खजूर और मरज़ूआत जिनके ज़ाएक़े एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ हैं और ज़ैतून और अनार जिनकी शकलें एक दूसरे से मिलती हैं और वह जिन की शकलें नहीं मिलतीं। तुम इसके फलों को उस वक़्त ख़ूब खाओ जब वह पक जाएं। मगर ज़ाया न करो।

وجنات من اعناب والزيتون والرمان مشتبها وغيره متشابه: انظر والیٰ ثمره
اذا ثمرو ينعه فی ذالكم لايت لقوم يومنون (٩٩۔ک۔الانعام۔٦)

(उसने आसमान से जो पानी बरसाया इसका करिश्मा तुम्हारे बाग़ात हैं जिनमें अंगूर, ज़ैतून, अनार और दूसरे फल उगते हैं। इन फलों में दिलचस्पी की बात यह है कि ज़ाहिरी हैयत एक दूसरे से मुशाबहत भी रखते हैं। और नहीं भी रखते। फिर फलों की तरफ़ देखो कि वह (जब फूलों की कोंपल से फल बनने तक) किस तरह पक जाते हैं। आलमे नबातात के इन आमाल में अल्लाह ताला ने इन लोगों के लिए

जो इसकी कुदरत पर ईमान रखते हैं। बड़ी अहमियत वाली निशानियां रख दी हैं)

هو الذی انزل من السماء ماء لکم منه شراب ومنه شجرٌ تسیمون. ینبت لکم به الزرح والزیتون والنخیل والاعناب ومن الثمرات ان فی ذالک لأیته لقوم یتفکرون (۱۱۔ک۔النحل۔۱۰)

(यह वही ख़ुदा है कि जो आसमान से पानी बरसाता है। इस पानी को इन्सान पीते और इसी पानी से दरख़्त उगते हैं। जिन पर तुम अपने जानवर चराते हो। इसी पानी से वह तुम्हारे खेतों को उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और दूसरे फल उगते हैं। वह लोग जो फ़िक्रो-दानिश रखते उनके लिए इस अमल में बहुत सी मुफ़ीद निशानियां पिन्हा कर दी गई हैं। मुराद यह है कि इस अमल पर ग़ौर करने वालों को

یوتل من شجرة مبارکه تیتونة لاشرقیة ولا غربیة یکادن یتها یمنیّ ولولم تمسه نار (النور۔۳۵)

अल्लाह तआला अपने नूर की मिसाल में ऐसे चिराग़ को बयान करते हैं जिसके ऊपर कंदील सितारों की मानिंद चमकती है। इस चिराग़ को रौशनी के लिए तवानाई ज़ैतून के मुबारक दरख़्त के तेल से हासिल होती है। ज़ैतून के तेल वाला यह दरख़्त न तो मश्रिक़ में है और न मग़रिब में। क़रीब है कि यह तेल अपने आप ही रौशनी देने लगे और इस अमल के लिए ख़्वाह इसे शोला न भी लगाया गया हो इससे मुराद दरख़्त ऐसी सूरत में इस्तादा है कि सूरज की रौशनी तुलू से गुरूब तक इस पर खुल कर पड़ती है और फिर एक ऐसा तेल पैदा करता है जो पाक-साफ़ औरा चमकदार होता है।

والتین والزیتون. وطور سینن وهذا البلد الامین (اک۔التین۔۹۵)

(क़सम है अंजीर की और क़सम है ज़ैतून की और क़सम है तूरे सिनीना की और क़सम है इस अमन वाले शहर की।

(इस आयत की तफ़सीर इंजीर के उनवान के साथ बयान की जा चुकी है।)

فواکه فانشان لکم بهِ جنتٍ من تحلیل و اعناب لکم فیها نواکه کثیرة ومنهاتا کلون. وشجرة تخرج من طورِ سینآء تبنت بالدهن وصبغ للاکلین (مؤمنون)

(और फिर तुम ऐसे बाग़ उगाओगे जिनमें खजूर और अंगूर के अलावा दूसरे फल होंगे। और यह फल तुम रग़बत से खाते हो। और तूर पहाड़ के इलाक़े में वह दरख़्त है जिससे वह तेल निकलता है। जो तुम्हारी रोटी के साथ सालन का काम देता है।)

इन आयात में ग़ौर तलब निकात यह हैं कि अल्लाह तआला ने ज़ैतून को एक मुबारक यानी बरकत वाला दरख़्त क़रार दिया। इसके फल को

अहमियत अता फ़रमाई। फिर लोगों को मुतवज्जह किया कि ज़ैतून, खजूर, अनार, और अंगूरों में फ़वाइद के ख़ज़ाने भरे पड़े हैं। बशर्तेकि तुम इनको समझने की सलाहियत पैदा करो। सूरतुल इनाम की दोनों आयात ग़ौरो–फ़िक्र के लिए ताज़ियाने की हैसियत रखती हैं। बात इससे शुरू हुई कि आसमान से पानी बरसता है जिस में पीने के साथ–साथ जानवरों और ज़राअत के लिए एहमियत है और एहमियत के इसी तसुलसुल में ज़ैतून का ज़िक्र आया और इसके साथ ही दूसरे फल भी मज़कूर हुए। खजूर, अंगूर और अनार लज़ीज़ मेवे हैं। अगर कोई इनकी जानिब मुतवज्जह न भी करवाए तो भी लोग इनको ख़ुशी–ख़ुशी खाते हैं। मगर ज़ैतून का ज़ाएक़ा ऐसा नहीं कि कोई इससे रग़बत महसूस करे। तो ज़ाहिर है कि इसकी जानिब बार–बार मुतवज्जह करवाने की ज़रूरत और इसके फ़वाइद के बारे में रौशनी दिखाने का मक़सद यह है कि यह फल ज़ाएक़े के लिए नहीं फ़वाइद के लिए है। इस बारे में नबी सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने भी एक जगह इसकी निशानदही करके फ़रमाया कि यह सत्तर बीमारी की दवा है। अब इसमें दिलचस्पी लेकर फ़ाएदा उठाना हमारा काम है।

कुतुब मुक़द्दिसा:

कुरआन मजीद ने मत्तला किया है कि ज़ैतून का फल एक मुबारक दरख़्त से है। इसके बाबरकत होने की वजह से इब्तिदाए आफ़रीनिश में ख़ुदावंद की बारगाह में जो कुरबानियां पेश की जाती थीं उन पर ज़ैतून का तेल लगाना ज़रूरी था।

तूफ़ाने नूह का सिलसिला ख़त्म होने की इत्तिला भी ज़ैतून की डाली से मयस्सर आई।

..... और वह कबूतरी शाम के वक़्त इसके पास लौट आई। और देखा तो ज़ैतून की एक ताज़ा पत्ती इसकी चोंच में थी। तब नूह ने मालूम किया कि पानी ज़मीन से कम हो गया। पौदाइश (8:11:12)
यहां पर तर्जुमे की ग़लती से कबूतरी मज़कूर है जबकि असल के मफ़हूम से उड़ने वाला परिंदा फ़ाख़्ता थी।
.... अपने अंगूर और ज़ैतून के बाग़ से भी ऐसा ही करना
(ख़रूज–23'11)

यहां पर मुख़्तलिफ़ फ़सलों की ज़राअत और इससे फ़वाइद का तज़किरा है जिनमें खुसूसी ज़िक्र ज़ैतून और अंगूर का किया गया।

....वह ऐसा मुल्क है जहां गंदुम और जौ और अंगूर और अंजीर के दरख़्त और अनार होते हैं वह ऐसा मुल्क है जहां रोग़नदार ज़ैतून और शहद भी है। इस मुल्क में रोटी तुझको बाफ़रात मिलेगी और तुझको क़िसी चीज़ की कमी न होगी।

यह एक मिसाली मुल्क की नवैद है जो नबी इसराईल को नेको–पाक रहने की सूरत में दिया जाने वाला था। बशर्तेकि वह वहां जाकर ग़ुरूर से इतराने न लगें। दूसरे अलफ़ाज़ में उन्हें ज़मीन पर जन्नत का मसील मुहैया किया जा रहा

था। क्योंकि कुरआन मजीद ने जन्नत की सिफ़ात में भी यही चीज़ें गिनवाई हैं। बनी इस्राईल ने इन नेमतों को पाने के बाद अपनी नाशुक्री का सिलसिला तर्क न किया था तो फिर इनकी अहम फ़सलों के नुक़्सान की सूरत यह बताई गई:

> तेरी सब हदूद में ज़ैतून के दरख़्त लगे होंगे। पर तू इनका तेल नहीं लगाने पाएगा। क्योंकि तेरे ज़ैतून के दरख़्तों का फल छड़ जाएगा।
>
> (इस्तसनाः 28:40–41)

लेकिन मैं जो ख़ुदावंद के घर में ज़ैतून के हरे दरख़्त की मानिंद हूं। मेरा तवक्कुल अबादुलाबाद ख़ुदा की शफ़क़त पर है। (52:8 ज़बूर)

ख़ुदा ने ख़ुश मेवा हरा ज़ैतून तेरा नाम रखा है। (यरमियाः 11:16)

बनी इस्राईल को एक अच्छी ज़िंदगी की नवैद देते हुए फ़रमाया गयाः

.... बयाबान में देवदार और बबूल और आस और ज़ैतून के दरख़्त लगाऊंगाः

(यसइयाहः 14–19)

इंजीले मुक़द्दस में याक़ूब आम हिफ़्ज़ ज़ैतून ही की मिसाल लिए हुए है।

> "ऐ मेरे भाइयो! क्या अंजीर के दरख़्त में ज़ैतून और अंगूर में अंजीर पैदा हो सकते हैं? इसी तरह खारी चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकताः (याक़ूब 3:12)

इरशादातें नब्वी सल्ल०

कुरआन मजीद ने ज़ैतून का बार–बार ज़िक्र फ़रमाया। जहां किसी अच्छी फ़सल का तज़किरा हुआ ज़ैतून ज़रूर शामिल हुआ। अल्लाह तआ़ला ने जब अपने नूर को मिसाल देकर वाज़ेह किया तो मिसाल ज़ैतून का तेल इसकी रौशनी और इसकी ख़ुश्नुमाई पर मुंतज हुई। फिर फ़रमाया कि यह एक मुबारक दरख़्त है। जब अल्लाह तआला ने इस दरख़्त को इतनी अहमियत अता फ़रमाई है तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एहमियत के असबाब पर भी यक़ीनन रौशनी डाली है।

हज़रत सय्यद अलअंसारी रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूल सल्ल० ने फ़रमाया।

كلوا الزيت وادهنوا به. فانه من شجرة مباركة (ترمذی۔ابن ماجہ۔داری)

(ज़ैतून का तेल खाओ। और इससे जिस्म की मालिश करो कि यह एक मुबारक दरख़्त है।)

यही रिवायत हज़रत अबू सईद अलख़िल्दी से और मुस्तरकुल हाकिम में अबू हुरैरा से भी मनक़ूल है।

हज़रत अलक़मा बिन आमिर रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

عليكم بزيت الزيتون، كلوه وادهنوا به، فانه تنفع من البواسير

(ابن الجوزی۔ذہبی)

(तुम्हारे लिए ज़ैतून का तेल मौजूद है। इसे खाओं और बदन पर मालिश करो क्योंकि यह बवासीर में फ़ाएदा देता है।)

عليكم بهذه الشجرة المباركة زيت الزيتون. فتداووا به فانه من الباسور

(ابن السنی۔ابونعیم)

(तुम्हारे पास इस मुबारक दरख़्त से ज़ैतून का तेल मौजूद है। इससे इलाज करो कि यह बासूर को ठीक कर देता है।)

यह रिवायत उक़बा बिन आमिर रज़ि0 से मरव्वी है जबकि ज़हबी ने बालाई रिवायत इनके बिरादर मुकर्रम अलक़मा से बयान की और इसमें लफ़्ज़ बवासीर है जबकि यहां बासूर मज़कूर है। बासूर से मुराद मुक़अद का ज़ख़्म है।

कन्ज़ुल उम्माल ने मसनद उमर और इबराहिम बिन अबी साबित की हदीस से रिवायत की है कि हज़रत उमर रज़ि0 रिवायत करते हैं जबकि बेहिक़ी और इब्ने माजा ने इसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत किया है।

ايتد موا بالزيت وادهنو به فانه من شجرة مباركة.

(ज़ैतून के तेल से इलाज करो। इसे खाओ और लगाओ। क्योंकि यह एक मुबारक दरख़्त है।)

(ख़ालिद बिन सअ़द रिवायत करते हैं कि मैं ग़ालिब बिन अबहर के हमराह मदीना आया। रासते में ग़ालिब बीमार हो गए। इनकी अयादत को इबने अबी अतीक़ आए और बताया कि हज़रत आएशा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कलोंजी में शिफ़ा बताई है। हम ने कलोंजी के चंद दाने कूट कर ज़ैतून के तेल में मिलाकर नाक की दोनो इतराफ़ टपकाया जाए। हमने ऐसा किया तो ग़ालिब बिन अबहर शिफ़ायाब हो गए।)

كلوا الزيت مراهنو اب، فان فيه شفاء من سبعين داء منها الجذام. (ابونعیم)

ज़ैतून का तेल खाओ और इसे लगाओ क्योंकि इसमें सत्तर बीमारियों से शिफा है जिनमें से एक कोढ़ भी है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

كلوا الزيت وادهنوا به فاز، طيّب مباركة (ابن ماجہ۔الحاکم)

(ज़ैतून का तेल खाओ। इसे लगाओ। क्योंकि यह पाक–साफ़ और मुबारक है।)

हज़रत ज़ैद बिन राक़िम रज़ि0 रिवायत करते हैं।

امرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم ان نتداوىٰ ذات الجنب بالقسط البحرى والزيت (ترمذی۔مسند احمد،ابن ماجہ)

(हमें रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि हम ज़ातुल जंब (पिलोरसी) का इलाज क़िस्तुलबहरी (क़िस्त शीरीं) और ज़ैतून के तेल से करें।)

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि0 रिवायत करते हैं।

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم ينعت الزيت والورس من ذات الجنب.

(ترمذی،مسند احمد،ابن ماجہ)

रसूल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलहि वसल्लम ज़ातुल जंब के इलाज में वर्स और ज़ैतून के तेल की उफ़ादियत की तारीफ़ फ़रमाया करते थे)

ज़ातुल जंब को पुराने अतिब्बा ने नमूनिया क़रार दिया है। जबकि नौइयत के लिहाज से पिलोरसी है। इसकी तशरीह में इमाम ईसा तिर्मिजी कहते हैं।

قال اصحاب العلم. ان الذات الجنب السُلّ.

यानी असहाबे इल्म बयान करते हैं कि ज़ातुल जंब दरअसल तपे–दिक़ है। हक़ीक़त यह है कि बीसवीं सदी की तहक़ीक़ात ने यह साबित कर दिया है कि पिलोरसी का उमूमी सबब तपे–दिक़ होता है या उसे दिक़ की एक क़िस्म क़रार दे सकते हैं।

मोहम्मद अहमद ज़हबी रह0 ने सनद रिवायत के बग़ैर इब्नुलजोज़ी से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

من ادزن بزيت لم يقربه شطان.

(जिसने ज़ैतून के तेल की मालिश की, शैतान उसके क़रीब न जाएगा।)

कीमयावी हैसियत:

ज़ैतून के तेल को अमरीका कोरी फ़ारमाकोपिया U.S.PHARMCOPEAL में सरकारी हैसियत हासिल है। बरतानिया के B.C.C. (BRITISH PHARMCOPEA CODEX) मुताबिक़ यह इलाज के लिए एक मुसल्लिमा दवाई है। इन दोनों किताबो का मुक़र्रिरकर्दा सरकरी मैयार के मुताबिक़ यह ताज़ा ज़ैतून से निकाला हुआ तेल है जिसका रंग मोतिया या सब्ज़िमाइल पीला होना चाहिए। इसमें कोई ख़ास ख़ुश्बू न हो और आम हालात में सय्याल हो 20.°C के दरजए हरारत पर एक मिली लीटर का वज़न 913 ग्राम के क़रीब हो (यानी कि पानी से हल्का) 4.°C के दरजए हरारत पर यह जमने लगता है। हैइयत की यह तब्दीली इसकी फ़आलियत पर असर अंदाज़ नहीं होती।

इसके कीमयावी अज्ज़ा में OLEICACID-PALMATIC ACID LINO LEIC ACID-STEARIC ACID-MYRISTIC ACID-GLYCERIDES शामिल होते हैं। यह पानी में हल नहीं होता। मगर एलकोहल, ईथर, क्लोरोफ़ार्म और लीकवेड पेराफ़ीन के साथ हल हो जाता है बरतानवी तहक़ीक़ात के मुताबिक इसमें मिलावट के लिए चाय के बीजों का तेल और ARACHIS OIL इस्तेमाल किया जाता है। मगर हाल ही की मालूमात के मुताबिक़ मराकश के एक शख़्स ने इसमें मशीनगन ऑइल और अमरीकी तहक़ीक़ात के मुताबिक पेन में साफ़ किए हुए मोबिल ऑइल की मिलावट पाई गई है।

ज़ैतून का तेल पके हुए फल से निकाला जाता है। कच्चे या गले हुए फल में तेल की मिक़दार कम होती है। अगर्चे इसके बीजों में भी तेल पाया जाता है मगर इनका मैयार उमदा नहीं होता। तेल निकालने से पहले फल को साफ़ करके इसका छिलका उतार लेना ज़रूरी है। फल को बराहे रास्त मशीन के कोल्हू में डाल कर तेल की जो क़िस्म बरामद होती है। इसे सबसे उमदा तेल क़रार दिया जाता है और इसे VIRGIN OIL कहते हैं। जबकि पहली खेप वसूल करने के बाद फोक पर गर्म पानी डाल कर दोबारा, सेबारा कोल्हू में डाला जाता है। बाद में पानी का तेल से अलाहिदा कर लिया जाता है। इटली में इस अमल के दौरान TANNIC OIL भी शामिल किया जाता है। दूसरी और तीसरी खेप को TABLE OIL कहते हैं। पहली खेप के तेल का रंग सुनहरी और इसमें हल्की सी ख़ुश्बू

होती है। यह तेल मुद्दतों ख़राब नहीं होता। अगर इसे खुला रहने दिया जाए या इसमें पानी पड़ जाए तो इस सूरत में इसके अंदर फफूंदी पैदा हो जाती है। दूसरी, तीसरी खेप के तेलों का रंग सब्ज़ी माइल और पहली घानी से गाढ़ा होता है।

ज़ैतून की ऐसी अक़साम भी है जिनसे वज़न के हिसाब से सत्तर फ़ीसदी तक तेल हासिल हो सकता है। केली फ़ोर्निया में पैदा होने वाले फल में तेल की मिक़दार कम होती हे। अब तक यक़ीन किया जाता था कि इसमें CHOLESTROL नहींहोता मगर अब बाज़ क़िस्मों से PHYTOSTEROL बरामद होती है जो इसी ख़ानदान से है।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

एक मर्तबा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के पास एक मेहमान आया। उन्होंने रात के खाने में उसे ऊंट की सिरी और ज़ैतून का तेल पेश करते हुए कहा कि मैं यह तुम्हें इसलिए खिला रहा हूं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसको मुबारक दरख़्त से क़रार दिया है।

कुरआन मजीद ने इस तेल को जो अहमियत दी और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो तारीफ़ फ़रमाई इसके बाद लोगों ने इसे मुतबर्रक तो क़रार दिया मगर यह कोशिश नहीं की कि उन्होंने जिन सत्तर फ़वाइद का तज़किरा फ़रमाया वह क्या है। उन्होंने ख़ुद इनमें से पांच का ज़िक्र फ़रमा दिया। बवासीर, बासूर, जिल्दी इम्राज़, पिलोरसी और कोढ़। मगर इससे आगे क़ाबिले ज़िक्र काम नहीं हुआ।

इब्नुल क़ैय्युम रह॰ कहते हैं कि सुर्ख़ ज़ैतून का तेल सियाही माइल से बेहतर होता है। यह तबीअत को बहाल करता है। चहरे के रंग को निखारता है। ज़हरों के ख़िलाफ़ तहफ़्फ़ुज़ देता है। पेट के फ़ेअल को एतिदाल पर लाता है पेट से कीड़े निकालता है। बालों को चमकाता और बुढ़ापे की तकलीफ़ और असरात को कम करता है। ज़ैतून के तेल में नमक मिलाकर अगर मसूढ़ों पर मला जाए तो यह उनको तक़वियत देता है। यही नमकीन मुरक्कब आग से जले हुए के लिए मुफ़ीद है। तेल या ज़ैतून के पत्तों का पानी लगाने से सुर्ख़ फुंसियों, पित्ती, ख़ारिश में फ़ाएदा होता है। वह फोड़े जिनसे बदबू आती हो या पुरांनी सोज़िश की वजह से ठीक होने में न आते हों ज़ैतून के तेल से ठीक हो जाते हैं।

ज़हबी रह0 की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ बालों और जिस्म को मज़बूत करके बुढ़ापे के आसार कम करता है। किसी भी चिकनाई और तेल के पीने से पेट ख़राब होता है मगर ज़ैतून का तेल इस्से मुस्तस्ना है। क्योंकि यह तेल होने के बावजूद पेट की बहुत सी बीमारियों के लिए मुसल्लह है।

सच्ची बात यह है कि ज़ैतून का तेल गुरबा के लिए बेहतरीन टॉनिक है। मगर ज़ैतून का वह तेल जो सब्ज़ी माइल हो वही मुफ़ीद भी है। सियाही माइल रंग का तेल बेकार और मुज़िर सेहत है सही तेल मुक़व्वी बाह, मुक़व्वी मेदा और सीने की बीमारियों से तहफ़्फ़ुज़ मुहैया करता है। ज़ैतून का नमकीन तेल आग से होने वाले ज़ख़्मों के लिए अक्सीर है।

ज़ैतून के दरख़्त के पत्तों का रस निकाल कर या ख़ुश्क मलें तो इनको पानी में उबाल कर इनसे कुल्लियां करना मुँह और ज़बान के ज़ख़्मों को मुंदमिल कर देता है+ ज़ैतून के पत्तों का अर्क़ लगाने से हिस्सयात से पैदा होने वाले जिल्दी इमराज़ ठीक हो जाते हैं।

इन मुशाहिदात से यह मालूम होता है कि तिब्बे नब्वी सल्ल0 पर काम करने वाले दो अज़ीम मुहक़्क़िक़ों ने अपनी–अपनी कोशिश से ज़ैतून के जो फ़वाइद मालूम किए हैं वह एक दूसरे की तसदीक़ करते हैं। दोनों मुत्तफ़िक़ हैं कि तेल मुक़व्वी, इमराज़े जिल्द में शिफ़ा और मक़ामी तौर पर आग से जले के अलावा पेट की बीमारियों का मुकम्मल इलाज है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

ज़ैतून का फल: ज़ैतून के फल और पत्तों का रस निचोड़ कर उसे इतनी देर पकाएं कि वह शहद की मानिंद गाढ़ा हो जाए। इस कीड़े वाले दांत पर लगाएं तो कीड़ा उखड़ जाता है। अगर इससे कुल्लियां करें तो मुंह के अंदर के ज़ख़्म और सफ़ेद दाग़ (क़िला सफ़ेद) ठीक हो जाता है। मसूढ़े मज़बूत होते हैं। इसमें सिरका या स्प्रिट मिलाकर सर परलेप करें तो गंज और वाउस्सलअब में मुफ़ीद है। इस लेप में शहद मिलाकर ज़ख़्मों पर लगाने से इनकी सुर्ख़ी जलन और तअफ़्फ़ुन दूर होते हैं। अगर ज़ख़्म पर छिलमा आया हो तो इसके लगाने से वह उतर जाता है। बाज़ अतिब्बा ने लिखा है कि इसके मुसलसल लेप से फुंसियों और चेचक के दाग़ दूर हो जाते हैं। इसकी गुठली को पीस कर और चर्बी में हल करके लगाने से नाख़ुनों का मर्ज़ ठीक हो जाता है।

ज़ैतून का अचार भूख बढ़ाता है। ज़्यादा मिक़दार में क़ब्ज़ कुशा है

ज़ैतून के पत्तों को घोट कर लगाने से पसीने की शिद्दत में कमी आ जाती है। इन पत्तों का ख़ु.ादजिमरा, दाद क़ौबा, पित्ती और नमला को नाफ़े है। ख़राब और गंदे ज़ख़्मों पर लगाने से इनकी बदबू दूर करके जल्द ठीक कर देता है। जंगली ज़ैतून के पत्तों का रस कान में डालने से कान बहने बंद हो जाते हैं अगर इसमें शहद मिलाकर गर्म टपकाएं तो कान की फुंसी, मैल की ज़ियादती और इससे पैदा होने वाले बहरेपन में मुफ़ीद है। पत्तों को सिरके में जोश देकर कुल्लियां करने से दांतों का दर्द जाता रहता है। ज़ैतून की लकड़ी को आग लगाकर जलाएं तो इससे निकलने वाला तेल फफूंदी से पैदा होने वाली तमाम जिल्दी बीमारियों, दाद, छीप, चंबल, सिरका बफ़्फ़ा और गंज को ठीक कर देता है।

ज़ैतून का तेल:

जब ताज़ा पके हुए फल को दबाकर निचोड़ा जाए तो हासिल होने वाला तेल ज़ैत अज़ब कहलाता है। यह सुनहरी रंग का होता है। जब यह छ: बरस पुराना होजाए तो वह ज़ैतुल अतीक़ है। जो फ़ाम फीलों से निकाला जाए वह ज़ैतुल इनफ़ाक़ है इसे ज़ैतुर्रकाबी भी कहते हैं क्योंकि यह फ़लस्तीन और शाम से ऊंटों पर लाद कर इराक़ में ले जाया जाता था। बूअली सैना कहता है कि ज़ैतून का तेल जब पुराना हो जाए तो इसकी तबीअत रौग़न शीरीं की तरह हो

जाती है वरना इसी क़िस्म के फ़वाइद हासिल करने के लिए नए तेल को इतना पकाएं कि वह शहद की मानिंद गाढ़ा हो जाए। यह तेल अपने औसाफ़ के लिहाज़ से रौग़ने कलोंजी और रौग़ने बलसान भी इन्हीं फ़वाइद में बेहतर है। वह यह तसलीम करता है कि ज़ैतून का तेल चार हज़ार साल पुराना भी हो जाए तो मुफ़ीद रहता है।

जो लोग बाक़ाइदगी से यह तेल सर पर लगाते हैं न तो उनके बाल गिरते हैं और न ही जल्द सफ़ेद होते हैं। इसकी मालिश से दाद और भूसी ज़ाइल हो जाते हैं। कान में पानी पड़ा हो तो ज़ैतून का तेल डालने से यह पानी निकल जाता है। अतिब्बा ने लिखा है कि इसकी सलाई बाक़ाएदा आंख में लगाने से आंखों की सुर्ख़ी कट जाती है और मोतिया बिंद को कम करने में मुफ़ीद है।

ज़ैतून के तेल की मालिश करने से आज़ा को कुव्वत हासिल होती हैं पट्ठों का दर्द जाता रहता है। बाज़ अतिब्बा इस मालिश को मिर्गी के लिए भी मुफ़ीद क़रार देते हैं। वजउलमफ़ासिल और अर्कुन्निसा को दूर करता है। चहरे को बशाशत देता है। इसे मरहम में शामिल करने से ज़ख़्म जल्द भर जाते हैं। नासूर को मुंदमिल करने में कोई दवाई ज़ैतून से बेहतर नहीं।

इक्कीस तोला जौ के पानी में रौग़ने ज़ैतून मिलाकर पीने से पुरानी क़ब्ज़ जाती रहती है। तेल पीने से मेदे और आंतों के अक्सर इमराज़ जाते रहते हैं। पेचिश में मुफ़ीद है पेट के कीड़े मार देता है गुर्दे की पथरी तोड़ कर निकाल सकता है। इस्तस्क़ा में मुफ़ीद है। जिस्मानी कमज़ोरी को रफ़ा करता है पेशाब आवर है।

मुंह के ज़ख़्मों को जल्द मुंदमिल करता है। गले को साफ़ करता है। ज़हरों के असरात दूर करने में मुफ़ीद है आमतौर पर तेज़ाबी ज़हरों के इलाज में क़लवी अदविया दी जाती हैं जबकि क़लवी ज़हरों का असर ज़ाइल करने के लिए तेज़ाबी दवाएं इस्तेमाल होती हैं। इसलिए ज़हरों के फ़ोरी इलाज में अगर ज़हर से वाक़फ़ियत न भी हो अकसर औक़ात दूध इस्तेमाल किया जाता है मगर ज़ैतून का तेल वह मुनफ़रिद दवाई है जो हर क़िस्म के ज़हरों के असर को ज़ाइल करने के साथ-साथ आंतों पर इनके मुज़िर असरात को ख़त्म करता है। मिसाल के तौर पर संखिया की ज़हरख़ूरानी में अदरूनी अलामात से क़ते नज़र ख़राबी का असल ज़रिया मेदे और आंतों में सोज़िश है। संखिया खाने के थोड़ी देर बाद आंतों में सोज़िश की वजह से इस्हाल शुरू हो जाते हैं। थोड़ी देर के बाद दस्तों के साथ ख़ून आने लगता है। ख़ून के बाद आंतों में ज़ख़्म और सुराख़ हो जाते हैं। अंदरूनी असरात के अलावा इतना कुछ ही मौत का बाइस हो सकता है। अगर इन हालात में मरीज़ को ज़ैतून का तेल बार-बार पिलाया जाए तो वह आंतों के ज़ख़्मों को मुंदमिल कर देता है। सोज़िश को ख़त्म करता है। इस अमल में इसके साथ लुआब बही दाना भी शामिल कर लिया जाए तो फ़वाइद में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है। इसके यह लाजवाब असरात मर्ज़ संखिया की ज़हरख़ूरानी ही में मुफ़ीद नहीं है बल्कि हर उस ज़हर का तोड़ हैं जो तेज़ जलाने वाली और आंतों या गुर्दों में ज़ख़्म पैदा करती हो जैसे कि कंथराइड्स CANTHARIDES।

अतिब्बा ने उसे मुरारे की पथरी में भी मुफ़ीद क़रार दिया है। पित्ते की सोज़िश और पथरी के मरीज़ों को बुनियादी तौर पर चिकनाई से परहेज़ कराया जाता है। मगर रौग़ने ज़ैतून उनके लिए भी मुफ़ीद है। बल्कि पुराने उस्तादों ने मरीज़ों को डेढ़ पाओ तक तेल रोज़ाना पिलाकर सुफ़रावी नालियों से सुद्दे निकालने का काम लिया है। बाज़ औक़ात इसी अमल के दौरान पथरियाँ भी निकल गईं।

जदीद मुशाहिदात:

बरतानिया और अमरीका की अदविया की सरकारी फ़हरिस्त यानी क़राबा दीन के मुताबिक़ यह एक मुअस्सिर दवाई है। इनकी सिफ़ारिश के मुताबिक़ यह गिज़ा भी है और दवा भी। गुर्दों के इमराज़ जहां नाइट्रोजन वाली गिज़ाएं देना मुनासिब नहीं होता। वहां ज़ैतून बेहतरीन गिज़ा है। यह सोज़िश वाली जगहों को तस्कीन देता है। आंतों की जलन को कम करता है। पेट को मुलायम करता है और जब बच्चों में कई दिन इजाबत न हो तो इस तेल का हुक़ना करना आंतों को नर्म करने के साथ फुज़ले को तक़लीफ़ के बग़ैर निकाल देता है।। इस अमल में यह गिलिसरीन से ज़्यादा मुफ़ीद और मुअस्सिर है।

ज़ैतून का फल कसेला होता है। फल का अचार बनाने के लिए पके हुए ज़ैतून लेकर इनको गर्म नमकीन पानी में कुछ देर भिगोया जाता है। बाज़ कारख़ाने इसमें चूना और राख भी मिला देते हैं। फिर तेज़ नमक वाले ख़ुश्बूदार पानी में उन्हें बोतलों में बंद करके रवाना कर देते हैं भारती माहिरीन तिब ने इसे फ़ालिज, अर्क़ुन्निसा, पट्ठों और जोड़ों के दर्दों और कमज़ोरी से पैदा होने वाले दूसरे इमराज़ में अज़हद मुफ़ीद पाया है। वह इस तेल को खाने और लगाने का मशवरा देते हैं बदन की ख़ुश्की को दूर करने जिल्दी इमराज़ मसलन चंबल, ख़ुश्क गंज में मुफ़ीद है। लाग़िर बच्चों और ज़ईफ़ अशख़ास को तेल की मालिश से फ़ाएदा होता है। इमराज़े बतन में यह तेल हर क़िस्म की ख़राश दूर करता है। मेदा और इस्ना अशरी में मुफ़ीद है। 25 ग्राम रोज़ाना खाने से पुरानी क़ब्ज़ जाती रहती है।

नबी सल्ललल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैतून को बासूर के लिए मुफ़ीद क़रार दिया है। इस बीमारी के लिए मरीज़ों को रात सोते वक़्त दो बड़े चम्मच रौग़ने ज़ैतून पीने को कहा गया और इसके साथ दो चम्मच मेंहदी को पीस कर इसमें आठ चम्मच रौग़ने ज़ैतून मिलाकर पांच मिनट जोश देकर मरहम तैयार कर ली गई। बासूर कुहना के मरीज़ों को यह मरहम रात होने से पहले और सुबह उठ कर बैतुलख़ला जाने से पहले लगाने की हिदायत की गई। अक्सर मरीज़ों में इसके अलावा और कोई दवाई देने की ज़रूरत न पड़ी जिनके ज़ख़्म ज़्यादा और जिस्मानी हालत में कमज़ोरी थी उनको तीन से चार ग्राम किस्त शीरीं खाने के बाद दी गई। तीन से चार माह में मुकम्मल शिफ़ा हो गई। मगर आइंदा के लिए तेल का पीना और क़ब्ज़ से मोहतात रहना ज़रूरी क़रार दिया गया।

बालों को उगाने के लिए कलोंजी, हब्बुररिशाद, सनामकी, मेंहंदी को हमवज़न पीस कर छः गुना रौग़ने ज़ैतून में मिलाकर पंद्रह मिनट हल्की आंच पर पकाया

गया। फिर उसे छान कर तेल की सूरत जब मुसलसल लगाया गया तो उससे बाल बढ़ने की रफ़्तार बेहतर हो गई सर की फुंसियां ठीक हो गई। यही तेल एगज़िमा और बग़लों की ख़ारिश में मुफ़ीद साबित हुआ। चंबल PSORIASIS एक ऐसी बीमारी है जिसका कोई भी सबब मालूम नहीं तिब्बे जरीद में इसके मक़ामी इलाज के लिए CRYSAROBIN- ICHTYIOL- CORTISONE के मुरक्कबात इस्तेमाल होते हैं। मगर इन कोशिशों के बावजूद ज़ख़्मों के चमकदार छिलके आसानी से उतरने में नहीं आते। इस बीमारी में क़िस्त शीरीं, सनामक्की और को हम वज़न पीस कर चार गुना रौग़ने ज़ैतून में पकाने के बाद लगाया गया। छिलके उतारने में यह नुस्ख़ा CARTISONE के किसी भी मुरक्कब से ज़्यादा मुफ़ीद रहा। एक डाक्टर के हाथ की उलटी तरफ़ पर ज़ख़्म था। माहिरीने इमराज़ जिल्द ने उसे CHRONIC INFECTIVE ECZEMA तशख़ीस किया। मक़ामी तौर पर रंग–बिरंगी मरहमों के साथ उसे जरासीमकुश अदविया की अफ़सोसनाक मिक़दार में दी जाती रहीं। मुसलसल इलाज से मर्ज़ की शिद्दत में कमी हो गई। मगर देखने में वह यूं लगता था जैसे सूरज मुखी का सुर्ख़ फूल हाथ के ऊपर रख दिया गया है। इस मरीज़ को क़िस्ते शीरीं और कलौंजी ज़ैतून के तेल में जलाकर एक माह लगाई गई। अंदरूनी इस्तेमाल की किसी भी दवाई के बग़ैर एग्ज़िमा ठीक हो गया।

बूअली सैना ने ज़रीरा (बाछ) और अर्क़ गुलाब को जले हुए का बेहतरीन इलाज क़रार दिया है। इस बाछ को जब ज़ैतून के तेल में हल करके उबाल कर जले हुए ज़ख़्मों पर लगाया गया तो फ़ायदा ज़्यादा बेहतर रहा। चूंकि बाछ मक़ामी तौर पर सोज़िश पैदा करती है। इसलिए एक चम्मच बाछ के साथ ज़ैतून के पंद्रह से बीस चम्मच इस्तेमाल किए गए।

इमराज़े बतन:

जापान के बाज़ तिब्बी जराइद ने आंतों के सरतान में रौग़ने ज़ैतून को मुफ़ीद क़रार दिया है। मगर वह अपने इस बयान में वाज़ेह न थे। इस ज़िम्न में मश्रिके वुस्ता और शिमाली अफ़रीक़ा में तिब्बी ख़िदमात बजा लाने वाले सैंकड़ों डाक्टरों से मालूमात हासिल की गईं उन सबका मुत्तफ़िक़ा जवाब यह था कि उन्होंने ज़ैतून का तेल पीने वाले किसी शख़्स को कभी पेट के सरतान में मुब्तिला नहीं देखा। जापानी माहिरीन का ख़याल है कि लम्बे अर्से तक ज़ैतून का तेल पीने से मेदा और आंतों के सरतान ठीक हो सकते हैं।

मेदा और आंतों में ज़ख़्म के मरीज़ों को ऐसे औक़ात में ज़ैतून का तेल दिया जब उनका पेट ख़ाली था। आमतौर पर 11 बजे दिन और रात सोने से पहले के औक़ात को इस ख़ुराक के लिए मुंतख़िब किया गया 8 से 10 ग्राम की एक ख़ुराक से क़रह की जलन तीन से चार दिन में जाती रही। दस रोज़ के बाद किसी भी मरीज़ को कोई तकलीफ़ बाक़ी न थी। हज़रत अबू सईद अलख़िदरी रज़ि० की एक रिवायत से इस्तिफ़ादा करते हुए ऐसे मरीज़ों को नहार मुह और अस्र के वक़्त शहद की एक माकूल मिक़दार भी दी गई। क्योंकि आंतों की सोज़िश में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे अक्सीर क़रार दिया है। मरीज़ों को कमज़ोरी और अलामात चंद दिनों में ख़त्म हो गए। अकसर लोगों

की आंतों में इज़ाफ़ी सोजिश भी थी जिसके लिए दाफ़े अफ़ूनत मुरक्कब कलोंजी दिया गया। कलोंजी ने पेट से ग़लीज़ रियाह को फ़ौरन निकाल दियां जब कमी मौसम हुआ इसके साथ सफ़रजल (बही का मुरब्बा) दिया गया। यह मुरब्बा हाफ़िज़ इब्नुलक़ैम रह० की तज्वीज़ के मुताबिक़ शहद में बनाया गया था। अकसर मरीज़ों को नहारमुंह मुरब्बा के चंद क़तलों और इनमें ज़ैतून के तेल के अलावा और कोई दवाई न दी गई। दो माह के बाद मेदे के बरक़ी मुआएने GASTROSCOPY के बाद ज़ख़्म मुंदमिल पाया गया। एहतियाती तौर पर ही मरीज़ को छः–छः माह मज़ीद तेल पीने की हिदायत की गई। अल्लाह के फ़ज़ल से यह इलाज कभी भी नाकाम नहीं हुआ। जबकि इसके मुक़ाबले में जदीद इलाज अगर मुफ़ीद रहे तो चालीस रुपए का है। फिर इस की अफ़ादियत भी मुश्तबा है और इसका अरसए इलाज एक साल से कम नहीं।

तबख़ीर मेदा और पेट की जलन के लिए ज़ैतून के तेल से बेहतर कोई दवाई नहीं।

इमराज़े तनफ़्फ़ुस:

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ातुल जंब में ज़ैतून का तेल इरशाद फ़रमाया। इस उसूल को सामने रख कर सांस की हर बीमारी के मुब्तिला को ज़ैतून का तेल ज़रूर दिया गया। दमे के मरीज़ों को बीमारी में जब कमी आती है तो आइंदा इस क़िस्म के महलूल से महफ़ूज़ रखने के लिए ज़ैतून के तेल से बेहतर दवाई मयस्सर न आ सकी।

इनफ़्लोइंज़ा और ज़ुकाम का तिब्बे जदीद में कोई इलाज नहीं। वह लोग जो बाक़ाएदा ज़ैतून का तेल पीते हैं। इनको न तो ज़ुकाम लगता है और न ही नमूनिया होता है। अगर उनको कभी इन्फ़्लोइंज़ा हो भी जाए तो इसका हमला बड़ा मामूली होता है। ज़ुकाम और दमे के दौरान इज़ाफ़ी फ़ाएदे केलिए उबलते हुए पानी में शहद भी मुफ़ीद है।

तपे–दिक़:

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० की दोनों रिवायात में ज़ातुल जंब में ज़ैतून का तेल तजवीज़ हुआ। इसके साथ ही हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० की रिवायत में ज़ैतून का तेल जज़ाम में मुफ़ीद है। इल्मुल जरासीम और इल्मुलइमराज़ के एतिबार से कोढ़ और तपेदिक़ की नौइयत एक है। दोनों के जरासीम ACID FAST होते हैं। इसलिए वह अदविया जो तपेदिक़ पर मुअस्सिर होती हैं। जज़ाम में भी मुफ़ीद होती हैं और इससे बरअक्स भी दुरुस्त है। इसलिए तपेदिक़ के मरीज़ों को इस नुसख़े के मुताबिक़ किस्त और ज़ैतून देने का ख़याल पैदा हुआ। ज़ैतून के तेल के सिलसिले में मालूमात के दौरान ख़ान बहादुर डाक्टर सईद अहमद ख़ां से मिलने का मौक़ा मिला। डाक्टर सईद साहब पाकिस्तान में तपेदिक़ के इलाज के सबब से बड़े सेनीटोरियम डाडर ज़िला मांसहरा के तीस साल सुप्रिंटेंडेंट रहे हैं उन्होंने इस ज़िम्न में अजीम तजुर्बा सुनाया।

एक मरीज़ को 1936 में दिक़ हो गई। मदारिस के मदना पुरी सेनीटोरियम में इसकी पांच पस्लियां निकाल दी गईं। उसकी हालत अभी बेहतर न हुई थी, तो

मालूम हुआ कि दिक़ का असर आंतों पर भी हो गया है। उस ज़माने के इल्म के मुताबिक़ ILEO COECAL TUBERCULOSIS का कोई इलाज न था। डाक्टरों ने इस मरहले पर उसे जवाब दे दिया। मरीज़ ने सारा दिन रो-रो कर ख़ुदा से मुनाजात की। ख़्वाब में उसे ज़ैतून का तेल, अल्ट्रा वाइलेट शुआओं और एक दवाई का इशारा हुआ। दवाई तो वह भूल गया मगर ज़ैतून रोज़ाना तीन औंस तेल पीने लगा और आल्ट्रावाइलेट शुआएं लगवाई।

जिस हस्पताल से उसे लाइलाज क़रार दिया गया था। उसी से वह तीन माह बाद तंदरुस्त होकर फ़ारिग़ हुआ। वह मरीज़ तादमे तहरीर पिचासी साल की उम्र में भी सुर्ख़ों सफ़ेद 1987 में ज़िंदा मौजूद है।

इस मरीज़ पर ज़ैतून के तेल के असरात के मुशाहिदे के बाद डाक्टर सईद साहब ने चालीस साल तक दिक़ के मरीज़ों को इलाज में तेल ज़रूर दिया और उनका कोई मरीज़ ज़ाया न हुआ।

तपेदिक़ का जदीद इलाज महंगा और तवील है। हर शख़्स के लिए पचास रुपए रोज़ाना की अदविया और उसके बाद उनके ज़ैली असरात अट्ठारह माह तक बरदाश्त करना आसान काम नहीं। उन मरीज़ों को 25 ग्राम ज़ैतून का तेल रोज़ाना और 8 ग्राम रोज़ाना किस्त शीरीं दी गई। कमज़ोरी के लिए शहद, खांसी के लिए अंजीर या इसका शर्बत इज़ाफ़ी तौर पर देते गए। इब्तिदाई दर्जे के मरीज़ आम तौर पर तीन से चार माह में ठीक हो गए। अलामात ख़त्म होने और ख़ून के नार्मल होने के बाद मरीज़ों को ज़ैतून का तेल एक साल तक पीने की हिदायत की गई छः साल के मुशाहिदे में किसी मरीज़ को दोबारा तकलीफ़ नहीं होती।

ज़ुकाम—यकसर:

तिब्बे जदीद में ज़ुकाम का कोई शाफ़ी इलाज नहीं। इब्नुलक़ैम रह० ने ज़ुकाम के इलाज में क़िस्तुलबहरी को मुफ़ीद क़रार दिया है। ज़हबी के मुशाहिदे में क़िस्त को सूंघना भी ज़ुकाम में मुफ़ीद है। जबकि एक रिवायत के मुताबिक़ मरज़ंजोश सूंघने से ज़ुकाम ठीक हो जाता है। पुराने ज़ुकाम में या उन मरीज़ों को जिनको बार-बार ज़ुकाम हो जाता है। ज़ैतून का तेल आइंदा के लिए महफ़ूज़ कर देता है। बुख़ारी और इब्ने माजा में ख़ालिद बिन सअद वाली रिवायत के मुताबिक़ एक चम्मच कलौंजी को पीस कर बारह चम्मच ज़ैतून के तेल में हल करके इस मुरक्कब को पांच मिनट उबालने के बाद छान लिया गया। सुबह-शाम नाक में डालने से न सिर्फ़ यह कि पुराना ज़ुकाम ठीक हुआ। बल्कि नक्सीर भी अज़हद मुफ़ीद रहा।

सिरका .... अन्नहल

VINEGAR

सिरका, गन्ने का रस चुक़ंदर, जामुन, अंगूर, मुनक़्क़ा, मेवा, ताड़ी, गंदम, जौ, खांड की राब और दूसरे फलों से तैयार होता है। यह बुनयादी तौर पर किसी भी शकर या निशास्ते में ख़मीर उठाने से पैदा होता है। यह तो मालूम नहीं हो

सका कि इन्सान कब से सिरका बना रहा है। मगर ज़मानए क़दीम से इसका ज़िक्र किताबों में मौजूद है। तारीख़ के हर दौर में इसे ग़िज़ा और दवा के तौरपर इस्तेमाल किया जाता रहा है। बुक़रात ने मुतअद्दिद बीमारियों के इलाज में सिरका का इस्तेअ़माल किया है। फ्रांस के माहिर जरासीम पासचर Pastur ने मालूम किया कि निशास्ते में ख़मीर जरासीम की एक ऐसी किस्म भी मौजूद है जो बीमारियां पैदा करने के बजाए हमारे फ़ाएदे का काम करती है। इनको दोस्त जरासीम कहते हैं दोस्त जरासीम की जानिब से इनसानी फ़ाएदे से..... मुन्फ़रिद काम नहीं बल्कि दूध से दही बनाने या शकर को अलक्रोहल में तब्दील करने और जौ से ....एक्स्ट्रेट बनाने के अमल में भी इसी किस्म के दोस्त जरासीम की कोशिश शामिल होती है।

सिरका बनाने के लिए आमतौर पर ऐसे फल इस्तेमाल होते हैं जो गल सड़ गए हों और कोई उन्हें ख़रीदने पर तैयार न हो इस तरह फलों की सनअत से मुताल्लिक़ कारख़ाने अपने-यहां का रद्दी माल ज़ाया करने की बजाए उसे मुनफ़अत में तब्दील कर लेते हैं किसी भी मिठास से सिरका बनाने का तरीक़ा तक़रीबन वही है जो शराब बनाने का है। अकसर होता है कि कोई कारखाना शराब बनाने के लिए ख़मीर तैयार करता है और यह ख़मीर शराब की बजाए सिरका बना देता है और यह भी मुमकिन है सिरका बनाने की कोशिश में शराब बन जाए। मगर यह हादसात अब इन कारखानों में होते हैं जो इल्मे कीमया से बाक़ाएदा आशना नहीं। क्योंकि साइंसी तौर पर अमलयात के लिए हर क़िस्म के जरासीम अलाहिदा किए जा चुके हैं और कारख़ानों में ख़मीर उठाने के लिए या ख़मीर पर भरोसा करने की बजाए मतलूबा क़िस्म के जरासीम की एक ख़ालिस खेप पर बराहे रास्त माल में दाख़िल कर दी जाती है। बड़े—बड़े कारख़ाने अब दही बनाते वक़्त पुराने तरीक़े से "जाग" नहीं लगाते बल्कि दूध को दही में तब्दील करने वाले जरासीम को पानी में हल करके इसका एक क़तरा डाल कर मन भर दही हासिल कर लेते हैं बल्कि इस तरकीब से हासिल होने वाला दही यक़ीनी तोर पर मीठा होता है। शकर को सिरके में तब्दील करने वाले जरासीम को ANGUILULA ACETI कहते हैं। बाज़ माहिरीन इनको IYCODERMA ACETI कहते हैं।

आजकल दो क़िस्म का सिरका बाज़ार में मिलता है। एक वह जो फलों वगै़रा से क़ुदरती तरीक़े से बनता है दूसरा वह जो

इरशादे नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमः

हज़रत जाबिर रज़ि० अब्दुल्ला रिवायत फ़रमाते हैं।

ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم سال اھله الإدام. فقالو ما عندنا الدخلّ، فدعابه، وجعل یا کل به ویقول. نعم الادام الخلّ، نعم الادام الخلّ

(صحیح مسلم۔ابن ماجہ)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मर्तबा अपने घर वालों से सालन का पूछा। उन्होंने कहा कि हमारे पास सिरका के अलावा कुछ नहीं। उन्होंने इसे तलब किया और फ़रमाया कि सिरका बेहतरीन सालन है। सिरका बहतरीन सालन है।)

हज़रत उम्मे हानि रज़ि० रिवायत फ़रमाती हैं:

دخل علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال اعندک شیٌ قلت لا. الاخبزٌ یا بسٌ وخلٌ. فقال ھاتی: مافقر بیتٌ من ادم فیہ خلٌ.
(ترمذی)

(हमारे घर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और पूछा कि क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है, मैंने कहा नहीं, अलबत्ता बासी रोटी और सिरका है। फ़रमाया कि इसे ले आओ। वह घर कभी ग़रीब नहीं होगा जिसमें सिरका मौजूद है।)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० रिवायत फ़रमाती हैं:

قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نعم الادام الخل (ابن ماجہ)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सिरका बेहतरीन सालन है। हज़रत उम्मे सअद रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं हज़रत आइशा रज़ि० के घर में मौजूद थी और उन्होंने फ़रमाया:

فل من عذاء. قالت عندنا خبزٌ، وتمرٌ دخلٌ. فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، نعم الاوام الخلٌ، الھم بارک فی الخلّ فانۃ کان ادام الانبیّاءِ قبلی، ولم یفقر بیت فیہ خل.
(ابن ماجہ)

क्या तुम्हारे पास खाने को कुछ है। उन्होंने कहा हमारे पास रोटी, खजूर और सिरका है। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "बेहतरीन सालन सिरका है" ऐ अल्लाह! तू सिरका में बरकत डाल के यह मुझ से पहले नबियों का सालन था। और वह घर ग़रीब न होगा जिस घर में सिरका मौजूद हो।

कुतुबे मुक़द्दिसा:

सिरका उन चीज़ों में से है जो ज़मीन में पैदा नहीं होतीं मगर इनको मुख़्तलिफ़ सूरतों से तैयार किया जाता है। मगर इनसान ज़मानए क़दीम से सिरका बनाने के फ़न से आशना था और दिलचस्प बात यह है कि हज़ारों साल गुज़रने के बाद तरकीब में कोई ख़ास तब्दीली वाक़े नहीं हुई। इल्हामी किताबों में इसका ज़िक्र बड़ी कसरत से मिलता है।

.... फिर बूइज़ ने इससे खाने के वक़्त कहा कि यहां आओ और रोटी खा और अपना निवाला सिरका में भिगो। (ज़ौतरू 2:14)

यहां पर सिरका रोटी के साथ सालन के तौर पर मेहमान को ख़ातिरदारी के लिए पेश किया गया। ...उन्होंने मुझे खाने को इंदराइन भी दिया और मेरी प्यास बुझाने को उन्होंने मुझे सिरका पिलाया। (ज़बूर– 21.69)

यहां सिरका से प्यास बुझाने वाले फ़ाएदे की सिम्त इशारा है। जबकि इंदराइन नाक़ाबिले क़ुबूल और सख़्त कड़वा होता है।

जैसा दांतों के लिए सिरका और आंखों के लिए धुवां वैसा ही काहिल अपने भेजने वालों के लिए है। (इम्साल– 26:10)

इस जगह यह ख़याल ज़ाहिर किया गया है कि सिरका दांतों के लिए मुज़िर

या बेकार है। जो कि दुरुस्त नहीं। क्योंकि सिरका यक़ीनन मुफ़ीद है।

> जो किसी ग़मगीन के सामने गीत गाता है वह गोया जाड़े में किसी के कपड़े उतारता और सजी पर सिरका डालता है। (सजी से मुराद पका हुआ दुंबा है तो इस पर सिरका बाद में डालना और पहले इसको गलाने में मुफ़ीद है।) (इमसाल– 20:26)

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के मसलूम किए जाने का वाक़िआ इंजील में मुतज़ाद रिवायात के साथ है। क्योंकि कुरआन ने इसकी मुकम्मल नफ़ी की है। मगर वह अपने अंदाज़ में भी जब बयान करते हैं तो हर जगह कहानी मुख़्तलिफ़ है। क्योंकि हर रावी ने प्यास बुझाने के लिए सिरका ज़रूर बयान किया है।

> ...... और फ़ौरन उनमें से एक शख़्स दौड़ा और स्पंच लेकर सिरका में डुबोया और सरकंडे पर रख कर उसे चबाया। (मती 27:48)
>
> ..... एक ने दौड़ा कर स्पंच को सिरका में डुबोया और सरकंडे पररख कर उसे चुसाया और कहा ठहर जा। (मरक़स–15:36)
>
> ....सिपाहियों ने भी पास आकर और सिरका पेश करके उस पर ठट्ठा मारा। (लोक़ा 23:26:27)
>
> ...वहां सिरका से भरा हुआ एक बर्तन रखा था। पस उन्होंने सिरका में भिगोए हुए स्पंच को ज़ोफ़े की शाख़ पर रख कर उसके मुंह से लगाया। (यूहन्ना–19:29:30)

इन आयात में ज़ोफ़ा और इंदराइन का ज़िक्र आया है। अरब में इंदराइन को हज़ल यानी तूंबा कहते थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदज़ाएक़ा अदविया से मना फ़रमाया ज़ोफ़ा मश्हूर दवाई है जिसकी नबाताती हैसियत अब भी मुतअय्यन नहीं।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदातः

सिरका ठंडक और हरारत का एक हसीन इम्तिज़ाज है। यह जिस्म से ग़लब माद्दों को निकालता है। और तबीअत को फ़रहत देता है। सिरका मेदे के अत्तिहाब को दूर करता है। जिस्म से ज़हरीदी अदविया के असर को दूर करता है। पित्ते से सुफ़रा के निकलने की रफ़्तार को एतिदाल पर लाता है। जिस्म के किसी हिस्से में अगर ख़ून को इंजमाद हो जाए तो यह उसे हल करके फिर से सय्याल बना देता है। बच्चे वाली औरतों का दूध अगर रुक जाए तो सिरका के लेप और सिरका पीने से जारी हो जाता है। यह प्यास को बुझाता है। पेट को छोटा करता है।

तिल्ली के बढ़ने को रोकता है। जिस्म में वरम की पैदाइश को रोकता है। ख़ुराक को हज़्म करता है। ज़ोदं हज़्म ग़िज़ाओं के बोझ से निजात देता है। ख़ून को साफ़ करता है और फोड़े फुंसियों को दूर करता है।

सिरका को गर्म करके अगर इसमें नमक डाल कर पिया जाए तो यह मुंह की ग़िलाज़त को दूर करता है। हलक़ में तलख़ी, जलन, बोझ को दूर करता है। गले की रुकावट को दूर करता है। और वह लोग जिनको सीने में बोझ की

कैफ़ियत महसूस होती है इनको इससे फ़ाएदा देता है।

गले के अंदर लटकने वाले कव्वे की सोजिश, हिस्सासियत और इसके टेढ़े पन में मुफ़ीद है गर्म सिरके के ग़रारे, दांत की दर्द को ठीक करते हैं। और मसूढ़ों को मज़बूत करते हैं। गर्म सिरका पीना मेदे को तक़वियत देता है। जिस्मानी कुव्वत में इज़ाफ़ा करता है। चेहरे को जाज़िब बनाता है। मौसमे गर्मा में सिरका पीना जिस्म की हिद्दत को कम करके तबीअत को मुतमईन करता है।

अल्लामा अहमद ज़हबी रह० कहते हैं कि सिरका गर्मी और ठंडक दोनों की तासीर रखता है। लेकिन इसमें ठंडक पैदा करने का असर ज़्यादा ग़ालिब है। यह म़ेदे की सोज़िश को दूर करता है। अर्क़ गुलाम के साथ में दर्द में मुफ़ीद है। ग़िज़ा के हज़्म करने में मददगार है। गर्म पानी के साथ इसके ग़रारे दांत दर्द को मुफ़ीद हैं। ख़्वाह वह सोज़िश से हो या आ़साबी वजूहात से।

सिरका लगाने से जुएं मर जाती हैं। पित्ती और ख़ारिश पर इसका लगाना मुफ़ीद है। सिरका और गुलाब का अर्क़ जले हुए का बेहतरीन इलाज हैं। इब्दुल क़य्युम रह. कहते हैं कि इसका लगाना सोज़िशों से पैदा होने वाले औराम में अज़हद मुफ़ीद है। हुब्बुर रिशाद के साथ जौ का आटा मिलाकर सिरका में लेप बनाकर आसाबी दर्दों और ख़ासतौर पर अर्क़ुन्निसा के लिए लेप करें तो अज़हद मुफ़ीद है। मैथी के बीज और नसतरून पीस कर सिरका में लेप बनाकर पेट की सोज़िश में मुफ़ीद हैं। यही नुस्ख़ा वरम से पैदा होने वाली दर्दों में भी मुफ़ीद है।

सिरका की कीमयावी हैइयत:

मशिरक़ी मुमालिक में सिरका हर उस फल या अनाज से बनाया जाता है जिस में निशास्ता या मिठास की माकूल मिक़दार मौजूद हो। फलों में अंगूर, गन्ना, जामुन, चुक़न्दर, सेब, आलू बुख़ारा, आलूचा, संगतरा, माल्टा हत्ता कि खांड बनाने में बच जाने वाली राब से भी सिरका बनता है। जबकि अजनास में जौ गंदम, मकई, जवी, चावल और चनों से सिरका बन सकता है। कीमयावी तौर पर सिरका का असल जुज़्व तेज़ाब है जिसे सिरका का तेज़ाब कहते हैं। पाकिस्तान के क़वानीन में ख़ुराक की रौ से इनसानी इस्तेमाल के लिए तैयार होने वाले सिरका का कीमयावी मेयार लाज़मी तौर पर इस तरह होना चाहिए।

तेज़ाब सिरका	3.75 फ़ीसदी
ठोस अज्ज़ा	2.1
राख	0.1

जो सिरका माल्ट एक्सट्रेक्ट से बनाया जाए उसमें इज़ाफ़ी तौर पर 0.05 ग्राम फ़ास्फ़ोरस और 0.04 ग्राम फ़ी सौ ग्राम नाइट्रोजन होती है।

गिज़ाई क़वानीन की रौ से सिरका में तांबा, संखिया, सीसा या किसी मादनी तेज़ाब का कोई हिस्सा मौजूद न होना चाहिए। सिरका की साख़्त को परखने का मेयार यह है:

तेजाब	5 फ़ीसदी तक

मादनी अज्ज़ा 2.5 फ़ीसदी तक

फ़ास्फ़ेट 0.08 नाइट्रोजन

1.019

वह सिरका जो अजनास से बनाया जाता है इसमें सलफ़ेट ज़्यादा होते हैं यानी इसमे तेज़ाबियत का अंसर नुमायां होता है। जबकि राब के बनने वाले सिरके को जलाएं तो राख बहुत कम मिलती है।

सिरका के अज्ज़ा और सिरका में तेज़ाब की मौजूदगी की वजह से सिरका को जाली तौर पर बनाना बड़ा आसान हो गया है। आमतौर पर सिरका तेज़ाब से तैयार होता है जबकि कुदरती अज्ज़ा से तैयार होने वाले सिरका का रंग भूरा या गहरा ब्राउन होता है। इसे सफ़ेद नहीं किया जा सकता। पाकिस्तान में गिज़ाई अज्ज़ा को तैयार करने वाली तमाम मशहूर दूकानों

जो ख़ालिस सिरका बनाते हैं। मगर हमारे सिरका साज़ इस बारे में बड़े दियानतदार हैं बोतल के लेबिल पर वाज़ेह अलफ़ाज़ में "मसनूई बना हुआ" यानी हमेशा मरकूम होता है।

सिरका साज़ी:

वह सिरका जो, जौ से तैयार होता है। ज़रा मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में बनता है। जौ के दाने तोड़ कर इनका बारीक–बारीक गर्म पानी से गुज़ारा जाता है। इससे निशास्ता की पूरी मिक़दार पानी में हल हो कर निकल जाती है। अब इस पानी में ख़मीर मिलाकर उसे ख़मीर उठाने के लिए लकड़ी के कनस्तरों में रख देते हैं। इनको ढांपने के बावजूद इनके इतराफ़ में हवा की आम्दोरफ़्त के लिए सुराख़ रखे जाते हैं। इसका ख़मीर उठने के बाद जब इससे कार्बन डाई ऑक्साइड गैस, निकल जाती है तो कनस्तर के पैंदे में लगी हुई टोंटी के ज़रिये सिरका निकाल लेते हैं मगर ऊपर की तै को जाता है सिरका साज़ी के अमल के दौरान में बाज़ कारख़ाने माल्ट एक्स्ट्रेट अलाहिदा शामिल करते हैं। जिससे इसमें विटामिन बी की मज़ीद मिक़दार शामिल होती है। ज़ाएक़ा बेहतर होता है और ज़्यादा मुक़व्वी बन जाता है। इस सिरका को MALTED VINEGAR कहते हैं और पाकिस्तान में भी आम मिलता है।

सिरका बनाने का जो तरीक़ा हज़ारों साल पहले था आज भी तक़रीबन वही है। मादनी बर्तनों में सिरका बनाने से इसमें इनकी तासीर और ज़ाएक़ा आ जाते है जो कि नापसंदीदा है। इस दौरान अमरीका में न्यू ऑरलेंज़ वालों ने तर्कीब में कुछ तब्दीली की और कुछ फ़र्क़ फ्रांस वालों ने डाला मगर दोनों तरीक़े मक़बूलियत न पा सके और आज भी पुराने तरीक़े मुरव्वज हैं।

सिरका साज़ी का बुनयादी अमल यह है कि किसी भी मिठास या निशास्ता वाले महलूल में ख़मीर मिलाकर इसमें ख़मीर उठाते हैं। इस तरह इसमें एलकोहल बनती है और कार्बन डाई ऑक्साइड गैस ख़ारिज होती है। इस एलकोहल से जब ऑक्सीजन मिलती है तो सिरका बन जाता है। महदूद पैमाने पर सिरका बनाने के लिए ख़मीर या YEAST POWDER और माल्ट एक्स्ट्रेक्ट की बजाए सिरका बनाने वाले जरासीम की एक मिक़दार बराहे रास्त भी शामिल की

जा सकती है। जैसे कि ANGUILULA ACETI यह जरासीम महलूल को बहुत जल्द सिरका में तब्दील कर देंगे मगर इसका ख़ुश्बू और ज़ाएक़ा वह न होगा जो ख़मीर से पैदा होते हैं बल्कि बाज़ ज़ाग़ ऊपर वाली सतह को कमी नहीं होते। क्योंकि इसमें जरासीम की "लाग" होती है जिसे आइंदा नया घान बनाने में इस्तेमाल किया जा सकता है।

यौरप में मिलने वाला सिरका शराबों से बराहे रास्त भी तैयार किया जाता है। हर ग़ैर कशीदशुदा शराब से सिरका बनता है। मगर ख़ूबी यह है कि इसमें नशा नहीं होता। लोगों को सिरका पिलाने के बाद इसको तेज़ करने के लिए अमल कशीद से गुज़ार कर देखा है। मगर इसमें तेज़ाबियत ज़्यादा आ जाती है और बहुत से फ़ाइदे निकल जाते हैं। इसलिए कशीद शुदा या DISTILLED VINEGAR ख़ुर्दनी और मुआलजाती मक़ासिद के लिए बेकार है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदातः

अतिब्बा क़दीम ने सिरका की तासीर इसकी कीमयावी हैयत की बजाए इसके माख़ज़ से बयान की है कि सेब, बही, नाशपाती से बनने वाला सिरका मुक़व्वी होता है। ....और ताड़ी का सिरका तहाल को कम करता है। और हिचकी को रोकता है। पेट से नफ़्ख़ को निकालता है। जंगली प्याज़ का सिरका आवाज़ को साफ़ करता है। मेदे को कुव्वत देता है। संगे मसाना में मुफ़ीद है। इससे कुल्लियां करने से मसूढ़े मज़बूत होते हैं।

हकीम गुलाम इमाम ने गुड़ से सिरका बनाने के लिए बारा सैर गुड़ को एक मन पानी में डाल कर ख़मीर उठाने के बाद इसमें पोदीना मिलाकर कशीद करने की तरकीब बयान की हैं उन्होंने "इलाजुल गुर्बा" में सिरका को बयक वक़्त दवा और ग़िज़ा क़रार दिया है इनके कशीदकर्दा सिरके को "अर्क़ नानान" कहते हैं। और अर्क़ को इमराज़े मेदा और बढ़ी हुई तिल्ली में हुकमा ने अक्सीर क़रार दिया है।

सिरका खाने के बाद मेदे का फ़ेएल क़वी हो जाता है। प्यास की शिद्दत कम हो जाती है। वह ग़िज़ाएं जो आसानी से हज़्म नहीं होतीं अगर उनके साथ सिरका को शामिल कर लिया जाए तो हज़्म हो जाती हैं पेट से सुद्दे निकालता है। अंजीर को हर दो रोज़ तक सिरका में भिगोकर खाया जाए तो बढ़ी हुई तिल्ली ठीक हो जाती है। कहा जाता है कि तिल्ली में सिरका के लिए ख़ुसूसी रग़बत है इसलिए सिरका की जो भी मिक़दार पेट में जाती है। वह फ़ौरन तिल्ली में दाख़िल हो जाती है। इसलिए वह अदविया जो तिल्ली के इलाज में दी जाएं अगर उनके साथ सिरका भी शामिल कर दिया जाए तो असर जल्द होता है मुनक़्क़ा और बीज कसीर को सिरका के साथ नहारमुँह खाया जाए तो पेट के कीड़े मर जाते हैं।

सिरका पीने से शराब और अफ़्यून का नशा उतर जाता है। चूंकि सिरका बुनियादी तौर पर तेज़ाबी सिफ़ात रखता है। इसलिए क़लवी रुजहान वाली ज़हरों के- इलाज में सिरका देना सही मानों में इलाज बिज़्ज़िद है जैसे के कास्टिक सोडा वग़ैरा। ऑपरेशन के बाद मरीज़ को जो क़ै आती है इसको रोकने के लिए रुमाल को सिरके में तर करके मरीज़ के मुंह पर डाल दिया जाता था। बेहोशी

के बाद की मतली रुक जाती है। वैदिक तिब में भी सिरके का ज़िक्र काफ़ी मिलता है। वैदों ने हैज़े के इलाज में सिरका को मुफ़ीद क़रार दिया है। एक नुस्ख़े के मुताबिक़ प्याज के टुकड़े काट कर सिरका में भिगो दिए जाएं, हेज़े की वबा के दिनों में इस प्याज़ को खाने से हैज़ा नहीं होता।

अतिब्बा क़दीम ने सिरका में पकाए हुए गोश्त को जिसे "सिकबाज" कहते हैं। कमज़ोर जिस्म वालों के लिए मुज़िर क़रार दिया है। लेकिन यह यरक़ान में नाफ़े है और भूख बढ़ाता है। फेफड़ों से निकलने वाला ख़ून सिरका पीने से बंद हो जाता है। शहद के साथ सिरका मिलाकर पीने से हैज़ का दर्द और कमी दूर हो जाते हैं। जिस्म के अक्सर मक़ामात से होने वाले अंदरूनी जर्याने ख़ून में सिरका पिलाना मुफ़ीद होता है। सिरका बयक वक़्त ठंडा भी है और गर्म भी। प्यास की शिद्दत में सिरका के साथ पानी और नमक मिलाकर देने से तसकीन ज़्यादा अच्छी तरह होती है और यह नुस्ख़ा सटरोक से बचाव के लिए भी अज़हद मुफ़ीद है।

सिरका के बैरूनी इस्तेमाल:

बुख़ार की शिद्दत को तोड़ने के लिए मरीज़ों के जिस्म पर पानी फेरा जाता है। इसकी आम तर्कीब यह है कि यह ताज़ा पानी में कपड़ा भिगोकर मरीज़ के जिस्म पर फेरते हैं। अतिब्बा का कहना है कि इस पानी में अगर सिरका मिला लिया जाए तो फ़ाएदा ज़्यादा जल्द होता है।

अपने असरात के लिहाज़ से सिरका जरासीम कुश, दाफ़े तअफ्फ़ुन और मक़ामी तौर पर ख़ून की गर्दिश में इज़ाफ़ा करता है। इन फ़वाइद की बिना पर यह फफूंदी से पैदा होने वाली तमाम सोज़िशों में कमाल की चीज़ है। इसमें अगर किसी और दवाई का इज़ाफ़ा न भी किया जाए तो छीप, दाद और रानों के अंदरूनी तरफ़ की ख़ारिश में मुफ़ीद है। फफूंदी के इलाज में सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि फफूंदी दवाओं की आदी हो जाती है। इसलिए सही दवाई के चंद रोज़ा इस्तेमाल के बाद फ़ाएदा होना रुक जाता है। बल्कि मुअस्सर दवाई के दौरान हर मर्ज़ में इज़ाफ़ा होने लगता है। ऐसे में माहिरीने इमराज़े जिल्द यह तज्वीज़ करते हैं कि थोड़े दिनों के इलाज के बाद दवाई तब्दील कर दी जाए। इन्ही इमराज़ की बाज़ दवाओं से मतलूबा फ़वाइद हासिल करने के लिए उन्हें महीनों लगाना पड़ता है। हाल ही में दादे कूबा के बारे में एक जर्मन दवाई के फ़वाइद के मुशाहिदात की तफ़सील जारी हुई है। जिसके मुताबिक़ कुछ मरीज़ 38 माह तक ज़ेरे इलाज रहे। सिरका वह मुनफ़र्द दवाई है जिसके फफूंदी आदी नहीं होती और यह हर हाल में इसके लिए मुफ़ीद है। हाफ़िज़ इब्ने कैय्युम रह॰ के मुशाहिदात की रौशनी में फफूंदी से पैदा होने वाली सोज़िशों के लिए एक नुस्ख़ा आज़माया गया।

बर्गे मेंहदी, सनामक्की, कलोंजी, मैथरे, हब्बुर्रिशाद, किस्त शीरीं को हम वज़न पीस कर इसके एक प्याले में छः प्याले सिरका मिलाकर उसे दस मिनट हलकी आंच पर उबाला गया। फिर कपड़े में निचोड़ कर छान कर यह लोशन हमः अक़साम की फफूंदी, दाउस्सलब, बफ़्फ़ा में इस्तेमाल किया गया। फ़वाइद में

लाजवाब पाया गया। किसी भी मरीज़ को बीस रोज़ के बाद मज़ीद इलाज की ज़रूरत न रही। जब मरीज़ों में छिलके थे और मक़ामी तौर पर अकड़न थी इनमें इसी नुस्ख़े को सिरका की बजाए ज़ैतून के तेल में इसी तनासुब के साथ पकाया गया और दवाई आमीज़ तेल इस वक़्त तक लगाया गया जब तक छिलके उमर न गए और अकड़न कम न हुई। इसके बाद सिरका वाला मुरक्कब फिर से शुरू किया गया। चूंकि इन तमाम अदविया को अपनी उफ़ादियत के बारे में बारगाहे नबुव्वत से सनद हासिल थी। इसलिए किसी नाकामी का सवाल ही पैदा न होता था। अर्क़े गुलाब में सिरका मिलाकर माथे पर लगाने से गर्मी का सर दर्द जाता रहता है। बाज़ नुस्ख़ों में रौग़ने गुल या ज़ैतून का तेल भी तजवीज़ किया गया है।

गर्म पानी में नमक और सिरका मिलाकर कुल्लियां करने से दांतों का दर्द जाता रहता है। यह अमल अगर बार–बार किया जाए तो मसूढ़ों से सोज़िश को भी दूर कर देता है। इसी मुरक्कब के ग़रारे करने से हलक़ की सोज़िश और ख़न्नाक़ में भी फ़ाएदा होता है। बिच्छू के काटे पर ख़ालिस सिरका या सिरके में क़िस्त शीरीं को हली करके लगाने से दर्द और ज़हर जाता रहता है। पाएरिया के लिए मुफ़ीद है।

अतिब्बा क़दीम ने पत्ती, फ़ारिश्त और हिस्सासियत में गन्ने का सिरका पिलाने और लगाने की सिफ़ारिश की है सुर्ख़ ईंटों को आग में सुर्ख़ करके इस पर सिरका के छींटे देने से जो धुवां निकलता है वैद उसे ज़ुकाम के लिए मुफ़ीद क़रार देते हैं। सिरके में गंधक मिलाकर लेप करने से जोड़ों में गठिया के दर्द को फ़ाएदा होता है। एक और नुस्ख़े के मुताबिक़ इसमें गंधक उबाल कर इसमें ज़ैतून का तेल मिलाकर जब दुखते पट्ठों पर मालिश करवाई जो इनकी एंठन में बेइन्तिहा मुफ़ीद पाया।

सर की जिल्द और बालों की बीमारियों के लिए असातिज़ा के अक्सर नुस्ख़े सिरके ही पर मबनी हैं।

बूअली सैना कहते हैं कि रौग़ने गुल में हम वज़न सिरका मिलाकर ख़ूब पिलाएं। फिर मोटे कपड़े के साथ सिरका रगड़ कर सर के गंज पर लगाएं। इन्हीं के एक नुस्ख़े में कलोंजी को तवे पर जलाकर सिरका में हल करके सर पर बार–बार लगाने से गिरे हुए बाल उग आते हैं। इसी मक़सद के लिए अदरक का पानी और सिरका मिलाकर लगाना भी मुफ़ीद है। बाल उगाने के लिए काग़ज़ जलाकर इसकी राख सिरका में हल करके लगाने के बारे में भी हुकमा ने ज़िक्र किया है। अर्क़ुन्निसा और आसाबी दर्दों में हब्बुर्रिशाद और जौ का आटा सिरका में हल करके लेप करना मुफ़ीद है।

सिरका बतौरे ग़िज़ा:

सिरका ग़िज़ा के तौर पर या सुन्नते नबवी सल्ल0 के मुताबिक़ सालन की सूरत में तो मुद्दतों से मुस्तेमिल है। अब इसके दाफ़े तअफ़्फ़ुन असरात और जरासीमकुश फ़ाएदे को नई उफ़ादियत मयस्सर आ गई है। सुर्ख़ मिर्चों को पीस कर सिरका में पकाकर चीनी चटनी CHINESE CHILLI SAUCE बनती है। इसका कमाल यह है कि अगर इसको किसी चीज़ में डालें तो मिर्च का ज़ाएका बुरा नहीं लगता। अंडा और ज़ैतून मिला कर सिरका को ख़ूब चलाने से MYONAISE

चटनी बनती है। इसे तले हुए गोश्त के क़तलों पर लगाकर खाएं तो ज़ाएक़ा लाजवाब हो जाता है। साबुत रान या गोश्त के बड़े टुकड़ों को पकाने से पहले पछने लगाकर सिरका लगाया जाता है। इससे गोश्त के सख़्त रेशे गल जाते हैं। चीनी खानों की अक्सरियत में सिरका एक जुज़्वे लायनफ़िक है।

सुर्मा ...... असमर

ANTIMONY

सुर्मा एक सियाह रंग, चमकदार पत्थर से जो मिस्र, अफ़रीक़ा, ईरान और इराक़ में पाया जाता है। हिंदुस्तान में ये विज़या नगरम के इलाक़े में मिलता है। पाकिस्तान में सुर्मे का पत्थर बाजोड़, चितरां और कोहिस्तान के इलाक़े में पाया जाता है। कहते हैं कि दुनिया का बहतरीन सुर्मा अस्फ़हान और चितरां में पाया जाता है।

कीमयावी तौर पर सुर्मे का पत्थर "ANTIMONY" की कच धात (ORE) है।

अहादीसे नबवी सल्ल०

ज़माना क़दीम से मिस्री औरतें अपनी आंखों में सुर्मा लगा कर उनको ख़ूबसूरत बनाती रही हैं। मगर इनके तिब्बी फ़वाइद का तारीख़ तिब में पहली मर्तबा इज़्हार हुज़ूर नबी करीम सल्ल० के इर्शादे ग्रामी से हुआ। हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"خیرا کحالکم الاثمد. یجلو البصر وینبت الشعر."

(इब्ने माजा, मसनद अहमद, तर्मिज़ी, इब्ने हबान, अलहाकिम, अलतिबरानी)

(तुम्हारे सुर्मों में से बेहतरीन असमद है। यह बीनाई को रौशन करता है और बालों को उगाता है)

यही रिवायत अहमद, तिर्मिज़ी, अलहाकिम और ज़हबीने सालिम बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से भी बयान की। जिसे उन्होंने अपने वालिदे मुहतरम से सुना।

हज़रत बज़ीद रज़ि० रिवायत करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ثلاث یزدن فی قوۃ البصر، الحل الاثمد والنظر الی الخضرۃ والنظر الی وجه الحسن"

(ابوالحسن عراقی فی فوائد)

तीन चीज़ें बीनाई में इज़ाफ़ा करती हैं अशदका सुर्मा, सब्ज़े को देखना और ख़ूबसूरत चहरों का दीदार करना।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन नोमान बिन माबद रज़ि० बिन हूदतुल अन्सारी अपने वालिदे ग्रामी से रिवायत करते हैं।

ان الرسول الله صلی الله علیه ولسم امربا الاثمد الروح عند النعام."

(ابوداؤد)

'रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हकुम दिया कि अल्लाह का

मुरव्वह सुर्मा रात को सोते वक़्त इस्तेमाल किया जाए।)

अबू उबैद इसकी तफ़सीर में बताते हैं कि मुरव्वह से मुराद वह सुर्मा है जिसमें कस्तूरी मिलाई गई हो।

सुर्मा लगाने के बारे में सुन्नते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 इस तरह बयान करते हैं।

كانت للنبي صلى الله عليه وسلم كحلة، يكتحل منها ثلاثاثى كل عين.

(ابن ماجہ)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक सुर्मेदानी थी जिसमें से वह)

इस अमस मुबारक की मज़ीद तफ़सीलात उन्होंने एक दूसरी जगह बयान फ़रमाई हैं।

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اكتحل يجعل فى اليمنى ثلاثلا،
يبتدى بها، يختم بها، وفى ايسرى ثنتين. (ترمذی)

(रसूलल्लाह सल्लाहो अलैहि वसल्लम जब सुर्मा लगाते तो दाएं आंख में तीन सलाइयाँ लगाते। इसकी तर्कीब यह थी कि दाएं से शुरू करते और इसी पर ख़त्म करते इसी तरह बाएं में दो सलाइयां पड़तीं।)

इसी ज़िम्न में अबू दाऊद में एक रिवायत के मुताबिक़ सुर्मा लगाने वाले के लिए बेहतरीन लाइहए अमल यह है कि वह पाँच सलाइयां लगाए।

इमाम अहमद बिन हंबल रह. की तशरीह के मुताबिक़ हर आंख में तीन–तीन सलाइयां लगाई जाएं। इनकी फ़िक़ा पर अमल करने वाले पहले एक आंख में तीन मर्तबा लगा कर फिर दूसरी में तीन लगा लेते हैं।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

सुर्मा फ़िरीक़ी मुमालिक से भी आता है मगर असफ़हान का सुर्मा सबसे उमदा होता है। सुर्मा को अरबी "हिजरुल कुहल" के नाम से भी मौसूम किया गया है। यह चमकदार और सियाह है जिसमें रेत और मिट्टी होती हैं। यह आंखों और इनके आसाब को तक़वियत देता है। ज़ख़्मों के ऊपर और आस–पास जो फ़ालतू गोश्त नमूदार हो जाता है। सुर्मा इसे ज़ाइल करता है। इनको मुंदमिल करता है। इनसे ग़िलाज़त निकालता है। और बंद रास्ते खोल देता है।

इस फ़ाएदे को मद्दे नज़र रखते हुए KELOIDS के चंद मरीज़ों पर सुर्मे के चंद मुरक्कबात का तज्ज़िया किया गया। मक़सद यह था के सुर्मा ऐसे महलूल की शक्ल इख़्तियार करे जो ज़ख़्म पर असर अंदाज़ हो सके। इस ग़र्ज़ के लिए ANTIM ONY SULPHIDE का दो फ़ीसदी मरहम वैसलीन और चार फ़ीसदी मरहम ज़ैतून के तेल में बनाई गई। KELOIDS से मुराद जल्द पर वह फ़ालतू है जो ज़ख़्मों और ख़ासतौर पर आग से चलने के बाद नमूदार होती है. तिब्बे क़दीमो जदीद में इसी बीमारी का कोई आसान इलाज मौजूद नहीं। अक्सर औक़ात जिल्द का मुतास्सिर टुकड़ा काट कर निकाल दिया जाता है और इसके बाद पर एक्सरे की शुआएं डाली जाती हैं अगर यह सूरत दो तीन जगहों तक

महदूद हो तो फ़ाएदा हो सकता है। और अगर पूरे जिस्म पर हो तो फिर जगह--जगह को काटना और बिजली लगाना मुमकिन नहीं सुर्मे की मरहम इस अंधेरे में रौशनी की पहली किरन है।

हमने दवाई ज़ाती तौर पर चार मरीज़ो में इस्तेमाल की है (ज़्यादा तर इसलिए मुमकिन न हो सका कि यह बीमारी इतनी आम नहीं) इनमें से हर एक को फ़ाएदा हुआ।

ज़ुकाम के दौरान आंखों से बहने वाला पानी सुर्मा ख़ुश्क हो जाता है और आंख की सुर्ख़ी जाती रहती है इसे चिकनाई में हल करके आग से जले हुए ज़ख़्मों पर लगाता अज़हद मुफ़ीद है।

वह लोग जो बाक़ाएदा सुर्मा लगाते हैं उनकी बीनाई, बुढ़ापे में भी कमज़ोर नहीं होती।

सुर्मे के बारे में जदीद एतराज़ात:

पाकिस्तानी में सुर्मा का पत्थर चंद मक़ामात पर दस्तियाब है कानकनी से जितना भी हासिल होता है वह क़ौमी ज़रूरयात में काम आ जाता है। बाज़ार में फ़रोख़्त नहीं होता। बाज़ार में मिलने वाले तमाम सुर्मे आज़ाद कशमीर से हासिल होने वाले सीसे के पत्थर से बने हैं जो कि न तो ANTIMONY है और न ही इससे वह फ़वाइद हासिल हो सकते हैं। जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुर्मे के बारे में बयान फ़रमाएं

वैदिक तिब में सीसे का सुर्मा रह० ''कृष्ण सुर्मा'' के नाम से बाक़ाएदा मज़्कूर है क्योंकि इन लोगों को सुर्मा के पत्थर और इसकी कीमयावी हैसियत से आशनाई न थी। दर्याए सिंध की बालाई वादी से मिलने वाले इस पत्थर को जलाकर इसके साथ सीमाब, त्रिफला और मीम सेनी काफ़ूर .....• में लगाने के लिए वैदिक नुस्ख़ों में इस्तेमाल होते हैं। जिनमें से अक्सर आंखों के लिए मक़ामी तौर पर मुज़िर और ग़िताए मुख़ाती से जज़्ब होने के बाद जिस्म में सीमां का असरात का बाइस हो सकते हैं। कृष्ण सुर्मा हरगिज़ इरशादात के मुताबिक़ नहीं और इसे इस्तेमाल करना बीमारी को दावत देने के बराबर है।

कराची के एक डाक्टर साहब ने सस्ती शोहरत हासिल करने के लिए हाल ही में एक अख़बारी बयान में कहा है कि सुर्मा आंखों के लिए मुज़िर है। इनके इस इज़्हार पर राए हासिल करने के सिलसिले में इम्राज़ुलउयून के मुसल्लिमा माहिरीन में प्रोफ़ेसर सय्यद वासिफ़ क़ादरी, प्रोफ़ेसर राजा मुमताज़ बिलाशुबा आंखों के लिए मुफ़ीद है। यह अक्सर बीमारियों का इलाज है और मुतअद्दिद बीमारियों से महफ़ूज़ रहता है। कई एक उस्तादों ने बताया कि वह उसे ज़ाती तौर पर भी इस्तेमाल करते हैं और इसके फ़ाएदे के ज़िंदा सबूत हैं।

मुसलमानों में सुर्मा सुन्नते नबवी सल्ल० के तौर पर राइज हुए अब चौदह सौ साल से ज़ाइद का अर्सा गुज़र चुका है। इसे करोड़ों नहीं अरबों अफ़राद ने इस्तेमाल किया और इतने तवील अरसे के मुशाहिदात के बादभी इसके मुज़िर असरात के बारे में कोई शहादत मयस्सर नहीं। सुन्नत पर अमल करने के मुश्ताक़ सारी उम्र बाक़ाइदगी से सुर्मा लगाते रहे इनकी बीनाई न तो बुढ़ापे में भी कमज़ोर हुई। न इनकी पलकों के बाल गिरे और न ही सर से गिरने वाली

बफ़ा ने इनकी पलकों में सोज़िश पैदा की। कुछ दिन हुए इंगलिस्तान में भी किसी नीम ख़्वांदा माहिर के मशवरे पर वहां सुर्मे की दरामद पर पाबंदी लगाई गई थी। ख़याल था कि इससे आंखों को नुक़सान होता है। इस बारे में जब मज़ीद तहक़ीक़ हुई तो पता चला कि ख़ालिस सुर्मे के इस्तेमाल से किसी को कोई तकलीफ़ नहीं होती जिनको तकलीफ़ हुई उन्होंने "कृष्ण सुर्मा" इस्तेमाल किया था। वैदिक तिब में सीसे के सुर्मे को कृष्ण सुर्मा कहते हैं।

जदीद मुशाहिदात:

हकूमत हिंद के यूनानी अदविया के शोबा की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ आंखों के लिए सुर्मा बनाने का बेहतरीन नुस्ख़ा यह है।

> सुर्मे के पत्थर को पहले आग में रख कर सुर्ख़ कर लिया जाए, फिर इक्कीस दिन बारिश के पानी में भिगोकर रखें। फिर उसे 12 घंटे त्रिफला के पानी में जोश दें वहां से निकाल कर ख़ुश्क करके सौंफ के अर्क़ में इतना खरल करें कि बारीक रेश्मी कपड़े से छन कर निकल जाए। अब यह आंखों में लगाने के क़ाबिल हो गया।

इस नुस्ख़े में बारिश का पानी एक ऐसी चीज़ है जिसे क़ुरान मजीद ने मुबारक क़रार दिया। मुहद्दिसीन इसकी उफ़ादियत में मतअद्दिद रिवायात बयान करते हैं।

सुर्मे की बारीकी के बारे में हकीम मुफ़्ती फ़ज़लुर्रहमान का तरीक़ा यह था कि वह उसे पीस कर चीनी की थाली में फैलाकर धूप में ले जाते थे। वहां थाली को मामूली हरकत देते थे। अगर ज़र्रात बड़े हों तो इनसे सूरज की शुआएं मुनअक्स हुई हैं। अगर सुर्मा पूरी तरह बारीक हो तो इससे शुआएं मुनअक्स नहीं होतीं।

भारती माहिर इल्मुल अदविया नदकारी तज्वीज़ करता है कि सुर्मा में सुहागा बिरयाए फिटकरी बिरयां, क़ल्मी शूरा और संगे बसरी मिलाकर इसे लीमूं के अर्क़ में खरल करके इस्तेमाल करें।

यह सबब मुहक़्क़िक़ इस अम्र पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सुर्मा आंखों के लिए मुफ़ीद है।

सुर्मा के दीगर इस्तेमाल:

मुहद्दिसीन किराम ने सुरमे को अफ़ूनत वाले ज़ख़्मों और ऐसी सोज़िशों और ख़ुलयाती बीमारियों में तज्वीज़ किया है जिनमें गोश्त बढ़ जाए या ज़ाइद गोश्त पैदा हो गया हो। जैसे कि आंख में नाख़ून बढ़ते हुए गोश्त वाला लाहोरी फोड़ा मिसाल है। अंग्रेज़ी में भी इसका तक़रीबन यही नाम है। अलबत्ता यह LEISHM ANIASIS कहलाता है। इसकी एक क़िस्म ख़ून में दाख़िल होकर बुख़ार की एक सन्फ़ पैदा करती है। जिसे अंग्रेज़ी में "कालाज़ार" कहते हैं। तिब्बे जदीद में इस बीमारी के जितने भी इलाज आज़माए गए आख़िर बेकार हुए। लोगों ने शंगरफ़ और संखिया के मुरक्कबात भी दिए मगर बात न बनी आख़िर सुर्मा आज़माया गया। इसका एक मुरक्कब STIBGLUCOL बड़ा मुफ़ीद साबित हुआ। यह हक़ीक़त में सुर्मे के साथ ग्लूकोज़ का इश्तिराक था। फिर एक और मुरक्कब STIBATIN आया जिसमें सुर्मे के साथ ग्लूकोज़ और टारटरिक एसिड मुश्तर्क थे।

जुनूबी अमरीका के मुमालिक अफ़रीक़ी बर्रे आज़म और मिस्र में तुफ़ैली कीड़ों से पैदा होने वाली दो बीमारियों अज़िय्यत पहुंचाने और जिस्मों को बेकार कर देने में बड़ी बदनाम हैं। कीड़े अंदर घुस कर सोज़िश और जर्यान ख़ून का बाइस होते हैं। दूसरी बीमारियों में दौराने ख़ून में रुकावट आने से शदीद क़िस्म के वरम आते हैं। इनको SCHISTOSOMIASIS और BILHARZIASIS कहते हैं। इस ख़तरनाक बीमारी के इलाज का सहरा मिस्री डाक्टर मोहम्मद ख़लील के हिस्से में आया। उन्होंने सुर्मे के साथ एक कीमयावी इश्तिराक में FOUADIN नामी टीके तैयार किए। यह टीके आज भी दुनिया की मुअ़तबर तरीन दवासाज़ जर्मन कम्पनी BAYER तैयार करके दुनिया भर में मुकम्मल कोर्स की सूरत फ़रोख़्त कर रही है। अमरीकन दवासाज़ों को इस में ज़िक महसूस हुई और उन्होंने आजकल अपनी एक ईजाद इन बीमारियों के लिए तैयार की है। मगर इसकी बुनियाद SOL ANTIMONYL TARTARATE है जो कि सुर्मे के पत्थर से बनती है।

होम्योपैथिक:

इस तरीक़ए इलाज में बेज़ारी, मैली ज़बान, नहाने से बीमारी बढ़ने गर्मी बुरी लगे। जोड़ों में दर्द गुफ़्तुगू में बेज़ारी, जिस्म गर्म, बुझी–बुझी आंखें, चेहरे पर कील मुहासे, भूख कम खट्टे को जी चाहे। मतली, खांसी, एग्ज़ीमा, बूढ़ों में ऊंघते रहने की आदत में ANTIMONY देते हैं। अगर आलात तनफ़्फ़ुस में मुसलसल सोज़िश पुरानी हो जाए। सूंघने की हिस ख़त्म हो जाए गले में ख़राश महसूस हो नमूनिया अक्सर होतो सुनहरी ANTIMONY SULPHURATUM देते हैं।

सनामक्की .... सना

SENNA- CASSIA AUGUSTIFOLIA

सना एक ख़ुदरू झाड़ी है जो हजाज़े मुक़द्दस में पहाड़ों पर पैदा होती है। इसके पत्ते दंदान वाले और पौधा एक मीटर के क़रीब बुलंद होता है। कहा जाता है कि पहाड़ों पर चरने वाली बकरियां इन पत्तों को शौक़ से खाती हैं इसलिए हजाज़ी बकरों का गोश्त मसहल होता है। इस मफ़रूज़ा में हक़ीक़त नहीं क्योंकि हजाज़ के तमाम बड़े शहरों में बकरे का गोश्त खाया जाता है और किसी को इस्हाल नहीं होता। हजाज़ की सना का पौधा अपनी शक्लो–सूरत और फ़वाइद में दूसरी तमाम अक़साम से मुख़तलिफ़ है। तोरैत मुक़द्दस में आया है

> ...... ख़ुदावंद का फ़रिश्ता एक झाड़ी में आग के शोले में इस पर ज़ाहिर हुआ। इसने निगाह की और क्या देखता है कि एक झाड़ी में आग लगी हुई है पर वह झाड़ी भस्म नहीं हुई। (ख़रोज 3:2)

इस आयत में कोहे तूर पर एक झाड़ी का ज़िक्र आया है। लोगों ने इस झाड़ी को सना की झाड़ी क़रार दिया है। यह मफ़रूज़ा दुरुस्त नहीं। क्योंकि

कुरआन मजीद ने तूरे सैना की ख़ुसूसी ज़राअत जैतून को क़रार दिया है। दूसरी तरफ़ मग़रिबी मुहक़्क़िक़ीन ने यह बात इल्मी तौर पर साबित कर ली है कि सना का असल वतन मक्का मुअज़्ज़मा और उसके इतराफ़ हैं। 750–900 के दरमियान एक अरब सना का पौधा मिस्र लाया जिसकी वहां काश्त की गई। मिस्र की ज़मीन ने इस पौधों को क़बूल कर लिया। और दरयाए नील के पूरे डेल्टास में सौडान, उस्वान वग़ैरह में सना की बाक़ाएदा ज़राअत होती है। चूंकि सना के ज़ख़ीरे स्कंदरिया और योरप सोडान की बंदरगाहों से मग़रिबी मुमालिक जाते हैं इसलिए वह इसे इसकंद्रिया की सना (ALEXANDRIA SENNA) कहते हैं। पौधा मक्का का है। इसी बीज से यह मिस्र में काश्त हुआ मगर इसके बावजूद यह शक्लो सूरत में अपनी मादरी सना से मुख़्तलिफ़ है। इसलिए माहिरीन नबातात इसको CASSIA AUCTIFOLIA कहते हैं।

तिब में सना का इस्तेमाल दस्वीं सदी से पहले किताबों में नहीं मिलता और यह बात तय है कि इसको दवाई के तौर पर अरब अतिब्बा ने दस्वीं सदी ईसवी से शुरू किया। वहां से मग़रिबी अतिब्बा के पसंद आई भारती अतिब्बा सना से इतने मुतास्सिर हुए कि उन्होंने इसे जनूबी हिंद में काश्त किया। तिर्चना पल्ली, मैसूर और पांडिचेरी के इलाक़े की सना को ख़ुसूसी नाम दिए गए हैं और इल्मे नबातात में यह CASSIA LANCEOLATA कहलाती है। क्योंकि इसके पत्ते नश्तर की मानिंद होते हैं। कर्नल चोपड़ा ने यह क़रार देने की कोशिश की है कि भारती सना की शक्लो सूरत सनामी की तरह है इसलिए यह दोनों LANCEOLATA हैं यह दुरुस्त नहीं। इनकी कीमयावी साख़्त, असरात और पत्तों की लम्बाई मुख़्तलिफ़ है। इसी तरह पंजाब और सिंध में भी सना की काश्त काफ़ी होती है। बाज़ार में सना की एक क़िस्म "सख़री सना" मयस्सर है। जहां तक क़ब्ज़ कुशाई का ताल्लुक़ हैं इसमें कोई कमी नहीं। लेकिन जहां सना के दूसरे तिब्बी फ़वाइद का ताल्लुक़ है यह है कि इसमें कोई कमी नहीं। लेकिन जहां सना के दूसरे तिब्बी फ़वाइद का ताल्लुक़ है यह कि क़िस्म से गठिया है।

हजाज़ी सना को मक़ामी लोगों अशरक़ कहते हैं इसके फली गोल, इसके पत्ते दोनों तरफ़ से चिकने होते हैं। इनका रंग सब्ज़ी माइल ज़र्द होता है।

इरशादाते नबवी सल्ल0

हज़रत असमा बिंते उमैस रज़ि0, हज़रत अबूबक्र रज़ि0 की बेगम थीं। रिवायत फ़रमाती हैं।

قالت قال لی رسول الله صلی الله علیه وسلم بماذا کنت تستمشین قلت
بالشبرم قال حارٌ حارٌ ثم استمشیت بالسّنا فقال لو کان شیٌ یشفی من الموت
کان السّنا والسّنا شفاءٌ من الموت (ابن ماجہ)

(मुझ से रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि मैं कौनसा मसहल इस्तेमाल करती हूं। मैंने अर्ज़ की के शबरम, उन्होंने फ़रमाया कि वह तो बहुत गर्म है। इसके बाद से मैं सना का इस्तेमाल करने लगी क्योंकि उन्होंने फ़रमाया अगर कोई चीज़ मौत से शिफ़ा दे सकती है तो वह सना थी– और सना मौत से शिफ़ा है।)

इस हदीस में इरशाद हुआ कि कोई चीज़ अगर मौत से शिफ़ा दे सकती तो सना होती। फिर इसके साथ ही यह बयान हुआ कि सना मौत से शिफ़ा है। यह हदीस के अपने मतन के ख़िलाफ़ है। इन्हीं मुहतर्मा से तिर्मिज़ी ने इन्ही के अल्फ़ाज़ में रिवायत किया है। मगर इस रिवायत में "अस्सना शफ़ाउम्मिनल मौत" के अलफ़ाज़ नहीं। तिर्मिज़ी के अलावा यह रिवायत मसनद अहमद, अबूदाऊद और मुस्तदरिक़ुल हाकिम में भी वाज़ेह अलफ़ाज़ में आख़री इब्हाम के बग़ैर मौजूद है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे हज़ाभ रज़ि0 को यह शर्फ़ हासिलहै कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ क़िबतीन वाली नमाज़ पढ़ी। रिवायत फ़रमाते हैं।

سمعت رسول الله صلی علیه وسلم یقول علیم بالسّنا والسّنوت نان فیهما شفاءٌ من کلّ داءٍ الاالسام قیل یا رسول الله وما السّام قال الموت.

(ابن ماجہ۔ مستدرک الحاکم۔ ابن عساکر)

(मैंने रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना। वह फ़रमाते थे कि तुम्हारे लिए सना और सनौत मौजूद हैं। इनमें हर बीमारी से शिफ़ा है सिवाए साम के। मैंने पूछा कि हुज़ूर सल्ल0 साम क्या है? फ़रमाया मौत।)

उम्मुलमोमिनीन हज़रत सलमा रज़ि0 रिवायत फ़रमाती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

•••• وللشبرم فانه حارٌ. بارد علیک بالسنا والسنوت فان فیهما دوا من کل شئٌ الاالسام. (طبری)

(हुज़ूर सल्ल0 ने शबरम के बारे में फ़रमाया कि वह गर्म है। तुम्हारे लिए ठंडक सना और सनोत में है। इनमें हर चीज़ की दवा है। मौत के सिवा)

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

السنا والسنوت فیهما دواء من کل داء (ابن عساکر)

(सना और सनोत में हर बीमारी से शिफ़ा है।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ان خیر ماتداویتم به السعوطً، والله ود، والحجامة واشی (ترمذی)

(तुम जो इलाज करते हो इनमें से बेहतरीन इलाज नाक में दवाई डालना मुंह में एक तरफ़ दवाई डालना। पछने लगाना और चलना है।)

इस हदीसे मुबारक में "अलमिस्सी" का लफ़्ज़ी मफ़हूम तो पैदल चलना है। यानी पैदल चलना बज़ाते ख़ुद एक इलाज है। मगर इसकी तशरीह में हाफ़िज़ इबनुलक़ैय्युम रज़ि0 कहते हैं कि मशी से मुराद पेट का चलाना यानी मुस्हल के ज़रिए आंतों से ग़िलाज़त का इख़राज करके जिस्म को हलका करना है। इसी

उसूल को सामने रखें तो मिशी में मदरुलबोल अदविया भी आ जाएंगी। क्योंकि इंसानी जिस्म से गि़लाज़त और ज़हरीले अनासिर के इख़राज का एक अहम और क़ाबिले एतिमाद ज़रिया पेशाब भी है। इब्नुलक़ैम रह० इस हदीस को सना की तारीफ़ और अहमियत में क़रार देते हैं।

हजरत अनस बिन मालिक रजि० रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ثلاث فيهن شفاء من كل داء الا السام، السنا والسنوت، وقال محمد نسيت الثالثه. (النسائی).

एक दूसरी रिवायत में इन्हीं के अल्फ़ाज यूं हैं:

ثلاث فيهن شفاء من كل داء الا السام: السنا، والسنوت، الو: هذا السناعر فنالانما السنوت؟ قال: لوشاء الله العرفكموهُ، قال محمد، نسيت الثالثة.

(तीन चीज़ों में शिफ़ा है। सिवाए मौत के सना और सनोत। फिर कहा कि सना को तो तुम जानते हो सनोत क्या है? अल्लाह ने चाहा तो मैं तुम्हें बताऊंगा। फिर कहा मुहम्मद ने कि मैं तीसरी चीज़ भूल गया हूं।)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत जिस वास्ते से मयस्सर आई है। वह अगर्चे नसाई में नही बल्कि और किताबों में भी है। लेकिन रावी को इनसे सनोत के बारे मे आगाही न हो सकी और रावी तीसरी चीज़ भी भूल गए।

सना और सनोत के बारे में रिवायात इब्ने मंदः से लेकर इबने असाकर तक और अबू नईम से नसाई। इबने माजा और तिबरी तक मौजूद हैं। इस तवातुर से बात की सच्चाई तो मालूम हो गई लेकिन रावियाने अहादीस से यह साबित न हो सका कि सनोत से मुराद क्या है?

अस्सनौत क्या है?

अस्सना और सनोत वाली हदीस इबने माजा में भी बयान हुई। इसकी तशरीह में मुहम्मद इबने यज़ीद इबने माजा कहते हैं कि इस हदीस के रावी उमरू बिन बकर सकसी नेयह हदीस इब्ने अबी अलीलतः से सुनी थी जिनका इरशाद था कि सनोत असल में "सब्त" है जो कि सोया है। सोया से मुराद वह दाने हैं जो सौफ़ की तरह के होते हैं और जिनसे बच्चों के पेट से नफ़ख़ा और हवा निकालने वाली मशहूर दवाई ग्राइप वाटर बनती है। दूसरे लोगों से तहक़ीक़ के बाद वह कहते हैं यह वह शहद है जो घी की मुश्कों में रखा हुआ। इसकी सनद में वह यह शेअर बयान करते हैं।

هم السمن بالنوت لا السن بينهم.

(हम एक दूसरे के साथ इस तरह हैं जैसे कि शहदके साथ घी)

अल्लामा वहीद किराम की तहक़ीक़ात और बजुरगाने सलफ़ में मुहद्दिस अब्दुल्लतीफ़ बग़दादी रह० कहते हैं कि जब सना को ऐसे शहद में अच्छी तरह मिला लिया जाए जो घी वाली मुश्क में पिलाया गया हो तो यह सनोत है। क्योंकि यह दोनों इसके मुसल्लह हैं इमाम इबनुलक़ैय्युम रह० ने सनोत की तशरीह में अठ इम्कानात को बयान किया है।

1. यह शहद है।
2. यह घी के मुश्कीज़े का जौहर है जो कि घी के ऊपर सियाही माइल आ जाता है। यही राए उमरू सक्सकी की है
3. यह ज़ीरा (कम्यून) की तरह चीज़ है। इबनुल आराबी की यह राए मोअतबर नहीं।
4. यह किर्मानी ज़ीरा है।
5. अबू हनीफ़ा दीनोरी इसे राज़ या बख़ क़रार देते हैं। जिसे मुहद्दिसीन ने सौंफ़ क़रार दिया है।
6. यह सबत है। सबत का तर्जुमा सोया और सोया का साग भी कहा गया है।
7. हाफ़िज़ अबू बकर अस्सनी (मुहदिस और मुसन्निफ़ तिब्बे नबवी सल्ल0) की तहक़ीक़ के मुताबिक़ यह खजूर है।
8. यह सिल में वह शहद है जो घी की मुश्क में रखा गया हो। क्योंकि शहद और घी दोनों इसके मुज़िर असरात की इस्लाह कर सकते हैं इबनुलक़ैय्युम रह0 मुहदिस अब्दुल्लतीफ़ बग़दादी रह0 की आख़री राय को ज़्यादा क़रीने क़यास तसलीम करते हैं। मुहंदिस मोहम्मद बिन अहमद ज़हबी रह0 भी अब्दुल्लतीफ़ बग़दादी की राय को ज़्यादा अहमियत देते हैं।

असल बात यह है कि सना के इस्तेमाल से पेट में हल्की सी सोज़िश हो सकती है। इसलिए इसके साथ ऐसी चीज़ का शामिल होना ज़रूरी है जो पेट से हवा निकाल सके और क़ौलंज को रफ़ा करे जैसे कि सौंफ, सोया, ज़ीरा, खजूर। इनमें से हर एक की सलाहियत यही है। घी आंतों को नर्म करता है और शहद कसरुर्रियाह है। इसलिए मज़कूरा आठ में से कोई भी सना के साथ मुसल्लह बनने की सलाहियत रखती है।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

मुहद्दिसीन किराम ने ज़्यादा काविश सनोत की माहियत को मुत्अय्यन करने पर सर्फ़ की है हिजाज़ में मसहल के लिए शबरम का इस्तेमाल आम था। शबरम से आंतों में सोज़िश होने के साथ ख़ून भी आने लगता था। इससे जिल्द पर दाने भी नमूदार हो जाते थे इसलिए हाजिक़ अतिब्बा ने अहदे रिसालत सल्ल0 से पहले और बाद शबरम को इनसानी इस्तेमाल के नाक़ाबिल और ख़तरनाक दवाई क़रार दिया है। हदीस में दो मर्तबा "हार" के लफ़्ज़ को मुहदिस अबू उबैद "हारुन व जारुन" क़रार देते हैं जिसके माने तो वही हैं मगर शिद्दत का इज़हार है अबू हनीफ़ा दीनौरी भी दूसरा लफ़्ज़ "जारुन" समझ कर इसकी मुज़रत पर ज़ोर देते हैं।

सना हिजाज़ की एक ख़ुदरु नबातात है। जिसकी उम्दातरीन क़िस्म मक्का में पाई जाती है। यह पेट से सुफ़रा को ख़ारिज करती है। सुद्दों को निकालती और दिल के पर्दों को तक़वियत देती है। पट्ठों और अज़लात से ऐंठन को दूर करती है। बालों को गिरने से रोकती और सेहतमंद बनाती है। जिस्मानी दर्दों

को मिटाती है। इसके इस्तेमाल की बेहतरीन सूरत इसका जोशांदा हैं इस जोशांदे को पकाते वक़्त अगर बनफ़्शा और मुनक़्क़ा भी शामिल कर लिया जाए तो ज़्यादा मुफ़ीद होगा। इस जोशांदे की पांच माशा एक माकूल मिक़दार है।

सना जिल्दी इम्राज़ ख़ास तौर पर फोड़े फुंसियों, ख़ारिश और जिस्म पर पड़ने वाले दाग़ों के लिए बेहतरीन दवाई है इसका लगाना मुफ़ीद है।

ज़हबी रह॰ की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ सना इन अदविया में से है जिनके फ़वाइद इंतहा हैं और अतिब्बा क़दीम ने जहां भी बात समझ में न आई वहां सना का इस्तेमाल किया। उनके ख़याल में इसकी उफ़ादियत की अहम वजह यह रही है कि इसके इस्तेमाल से जिस्म के ग़लीज़ माद्दे जिस्म से बाहर निकल जाते हैं और इस तरह ग़िलाज़तों के इख़राज से जिस्म में तंदरुस्ती का अमल शुरू हो जाता है इब्ने सेना ने इसे इमराज़े क़ल्ब में काम आने वाली अदविया में सरेफ़हरिस्त क़रार दिया है। यह जोड़ों के दर्द को दूर करती है। दिमाग़ से वस्वसों को निकालती है। इस बिना पर बाज़ अतिब्बा ने इसे मिर्गी में मुफ़ीद पाया है।

अर्राज़ी तज्वीज़ करते हैं कि सना के सफ़ूफ़ से इसका जोशांदा बेहतर है। उसे पकाते वक़्त इसमें शाहतर्ज की शमूलियत ग़िलाज़तों के इख़राज में ज़्यादा मुफ़ीद होगी। लेकिन वह शहतर्ज के अलावा मुनक़्क़ा और बनफ़्शा को भी ज़रूरी समझता है। अलबत्ता मिठास के लिए इसमें खांड ज़रूर मिलाई जाए। यह जोशांदा चार से सात माशा तक इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके इस्तेमाल से कमर दर्द, बवासीर, जोड़ों का दर्द और ख़ारिश दूर हो जाते हैं। अगर इसे सिरके के साथ पकाया जाए तो यह जिल्दी इम्राज़ को दूर करती है। इसके लगाने से सर में सीकरी (बफ़्फ़ा) एग्ज़िमा, फुंसियां ओर बाल गिरने ठीक हो जाते हैं।

सना की बेहतरी30न क़िस्म मक्का मुअज़्ज़मा से हासिल होने वाली है इसके अलावा सना की तमाम क़िस्में ख़्वाह वह मिसरी हों या भारती फ़वाइद कमतर हैं। मक्की के पत्ते सब्ज़ और फूल ज़र्द होते हैं। इसकी फली चपटी की बजाए गोल होती है। जब तेज़ हवा चलती है तो इसमें ख़शख़ाश की मानिंद दाने निकल कर फैल जाते हैं। .इन्ही दानों से नए पौधे ज़हूर में आते हैं।

इसे अदविया मसहला में आला मक़ाम हासिल है। यह सोदादी, सुफ़रावी और बल्ग़मी माद्दों को जिस्म से निकालने का शांदार मलका रखती है। इसकी वजह से दमे में फंसी हुई बल्ग़म निकल जाती है। दिमाग़ी नालियों में फंसी हुई रतूबतें निकलने से दर्दे शक़ीक़ा, मिर्गी, अर्क़ुन्निसा, गठिया और पुराने सर दर्द में मुफ़ीद है। क़ल्ब के ज़ुर्म को तक़वियत देती है। दिमाग़ से वसवास निकालती है। ख़ून साफ़ करती है और पेट के कीड़े मार देती है।

सनाको मुफ़रिद इस्तेमाल करना मुनासिब नहीं इसके जोशांदे में गुलाब के फूल और रोग़ने बादाम मिला लेना ज़्यादा बेहतर होता है। गुलाब के फूल 7 माशा, आध सेर दूध गाए के साथ एक तोला बर्गे सना पका कर इसमें खांड मिला कर पीना ज़्यादा मुनफ़अत बख़्श होता है।

अगर इसे थोड़ी मिक़दार में दिया जाए तो मुलय्यन है। ज़्यामल मिक़दार में मुसहल है। इससे पेट में मरोड़ उठते हैं। मगर रियोंद चीनी की तरह बाद में रद्देअमल के तार पर क़ब्ज़ नहीं होती। पेट से सना की ख़ासी मिक़दार ख़ून में दाख़िल हो जाती है। फिर पेशाब के ज़रिए इसे सुर्ख़ रंग देकर ख़ारिज होती है। मां के दूध में भी इसका इख़राज होता है जिससे बच्चों को दस्त लग जाते हैं। सना के इस्तेमाल के लिए जोशांदा ख़ैसतंदा की तर्कीब भी है।

बर्गे सना	सौंठ तराशीदा	आबे मक़तर
2 औंस	3½ ग्राम	एक लीटर

इनको चीनी के बर्तन में आध घंटा पड़ा रहने दें। इसके बाद इस ख़ीसांदा की ख़ुराक 5 तोला है। वैदिक तिब में इस ख़ीसांदे का नुस्ख़ा दूसरी सूरत में है।

बर्गे सरा	तराशीद सौंठ	लौंग (क़रनक़ल)	पानी
2½ तोला	3½ तोला	3½ तोला	25 तोला

घंटा भर हिलाने के बाद क़ब्ज़ के मरीज़ों को 3½ से 5 तोला की मिक़दार में दिया जाए। इस के पीने के आध घंटे बाद पेशाब में सुर्ख़ी आ जाती हैं इसकी क़ौलंज सलाहियत खांड मिलाने से भी कम हो जाती है। नमक के साथ खाने से चेहरा शफ़्फ़ाफ़ होता है। छाछ के साथ खाने से पुराना बुख़ार टूट जाता है। बकरी के दूध के साथ खाने से बदन फ़र्बा होता है। ऊंटनी के दूध के साथ खाने से सरका बादी का दर्द जाता रहता है। इमली के पत्तों के साथ खाने से जनून और मिर्गी में फ़ाएदा होता है। ढाक के रस के साथ खाने से मुंह की बदबू रफ़ा होती है। आमला के रस के साथ खाने से कोढ़ और मुक़अद के फोड़े में मुफ़ीद है। बकरी के दही के साथ खाने से ज़हर उतरता है। अनार के दानों के रस के साथ खाने से पेट से रियाह निकल जाते हैं। अदरक के रस के साथ खाने से बदहज़्मी रफ़ा होती है। अंगूरों के रस के साथ खाने से आंख की रौशनी बढ़ती है। नतर गंडी के रस के साथ खाने से बादी और दिल का घटा जाना कम होता है। नीम के पत्तों के रस के साथ खाने से बर्स मिटता है। पीपल के दानों (दारफ़िफ़िल) के साथ खाने से पागल पन जाता रहता है।

अगर इसे एक माह खाया जाए तो आज़ा जिस्मानी मुस्तहकम हो जाते हैं और बाल सियाह हो जाते हैं। अगर चालीस रोज़ खाया जाए तो बदन से ख़ुशबू आने लगती है।

मक़ामी तौरपर सना हर क़िस्म की ख़ारिश रफ़ा करती है। बर्गे हिना, शाहतरा और सिरके के साथ पका कर लगाने से एग्ज़िमा, फोड़े, फुंसियां रफ़ा होते हैं। मेंहदी के साथ मिला कर सर पर लगाने से बाल सियाह होते हैं और सर की फुंसियां ठीक होने के अलावह बाल बढ़ते और गंज मिटता है।

कीमयावी तज्ज़िया:

इलाज की ग़र्ज़ से सना के पत्ते और कोंपलें इस्तेमाल की जाती हैं। बावर किया जाता है कि इनकी कीमयावी हैयत में बहुत थोड़ा फ़र्क़ है इसका नबाताती नाम इबरानी ज़बान के लफ़्ज़ CASSIA से हासिल हुआ है जिसके लफ़्ज़ी माने

किसी चीज़ को काट देने के हैं क्यूंकि यह कात्त क़ब्ज़ है। इसके कोंपल सूखे हुए समर के तज्ज़िया से इसमें सीरोज़ा, ऑक्सलेट के अलावा सब्ज़ रंग देने वाला अंसर TRI-HYDROXY-FLANONE पाया जाता है। जिसे kaempophanol भी कहते हैं इसके अज्ज़ा आमिल का ताल्लुक़ ANTHRONES से है। जिनकी क़िस्में SENNO SIDES A-B-C- मालूम होती हैं। यह असल में EMODIN ANTHRONE CLUCOSIDES हैं। यह वह गिरोह है जो मुसब्बर में भी किसी क़दर पाया है। इसी बिना पर यह तमाम नबातात्त ANTHRACENE PURGATIVE के ख़ानदान से ताल्लुक़ रखती हैं।

हाल ही में माहिरीने कीमिया ने ANTHRAQUINONES से एक जरासीमकुश DONOMYCIN हासिल की है। अब तक की तमाम जरासीमकुश, अदविया ANTIBIOTICS फफूंदी से हासिल हुई हैं। लेकिन किसी कैमिकल से खाने वाली जरासीमकुश दवाई हासिल करने का पहला तजुर्बा है। बयान किया जाता है कि इस दवाई को हासिल करना इतना आसान है कि एक छोटी सी लेबॉरेट्री में यह अमल अंजाम दिया जा सकता है। DONOMYCIN एक ऐसी दवाई है जो मुद्दतों तक मुअस्सिर रह सकती है। दरजए हरारत में तब्दीली इसकी उफ़ादियत को मुतास्सिर नहीं करती और यह न सिर्फ़ आम पीप पैदा करने वाले जरासीम हलाक कर सकती है बल्कि GRAM NEGATIVE जरासीम और ऐसी क़िस्मों पर भी असर अंदाज़ होती है जिन पर दूसरी अदविया बेकार पाई गई हैं। इनसानी जिस्म इसे आसानी से क़बूल कर लेता है और इसके मुज़िर असरात कम हैं और जरासीम में इसके आदी हो जाने की इस्तेदाद नहीं होती। इसलिए इसे मरीज़ को शिफ़ायाबी तक इत्मीनान से दिया जा सकता है।

मुस्हल और मुलय्यन असरात के लिए आमतौर पर इसके SENNOSIDES A और B इस्तेमाल किए जाते हैं और इन्हीं की मौजूदगी की शरह की बिना पर इसके तास्सुर का मुक़ाम मुतअय्यन किया जाता है।

इसके अलावा इसमें CHRYSOPHANIC ACID SENNA PHOECRETIN-TARTARICACID- MUCILAGE- PICRIN VEGETABLE SALT - MUCILAGE पाए जाते हैं।

अतिब्बा जदीद के मुशाहिदात:

तिब्बे जदीद में क़ब्ज़ को तोड़ने के लिए अब तक पांच हज़ार से ज़ाइद अदविया मुस्तेमिल रही हैं। आज से पचास साल पहले की अदविया की फ़हरिस्त भी सैंकड़ों में थी। मगर आज के दवाफ़रोश के पास सिर्फ़ तीन ऐसी अदविया हैं जो इस ग़र्ज़ से काम आती हैं जिन में से एक सना है। इसका मतलब यह हुआ कि एक हज़ार सालों पर मुहीत तवील मुशाहिदात के बाद सना वह मुनफ़रिद दवाई है जिसकी मक़बूलियत और अहमियत आज भी वह है जो हज़ार साल पहले थी।

ब्रिटिश फ़ार्माकोपिया कोडेक्स ने बतौर मुलय्यन सरकारी तौर पर तस्लीम किया है। इसके मेयार के मुताबिक़ भारती सना के बीजों पर चोड़ाई में धारियां पड़ी होती हैं जबकि मिस्री सना के दानों पर जाली सी बुनी होती है। इनके

सरकारी मेयार के मुताबिक़ भारती सना में SENNOSIDES-AEB की मिक़दार 1 फ़सदी होनी चाहिए। जबकि मिस्री में यह मिक़दार 2–4 फ़ीसदी होनी चाहिए।

मुसल्लिमा मुरक्किबात OFFICIAL PREPARATION

1. सना की गोलियां SENNA TABLETS इनमें अज्ज़ा आमिल LIQUORICE COMPOUND OWEDR इसके अज्ज़ा का सरकारी तनासुब हस्बे जेल है।

बर्गे सना	गंधक	मुल्ठी	सौंफ	खांड
160 ग्राम	80 ग्राम	160 ग्राम	80 ग्राम	520 ग्राम

यह तमाम चीजें बारीक पीस कर मिलाई जाएं। मिक़दार ख़ुराक 2 से 3 छोटे चम्मच।

3. LIQUID EXTRACT SENNA इसका नुस्ख़ा यह है।

बर्गे सना	रौग़ने कशनीज़	एल्कोहल	आबे मुक़तर
100 ग्राम	6 मिली लीटर	250 मिली लीटर	1 लीटर

इसके अलावा ग़ैर सरकारी तौर पर इसका जुज़्वे आमिल SENNOSIDE साफ़ करके टीके की सूरत में दस्तियाब है। जिसे ज़ेरे जिल्द यानी HYPODERM IC INJECTION के ज़रिए बतौर मुस्हल इस्तेमाल किया जाता है और इसका नाम SENNATIN है।

जिल्दी इमराज़ में सना एक लाजवाब दवाई है। इसे मेंहंदी और कलोंजी के साथ मिलाकर अगर सिरके में हल करके इस्तेमाल किया जाए तो यह फफूंदी से पैदा होने वाली तमाम बीमारियों और ख़ास तौरपर उन हालतों में जब ज़ख़्मों पर तकलीफ़दह छिलके आए हों में कमाल की दवाई है। होम्योपैथिक तरीक़ए इलाज में भी सना को कसरत से इस्तेमाल किया जाता है। हाज़मे की ख़रानी की वजह से जब ऑक्सलेट यूरेट ज़्यादा मिक़दार में पैदा हो रहे हों तो सना का इस्तेमाल उनके इख़राज का बाइस होता है। पेशाब में ऑक्सलेट आने आइंदा की पथरी का पेश ख़ैमा होने के साथ–साथ जलन और ज़ेहनी परेशानी का बाइस होते हैं। क्योंकि यूरेट और ऑक्सलेट पेशाब में हल नहीं होते जर्यान क़रार देते हैं। ऐसे मरीज़ों के लिए सना मक्की का मुल्ठी और सौंफ़ के साथ मुरक्कब बड़े शानदार असरात रखता है। क्योंकि इसके चंद रोज़ा इस्तेमाल से पेशाब में आने वाली सफ़ेद रतूबतें ख़त्म हो जाती हैं।

सना मक्की का मुसलसल इस्तेमाल गुर्दों, पित्त और मसाना से पथरी को हल करके निकालने में शोहरत रखता है।

शहद....... अस्ल

MEL HONEY

क़ुरआन मजीद ने शहद की मक्खी को इतनी अहमियत दी कि एक सूरह इसके नाम से नाज़िल की और इसके कमालात की तारीफ़ फ़रमाई। इससे ज़ाहिर होता है कि मक्खी और इससे हासिल होने वाले अनासिर में इनसानी ज़िंदगी के लिए उफ़ादियत पाई जाती है। शहद की आम मक्खी को इल्मुल हैवानात में APIS MELLIFERA कहते हैं। यह हैवानात के APIS ख़ानदान की

एक रुक्न है जबकि इसी ख़ानदान के और अराकीन जो शक्लो सूरत में इससे मिलते जुलते हैं इसी क़िस्म का काम करते हैं।

बहुत से जानवर, परिंदे, कीड़े मकोड़े से तहफ़्फ़ुज़्ज़ात के लिए घर बनाते हैं मगर जिस तरह का ख़ूबसरत घर। इसका इंतिज़ाम शहद की मक्खी करती है किसी और परिंदे और चरिंद के यहां नहीं मिलता। मक्खियों का छत्ता छः कोनों वाले ख़ानों पर मुश्तमिल होता है। जिनकी दीवारें मोम से बनती हैं इनमें दराड़ों और सुराख़ों को बंद करने के लिए दरख़्तों की कोंपलों से बीरोज़ा की तरह का एक लेसदार माद्दा PROPOLIS हासिल किया जाता है। इन छत्तों में दरजए हरारत को क़ायम रखने के लिए एयरकंडीशन का मर्बूते निज़ाम है और मक्खियां अपने पसंदीदा हालात में शदीद ज़द्दोजहद की एक फ़आल ज़िंदगी गुज़ारती हैं। हर छत्ते में एक मलिका होती है जो रोज़ाना एक हज़ार के क़रीब अंडे देती है। कारकुन मक्खियां इन अंडों से बच्चे निकालने। इनको ग़िज़ा मुहैय्या करने और इनके लिए रिहाइशी कमरे तैयार करने में हमः वक़्त मसरूफ़ रहती हैं। इनकी आबादियों में बेकार अफ़राद को क़त्ल कर दिया जाता है।

कारकुन मक्खियाँ तमाम दिन उड़ती हुई फूलों से "माउलहयात" NECTAR तलाश करती है। हर फूल के नीचे मिठास का एक क़तरा होता है। मक्खियां इसकी तलाश में डाल डाल मंडलाती हैं और जहां से मिल जाए उसे अपने मुंह की थैली में रख कर छत्ते को लौट जाती हैं और अपनी बिरादरी को इस इलाक़े में मज़ीद माउल हयात की मौजूदगी या ग़ैर मौजूदगी की इत्तला भी देती हैं। इब्तिदाई तौर पर इस माउल हयात में 50–80 फ़ीसदी पानी होता है। छत्ते में ले जा कर इसे गाढ़ा किया जाता है। और जब इससे शहद बनता है तो इस में पानी की मिक़दार 16–18 फ़ीसदी के दरमियान रह जाती है।

यह मक्खियाँ ख़त इस्तवा की मुद्दत से लेकर बर्फ़ानी मैदानों की बरूदत तक में ज़िंदा रह सकती हैं मगर इनके छत्ते का अंदरूनी दरजए हरारत 93°F के क़रीब रहता है। अगर आस–पास का मौसम 12.0 तक भी गर्म हो जाए तो छत्ता मुतास्सिर नहीं होता। ठंडक में ज़्यादती की वजह से जब दरजए हरारत 5.0 गिर जाए तो मक्खियाँ उड़ना बंद कर देती हैं और ख़ुराक के ज़ख़ीरे पर गुज़र औक़ात और ख़ुश्गवार मौसम का इंतिज़ार करती हैं। एक छत्ता साल में तक़रीबन 500 किलोग्राम माउल हयात हासिल करके इससे शहद तैयार करता है। छत्तों में शहद के अलावा मोम और पोलन के दाने भी ज़ख़ीरा किए जाते हैं। फूलों की पत्तियों के दरमियान इनके तोलीदी आज़ा होते हैं। मक्खी जब इसको चूसने के लिए किसी फूलों पर बैठती है तो नर फूलों के तौलीदी दाने इसके जिस्म को लग जाते हैं जिनको POLLEN कहते हैं। पोलन के दाने लगी मक्खी जब दूसरे फूल पर बैंठती है तो इसके निस्वानी हिस्से इन दानों को अपनी जानिब खींच कर बारोदी हासिल करते हैं। इस तरह मक्खी की उड़ान ज़राअत के लिए एक निहायत मुफ़ीद ख़िदमत सर अंजाम देती है। और कहा जाता है कि अमरीका में पैदा होने वाली 90 अक़साम की ज़रई पैदावार की तरवीज और बारोदी सिर्फ़ शहद की मक्खी की मरहूने मिन्नत है। पोलन के जो दाने बच जाते हैं। इनको

छत्ते में ले जाकर कारकुनों की ख़ुराक में सहमी अज्ज़ा के तौर पर शामिल कर दिया जाता है। इनकी कुछ मिक़दार शहद में भी मौजूद होती है। मग़रिबी मुमालिक के बहुत से लोगों को मौसमे बहार में हिस्सासियत का दौरा पड़ता है। यह ख़्याल किया जाता है कि यह हिस्सासियत फ़िज़ा में उड़ने वाले पोलन के दानों की वजह से होती है। इसलिए जब यह दाने शहद में मिले हों ऐसे लोगों की ग़िज़ा में शामिल होते हैं तो इनको इसके इस्तेमाल से भी हिस्सासियत हो जाती है। इल्मी तौर पर ऐसा होना मुमकिन है। मगर हम ने अपनी चालीस साला तिब्बी ज़िंदगी में ऐसे मरीज़ पांच से ज़्यादा नहीं देखे। ऐसा मालूम होता है कि अकसर मरीज़ों में शहद की अपनी उफ़ादियत हिस्सासियत पर ग़ल्बा पा लेती है। मालूम होता है कि अक्सर मरीज़ों में शहद की अपनी उफ़ादियत हिस्सासियत पर ग़लबा पा लेती है।

छत्तों से शहद हासिल करने के दो तरीक़े हैं। एक तो इनको निचोड़ कर शहद निकाला जाए और दूसरे में इनमें घाओ लगाकर शहद निकाल लिया जाता है। पहले में मोम और दूसरी चीज़ें भी शामिल होती हैं जबकि दूसरी में ख़ालिस शहद की मिक़दार ज़्यादा होती है। शहद दुनिया की क़दीम तरीन ग़िज़ाओं और दवाओं में से है। मिस्र क़दीम में लाशों को हनूत करने के अमल में भी शहद इस्तेमाल होता था। मिसरी मक़ाबिर में बादशाहों की ग़िज़ा के ज़ख़ीरों में शहद भी रखा जाता था। पांच हज़ार साल से ज़्यादा अरसा गुज़रने के बाद यह शहद ख़राब न हुआ। अलबत्ता रंग काला पड़ गया था। सौलहवीं सदी के ग़रक़ाब जहाज़ अब जब बरामद हुए तो उन से शहद के जो बर्तन निकले उनका शहद सदियों में भी ख़राब न पाया गया।

शहद की ज़राअत:

आसमानी किताबों और तजुर्बात से लोगों को शहद की अहमियत रोज़—बरोज़ ज़्यादा वाक़फ़ियत होती जा रही है जिसकी वजह से इसको तिजारती पैमाने पर तैयार करने की ज़रूरत पैदा हो गई है। दुनिया की मार्किट में इस वक़्त चीन, अमरीका, रूस, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, कनेडा, मैक्सिको बड़े मुमालिक हैं। मश्रिक़े वुस्ता में इस्राईल और क़बरस का शहद भी बड़ा मक़बूल है।

शहद का ज़ाएक़ा और रंगत इस फ़सल पर मुनहसर होता है जिसके फूलों से मक्खियों ने शहद हासिल किया। अगर्चे आजकल की तिजारती ज़रूरयात मक्खियों को इतनी मुहलत नहीं देती कि वह फूल—फूल फिर कर "माउल हयात" जमा करें इसके बावजूद बाज़ जगहों ख़ास कर चीन से ख़ासूसी खेतों का शहद हासिल होता है। पिछले दिनों वहां से नीम के दरख़्तों से हासिल होने वाला शहद देखने का मौक़ा मिला। अगर्चे रंगत में सियाही माइल था मगर ज़ाएक़े में हल्की सी कड़वाहट इसको लज़ीज़ बना रही थी। चीन के लोग आम मशरूब के तौर पर शहद इस्तेमाल करते हैं। इसलिए इनकी सेहत बेहतर और शहद की काश्त ज़्यादा होती है।

अंदाज़ा लगाया गया है कि आजकल दुनिया में हर साल 500,00,000 किलो शहद सालाना पैदा होता है। जिनमें अमरीका और रूस की बरामद यकसां तौर

पर 300,000,000 किलो बताई जाती है। अर्जंटाइन और मैक्सिको से क्रीम वाला शहद और कनेडा से ऐसा शहद बरामद होता है जिसमें ग्लुकोज़ वग़ैरा की मिक़दार 5 फ़ीसदी तक होती है।

शहद से योरप में मिठाइयाँ और बिस्किट बनते हैं। ब्रिटिश फ़ार्माकोपिया के मशवरे के मुताबिक़ खांसी के बाज़ शर्बत इससे बनाए जाते हैं। और बाज़ मुमालिक में शहद से एक ख़ास क़िस्म की शराब कशीद की जाती है जिसे MEAD कहते हैं। बावर किया जाता है कि यह जिगर को ख़राब नहीं करती। हालांकि यह मफ़रूज़ा ग़लत है। क्यूंकि जिगर और आसाब को ख़राब करना एलकोहल का ख़ास्सा है और वह इसमें माकूल मिक़दार में मौजूद होती है।

इरशादाते कुरआनी:

कुरआन मजीद में एक सूरह ख़सूसी तौर पर शहद की मक्खी के बारे में मौजूद है। जिसमें फ़रमाया गया।

و اوحی ربک الی النحل ان اتخذی من الجبال بیوتاً ومن الشجر ومما عرشون. ثم کلی من کل الثمرات فاسلکی سبل ربک ذللا یخرج من بطونها شراب مختلف الوانه فیه شفاءٌ للناس. ان فی ذالک لایة لقوم یتفکرون. (النحل ٦٩_٨٦)

तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर वही भेजी कि वह पहाड़ों, दरख़्तों की बुलंदियों पर अपना घर बनाए। फिर वह हर क़िस्म के फूलों से रिज़्क़ हसिल करे और अपने रब के मुतअय्यन कर्दा रास्ते पर चले इनके पेटों से मुख़तलिफ़ रंग की रतूबतें निकलती हैं जिन में लोगों के लिए शिफ़ा रखी गई है। यह ख़ुदा ताला की तरफ़ से निशानियां हैं ताकि लोग उन पर ग़ौरोफ़िक्र करके फ़ाएदा उठाएं।

इस आयत मुबारक में तीन अहम नुकात हैं कि शहद की मक्खी के ठिकाने बुलंदियों पर होंगे। वह फलों से अपना रिज़्क़ हासिल करेंगी और उसके मुंह और पेट से मुतअद्दिद अक़साम के जौहर ख़ारिज होंगे। "मुख़तलिफ़ुल ऐलान" का मतलब सिर्फ़ यह नहीं कि उनके रंग जुदा–जुदा होंगे बल्कि उनकी क़िस्में कई होंगी और ज़ाहिर है कि हर क़िस्म के फ़वाइद अलाहिदा होंगे। इस अम्र की निशानदही और इनमें इन्सानों के लिए शिफ़ा का सुराग़ देने के बाद क़ुरान मजीद हम से यह तवक़्क़े करता है कि हम उनके बारे में तहक़ीक़ात करें। उनके मुंह और पेट से निकलने वाली रतूबतों का पता चलाएं और उनके फ़वाइद को मालूम करके अपनी बेहतरी के लिए काम में लाएं।

.... وانہا رمن عسل مصفی، ولہم فیہا من کلِّ الثمرات. (محمد_١٥)

(ज़न्नत में मिलने वाली उम्दा अशया का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया गया कि वहां पर उमदा और ख़ालिस शहद की नहरें होंगी और उन लोगों के लिए हर क़िस्म के फल होंगे।

कुरआन मजीद में जन्नत में रखी गई चीज़ों का मुख़तलिफ़ मक़ामात पर जो तज़किरा किया गया है। उनमें ज़्यादा तौर पर फल, मोती, मूंगे क़ीमती धातें और ज़ेवरात हैं। मगर उनके साथ वहां पर बहने वाली नहरों में चार चीज़ें मज़कूर हैं। दूध ऐसा लज़ीज़ की पीने वाले पसंद करें और इसका ज़ाएक़ा तब्दील न

होगा। वह शराब जो ख़ुश ज़ाएक़ा है। शफ़्फ़ाफ़ पानी और ख़ालिस शहद। शहद इतनी उम्दा और अहम चीज़ है कि इसे जन्नत के बेहतरीन मश्रूबों में से क़रार दिया गया।

يَاَيُّهاالنبی لم تحرمُ ما اَحَلَّ الله لک تبتغی مرضات ازواجک والله غفورٌ رحیم
(التحریم۔۱)

(ए नबी सल्ल0! तुम किसी ऐसी चीज़ को क्यूं हराम कर रहे हो जिसे अल्लह तआला ने तुम्हारे लिए हलाल कर दिया है। क्या तुम ऐसा करके अपनी बीवियों की मर्ज़ी पूरी कर रहे हो? तुम्हारा रब बख़्श देने वाला और रहम करने वाला है।)

अल्लाह ताला ने शहद को जो अहमियत अता फ़रमाई यह सूरह मुबारका इस बाब में एक दिलचस्प पसे मंज़र बयान करती है। उम्महातुल मोमिनीन रज़ि0 ने दीगर ख़वातीन की तरह आपस की चपक़लश में सरकार को आलूदा करने की एक कोशिश की सिरका हाल सही बुख़ारी में यूं मज़्कूर है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा बयान फ़रमाती हैं।

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يحب الحلوى والعسل. وكان اذا انصرف من العزر دخل على نسائه فيه نومن احداهن، فدخل على حفصه بنت عمرؓ فاحتبس اكثر ماكان يحتبس فغرت، فسألت عن ذالک فقيل اهدت لها امرأة من قومها عكةعسل، فيقت النبى صلى الله عليه وسلم منه شربة، فقلت: اما والله لنحتالن نه، فقلت سودة بنت زمعة: انه سيد نومنک، فاذاد نامنک فقولي: أكلت مغا... فانه يقول لا، فقولى له: ماهذه اليح أجد؟ سيقول لک سقتنى حفصة شربة عسل، فقولى: جرست نحله العرفط وساتول ذالک، وقولی له آنت يا صفيه ذالک، قالت، تقول سودة: نوالله ماهو الان قام على الباب. فأردت ان اناديه بما أمرتنى فرقامنک، فلمادنا منها، قالت له سودة : يا رسول الله اكلت معانير؟ قال: "لا" قالت: نماهذه الريح التى اجد منک؟ قال: سقتنى حفصة شربة عسل. قالت: جرست نحله العرفط فلدا دراَلى، قلت له نحوذالک: فلما دار الى صفية قالت له مثل ذالک. فلم دار الى حفصه قالت له: يا رسول الله الا أسقيک منه؟ قال. لاحاجة لى فيه" قالت سودة والله لقدحرمناه، فقلت لها: اسكتى.

(بخاری۔مسلم)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हलवा और शहद बहुत पसंद थे। इनका दस्तूर था कि वह जब अस्र से फ़ारिग़ होते तो वह अज़्वाज़ के पास जाते। उनमें से किसी एक के साथ चहल भी करते। एक रोज़ जब वह हफ़सा रज़ि. बिंते उमर के यहां गए तो उनका क़याम मामूल से ज़्यादा देर रहा। मैंने पता करवाया तो मालूम हुआ कि उसकी क़ौम की किसी औरत ने उसे शहद की एक कुप्पी तोहफ़े में दी है। उसने हुज़ूर को इसमें से शर्बत पिला कर ज़्यादा देर रोक लिया। मैंने इस बारे में सौदा रज़ि0 बिंते ज़मआ से कहा कि जब वह तुम्हारेपास आएं तो कहना कि क्या आप ने मग़ाफ़ीर खाया है। (मग़ाफ़ीर एक बदबूदार गोंद थी जो कि अरफ़त की झाड़ियों से

हासिल हुई थी और हुज़ूर सल्ल0 बदबू को सख़्त नापसंद करते थे। इसलिए उन्होंने इनकी नापसंदीदा तरीन चीज़ का तज़किरा कराहत दिलाने के लिए) वह कहेंगे कि नहीं। फिर कहना कि फिर आप से यह बदबू कैसी आ रही है? वह कहेंगे मैंने तो हफ़सा रज़ि0 के यहां से फ़क़त शहद का शर्बत पिया है। तब कहना कि ऐसा लगता है कि शहद की मक्खी अरफ़त के दरख़्त से भी रस चूस आई होगी। और मैं भी ऐसा ही कहूंगी। फिर सफ़िया रज़ि0 से मुख़ातिब करके कहा कि वह भी मंसूबे के मुताबिक़ हुज़ूर सल्ल॰ से ऐसा ही कहे। अभी यह गुफ़्तुगू जारी थी कि नागिहां हुज़ूर तशरीफ़ ले आए। उस वक़्त मेरा जी चाहा के उनको मंसूबे से आगाह कर दूं मगर इतने में वह सौदा के क़रीब आ गए। और उसने कहा "या रसूलल्लाह" क्या आप मग़ाफ़ीर खा कर आए हैं" उन्होंने कहा नहीं" फिर उसने कहा, तो आपके मुंह से यह बदबू कैसी आ रही है। उन्होंने कहा कि मैंने तो हफ़सा रज़ि0 के यहां से सिर्फ़ शहद पिया है। फिर उसने कहा मुमकिन है शहद की मक्खी अरफ़त के दरख़्त से रस चूस आई हो। फिरवह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए तो मैंने भी इसी तरह कहा। इसके बाद जब वह सफ़िया रज़ि0 की जानिब मुतवज्जह हुए तो उसने भी वही कुछ कहा।)

अगले दिन जब वह हफ़सा रज़ि0 के घर गए और उसने उनसे शहद पीने के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मुझे ख़्वाहिश नहीं। इस पर सौदा रज़ि0 ने कहा कि अल्लाह की क़सम हमने इसे उनके लिए हराम करवा दिया। मैंने उसे कहा कि चुप रहे।)

यही रिवायत इमाम बुख़ारी रह॰ ने उबैद बिन उमैर रज़ि0 के तवस्सुत से हज़रत आइशा रज़ि॰ से जब बयान की तो उसमें शहद पिलाने वाली ज़ौजा मुहतरिमा का नाम ज़ैनब रज़ि॰ बिंते हजश मज़कूर है। और हज़रत हफ़सा रज़ि0 का इस्मे गिरामी सौदा रज़ि॰ की जगह बयान हुआ। इस रिवायत मे अहम बात यह है कि उन्होंने सारा मंसूबा सुनने के बाद फ़रमाया

"मैं आइंदा कभी शहद न पीऊंगा।"

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अपने ऊपर शहद हराम कर लिया तो अल्लाहतालाने सुरह तहरीम उतारी और फ़रमाया कि बीवियों की ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए आप चीज़ को जो के हलाल है, अपने ऊपर हराम न कर लीजिए।

तमाम वाक़िआ यह बताता है कि अल्लाह तआला ने शहद को कितनी अहमियम अता फ़रमाई क्योंकि अगर उनकी तसही न की जाती और वह आइंदा ज़िंदगी शहद से किनाराकश रहते तो उनकी उम्मत का कोई शख़्स शहद पर मुतवज्जह न होता और इस तरह उम्मते मुस्लिमा एक मुफ़ीद ख़ुराक और लाजवाब दवा से महरूम हो जाती।

कुतुबे मुक़द्दिमाः

कुछ एस शख़्स के लिए नज़राना लेते जाओः जैसे थोड़ा सा रोग़ने बिल्लिसान, थोड़ा सा शहद, कुछ गर्म मसालेह और मर्द और पिस्ता और बादाम (पैदाइश – 43–11–12)

यहां पर शहद को इन चीज़ों में शुमार किया गया जो इतनी अहमियत रखती हैं कि इनको तोहफ़ा में दिया जाए।

.....मैं उतरा हूं कि इनको मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊं और उस मुल्क से निकाल कर इनको एक अच्छे और वसी मुल्क में जहां दूध और शहद बहता है। यानी कग़ानियों और हत्तियें और उमूरियों फ़र्ज़ियों और हूयों और बेवसियों के मुल्क में पहुंचाऊ। (ख़रूज 3:8)

इसी बाद को आयत नंबर 17–18 में इसी बात की तकरार है कि क़ौम को दूध और शहद की नहरों वाली मुमलिकत में आबाद किया जाएगा। क्योंकि यह दोनों चीज़ें जन्नत की निशानियाँ हैं।

....और मूसा से कहने लगे कि जिस मुल्क में तूने हमको भेजा था। हम वहां गए और वाक़ई दूध और शहद इसमें बहता है। (गिंती 13:27)

इसी क़िस्म की एक जन्नते अर्ज़ी की तारीफ़ में फ़रमाया गया।

वह ऐसा मुल्क है जहां रौग़न दार ज़ैतून और शहद भी है।

(इस्तस्ना 8:8:9)

शहद के फ़वाइद का ज़िक्र करते हुए इरशाद हुआ।

देखो मेरी आंखों में ज़रा सा शहद चखने के सबब से कैसी रौशनी आई। (सैमुइल 14:43–44)

इसी बाब में मज़्कूर हुआः

....और शहद और मक्खन और भेड़ बकरियां और गाय के दूध का पनीर दाऊद के और इसके साथ के लागों के खाने के वास्ते लाए।

(सैमुइल 17:29)

वह दरियाओं को देखने न पाएगा।

यानी शहद और मक्खन की बहती नदियों को। (अय्यूब 20–17)

ज़बूरे मुक़द्दस में शहद को अहमियत देते हुए इरशाद हुआ।

वह सोने से बल्कि बहुत कुंदन से भी ज़्यादा पसंदीदा हैं वह शहद से बल्कि छत्ते के टीकों से भी शीरीं हैं। (ज़बूर 20–10)

अपने बेटे को नसीहत होती है।

"ए मेरे बेटे तू शहद खा क्योंकि वह अच्छा है। और शहद का छत्ता भी क्योंकि वह मुझे मीठा लगता है।" (इम्साल 24–13)

शहद को बतौर सिफ़त क़रार दे कर इरशाद हुआ।

ए मेरी ज़ौजा! तेरे होंठों से शहद टपकता है। शहदो शीरीं तेरी ज़बान तले हैं। (गल अलगज़लात 4:11)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश की बशारत और इनकी ख़ुराक के बारे में इरशाद हुआ।

.... वह इसका नाम अमानवील रखेगी। वह दही और शहद खाएगा। जब तक कि वह नेकी और बदी के रद्दो क़बूल के क़ाबिल न हो।

(यसइयाह 7:15)

इरशादाते नबवी सल्ल०

نهیٰ رسول الله صلی الله علیه وسلم عن قتل اربع من الدواب النملة. وانحلة. والهدهد والصّور (ابوداؤد۔داری)

(रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चार हशरात को मारने से मना फ़रमाया, च्यूंटी, शहद की मक्खी, हुद-हुद और चिड़ी ममूला)

च्यूंटी, हुद-हुद और चिड़ी ममूला (ग़ालिबन तलीर) चूंकि दरख़्तों को नुक़सान देने वाले कीड़ों को खाते हैं। इसलिए इनको मारना लोगों को ख़ुद अपना नुक़सान है और यही कैफ़ियत शहद की मक्खी के बारे में है।

हज़रत अबू सईद अलख़िदरी रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं।

قد جاء رجل الی النبی صلی الله علیه وسلم فقال ان اخی استطلق بطنه فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم اسقه عسلاً. فسقاه ثم جاء فقال سقیته فلم یزده الاستطلوقاً فقال لهٗ ثلث مراةٍ ثم جاء الرابعة فقال اسقه عسلاً فقال لقد سقیته فلم یزدهٗ الااستطلاقاً رسول الله صلی الله علیه وسلم صدق الله وکذب بطن اخیک. نسقا نبرا. (بخاری۔مسلم)

(एक आदमी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बयान किया कि उसके भाई को इस्हाल हो रहे हैं। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उसे शहद पिलाओ। वह फिर आकर कहने लगा कि शहद पीने से इस्हाल में इज़ाफ़ा हुआ। उन्होंने फिर फ़रमाया शहद पिलाओ। इसी तरह वह हाल बयान करता तीन मर्तबा आ चुका तो चौथी मर्तबा इरशाद हुआ कि उसे शहद पिलाओ क्योंकि अल्लाहताला ने सच कहा है और तुम्हारे भाई का पेट झूट कहता है। उसने फिर शहद पिलाया तो मरीज़ तंदरुस्त हो गया।)

यह हदीस इल्मुल इलाज और माहियत मर्ज़ के बारे में एक रौशन राह है। क्योंकि इस्हाल का सबब आंतों से सोज़िश है। जो कि जरासीम या उनकी ज़हरों यानी TOXINS या वाएरस से हो सकती है। अगर ऐसे मरीज़ की आंतों में हरकात को फ़ौरी तौर पर बंद कर दिया जाएतो सोज़िश बदस्तूर रहेगी या ज़हरें तो वहीं रह जाएंगी। इसलिए इलाह का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि पहले आंतों को साफ़ किया जाए। फिर जरासीम मारे जाएं। शहद में यह सलाहियत थी कि वह यह दोनों काम कर सकता था।

इस्हाल के जदीद इलाज में आजकल यह कोशिश हो रही है कि बार-बार इजाबतों से मरीज़ के जिस्म से नमकियात निकल जाते हैं जिसकी वजह से उसकी मौत भी हो सकती है या पानी की कमी से गुर्दे बेकार हो जाते हैं इसका हल यह तलाश किया गया है कि मरीज़ को नमक और ग्लूकोज़ का एक मुरक्कब पानी में घोल कर बार-बार पिलाते हैं। वह ORS के नाम से मशहूर है।

शहद में यह तमाम चीज़ें मौजूद हैं। पानी में घोल कर शहद देने का मतलब

यह है कि मरीज़ को नमकियात की मुकम्मल ज़रूरयात के साथ तवानाई मुहैय्या करने वाले अनासिर भी हासिल हों और इस तरह न सिर्फ़ कि वह सही तरीक़े से तंदरुस्त होगा बल्कि बाद में कोई पेचीदगी या कमज़ोरी भी न होगी।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

من لعق العسل ثلاث عزواتٍ فی کل شهرٍ. لم یصبهٗ عظیمٌ من البلاء
(ابن ماجہ۔ بیہقی)

(जो शख़्स महीने में कम–अज़–कम तीन दिन सुबह–सुबह शहद चाट ले इस महीने में कोई बड़ी बीमारी न होगी)

यह हमारा ज़ाती तजुर्बा है कि बाक़ाइदा शहद पीने वाले को दिल, गुर्दों और पेट की कोई बीमारी नहीं होती।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 से दो अहम इरशादात मनकूल हैं।

کاناحب الشراب الی رسول الله صلی الله علیه وسلم العسل. (بخاری)

(पीने वाली चीज़ों में रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शहद सबसे ज़्यादा पसंद था)

उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी में रोज़ाना शहद पिया। और हमेशा तंदरुस्त रहे।

ان النبی صلی الله علیه وسلم کان یحب الحلویٰ والعسل. (بخاری)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हलवा (मिठास) और शहद बहुत ज़्यादा पसंद थे।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सऊद रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसलम ने फ़रमाया।

علیکم بالشفائن: العسل،والقرآن (ابن ماجہ۔مستدرک الحاکم)

(तुम्हारे लिए शिफ़ा के दो मज़हर हैं। शहद और क़ुरआन)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमान सुना कि:

ان کان فی شی من ادویتک خیرٌ ففی شرطة محجم اور شربة عسل.
(بخاری۔مسلم)

(तुम्हारी दवाओं में से किसी चीज़ में भलाई का अगर कोई असर है तो वह पछने लगाने और शहद पीने में है।)

मसनद अहमद में इसी हदीस में अस्ल में बाद मज़कूर है।

...."اولذغة بنار توافق داوٗد وما احب ان اکتوی."

(या आग से जलाना भी बीमारी के मुताबिक़ है। मगर में आग से जलाने को पसंद नहीं करता)

मसनद अहमद में उक़बा बिन आमिर रज़ि0 से भी तक़रीबन यही अलफ़ाज़ मुरव्वी हैं। बुख़ारी और इब्ने माजा ने यही इरशादे गिरामी अलफ़ाज़ के मामूली रद्दोबदल के साथ हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत किये हैं।

"الشفا فی ثلاثة. شربة عسل وشرطبة محجم، وکیة نار وانهی امتی عن الکی."

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 रिवायत फ़रमाती है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

ان الخاصرة عرق الكلية اذا تحرك اذى صابها فداوها بالماء المحرق واعسل.

(ابوداؤد، مستدرک الحاکم، ابونعیم۔الحارث)

(हाज़िरा गुर्दे का एक अहम हिस्सा है जब इसमें सोज़िश हो जाए तो गुर्दे वाले को बड़ी तकलीफ़ होती है। इसका इलाज जले हुए पानी और शहद से किया जाए।)

हाज़िरा से मुराद गुर्दे का बतन है जिसे तिब में PELVIS कहते हैं। मुहद्दिसीन ने जले हुए पानी से मुराद उबला हुआ पानी लिया है। मगर सहाबह किराम रज़ि0 ने सुन्नत की पैरवी में ताउल हर्क़" की जगह हमेशा बारिश' का पानी इस्तेमाल किया है।

"कंज़ुल आमाल, में मसनद फ़िरदौस के हवाले से हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से एक रिवायत का ख़ुलासा इन अलफ़ाज़ में मिलता है। जो उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान की है।

درهم حلال يشترى به عسلا ويشرب بماء المطر شفاء من كل داء.

(مسند فردوس)

(अपनी हलाल की कमाई के दरहम से शहद ख़रीद कर उसे बारिश के पानी में मिलाकर पीना तक़रीबन सभी बीमारियों का इलाज है।)

हज़रत ख़शरम रज़ि0 बिन हिस्सान बिन आमिर बिन मालिक बयान करते हैं।

بعثت الى النبى صلى الله عليه وسلم من عكبى والتمس منه دواء وشفاء فبعث الى بعكة عسل.

(मसनद आमिर बिन मालिक–इब्ने असाकर– इब्ने अबी शीबा–इब्ने मनदत)

(मैं बीमार हुआ तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मुलतजी हुआ कि वह मुझे दवा और दुआ से फ़ैज़याब करें। उन्होंने जवाब में मुझे शहद की कुप्पी रवाना फ़रमाई।)

बीमार ने दवा तलब की थी। जिसके जवाब में शहद अता फ़रमाया गया मतलब साफ़ ज़ाहिर है तुम इसे पियो। ठीक हो जाओगे।

हज़रत अली रज़ि0 बिन अबू तालिब रिवायत फ़रमाते हैं।

اذا اشتكى احدكم مليسال امراته ثلاثة دراهم اونحوها فليشتر بها عسلا ولاى خذمن ماء السماء فيجمع هنيا مريا وشقاء هى مباركا.

(ابن المنذر۔ابن ابی حاتم۔احمد بن الفردات)

(तुम में से जब कोई बीमार हो तो अपनी बीवी से तीन दिरहम या उससे कुछ कम ले कर इसका शहद ख़रीद लाए। फिर इसमें आसमान का पानी मिलाकर उन्हें ख़ुलूसे दिल के साथ पी ले कि मुबारक भी है और शिफ़ा का पानी मिलकर उन्हें खुलूसे दिल के साथ पी ले कि मुबारक भी है और शिफ़ा का मज़हर भी।)

हमीद बिन ज़ंजोया, स्यूती और रज़ैन ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि॰ बनि उमर का एक दिलचस्प अमल उनके गुलाम नाफ़े रज़ि0 से बयान किया है।

"كان لايشكو قرحة ولاشيًا الاجعلعليه عملاً. حتىٰ المدكب، اذاكان به طلاه عسلاً فقلنا له تداوى الدمل بالعسل؟. فقال اليس يقول الله: فيه شفاء للناس.

(वह जब भी बीमार हुए या उनको कोई ज़ख़्म होता फ़ोरी तौर पर इलाज करते। हत्ता अगर उनको फुंसी भी निकलती तो उस पर शहद लगाते थे। हम ने एक रोज़ ताज्जुब से कहा कि क्या आप फुंसी पर शहद लगाते हैं? फ़रमाया!

"क्या ख़ुदाताला ने यह नहीं कहा कि इसमें लोगों के लिए शिफ़ा है।

मसनद अहमद बिन हंबल रह0 में मुतअद्दिद रिवायत इस अम्र की हैं कि जिस्मानी कमज़ोरी, थकन और मुख़तलिफ़ इमराज़ के लिए भी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी शहद का शर्बत और कभी दूध में शहद मिला कर पिया। लोगों को भी ऐसे ही तीकीद फ़रमाई

عن ابى عباس قال اول ماسمعنا بالفالوذج انّ جبرائيل عليه السلام الى النبى صلى الله عليه وسلم فقال ان امتك تفتح عليهم الارض فيفاض عليهم من الدنيا حتىٰ انهم لياكلون من الفالوذج. (ابن ماجه)

فقال النبى صلى الله عليه وسلم وما الفالوذج قال يخلطون السمن واعسل جميعاً. نشسق النبى صلى الله عليه وسلم لذالك شهقةً. (ابن ماجه)

(हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 इब्ने अब्बास रिवायत करते हैं कि हम ने अभी फ़ालूदा के बारे में न सुना था कि एक रोज़ हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए: और फ़रमाया कि आपकी उम्मत बहुत से मुल्को को फतह करे और उनको बहुत ज़्यादा मालो-दौलत मिलेगी और वह फ़ालूदा खाएंगे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि यह फ़ालूदा क्या होता है? उन्होंने फ़रमाया कि घी और शहद को मिलाकर उसे बनाते हैं। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रोने की आवाज़ निकाल कर रोए।

हज़रत जाबिर रज़ि0 बिन उबैदुल्लाह रिवायत फ़रमाते हैं।

اهدى للنبى صلى الله عليه وسلم عسدٌ نقسم بيننا العقةً فاخذت لعقتى ثم قلت يا رسول الله ازداد اخير. قال نعم. (ابن ماجه)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास तोहफे में शहद आया। उन्होंने हम सब को थोड़ा-थोड़ा चाटने के लिए मरहमत फ़रमाया। मैंने अपना हिस्सा चाट कर मज़ीद की अर्ज़ की और उन्होंने क़बूल (फ़रमाई)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तालीम पाने वाले सहाबा किराम रज़ि0 भी शहद को बहुत पसंद करते थे। उम्महातुल मोमिनीन रज़ि0 में उसकी पसंद

का यह आलम था कि एक साहब मसला पूछने हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ि0 के पास गए तो देखा कि वह एक अंधे को संगतरे की क़ाशें छील कर उनको शहद में डबोकर खिला रही हैं। पूछने पर मालूम हुआ कि यह नाबीना हज़रत उम्मे मक्सूम रज़ि0 हैं जिनके ख़ुलूस को अल्लाहताला ने इतनी अहमियत दी कि उनके मुताल्लिक़ कुरआन मजीद की एक सूरह नाज़िल हुई और इसी अहमियत के ऐतिराफ़ में वह उनकी ज़ाती तौर पर ख़ातिर मदारात कर रही थीं। ख़ातिरदारी के लिए उन्होंने संगतरा पसंद फ़रमाया जो कि अरब में अब भी नहीं होता। इस लिहाज़ से वह तोहफ़ा चीज़ थी जिसके साथ शहद मिलाकर इसकी लज़्ज़त और उफ़ादियत में इज़ाफ़ा हो गया।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

जब औफ़ बिन मालिक अलअश्अजी बीमार हुए तो अपने बेटे से कहा कि वह किसी घर से बारिश का रखा हुआ पानी मांग लाए। उसने मक़सद पूछा तो फ़रमाया। अल्लहतआला ने फ़रमाया है।

وانزل من السماء ماء مباركة

(हमने आसमान से एक बरकत वाला पानी उतारा है।)

फिर फ़रमाया कि शहद लाओ और इसको तौज़ीह में फ़रमाया कि कुरआन मजीद ने इसकी अहमियत की सनद यूं अता की है।

فيه شفاءٌ للناس

(इसमें लोगों के लिए बीमारियों से शिफ़ा है।)

इसके बाद ज़ैतून का तेल तलब फ़रमाया और इसकी वजह यह बताई कि कुरान मजीद ने उसे कितनी अहमियत अता की है।

من شجرة مباركة زيتونة

(यह ज़ैतून के मुबारक दरख़्त से है।)

उन्होंने इनतीनों चीज़ों को मिलाया और पी गए। दो तीन दिन में तंदरुस्त हो गए। यह वाक़िआ अबुल अब्बास अहमद बिन अली अलउबैदी अल मक़रीज़ी ने बयान किया है और बताया है कि हज़रत औफ़ बिन मालिक हमेशा शहद का सुर्मा लगाया करते थे।

इबने कसीर रह. ने हज़रत अली रज़ि. का एक नुस्ख़ा बयान किया है कि मरीज़ों को हिदायत करते थे कि कुरआन मजीद की कोई आयत काग़ज़ पर लिख कर उसे बारिश के पानी से धोकर इस पानी में शहद मिला कर पी लें शिफ़ायाब हो जाएंगे।

जामेउल उसूल में हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर रज़ि. का नुस्ख़ा बताता है कि कुरआन मजीद की कोई भी आयत लिख कर इस पर शहद लगा दिया जाए। फिर इसको चाट लें शिफ़ा हो जाएगी।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चूंकि कुरआन मजीद और शहद को शिफ़ा का मज़हर क़रार दिया है इसलिए उन दोनों बुज़ुर्गों ने कुरआन मजीद की सिफ़त शिफ़ा से इस्तिफ़ादा हासिल करने के लिए इसके साथ शहद को शामिल कर लिया। क्योंकि इसकी शिफ़ा का इनशाफ़ भी कुरान मजीद ने किया और

वह ख़ुद अपनी ख़ासियत का यूं इज़्हार करता है।

ماهو شفاءٌ ورحمة للمؤمنين.

(इस में शिफ़ा के अलावह और कुछ नहीं लेकिन यक़ीन करने वालों के लिए)

मुहद्दिसीन किराम ने ज़्यादा तवज्जह इस हदीस पर दी है जिस में अबू सईद अलख़िदरी रज़ि॰ इस्हाल के मरीज़ की तीन–चार मर्तबा आमद के बाद शिफ़ा बयान करते हैं इस हदीस में नबी सल्लललाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि. كذب بطن اخيك इस अम्र की दलालत करता है कि वह बार–बार पिऐ ताकि बीमारी पैदा करने वाले जरासीम हलाह को जाएं इसके बाद शहद की मज़ीद मिक़दार इसलिए मतलूब हुई कि वह इन मुर्दा जरासीम और इनकी ज़हरों को पेट से निकाल दे। और इस तरह मरीज़ को शिफ़ा तिब्बी नुक़तए नज़र से मुकम्मल तौर पर हुई। क्योंकि इजाबतों की कसरत को कम कर देना इलाज न था। यह मुज़ाहिरा इस अहम हक़ीक़त की दलालत करता है कि शहद पेट में मौजूद मुख़्तलिफ़ बीमारियों के जरासीम हलाक करता। आंतों के ज़ख़्मों को मुंदमिल करता और तंदरुस्ती को बहाल करता है। यह इलाज इस्हाल के दरजा अव्वल और सानिया में अज़हद मुफ़ीद रहेगा।

आज तक अतिब्बा का तरीक़ा यह रहा है कि वह इस्हाल के मरीज़ों का इलाज एकसी अदविया से करते हैं जो क़ाबिज़ हुई हैं और मरीज़ भी यही चाहता है कि बार–बार की हाजत से निजात पाए। मगर यह अमल मरीज़ की अपनी सेहत के लिए ख़तरनाक है। क्योंकि आंतों की हरकात को रोक कर दिल को मफ़लूज किया जा सकता है। दूसरी सूरत में जरासीम वहां मुक़ीम रह कर मुस्तक़िल तौर पर सोज़िश पैदा करते रहेंगे और उनकी जहरें आसाबी निज़ाम के लिए मुस्तिक़िल ख़तरा बनी रहेंगी। इस इलाज से यह साबित होता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वही इलाही से इल्मे तिब पर मुकम्मल उबूर हासिल था और उन्होंने वही कुछ किया जो एक हाज़िक़ और मामला फ़हम मुआलिज को करना चाहिए।

बेहतरीन शहद फ़सल रबी का है। इसके बाद मौसमे गर्मा का और फिर सर्दी का। अतिब्बा इस अम्र पर मुत्तफ़िक़ हैं कि यह बेहतरीन दवा और बेहतरीन टानिक है। क्योंकि यह जिसमानी कुव्वतों को जला देता है। यह मुक़व्वी बदन है। मेदा को ताक़त देता है। भूख बढ़ाता है। बूढ़ों को तवानाई और मुख़्रिज बलग़म है। पेट को ज़म करता है। बावलेपन में मुफ़ीद है। यह अदविया को हल करके उनके असरात को बढ़ाने का बेहतरीन ज़रिया है। अगर इसमें गोश्त रख दिया जाए तो तीन माह तक उसे गलने नहीं देता। इसी तरह यह तीन माह तक सब्ज़ियों को भी महफ़ूज़ रख सकता है इसलिए उलमा ने इसे الحافظ الامين का लक़ब दिया है।

अगर इसे जिस्म पर लगाया जाए तो यह एक अज़ीम नेमत है। जुओं को मार देता है। बाल मुलायम और लम्बे करता है। इसका सुर्मा आंखों को रौशन करता है। इसका मंजन दांतों को चमकाता और मसूढ़ों की हिफ़ाज़त करता है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब शहद के बारे में यह इरशाद फ़रमाया कि :

"عليكم بالشفاءين: العسل والقرآن.

(तो यह इस अम्र की दलालत करता है कि एक रूहानी इमराज़ के लिए दूसरा जिस्मानी के लिए यकसां तौर पर मुफ़ीद ही नहीं बल्कि दोनों अक़साम की सेहत को तहफ़्फ़ुज़ देता है। शहद को अगर ग़िज़ा कहें तो मुकम्मल ग़िज़ा है। अगर इसे मशरूब क़रार दें तो मुफ़र्रह और मुक़व्वी मशरूब है। और प्यास को तस्कीन देता है। जिस्म से सुफ़रा को ज़ाइल करता है। मुहद्दिसीन ने सिरका को इसका मुसल्लह क़रार दिया है। इसे सुबह नहारमुंह खाना या पीना मेदा को हर क़िस्म की ग़िलाज़त से पाक कर देता है, जिगर को गुर्दों और मसाना से ग़ैर मतलूबा अनासिर को ख़ारिज करता है मुहद्दिस अबदुल्लतीफ़ बग़दादी रह. कहते हैं कि अकसर बीमारियों में शहद दूसरी चीज़ों से इसलिए अफ़ज़ल है कि यह जिस्म के सुद्दों को खोलता, ग़िलाज़तों को हल करके निकालता और जिस्म को धो कर साफ़ कर देता है। और अतिब्बा अरब ने इसे इसलिए भी फ़ज़ीलत दी है कि

"كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يشربُ كل يوم قدح عسلٍ ممزوجاً بالماء على الريق." (بحوالہ ذہبی۔ ابن القیم)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह नहार मुंह पानी में शहद घोल कर इसका प्याला पिया करते थे।)

इनके इस अमल को सामने रखें तो हमारी तवज्जह इनकी तंदरुस्ती और अपनी सेहत को क़ायम रखने के उमूर की जानिब मब्ज़ूल हो जाती है। इस ग़र्ज़ के लिए वह शहद के अलावह कम खाते थे। खजूर या मुनक़्क़ा का पानी पीते थे। तेल पीते थे। सुर्मा लगाते थे। पैदल चलते थे और गंदी ग़िज़ा और चिकनाइयों की कसरत से परहेज़ करते थे।

वह तिब्बुल अजसाद और तिब्बुल अरवाह पर दसतर्स रखने के साथ इनको अमली तौर पर दिखाते थे ताकि लोग ज़मीनी और आसमानी इमराज़ से महफ़ूज़ रहें।

मुहद्दिसीन कहते हैं कि अल्लाह तआला ने शहद में मुख़तलिफ़ बीमारियों से बचाओ और इलाज की जो सलाहियत रखी है वह इसी तरह है जैसे कि कुरान मजीद सीने के जुमला मसाइल के लिए ख़्वाह वह शकूक और शुब्हात ही क्यूं न हों शिफ़ा है।

इब्नुलक़ैय्युम रह. बयान करते हैं कि शहद एक ऐसी मुनफ़रिद चीज़ है कि जो दवा और ग़िज़ा होने के साथ–साथ किसी भी नुसख़े में किसी फ़िक्र के बग़ैर शामिल की जा सकती है। अतिब्बा क़दीम ने शहद का ज़िक्र बतौर मिठास के किया है। वह इसके जुमला कमालात से आशना न थे। अलबत्ता मिस्रियों के महफ़ूज़ कर देने वाले असरात से वाक़फ़ियत थी। क्योंकि यह लाशों के अजसाम को महफ़ूज़ रख सकता है। इसके फ़वाइद से मुकम्मल वाक़फ़ियत अहदे रिसालत और इसके बाद हुई है। क्योंक जब कुरान मजीद ने इसे शिफ़ा का मज़हर

बताया और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल ने इसके फ़वाइद का अमली मज़ाहिरा किया तो देखने और सुनने वाले मजबूर हो गए कि इसके अफ़ादात पर ईमान लाएं जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह क़रार दिया है कि कुरान और शहद में शिफ़ा है तो उनमें इन फ़वाइद की मौजूदगी एक यक़ीनी अम्र है। अगर किसी का कुरान से इलाज किया जाए तो इससे शिफ़ा हासिल करने के लिए उस पर ईमान और यक़ीन होना ज़रूरी है। क्योंकि कुरआन ने अपनी शिफ़ाई सिफ़त के लिए मोमिनीन की तख़सीस की है। और अगर इससे किसी को शिफ़ा न हो तो इसका मतबल यह है कि वह इस पर ख़ुद यक़ीन नहीं रखता था। जैसे कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं कि रूसलल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

منلم يستشف بالقرآن فلاشفاء الله.

(इसी मौजू पर इब्ने क़ाने ने रजाअलग़नवी रज़ि॰ से यह हदीस बयान की है।

استشوا بما حمدالله به نفسه قبل ان يحمده خلقو بما مدح الله به نفسه
الحمد الله وقل هول الله احمد: فمن لم يشفه القران فلا شفاء الله.

इन दोनों रिवायत में कुरआन से शिफ़ा हासिल करने की तरकीब बयान करने के बाद यह वाज़ेह कर दिया गया है कि जिस किसी को कुरआन से भी शिफ़ा हासिल न हो सके तो फिर वह यह समझ ले कि अब शिफ़ायब होना उसकी क़िस्मत में नहीं।

इब्नुलक़ैय्युम रह॰ कुरआन और शहद से शिफ़ा को ईमान और यक़ीन से मशरूत करते हैं। क्योंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल्लम की तिब वही इलाही से वजूद में आई। वह नबुव्वत की रौशनी है। जबकि दूसरे इलाज क़याफ़ा पर मबनी हैं और यहां पर किसी ग़लती या शुबे का कोई इमकान नहीं जब कुरटान ने शहद में शिफ़ा का पता बताया और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसकी मुख़तलिफ़ सूरतों में तसदीक़ की है तो फिर इस पर शुबा करना ईमान की कमज़ोरी की अलामत है।

शहद बिलाशुबह जामे और मुकम्मल ग़िज़ा है। यह जिस्म से फ़ासिद माद्दों को निकालने के अलावा ज़हरीले असरात से बचाता है जैसे कि ज़हरीली खुंबी खाने के बाद या अफ़्यून का नशा उतारने के लिए इसे पानी में घोल कर देना काफ़ी है। नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम की आदाते मुबारका के बारे में यह साबित है कि वह इसे पानी में घोल कर पीते थे और हमेशा ख़ाली पेट या नहारमुंह इस्तेमाल फ़रमाया। इस आदते मुबारका में हिकमत यह थी कि यह फ़ौरन जज़्ब होकर मेदे से ग़िलाज़त को निकालता, मेदा को ख़ाम करके साफ़ करता और जिस्म को जुमला इमराज़ से महफ़ूज़ रखता है। इसी आदत का फ़ाएदा हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 की रिवायत से ज़ाहिर होता है कि जिसने महीने में तीन रोज़ भी शहद चाट लिया वह उस माह किसी बड़ी बीमारी में मुब्तिला न होगा।"

इनकी शहद पीने की आदत का फाएदा उनकी हयात मुतहिरा के मुताले से

साबित है कि वह कभी एक दिन के लिए न तो बीमार हुए और न किसी सफ़र या जंग के दौरान अपनी कमज़ोरी या थकन का इज़हार फ़रमाया वह नबुव्वत के ओहदे जलबला पर तक़रीबन 34 साल मुतमक्किन और फ़ाइज़ रहे और इस तवील अर्से में उनकी ज़िंदगी के हर पल की ख़बर हमें मयस्सर है। उन्होंने रोज़ाना शहद पी कर यह वाज़ेह कर दिया कि अगर कोई यह आदत अपना ले तो फिर वह आमतौर पर तंदरुस्त ही रहेगा।

अतिबा क़दीम के मुशाहिदात:

क़दीम मिस्रियों के हुकमा शहद से वाक़िफ़ थे। लाशों को महफ़ूज करने के अमल में शहद इस्तेमाल किया जाता था। शाही दस्तरख़्वान पर शहद हमेशा मौजूद रहता था और जब बादशाह मरते थे तो इनकी ज़रूरियाते ज़िंदगी मक़ाबिर में उनके साथ दफ़्न की जाती थीं। खुदाई के दौरान हर मक़बरे से शहद की कुप्पियां बरामद हुई हैं। कमाल की बात यह है कि आठ हज़ार साल का अरसा गुज़र जाने के बावजूद यह शहद इनसानी इस्तेमाल के क़ाबिल पाया गया। इसमें अगर कोई तब्दीली वाक़े हुई तो सिर्फ़ इतनी कि इसका रंग सियाही माइल हो गया था। लोगों ने इसे खाया और ज़ाएक़ा ठीक–ठाक था।

आयुर्वेदिक तिब की मशहूर किताब "सशरत" में शहद की आठ–आठ क़िस्में मज़कूर हैं।

1. मुकशीका: यह वह शहद है जिसे आम मक्खियां जमा करतीहैं।
2. भरामारा: यह शहद सियाह रंग की मक्खियों का होता है और इस मक्खी को भी भरामारा कहते हैं। यह शहद बलग़म, खांसी, बुख़ार और नकसीर में दूसरी अक़साम से ज़्यादा मुफ़ीद होता है।
3. किशूधारा: यह छोटे जिस्म की चमकदार मक्खी का शहद है जिसकी आम ख़ाज़ियात तो मुकशीका की मानिंद हैं। लेकिन आंतों की बीमारियों में तिरयाक़ है।
4. पोतीका: यह छोटे क़द की सियाह मक्खी का शहद है जो अपने हजम में पतंगों से मिलती जुलती है।
5. छातरा: यह छोटे क़द की सियाह मक्खी है जिसका छत्ता छतरी की शक्ल का होता है। यह शहद ख़ून की क़ै, फुलबहरी, पेट के कीड़ों, सोज़ाक, हिस्टीरिया, मतली और ज़हरों के इलाज में ज़्यादा मुफ़ीद है।
6. अरगमा: यह जंगली शहद है। जो भरामारा क़िस्म की मक्खी जमा करती है। मगर इस मक्खी का रंग सुनहरी होता है। यह शहद इम्राज़े चश्म, बवासीर, हैज़ा, खांसी, तपेदिक़, यर्क़ान और ज़ख़्मों के इलाज में मुफ़ीद है।

7. ऊदलाकाः यह हक़ीक़त में शहद नहीं बल्कि यह एक बदबूदार गाढ़ी रतूबत है सफ़ेद चींटियों के बिलों में मिलती है।

8. दालाः यह वह शहद है जो साफ़ किए बग़ैर फूलों में होता है। यह पेट में सुफ़रा और तेज़ाब पैदा करता है। बलग़म को निकालता है। मतली और सोज़ाक से शिफ़ा देता है। हिंदू देवमाला के मुताबिक़ भगवान बृह्मा ने इन्सानों की भलाई के लिए तिब का इल्म असनी कुमार को याद करवाया जिसके नुसख़े बाद में सिशरत की शक्ल में मुरत्तिब हुए। एक अंदाज़े के मुताबिक़ यह किताब तीन हज़ार साल से ज़्यादा पुरानी है।

कुरआन मजीद ने फ़रमाया है कि हर क़ौम और हर मुल्क में वहां के हालात के मुताबिक़ ख़ुदा का पैग़ाम लेकर अंबिया किराम तशरीफ़ लाते रहे। तिब का इल्म हमेशा से आसमानी क़रारदिया जाता है। इसलिए मुमकिन है कि हिंदुस्तान में तशरीफ़ लाने वाले पैग़म्बरों ने यहां के रहने वालों को भी ज़मीन पर इस नादर रोज़गार तोहफ़े के बारे में बाख़बर कर दिया हो। वैदों ने शहद की जिन आठ क़िस्मों का ज़िक्र किया है। वह हक़ीक़ी नहीं। इनमें से कम–अज़–कम दो शहद नहीं और दो का वजूद मुश्तबा है। मगर वह अपने नुस्ख़ों में शहद को सोज़ाक, इम्राज़े बतन, इमराज़े आअ़साब, इमराज़ुल ऐन और दूसरी मुतअद्दिद बीमारियों में बड़े वसूक़ से इस्तेअ़माल करते हैं।

बूअली सैना और क़ानून की शरह करने वालों ने शहद की माहियत के बारे में कहा है किः

"यह एक क़िस्म की शबनम ख़ाफ़ी है जो फूलों और नबातात पर गिरती है। इसको एक नेशदार मक्खी चूस कर अपने छत्ते में खाने के वास्ते जमा कर लेती है।"

यह वह इब्तिदाई दौर था जब लोगों ने फलों फूलों और हैवानात के बारे में स्क्का मालूमात मयस्सर न थीं। इसी ज़िम्न में "مشكاة اللائذين فى علم الاقراباذين" का मुअल्लिफ़ मुहम्मद अख़ंदी अबदुल फ़ताह लिखते हैं:

"शहद जोहरे शुकरी है। जो एक क़िस्म की मक्खी से हासिल होता है और बाएतबारे क़ानून और मकानात के कभी जमा हुआ होता है और कभी पतला कभी सफ़ेद ज़र्दी माइल है।"

अतिब्बा क़दीम के नज़दीक वह शहद जो छत्ते से टपक कर अज़ख़ुद गिर रहा हो वह सबसे उम्दा है जबकि छत्ते से निचोड़ कर निकाला गया हुआ मोम से आमीज़ होता है। जिसमें मोम न हो, सुर्ख़ रंग, गाढ़ा, शफ़्फ़ाफ़, ख़ुश ज़ाएका और ख़ुश्बूदार हो वह सबसे उम्दह होता है। फ़सल रबी का शहद मौसमे गर्मा से बेहतर होता है। जो शहद पुराना हो गया हो वह मुज़िर है। बाज़ अतिबा ने दो साल पुराने शहद को ज़हरीला क़रार दिया है।

माउल अस्लः बनाने की तर्कीब यह है कि दुगनी मिक़दार के पानी में इसे इतना जोश दें कि एक हिस्सा उड़ जाए और इस दौरान सतह के ऊपर से झाग

उतारते रहें अगर इसे मुरक्कब बनाना चाहें तो पानी के बजाए अर्कियात अज किस्म बैद मुश्क, गुलाब बादियान या केवड़ा इस्तेमाल किये जा सकते हैं। यह मुरक्कब कम मुलय्यन है। बल्कि बलग़मी, मिज़ाज के लिए क़ाबिज़ है।

शहद बलग़म लज़ज को निकालता है। सुद्दा खोलता है। रद्दी रतूबतें निकालता है अगर कसरत से खाया जाए तो इस्तसक़ा यरक़ान, असरुलबोल, वरम तहाल, फ़ालिज, लक़वा, ज़हरों को असरात, इमराजे सरोसीना में मुफ़ीद है। प्यास को बुझाता है। पथरी को ख़ारिज करता है। मेदा, बाह और बसारत को कुव्वत देता है।

शहद खाने से पेशाब, दूध और हैज़ में इज़ाफ़ा होता है। जिगर को कुव्वत मिलती है और गुर्दा मसाना की पथरी को तोड़ कर निकालता है। अब कम्यून यानी ज़ीरे के पानी के साथ इसे पीना अफ़्फ़तुल कल्ब और ज़हरों के इलाज में मुफ़ीद है। बाज़ अतिब्बा का कहना है कि अगर कोई औरत नहार मुंह शहद पिए और इसके बाद उसके पेट में मरोड़ पैदा हो तो वह हामला है। बीस ग्राम शहद तीन गुना पानी में मिला कर काफ़ी दिन पीने से पेट से पानी निकल जाता है।

शहद को कंदर के साथ मिलाकर देने से सीना और फेफड़ों का तक़िया होता है। यह पथरी निकालने में ज़्यादा मुफ़ीद है। यरक़ान को दूर करता है। बारतंग के पानी में शहद को घोल कर हुक़ना करने से बड़ी आंत के ज़ख़्म मुंदमिल हो जाते हैं। बू अली सैना इसे मुक़व्वी मेदा क़रार देता है। अगर इसे अर्क़ गुलाब में हल करके पिए तो और ज़्यादा मुफ़ीद है। यह आंतों के वम्र को तहलील करता है।

शहद की बाज़ क़िस्मों को बलग़मी और सुफ़रावी मिज़ाज वालों के लिए क़ाबिज़ बयान किया गया है। जबकि अतिब्बा तज्वीज़ करते हैं कि इन मिज़ाजों के लोग इसको सिरके के अलावह इस्तेमाल न करें। अगर किसी की आंतों में ज़ख़्म हों और उन ज़ख़्मों या मुज़मिन सोज़िश की वजह से उसे बार–बार इजाबत हो रही हो तो उन मरीज़ों में शहद चूंकि ज़ख़्मों से जलन और अलहिताब दूर करेगा इसलिए नतीजे में क़ब्ज़ हो जाएगी। जिसे सिरका मिलाकर दूर करना इल्मुल इमराज़ के मुताबिक़ भी दुरुस्त अमल न होगा। ऐसे में शहद के साथ जौ का दलिया जौ का पानी शामिल करना मर्ज़ को दूर करने में भी मुफ़ीद होगा और रद्देअमल के तौर पर क़ब्ज़ भी न होगी।

मक़ामी इस्तेमाल:

दांतों के लिए शहद एक बेहतरीन टानिक है। इसे सिरके में हल करके दांतों पर मलना उनको मज़बूत कता है और मसूढ़ों के वरम दूर करने के अलावा दांतों को चमकदार बनाता है। गर्म पानी में शहद और सिरका के साथ नमक मिलाकर ग़रारे करने से गले और मसूढ़ों का वरम जाता रहता है। शहद में अंज़रूत और नमक मिलाकर बहते कान में डालने से पीप बंद हो जाती है। क़लमी शूरा पानी में भिगोकर इसमें शहद मिलाकर कान में डालना सक़ले समाअत में मुफ़ीद है।

गंदम के आटे में शहद मिलाकर मरहम सी बनाकर फोड़े फुंसियों और औराम जारा पर लगाना इनको मुंदमिल कर देता है। शहद में सिरका और नमक

मिलाकर छाई पर लगाने से दाग़ दूर हो जाते हैं। रौग़ने गुल में मिलाकर गंदे ज़ख़्मों पर बतौर मरहम लगाने से इनकी अफ़ूनत रफ़ा करके उन्हें ठीक कर देता है। अर्क़ गुलाब में शहद मिलाकर बालों में लगाने से जुएं मर जाती हैं। बाल मुलाइम और चमकदार हो जाते हैं। छाई को दूर करने में सिरका की निस्बत क़िस्ते शीरीं के साथ शहद का मुरक्कब बाज़ अतिब्बा के नज़दीक ज़्यादा मुअस्सिर है। चूंकि यह अंदर की रतूबतें भी खींच कर निकाल सकता है, इसलिए अर्क़ुन्निसा के दर्द में इसका लेप बड़ा मुफ़ीद है।

शहद की कीमयावी हैयत:

एक मिली लीटर शहद का वज़न 1.35–1.36 पर 20.C ग्राम होता है। इसमें पानी की मिक़दार अगर्चे मौसम, दरजए हरारत और आस–पास की ज़राअत से तब्दील होती रहती है लेकिन अमरीकी मेयार के मुताबिक़ इसमें 18.88 फ़ीसदी पानी होता है।

दुनिया के शहद पैदा करने वाले मुमालिक में अमरीका, रूस, चीन, मैक्सिको, आस्ट्रेलिया, अरजंटाइन और साइपर्स शामिल है। आमतौर पर शहद में 4.6 फ़ीसदी मोम होती है। मगर मौसम की मिक़दार शहद निकालने के तरी और छत्ते की आबादी पर भी मुनहसिर है। अगर छत्ते से पक कर अपने आप टपकने लगे तो ऐसे शहद में मोम बहुत कम होगी इसी तरह कट लगाकर निकाले हुए शहद में मोम की मिक़दार कम होती है जबकि छत्ते को निचोड़ कर निकालने की सूरत में मोम ज़्यादा होती है। शहद को गर्म करें तो यह मोम से पहले पिघल जाता है। मोम 145.F पर पिघलती है।

जिस्मे इंसानी की साख़्त में जितने भी कीमयावी मुरक्कबात इस्तेमाल होते हैं या इन्सान को इनकी ज़रूरत रहती है। इनमें से हर अंसर शहद में मौजूद है। अशयाए ख़ुर्दनी में हयातीन की मौजूदगी के बारे में उसूल यह है कि बाज़ ख़ुराकें ऐसी हैं जिनमें हल पज़ीर विटामिन होते हैं। और बाज़ ऐसी हैं जिनके चिकनाई में हल होने वाले विटामिन अज़ क़िस्म A-D-E-K- पाए जाते हैं। शहद वह मुन्फ़रिद मुरक्कब है जिसमें हर क़िस्म के विटामिन मौजूद हैं।

शहद में मौजूद मोटी–मोटी चीज़ें, मिठास, फ्रकटोस, फ़ार्मिक एसिड, फ़राज़ी, तेल, मोम और पोलन POLLEN GRAINS होते हैं। 5.60-F पर शहद दाने दार बन जाता है। इसके अजज़ा में अहमियत मिठास की है। कीमयावी तौर पर मिठास की सबसे मुश्किल क़िस्म निशास्ता है। जब हम रोटी की सूरत में निशास्ता मुंह में डालते हैं तो चबाने के दौरान थूक का जौहर PTYALIN निशासते को ग्लूकोज़ में तब्दील कर देता है जिससे हम लुक़्में को चबाते–चबाते मिठास महसूस करने लगते हैं। कुरआन मजीद ने मक्खियों के मुंह में मुतअद्दिद क़िस्म के जोहरों की निशान दही की है। और इल्मे कीमिया की तरवीज से इस इरशादे रब्बानी की सदाक़त का अमल यूं मालूम हुआ है कि यह फूलों से हासिल होने वाली चीज़ों और ख़ासतौर पर पोलन के दानों में मौजूद निशास्ते को फ्रक्टोस में तब्दील कर देती हैं इसी तरह मक्खी के रास्ते में चीनी भी आती है। जिसे कीमियावी तौर पर SUCROSE कहते हैं। मक्खी के मुंह में एक हाज़िम

जौहर INVERTASE के नाम से पाया जाता है। वह चीनी या दूसरी निशास्तेदार चीज़ों को आसान साख़्त की मिठास या INVERT SUGARS में तब्दील कर देते हैं। आम शहद में मिठासों की शरह इस तरह बयान की गई है।

INVERT SUGARS 60-93% SUCROSE 80-12%

जबकि कैनेडा में पैदा होने वाले शहद का मेयार यह है।

INVERT SUGARS 60-78% SUCROSE 0-5-7-6%

पाकिस्तान कोन्सिल बराए साइंटिफ़िक रिसर्च लाहौर की लेबारेट्री में इल्मुलग़िज़ा के माहिर डाक्टर फ़र्रुख़ हुसैन शाह ने बाज़ार से शहद के 25 नमूने हासिल किए जिनमें से 13 मैयार से कम थे। इसके बाद उन्होंने वाह, छांगा मांगा, जंगल और ज़रई यूनिवर्सिटी फ़ैसल आबाद के ज़रिए मुख़तलिफ़ फ़सलों के शहद का तक़ाबुली जाएज़ह लिया और यह आअ्दादो शुमार जारी किए हैं।

	MOISTURE	ASH	INVERT SUGAR	SUCROSE	WATER INSOLUBLE SOLIBS
कोंपलों का शहद	13.5	0.52	66.6	6.7	0.15
लोकाट का शहद	18.9	0.6	64.5	208	0.15
सरसों का शहद	16.8	0.61	70.2	2.3	0.5
संगतरों का शहद (वाह)	12.4	0.56	71.4	1.2	0.20
संगतरो का शहद (ज़रई यूनिवर्सिटी)	13.5	0.58	69.2	2.2	0.50
गुलाब का शहद (वाह)	16.2	0.55	58.0	10.0	0.50
गुलाब का शहद ज़रई यूनिवर्सिटी	16.2	0.55	58.5	9.8	0.50
जंगली शहर (छांगामांगा)	13.8	0.68	62.1	3.3	0.32

इस जाएज़े से अहम नतीजह निकलता है कि शहद में मौजूद अनासिर फ़स्ल मौसम और इलाक़े के मुताबिक़ मुख़तलिफ़ होते रहते हैं।

मक्खी जब ख़ुराक की तलाश में फिरती है तो यह ज़रूरी नहीं कि वह हर मर्तबह फूलों पर ही जाए। उसे रास्ते में गन्ने का रस गुड़, राब, खांड के ढेर या मिसरी की डलियां भी मयस्सर आ सकती हैं। शहद की मक्खियां पाने वाले इदारे और कंपनियाँ अपनी ख़ेप को बढ़ाने के लिए छत्तों के क़रीब किसी सस्ती क़िस्म की मिठास का ढेर लगा देते हैं। मक्खियाँ छत्तों से उड़ती हैं इन ढेरों पर बैठ कर वहां से मिठास लेकर लौट आती हैं। इसकी मक्खियों के जौहर INVERTASE और DIASTASE फ्रक्टोस में तब्दील कर देतें हैं क्योंकि यह छत्तों में चीनी का वजूद नहीं करतीं। अगर किसी छत्ते में चीनी मिलती है। तो यह वही मिक़दार होती है। जो अभी तब्दीली के मरहले में नहीं आई। मिठास के ढेरों से हासिल होने वाले शहद बिल्कुल ख़ालिस होता है। इनमें लहमियात नहीं होते और कीमयावी अनासिर की मिक़दार भी बराए नाम होती है। मसलन चीन से

आने वाला नीम का शहद अगर्चेह सियाही माइल और कसैला होता है मगर वह किसी भी दवाई से ज़्यादह मुसफ़्फ़ी ख़ून होता है। यूक्लिप्ट्स का शहद तेज़ और बदबूदार होता है। जबकि यह ज़ुकाम और खांसी में बड़ा मुफ़ीद है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऊंटनी और गाए के दूध की उफ़ादियत में एक अहम नुक्तह बयान फ़रमाया है कि यह हर क़िस्म के फूलों से रस चूसती है और उनके पोलन इसके जिस्म से लगे होते हैं। इसलिए बाहर से आने वाली ख़ूबसूरत बोतलों का शहद ख़ालिस तो ज़रूर है मगर मेअ्यार के लिहाज़ से घटिया होता है।

मक्खियां जब भिनभिनाती हैं तो अपने परों की हरकत से शहद को पंखा करके इसका पानी उड़ा कर शहद को गाढ़ा करती हैं। आम तौर पर शहद में यह अनासिर होते हैं।

POTASSIUM	SODIUM	CALCUM
35	7.1	7.7
PROTEINS	WAX	CARBOHYDRATES
0.6-2.67	4.6	74.4
PHOSPHORUS	SULPHUR	CHILORINE
32.3	0.8	26.3
MAGNASIUM	COPPER	IRON
2.0	0.04	0.20

एक सौ ग्राम शहद में अनासिर के इस तनासुब के अलावह यह जिस्म इंसानी को हरारत के 3.7 हरारे से भी मुहैया करता है।

लाहौर कारपोरेशन के पब्लिक अनालिस्ट आरिफ़ शाह ने शहद में कीमयावी अनासिर की मौजूदगी पर ख़ुसूसी तहक़ीक़ात की हैं। उन्होंने इस में लेथीम भी पाया और उनकी तहक़ीक़ के मुताबिक पाकिस्तानी शहद में पानी की मिक़दार 25 फ़ीसदी जबकि बरतानवी मेयार भी इसके क़रीब है अलबत्ता अमरीका और कनैडा में शहद में पानी इसलिए कम होता है कि वह क़ुदरती शहद इस्तेमाल नहीं करते।

शहद की मक्खियां भी दूसरे जानदारों की तरह बीमार होती है। अगर यह किसी दूसरे छत्ते का शहद खालें तो अकसर बीमार पड़ जाती हैं। क्योंकि वहां की बीमारी उनमें आ जाती हैं। मक्खियों की ज़िंदगी को आजकल का सबसे बड़ा ख़तरा कीड़े मारने वाली अदविया से है। फ़सीलों और घरों से कीड़े ख़त्म करने के लिए जो अदविया इस्तेमाल होती हैं। उनमें से हर एक इन मक्खियों को भी मार सकती है। चूंकि आजकल फ़सलों पर स्प्रे करने का रिवाज हो चुका है। इसलिए मक्खियों की तादाद कम होने लगी है। और यही सूरते हाल परिंदों की भी है। बर्तानिया और अमरीका में मक्खियां पालने वाले अपनी मक्खियों को खांड में FUMGILLIN मिलाकर खिलाते हैं। जिससे इनको क्रमकश अदविया से नुक़सान का एहतिमाल कम हो जाता है।

पाकिस्तान में ख़ास ख़ुराक के क़वानीन के तहत तजज़िया करने के लिए।

दर्ज ज़ैल मैयार मुक़र्रर है।

पानी यामी	25 फ़ीसद से ज़ाइद न हो
राख ash	0.5 फ़ीसद
चीनी SUCROSE	10 फ़ीसदी से कम हो
REDUCING SUGARS	60 फ़ीसदी से कम हो
FIEHE'S TEST	अगर इसका रंग गुलाबी हो जाए तो शहद में चीनीया शर्बत की मिलावट है।

लाहौर की फ़ूड लेबारेट्री में आख़री टेस्ट के अलावा BROWN'S TEST मज़ीद इतमीनान के लिए करते हैं। अगर इसके फूलों का रंग गुलाबी से ज़र्द हो जाए तो शहद में मिलावट मौजूद है। आरिफ़ शाह पिछले बीस साल से अशयाए ख़ुर्दनी के मैयार का तजज़िया कर रहे हैं उनकी राय में शहद के मैयारी टेस्ट हर तरह से जामे और मुकम्मल हैं उनके ज़रिए शहद में मिलावट का यक़ीनन पता चल जाता है।

लोगों ने शहद की पहचान के लिए कई तरीक़े मशहूर किए हैं। एक में नमक की डली शहद में मिलाते हैं। अगर शहद नमकीन हो जाए तो मिलावट वाला है ख़ालिस शहद में नमक हल नहीं होता। टेस्ट ग़लत नहीं, लेकिन इसमें 25 फ़ीसदी पानी भी होता है जिसमें नमक हल हो सकता है। इसलिए ज़ाएक़ा नमकीन हो जाने के बावजूद शहद ख़ालिस हो सकता है।

कहते हैं कि ख़ालिस शहद रोटी पर लगाकर कुत्ते को खिलाया जाए कुत्ता शहद नहीं खाता। जबकि शीरा खा लेता है। यह भी कोई मेअ्यार नहीं। क्यूंकि ऐन मुमकिन है कि कुत्ता किसी वक़्त खाने के मूड ही में न हो। जिसका ग़लत मतलब निकल सकता है।

शहद आसानी से पानी में हल नहीं होता। जब ख़ालिस शहद क़तरा–क़तरा पानी के प्याले में टपकाया जाए तो यह क़तरे साबुतो सालिम पैंदे तक चले जाते हैं। जबकि शर्बत या शीरे का क़तरा पैंदे तक जाने से पहले टूट कर हल हो जाता है। फूलों के तौलीदी दाने मक्खी के जिस्म को चिपक जाते हैं। यह और मक्खियों के अपने साख़ता लहमियात भी शहद में होते हैं। यह लहमियात की एक ख़ास क़िस्म है जो जिस्म के दिफ़ाई निज़ाम की तर्वीज में अहम मुक़ाम रखती है। इसके अलावा लहमियात की क़िस्म के अनासिर PROTEIDS लेसदार लुआब और रंगदार मादे भी शहद में मौजूद होते हैं। शहद की मक्खी की अगर्चे कई क़िस्में हैं। मगर उनमें से हर क़िस्म डंक मारने की सलाहियत रखती है। इस डंग का सयाल दानेदार होता है। जो इंजक्शन की मानिंद जिस्म में दाख़िल होता है तो वहां पर जलन और दर्द होती है।

दो इंच मुरब्बा रक़बा सुर्ख़ हो जाता है। फिर हिस्सासियत शुरू होती है और वरम आ जाता है। यह वरम डंक वाली जगह पर भी हो सकता है और पूरे जिस्म पर आने के साथ–साथ सांस की नालियों में आकर तनफ़्फ़ुस में रुकावट से मौत का बाइस भी बन सकता है। मगर ऐसा आम तौर पर नहीं होता। इसका इलाज यह है कि डंग को खुरच कर निकाल दिया जाए और हिस्सासियत का इलाज

किया जाए।

मक्खियां धुएं से डरती हैं। इनको सुखाकर पीस कर होम्योपैथिक तरीका इलाज में मुख़्तलिफ़ बीमारियों में इस्तेमाल करते हैं। तिब्बे जदीद में मक्खी के डंक का एमलेशन बनकर FORAPIN के नाम से बाज़ार में मिलता है। इसको लगाने से जलन होती है। मगर यह गंज पर बाल उगाने और जोड़ों के दर्दों में बड़ा मुफ़ीद है।

जदीद मुशाहिदात:

शहद एक मुकम्मल गिज़ा और क़ाबिले एतिमाद दवा है। इसमें कुदरत ने मुख़्तलिफ़ अज्ज़ा को इस ख़ूबसूरती से तर्तीब दिया है कि दुनिया की किसी भी बीमारी में इसे इस्तेमाल करना नुक़सान का बाइस नहीं होता। ज़ियाबेत्स के मरीज़ों को मिठास की मुमानिअ़त होती है। शहद मीठा है मगर इसके बावजूद शुगर की बीमारी में मुज़िर नहीं। चूंकि इसमें ग्लूकोज़ और चीनी नहीं होती और अगर हों भी तो उनके साथ मक्खियों के मुंह से निकलने वाले जौहर शामिल होते हैं इसलिए वह जिस्म में जाकर किसी ख़राबी का बाइस नहीं बनते। एक पाकिस्तानी सियासतदां को ज़ियाबेत्स की बीमारी थी। वह सालाना पड़ताल और इलाज के लिए न्यूयार्क पॉली क्लीनिक में दाख़िल हुए। उनको बीस दिन ज़ेरे मुशाहिदा रखने के बाद डाक्टरों ने अशयाए ख़ुर्दोनोश की एक फ़हरिस्त तैयार करके दी कि अगर वह इस फ़हरिस्त के अंदर रहेंगे तो उनकी बीमारी क़ाबू में रहेगी। उस फ़हरिस्त में किसी क़िस्म की मिठास शामिल न थी। उन्होंने डाक्रों से पूछा कि अगर वह चाए, दूध दही को मीठा करने के लिए सकरीन के बजाए शहद डाल लिया करें तो कैसा रहे? डाक्टरों ने इस अमल की शदीद मुख़ालफ़त की तो उन्होंने उनको बताया कि वह इस सारे अर्से में रोज़ाना छः बड़े चम्मच शहद पीते रहे हैं और शहद की इतनी माकूल मिक़दार के बावजूद उनके पेशाब और ख़ून में शकर की मिक़दार बढ़ न सकी। डाक्टरों को बताया गया कि कुरआन ने शहद को शिफ़ा बताया है और इससे नुक़सान का सवाल ही पैदा नहीं होता।

हमने अपने ज़ाती मुशाहिदे में सैंकड़ों मरीज़ों को शहद पिलाया। बाज़ मरीज़ों में ख़ून में शकर की मिक़दार पहले दो तीन दिन गड़बड़ रही। मगर उसके बाद इसमें कमी आ गई।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उसूले इलाज यह है कि वह अकसर अदविया को किसी मिलावट के बग़ैर नहारमुंह देना पसंद फ़रमाते थे। इस तर्कीब पर इनको इतना एतिमाद था कि सुबह--सुबह शहद पीने वालों को हर ख़ातरनाक बीमारी से मामून रहने का मज़दा सुनाया। इस उसूल को हमने जिस्मानी कमज़ोरी इस्हाल, आंतों की सोज़िश और मेदे के अलसर में इस्तेमाल किया। अलसर और अत्तहाबे मेदा के मरीज़ों में नींद से बेदार होने के बाद तकलीफ़ ज़्यादा होती है। उस वक़्त इनको जब शहद पिलाया गया तो पंद्रह से बीस दिन में अकसर अलामात जाती रहीं।

सतरह दिन के एक बच्चे को बार बार कै हो रही थी। हस्पताल वालों ने मेदे के मुंह की रुकावट तशख़ीस करके ऑपरेशन तजवीज़ किया। इस बच्चे को ऑपरेशन से दो दिन पहले उबले पानी में शहद मिलाकर दिन में पांच–छः मर्तबा थोड़ा–थोड़ा पिला गया। इतने मुख़्तसर अर्से में पेट ठीक हो गया और ऑपरेशन की ज़रूरत न पड़ी।

फोड़े फुंसियों बल्कि शबे चिराग़ (carbuncle) का सबसे बड़ा सबब कुव्वते मुदाफ़िअत की कमी होती है। अतिब्बा क़दीम इसे जिगर की ख़राबी क़रार देते थे और हाल ही में स्वीडन के एक तिब्बी इदारे ने तहक़ीक़ात के बाद इनकशाफ़ किया है कि जिन को बार–बार फुंसियां निकलती हैं। उनके जिगर का फ़ेएल दुरुस्त नहीं होता। उसकी रौशनी में फोड़े–फुंसियों बल्कि ऐसे नौजवानों को जिनके चहरों पर कील और मुहासे निकल रहे थे ऐसे औक़ात में जब उनका पेट ख़ाली हो दिन में चार से छः बड़े चम्मच शहद पानी में घोल कर पिलाया गया। जहां कमज़ोरी ज़्यादा नज़र आए वहां नाश्ते में जौ का दलिया या दो औंस पनीर शामिल कर दिया गया। अकसर मरीज़ एक हफ़्ते में बेहतर हो गए।

इम्राज़े बतनः

मेदा और आंतों के अलसर का जदीद इलाज दो से पांच साल तक किया जाता है। इलाज में ऐसी अदविया भी इस्तेमाल होती हैं जिनके आसाबी निज़ाम और ज़हन पर मुज़अफ़ असरात होते हैं। इलाज की वजह से मरीज़ कुंद ज़हन और सुस्त हो जाता है। बेहतरीन इलाज के बावजूद अकसर अल्सर आहिस्ता–आहिस्ता सरतान में तब्दील हो कर या जिर्याने ख़ून की वजह से मौत का बाइस बनते हैं।

इन मरीज़ों को तिब्बे नबवी सल्ल॰ की रौशनी में सुबह उठते ही दो बड़े चम्मच शहद का शर्बत, नाश्ते में जौ का दलिया शहद डाल कर और अस्र के वक़्त शहद का शर्बत दिया गया। अकसरियत के लिए इतना इलाज ही काफ़ी हो गया। जहां तकलीफ़ और कमज़ोरी ज़्यादा थी वहां बही दाना का लुआब निकालकर इसमें शहद मिलाकर हर दो घंटे के बाद घूंट–घूंट पिलाया गया। अल्लाह के फ़ज़्ल से कभी नाकामी न हुई। चूंकि ज़ैतून का तेल भी ज़ख़्मों को मुंदमिल करने और पेट की तेज़ाबियत को मारने की सलाहियत रखता है इसलिए दिन के ग्यारह बजे और रात सोते वक़्त एक से तीन बड़े चम्मच ज़ैतून का तेल भी दिया गया। सात साल के अर्से में ऐसा सिर्फ़ एक मरीज़ देखने में आया जिसे फ़ाएदा न हुआ। वरना अलसर की हर क़िस्म एक से दो माह में ठीक हो गई। अलबत्ता एहतियात के तौर पर नहारमुंह का शहद और सोते वक़्त का ज़ैतून छः माह मज़ीद ज़ारी रखा गया। नहारमुंह शहद पीने से पुरानी क़ब्ज़ ठीक हो जाती है। खट्टे डकार आने बंद हो जाते हैं और अगर पेट में हवा भर जाती हो तो वह निकल जाती है।

इमराज़े जिगर और यर्क़ान

जिगर और पित्ते की ख़राबियां और वाएरस की वजह से सोज़िश यर्क़ान का बाइस होते हैं। शराब नोशी की वजह से जिगर ख़राब हो जाता है। यही ख़राबी

इस्तस्क़ा और CIRRHOSIS की वजह से मौत का बाइस बन जाती है। गंदे औज़ारों से टीके लगवाने के बाद अकसर लोग यर्क़ान का शिकर हो जाते हैं। जदीद इलाज में मरीज़ को लहमियाम ईमूनियाई तिर्शे और ग्लूकोज़ का महलूल देते जाते हैं। यह एक आम मरीज़ के तंदरुस्त होने और यर्क़ान दूर होने में तक़रीबन तीन माह लगते हैं।

ऐसे तमाम मरीज़ों को उबले हुए पानी या बारिश के पानी में शहद दिया गया। शहद की मिक़दार बीमारी की शिद्दत के मुताबिक़ बढ़ाई गई एक औलम्पिक खिलाड़ी यर्क़ान की वजह से टीम से ख़ारिज हो रहा था। उसने एक हफ़्ते में दो किलो शहद पिया और तंदरुसत हो गया और खेलों में पूरी तवानाई के साथ शरीक हुआ।

अतिब्बा क़दीम ने अफ़्यून, पोस्त और भंग के नशे को ज़ाइल करने के लिए गर्म पानी में शहद मुफ़ीद बताया है। शहद पीने वालों को दूसरों की निस्बत नशा वैसे भी कम चढ़ता है। क्यूंकि शहद जिगर के फअ़्स को बेदार रखता है और पूरी तुंदही से जिस्म में दाख़िल होने वाली ज़हरों को ख़त्म कर देता है। शहद पीने से जिस्म पर होने वाले सम्याई असरात ज़ाइल हो जाते हैं।

इम्राज़ुल बोलः

गुर्दों में सोजिश बराहे रास्त नहीं होती। आम तौर पर गले की मुसलसल ख़राबी या किसी और मक़ाम पर सोजिश की वजह से जरासीम गुर्दों तक आते हैं सोजिश के अलावा गुर्दों की दूसरी बीमारियां पेट की ख़राबी, गिज़ा में आग्सलेट और यूरिट वाले मुरक्किबात की कसरत, पानी की कमी, पेशाब को रोके रखना, विटामिन आई की मुसलसल कमी और पेशाब की नाली में बदचलनी से होने वाली जिंसी बीमारियां और पथरी हैं। हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से तिब्बे नबवी सल्ल० में इनसे हर बीमारी का हत्मी और यक़ीनी इलाज मौजूद है। इम्राज़े गुर्दा के बारे में उसूले इलाज हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० की रिवायत से मयस्सर है।

ان الخاصرة عرق الكلية اذاتحرک اذى صاحبها فداوها بالماء المحرق والعسل.

इस हदीसे मुबारका के मुताबिक़ गुर्दा और इसके ख़ाज़िरा की बीमारियों के इलाज में उबले हुए पानी के साथ शहद तज्वीज़ फ़रमाया गया। गुर्दों में सोजिश के अलावा बाज़ दीगर असबाब की बिना पर एक कैफ़ियत HYDRONEPHROSIS अकसर हो जाती है। इसमें ख़सरा फैल जाता है। यह फैलाओ गुर्दे से पेशाब के इख़राज में रुकावट या पाएरीया सोज़िश की वजह से होता है। इन तमाम हालतों में मरीज़ को उबले पानी में शहद मिलाकर दिन में कई बार पिलाया जाए तो इससे गुर्दे की सोज़िश में कमी आती है। आग्सलेट या यूरेट के ज़र्रे फंसे हों तो निकल जाते हैं और गूर्दे का फैलाओ कम होने लगता है। अगर्चे शहद में जरासीम कुश अनासिर मौजूद हैं और सिर्फ़ इसी का इस्तेमाल भी सोजिश को ख़त्म करने के लिए काफ़ी है। अलबत्ता इसकी फ़आलियत में इज़ाफ़ा के लिए क़िस्तुल बहरी दी जा सकती है। क्यूंकि इसका

दाफ़े तअ़फ़्फ़ुन और जरासीम कुश होना अब जदीद तहक़ीक़ात से भी साबित हो चुका है। क़िस्त, हिंदबा, ज़रीरा, कलौंजी, अस्सफ़ा में से हर एक जरासीमकुश और गुर्दे से पथरी को निकालता है। अंजीर पथरी के अलावा आग्सलेट और यूरेट निकाल सकती है। इन तमाम चीज़ों को हालात के मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ सूरतों में शहद के साथ देना गुर्दों के अकसरो बेशतर मसाइल का हल है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जौ को मुख़्तलिफ़ सूरतों में इस्तेमाल फ़रमाया। अतिब्बा जदीद एक अर्से से बुख़ार के मरीज़ों को जौ का पानी पिलाते आए हैं। हमने इस पानी में जब शहद शामिल किया तो उसकी उफ़ादियत इम्राज़ुलबोल में और नुमायां हो गई। पेशाब लाने, तेज़ाबियत को दूर करने और अक़सर औक़ात अफ़्नत को दूर करने में शहद और जौ के पानी से बेहतर कोई चीज़ नहीं। वह मरीज़ जो पेशाब आवर मिक्सचर पीते आए हैं चार दिन यह पानी पीने के बाद इसके मद्दाह बन गए। शहद के साथ जौ का मुसलसल इस्तेमाल सोज़िश के अलावा पथरी भी निकाल सकता है।

इम्राज़े तनफ़्फ़ुस में शहदः

गले से ले कर फेफड़ों तक की तमाम सोज़िशों में गर्म पानी में शहद अक्सीर का हुक्म रखता है। इस बाब में नदकारनी रक़मतराज़ है।

> "बुढ़ापे में तीन अहम मसाइल होते हैं। जिस्मानी कमज़ोरी, बलग़म और जोड़ो का दर्द। इत्तिफ़ाक़ से शहद के इस्तेमाल से यह तीनों मसाइल आसानी से हल हो जाते हैं।

खांसी और गले की सोज़िश में अगर्चे शहद के ग़रारे भी मुफ़ीद हैं मगर एक काम की चीज़ को ज़ाया करने के बजाए उसे गर्म-गर्म और घूंट-घूंट पिया जाए तो नालियों के आख़री सिरे तक असर अंदाज़ होता है। इन्फ़्लुइंज़ा आज भी लाइलाज बीमारियों में से है। आमतौर पर इसमें शिफ़ा दस दिन से पहले नहीं होती और तंदरुस्त होने के बावजूद मरीज़ को कमज़ोरी इतनी होती है कि वह चारपाई से उठ नहीं सकता। ऐसे मरीज़ों को अलालत के दौरान जब 1-2 बड़े चम्मच शहद दिन में तीन चार मर्तबा पिलाया गया तो अर्सा अलालत सिमट कर तीन से चार दिन रह गया और तंदरुस्ती के बाद कमज़ोरी बिल्कुल न हुई। इस तजुर्बे का हौसला हमें बर्तानिया के एक मुअक़्क़र तिब्बी रिसाला "LANCET" से हुआ जिसमें डाक्टर जी डब्ल्यू टाम्स अपने मुशाहिदे में लिखते हैं।

> "नमूनिया के एक मरीज़ पर जरासीम कुश अदविया का असर नहीं हो रहा था। उसे एक हफ़्ते में एक किलो शहद पिलाया गया। जिससे बुख़ार भी जल्द टूट गया और मरीज़ को भी बाद में कोई पेचीदगी न हुई।"

> दमे के मरीज़ों में नालियों की घुटन को दूर करने और बलग़म निकालने के लिए गर्म पानी में शहद से बेहतर कोई दवाई नहीं। मरीज़ों को बताया गया कि वह दौरे की सूरत में उबलता पानी ले कर इसमें चम्मच भर शहद मिलाकर बार-बार पिएं अक्सरो बेशतर मरीज़ों का दौरा इसी से ख़त्म हो गया। मज़ीद इलाज की ज़रूरत

न पड़ी।

इब्नुलक़य्युम रह0 ने शहद में बही का मुरब्बा बनाने की जो तर्कीब बताई है। उसके और इन्ही के खांसी के इलाज में अंजीर वग़ैरह के साथ मजरूह बलग़म नुस्ख़ों से शांदार नताइज हासिल होते हैं।

तपे दिक़ के मरीज़ों के लिए बारगाहे रिसालत से ज़ैतून का तेल और क़िस्त का हदिया मयस्सर है। अगर क़िस्त को ज़ैतून के तेल में मिलाने के बाद इसमें शहद मिलाकर माजून बनाई जाए तो इसकी उफ़ादियत में इज़ाफ़ा हो जाता है। तपे दिक़ के इलाज में एक अहम ज़रूरत मरीज़ की कमज़ोरी को दूर करना और इसकी कुव्वते मुदाफ़िअत को बढ़ाना है। इस ग़र्ज़ के लिए गर्म पानी में 2 बड़े चम्मच शहद नहार मुंह और अस्र के वक़्त उसे तवानाई मुहैया करते हैं और उसकी सांस की नालियों के वरम में भी मुफ़ीद हैं।

जिस्मानी कमज़ोरी और शहदः

कुरआन मजीद ने फ़वाइद हासिल करने के लिए एक बड़े पते की बात बताई है।

لقد كان لكم فى رسول الله اسوة حسنة

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी का मुताला करें तो हमें मालूम होता है कि वह हर सुबह शहद के शर्बत का प्याला नोश फ़रमाते हैं और कभी यह शर्बत नमाज़े अस्र के बाद पसंद फ़रमाया जाता है और इसका असर यह हुआ कि वह अपनी पूरी ज़िंदगी में न तो कभी बीमार पड़े और न ही कभी थकन का इज़हार फ़रमाया। उनकी ज़िंदगी से यह सबक़ हमारे अकसर मसाइल का हल है। इन औक़ात में जब पेट ख़ाली हो और आंतों की कुव्वते अज्ज़ाब दूसरी चीज़ों से मुतास्सिर न हो शहद पीना जिस्म के अकसरो बेशतर मसाइल का हल है। यह किसी भी हालते बीमारी और सूरत में बेखटक पिया जा सकता है।

अकसर लोग जिस्मानी और ज़हनी थकावट को दूर करने के लिए मुख़तलिफ़ किस्म के कुश्ता माउल्लहम या टॉनिक तलाश करते हैं। यह अम्र किसी शको–शुबे के बग़ैर हक़ीक़त है कि शहद से बढ़ कर थकावट, पसमुर्दगी और कमज़ोरी को दूर करने वाली चीज़ आज तक इस तख़्तए ज़मीन पर मयस्सर नहीं आ सकी। इम्तिहान के दिनों में तालिबे इल्मों को शहद पिला कर देखा गया इससे वह ज़्यादा देर तक पढ़ सके और उनकी याद्दाश्त एतिदाल से बहतर रही। दिल के मरीज़ों को इसे पीने के दौरान दौरे नहीं पड़े। आपरेशन और अलालत के बाद की कमज़ोरी के लिए शहद एक बेहतरीन इंतिख़ाब रहा है।

हालात अगर ज़्यादा ख़राब हों तो चीन के साख़्ता PEKING ROYAL JELLY के टीके मरीज़ों को अस्र के वक़्त पिलाए गए। एक दाइमुल मरीज़ मुअम्मर ख़ातून ने तीन टीके पीने के बाद बताया कि यूं मालूम होता है कि जैसे किसी ने तन–बदन में नई रूह फूंक दी है और मेरी आंखों में अब चमक आ गई है।

यह एक तारीख़ी हक़ीक़त है कि दुनिया के मशहूर पहलवान हरकोलिस और गोलाइस्थ अपनी तवानापई को बढ़ाने के लिए शहद पीते थे। मशहूर भारती

सेंडूराम मूर्ति की ताक़त का मंबा भी शहद था।

उस्दाद मुहम्मद फ़राज़ुद्दीन क़रमसरी ने शहद के उफ़ादात के बारे में एक तारीफ़ "العسل فيه شفاءٌ للناس" शाया की है जिसमें उन्होंने अपने बाज़ मुफ़ीद तजुर्बात बयान किए हैं मसलन।

ज़ैतून का तेल और शहद मिलकर इसमें लीमूं का अर्क़ मिलाकर गुर्दे की पथरी के लिए बहुत मुफ़ीद है। शदीद ज़ुकाम में गर्म पानी में शहद हल करके इसमें लीमू निचोड़ कर पिलाएं।

इनके एक और नुसख़े के मुताबिक़ एक ग्राम सुहागा या बोरिक एसिड, अध ग्राम गिलिसरीन और आठ ड्राम शहद मिलाकर खांसी और बुख़ार में दिन में चार मर्तबा बड़ा चम्मच पिलाएं।

तिब्बे नब्वी सल्ल0 के मशहूर मुरत्तिब अली अलाउद्दीन अल्कुहाल ने शहद को इस्हाल के अलावा ग़िज़ाई समीत यानी FOOD POISONING में मुफ़ीद क़रार दिया है।

मिस्री तबीब दिक्तोर ग़ज़ा मुरीदन ने अपनी किताबुल अदविया में इसे जय्यद ग़िज़ा एक मुलय्यन दवाई ओर तबीअत में लताफ़त पैदा करने वाला क़रार दिया है।

उस्ताद मुहम्मद फ़राज़ अद्दक़र ने अपने मुक़द्दिमा الاستشفاء بالعسل في امراض جهاز الهضم में इसे अम्राज़े बतन के लिए अक्सीर क़रार दिया है।

बैरूनी इस्तेमाल:

शहद में आटा मिलाकर फोड़ों को पकाने के लिए वैद इसे मर्हम की सूरत लगाते हैं। यह तरीक़ा दुरुस्त नहीं। क्यूंकि मरीज़ को अगर शहद पिलाया जाए और वही फोड़ों पर लगाया जाए तो अक्सर फोड़े पकने की बजाए वहीं ख़त्म हो जाएंगे।

गले की सोज़िश के लिए गर्म पानी में शहद के ग़रारे और फुरेरी से शहद लगाना मुफ़ीद है। मोच, पट्ठों की अकड़न और जोड़ों पर चोट के इलाज में पाकिस्तान के पुराने पहलवान मुतास्सिरा हिस्से पर पहले पान वाले चूने का लेप करके इसके ऊपर शहद का लेप करके रूई रख कर पट्टी बांध दिया करते थे। इस लेप से जोड़ों के यह अवारिज़ दो से चार दिन में ठीक हो जाते थे। जिसका हमने ज़ाती तौर पर मुशाहिदा किया है और कोई भी जदीद दवाई पट्ठों और जोड़ों की ऐंठन को इतनी आसानी और जल्दी से दुरुस्त करने वाली अभी तक देखी नहीं गई।

वैदिक तिब में शहद और घी का आमीज़ा जले हुए ज़ख़्मों के लिए मुफ़ीद बताया गया है। जब घी की बजाए उसे रोग़ने ज़ैतून में हम वज़न मिलाया गया तो फ़वाइद और बहतर हो गए। हाथों पर अगर चिकनाई और मशीनों की सियाही जमी हुई हो तो उन पर शहद मल कर धोने से तमाम दाग़ फ़ौरन छूट जाते हैं।

दांतो से मैल और तम्बाकू का लाखा उतारना एक मुश्किल काम है। इस ग़र्ज़ के लिए इम्राज़े इसनान के मुआलजीन के पास कई रोज़ जाना पड़ता है। एक

नुस्ख़े के मुताबिक सिरका और शहद हम वज़न मिलाकर दांतों पर मंजन करें तो दाग़ उतर जाते हैं और मसूढ़ों की सोज़िश जाती रहती है। नदकारनी ने पिसा हुआ कोएला और शहद मिलाकर मंजन तज्वीज़ किया है जबकि उम्मतुल्लतीफ़ ताहिरा साहिबा ने आम कोएले के बजाए बादाम के छिल्कों को जला कर शहद ओर सिरके में मिलकर लगाया तो दूसरे तमाम नुस्ख़ों से ज़्यादा मुफ़ीद पाया। उन्होंने बादाम की राख क़ी जगह खजूर की गुठली की राख को और ज़्यादा मुफ़ीद क़रार दिया है।

शहद—होम्योपैथिक तरीक़ा इलाज में:

माहिरीन तिब ने शहद के साथ ख़ुर्दनी नमक मिलाकर अपने तरीक़े से एक मुरक्कब तैयार किया है जिसका नाम HONEY CUM SALT है और इस्तेमाल में 30 से 60 की पोटेंसी में इस्तेमाल होता है।

इसके इस्तेमाल का सही मौक़ा वह है जब ज़चगी के बाद रहम अपनी असली हालत में लौट कर न आए और रहम में सोज़िश के साथ उसके मुंह पर सूजन हो जाए। इसको देने की ख़सूसी अलामत यह हैं कि पस्लियों के नीचे पेट के बालाई हिस्से में एक कोने से दूसरे कोने तक जलन और बोझ महसूस हो। रहम हपनी जगह से टल गया हो, फ़ोतों और उनके ऊपर की हड्डी में दर्द की लहरें उठें की जैसे पेशाब की नालियों में दर्द हो रहा हो। इन अलामात के इलाज में यह मुरक्कब मुफ़ीद है।

शहद जरासीम को मार देता है
इल्मुल अदविया में इन्क़लाबी ईजाद

जर्मनी में हाल ही में एक दवाई NORDISK PROPOLIS के नाम से तैयार हुई है। जो कैप्सूल, दानेदार शर्बत और मरहम की सूरत में बिर्लिन की SANHELIOS कम्पनी ने तहक़ीक़ात के बाद मार्किट में पेश किए हैं इसके असरात के बारे में मालूम हुआ है लि डनमार्क के प्रोफ़ेसर लुंड के इनकेशाफ़ और दुनिया के दूसरे मुल्कों में मुहक़्क़ीन ने यह पता चलाया है कि शहद में एक जरासीम कुश अंसर PROPOLIS के ना से मौजूद है। लेबारेट्री तजुर्बात के मुताबिक़ यह पीप और सोज़िश पैदा करने वाले जरासीम को हलाक क़रने की इस्तेअ़दाद दूसरी तमाम अदविया से ज़्यादा रखने के अलावा जिस्म की कुव्वते मुदाफ़िअत में इज़ाफ़ा भी करता है।

मुख़्तलिफ़ लेबारेट्रियों में मुशाहिदात के मुताबिक़ इसे नाक, कान, गला, आलाम इनहज़ाम, निज़ामे तनफ़्फ़ुस और आअसाब की हर क़िस्म की सोज़िशों में किसी भी दवाई से ज़्यादा मुफ़ीद पाया गया।

यह वह मुन्फ़रिद दवाई है जो वाएरस को भी हलाक कर सकती है। फ्लोइंज़ा और ज़ुकाम में इससे न सिर्फ़ यह कि मरीज़ तंदरुस्त हो गए बल्कि इसने झीलों की जलन को फ़ौरन दूर कर दिय।

लंदन के मज़ाफ़ात में कैंट से बर्तानवी अख़बारात ने बताया है जोड़ों की बीमारियों के सैकड़ों पुराने मरीज़ परोपाल्स के इस्तेमाल से शिफ़ायाब हो गए।

शहद की मक्खी ...... अन्न्हल

APIS MELIFICA

इल्मुल हैवानात के बाज़ माहिर अब इसे एक नए नाम APIS MELIFICA से भी पुकारते हैं। शहद की मक्खी अपना घर बनाने और वहां पर ख़ुराक का ज़ख़ीरा क़रने के सिलसिले में जो जद्दोजहद करती है उसका सब से बड़ा फ़ाएदा इन्सानों को हासिल होता है। इसी उफ़ादियत को सामने रख कर अल्लाह तआला ने शहद की मक्खी को इतनी अहमियत दी कि कुरआन मजीद में एक सूरह इसके नाम से मौसूम की गई और इसकी कारगुज़ारी की तशरीह में फ़रमाया:

واوحي ابک الی النحل ان اتخذی من الجبال بیوتاً ومن الشجر مما یعرشون. ثم کلی من کل الثمرات فاسلکی سبل ربک ذللاً یخرج من بطونها شرابٌ مختلف الوانه فیه شفاءٌ للناس. ان فی ذالک لأیة لقوم یتفکرون (النحل)

(तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर वही भेजी कि वह पहाड़ों, दरख़्तों और दूसरी बुलंदियों पर अपना ठिकाना बनाए। फिर हर क़िस्म के फलों से ख़ुराक हासिल करके अपने रब के मुतअय्यन करदह असलूब पर गामज़न रहे। इनके पेटों से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की रतूबतें निकलती हैं। जिनमें लोगों के लिए शिफ़ा है। यह अल्लाह की तरफ़ से ऐसी निशानियाँ हैं जिन पर लोगों को ग़ौर करना चाहिए।

शहद की मक्खी की आदात और ज़िंदगी के अस्लूब इससे हासिल होने वाले जोहरों का ज़िक्र करते हुए कुरआन मजीद ने यह बताया है कि मक्खी की आदात और पेट से ख़ारिज होने वाली रतूबतों के अलावा तुम्हारे ग़ोर करने की और भी बातें मौजूद हैं। तुम जब इनका मुताला और तहक़ीक़ करोगे तो तुम्हें काम की और भी बातें मिलेंगी।

कुरआन मजीद की इन आयात के बाद शहद के अलावा मक्खी की आदात का मुताला ज़रूरी हो जाता है। मक्खी हर क़िस्म के दरजए हरारत में ज़िंदा रह सकती है। यह 120^{o}F पर अपना रोजमर्रा का काम करती हैं और 5—F तक की सर्दी बर्दाश्त कर सकती हैं यह अपने घर को इस कमाले फ़न के साथ बनाती हैं कि अंदर का दरजए हरारत 93^{o}F रहता है। अगर हम इनसे यह इल्म सीख लें तो किसी इज़ाफ़ी मसारिफ़ के बग़ैर अपने घरों को एक क़ाबिले क़बूल दरजए हरारत पर रख सकते हैं

मक्खी अपना रिज़्क़ हासिल करने के लिए फूलों की जड़ से माउल हयात तलाश करती है। जिसमें इब्तिदाई तौर पर 50—80 फ़ीसदी पानी होता है। इसे छत्ते में लाकर जब यह शहद में तब्दील करती है तो पानी की मिक़दार 18 फ़ीसदी के क़रीब रह जाती है। इसके पास एक ऐसा तरीक़ा है जिससे यह नमी को कम कर सकती है। मौसम गर्मा में कराची और ख़लीज अरब में रहने वाले लोग गर्मी से इतने परेशान नहीं होते जितनी तकलीफ़ हवा में नमी की ज़्यादती

की वजह से होती है। अगर हम मक्खी से नमी कम करने का तरीक़ा सीख लें तो उन मक़ामात के रहने वाले सुख का सांस लें।

छत्ते के हर ख़ाने में एक अंडा होता है। अगर्चे छत्ते पर मलिका हुक्मरां होती है। लेकिन ज़रूरत पड़ने पर नई मलिका बनाई जा सकती है। मौसमी ज़रूरयात के तहत रस मलिकाएं भी बुन सकती हैं और हालात साज़गार न हों तो एक के अलावा बाक़ियों को ख़त्म भी कर दिया जाता है। छत्ते की आबादी बढ़ने या मुवाफ़िक़ हालात होने पर गशती अमला नया मुसतक़िर तलाश करता है। नए घर की मंजूरी होने पर मलका बीस हज़ार मक्खियां लेकर नक़्ले मकानी कर जाती है। मगर अपना शहद साथ ले जाती हैं। फूलों के तौलीदी दाने फैलाना इसकी इज़ाफ़ी ख़िदमत है। मगर दानों की कुछ मिक़दार यह अपने छत्ते में भी ले जाती है जो कारकुन मक्खियों की गिज़ा में लहमियात की ज़रूरत को पूरा करते हैं। छत्तों की आबादी पूरी मंसूबाबंदी से मुतअय्यन की जाती है। आम कारकुन की ज़िंदगी 45 दिन से कम जाती है जबकि मलिका साल भर की उम्र पाती है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शहद की मक्खी को मारने को मना फ़रमाया है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

हकीम नजमुल ग़नी ख़ां राम पुरी ने शहद की मक्खी की आदात और अमली ज़िंदगी पर "ख़ज़ाइनुल अदविया" में एक मब्सूत मक़ाला तहरीर किया है। उन्होंने पोलन के दानों को फूलों का ज़ीरा क़रार दिया है।

"ज़ादुल मुसाफ़िर" में शेख़ अबू जाफ़र अहमद ने लिखा है कि शहद की मक्खी के बे पर बच्चों को लेकर इनको सुखा लें। तीन माशा सूखे हुए बच्चे हम वज़न गंदम के आटे में मिलाकर इसमें डेढ़ तोला चीनी शामिल करें और इसमें पानी डाल कर फ़ालूदा बनाएं यह फ़ालूदा रोज़ाना पीने से जिस्म में ताक़त आ जाती है।

शहद की मक्खी को सुखाकर तेल में पका कर छानने के बाद इस तेल से दर्दों में मालिश की जाती है। इसमें तलनी मक्खी का जौहर और दूसरी अदविया जिंसी कमज़ोरी के लिए तिला भी बनाए जाते हैं। ऐसे नुसख़ों के अकसर अज्ज़ा ख़तरनाक होते हैं जिनका इस्तेमाल मुज़िर है।

जदीद मुशाहिदात:

शहद की मक्खी का डंग निकाल कर इसका महलूल एक जर्मन फ़र्म तैय्यार करती थी यह पाकिस्तान में भी FORAPIN के नाम से फ़रोख़्त होता रहा। यह महलूल जोड़ों की सोज़िश, गंठिया और नुक़रस में बड़ा मुफ़ीद था। लगाने का तरीक़ा यह था कि मुतास्सिरा हिस्से पर इसका खुला-खुला लेप कर दिया जाए। सात-आठ मिनट के बाद खाल जलने लगे तो उसे धो कर उतार दिया जाए। यह अमल दौराने ख़ून में इज़ाफ़े का बाइस होता है। इस तर्कीब को हमने गंजों के बाल उगाने के लिए इस्तेमाल किया। बाल गिरने के दर्जनों असबाब हैं इनमें से एक सबब यह है कि जब कोई ज़्यादा दिमाग़ी काम करता है तो उसके जिस्म

का सारा ख़ून दिमाग़ की सिम्त चला जाता है और खोपड़ी की जिल्द ख़ून की कमी का शिकार हो जाती है और इससे बाल गिरने लगते हैं। इस सबब के इलाज के लिए जब शहद की मक्खियों के ज़हर का महलूल लगाया गया तो दौराने खून में इज़ाफ़ा हुआ और बाल गिरने रुक गए। बाज़ मरीज़ों में नए बाल भी आ गए।

होम्यो पैथिक तरीक़ा इलाज:

होम्यो पैथिक तरीक़ा इलाज में शहद की मक्खी को गिलिसरीन में एक ख़ास तरीक़े से हल करके एक दवाई "Apis Melifica" नाम की तैयार की जाती है। दवाई का नाम मक्खी के अपने सांइसी नाम पर हैं माहिरीन का कहना है कि वह तमाम इमराज़ जिनमें अलामात ऐसी हों जैसे कि मक्खी ने डंग मारा है, में यह दवाई मुफ़ीद होगी। मिसाल के तौर पर वरम सुर्ख़ रंग की सूजन, वरम वाली जगह को हाथ लगाएं तो हस्ससियत ज़्यादा और मामूली लम्स से भी दर्द हो जो कि सेह पहर को बढ़ जाए। सारे जिस्म पर सूजन और इसमें पानी तैर जाए पेट में पानी पड़ा हो। गुर्दों में सोज़िश, नख़ाई झिल्लियों में सोज़िश और झिल्लियों से सेलान, दिमाग़ की झिल्लियों की सोजिश जो तपेदिक़ के सरसाम से मिलती जुल्ती है। हाफ़िज़े की कमज़ोरी। दूसरों से हसद, थकावट, बेज़ारी, बच्चों में सर का बढ़ जाना या इसमें पानी पड़ना (HYDROCEPHALUS) आंखों में थकन और दर्द, आंखों का फड़फड़ाना। आंखों के नीचे सोज़िश, नाक और कान सुर्ख़ हो जाते है। चेहरा सूज जाता हो। नींद में दांत पीसने की आदत, मुंह और ज़बान ख़ुश्क, पेट में जलन मगर प्यास की कमी, पतले दस्त आए हों जिनका रंग सियाही माइल या सफ़ेद हो सकता है। (हैज़े की तरह) मुक़अद के इर्द–गिर्द जलन, गुर्दों में दर्द, पेशाब कम आता है मगर जलन से माहवारी बंद हो जाती है। रहम में सोज़िश हो सकती है। जिंसी ख़्वाहिश बढ़ जाती है। मगर जिस्म में उमूमी तौर पर शदीद कमज़ोरी होती है।

शहद का जौहर

कुरआन मजीद ने शहद में शिफ़ा देने वाले अंसर के बारे में फ़रमाया।

,,يخرج من بطونها شرابٌ مختلفٌ الوانه. فيه شفاءٌ للناس.

(इनके पेटों से मुख़्तलिफ़ रंग और शक्ल के सयाल निकलते हैं। जिनमें लोगों के लिए शिफ़ा है।)

कुरआन मजीद इस अम्र की निशानदही करता है कि शहद की मक्खी के पेट से मुख़्तलिफ़ किस्म की रतूबतें ख़ारिज होती हैं। जिनको इल्मे तिब्ब में ENZYMES कहते हैं यह जौहर मुख़्तलिफ़ इमराज़ के इलाज में मुफ़ीद है। इस आयत का मफ़हूम तब मालूम हुआ जब जर्मन कीमिया दानों ने शहद से ROYAL JELLY नाम का अंसर अलाहिदा कर लिया। इस इनकशाफ़ ने कुरआन मजीद की सदाक़त और उफ़ादियत को वाज़ेह कर दिया। अब इस आयत से मुराद शहद नहीं बल्कि वह अलाहिदा जौहर हैं जो मक्खी के पेट से पैदा होते हैं। क्यूंकि शिफ़ा का असल मंबा वह हैं।

इस जौहर को रायल जेली का नाम इसलिए दिया गया कि छत्ते में बच्चे सिर्फ़ मलिका देती है। इसके शहज़ादों की परवरिश जिस ख़ुराक पर होती है वह शाही ख़ुराक ठहरी और इस मुनासिबत से सयाल का नाम "रायल जेली" क़रार पाया। दुनिया में जितने भी चरिंद और परिंद हैं उनके बच्चे जब पैदा होते हैं तो उनका वज़न जितना भी हो बालिग़ होने के बाद वाले वज़न से तनासुब में होता है। मसलन इंसानों का बच्चा अगर आठ पोंड का पैदा हो और बालिग़ होने पर इसका वज़न 160 पौंड है तो मुराद यह हुई कि बच्चे का वज़न बलूग़त पर बीस गुना बढ़ा। आम हैवानात के बच्चे बीस से पच्चीस गुना बढ़ते हैं। शहद की मक्खी का बच्चा बड़ा होने पर अपने पैदाइशी वज़न से 350 गुना बढ़ता है। पूरी हैवानी दुनिया में किसी बच्चे के इतना बढ़ने की कोई मिसाल नहीं यह एक मुन्फ़रिद वाक़िया है। चूंकि उन बच्चों की ख़ुराक रायल जेली होती है। इसलिए यह लाज़मी नतीजा निकला कि रायल जेली जिस्मानी नश्वनुमा पर मुफ़ीद असरात रखती है और कमज़ोरी को दूर करती है। इन मालूमात के बाद डाक्टरों ने कमज़ोरी के मरीज़ों पर इस जौहर के वसी मुशाहिदात किए। जर्मनी में यह जौहर बोतलों और गोलियों की सूरत तैयार हुआ और हर जगह से मक़बूलियत की सनद पाई । एक जर्मन फ़र्म के तआवुन के साथ लाहौर के एक दवासाज़ इदारे ने शहद के जौहर पर मबनी एक मशरूब तैयार किया था मगर यहां के लोग इससे मुतास्सिर न हो सके और सिलसिला ख़त्म हो गया।

मौजूदा ज़माने में इस जौहर को तैय्यार करने का सबसे बड़ा मरकज़ अवामी जमहूरिया चीन है। चीन में दवासाज़ी की सनअत के इश्तराकी इदारा "पैकिंग कैमिकल एंड फ़ार्मास्यूटिकल वर्क्स" ने "पैकिंग रायल जैली" के नाम से ख़ालिस मशरूब और टीके तैयार किए हैं। तैयार करने वालों ने इसके तीन अहम फ़वाइद बयान किए हैं।

1. जब वज़न रोज़–बरोज़ कम हो रहा हो, जब भूख उड़ जाए बीमारी से उठने या ज़चगी के बाद की कमज़ोरी के लिए।
2. आम जिस्मानी कमज़ोरी, दिमाग़ी और जिस्मानी थकन और कमज़ोरी।
3. पेचीदा और पुरानी बीमारियों में जैसे कि जिगर की बीमारियां, ख़ून की कमी। वरीदों की सोज़िश और उनमें ख़ून का इंजमाद, जोड़ों की बीमारियां और गंठिया। अज़लात की इनहताती बीमारियां DEGENRATIVE DISEASES" मेअ़दा का अलसर।

एक अर्से से लाहौर के चंद दवा फ़रोश इस चीनी दवाई को जिसमें फ़ी टीका 250 मिली ग्राम रायल जैली के अलावा दो चीनी बूटियां भी शामिल हैं दरआमद कर रहे हैं। हमारे दोस्तों और मरीज़ों ने काफ़ी मिक़दार में इसे इस्तेमाल किया है। और हर शख़्स इसके कमालात का मोतरफ़ पाया गया। ख़लल आसाब के एक पुराने मरीज़ बताते हैं कि सैंकड़ों विटामिन और टॉनिक खाए लेकिन इस दवाई का एक टीका पीने के बाद यूं मालूम होता है कि जिस्म से कमज़ोरी निकल कर नई ताक़त आ गई। मयानवाली के एक दोस्त के पेट में दस साल से अलसर था उन्होंने हर क़िस्म की जदीद और क़दीम अदविया पर ज़रे कसीर सर्फ़ किया मगर बीमारी की शिद्दत में कोई कमी न आई। अब वह

चार माह से पैकिंग रायल जैली के टीके पी रहे हैं। उनका दर्द ख़त्म हो चुका है। खाना इत्मीनान से हज़्म होता है और अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी मामूल के मुताबिक़ गुज़ार रहे हैं।

कुरआन मजीद ने मक्खी के जिस्म से ख़ारिज होने वाले इस जौहर को शिफ़ा का मज़हर क़रार दिया है और दुनिया के हर गोशे से इसकी तसदीक़ मयस्सर आ रही है।

शहद के टीके:

लाहौर के एक दवा फ़रोश इदारा "शिफ़ा मेडिकोज़" ने एक मर्तबा जर्मनी से शहद के बने हुए टीके दरआमद किए। इन टीकों के बारे में दवा साज़ इदारे का दावा था कि यह जिस्म से कमज़ोरी दूर करते हैं। जिस्म से हिस्सासियत यानी ALERGY को ख़त्म करते हैं। हिस्सासियत से पैदा होने वाली जिल्दी बीमारियों ख़ास तौर पर एग्ज़ीमा में मुफ़ीद हैं जोड़ों के दर्दों में मामूली तकलीफ़ के लिए टीके गोश्त या वरीद में लगाए जाएं और अगर जोड़ सूज गए हों या जोड़ों की हड्डियां गल रही हों तो यह टीका जोड़ के अंदर लगाया जाए।

इन टीकों का नाम M-2 WOELUM उन्हें जर्मनी के शहर कोलोन की वैलम कम्पनी ने तैयार किया और दिलचस्पी की बात यह कि उन्होंने अपने तिब्बी रिसाले में बताया कि उन्होंने शहद को इस तरह इस्तेअ़माल करने का रास्ता कुरआ़न मजीद से हासिल किया।

म्यू हस्पताल में जोड़ों और हड्डियों के मुआलिज प्रोफ़ेसर मुहम्मद अय्यूब ख़ान इनके एजाज़ के बड़े क़ायल थे। हमने अपनी आंखों से जोड़ों की बीमारियों के दर्जनों माजूरों को तंदरुस्त होकर पैरों पर चलते देखा है। प्रोफ़ेसर अय्यूब ख़ान के रिटायर होने के बाद लोग नई दवाओं के पीछे भागने लगे। और यह मुफ़ीद, महफ़ूज़ और सस्ती दवा भुला दी गई। जर्मनी से डाक्टर उसामा उमर रक़मतराज़ हैं कि टीके वहां अब भी बड़े मक़बूल हैं और डाक्टर इसे बड़े एतिमाद के साथ इस्तेमाल करते हैं।

सातर-सातर

THYMUS SERPYLLUM

यह एक बूटी है जो अरब, ईरान, इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान के जंगलों में पैदा होती है। पत्ते गोल और पोदीने से बड़े होते हैं। इसकी ख़ुश्क शाख़ें और पत्ते बाज़ार में साअ़तर फ़ारसी के नाम से मिलते हैं। सर विल्यम लेन ने साअ़तर को THYMUS SERPYLLUM क़रार दिया है।

जबकि भारती माहिरीन इसे ZATARIA MULTIFLORA का नाम देते हैं। सय्यद सफ़ियुद्दीन, नदकारनी और चोपड़ा भी इसे ज़ाटारिया क़रार देते हैं। जबकि ब्रिटिश फ़ार्माकूपिया ने इसे थाई मिस सरपाइलम क़रार दिया है। होम्योपैथी में भी यही नाम दर्ज है। अतिब्बा क़दीम इसे जंगली पोदीना की क़िस्म क़रार देते है।

इरशादाते नबवी सल्ल0

सनद के बग़ैर मुहम्मद अहमद ज़हबी रह0 नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मज़्कूर किया है

بخروا البيوت بالصعتر واللبان (ابن الجوزی)

(अपने घरों को सातर और लोबान की धूनी दिया करो)

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 बिन जाफ़र रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

بخروابيوتكم بالشيخ والمر والصعتر (بیہقی شعبان الایمان)

(अपने घरों को मुरश्शह और सातर से धूनी दिया करो)

यही रिवायत अबान बिन सॉलेह बिन अनस रज़ि0 से भी इसी किताब में मज़्कूर है

(यह दोनों रिवायत कंज़ुल आमाल ने इन असनाद से बयान की हैं)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

पेट से रियाह को ख़ारिज करता है। खाने को हज़्म करता है। चेहरे के रंग को निखारता है। पेशाब आवर है, जिगर और मेदे के फ़ेएल को बेहतर बनाता है। इसका जोशांदा पीने से पेट के तमाम कीड़े मर जाते है। इसका सूंघना ज़ुकाम में मुफ़ीद है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

अतिब्बा क़दीम ने शहद की एक ख़ास क़िस्म साअ़तर का शहद भी बयान किया है जो अपने उमूमी फ़वाइद के अलावा सोज़िशी इमराज और सांद की बीमारियों में ज़्यादा मुफ़ीद है। रियाह को तहलील करता है। रतूबतों को निकालता है। रात सोते वक़्त इसको अंजीर और गुलक़ंद के साथ खाने से नाक के पिछले हिस्से से बलग़म निकल जाती है। इस तरह वह फेफड़ों में गिरने नहीं पाती। इसे शहद में मिलाकर चाटने से दिल और फेफड़ों के ओराम उतर जाते हैं। अंजीर भिगोकर नर्म करने के बाद इसके जोशांदे के साथ खाने से खांसी और दमा मिट जाते हैं। कुव्वते हाज़मा बढ़ती है। इसको बक़ूलात मसलन साग वग़ैरा में मिलाकर पकाएं तो वह रियाह पैदा नहीं करते।

इसके फूल नमक और सिर्के के साथ खाने से खांसी को फ़ाएदा होता है। पेशाब आवर है, गुर्दों की पथरी को निकाल सकता है। यह पेट से कदू दाने निकाल देता है। इसका रस कान में टपकाना सक़ल समाअत के लिए मुफ़ीद है। इसको चबाने से दांतों का दर्द ठीक हो जाता है।

इसका पानी में लेप ओराम हारा में मुफ़ीद है। इसमें ज़ीरा मिलाकर रोग़नै ज़ैतून में हर करके बच्चों को नाफ़ के ज़ख़्मों पर लगाएं लाजवाब है सर्दी से होने वाले बुख़ार को दूर करता है पसीना लाता है और औरतों के अंदाम की सोज़िश को दूर करता है।

कीम्यावी साख़्त:

इसके पत्तों में वज़न के हिसाब से तक़रीबन एक फ़ीसदी एक फ़राज़ी रौग़न होता है। इसके अलावा इसमें क़ाबिज़ अशया और गोंद पाए जाते हैं। इसका बेहतरीन जुज़्व आलमिल थाइमोल THYMOL है। यह पत्तों से अमले कशीद के ज़रिए निकाली जाती है। और यह दानेदार सफ़ूफ़ की शक्ल इख़्तियार कर लेती है और पानी में हल पज़ीर न होने की वजह से ज़्यादा मक़बूल नहीं।

जदीद मुशाहिदात:

थाईमोल को ब्रिटिश फ़ार्माकूपिया ने एक मुअस्सिर दवाई के तौर पर बयान किया है। मगर हल न हो सकने की वजह से इसके फ़वाइद महदूद हैं। लेबारेट्रियों में बतौर केमिकल इस्तेमाल होती है। आम लोग इसे सत अजवाइन के नाम से बयान करते हैं। सातर और थाईमोल पेट के कीड़े मार देते हैं।

साअतर और इसका जुज़्वे आमिल थाई मोल बड़े मुअस्सिर जरासीमकुश और दाफ़े अफ़ूनत हैं। इनमें तुफ़ैली कीड़ों को मारने की आला सलाहियत मौजूद है। इसलिए माजस तिबे जदीद के अक्सर नुस्ख़ों में इसे छोटे कीड़ों को मारने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

मुरक्कब सूरत में यह मुख़रिज बलग़म और जरासीमकुश होने की वजह से पुरानी खांसी और दमे के इलाज में इस्तेमाल होने वाले खांसी के शर्बतों का एक जुज़्व हे।

पत्तों का तेल लगाने से दांत का दर्द जाता रहता है। दांतों के डाक्टर लौंग के तेल थाईमोल और ग्लिसरीन का मुरक्कब रखते हैं। और सूराख़ वाले दांत पर दर्द और सोज़िश रफ़ा करने के लिए लगाते हैं।

सातर की धूनी

जदीद तहक़ीक़ात से यह बात साबित है कि सातर एक ताक़तवर जरासीम और कर्मकश दवाई है। अगर इसे जलाकर किसी घर में धूनी दी जाए तो यह मक्खियों और मच्छरों के अलावा रेंगने वाले कीड़ों को भी हलाक कर सकता है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे मुर और अश्शीह के साथ मुरक्कब कर के जलाने की हिदायत फ़रमाई है। जिससे इसका असर और फ़ाएदा चार गुना हो जाता है।

हशरातुल अर्ज़ को मानने वाली अदविया को तीन अक़साम में बयान किया गया है।

1. फ़ोरी तौर पर कर्मकश जैसे की डी.डी.टी या डी.डी.वी.पी, अक़रे क़रहा, गंधक।
2. हशरात को आहिस्ता–आहिस्ता मारने वाली या उनकी अफ़ज़ाइशे नस्ल को ख़त्म करने वाली जैसे कि BAYTEX या अक़रे क़रहा PYRETHRUM
3. हशरात को भगाने वाली जैसे के संगतरे का तेल वग़ैरा CITRONELA)

सातर वह मुन्फ़रिद दवाई है जो तीनों असरात रखती है। लोगों ने

मुशाहिदा किया है कि जिस कमरे में सातर बिखेरी गई हो उस कमरे में सांप भी दाख़िल नहीं होता। किताबों की अल्मारियों में सातर रखने से वह चूहों, टिड्डी और दीमक से महफ़ूज़ रहती हे। इस लिहाज़ से इसे हशरात को भगाने वाली या INSECT REPELLANT क़रार दिया जा सकता है। आलमी इदारए सहत में कीड़ों मकोड़ों के एक माहिर ने हमारी ख़ातिर एक रात अपने घर में सातर और मरमुकी को मिलाकर सुलगते कोइलों पर डाल कर कमरा बंद कर दिया। सुबह मच्छर, मक्खियां, लाल बेग, और छिपकलियां कसीर तादाद में मरे हुए पाए गए। बाज़ार में मिलने वाली ऐसी अदविया में सिर्फ़ गंधक में यह सलाहियत है कि वह हर किस्म के कीड़े–मकोड़ों के अलावा जरासीम को हलाक कर सकती है। पुराने ज़माने में एक हज़ार मुकअब फ़िट कमरे के लिए निस्फ़ किला गंधक जलाई जाती थी। मगर इसका धुवां इंसानों के लिए ज़हरीला, रंग रौग़न को उड़ाने वाला और कपड़ों को जला देने वाला होता है। इसलिए किसी बसते घर में गंधक का इस्तेमाल हर तरह से ख़तरनाक है। इसके मुक़ाबले में सातर ज़्यादा मुअस्सिर महफ़ूज़ और कारआमद है। अगर इसकी धूनी अच्छी तरह दी जाए तो एक तवील अर्से के लिए इस कमरे में कीड़ों की नई खेप दाख़िल नहीं होती।

होम्योपैथिक तरीक़ा इलाज:

इस तरीक़ा इलाज में साअतर को THYMUS SERPYLUM के नाम से बच्चों के आलाते तनफ़्फ़ुस की सोज़िशों में बड़े एतिमाद और अच्छे नताइज के साथ दिया जाता है। इसके अलावा दमे की वह अक़साम जिनमें सांस की घुटन बार–बार शिद्दत से महसूस होती है। मगर नालियों में फंसी हुई बलग़म की मिक़दार ज़्यादा नहीं होती। सांस की नालियों में इसी तरह की घुटन जब काली खांसी के हमलें के दौरान बच्चों को होती है तो इसमें यह दवाई मुफ़ीद है।

खांसी के अलावा जब सर में बोझ महसूस होता हो। खांसी के दौरान ऐसा महसूस हो कि गला अंदर से छिल गया है और निगलने में दर्द हो। गला और नाक के अंदर की ख़ून की नालियां जब फूल जाएं, कानों में घंटियां बजने की आवाज़ें आएं और बलग़म के साथ कभी–कभार सियाह रंग का ख़ून आए तो यह मुफ़ीद है।

होम्योपैथी में सातर एक दूसरी शक्ल में यानी अपने कीमियावी आमिल THYMOL के नाम से भी मुस्तैमिल है।

थाईमोल बुनियादी तौर पर उन तमाम जिंसी बीमारियों का इलाज है जिन में पेशाब की नालियों में ख़ून की गर्दिश सुस्त पड़ने के बाइस ख़ून का ठहराओ हो जाए इस कैफ़ियत को POST URETHRAL CONGESTION कहते हैं। बरतानवी माहिरीन ने इसे VERUMONTINITIS का नाम भी दिया है। अतिब्बा जदीद इसके इलाज में पेशाब की नाली के अंदर आरजीरोल या सिलवर नाइट्रेट की फुरेरी लगाने का तकलीफ़दह अमल क़रते हैं। क्यूंकि इस तकलीफ़ की वजह से जिर्यान, सुरअते इन्ज़ाल और कसरते एहतिलाम होते हैं और तकलीफ़ पुरानी हो

तो नामर्दी का बाइस बनती है। होम्योपैथी में इतने लम्बे सिलसिले की बजाए थाईमोल खाने को दी जाती है।

इसके इस्तेअमाल के दूसरे अहम मवाक़े जिस्म और दिमाग़ में मुसलसल थकावट जब मरीज़ महफ़िलों में शिरकत को पसंद करता है। मगर ख़ुदपसंद, रात को हीजानी ख़्वाब और बार–बार ज़हनी कजरवी के ख़यालात के बाद एहतिलाम की कसरत, कमर दर्द होता है। कमर अकड़ी सी रहती है। पेशाब बार–बार आता है और इसमें यूरिट ज़्यादा मिक़दार में होते हैं। पेशाब जलन के साथ आता है। और फ़राग़त के बाद भी क़तरे टपकते रहते हैं। नालियों में ख़ैज़िश की वजह से जिंसी इंतिशार मामूल से ज़्यादा होता है। मरीज़ जब सुबह नींद से बेदार होता है जव वह ताज़ा दम होने की बजाए थका हुआ और पसमुर्दा होता है।

थाईमोल के इस्तेमाल से पेट में मौजूद ख़ून चूसने वाले कीड़े भी मर जाते हैं।

क़िस्त..... क़िस्तुलबहरी

SAUSSAUREA LAPPA

इसे अंग्रेज़ी में COSTUS वैदिक में पुकारा। उर्दू और हिंदी में क़िस्त, कुस्त, मैठी कोठ कहते हैं। अतिब्बा ने लिखा है कि इसका पौधा दो मीटर तक बुलंद होता है। लेकिन यह आम तौर पर गुलू, पान और इश्क़े पुख़्ता की तरह ज़मीन पर रेंगने वाला पौदा है। जो कि पांच हज़ार फ़िट से ज़्यादा बुलंदी पर दरयाओं के किनारे मरबूत जंगलात में पाया जाता है। कोहे हिमालया की तराई में वहां से निकलने वाले दरयाओं के साथ–साथ क़िस्त के पौधे हिंदुस्तान के शिमाल मग़रिब और शिमल मश्रिक़ में कसरत से पाए जाते हैं। इसके बड़े–बड़े दनदानेदार पत्ते होते हैं। इस पौदे की जड़ें दवाओं मे इस्तेमाल होती हैं। यह जड़ें सितम्बर और अक्तूबर के दरमियान काट कर निकाली जाती हैं। बुलंदियों से ख़च्चरों और मज़दूरों पर लाद कर उतारी जाती हैं। फिर इनके दो–[illegible] इंच लम्बे टुकड़े कर लिए जाते हैं। वह इसी सूरत में मुल्हठी की तरह सफ़ेद गांठें हैं जो कि ख़ुश्बू दार भी हैं। बाज़ार में मिलती हैं। नबाताती लिहाज़ से सोसारया ख़ानदान के मुतअद्दिद अफ़राद हैं। मगर उनमें इलाज के लिए सिर्फ़ यही क़िस्म इस्तेमाल होती है। जिन दिनों इसकी जड़ें काटी जाती हैं सारा जंगल ख़ुश्बू से महर जाता है। आज़ाद कश्मीर में दरयाए जहलम और दरयाए चिनाब के किनारों के साथ यह पौदा बड़ी कसरत से पाया जाता है। वहां के मज़दूर और गूजर सर्दी के मौसम में ठंडक से बचने और कमज़ोरी को रफ़ा करने के लिए क़िसत का हलवा बना कर खाते हैं।

इस दवाई को असल शोरहत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादाते गिरामी से हासिल हुई।

इरशादाते नबवी सल्ल०

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं।

امرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم ان نتداوىٰ من ذات الجنب
بالقسط البحرى والزيت (ترمذی، مسند احمد، ابن ماجہ)

(हमें रसूल सल्ल० ने हुक्म दिया कि हम ज़ातुल जुंब (पिलोरिसी) का इलाज क़िस्तुलबहरी और ज़ैतून के तेल से करें)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

اَنَّ امثل ماتداويتم به الحجامة والقسط البحرى
(بخاری، مسلم، مسند احمد، ترمذی، انسائی، مؤطا امام مالک)

(वह चीज़ें कि जिनसे तुम इलाज करते हो उनमें से पछ़ने लगाना और क़िस्तुलबहरी बहतरीन इलाज हैं)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

لاتعذبوصبيا نكم بالغمزمن العذرة وعليكم بالقسط (بخاری مسلم)

(अपने लड़कों को हलक़ की बीमारी में गला दबा कर अज़ाब न दो जबकि तुम्हारे पास क़िस्त मौजूद है)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ويلكن لاتقتلن اولادكن ايما امراة كانت ياتيها العذرة اووجع براسه نلتا خد
قسطاً هندياً فلتحكه بالماء ثم تسعطه اياه (مستدرک الحاکم، الشاشی، ابن الفرات)

(एक ओर तो! तुम्हारे लिए मक़ामे तास्सिफ़ है कि तुम अपनी औलाद को ख़ुद क़त्ल करती हो। अगर किसी बच्चे के गले में सोज़िश हो जाए या सर में दर्द हो तो वह क़िस्त हिंदी को ले कर पानी में रगड़ कर इसे चटा दे।)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

لاتحرقن حلوق اولادكن عليكن بقسط هندى وورس فاسعطيه اياه
(مستدرک الحاکم)

(अपने बच्चों के हलक़ मत जलाओ। जबकि तुम्हारे पास क़िस्त हिंदी और वरस मौजूद हैं। इनको यह चटा दिया करो।)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से अबू नईम, इब्नुस्सुन्नी और मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने इसी मज़्मून और मफ़हूम की पांच और हदीसें भी रिवायत की हैं जिन में अल्फ़ाज़ के मामूली रद्दोबदल के साथ यही नुसख़ा बयान हुआ है।

हज़रत क़ैस बिंते मोहसिन रज़ि० बयान करती हैं।

دخلت بابن لى على رسول الله صلى الله عليه ولسم وقد اعقلت عنه من
العذرة فقال علىٰ ماتدعزن اولادكنّ بهٰذا لعلاق عليكن بهذا العود الهندى
فان فيه سبعة اشفيعه منها ذات الجنب يسعط من العذرة ويلدمن ذات

الجنب (بخاری)

(मैं अपना बेटा ले कर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गई उसे अज़हर की शिकायत थी। उसकी नाक में बत्ती पड़ी थी और गला दबाया गया था। हुज़ूर इस अम्र पर ख़फ़ा हुए कि तुम लोग अपने बच्चों को क्यूं अज़िय्यत देते हो। जबकि तुम्हारे पास यह ऊदुलहिंदी मौजूद है। जिसमें सात बीमारियों से शिफ़ा है। जिनमें ज़ातुलजुंब भी है। ज़ातुलजुंब में यह खिलाई जाए जबकि गदज़ा में चटाई जाए।)

इमाम बुख़ारी रह0 को यह रिवायत सुफ़ियान से मिली जिन्होंने ज़ुहरी और उबैदुल्लाह की वसातत से इसको उम्मे कैस से रिवायत किया है। ज़ुहरवी कहते हैं कि मुझे सात में दो बीमारियों का नाम याद रहा उन्होंने शायद बक़ाया सात बयान नहीं कीं।

बुख़ारी की तमाम रिवायत में दवाई का नाम ऊदुलहिंदी मज़कूर है। जबकि दीगर तमाम किताबों में दवाई का नाम क़िस्तुलिहिंदी या क़िस्तुलबहरी मज़कूर है। ऊदुलहिंदी बिल्कुल मुख़ातलिफ़ चीज़ है। जिसे "अगर" भी कहते हैं। अल्लामा अनवर शाह काशमीरी रह. ने इस हदीस की तफ़सीर में क़रार दिया है कि रूसलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुराद क़िस्तुलहिंदी ही है। इसी ज़िम्न में मिस्री आमिल महमूद नाज़िम अलनैसी ने भी जिरह और बहस के बाद अल्लामा कशमीरी के इस्तदलाल को दुरुस्त क़रार दिया है। बुख़ारी ने यही हदीस सदक़ा बिन फ़ज़ल की मअरफ़त ज़ुहरी और उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्ला से बयान की है। जिसमें अलफ़ाज़ का कुछ फ़र्क़ है। एसा मालूम होता है कि सिलसिला रिवायत में ज़हरवी या उबैदुल्लाह क़िस्तुलहिंदी और ऊदुलहिंदी में गड़बड़ा गए हैं। यही रिवायत उम्मे कैस बिंते मोहसिन रज़ि. से दूसरी जगह यूं मुरव्वी है:

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم عليكم بالعود الهندى يعنى به لكست فان فيه سبعة اشفية منها ذات الجنب. (ابن ماجہ)

(यहां पर रावी ऊदुलहिंदी बयान करने के बाद इसकी तशरीह में क़ुस्त क़रार देते हैं। जबकि उम्मे क़ेस रज़ि0 की एक और रिवायत जो कि इब्ने माजा ही ने बयान की मैं दवाई का नाम ऊदुलहिंदी है। इस रिवायत के बाद तो मालूम होता है कि मुहरिमा उम्मे क़ैस रज़ि. ही दवाई के नाम का मुख़्मसा कर गईं हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं।)

ان النبى صلى الله عليهوسلم دخل علىٰ عائشة وعندها صبّى يسيل منخراه رماً فقال: ماهٰذا؟ قالونه العذرة؟ قال! ويلكنّ لاتقتلن اولادكنّ. ايما امراةٍ اصاب ولدها لعذرة اووجع فى راسه فلتا خذ قسطاً هندياً فلتحكه ثم تسعط به، فامرت عائشة فضعت ذالك به نبرأ. (مسلم)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत आइशा रज़ि0 के घर में

दाख़िल हुए तो उनके पास एक बच्चा था जिसके मुंह और नाक से ख़ून निकल रहा था। हुज़ूर सल्ल0 ने पूछा कि यह क्या है? जवाब मिला कि बच्चे को अज़रा है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि ए ख़्वातीन तुम पर अफ़सोस है कि अपने बच्चों को यूं क़त्ल करती हो। अगर आइंदा किसी बच्चे के हलक़ में अज़रा की तकलीफ़ हो या उसके सर में दर्द हो तो क़िस्त हिंदी को रगड़ कर इसे चटा दो। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि0 ने इस पर अमल करवाया। और बच्चा तंदरुस्त हो गया।)

मुस्लिम की इस रिवायत में बच्चे की बीमारी और इसकी पूरी तफ़सील मौजूद है। रिवायत जाबिर अब्दुल्ला रज़ि0 की इन रिवायात की मुकम्मल सूरत मालूम होती है। जो इस अलफ़रात, अशशमसी, मुस्तदुलहाकिम और अबू नईम ने इनसे इस बाब में बयान की हैं। इस रिवयात को मुहम्मद अहमद ज़हबी ने सहीह क़रार दिया है।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

रिवायात में क़िस्त का ज़िक्र बतौर हिंदी और अलबहरी आया है। इसलिए मुहद्दिसीन ने इसे क़िस्त की अक़साम फ़र्ज़ कर लिया बल्कि इब्ने अलबैतार भी इसके बयान में मुग़ालता खा गया। क्यूंकि यह हिंदी दवाई थी जिस में इलाक़े की वजह से रंग में मामूली फ़र्क़ नज़र आ जाता हैं बुख़ारी और मुस्लिम के अज़ीम मुतरजिम नवाब वहीदुज़्ज़मां रह. ने क़िस्तुल बहरी से वह क़सम मुराद ली है जो समंदर से आती है। वह नाम के साथ बहरी की निस्बत से मुतास्सिर हो गए। हालांकि यह पोदा समंदरों के खारे पानी के पास नहीं होता। यह बुलंदी और ठंडक में परवरिश पाता है।

इब्नुलक़ैय्युम कहते हैं कि इसके फ़वाइद बेशुबहा और लाजवाब हैं। यह बलग़म को निकाल कर आइंदा की पैदाइश को रोक देती हैं। ज़ुकाम को ठीक कर देती है। अगर इसे पिया जाए तो मेदे और जिगर की कमज़ोरी को रफ़ा करती है। ज़हरों की तिरयाक़ है। चौथे के बुख़ार में मुफ़ीद हे। अगर इसको शहद और पानी में हल करके रात को चहरे पर लगाया जाए तो चहरे के दाग़ उतार देती है। जालीनूस ने इसे कज़ाज़ और पेट के कीड़ों में मुफ़ीद पाया।

इब्नुलक़ैय्युम रह. बयान करते है कि बाज़ जाहिल तबीब इसके ज़ातुलजुंब में असर से इंकार करते हैं। यह उनकी अपनी कम इल्मी की अलामत है। वह एक तरफ़ यह मानते हैं कि यह खांसी और बलग़म में मुफ़ीद है। बुख़ार को उतार देती है ओर दूसरी तरफ़ ज़ातुलजुंब में इसकी उफ़ादियत से मुन्किर हैं। अतिब्बा की अकसरियत दवाओं के असरात और इलाज को अपने क़यास से मुरत्तिब करती है। जबकि उनके पास अपनी राए की तसदीक़ का कोई यक़ीनी ज़रिया नहीं होता। बल्कि हक़ीक़त यह है कि आज तक अकसर बीमारियों का इलाज और उसूले इलाज लोगों की भलाई के लिए पैग़म्बर बताते रहे हैं और अतिब्बा को जो कुछ भी मालूम है। वह उन्होंने इस ज़रिए से हासिल किया है। बल्कि इन के इल्म की असास यही है। इसमें बाज़ मुशाहिदात और मफ़रूज़ों का इज़ाफ़ा करके इल्मे तिब बताया गया है। जबकि अंबिया अलैहिस्सलाम का बताया

हुआ इलाज वही इलाही पर मबनी होता है और इसमें किसी ग़लती का कोई इमकान नहीं है। जो तबीब इसमें ग़लती निकालता है वह ख़ुद ग़लत है।

(इत्तिफ़ाक़ की बात है कि इतनी मुद्दत गुज़र जाने और तजुर्बात का तवील अरसा मयस्सर आने के बावजूद आज भी इल्मुल अदविया की अकसर किताबों में क़िसत को फेफड़े की बीमारियों के लिए मुज़िर बयान किया गया है। जबकि उन्ही कुतुब में इसे सांस की नालियों की सोज़िश के लिए अक्सीर बताया जाता है।)

इमाम ज़हबी रह० कहते हैं कि यह फ़ालिज में मुफ़ीद है। कुव्वते बाह में इज़ाफ़ा करती है। सांप के ज़हर का तिरयाक़ है। इसका सूंघना ज़ुकाम में मुफ़ीद है। और इसका तेल कमर दर्द में मुफ़ीद है।

अहादीस में इसका ज़िक्र पछने लगाने के साथ मिलता है। मतलब यह कि पछना बहतरीन इलाज है और अगर कोई ऐसा न कर सके तो फिर क़िसत को इस्तेमाल करे।

अज़रा असल में हलक़ के अंदर वाक़े लोज़तीन की सोज़िश है। जब इनमें पीप पड़ जाती है और ख़्वातीन ज़माना क़दीम से हलक़ में उंगली डाल कर इन को दबा देती थीं। इस तरह दबाने से इनमें से ख़ून और पीप निकालते हैं और बच्चा बड़ी तकलीफ़ में मुब्तिला होता है। (यह पीप और ख़ून अगर सांस की नालियों में दाख़िल हो जाए तो सांस बंद कर सकता है। या यह सोज़िशी मवाद वहां पर नमूनिया का बाइस हो सकता है)

ज़ातुलजुंब की दो क़िस्में हैं। इनमें अगर गर्म–गर्म रौग़ने ज़ैतून के साथ क़िस्त दी जाए तो फ़ौरी फ़ाएदा होता है।

मसीह कहते हैं कि क़िस्त आज़ा जिस्मानी को कुव्वत देती है। रियाह को ख़ारिज करती है। वरम ज़ाइल करती है। और ज़ातुलजुंब में मुफ़ीद है। मसीह वह जय्यद हकीम जिसका ज़िक्र इब्नुलबैतार ने बड़ी अक़ीदत के साथ अपनी जामेउलकबीर में किया है।

क़िस्तुल बहरी यक़ीनी तोर पर इमराज़े तनफ़्फ़ुस में मुफ़ीद है। और बलग़म को ख़ारिज करती है।

कीमयावी साख़्त:

इसकी जड़ों में ख़ुश्बूदार अंसर दो क़िस्म के बीरोज़ों और अलकलाईड पर मुशतमिल हैं। इसमें VALERIC ACID एक क़ाबिज़ अंसर है जलाने पर राख में मैंगनीज़ पाया जाता है। इसकी जड़ों से निकाले हुए तेल के तज्ज़िये पर अज्ज़ा मालूम होते हैं।

CAMPHENE	0.04%
PHELLANDRENE	0.4%
TERPENE ALCOHOL	0.2%
A-COSTENE	6.0%
B-COSTENE	6.0%

APLOTAXENE	20%
COSTOL	7%
DI-HYDROCOSTUS LACTONE	15%
COSTUS LACTONE	10%
COSTIC ACID	14%

(AFTER SAMMLER AND FELDSTEIN)

इसके अलावा कलकत्ता के आसूतोश दत्त, घोश और रंजन चटरजी ने जड़ों का यूं तज्ज़िया किया है।

AROMATIC O DOUR FACTOR 15%

GLUCOSIDE SAUSSURINE ALKALOID

जबकि इसके पत्तों में अलक्लाइड सा सूरैन नहीं होती। शायद इसीलिए पत्तों से इलाज नहीं किया जाता। इन अज्ज़ा के अलावा इसमें बीरोज़ा, एक कड़वा अंसर, क़लमी शूरा और मिठास पाए जाते हैं। चोपड़ा ने इसके अलक्लाइड सूसारेन में टार्ट्रिक एसिड मिलाकर जो तजुर्बात किए हैं उन्होंने इस दवाई के जुमला असरात को नुमायां किया है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

अतिब्बाए सलफ़ ने इसे चार क़िस्मों में बयान किया है। अरबी क़िस्त ज़र्दी माइल ख़ुश्बूदार और शीरीं होती है। रूमी क़िस्त का रंग शमशाद की लकड़ी की तरह बू इस की तेज़, शामी क़िस्त सियाही माइल एलवे जैसी ख़ुश्बू और बूअली सेना ने इसे क़िस्त की बजाए क़रनफ़ली क़रार दिया है। हिंदी क़िस्त अंदर से ज़र्द, ख़ुश्बू कम और वज़न में हल्की होती है। तज़किरतुल हिंदी में भी क़िस्त को मुतअद्दिद अक़साम में बयान किया गया है। जबकि पाकिस्तान में होने वाली क़िस्त की हैइयत इलाक़े पर मुनहस्सिर है। वादीए नीलम की क़िस्त गहरे रंग की बू के लिहाज़ से तेज़ जबकि गिलगत, भमहर की क़िस्त सफ़ेद और ख़ुश्बूदार होती है।

क़िस्त की जो क़िस्म अंदरूनी इस्तेमाल में आती है वह शीरीं है। तल्ख़ को ख़ुमाद में बरता जाता हैं मगर इस अमल में भी शीरीं इससे बहतर है। यह रियाह को ख़ारिज करती है। ओराम को तहलील करती है। सर्दी के दर्दों को मुफ़ीद है। इस ग़र्ज़ के लिए इस का तेल बनाकर लगाना भी मुफ़ीद है। क्यूंकि यह पट्ठों को ताक़त देती है। दिमाग़ और आसाब को कुव्वत देती है। दिमाग़ी बीमारियों ख़ास कर फ़ालिज, लक़्वा, तशनज और राशा में मुफ़ीद है। पेट के कीड़े मार देती है। इसको शहद या क़ंद के साथ जोश दे कर खाने से जिस्म के अंदर के सुद्दे खुल जाते हैं। पेशाब और हैज़ की बंदिश को खोलती है। मुफ़र्रह और मुलत्तिफ़ है। बलग़मी सर दर्द को नाफ़े है। रहम का दर्द जाता रहता है। दिल, जिगर और तहाल को तक़वियत देती है।

वैदिक तिब के मुताबिक क़िस्त मुक़व्वी बाह है। बादी और बलग़मी बीमारियों को ठीक करती है। यह खांसी में मुफ़ीद है। बलग़म और दमें में मुफ़ीद है।

हैज़े के बाद आज़ा की सुस्ती को दूर करने के लिए किसत का जोशांदा शहद मिला कर देना मुफ़ीद रहता है ज़अफ़ हज़्म को दूर करने के लिए किसत के साथ–साथ सौंठ और सीधे के बीज पीस का निस्फ़ चम्मच फांक लेते हैं। इसका सफ़ूफ़ दुगने शहद में मिलाकर चाटने से दमे के दौरे और शदीद खांसी को कम करता है।

ज़माना क़दीम बल्कि अहदे रिसालत में भी ख़्वातीन माहवारी से फ़रागत के बाद अपने जिस्म को क़िस्त से धोती थीं। जिससे के जिस्म की अंदरूनी ग़िलाज़त दूर हो जाती थी।

अतिब्बा क़दीम ने क़िस्त के बैरूनी इस्तेमाल से कसीर फ़वाइद का तज़किरा किया है, जिनमें क़िस्त का तेल एह अहम नुस्ख़ा है।

क़िस्त शीरीं 15 ग्राम को 24 घंटे तक सुर्ख़ शराब या अल्कुहल में भिगोकर इस में 37½ ग्राम रौग़ने ज़ैतून मिलाकर इनको हल्की आंच पर पकाएं। जब अलकुहल उड़ जाए तो उसे उतार कर छान लें यह तेल आज़ा को ताक़त देने में मालिश के लिए और बलग़मी खांसी में पीने के लिए मुफ़ीद है। यह तेल गंज पर लगाने से बाल उगने का इमकान है। वैसे बालों को मज़बूत करता है।

क़िस्त को पानी में घिस कर लगाने से छीप दूर हो जाती है। पिसी हुई क़िस्त को बाल खींच कर जड़ पर मलने से दोबारा बाल नहीं उगते। क़िस्त को शहद में मिलाकर चहरे पर लेप करने से कलफ़ और झाईं के दाग़ मिट जाते हैं। क़िस्त का जोशांदा पकाकर इसके नीम गर्म पानी में फटे हुए हाथ पैर डुबोने से इनको फ़ाएदा होता है। सिरका में किस्त को हल करके लगाने से दाद दूर हो जाती है।

गाए या बकरी के दूध में क़िस्त को जोश दे कर यह दूध दर्द वाले पट्ठों पर मलने से उनकी एंठन दूर हो जाती है। क़िस्त की धूनी कमरों से सीलन की बदबू को रफ़ा करती है।

तिब यूनानी के मशहूर मुरक्किबात जवारिश जालीनूस, दवाउलमिस्क और तिरयाक़ सानिया का एक अहम जुज़्व क़िस्त शीरीं भी है।

अतिब्बाए जदीद के मुशाहिदात:

मक़ामी तौर पर जाज़िबे ख़ून, मुसफ़्फ़ी ख़ून और दाफ़े तअफ़्फ़ुन है। इसलिए इमराज़े जिल्द ख़ासकर बफा, कलफ़, नमश, दाद में मुफ़ीद है। कपड़ों को कीड़ों से महफ़ूज़ रखने के लिए कश्मीर के लोग ऊनी पारचात में क़िस्त रखते हैं और कपड़े महफ़ूज़ रहते हैं।

अंदरूनी तौर पर मुनफ़्फ़िसे बलग़म, दाफ़े तिशनज और मुक़व्वी आसाब होने की वजह से सआल, सआल शअ्बी, दमा, फ़ालिज़, लक़वा और ज़अ्फ़ आसाब में मुफ़ीद है। क़िस्त को चीनी तिब में बड़ी मक़बूलियत हासिल है। योरप में भी लोगों ने इसके फ़वाइद और कीमयावी हैसियत पर ख़ासी महनत की है। इनके तजुर्बात अलाहिदा पेश किए जा रहे हैं।

भारत और योरप के मुशाहिदात:

इसके अजज़ाए तर्कीबी में फ़राज़ी तेल, ग्लूको साइड और अलक्लाइड अपने

असरात रखते हैं इनके अलाहिदा फ़वाइद यूं हैं।

फ़राज़ी तेल ESSENTIAL OIL का सिरर्रियाह, दाफ़े तअफ्फुन और जरासीमकुश है। यह पीप पैदा करने वाले जरासीम मसलन STREPTOCOCCUS E-COLI- STAPHYLOCOCCUS को फ़ौरन हलाक कर देता है। यह बलग़म को निकालता और ग़ैर इरादी अज़लात से एंठन को दूर करता है। और दिल के अज़लात के लिए मुक़व्वी है। इसे अगर एक हज़ार गुना पानी में हल करके पेचिश पैदा करने वाले कीड़ों पर डाला जाए तो इनको दस मिनट में हलाक कर सकता है। अगर इस तेल को पतला करके इसका टीका वरीद में लगाया जाए तो सांस की नालियों को खोल देता है। यही टीका बलग़म निकालता और पेशाब खुल कर लाता है। चूंकि इसका जिस्म से इख़राज पेशाब के ज़रिए होता है इसलिए मक़ामी तौर पर जलन और ख़ौज़िश पैदा कर सकता हैं

ख़ालिस तेल पीने से मेदे में जलन और मतली होती है। इसका धुवां असबी निज़ाम के लिए मुज़अफ़ है। तेल से भी चक्कर, घबराहट और ग़नूदगी तारी होती है। ।

क़िस्त से निकलने वाली अलक्लाइड का नाम SAUSSURINE है। इसे देने से जानवरों की सांस की नालियां फ़ौरन खुल जाती हैं। ख़याल किया जाता है कि इसके यह असरात दिमाग़ी आसाब के अलावा नालियों के अपने अज़लात के ज़रिए ज़ाहिर होते हैं। अपने असरात के लिहाज़ से यह दमे का दौरा तोड़ने वाली मशहूर दवाई ADRENALINE से मुशाबहत रखती है। मगर इसका असर जल्द शुरू नहीं होता और जब शुरू हो जाए तो फिर काफ़ी देर तक जारी रहता है। इस दवाई का इंजक्शन मरीज़ के ब्लड प्रेशर में वक़्ती इज़ाफ़े का बाइस होता है। ख़याल यह है कि इसका यह असर दिल के अज़लात पर बराहे रास्त होता है ख़ास तौर पर दिल के बतन या VENTRICLES ज़्यादा ताक़त से जिस्म को ख़ून रवाना करते हैं। इसके साथ अगर फ़राज़ी तेल को भी शामिल कर दिया जाए तो ब्ल्ड प्रेशर के बढ़ने के साथ सांस की नालियां खुल जाती हैं। यह दिल के अज़लात के लिए यक़ीनन मुक़व्वी है। और इसके असरात के तहत दिल के नाकारा अज़लात भी फिर से काम करने लग जाते हैं।

इण्डियन मेडिकल गज़िट ने नोम्बर 1924 में इसपर मुशाहिदात की इशाअत में क़रार दिया कि क़िस्त की जड़ों का सफ़ूफ़ अगर्चे बदमज़ा होता है। मगर दमे के दौरों को कम कर देता है। यह सफ़ूफ़ का सिरर्रियाह, क़ाते क्रम शकम, मुक़व्वी, दाफ़े क़ब्ज़ और मुक़व्वी बाह है। तपे दिक, भूख की कमी और यरक़ान में इसका इस्तेमाल करनल चोपड़ा ने मुफ़ीद पाया।

हैजे के लिए	क़िस्त	इलायची ख़ुर्द	पानी
	3 ग्राम	1 ग्राम	32 ग्राम को पकाकर देना

मुफ़ीद है। यह कमज़ोरी को दूर करने के अलावा आंतों के जरासीम को भी हलाक कर देता है। इसकी ख़ुराक हर घंटे के बाद एक बड़ा चम्मच है। हिचकी, गंठिया, कोढ़ और पुराने मलेरिया बुख़ार में क़िस्त का सफ़ूफ़ मुफ़ीद पाया गय। चीनी तबीब यक़ीन रखते हैं कि इसको खाने और लगाने से सफ़ेद बाल सियाह

हो जाते हैं। चीन में क़िस्त के साथ कस्तूरी मिलाकर दांत दर्द पर लगाते हैं। भारती माहिरीन ने ख़ालिस क़िस्त का मंजन भी दांतों की बीमारियों में मुफ़ीद पाया है।

क़िस्त का सफ़ूफ़ सरको धोने के लिए मुफ़ीद दवाई है। इसे ज़ख़्मों पर लगाने से जरासीम हलाक हो जाते हैं और उनके मुंदमिल होने का अमल तेज़ हो जाता है।

सनीकुन्नफ़्स (दमा) में करनल चोपड़ा ने क़िस्त के सफ़ूफ़ को 90% अल्कुहल में अच्छी तरह हिलाकर छान लिया। फिर इससे अल्कुहल का बेशतर हिस्सा उड़ाकर इसका मुसफ़्फ़ा सफ़ूफ़ का एक ग्राम दिन में तीन मर्तबा पानी के साथ दिया। इस नुस्ख़े को इस्तेमाल करने वाले मरीज़ों को रात में दमे का दौरा न पड़ा और जिनको पड़ा भी उनको उस वक़्त इसकी एक इज़ाफ़ी ख़ुराक दी गई जिससे दौरा उसी वक़्त ख़त्म हो गया। मरीज़ों को यह दवाई तवील अरसे तक मुसलसल दी जाती रही जिससे कोई नाख़ुशगवार नतीजा बरामद न हुआ। इससे क़यास किया जाता है कि एक लम्बे अरसे तक देना मुज़िरे सहत नहीं।

क़िस्त के मुसलसल इस्तेमाल के दौरान कर्नल चोपड़ा ने महसूस किया है कि जिस्म या जरासीम इसके आदी नहीं होते। इसलिए मरीज़ों को इलाज के दौरान दवाई की मिक़दार बढ़ाने की ज़रूरत नहीं होती।

भारती माहिर अदविया नदकारनी ने इसके असरात का ख़ुलासा करते हुए क़रार दिया है कि क़िस्त मुक़व्वी बाह है। सुकून आवर है, दिमाग़ के लिए मुक़व्वी है, दिल और जिगर को ताक़त देती है, इसे पानी या सिरका में घोल कर अगर सर पर लगा लिया जाए तो सरदर्द को भी दूर कर देती है।

ज़ेकुन्नफ़्स—दमा:

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़िस्त के जिन फ़वाइद का तज़किरा फ़रमाया उनमें दमा शामिल नहीं। मुहद्दिसीन ने इसके मुख़्रिज बलग़म होने का तज़किरा किया है। वह यह भी बताते हैं कि इस से सांस की नालियों की सोज़िश ख़त्म हो जाती है। मगर वह दमे का ज़िक्र बराहे रास्त नहीं करते। चूंकि उम्मे क़ैस रज़ि0 के ज़रिए इसके सात बीमारियों में फ़वाइद का पता चलता है। इसलिए बक़िया पांच को तलाश करना भी हमारी ज़िम्मेदारी थी। अतिब्बा क़दीम में इस्माईल जरजानी ने सांस की तंगी में इसकी इफ़ादियत का तज़किरा किया है। कर्नल चोपड़ा ने इसको बराहे रास्त दमें में इस्तेमाल करके यहां तक मालूम किया है कि इसकी ख़ुराक खाने से इस रात दमे का दौरा नहीं पड़ता। यह सांस की नालियों से इनक़बाज़ को दूर करती है।

इब्नुलक़य्युम रह० ने हर्फ़ (हुब्बुर्रिशाद) के फ़वाइद में सांस की नालियों को वुसअत देने का ज़िक्र किया है। इसी तरह कलोंजी को पुरानी खांसी में मुफ़ीद बताया गया है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हलबा के फ़वाइद को लाइंतिहा क़रार दिया। इन मालूमात की रौशनी में यह नुसख़ा तरतीब दिया गया है।

क़िस्त शीरीं 30 ग्राम

हुब्बुर्रिशाद 10 ग्राम
कलोंजी 5 ग्राम
तुख़मे हलबा 3 ग्राम

इन तमाम अदविया को पीस कर चार ग्राम सुबह शाम खाने के बाद दिया गया। इसके साथ उबलते पानी में शहद बीमारी की शिद्दत के मुताबिक़, ज़ैतून का तेल और दिन में छः सात दाने ख़ुश्क अंजीर भी दिए गए। जहां ख़ुश्क खांसी बार–बार आ रही थी उन मरीज़ों को नुसख़े में 2 ग्राम तुख़मे हिंदबा का इज़ाफ़ा किया गया। आम तौर पर भी मरीज़ बहतर होते गए। जिन मरीज़ों ने इसके बावजूद बहतरी का मज़ाहिरा न किया उनका नुसख़ा मुख़्तसर किया गया

क़िस्त शीरीं 40 ग्राम
हुब्बुर्रिशाद 10 ग्राम

मिक़दारे ख़ुराक हस्बे साबिक़ 4 ग्राम सुबह शाम रखी गई।

कर्नल चोपड़ा ने अगर्चे दमे के सिलसिले में ख़ुशगवार नताइज का ज़िक्र किया है। मगर वह मुकम्मल इलाज के बारे में मुश्तबा है। इसकी ग़लती यह रही कि वह पूरी तरह क़िस्त शीरीं पर भरोसा करता रहा। हमने इसके साथ सांस की नालियों को खोलने वाली दीगर अदविया के साथ जब शहद और ज़ैतून के तेल का इज़ाफ़ा किया तो हमारे नताइज तजुर्बात में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हासिल होने वाली तिब की बरकत शामिल थी।

तपे दिक़:

ज़ैद बिन अरक़म रह० की रिवायत ओराम क़ैस रज़ि० बिंते मोहसिन रज़ि० से इसकी ताईद मज़ीद के बाद क़िस्त और ज़ैतून के तेल का मुरक्कब पिलोरसी के लिए मुफ़ीद होना चाहिए। जदीद तहक़ीक़ात से यह साबित है कि पिलोरसी तपे दिक़ ही की वजह से होती है। इमाम मुहम्मद बिन ईसा तर्मिज़ी ने ज़ातुलजुंब की तशरीह में भी क़रार दिया है कि यह तपे दिक़ की क़िस्म है। इसलिए इस मुरक्कब का तपे दिक़ में मुफ़ीद होना एक लाज़मी नतीजा है। ज़ैतून के तेल के बारे में इरशाद नबवी सल्ल० मौजूद है कि यह जिन सत्तर बीमारियों में भी मुफ़ीद है उनमें जज़ाम भी है। इल्मुलजरासीम और इल्मुलइमराज़ के उसूलों के मुताबिक़ जज़ाम और तपे दिक़ के जरासीम एक दूसरे से क़रीब तरीन है इनकी दवाइयां भी अकसर मुश्तर्क हैं। इसलिए ज़ैतून के तेल के लिए दिक़ में भी मुफ़ीद होना एक लाज़मी अम्र है।

इन बुनयादी मुशाहिदात के बाद यह मुरक्कब तपे दिक़ में इस्तेमाल किया गया जिन मरीज़ों को बुख़ार था या बलग़म की ज़्यादती थी इनको इब्तिदाई इमदाद के लिए जदीद अदविया में से भी कोई एक वक़्ती तौर पर दी गईं। लेकिन इनका इस्तेमाल किसी भी सूरत में पंद्रह दिन से ज़ाइद नहीं रहा।

तपे दिक़ के जदीद तरीन इलाज से यह बीमारी कम अज़ कम नौ माह में ठीक हो जाती है। जिन फेफड़ों में सुराख़ की जिसामत डेढ़ सेंटी मीटर से ज़ाइद हो उनमें अरसा इलाज डेढ़ से दो साल तक मुहीत होता है। जदीद

अदविया से इलाज पर कम–अज़–कम तीस रुपए लागत आती है। इसके मुक़ाबले में क़िस्त और ज़ैतून का तेल तपे दिक़ पर पहले महीने के बाद ही वाज़ेह असरात दिखाने लग जाते हैं। तीन माह में ख़ून का ESR नारमल हो जाता है। और चौथे महीने का एक्सरे छाती के ज़ख़्मों को मुंदमिल होता दिखाई देता है। इस अलाज पर रोज़ाना पांच रुपए से भी कम ख़र्च आता है। चूंकि दिक़ में जिस्मानी कमज़ोरी अलालत का अहम हिस्सा है। इसलिए हर मरीज़ को सुन्नते नबवी सल्ल० के मुताबिक़ नहार मुंह और अस्र के वक़्त दो बड़े चम्मच शहद भी दिया गया। मरीज़ को खांसी अगर ज़्यादा रही तो यह शहद उबलते पानी में दिया गया।

आंतों की तपे दिक़ में इस इलाज के फ़वाइद ज़्यादा जल्द ज़ाहिर हो जाते हैं। लेकिन ख़नाज़ीर, गुर्दों और फ़ोतों की दिक़ में भी ज़्यादा देर नहीं होती। अलबत्ता जिल्द और हड्डियों की दिक़ में अरसा इलाज साल के क़रीब हो जाता है। मगर इसमें किसी शको–शुबे की गुंजाइश नहीं कि क़िस्त और ज़ैतून का तेल दिक़ का मुअस्सिर और मुकम्मल इलाज हैं। अलबत्ता यह ज़रूरी है कि मुआलिज मुस्तनिद तबीब हो ताकि वह मरीज़ की सहत की मुनासबत से इज़ाफ़े करने का अहल हो।

इमराज़े हलक़:

गले की दो बीमारियां अकसर अज़ियत का बाइस होती है। गले की ख़राबी और लोज़तीन की सोज़िश, कुदरत ने ज़बान के आख़िर में गले के अंदर दो सिपाही लोज़तीन की सूरत नस्ब किए है। जरासीम अगर मुंह के अंदर दाख़िल हो जाएं तो यह लोज़तीन इनको रोक देते हैं। इस कोशिश के दौरान वह ख़ुद मुतवरम हो जाते हैं। गले की यह सोज़िश बच्चों में बड़ी आम है। क्यूंकि मां का दूध पीने के दौरान मां की जिल्द के जरासीम उनके मुंह में दाख़िल होते हैं। फिर बाज़ार का दूध पिए तो फ़ीडर और निपल के जरासीम, बच्चे को चुप करवाने वाली चूसनी, बच्चों का अंगूठा चूसना और आख़िर में बड़ों की मुहब्बत की सज़ा। बच्चे को प्यार करने वाले अकसर उनके मुंह में अपनी गंदी उंगलियां डालते हैं जिससे उसके हलक़ में सोज़िश हो जाती है। लोज़तीन मुतवरम होते हैं तो इससे गले में दर्द, बुख़ार और खांसी होते हैं। बार–बार की सोज़िश के बाद लोज़तीन में पीप पड़ जाती है। या बच्चा मुसलसल बीमार रहने लगता है। पुरानी औरतें इन बच्चों के गलों के अंदर अंगूठा डाल कर लोज़तीन को ज़ोर से दबा देती थी। जिससे ख़ून और पीप निकल कर गला ठीक हो जाता था इसके बाद इन पर तवे की सियाही या कोई "घी" लगा दी जाती थी। तिब्बे जदीद में वह गला जो साल भर से ज़्यादा अरसे से ख़राब हो और बच्चे को तीन बार से ज़्यादा बुख़ार हो चुका हो उसका इलाज यह है कि ऑपरेशन करके लोज़तीन निकाल दिए जाते हैं

जब लोज़तीन निकल जाते हैं तो गले में जरासीम के ख़िलाफ़ रुकावट ख़त्म हो गई इस ऑप्रेशन के बाद यह बच्चा आख़िर उम्र तक हमेशा गले की ख़राबियों और खांसी का शिकार रहता है। क्यूंकि अब जरासीम को बराहे रास्त

सांस की नालियों तक चले जाने की छुट्टी मिल गई।

यह वह सूरते हाल थी जब अज़िय्यत में मुब्तिला बच्चा हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ि. के पास देखा गया और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त की कैफ़ियत और बाद के मसाइल को तवज्जा में लाते हुए इरशाद फ़रमाया कि बच्चों को ऐसे तकलीफ़ दे अमल न किए जाएं जबकि क़िस्त मौजूद है।

इस बीमारी में मुब्तिला हज़ारों बच्चों को क़िस्त का सफ़ूफ़ सुबह शाम खाने के बाद दिया गया। आम तौर पर यह बच्चे पंद्रह दिन में बेहतर होने लगते हैं और छे हफ़्तों में मुकम्मल शिफ़ायाब हो जाते हैं चंद बच्चों में देखा गया कि बेहतरी का सिलसिला एक जगह पर आकर रुक गया। इसका हल एक हदीस से यूं समझ में आया कि इनको वरस और क़िस्त दी जाएं। चुनांचे जब क़िस्त के साथ वरस की थोड़ी सी मिक़दार. शामिल की गई तो हर बच्चा तंदरुस्त हो गया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादे ग्रामी पर जवज्जह दी जाए तो इससे एक चीज़ वाज़ेह नज़र आती है कि लोज़तीन को न निकलवाया जाए। उन्होंने इस बाब में जिस एतिमाद के साथ क़िस्त का ज़िक्र फ़रमाया है। वह इस अम्र की दलालत करता है कि यह दवाई हर हाल में मुफ़ीद और मुअस्सिर है ओर हक़ीक़त में भी ऐसा ही है।

कासनी .... हिंदबा

CHICORY-CICHORIUM INTYBUS

कासनी ज़माना क़दीम से ग़िज़ा और दवा के तौर पर मक़बूल चली आती है; योरप में ज़्यादा तौर ख़ूदर्द होती है और वहाँ पर जंगलों में उग आने वाली कासनी को इमराज़े तनफ़्फ़ुस के इलाज में बड़ी मक़बूलियत हासिल है। वहां के दवा फ़रोश अब भी जंगली कासनी का शर्बत SYROUP OF WILD CHICORY के नाम से फ़रोख़्त करते हैं जिसे बच्चों की खांसी के लिए मुफ़ीद माना जाता है। पाकिस्तान के शिमाल मग़रिबी इलाक़ों, भारत में मुम्बई और दक्किन के इलाक़ों में जानवरों के लिए चारा के तौर पर काश्त की जाती है। न्यूज़ीलैंड में इसके बीज पोने दो फ़ुट और बम्बई में छे इंच के फ़ासले पर बोए जाते हैं। फ़सल चार माह में पक कर तैयार होती है। इसके ताज़ा पत्ते सलाद के तौर पर खाए जाते हैं।

कासनी के पत्ते फूल, बीज और जड़ें दवा के तौर पर इस्तेमाल होते हैं। एक ख़ास क़िस्म के हल से जड़ें खोदने के बाद उन्हें चौदह दिन तक खेतों में रखा जाता हैं अगर इससे ज़्यादा रखें तो वह सूख कर ख़ुश्बू छोड़ जाती हैं। जड़ों को धूप या कढ़ाइयों में भून कर पीस कर कॉफ़ी में इनकी मिलावट करते हैं ऐसी मिलावट शुदा कॉफ़ी का आसानी से पता चल सकता है वह यूं कि पोडर को ग्लास में डाल दें। कॉफ़ी हल्की होने की वजह से सतह पर तैरती रहेगी जबकि कासनी नीचे बैठ जाएगी और पानी का रंग भी

भूरा कर देगी।

अरबी में इसे हिंदबा के अलावा अरफ़े आम में "बज़रुल्ला" कहते हैं। क्यूंकि अहादीस में इसकी ख़ासी तारीफ़ मज़कूर है। अतिब्बा ने इसकी बस्तानी (मज़रूआ) क़िस्म को बहतर क़रार दिया है।

अहादीस नबवी सल्ल०

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

عليكم بالهندباء فانه مان يوم الاوهو يقطر عليه من قطر الجنة (ابونعيم)

(तुम्हारे लिए कासनी मौजूद है। क्यूंकि कोई ऐसा दिन नहीं गुज़रता जब जन्नत के पानी के क़तरे इस पर न गिरते हों)

इसी बात को मुहम्मद अहमद ज़हबी रह॰ ने अबू नईम ही के हवाले से यूं बयान किया है:

كلوا الهندباء ولايغضوه. فانه ليس من الايام الاوقطراتٌ من الجنة تقطر عليه.

(कासनी खाओ मगर इसे झाड़ो मत। क्यूंकि ऐसा कोई दिन नहीं गुज़रता जब जन्नत के पानी के क़तरे इस पर न गिरते हों)

मुहम्मंद अबू बकर अलक़ैय्यम रह॰ ने हिंदबा की तारीफ़ में तीन अहादीस नक़ल की हैं जिनके बारे में इनका क़यास मरफ़ूअ होने का है।

١. كلوا الهندباء ولاتنفضوه. فانه ليس يوم من الايام الاوقطرات من الجنت تقطر عليه.

(कासनी खाओ और इसके पत्तों को मत झाड़ो। क्यूंकि ऐसा कोई दिन नहीं गुज़रता जब जन्नत के पानी के क़तरे इस पर न गिरते हों।)

٢. من اكل الهندباء ثم نام عليه: لم يحل فيه سم ولاسحرٌ.

(जिसने कासनी खाई और सो गया। इस पर जादू और ज़हर भी असर अंदाज़ न होगा)

٣. مامن ورقة. من ورق الهندباء الاوعليها قطرة من الجنة.

(कासनी के पत्तों में से ऐसा कोई पत्ता नहीं जिस पर जन्नत के पानी के क़तरे न गिरे हों)

मुहद्दिसीन किराम का उसूल है कि वह हसन और सही अहादीस के अलावा दीगर पर तवज्जह नहीं देते। मगर यहां कैफ़ियत यह है कि एक ही बात पांच मुख़्तलिफ़ ज़राए से मयस्सर आ रही है। जब एक बात को पांच मुख़्तलिफ़ रावी अपने अपने अंदाज़ में रिवायत कर रहे हैं तो इसे तसलीम करना ही पड़ता है और इसे हसन कहना पड़ेगा।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे किसी ख़ास बीमारी या हालात में तजवीज़ नहीं फ़रमाया बल्कि इसकी अहमियत के बाब में इतनी बात बतादी के जन्नत से पानी के क़तरे रोज़ाना इस पर गिरते हैं। इस इरशाद के जो माने एक आम क़ारी की समझ में आते हैं वह यह कि इसके इस्तेमाल में बरकत है। इसे

जिस कैफ़ियत में भी इस्तेमाल करें मुफ़ीद होगी। यही वजह है कि अब तक अतिब्बा ने इसे सैकड़ों क़िस्म की बीमारियों में आज़माया और आम तौर पर मायूसी नहीं हुई।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

कास्नी के पत्तें का रस निचोड़ कर बिच्छू के काटे पर लगाने से दर्द और वरम जाते रहते हैं।

इसके पत्तों का रस आंखों में डालने से मोतिया को फ़ाएदा होता है।

मुहद्दिस इब्नुलक़ैय्यम कहते है। "ولبن اصلها يجلو بياض العين."

(आंख की सफ़ैदी से मुराद मोतिया बिंद भी हो सकता है और आंख के सामने वाले सियाह हिस्से के ऊपर आने वाली सफ़ेदी जिसे उर्दू में फोला और पंजाबी में "चटा" कहते हैं, हो सकते हैं। इमकान मौजूद है कि यह दोनों में मुफ़ीद है। अतिब्बा क़दीम ने इसके पत्ते कूट कर आंख के ऊपर पलट्स की सूरत बांधे हैं और इसके पत्तों को अर्क़ गुलाब में खरल करके सलाई के साथ आंखों में लगाया है। लेकिन मुहद्दिसीन कासनी की जड़ के पानी को आंख में लगाने की तजवीज़ करते हैं।)

कासनी मिज़ाज को दुरुस्त करती है। यह गर्मी में हिद्दत पहुंचाती है। और सर्दी में ठंडक। क़ाबिज़ है और आंतों में जलन को रफ़अ करके ठंडक देती है। मेअदे के लिए बहुत मुफ़ीद है। अगर इसके पत्तों को पकाकर सिरका के हमराह खाया जाए तो पेट की जुमला बीमारियों के लिए मुफ़ीद है। इसके पत्तों को काट कर वरम वाले मक़ाम पर बांधें तो सूजन और ख़ास तौर पर नुक़रस की दुक्खन जाती रहती है।

जिगर और मरारह के सुद्दे खोलती है। ख़ून की नालियों से रुकावट दूर करती है। जिगर और इसकी नालियों में रुकावट की वजह से अगर यरक़ान हो गया हो तो इसके पत्तों का पानी बड़ा मुफ़ीद है। इस ग़र्ज़ के लिए अगर इसे राज़ या नज और खजूरों के साथ मिलाया जाए तो फ़वाइद और भी बढ़ जाते हैं।

इसके पत्तो को धो कर इस्तेमाल में लाना जाइज़ नहीं क्यूंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पत्तों पर जन्नत के पानी के गिरने की इत्तिला दी है। ज़हरों के असरात को ज़ाइल करने में कासनी दूसरी अदविया से ज़्यादा मुअस्सिर है। एक नुसख़े के मुताबिक अगर इसके पानी में ज़ैतून का तेल मिला लिया जाए तो यह हर क़िस्म की ज़हरों हत्ता कि सांप के ज़हर का भी इलाज है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

कासनी के पत्ते क़ब्ज को रफ़ा करते हैं। इनको चबाने से मुंह से ख़ून निकलना बंद हो जाता है। 9 माशा पत्ते या फूल सर्द पानी के साथ खाने से अंदर से आने वाला ख़ून भी बंद हो जाता है यह खांसी के लिए मुफ़ीद नहीं।

लेकिन पेट में नफ़ख़ या जिगर में ख़राबी के साथ अगर खांसी भी हो तो इससे बढ़ कर कोई दवाई नहीं।

अगर पेट में सोज़िश हो तो जौ के हमराह ज़्यादा मुफ़ीद है। इस्हाल, पेचिश और ख़ून के दस्तों को रोकती है। अगर इसके साथ थोड़ी सी सौंफ़ और तुख़मे कसूस शामिल कर लें तो फ़ाएदा बढ़ जाता है। बाज़ अतिब्बा इस नुसख़े में सिरका की सिकंजीन या शर्बत बजूरी में शामिल करते हैं

इम्राज़े जिगर और मरारह कासनी की हर शक्ल न सिर्फ़ कि मुफ़ीद है बल्कि सुद्दे और रुकावटें खोल देती है। इस्तसक़ा में मुफ़ीद है। गुर्दों और पेशाब की नालियों से रुकावटों को दूर करती है। इसलिए मदरुलबोल होने के अलावा पथरियों को निकालती है।

कासनी के हरे पत्तों का पानी सिरका और संदल मिलाकर माथे पर लगाने से गर्मी का सर दर्द जाता रहता है। यही मुरक्कब पित्ती उछलने और गर्मी दानों के लिए थोड़ा सा पानी मिलाकर लगाने से फ़ोरी फ़ाएदा करता है। पत्तों के जोशांदे में सिरका और नमक मिला कर ग़रारे करने से मुंह की सोज़िश और गले की सूजन जाती रहती है।

कासनी के बीज पीस कर संदल और सौंफ़ के साथ उबाल कर शर्बत बनफ़शा के साथ पीने से रात को नींद ख़ूब आती है। इस नुस्ख़े से पित्ते का सुफ़रा ज़ाइल होता है और मुंह से ख़ून आना बंद हो जाता है।

इब्ने ज़ैर कहता है कि कासनी की जड़ को बिच्छू के काटे पर पीस कर लगाने से जल्द आराम आ जाता है।

कासनी का अर्क़ गुर्दों और मेदे की सोज़िश के लिए मुफ़ीद है। इसके पीने से पेशाब के साथ आने वाला ख़ून बंद हो जाता है। पुराने डाक्टर जंगली कासनी की जड़ों के जोशांदे को इमराज़े मेअ़दा व अमआ में अक्सीर क़रार देते हैं।

कीमयावी हैइयत:

जर्मन कीमिया दानों ने 1826 में कासनी के फूलों से एक जुज़्वे आमिल CICHORIN दरयाफ़्त किया जो कीमयावी तौर पर ग्लूकोसाइड है। पौधे को जलाया जाए तो राख से ज़्यादा मिक़दार में पोटाशियम थोड़ा सा सोडियम कैल्शियम, एल्यूमिनियम, क्लोराइड, कारबोनेट और रेत के मुरक्कबात मिलते हैं। पौधे से एक तेल भी हासिल किया गया है। जो सहीह मानों में फ़राज़ी नहीं। क्यूंकि यह पूरी तरह उड़ नहीं जाता। इस तेल में PALMATIC STEARIC-OLEIC और LINOLIC एसिड पाए जाते हैं।

पौधे की जड़ों में MANNITE- TARTARIC ACID STEARIN के अलावा एमूनयाई मुरक्कबात में BETAINE - CHOLIN. पाए जाते हैं। यह मुरक्कबात जिगर की इसलाह में मशहूर हैं। जड़ों में पाई जाने वाली INULIN कुछ अरसे के बाद INULIDE FRUCTOSE में तब्दील हो जाती है। जिससे पता चलता है कि कासनी के पौधे में ENZYME भी पाए जाते हैं। अगर्चे इसमें कड़वे माद्दे और लुआब भी मिलते हैं मगर इसके साथ फ़्रक्टोस की मिठास भी है। जब इसे भूना

जाए तो बाज़ जौहर अपनी कीमयावी हैइयत तब्दील कर लेते हैं। मगर इसमें DEXTRIN और CARAMEL मौजूद रहते हैं।

अतिब्बा जदीद के मुशाहिदात:

बस्तानी कासनी प्यास को बुझाती है और जिस्म को तवानाई देती है। बढ़ी हुई तिल्ली, बुख़ारों और इसहाल में मुफ़ीद है। पौधे का बहतरीन हिस्सा इसकी जड़ है। इसमें ख़ुश्बू के अलावा इसहाल को रोकने की सलाहियत के साथ पेशाब आवर है।

पुराने डाक्टर इसकी जंगली क़िस्म को दमा, खांसी, सर दर्द, भूख की कमी और कमज़ोरी में इस्तेमाल करते आए हैं यह हैज़ आवर है। इस ग़र्ज़ के लिए पौधे के किसी भी हिस्से का जोशांदा मुफ़ीद है।

कासनी के इस्तेमाल से पित्त सुफ़रा के इख़राज में इज़ाफ़ा होता हैं हाज़मा की इसलाह करती है। जिस्म को तक़वियत देती है। ज़्यादा मिक़दार में मुस्हल और पेशाब आवर है। कॉफ़ी में कासनी मिलाकर मुसलसल इस्तेमाल करने से बीनाई ख़राब होती है।

नदकारनी के मुशाहिदे के मुताबिक़ कासनी का सफ़ूफ़, मग़ज़ तरबूज़ या ख़रबूज़ा और सौंफ़ मिलाकर इसके सफ़ूफ़ का निस्फ़ छोटा चम्मच कुछ अर्से खाया जाए तो गुर्दों से पथरी निकल जाती है।

इसके पत्तों का लेप जोड़ों की सूजन के लिए मुफ़ीद है।

होम्योपैथिक तरीक़ाए इलाज:

कासनी की जड़ों से मदर टिंक्चर बनता है। CICHORIUM INTYBUS इन तमाम कैफ़ियात में इसतेमाल होती है। जब जिस्म पर थकन की कैफ़ियत तारी हो, बोझ महसूस होता है और ऐसा लगता हो कि जिस्म में न तो जान है और न ताक़त, आज़ा शिकनी, मेअदा पर बोझ, जिस्म और दिमाग़ में थकन, सुबह उठें तो आंखें भारी और थकी हुई में कासनी की मदर टिंकचर मुफ़ीद है।

कलोंजी ...... हबबत अलसौदा

NIGELLA SATIVA - BLACK CUMIN

कलोंजी ज़माना क़दीम से अचार डालने और पेट की बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल होती आई है। आयुर्वेदिक तिब में "कृष्ण जेरिक" और काली जेरी के नामों से बयान किया गया है। अंग्रेज़ी नाम के मअने कालाज़ीरा है। हालांकि ज़ीरा बिल्कुल मुख़तलिफ़ चीज़ है।

कलोंजी का पौदा झाड़ियों की मानिंद तक़रीबन आधा मीटर ऊंचा होता है। जिसको नीले रंग के फूल लगते हैं। यह पौदा असल में तुर्की और इटली में होता था। जहां से हुकमा ने उफ़ादियत की बिना पर हासिल करके बर्रे सग़ीर में काश्त किया। यह ख़ुदरौ भी होता है और इसकी मज़रूआ अक़साम भी हैं पंजाब में इसे प्याज़ के बीज समझा जाता है जो कि ग़लत है। इसके बीज तिकोने ख़ुश्बू में तेज, ज़ाएक़े में तेज़ और काग़ज़ के लिफ़ाफ़े में रखें तो इस पर तेल

के से धब्बे लग जाते हैं।

यूनानी और रूमी अतिब्बा इसके तिब्बी फ़वाइद से आशना थे और जालीनूस के मुतअद्दिद नुसख़ों में कलोंजी को शहद या सिरका में मिलाकर इस्तेमाल किया गया है। यह मफ़रूज़ा दुरुस्त नहीं कि अरब अतिब्बा ने इसका इस्तेमाल यूनानियों से सीखा। क्यूंकि मशिरके़ वुस्ता के अतिब्बा ने इस्लाम की आम्द से पहले इसका कहीं ज़िक्र नहीं किया। इसका इस्तेमाल इसलाम की आम्द के बाद शुरू हुआ। क्यूंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे शिफ़ा का मज़हर क़रार दिया।

अहादीसे नबवी सल्ल0

انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول في الحبة السوداء شفاءٌ من كل داءٍ الاالسلام. والسام الموت. والحبة السوداء الشونيز.

(بخاری۔ مسلم۔ ابن ماجہ۔ مسند احمد)

(मैंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना: वह फ़रमाते थे कि काले दाने में हर बीमारी से मौत के सिवा शिफ़ा है। और काले दाने शोनीज़ है।)

عن سالم بن عبدالله يحدث انابيه. ان الرسول الله صلى الله عليه وسلم قال عليكم بهذه الحبة اسوداءٍ. فان فيه شفاءٌ من كل داءٍ الاسلام. (ابن ماجہ)

(सालिम बिन अब्दुल्ला अपने वालिदे मुहतरम हज़रत उमर रज़ि0 से रिवायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपने ऊपर इन काले दानों को लाज़िम कर लो कि इनमें मौत के अलावा हर बीमारी से शिफ़ा है)

यही रिवायत मसनद अहमद में हज़रत आइशा रज़ि0 से इब्नुलजोज़ी और तिर्मिज़ी में अबूहुरैरा रज़ि0 से मज़कूर है।

हज़रत बुरीदा रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

الشونيز دواء من كل داءٍ الاسلام وهول الموت (ابن السنی)

(शूनीज़ मौत के सिवा हर बीमारी का इलाज है)

इसी क़िस्म की एक लम्बी रिवायत अब्दुल्ला बिन बुरीदा अपने वालदि से कलोंजी की तारीफ़ में बयान करते हैं जिसे मसनद अहमद ने बयान किया।

हज़रत अबु हुरैरा रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مامن داء الاونى الحبة السوداء منه شفاء. الاالسلام (مسلم)

(बीमारियों में मौत के सिवा ऐसी कोई बीमारी नहीं जिस के लिए कलोंजी में शिफ़ा न हो)

कुतुब सीरत में मज़कूर है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद भी तिब्बी ज़रूरियात के लिए कभी कभी कलोंजी खाया करते थे। मगर वह इसे शहद के शर्बत के साथ नोश फ़रमाते थे।

من خالد بن سعد قال خرجنا ومعنا غالب بن الجبر. فرض في الطريق نقد منا

المدينة وحصوم مريض. فعادهٗ ابن ابی عتيق وقال لنا عليم بهذه الحبة السوداء فخدومنها خمسا اوسبحاً فاسحقوها ثم اقطرو هافى القه بقطرات زيتٍ فى هذا الجانب وفى هذالجانب. فان عائشة حدشتهم. انها سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول. ان هذهِ الحبة السوداء شفاءٌ من كل دآءٍ الا ان يكون السامُ وقلت وما السام قال الموت۔ (بخاری،ابن ماجہ)

(ख़ालिद बिन सअद बयान करते हैं कि मैं ग़ालिब बिन जिब्र के हमराह सफ़र में था। वह रासते में बीमार हो गए। हमारी मुलाक़ात को इब्ने अतीक़ अबी अतीक़ (हज़रत आइशा रज़ि० के भतीजे) तशरीफ़ लाए। मरीज़ की हालत देख कर फ़रमाया कि कलोंजी के पांच सात दाने ले कर इनको पीस लो, फिर इन्हें ज़ैतून के तेल में मिलाकर नाक के दोनों तरफ़ डालो, क्यूंकि हमें हज़रत आइशा ने बताया है कि रसूलल्ललल्लाह सल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि इन काले दानों में हर बीमारी से शिफ़ा है। मगर साम से, मैंने पूछा कि साम क्या है। उन्होंने कहा कि मौत।)

इसके इलाज से ग़ालिब बिन जिब्र तंदरुस्त हो गए।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

अरबी में जिसे हब्बतुस्स सौदा कहते हैं फ़ारसी में वह शूनीज़ है। मुहद्दिस अब्दुल्लतीफ़ ने ज़ीरा सियाह क़रार दिया और इसको "الكمون الهندى" का इज़ाफ़ी नाम दिया है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे हर बीमारी की दवा क़रारा दिया है। यह बिल्कुल इसी तरह है जिस तरह कुरआन मजीद में आया:

سراسر رتيت من كل شئٍ

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुतअद्दिद मक़ामात पर ऐसी ख़ुश ख़बरियां अता की हैं ज़ैसे कि सुबह खजूर खाने वाला ज़हर से महफ़ूज़ रहता है या सना और ससनौत में भी हर बीमारी से शिफ़ा है। इनके यह इरशादात मोजिज़ात नबुव्वत में से हैं। इसी बिना पर कलोंजी इस अम्र में यकता है कि वह बीमारियां ख़्वाह हिद्दत से हो या बरूदत से यकसां मुफ़ीद है।

ज़हबी रह॰ कहता है कि कलोंजी जिस्म के किसी भी हिस्से में वाके़ रुकावट यानी सुद्दे को दूर करती है। तबख़ारी मादे को ख़ारिज करती हैं मेदे को मज़बूत करती है। हैज़ दूध और पेशाब लाती है। अगर इसे पीस कर सिरका में मिलाकर खाया जाए तो पेट के कीड़े मार देती है। और पुराने ज़ुकाम में मुफ़ीद है। इसको गर्म करके सूंघना भी ज़ुकाम में मुफ़ीद है।

अगर इसका तेल निकाल कर गंज पर लगया जाए तो बाल उगते हैं और बाल जल्द सफ़ेद नहीं होते। इसका निस्फ़ चम्मच में पीस कर पानी के साथ पीने से दमें में मुफ़ीद है और भिड़ के ज़हर के असर को ज़ाइल कर देता है।

कलोंजी लगातार खाने से बावले कुत्ते की ज़हर का असर ज़ाइल हो जाता है। इसका धुआं सांस की तकालीफ़ को दूर करता है। रोटी के साथ खाएं तो पेट में हवा नहीं भरती। ज़ुकाम, फ़ालिज, लक़वा, दर्द शक़ीक़ा, नसयान, चक्करों

घबराहट में मुफ़ीद है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इल्म वसी है और वही इलाही पर मबनी रहा है। उन्होंने जब इसे शिफ़ा का मज़हर क़रार दिया है तो इसके साथ की फ़हरिस्त सफ़हए क़रतास में अहाता कर लिया जाना मुमकिन नहीं।

कलोंजी की हैसियत पर इब्नुल क़य्यम रह० कहते हैं अलहरबी रह० ने हज़रत इमाम हसन रज़ि० की सनद से इसे ख़रौल क़रार दिया है (ख़रौल को हमारे यहां अलसी कहते हैं। जो कि बिल्कुल मुख़्तलिफ़ चीज़ है) अलहरवी ने इसे अलजत्ता अलख़िज़रा क़रार दिया है। लेकिन यह शूनीज़ है और इसमें कोई मुग़ालता नहीं। यह नफ़ख़ को दूर करती है। पेट से चरने कीड़े निकाल देती है। बुख़ारा उतारती है। बलग़म निकालती है। रुकावटें खोती है। मेअ्दा और लबलबा की रतूबतों को एतिदाल पर लाती है। (यह बात ज़ियाबेत्स के इलाज में बड़ी अहमियत रखती है। अगर इसे पीस कर गर्म पानी में शहद के शर्बत के साथ पिया जाए तो गुर्दों और मसाना से पथरी निकाल देती है। इसके इज़ाफ़ी फ़वाइद में दूध, हैज़ और पेशाब को खोल कर लाना भी शामिल है। ज़ुकाम में इसका सूंघना और पीना मुफ़ीद है। इसके बीज पीस कर दूध में मिलाकर पीने से यरक़ान में फ़ाएदा होता है। इसको मुसलसल खाने से लक़वा और फ़ालिज दूर हो जाते हैं। इसी जोशांदे को पीने से बवासीर ख़त्म हो जाती है और जानवरों के काटे का ज़हर ख़ास तौर पर भिड़ का ज़ाइल हो जाता है। बाज़ लोगों ने इसे सांप के ज़हर के लिए भी तिरयाक़ क़रार दिया है।

कलोंजी को सिरका में पकाकर इसकी कुल्लियां करने से मसूढ़ों की सोज़िश और दांतों का दर्द जाता रहता है। इसे आंखों में पीस कर डालने से मोतिया अगर इब्तिदा में हो तो ठीक हो जाता है। सिरका और कलौंजी का मुरक्कब जिल्दी इम्राज़, एग्ज़ीमा वग़ैरा में अज़हद मुफ़ीद है। ज़ैतून के तेल में कलोंजी को उबाल कर छान कर इस तेल के चंद क़तरे कान में डालने से इसकी सोज़िश ठीक हो जाती है। यह मुरक्कब नाक में डालना पुराने ज़ुकाम में मुफ़ीद है।

ज़ख़्मों पर छिलके आते हों तो चंद रोज़ कलोंजी और तेल लगाएं फिर कलोंजी और सिरका लगाने से जिस्म के किसी भी हिस्से के फोड़े फुंसियां ठीक हो जाते हैं जिल्द के दाग़ जाते रहते हैं और बर्स में फ़ाएदा होता है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

सर्द खांसी, दर्दे सीना, इस्तस्क़ा और रियाही क़ौलंज में मुफ़ीद है। पेट के कीड़ों को ख़ारिज करती है। अगर क़ै में पीप आती हो मतली के साथ तिल्ली में वर्म हो। और सांस लेने में तकलीफ़ होती हो तो कलोंजी से जल्द फ़ाएदा होता है। इसे पानी में पकाकर शहद मिलाकर पीने से मसाने की पथरी निकल जाती है। इसे नहारमुंह रौग़ने ज़ैतून के साथ खाया जाए तो चहरे का रंग सुर्ख़ हो जाता है। इसे गर्म करके सूंघने से ज़ुकाम दूर होता है।

कलोंजी के इस्तेमाल से खट्टी डकारें बंद हो जाती हैं। इसे सिरके में भिगो कर ख़ुश्क करके पीस कर सात ग्राम रोज़ाना खाने से बावले कुत्ते के ज़हर का

असर ज़ाइल हो जाता है।

वैदिक तिब में भी कलोंजी मक़बूल है। इनके मुशाहेदात में यह पेट और मेअ्दे के बादी के दर्द को दूर करती है। बदहज़मी और ज़अ्फ़े हज़्म का इलाज है। औरतों का दूध बढ़ाती है। फोड़ो का इलाज है। चूंकि यह बच्चा निकाल देती है। इसलिए हामला औरतों को न देनी चाहिए। इसका तीन माशा सफ़ूफ़ मक्खन में मिलाकर चटाने से हिचकी बंद हो जाती है। पेशाब की रुकावट को दूर करती है।

सिरका और सनूबर की लकड़ी के बुरादे के साथ कलोंजी को उबाल कर दांतों पर लगाने से दर्द जाता रहता है। सिरका और कलोंजी लगाने से मस्से झड़ जाते हैं। कलोंजी और हुब्बुर्रिशाद को मिलाकर सिरके में उबाल कर गंज पर लगाने से बाल उग आते हैं। इसके धुएं से ज़हरीले कीड़े भाग जाते हैं। इसे गर्म कपड़ों में रखें तो इनको कीड़ा नहीं लगता।

कलोंजी, बाबची, गोगल, दार हल्दी की जड़, गंधक में से हर एक पाँच तोला को नारियल के दो बोतल तेल में पीस कर डाल दें। यह बोतल सात दिन तक धूप में पड़ी रहे। कभी–कभी हिलाते रहें। फिर छान कर तेल अलाहिदा कर लें। इस तेल को लगाने से अकसर जिल्दी बीमारियां और बर्स ठीक हो जाते हैं। पानी में कलोंजी मिलाकर लेप करने से छीप जाती रहती है।

कीमयावी हैइयत:

कलोंजी के बीजों में दो क़िस्म के तेल होते हैं। एक वह जो उड़ जाने वाला होता है और दूसरा गाढ़ा, फ़राजी तेल 1.5 फ़ीसदी जबकि गाढ़ा तेल 37.5 फ़ीसदी होता है। इसके अलावा अलब्यूमन, मिठास, लेसदार और नामयाती तेज़ाब और ग्लूकोसाइड MELANTHIN METARBIN के अलावा कड़वाहट वाले अनासिर पाए जाते हैं। इसमें पाया जाने वाला ग्लूकोसाइड समयाई असरात रखता है। इसलिए कलोंजी को ज़्यादा मिक़दार में मुसलसल खाना तकलीफ़ का बाइस हो सकता है।।

जदीद मुशाहिदात:

अतिब्बा ने इब्तिदा ही से इसे इम्राज़ुल बतन में बड़े एहतिमाम से इस्तेमाल किया है। क्यूंकि वह इसे ज़ीरा की क़िस्म समझते रहे हैं। जालीनूस को पेट की बीमारियों के इलाज में बड़ा दावा था। इस बाब में इसका ज़्यादा तर नुसख़ा कलोंजी को शहद में मिलाकर देना था। इत्तिफ़ाक़ से यह एक तर्कीब है कि इसे पेट की बीमारियों के अलावा सांस की घुटन, जिगर की ख़राबी, फोड़े फुंसियों और आअ्साबी तकालीफ़ में बड़े एतिमाद के साथ दिया जा सकता है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे हर बीमारी में शिफ़ा क़रार दिया है। इस उसूल को सामने रख कर ज़ियाबेत्स के मरीज़ों को तीन हिस्सा कलोंजी और एक हिस्सा कासनी के बीज मिलाकर नाश्ते के बाद एक छोटा चम्मच दिया गया। एक हफ़्ते में ख़ून में ग्लूकोज़ की मिक़दार कम होने लगी। पेशाब में शकर ख़त्म हो गई। अब तक नव्वे मरीज़ों पर यह इलाज निहायत अच्छे नताइज

के साथ इस्तेअ़माल किया जा चुका है। लेकिन ज़ियाबेत्स के लिए इसे मुकम्मल शिफ़ा क़रार देना भी क़ब्ल अज़वक़्त है। मज़ीद मुशाहिदे की ज़रूरत मौजूद है। इसके बीजों को दूध उतारने, हैज़ का ख़ून बढ़ाने और पेशाब लाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यूरोप में दर्द से हैज़ आने के लिए यह मशहूर दवाई है। ज़्यादा मिक़दार में देने से इसक़ात का ख़तरा हो सकता है।

पेट से हवा निकालने और बदहज़मी में मुफ़ीद है। कलौंजी के साथ क़िस्त शीरीं में मिलाकर नाश्ता और रात के खाने के बाद दें तो पुरानी पेचिश के अलावा दमें में भी मुफ़ीद है। दमे के वह मरीज़ जिन पर दीगर अदविया का असर नहीं हो रहा था कलौंजी की आमीज़िश से बहतर होने लगे।

क़िस्त शीरीं जिंसी कमज़ोरी के लिए अच्छी दवाई है। मगर बसा औक़ात इसका तनहा असर इतना मुफ़ीद नहीं होता। ऐसे में इसके साथ हुब्बुर्रिशाद और कलौंजी को जब शामिल किया गया तो फ़ाएदा जल्द हो गया।

कलौंजी को क़िस्त हुब्बुर्रिशाद में हम वज़न मिलाकर पीने के बाद सिरके में हल करके उबाला गया। फिर छान कर अदविया के फोक निकाल दिए। यह लोशन जिल्दी इमराज़ के लिए अज़हद मुफ़ीद रहा। अगर्चे जिल्द के इमराज़ की एक लम्बी फ़हरिस्त है और ऐसी कोई दवाई मौजूद नहीं जो हर एक में मुफ़ीद हो। लेकिन यह नुसख़ा अकसर बीमारियों में फ़ाएदा देता है।

कलौंजी और हुब्बुरिशाद को हम वज़न मिलाकर तवे पर जला कर इसे सिरके में हल करके मरहम बनाई गई यह मरहम बर्स के दाग़ों पर लगाने से दाग़ तीन चार माह में ठीक हो गए मगर इसके साथ इसी नुसख़े को भूने बग़ैर ख़ालिस सूरत में शहद के शर्बत के साथ मरीज़ को एक चम्मच रोज़ाना खिलाया गया। बर्स वह बीमारी है जिसका आम हालात में कोई इलाज नहीं। मगर इससे ठीक हो गई। गिरते बालों बल्कि गंज पर बाल उगाने के लिए और बफ्फ़ा के इलाज में कलौंजी और महंदी को सिरके में हल करके अगर सर पर तीसरे दिन एक घंटे के लिए लगाया जाए तो मुफ़ीद है।

भारती माहिरीन ने इसे नफ़ख़, दर्द शिकम, क़ौलंज, इस्तसक़ा, ज़अ़फ़, आसाबे ज़अ़फ़ दिमाग़, निस्यान, फ़ालिज और रअ़शा में मुफ़ीद क़रार दिया है। पुराने हिफ़्फ़ाज़ बच्चों को कुरआन हिफ़्ज़ कराते वक़्त याददाश्त को बहतर बनाने के लिए नहार मुंह कलौंजी के चंद दाने खिलाते थे।

खजूर–तमर–बलह–रतब

DATES

PHOENIX - DACTYLIFERA

खजूर एक आम दरख़्त है जो मशरिक़े वुस्ता, अमरीका और एशियाई मुमालिक में कस्रत से पाया जाता है। शिमाली अफ़्रीका भी खजूर का घर है। अमरीका मे केलीफ़ोर्निया की खजूरें बड़ी लज़ीज़ और मक़बूल हैं। हिंदुस्तान में राजस्थान, महाराष्ट्र में यह कसरत से होती हैं। मालाबार ट्रावंकूर और मैसूर के इलाक़े में खजूर की एक क़िस्म PHOENIX FARINIFERA पाई जाती है। जिसे हिंदी में

पलवत कहते हैं। यह हजम में छोटी और मिठास में क़दरे हल्की होती हैं। इनमें लेसदार माद्दा ज़्यादा होता है। इसी तरह मग़रिबी घाट के इलाक़े में एक जंगली क़िस्म PHOENIX SYLVESTRIS जिसे महाराष्ट्र के लोग शिंडी कहते हैं। अंग्रेज़ी में यह जंगली खजूर के नाम से मौसूम है। इसे तने से निकलने वाले लेसदार पानी के लिए ज़्यादा तौर पर काश्त किया जाता है। कहा जाता है कि इस खजूर में तवानाई दूसरों से ज़्यादा होती है।

पाकिस्तान में खजूर के लिए ख़ैरपुर, मुलतान और डेरा ग़ाज़ीख़ां के इलाक़े अगर्चे ज़्यादा मशहूर हैं मगर खजूर चारों सूबों में मिलती है। बल्कि सूबा सरहद में खजूरें अगर्चे कम होती हैं मगर इनका मेअ़यार उम्दा होता है। इसी तरह लाहौर के आस-पास भी पाई जाती है मगर उम्दगी नहीं होती। कहते हैं कि ख़ैरपुर और डेरा ग़ाज़ी ख़ां के इलाक़े में खजूर की 95 अक़साम काश्त की जाती हैं और वहां इसका मुरब्बा भी डाला जाता है।

अरबी एक जामेअ़ और मुकम्मल ज़बान है जिसमें तलवार के सौ नाम हैं। हर नाम तलवार की मुख़तलिफ़ हैसियत को ज़ाहिर करता है। इसी तरह खजूर के जुमला अक़साम और हालतें अलाहिदा नाम रखती हैं।

बलहः यह कच्ची खजूर है जो ख़्वाह दरख़्त के साथ लगी हो या उतार ली गई हो

बुसराः यह कच्ची और ज़र्द खजूर है।

बसरः कच्ची खजूरें जब पकने के क़रीब आ जाएं, मगर अभी पकी न हों

तलाः जब कोंपलों से फल बनने लगे तो यह पहला शगूफ़ा है जो दरख़्त पर ज़ाहिर होता है।

मुतबः वह खजूर जो दरख़्त पर लगी हुई पूरी तरह पक जाए। अगर इसे उतारा न जाए तो अपने आप भी गिर जाती है। कुरआन मजीद ने हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम को यही चीज़ ज़चगी की कमज़ोरी के लिए मरहमत फ़रमाने का ज़िक्र किया है।

तमरः दरख़्त से पकने के बाद ख़ुश्क खजूर, जो आमतोर पर खाई जाती हैं

जिमारः खजूर का गाभा।

हशफ़ः रद्दी खजूरें

कुरआन मजीद में खजूर का ज़िक्र सिर्फ़ रितब और नख़ल की सूरत में आया है। जबकि अहादीस में यह आठ नामों से मौसूम होने के अलावा गुच्छों के ज़िक्र में दवाल के नाम से मज़कूर हैं पानी में भिगो कर इसका अर्क़ या शर्बत नबीज़ है।

हिंद-पाक में खजूर की तीन क़िस्में मशहूर हैं कच्ची खजूर, पकी हुई खजूर और ख़ुश्क खजूर यअ़नी छुहारा, सिंध और राजस्थान में क़िस्में तो यही हैं मगर इनके नाम ज़रा पेचीदा हैं हासून, लोनी खरकोन, वैना क्यून।

खजूर का दरख़्त बुनयादी तौर पर गर्म इलाक़ों में होता है। और यह उन

इलाक़ों में भी फल देता है जहां पानी कम हो। लम्बाई में तीस मीटर तक चला जाता है। मगर अब ठिंगनी अक़साम में भी काश्त की जा रही है। इसके बारे में कहा जाता है कि इसका सर धूप की वजह से आग में और पेर यअ़नी जड़ें पानी में होती हैं। गर्म इलाक़ों में ज़ेरे ज़मीन पानी की सतह नीची होती है इसलिए खजूर के दरख़्त की जड़ें बड़ी गहरी और लम्बी होती हैं ताकि यह दूर दूर अपने लिए पानी और तवानाई हासिल कर सके। मगर यह ऐसे इलाक़ों में भी पाया जाता है। जहां पानी छे फ़िट पर मौजूद होता है। ख़लीज़ अरब के किनारे के अकसर मुमालिक में ख़ास तौर पर सऊदी अरब के अश्शिरक़िया के साहली इलाक़ों में क़बर खोदना भी मुश्किल होता है। क्यूंकि जहां भी गढ़ा खोदा जाए पानी निकल आता है। इन इलाक़ों में ख़ास तौर पर अलक़तीफ़ तारूत, अलजबील, रास तनूरा में खजूरों के घने–घने जंगल मिलते हैं।

खजूर का दरख़्त जिंस के लिहाज़ से मुज़क्किर और मुअन्निस होता है। मुज़क्किर को फल नहीं लगता जबकि इसके दाने मुअन्निस पोदों को बारवर करने के लिए हवा या बाग़बानों की कोशिश से पहुंचाए जाते हैं। फल शदीद गर्मी में लगता है। जो गुच्छों की शक्ल में होता है। ऐसे दरख़्त भी हैं जिनके एक–एक गुच्छे में एक–एक हज़ार तक दाने होते हैं। दरख़्त की औसत उम्र 150 साल है। इसका कोई हिस्सा भी बेकार नहीं। पत्तों से टोकरियां बनती हैं। तना इमारती लकड़ी के तौर पर काम आता है। शाख़ें कुर्सियां बुनने और जलाने के काम आती हैं।

खजूर का दरख़्त दुनिया के अकसर मज़ाहिब में मुक़द्दस माना जाता है। हिंदू इसे दुर्गा पूजा में इस्तेमाल करते हैं। यहूदियों की FEAST OF THBER NACLESS खजूर पर मबनी है। ईसाइयों में PALM SUNDAY तहवार भी खजूर पर मनाया जाता है।

मुसलमानों में अहमियत की इंतिहा यह है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरख़्तों में से इस दरख़्त को मुसलमान कहा क्योंकि यह साबिर–शाकिर और ख़ुदा की तरफ़ से बरकत वाला है।

क़ुरआन मजीद के इरशादात:

ايودّ احدكم ان تكون لهٗ جنة من النخيل واعناب (۲۶۶_۳البقرہ۲)

(क्या चाहता है तुम में से कोई कि उसके पास बाग़ात हों खजूर और अंगूरों के)

فاخرجنا منه خضراً نخرج من حباً متراكبا ومن النخل من طلعها قنوانٌ دانية

(۹۹الانعام۶)

(बारिश के फ़वाइद के सिलसिले में इरशाद हुआ कि इसके बाद हम नबातात में एक क़िस्म उगाते हैं जिस में एक दूसरे पर चढ़ें तह दर तह दाने होते हैं। और इसमें खजूर के दरख़्त भी हैं जिसके गामे से फलों से झुक हुए ख़ोशे फूटते हैं।)

وھوالذی انشا جنّت معروشتٍ وغیر معروشات والنخل والزرع مختلفاً اكله

(۱۴۱الانعام۶)

(और वही है जिसने बनाए बाग़ात जो टीले पर चढ़े हैं या बिन चढ़े हैं और खजूरें और खेतियां जिन के ज़ाएक़े मुख़्तलिफ़ हैं।)

ونخيل صنوان وغير صنوان يسقىٰ بماءٍ واحد. (۴۔م الرعد ۱۳)

(और ज़मीन पर ऐसे क़ितए हैं जिनमें खजूरों के एक तह में सवा की गई तहों में बाग़ात हैं जिनको पानी एक ही ज़रिये से मयस्सर आता है। मुराद यह है कि एक ही ज़रिये का पानी कई क़िस्म की फ़सलें उगा देता है।)

يُنبت لكم به الزرع والزيتون والنخيل والاعناب ومن كل الثمرات (۱۱ک النحل ۱۶)

(वह ज़मीन से तुम्हारे लिए खेतियां और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है। इसका यह वह अमल है जिस पर वह लोगों को ग़ोरो फ़िक्र की दावत देता है।)

ومن الثمرات النخيل والاعناب (۶۷ک النحل ۱۶)

(अल्लाह ताला की इनायात के तज़किरे में खजूरों और अंगूर के दरख़्तों से हासिल होने वाले फलों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि तुम अगर ग़लत इस्तेमाल करो तो उनसे मंशियात हासिल होती हैं। वरना इनसे उम्दा क़िस्म की ग़िज़ा मयस्सर आती है।)

او تكون لك جنة من نخيل و عنب (۹۱اسرائيل۔۱۷)

(यह वह लोग हैं जो आरज़ू रखते हैं कि उनके लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ हो जिन में से नहरें निकल कर जा रही हों।)

واضرب لهم مثلا رجلين جعلنا لاحدهما جنتين من اعناب و حففنهما بنخل وجعلنا بينهما زرعا (۳۲ک الكهف ۱۸)

(उनके लिए दो ऐसे आदमियों की मिसाल बयान करो जिनमें से एक के पास दो बाग़ अंगूरों के हैं जिन के इर्द–गिर्द खजूरें हैं और उनके दर्मियान खेत हैं।)

فاجآء ها المخاضُ الى جِذع النَّخلةِ ط (۲۳ مريم ۹)

(ज़चगी की दरदें उसे खजूर के दरख़्त के तने की तरफ़ ले आएं (वह शिद्दते अलम से इसका सहारा लेने पर मजबूर हो गई)

وَهُزِّى اِلَيكِ بِجذع النَّخلَةِ تسقط عَلَيكِ رُطَبًا جَنِيًّا (۲۵ک مريم ۱۹)

(खजूर के दरख़्त के तने को जो जब हिलाए गी इसकी शाख़ों पर से तुम पर ताज़ा पकी हुई खजूरें गिरेंगीं)

ولاوصلبنكم فى جذوع النخل (۷۱ک۔طٰہٰ ۲۰)

(फ़िरऔन ने जादूगरों को धमकी देते हुए यह फ़िक़रा कहा था मैं तुम्हें खजूर के तनों के साथ लटकाकर फांसी दे दूंगा)

فانشانا لكم به جنت من نخيل واعناب لكم فيها فواكه كثيرة ومنها تاكلون.

(हम ने तुम्हारे लिए ज़मीन से खजूर और अंगूर के बाग़ पैदा किए जिनके बहुत से फलों को तुम खाते हो।)

وزروع ونخل طلعها هضيم (۱۴۸ک۔الشعرا ۲۶)

(और वहां पर ऐसे खेत और खजूर के दरख़्त हैं कि जिन की शाख़ें इनके फलों के बोझ से टूटी जा रही हैं।)

وجعلنا فيها جنت من نخيل واعناب (۳۴ يٰسين ۳۶)

(और हमने वहां तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ उगाए।)

والنخل بٰسقٰت لها طلع نضيد (۱۰ ق ۵۰)

(और खजूरों के बुलंदो बाला दरख़्त हैं जिनमें तह दर तह फलों के ख़ोशे लगे हैं।)

تنزع الناس كانهم اعجاز نخلٍ منقعرٍ (۲۰ القمر ۵۴)

(उस दिन ने लोगों को यूं उखाड़ कर फैंक दिया जैसे कि जड़ से उखाड़ी हुई खजूर के तने हों।)

فيها فاكهة والنخل ذات الاكمام (۱۱ م الرحمان ۵۵)

(वहां पर कई क़िस्मों के फल हैं और खजूरें ऐसी कि ख़ोशों वाली।)

فترى القوم فيها صرعىٰ كانهم اعجاز نخل خاوية (۷ ک الحاقہ ۶۹)

(देखा इस क़ौम को कि वह इस तरह गिरी हुई थी जैसे खजूर के तने की एक खोखली लकडही होती है।)

(فانبتنا فيها حباً. وعنبا وقضبا. وزيتون ونخلا.) (۲۷-۲۹ عبس ۸۰)

(और हमने उगाए तुम्हारे अजनास, अंगूर, तरकारियां और ज़ैतून और खजूरें, क्यूंकि बाग़ात घने होंगे।)

कुतुब मुक़द्दिसा:

तोरैत और इंजील में खजूर का ज़िक्र 84 मक़ामात पर आया है। जिन में अहम यह हैं।

"सो तुम पहले दिन ख़ुश्नुमा दरख़्तों के फल और खजूर की डालियां और घने दरख़्तों की शाख़ें और नदियों की बेद मजनूं लेना और तुम ख़ुदावंद अपने ख़ुदा के आगे सात दिन तक ख़ुशी मनाना।"

(अहबार 23:40)

मुसर्रत और शादमानी के इज़हार के साथ ख़ुदा की तकरीम के लिए खजूर का यह इस्तेअ़माल मज़हबी त्योहार को अहमियत देने के लिए तजवीज़ किया गया।

......तो कैसी जमीला और जांफ़िज़ा है! यह तेरी क़ामत खजूर की मानिंद है। (ग़ज़ल अलग़ज़लात 7:6:7)

जब लोगों की तकलीफ़ और अज़िय्यत का ज़िक्र किया गया तो इरशाद हुआ

"ताक ख़ुश्क हो गई, अंजीर का दरख़्त मुर्झा गया। अनार और खजूर और सेब के दरख़्त, हां मैदान के तमाम दरख़्त मुर्झा गए।(यूएल 1:12)

इरशादाते नबवी सल्ल0

(हज़रत नबी करीम सल्ल0 को खजूर बहुत पसंद थी। हज़रत का सहल बिन सअद अस्साअदी रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि)

ان النبی صلی الله علیه وسلم کان یاکل الرطب بالبطیخ زاد ابو داؤد ویقول یکسر حرّ هذا ببردهذا وبردهذا بحرهذا (ابن ماجہ۔ ترمذی۔ مسلم)

(मैंने उन्हें देखा कि वह खजूरों के साथ तरबूज़ खा रहे थे)

(अबू दाऊद ने इज़ाफ़ा किया कि उन्होंने फ़रमाया कि मैं खजूर की गर्मी को तरबूज़ की ठंडक से बराबर कर लेता हूं या तरबूज़ की ठंडक खजूर की गर्मी से ज़ाइल हो जाती है।)

बुसर रज़ि0 के बेटे रिवायत करते हैं।

دخل علینا رسول الله صلی الله علیه وسلم فقدمنا زبداً وتمراً وکان یحبالزبد والتمر (ابوداؤد۔ ابن ماجہ)

(हमारे यहां रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए हमने उनकी ख़िदमत में मक्खन और खजूरें पेश कीं। क्यूंकि उनको मक्खन के साथ खजूर पसंद थी)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 रिवायत फ़रतामी हैं: रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो-अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

کلوا لبلح بالتمر فان الشیطان اذا نظرابن آدم یاکل البلح بالتمر، یقول، بقی ابن آدحتیٰ اکل الحدیث بالعتیق. (ابن ماجہ، نسائی)

(पुरानी खजूर के साथ ताज़ा खजूर मिलाकर खाओ क्यूंकि शैतान जब किसी को ऐसा करते देखता है तो अफ़सोस करता है कि पानी के साथ नई खजूर खा कर आदमी तनोमंद हो गया।)

हज़रत यूसुफ़ बिन अब्दुल्ला बिन सलाम रज़ि॰ रिवायत करते हैं

رایت النبی صلی الله علیه وسلم اخذ کسوةً من خبز الشعیر فوضع علیها تمرةً. فقال هٰذه ادام هٰذهٖ. واکل. (ابوداؤد)

(मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि वह जौ की रोटी के एक टुकड़े पर खजूरें रखे हुए थे। फिर फ़रमाया कि यह इस रोटी के साथ सालन है।)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ि0 की शादी और वलीमा के हाल में बयान करते हैं।

فدعوت المسلمینالیٰ ولیتمہ. امر بالانطاع فسبطت فالقی علیها التمرو لاقط. والسمن. (بخاری)

(मैं ने लोगों को वलीमे की दावत पर बुलाया, चमड़े का दस्तरख़्वान बिछाया गया और इस पर खजूर, पनीर और घी रखा गया। बाज़ रिवायत से पता चलता है कि यह तीनों चीज़ें अली के एक कूंडे में खजूरें भिगोकर रखीं। सुबह इनको यह पानी पिलाया गया।)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं।

رایت النبی صلی الله علیه وسلم مقعیاً

एक दूसरी रिवायत में इज़ाफ़ा है: कि

یاکل تمراًیاکل منه اکلاً ذریعاً. (مسلم)

(मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि वह उकड़ू बैठे हुए खजूरें खा रहे थे। दूसरी रिवायत का इज़ाफ़ा है कि वह इस तरह बैठे हुए जल्द–जल्द खजूरें खा रहे थे।) 9

सुफ़ियान जिबला बिन यहीम रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर रजि० को फ़रमाते हुए सुनाः

نهی رسول الله صلی الله علیهوسلم ان یقرن الرجل بین التمرتین حتیٰ یستاذن اصحابه (بخاری، مسلم، ابن ماجہ)

(रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस अम्र से मनअ किया कि कोई शख़्स दूसरे शुरकाए मज्लिस की इजाज़त के बग़ैर बयक वक़्त दो या उनसे ज़ाइद खजूरें अकट्ठी खाए।)

खजूर की अहमियतः

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ बयान फ़रमाती हैं:

ان النبی صلی الله علیه وسلم قال لایجوع اهل بیتٍ عندهم التمر (مسلم)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस घर में खजूर हो, उस घर वाले कभी भूखे न रहेंगे।)

इस रिवयात को बाज़ महद्दिसीन ने एक दूसरी सूरत में यूं बयान किया है।

قال رسول الله صلی الله علیه وسلم یا عائشه: بیتٌ لاتمر فیه جیاعٌ اهله اوجاعٌ اهلة قالهامرتین اور ثلاثه (بخاری، مسلم، ابن ماجہ)

(रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ए आइशा जिस घर में खजूर न हो उस घर वाले भूके हैं। उन्होंने यह बात दो या तीन मर्तबा फ़रमाई कि उस घर वाले भूखे हैं।)

हज़रत सलमा रज़ि० रिवायत फ़रमाती हैं।

ان النبی صلی الله عله وسلم قال بیت لاتمر فیه کالیت لاطعام فیه. (ابن ماجہ)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस घर में खजूरें न हों वह घर ऐसा है जैसे इसमें खाना न हो।)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

تعشوا ولو کف من حشف فان ترک العشاء مهرمة (ترمذی)

(रात का खाना ज़रूर खाओ। ख़्वाह तुम्हें रद्दी खजूर की एक मुट्ठी मयस्सर हो। क्यूंकि रात का खाना तर्क करने से बुढ़ापा और कमज़ोरी तारी हो जाती है।)

हज़रत जाबिर रज़ि॰ बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

لاتدعو العشاء ولو کف تمر. فان ترکه یهرم (ابن ماجہ)

रात का खाना हरगिज़ न छोड़ो, ख़्वाह एक मुट्ठी खजूर ही खा लो। क्यूंकि रात का खाना छोड़ने से बुढ़ापा तारी हो जाता है। हज़रत

अनस बिन मालिक रज़ि0 बयान करते हैं

اتی النبی صلی اللہ علیه وسلم بتمرٍ عتیق. فجعل تفتشه ویخرج السوس منه. (ابن ماجه۔ابوداؤد)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पुरानी खजूरें आईं। उन्होंने उनको खोल कर देखा और उनमें से सुर्सुरियां निकालते रहे। इब्ने माजा की रिवायत सिसरी निकालने वाली बात यहीं सिर्फ़ इतना मज़कूर है कि उन्हें खोल कर देखते थे।)

हज़रत अबू ऐब रज़ि॰ बयान करते हैं कि एक रात हुज़ूर अकरम सल्ल॰ ने मुझे साथ लिया फिर रास्ते में हज़रत अबूबकर रज़ि॰ को लिया और फिर हज़रत उमर रज़ि॰ को शामिल किया और एक अंसारी के बाग़ में तशरीफ़ ले गए।

فقال لصاحب الحائط اطعمنا بسراً فجاء بعذقٍ فوضه فاکل رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم واصحابه (مسند احمد۔بیہقی)

(उन्होंने बाग़ के मालिक से कहा कि हमें नीम पकी हुई खजूरें खिलाए। वह गया और वह खजूरों के गुच्छे ले कर आया। उसमें से रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके ग्रामी असहाब ने सैर हो कर खजूरें खाईं।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं।

رایت رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم یاکل القثاء بالرطب (بخاری،مسلم۔ابن ماجه)

(मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि वह खजूरों के साथ खीरा ककड़ी खा रहे थे।)

हज़रत राफ़े बिन उमर अलमज़नी रज़ि0 बयान करते हैं:

سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم یقول العجوة والصخرة من الجنة (ابن ماجه)

(मैंने रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि अजवा खजूर और बैतुल मुक़द्दस की मस्जिद का गुंबद (सख़रा) दोनों जन्नत से आए हैं।)

हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर रज़ि॰ रिवयात फ़रमाते हैं।

بین نحن عندا النبی صلی اللہ علیه وسلم اذاتی بجمار نخلة فقال النبی صلی اللہ علیه وسلم ان من الشجر لما برکته کبرکة المسلم فظننت انه یعنی النخلة، فاردتّ ان اقول هی النخلة یا رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم ثم التفت فاذا عاشر عشرةٍ انا احدنهم فسکتّ فقال النبی صلی اللہ علیه وسلم هی النخلة (بخاری)

(हम कुछ लोग नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में बैठे थे कि खजूर का गाभा आया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम से मुख़ातिब करके फ़रमाया कि दरख़्तों में से एक दरख़्त ऐसा है कि जिसे अल्लाह तआला ने ऐसी बरकत दी है जैसे कि वह मुसलमान हो। मैंने गुमान किया कि उनकी मुराद खजूर के दरख़्त से

है। और मेरा इरादा हुआ कि मैं जवाब में अर्ज करूं कि या रसूल्लल्लाह यह खजूर का दरख़्त, मगर मजबूरन इसलिए चुप हुआ कि इतने लोगों में से सबसे छोटा था। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया खजूर का दरख़्त है।)

खजूर के बारे में एहतियात:

(हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 बयान करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया)

انهٗ نهیٰ ان ينتبذ الزبيب والتمر جميعا (ابوداؤد)

(मुनक्क़ा और खजूर को बयक वक़्त खाने से मनअ किया) इसी इरशादे ग्रामी को तर्मिज़ी और अन्निसाई ने अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा से मुरव्वी किया है। जिन्होंने अपने वालिदे ग्रामी से समाअत किया।

हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 रिवायत फ़रमाती हैं कि

انه نهیٰ ان ينتبذ البسر والرطب (بخاری۔نسائی)

(नीम पुख़ता खजूर को पुरानी खजूर के साथ मिलाकर खाने से मनअ़ फ़रमाया)

इब्नुल कैय्युम रह0 ने सनद के बग़ैर ज़िक्र किया है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खजूर और अंजीर को बयक–वक़्त खाने से मना फ़रमाया है।

हज़रत उम्मुल मन्ज़र रज़ि. रिवायत फ़रमाती हैं

دخل علی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ومعہ علی. ولنا دوالٍ معلقة فجعل الرسول صلی اللہ علیہ وسلم یاکل وعلیٌ معہ یاکل فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لعلیّ. یا علی فانک فاقة (ابن ماجہ، ترمذی، مسند احمد)

(हमारे घर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए उनके हमराह अली रज़ि. थे। उस वक़्त हमारे यहां खजूरों के ख़ोशे लटक रहे थे। यह उनकी ख़िदमत में पेश किए गए। दोनों खाते रहे। फिर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक जगह अली रज़ि. से कहा कि तुम अब और मत ख़ाओ कि तुम अभी बीमारी से उठे और कमज़ोर हो।)

इसी रिवायत में मज़ीद आया है कि हज़रत अली से कहा कि तुम अब और मत खाओ कि तुम अभी बीमारी से उठे और कमज़ोर हो।

इसी रिवायत में मज़ीद आया है कि हज़रत अली रज़ि. ने सात खजूरें खाई थी कि उनको रोक दिया गया। उम्मुल मंज़र रज़ि. ने इस पर उनके लिए चुक़ंदर गोश्त और जौ की रोटी पकाई। उन्होंने इस खाने को हज़रत अली रज़ि. के लिए पसंद फ़रमाया।

हज़रत सुहैब रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं कि मैं मज्लिसे रिसालत में खजूरें खा रहा था। इन दिनों मेरी आंख दुख रही थी कि हुज़ूर रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اتاكل التمر وبك رمد (طبری)

(तुम खजूरें खा रहे हो जबकि तुम्हारी आंखें दुख रही हैं।)

सुहैब रज़ि. ने इस इरशादे ग्रामी को मज़ाहिया रंग देते हुए कहा कि मेरी दाईं आंख दुखती है जबकि मैं खजूरें बाईं तरफ़ से खा रहा हूं।

यह इरशादे ग्रामी इस अम्र की दलालत करता है कि जब आंखें दुखती हों तो उस वक़्त खजूरें खाना मुनासिब न होगा।

हज़रत अनस बिन मालिक रिवायत फ़रमाते हैं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

خيرٌ تمرا تكم البرني يذهب الداء ولا داء فيه.

(अक़ीली, मस्नद त्याली, इब्नुस सुन्नी, अबू नईम, मुस्तरिकुल हाकिम)

तुम्हारी खजूरों मे से सबसे अच्छी खजूर बरनी है। यह बीमारी को दूर करती है) और इसमें ख़ुद कोई मुज़िर चीज़ नहीं)

यह रिवायत अर्रयानी और इब्ने हहान ने बरीरा रज़ि., त्यासी, मुस्तदरिकुल हाकिमा और अबू नईम ने अबी सईद अलख़िदरी रज़ि. से भी बयान किया हैः

البرني دواء ليس فيه داء

(बरनी खजूर एक उम्दा दवा है जबकि इसमें बज़ाते ख़ुद कोई बीमारी नहीं यअ़नी इसके खाने से कोई ज़रर न होगा।)

मुहम्मद अहमद ज़हबी रह. हवाले के बग़ैर यह रिवायत नक़ल करते हैं।

خيرٌ تمرا تكم البرنيّ يذهب الداء

(तुम्हारी खजूरों में अच्छी बरनी है जो बीमारी को दूर करती है)

रावी का ज़िक्र किये बग़ैर मुहम्मद अहमद ज़हबी बताते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

من وجد تمرا فليفطر عليه، ومن لا، فليفطر على الماء. فانه طهورٌ (انسائی)

(जिसे खजूर मयस्सर हो वह इससे रोज़ा इफ़तार करे, जिसे न मिले वह पानी से खोल ले, क्यूंकि वह भी पाक है)

क्यूकि दिन भर के फ़ाक़े के बाद तवानाई कम हो जाती है। इस लिए इफ़तारी ऐसी चीज़ से हो जो जल्द हज़्म हो और ताक़त दे।

ومن السنة للصائم الفطر على العجوة او التمر

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत थी कि रोज़ादार अजवा खजूर या किसी और खजूर से रोजा खोले)

यह हदीस भी इसनाद के बग़ैर ज़हबी ने बयान की है।

हजरत अनस बिन मालि रज़ि0 रिवायत करते हैं।

"كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يفطر على رطبات قبل ان يصلي، فان لم تكن رطبات: فتمرات، فان لم تكن تمرات! حسا حسوات من ماء".

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पकी हुई खजूर से रोज़ा अफ़तार करते थे अगर वह न हो तो पुरानी खजूर से और अगर वह

मयस्सर न हो तो पानी और सत्तू वग़ैरा से।)

नोज़ाइदा बच्चों के लिए बहतरीन घुट्टी:

हज़रत असमा बिंते अबूबकर रजि० रिवायत फ़रमाती हैं:

انما حملت بعبد الله بن زبیر بمکة قالت تم الدتّ بقباء ثم اتیت به رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم فوضعته فی حجره دعا بتمرة فمضغها ثم تفل فی فیه ثم حنکهٗ ثم دعا له وبرک علیه فکان اول مولودٍ ولدفی الاسلام

(بخاری۔مسلم)

(मुझे मक्का मुअज़्ज़मा में अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर पैदा होने वाला हो गया था। यह बच्चा मुझे कअ़बा में आकर पैदा हुआ। मैं बच्चे को ले कर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिं वसल्लम के पास गई और इनकी गोद में डाल दिया। उन्होंने खजूर मंगवाई। उसे अपने मुंह में चबाया। फिर अपना लुआब और खजूर बच्चे के मुंह में डाल कर उसके तालू से लगा दिया। फिर बच्चे के लिए बरकत की दुआ की। यह वह पहला बच्चा था जो मुसलमानों में पैदा हुआ।)

अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर रज़ि. की विलादत से पहले मदीने के यहूदियों ने मशहूर कर दिया था कि उनके जादू के ज़ोर से अब कोई मुसलमान औरत बच्चा न जन सकेगी। हमने इनको बांझ कर दिया है। अब्दुल्ला रज़ि. की पैदाइश पर तमाम मुसलमानों ने बुलंद आवाज़ में नारा तकबीर बुलंद किया।

قال ولدلی غلامٌ فاتیت به النبی صلی اللہ علیه وسلم نسماه ابراهیم. فحنکه بتمره و رعاله بالبرکة ودفعه اتی.

(بخاری)

(हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि. बयान करते हैं कि मेरे घर लड़का पैदा हुआ। मैं उसे ले कर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप ने चबाकर उसके मुंह में खजूर डाली।)

खजूरों की तिब्बी हैसियत:

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. बयान फ़रमाती हैं।

ان الرسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم قال ان فی عجوة العالیه شفاءٌ وانفایرتاقٌ اول البکرة.

(مسلم)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस अज़ीम खजूर अजवा में हर बीमारी से शिफ़ा है। और अगर इसे नहारमुंह खाया जाए तो यह ज़हरों से तिर्याक़ है यही रिवायत मसनद अहमद में इज़ाफ़ा के साथ भी है।)

हज़रत आमिर बिन सअ़द बिन अबी विक़ास अपने वालिदे ग्रामी से रिवायत करते थे।

سمعت سعدٌ یقول سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم یقول من تصبح بسبع تمراتٍ عجوة. لم یضره ذالک الیوم سمٌ ولا سحرٌ.

(بخاری۔مسلم۔ابوداؤد)

(मैंने सअद रज़ि. से यह कहते सुना कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि जिसने सुबह उठते ही अजवा खजूर के सात दाने खा लिए उस दिन उसे जादू और ज़हर भी नुक़सान न दे सकेंगे।)

हज़रत आइशा सिदीक़ह रज़ि. अपना ज़ाती तजुर्बा बयान फ़रमाती हैं।

كانت امى تعالجنى للسمنة تريدان تدخلنى على رسول الله صلى الله عليه وسلم فما استقاملها. ذالک اكلت القثاء بالرطب. نسمنت كاحسن سمنة
(بخاری، مسلم، النسائی، ابن ماجہ)

(मेरी वालदा मुझे मोटा करने के लिए बहुत इलाज करवाती रहीं वह चाहती थीं कि जब मैं रसूलल्लाह सल्लल्लाो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जाऊं तो मोटी होऊं लेकिन इन तमाम दवाओं से कोई फ़ाएदा न हुआ। हत्ता कि मैंने ताज़ा पकी हुई खजूरें और खीरे खाए। इन से मैं निहायत ख़ूबसूरत जिस्म वाली मोटी हो गई।)

जब हज़रत आइशा रज़ि. का निकाह हुआ तो वह दुबली पतली थीं। चूंकि उस ज़माने में अरब दुबली औरतों को पसंद नहीं करते थे। इसलिए उनकी वालिदा मुहतरिमा हज़रत रमान रज़ि. चाहती थी कि रुख़्सती तक यह मोटी हो जाएं। इनको क़सा से फ़ाएदा हुआ। अरबी में इससे मुराद खीरा भी हो सकता है और ककड़ी भी। आम लोग खीरा ही क़रार देते हैं। यह इलाज इस हदीस से सनद है। जो बुख़ारी, मुस्लिम और इब्ने माजा ने बयान की हुज़ूर खजूर और खीरा खाया करते थे।

आमिर बिन सईद अपने वालिदे मोहतरम से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

من اكل سبع تمرات مابين لابتى المدينة على الريق لم يضره يومه ذالک سم ولا سحر واناكلها حينيمسى لم يضره حتى يصبح
(مسند احمد)

(जिस किसी ने मरीना के दो पहाड़ों के दरमियान की वादी में पैदा होने वाली खजूरों में से रोज़ाना सात खजूरें नहारमुंह खाई। उसे रोज़ शाम होने तक कोई ज़हर असर न करेगा और जिसने शाम को खाई वह सुबह तक मामून रहेगा।)

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

العجوة من الجنة وفيها شفاء من السم والكماة من المن و ماؤها شفاء للعين والكبش العربى والا سود شفاء من عرق النساء يوكل من لحمه ويحسى من مرقه.
(ابن النجار)

(अजवा खजूर जन्नत से है। इसमें ज़हरों से शिफ़ा है। खुंबी मन का हिस्सा थी और उसके पानी में आंखों की बीमारियों से शिफ़ा है। अरबी दुंबा जो कि सियाह रंग का हो, इसमें अरक़ुन्निसा से शिफ़ा

है। इसका गोश्त खाया जाए और यख़नी पी जाए।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

اكل التمر امان من القولنج. (ابونعیم)

(खजूर खाने से क़ौलंज नहीं होता।)

जिस्म के वह आलात जिनकी साख़्त ऐसे अज़लात से है जो कुव्वते इरादी के मातहत नहीं (जैसे कि गुर्दों की नालियां, आंतें, बच्चे दानी की नालियां) अगर इनमें सुकड़न के साथ दर्द होतो उसे क़ौलंज कहते हैं। क़ौलंज किसी एक हिस्सा जिस्म तक महदूद नहीं।

हज़रत अब्दुललाह इब्ने अब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

كلوا التمر على الريق فانهٗ يقتل الدود. (مسند فردوس، ابوبکر، فی الغلایات)

(सुबह नहारमुंह खजूरें खाया करो कि ऐसा करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि रिवायत फ़रमाती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

ينفع من الجذام ان تاخذ سبع تمرات من عجوة المدينة كل يوم يفعل ذالك سبعة ايام. (ابن العدی فی الکامل۔ ابونعیم)

(अगर सात दिन तक अजवह खजूर के सात दाने रोज़ाना खाए जाएं तो इससे कोढ़ में फ़ाएदा होता हैं।)

हज़रत सअद बिन अबी विक़ास रिवायत करते हैं किः

مرضت مرضاً. اتانى رسول الله صلى الله عليه وسلم فوضع يده بين ثديى، حتى وجدت بردها على نوادى. فقال: اند رجل منفؤد ائت الحارث بن كلدة، اخاثقيف، فانه رجل يطبب، فلياخذ سبع تمرات من عجوة المدينة فليجاهن بنو اهن، ثم ليدلك بهن. (مسند احمد، ابونعیم، الحسن بن سفیات، ابوداؤد)

(मैं बीमार हुआ। मेरी अयादत को रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधों के दरमियान रखा तो उनके हाथ की ठंडक मेरी सारी छाती में फैल गई। फिर फ़रमाया कि इसे दिल का दौरा पड़ा है। इसे हारिस बिन कलदा के पास ले जाओ जो सक़ीफ़ में मतब करता है। हकीम को चाहिए कि वह मदीना की सात अजवा खजूरें गुठलियों समीत कूट कर इसे खिलाए।)

खजूर के फ़वाइद के बारे में यह हदीस बड़ी अहमियत की हामिल है। क्यूंकि तिब की तारीख़ में यह पहला मौक़ा है कि किसी मरीज़ के दिल के दौरे की तश्ख़ीस की गई। उसकी रिवायत आम तौर पर मुजाहिद के ज़रिए है। अलाउद्दीन

अलहिंदी ने कंजुलआमाल में इसे मसनद अली रज़ि., ज़ख़ीरुल हसन बिन सुफ़ियान और अबू नईम से भी माख़ज़ करना बयान किया है। जबकि दूसरे मुहद्दिसीन इसे सिर्फ़ अबूदाऊद ही से अख़ज़ करते हैं।

सअ़द बिन अबी विक़ास रज़ि. को दिल के दौरे की वजह से छाती में जो शदीद दर्द था, वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक के लम्स से जाता रहा और उन्होंने इसके साथ एक ख़ासूसी दुआ भी फ़रमाई जिसे अहादीस में "अलम अश्फ़ सअ़दन" की सूरत मे ज़िक्र किया गया है।

हज़रत अबू हुरैरा रिवायत करते हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مالالنفساء عندی شفاء مثل الرطب و للمريض مثل العسل. (ابوالشیخ، ابونعیم)

(मेरे नज़दीक औरतों के हैज़ की कसरत के लिए खजूर से बेहतर और मरीज़ के लिए शहद से बेहतर कोई दवाई नहीं।)

खजूर से मुआलिजे की कुरआनी तर्कीब:

खजूर की उफ़ादियत का अहम तरीन पहलू कुरआन मजीद ने हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम के तज़किरे में बयान किया है। जब उन पर ज़चगी का वक़्त क़रीब आया तो वह दर्दों की शिद्दत अपनी तनहाई और बाद की कमज़ोरी से परेशानी में थीं। उन्होंने ख़ुदा से चाहा कि वह इस अज़िय्यत से तड़पने की बजाए मरजाएं तो अच्छा हो। ख़ुदा तआ़ला ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि वह खजूर के दरख़्त के साये में लेट जाएं। उन पर पकी हुई खजूरें गिरेंगी, जिनको खाने से उनकी कमज़ोरी जाती रहेगी। दर्दें कम होंगीं, ज़चगी का मरहला क़िसी पेचीदगी के बग़ैर फ़ौरन गुज़र जाएगा। खजूरें खाने से उनकी ज़चगी जल्द मुकम्मल हुई। निफ़ास से कोई ख़ास अज़िय्यत न हुई और वह अपने नोज़ाएदा बच्चे को गोद में ले कर इतमीनान के साथ बस्ती की सिम्त पैदल चल पड़ीं। आम हालात में किसी औरत के लिए ज़चगी के बाद अपने पैरों से चल कर जाना मुमकिन नहीं होता। और यह ख़ातून तो न सिर्फ़ कि फ़ौरन उठ खड़ी हुई। बल्कि बच्चे का वज़न उठाकर उन्होंने बस्ती का फ़ासला भी ख़ुशअस्लूबी से तै किया। इससे मालूम होता है कि खजूर खाने से उनको INSTANT ENERGY (फ़ोरी तवानाई) हासिल हुई क्यूंकि खजूर दाफ़ेअ क़ौलंज भी है इसलिए इनको दर्द भी कम हुई। कुरआन मजीद ने तारीख़े तिब में पहली मर्तबा INVALID FOOD का तसव्वुर खजूर की सूरत में पेश किया जबकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कमज़ोरी के लिए ख़सूसी ग़िज़ा जौ का दलिया (तलबीना) की सूरत में अता फ़रमाई।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खजूर को रात भर भिगो कर इसका पानी इस्तेअ़माल क़रते थे। अबू सईद रज़ि. की दावत वलीमा में यही पानी बड़े शौक़ से पिया जबकि अबा अलमसीम बिन अत्तहान रज़ि. ने जब उनके साथ हज़रत अबू बकर रज़ि. और उमर रज़ि. की अपने बाग़ में दावत की तो उनसे कहा कि

तुमने तो पकी हुई खजूरों को भिगोदिया है। हमें ज़्यादा पसंद होगा अगर पकी हुई खजूर के साथ नीम पुख़्ता (बसर–रित्ब) खजूरें भी मिलाकर उनका पानी हमें पिलाया जाए। इससे मालूम होता है कि खजूर की बनीज़ में भी तवानाई के साथ साथ फ़रहत पैदा करने की सलाहियत मौजूद है। यह पानी जिस्म की ग़लीज़ रतूबतों को ख़ुश्क करता है। मेअ़दे को तक़वियत देता है। मुंह के ज़ख़्मों को मुंदमिल करता है। ख़ासतौर पर मसूढ़ों की सोज़िश में मुफ़ीद है।

फलों में खजूर मुम्ताज़ हैसियत रखती है। क्यूंकि यह जिस्म के हर हिस्से के लिए यकसां तौर पर मुफ़ीद हे। इसकी इसलाह के लिए सिकंजीन ज़्यादा मुअस्सिर हैं। जबकि दूसरे ज़राए बताते हैं कि खजूर के ज़ैली असरात को दूर करने के लिए इसके साथ बादाम और ख़श्ख़ास का इस्तेमाल ज़्यादा मुफ़ीद रहता है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोज़ा खोलने के लिए हमेशा खजूर इस्तेअ़माल फ़रमाई। यह इसकी उफ़ादियत का बहुत बड़ा सबूत है। क्यूंकि रोज़े के दौरान मुसलसल फ़ाक़ा की वजह से जिस्म में नक़ाहत होती है। उस वक़्त एक ऐसी ग़िज़ा की ज़रूरत होती है जो जामअ़ और सहलुल फ़हम हो। इसका असर फ़ोरी तौर पर शुरू हो जाए और कमज़ोरी जाती रहे मेअ़दा दिन भर ख़ाली रहने की वजह से किसी भारी चीज़ को आसानी से क़बूल नहीं करता। खजूर फ़ोरी तौर पर हज़्म हो कर जिगर के लिए तक़वियत का बाइस बन जाती है।

यह ज़ख़्मों को मुंदमिल करती है। नफ़सुद्दम में मुफ़ीद है। इस्हाल को दूर करती है। यरक़ान के लिए बहतरीन है। क्यूंकि पित्ता और जिगर के फ़ेएल को दुरुस्त करती है। अपने बेश–बहा फ़वाइद की वजह से इसे मुसलमान् से तशबीह दी गई। क्यूंकि यह फ़वाइद के साथ–साथ भलाई का ज़रिया है।

मुहम्मद अहमद ज़हबी रह॰ क़रार देते हैं कि हामला औरतों को खजूर खिलाने से लड़का पैदा होगा जो कि हलीम, ख़ूबसूरत और बुरदबार होगा। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खजूरों में अजवा खजूर ज़्यादा पसंद थी। उन्होंने इसे जन्नत का मेवा क़रार दिया। उन्होंने बाज़ लोगों को अज़ाबे क़ब्र से निजात दिलवाने के लिए खजूर की डाली उनकी क़बरों पर अपने हाथ से गाड़ी। उन्होंने इससे रोज़ा इफ़तार किया। इसे नहारमुंह खाने की तलक़ीन की और इससे पेट के कीड़ों का इलाज भी बताया।

रित्ब की सूरत में यह हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम की ख़ुराक थीं इसे रोज़ादार की कमज़ोरी के लिए बयान फ़रमाया। सनूबर के बीजों के साथ खजूर जिगर के लिए मज़ीद मुक़व्वी हो जाती है। यह जिसमानी और जिंसी कमज़ोरी को दूर करती है। लेकिन जिसकी आंखें दुखती हों उसे न खाना चाहिए। न ही इसे अंगूर और किशमिश या मुनक़्क़ा के साथ खाया जाए।

इब्ने अब्बास रज़ि॰ बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खजूरों में सबसे ज़्यादा पसंद अजवा थी। इसकी वजह यह हे कि इसमें ग़िज़ाई अनासिर दूसरी खजूरों से ज़्यादा होते हैं। यह मदीने की खजूरों में से बेहतरीन क़िस्म है। इसका रंग सियाही माइल होता है और यह फ़वाइद के लिहाज़ से

दीगर अक़साम से बेहतर और लज़ीज़ होती है।

ताज़ा पकी हुई खजूर का पानी पीने से इस्हाल रुक जाते हैं। इसे खाने के बाद खाया जाए तो मेअ्दा में बोझ की कैफ़ियत नहीं होती। सुफ़रा और तेज़ाबियत को ख़त्म करती है। कुरआन मजीद ने जन्नत के फलों की तारीफ़ में खजूर के साथ अनार का ज़िक्र किया है। فيهاٰنا كهة وّنخل ورمّان.

खजूर के साथ अनार का पानी मेअ्दे की सोज़िश और इस्हाल मुज़मिन में मुफ़ीद है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात

खजूर के दरख़्त को चेत, बेसाख (मार्च,अप्रैल) में फूल लगते हैं। भादों और उसवा (अगस्त–सितम्बर) में फल पक कर तैयार होता है। इसके पेड़ से एक क़िस्म का गोंद निकलता है जो बैरूनी चोटों के लिए मुफ़ीद होता है। इसके दरख़्त के तने में घाओ लगाएं तो एक मीठा और ख़ुश्बूदार रस निकलता हे। ताज़ा पिएं तो बड़ा लज़ीज़ और रूहअफ़ज़ा होता है। मगर एक दिन गुज़रने के बाद इसमें ख़मीर उठ जाता है और नशाआवर बन जाता है। बंगाल, बिहार और साहिल मालाबार के लोग इस रस को घड़ों में भर कर ऊपर पतला कपड़ा बांध देते हैं। दो एक दिन में इसमें ख़मीर उठ कर यह नशाआवर और ज़ाएक़े में तेज़ हो जाती है। वैदिक तिब की मशहूर किताब "भूत चिकित्सा सागर" में इसे ताड़ी का नाम दिया गया है। जहां तक इसके नशाआवर होने का ताल्लुक़ है यह ताड़ी की मानिंद है। लेकिन भारत के मग़रिबी घाट के इलाक़े में ताड़ी नारियल के उस पानी को कहते हैं जिसमें ख़मीर उठाया गया हो। नारियल का ताज़ा पानी लज़ीज़ और ख़ुश्बूदार होता है। मगर ख़मीर उठने के बाद अलकुहल की मौजूदगी की वजह से यह नशाआवर, बदज़ाएक़ा और बदबूदार हो जाता है। फ़ेलन खजूर के तने के रस और ताड़ी में कोई फ़र्क़ नहीं। अलबत्ता इनके माख़ज़ जुदा–जुदा हैं।

चेत के महीने में खजूर के दरख़्त को लगने वाले फूल अगर पानी में घोट कर पीते जाएं तो इससे मेअ्दे को ताक़त हासिल होती है। इसहाल को बंद करता है। हरारत को तस्कीन देता मुलतिफ़ और मुंह से निकलने वाले ख़ून को बंद करता है।

खजूर की गुठली जलाकर दांतों पर मली जाए तो मुंह के तअफ़्फ़ुन को दूर करती है। दांतों से मैल उतारती है। जहां से भी ख़ून बहता हो उसकी राख लगाने से बंद हो जाता है। ज़ख़्मों को साफ़ कर देती है।

खजूर खाना कुव्वत का बाइस है। जिगर को ताक़त देती है। वैदिक तिब में यह मुंह की ख़ुश्की दूर करने में अक्सीर है। कमज़ोरी से पैदा होने वाले सुफ़रा के लिए मुफ़ीद है। खजूर का गूदा और चरचटे की जड़ पीस कर पानी में रख कर खाने से सर्दी लग कर आने वाला बुख़ार टूट जाता है।

खजूर की जड़ या पत्तों की राख से मंजन करना दांतों के दर्द के लिए मुफ़ीद है। राख की बजाए अगर इनको पानी में पका कर इस पानी से कुल्लियां की जाएं तो भी मुफ़ीद हैं।

खजूर के मुज़िर असरात अनार का रस या सिकंजीन, रौग़ने बादाम, ख़श्ख़ास या सियाह मिर्च के शामिल करने से ख़त्म हो जाते हैं।

भारती इदारा तिब ने खजूर को आसाबे बाह और जिस्म को तक़वियत देने वाला क़रार दिया है। इसको दूध में पका कर इस्तेअ़माल करना ज़्यादा मुफ़ीद होता है। एक वक़्त में 5 तोला से ज़्यादा इस्तेअ़माल न की जाएं। तिब यूनानी की मशहूर दवाई मअ़जून, आरद ख़ुर्मा, गुठलियों से बनती है जबकि हमदर्द की ख़ूबां में कमज़ोरी के लिए खजूर और ख़ूबानी शामिल हैं।

खजूर का गाभा:

अरबी में इसे "जिमार" क़ल्बुन्नख़्ल या "शहम अन्नख़्ल" कहते हैं। फ़ारसी में इसे दिल ख़ुरमा, मग़ज़ ख़ुरमा और पनीर ख़ुरमा कहते हैं। खजूर के दरख़्त की शाख़ों में जिस जगह फूल लगते हैं वहां पर कोंपलों से पहले यह गाढ़ा, लेसदार, शीरीं और ख़ुश्बू दार जमा होता है। ज़ाएक़ा दूध और बादाम जैसा होता है। जिस दरख़्त की शाख़ों से जिमार निकाल लें इसको फिर फूल नहीं लगते इसके खाने से क़ब्ज़ पैदा होती है। आंतें मज़बूत होती हैं। और दस्त रुक जाते हैं। सीने के दर्द को दूर करता है। अगर थूक में ख़ून आता हो तो वह बंद हो जाता है। इसको खाने से हलक़ और सीने की जलन और सोज़िश ख़त्म होते हैं। आवाज़ में निखार आता है। खांसी ठीक हो जाती है। इसके खाने से जिस्म में कुव्वत पैदा होती है। सुफ़रा के ग़ल्बा और ख़ून के जोश में मुफ़ीद है। गुर्दों की सोज़िश रफ़ा होती है। मन्शियात से पैदा होने वाला ख़ुमार जाता रहता है। क़ै रोकता है। चक्करों में मुफ़ीद है।

ख़जूर का गाभा लगाने से भिड़ काटने के बाद वरम नहीं होता। हिस्सासियत को दूर करता है। अतिब्बा ने इसे फेफड़ों और मेअ़दे के लिए मुज़िर क़रार दे कर इस्लाह के लिए छुहारे अदरक का मुरब्बा या सिकंजीन या शहद तज्वीज़ किया है।

कीमयावी हैइयत:

दरख़्त पर पकने के दौरान खजूर के फल में कीम्यावी तब्दीलियां ज़ाहिर होती हैं। जैसे कि जब यह ज़र्द से पकने पर आती हैं तो इसमें ख़ुश्क मादे की शरह बढ़ जाती है। पानी कम होने लगता है और मिठास की मिक़दार बढ़ती है। मिठास अज़ क़िस्म INVERT SUGAR की मिक़दार 22 फ़ीसदी तक हो जाती है। पानी कम होने और मिठास की ज़्यादती के बावजूद यह चिपकदार नहीं होती। कुदरत की अजीब सनाई है कि पूरे फल में मिठास यकसां नहीं होती। चोंच की तरफ़ मिठास पैंदे की निस्बत कम होती है।

दरख़्त से उतारने के बाद खजूरों को पकाने के अमल में दरजा हरारत का बड़ा दख़ल है। जो फल गर्म जगहों पर या ऐसे मक़ामात पर रखे गए जहां पर धूप पड़ती थी वह घटिया रहे और इन में लज़्ज़त न थी। जबकि ठंडी जगहों पर जहां नमी कम थी वहां पर पकाई गई खजूरें ख़ुश्बूदार हुईं और इनके छिलकों का रंग ज़्यादा गहरा पाया गया।

अमरीकी रियासत केली फ़ोर्निया में खजूरों की एक क़िस्म "दजलतुन्नूर" बड़ी

मक़बूल है। माहिरीन ने इसी खजूर पर तजुर्बात के दौरान फल के पकने के अमल को तीन हिस्सों में तक़सीम किया है।

1. जब वज़न और हजम में इज़ाफ़ा होता है। REDUCING SUGARS की मिक़दार बढ़ती है और फल की नमी में इज़ाफ़ा होता है।
2. वज़न में इज़ाफ़ा मअ़मूली होता है। मगर नमी बढ़ती और मिठास में इज़ाफ़ा बहुत थोड़ा।
3. रग हल्का भूरा या गहरा भूरा हो जाता है। नमी में इज़ाफ़े की रफ़तार कम होती है मगर खांड की क़िस्म SUCROSE बढ़ जाती है। तीसरे मरहले का अमल फल के पकने के आख़री दरजे तक जारी रहता है। इसी दौरान इसमें PECTIN की अक़साम बढ़ने लगती हैं। यह वह चीज़ है जो आंतों की ग़ैर मामूली हरकात को कम करके इस्हाल में मुफ़ीद है।

खजूर में शकर की दो वाज़ेह अक़साम पाई जाती हैं। एक वह क़िस्म है जिसमे ख़ालिस शकर पाई जाती है। दूसरी क़िस्म में इसके साथ एक कीमयावी जौहर INVERTASE पाया जाता है। यह वह जौहर है जो खांड वाली शकर को एक ऐसी मिठास में तब्दील कर देने की एहलियत रखता है जिसे जिस्म आसानी से क़बूल कर लेता है और वह ज़्याबेत्स के मरीज़ों के लिए नुक़सानदेह नहीं होती। उसे FRUCTOSE कहते हैं। खांड को इस मिठास में तब्दील करने वाला यह जौहर शहद में भी पाया जाता है।

मदीना मुनव्वरा की अजवा और बरनी खजूरें इन अक़साम में से हैं जिनमें यह जौहर पाया जाता है। इसलिए पूरी पक जाने के बाद इनमें मुज़िर मिठास बाक़ी नहीं रहती। अमरीका में VINCON ने एज़सबरोना यूनिवर्सिटी के लिए तहक़ीक़ात करते हुए जो मुशाहिदात किए हैं उनका ख़ुलासा यह है कि खजूर में सही मिठास सिर्फ़ उसी वक़्त पैदा होती है जब इस पर पकने का मरहला दरख़्त के ऊपर से गुज़रे, कच्ची खजूर को उतार कर मसनूई तरीक़े से पकाने से ख़जूर की मिठास नामुकम्मल रहेगी। यह काम कम–अज़–कम 34 दिन में तकमील पाता है। इस तरह पकी हुई खजूरों में मिठास की मिक़दार 48 फ़ीसदी पाई गई जिस में से 24 फ़ीसदी फ़रक्टोस और इसी क़दर ग्लूकोज़ था जबकि आम चीनी की मिक़दार एक फ़ीसदी से कम थी। हालांकि इन्ही खजूरों में 14 दिन पहले चीनी 15 फ़ीसदी और ग्लूकोज और फ़रक्टोस 21 फ़ीसदी के लग–भग थे। इस दौरान अगर बारिश भी हुई तो पानी पड़ने से अच्छी खजूरों की कीमयावी हैइयत मुतास्सिर न हुई।

इसके अलावा खजूरों में एक और जौहर PEROXIDES भी पाया जाता है। यह तमाम जोहर सिर्फ़ इन्हीं खजूरों में मिलते हैं जिनका रंग गहरा होता है। हलके रंग वाली खजूरें मैअ़यार में हलकी और चीनी वाली खजूरें समझी जाती हैं। खजूर में तमाम विटामिन में माअ़कूल मिक़दार में पाए जाते हैं।

CALORIES 100 GM.	270
PROTEINS	2.0
SODIUM	4.8
POTASSIUM	754

CALCIUM	67.9
MAGNESIUM	58.9
IRON	1.61
COPPER	.21
PHOSPHORUS	638
SULPHUR	51.6
CHLORIDES	290

इस तजज़िया से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि इसमें इन्सान को तंदरुस्त रखने के लिए मतलूब तमाम अनासिर ख़ातिरख़्वाह मिक्दार में मौजूद है। अहदे रिसालत में फ़ौजी कार्रवाइयों के दौरान मुजाहिदीन का राशन ज़्यादा तर खजूर और जौ की कीमयावी हैसियत को देखने के बाद मालूम होता है कि तंदरुस्ती की बक़ा के लिए और खाने वाले को तवाना रखने के लिए इससे बहतर ख़ुराक तजवीज़ नहीं की जा सकती थी।

ख़जूरों में पोटाशियम की मिक्दार इलाक़े पर मुनहसर है। मसलन अमरीका की चंचेला वादी और मदीना मुनव्वरा की खजूरों में यह दूसरी जगहों की निस्बत ज़्यादा होता हैं जबकि invertase इब्तिदा में हल पज़ीर नहीं होता। मगर जब खजूर पक जाती है तो हल पज़ीर हो जाता है। माहिरीन ने गुटली में STEROLS का भी सुराग़ लगाया है। मगर यह खजूर में नहीं होते।

जदीद मुशाहिदात:

बिलोचिस्तान और डेरा ग़ाज़ी ख़ां के इलाक़े में खजूर की दरजनों अक्साम काश्त होती हैं। जिनको मुख़्तलिफ़ नामों से इनकी अक्साम और हालतों के मुताबिक़ पुकारा जाता है। जिनमें खजूर, छोटी खजूर या पिलावत, हंताला, जंगली खजूर, नारी, वावानी कवंचा, नरोरी, कमोनी ज़्यादा मशहूर हैं। हुकूमत मुम्बई के महकमा ज़राअत की सरकारी तख़सीस के मुताबिक़ बाज़ार में फ़रोख़्त होने वाली खजूर मुम्बई के ज़रई गज़िट के मुताबिक़ सिंधी खजूर उसूबी, ठोठयार, ऐदल शाही और लोहार क़िस्मों पर मुश्तमिल है। अगर्चे डोका और यह तमाम अक्साम हिंद और पाकिस्तान की अपनी काश्त हैं। मगर उनमें से अकसर का बीज इराक़ से दरआमदा है और यह अरबी अक्साम हैं जो यहां की कोशिश और ज़मीनी असरात से ख़ासूसी रंगत और शक्ल इख़्तियार कर चुकी हैं। पाकिस्तान में लिप्टन चाए कंपनी ने भी खजूरें बाज़ार में पेश की हैं। यह हजम में छोटी और रंगत में भूरी हैं। शक्लो–सूरत में यह मदीना मुनव्वरा की अजवा से मिलती जुलती हैं। अलबत्ता रंगत हल्मी है।

खजूर की तैय्यारी:

दरख़्त से उतरने वाली रित्ब का छिल्का मोटा और ज़ाएक़ा कसैला होता है। सऊदी अरब में खजूरों की काश्त के सबसे बड़े मरकज़ अनक़तीफ़ में देखा गया कि दरख़्त से उतारने के बाद इनको तारीक कमरों में कुछ दिनों के लिए रख देते हैं। वक़्त के साथ इनमें ख़मीर उठता है। और इस ख़मीर में अगर्चे अलकुहल भी पैदा होती है, मगर ऊपर का सख़्त छिलका गल कर गूदे के साथ

यक जान हो जाता है। इसके बाद खजूरों को लोहे के कड़ाहे पर डाल कर हल्की आंच पर पानी में पकाया जाता है। आग खजूर के पत्तों और शाख़ों से बनती है इस हरारत से तख़मीर का अमल ख़त्म हो जाता है। खजूरों को कड़ाहों से निकाल कर धोया जाता है सुखाने के बाद इनका रंग ब्राउन हो जाता है। इस तरह इनकी वह शक्ल बन जाती है जिसे बाज़ार में खजूर की सूरत फ़रोख़्त करते हैं।

तिब्बी फ़वाइद:

खजूर के दरख़्त से निकलने वाली गोंद आंतों, गुर्दों और पेशाब की नालियों की सोज़िश के लिए मशहूर है। इसे खाने से मुंह की बदबू जाती रहती है। बुनियादी तौर पर खजूर गिज़ाइयत से भरपूर है। मुख़्रिज बलग़म है। मुक़व्वी है। जलन को रफ़ा करती है। मुलय्यन है। कुव्वते बाह को बढ़ाती है। और पेशाब आवर है। खजूर को पानी में भिगोकर इसका यह पानी अगर पिया जाए तो जिगर की इसलाह करता है और तबीअत से नशाआवर अदविया की गिरानी को दूर करता है। खजूर को धो कर दूध में उबाल कर देने से एक मुक़व्वी और फ़ौरी तौर पर तवानाई मुहैय्या करने वाली गिज़ा तैयार हो जाती है। यह गिज़ा बीमारियों के बाद की कमज़ोरी के लिए हद दरजा मुफ़ीद है खजूर में तवानाई मुहय्या करने वाले अनासिर फ़ौरी असर करते हैं। यही वह वजह थी जिसकी बिना पर ज़चगी की अज़िय्यत और बाद की कमज़ोरी के लिए हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम को खजूर मुहय्या की गई, इसलिए बुख़ार और चेचक के बाद की कमज़ोरी जल्द रफ़ा हो जाती है। अतिब्बा में तपेदिक़ के दौरान खजूरें तजवीज़ करने का रुजहान इसलिए बढ़ रहा है कि खजूर मुख़्रिजे बलग़म है और क़ब्ज़ को दूर करती है। चूंकि यह कमज़ोरी में भी मुफ़ीद है इसलिए दिक़ के मरीज़ों को खजूर से फ़ाएदा होता है।

ख़ुश्क खजूर को पीस कर इसमें बादाम, बही दाना, पिस्ता, क़रनफ़ल और सौंफ मिलाकर जिस्मानी कमज़ोरी के लिए वैदिक तिब की मशहूर दवाई है। भारत में खजूर की गुठली को पीस कर इसमें चरचरा मिलाकर पानी में घोल कर इसे पान के पत्ते पर कत्था और चूना की मानिंद लगा देते हैं फिर इसके साथ कत्था, इलाएची सब्ज़, लोंग और छालिया मिलाकर बीड़ा बनाकर सर्दी से आने वाले या नोबता बुख़ार के हमले से पहले घंटे–घंटे के बाद दिया जाता है। आम तौर पर ऐसे तीन बीड़े खाने के बाद बुख़ार नहीं आता। खजूर का अर्क़ और जोशांदा अपने गिज़ाई फ़वाइद के अलावा मिस्किन है। इसलिए गुर्दों की सोज़िश पथरी और पुराने सोज़ाक में इन्हें बार–बार पिलाया जाता है। महाराष्ट्र के मरहटे खजूर के अर्क़ से एक मुफ़र्रह मशरूब "शिंडी" तैय्यार करते हैं जिसे गर्मी के दिनों में ठंडक हासिल करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह प्यास बुझाने में दूसरे तमाम मशरूबात से ज़्यादा मुफ़ीद है।

खजूर के दरख़्त की जड़ों को जलाकर ज़ख़्मों पर मरहम की सूरत लगाते हैं। इसका सफ़ूफ़ का मंजन करने से दांत का दर्द जाता रहता है।

खजूर की गुठलियों को आग में डाल कर इनकी धूनी देने से बवासीर के मस्से खुश्क हो जाते हैं। गुठलियों को भून कर इनको काफ़ी की शक्ल में पिया जाता है। जिसे DATE COFFEE कहते हैं।

कर्नल चोपड़ा ने खजूर के असरात का ख़ुलासा करते हुए क़रार दिया है कि यह मुख़्रिज बलग़म, मक़ामी तौर पर मिस्कन, गुर्दों और आंतों की बीमारियों में मुफ़ीद, कमज़ोरी को दूर करती है और बेहतरीन ग़िज़ा है। इसकी जड़ को जलाकर दांतों पर लगाने से दर्द जाता रहता है।

खजूर की अमली उफ़ादियत

तालीमात नबवी सल्ल॰ के मुताले से मालूम होता है कि उन्होंने खजूर की सिर्फ़ दो क़िस्मों को पसंद फ़रमाया। दरख़्त पर पकी हुई खजूर "पायल्ल डाल की पकाई हुई" "तमर" कुरआन मजीद और अहादीस से इनकी उफ़ादियत के यह पहलू सामने आते हैं।

1. शदीद कमज़ोरी के लिए रित्बः जैसे मर्यम अलैहिस्सलाम को कुरआन मजीद के इरशाद के मुताबिक़ नसीहत की गई।
2. जिस्मानी कमज़ोरी के लिएः ख़ास तौर पर जब किसी को कुछ अरसा खाने को न मिले तो वह अपनी तवानाई की जल्द बहाली के लिए खजूर पर भरोसा कर सकता है। इसी उसूल के मुताबिक़ रोज़ा अफ़तार करने के लिए खजूर ख़ाने की हिदायत की गई।
3. जिंसी और जिस्मानी कमज़ोरी के लिए और जब एतिदाल से ज़्यादा दुब्ला हो तो खजूर के हमराह खीरा, ककड़ी, भारती माहिरीन इस ग़र्ज़ के लिए तरबूज़ को भी तजवीज़ करते हैं।
4. पेट के कीड़े मारने के लिए नहारमुंह।
5. गुर्दों, मसाना, पित्त, आंतों में क़ौलंजी दर्दों को रोकने के लिए।
6. ताज़ा पकी हुई खजूर का मुसलसल इस्तेमाल MENORRHAGIA यअ़नी औरतों में हैज़ के ख़ून का कसरत से आने में मुफ़ीद है। यह कैफ़ियत गुदूदों की ख़राबी, झिल्लयों की सोज़िश, ग़िज़ाई कमी और ख़ून में फ़ौलाद की कमी वग़ैरह से पैदा हो सकती है। खजूर इनमें से हर एक का मुकम्मल इलाज है।
7. आंखों की सोज़िश में खजूर खाना दुरुस्त नहीं और बीमारी से उठने के फ़ौरन बाद ज़्यादा मिक़दार में खजूरें दुरुस्त नहीं।
8. दिल के दौरे MYOCARDIAL INFARCTION में खजूर की गुठली समेत कूट कर देना जान बचाने का बाइस होता है। अहादीस में इस ग़र्ज़ के लिए अजवा खजूर तज्वीज़ की गई है। तजुर्बात से मालूम हुआ है कि इस ग़र्ज़ के लिए दूसरी खजूरें भी इस्तेअ़माल की जा सकती हैं। मगर इनका अरसह इस्तेमाल तवील होना चाहए। चूंकि दिल का दौरा शर्यानों में रुकावट से पैदा होता है। इसलिए शर्यानों में रुकावट के बाइस पैदा होने वाली तमाम बीमारियों ख़ास तौर पर BUERGER'S DISEASE में खजूर की गुठली तिर्याक़ का असर रखती है।

9. चूंकि खजूर दाफ़ेअ कौलंज और झिल्लयों से ख़ैज़िश को दूर करके मिस्किन असरात रखती है इसलिए दमा ख़्वाह वह इमराज़े तनफ़्फुस से हो या दिल की वजह से इसे दूर करती है।
10. खजूर का मुसलसल इस्तेमाल और इसकी पिसी हुई गुठलियां दिल की तौसीअ (अज़ीमुल क़ल्ब) CARDIAC ENLARGEMENT में मुफ़ीद हैं। यही नुसख़ा काला मोतिया के मरीज़ों को भी मुफ़ीद रहा।
11. मुख़्रिज बलग़म होने की वजह से भारती माहिरीन ने इसे तपे–दिक़ में मुफ़ीद पाया।
12. पुरानी क़ब्ज़ की बहतरीन दवाई और बहतरीन नाश्ता है।

खुम्बी....................मन
MUSHROOM

यह ख़ुद–रौ–नबातात है जो FUNGUS के ख़ानदान से है। कहा जाता है कि बरसात के मौसम में बाग़ों और नहरों के किनारों पर बतौर ख़ुदरौ नबातात उगती है। अगर्चे इनकी पचासों अक़साम मालूम हो चुकी हैं। मगर आम इस्तेअ़माल के लिए इसका ख़ानदान AGARICUS CAMPESTRIS है। जबकि दूसरे ख़ानदान PSALLIOTA CAMPESTRIS के तमाम अराकीन क़ाबिले ख़ुराक नहीं इसकी अक्सर क़िस्में ज़हरीली हैं। पंजाब के बाग़ात में इसकी दों क़िस्में मिलती हैं। छतरी की शक्ल में मिलने वाली AGARICUS ALBUS है। कहा जाता है कि यह ज़हरीली क़िस्म है। लेकिन होम्योपैथिक और वैदिक तिब्ब में इससे AGARACIN बनती है। दूसरी गोल सर वाली है जिसे आम तौर पर सालन में पकाकर खाते हैं।

अहादीसे नबवी सल्ल0

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

الكماة من المن ومائو ها شفاءٌ للعين (بخاری،النسائی،مسند احمد)

(खुंबी मन में से है। इसका पानी आंखों के लिए शिफ़ा है।)

यही रिवायत इन मुअल्लिफ़ों ने जाबिर रज़ि. से भी रिवायत की है। जबकि अबू नईम ने यही रिवायत हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. और अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. से बयान की है।

हज़रत अबी सईद रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

الكماة من المن والمن من الجنة ومائوها شفاءٌ للعين

(खुंबी मन का हिस्सा है। मन दर हकीक़त जन्नत से है। इसका पानी आंखों के लिए शिफ़ा है)

हज़रज सईद बिन ज़ैद रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं क़ि नबी सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने फ़रमायाः

الكماة من المن الذى النزل الله تعالى على بنى اسرائيل و مائوها شفاء للعين.
(مسلم۔ابن ماجہ)

(खुंबी इस मन में से है जो अल्लाह तआला ने बनी इसराईल के लिए नाज़िल फ़रमाया था। इसका पानी आंखों के लिए शिफ़ाहै।)

हज़रत सुहैब रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

عليكم باالكماة الرطبة فانها من المن ومائوها شفاء للعين (ابونعیم۔ابن السنی)

(तुम्हारे फ़ाएदे के लिए खुंबी मौजूद है। यह मन में से है और इसका पानी आंखों के लिए शिफ़ा है।)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं:

اَنَّ نـاسـاً مـن اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم تالو لرسول الله صلى الـلـه عليه وسلم الكماة جُدرىُّ الارض فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم الكماة من المن ومائوها شفاء للعين والعجوة من الجنة وهى شفاء من السّمّ. قـال ابـو هـريرهة فاخذتُ ثلاثة اكمُوءٍ اوخمساً اوسبعاً فعصر تهن وجعلت ماءُ هن فى قارورةٍ وكحلت به جاريةٍ لى عمشآءَ نَبَرَت. (ترمذی)

(रसूलल्लल्लाहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के असहाब ने एक रोज़ उनको मुख़ातिब करके कहा कि खुंबी ज़मीन की चेचक है। इस पर रसूललाह सल्ल. अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि खुंबी मन मे से है। और इसका पानी आंखों की बीमारियों के लिए शिफ़ा है। ज़बकि अजवा खजूर जन्नत से है। और वह ज़हरों की तिरयाक़ है। अबूहुरैरह रज़ि. कहते हैं कि इसके बाद मैंने तीन या पांच या सात खुंबियां लीं और उनका पानी निचोड़ कर एक शीशी में डाल लिया फिर मैंने यह पानी अपनी एक ऐसी लौंडी की आंखों में डाला जिसकी आंखें चुंधी थीं। इस पानी से वह शिफ़ायाब हो गई।

इस हदीसे मुबारका को इमाम तर्मिज़ी ने हसन और सही क़रार दिया है। इस रिवायत ने अरबी दानों की एक बहस को हल कर दिया। क्यूंकि बुज़ुरुगाने क्राम एक अर्से से इस बहस में मशग़ूल थे कि 'अलकमात' वाहिद में जमा है या वाहिद। अबूहुरैरह रज़ि. ने जब खुंबी की मिक़दार एक से ज़्यादा बयान की तो इसके लिए उन्होंने 'अकमू' का लफ़्ज़ जमा के तौर पर इस्तेमाल किया।

यह हदीस खुंबी के पानी से आंखों की बीमारियों से शिफ़ा की बेहतरीन मिसाल है। मुहम्मद अहमद ज़हबी रह. ने खुंबी के बारे में हवाले के बग़ैर एक रिवायत मज़ीद नक़्ल की है।

हज़रत अब्दुल्ला अब्बास रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं:

خرج علينا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال: ضحكتِ الجنة فاخرجت الكماة وضحكتِ الارضُ فاخرجتِ الكَبَرَ. (الطب النبویؐ)

(हमारे पास रसूलल्लाहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि जब जन्नत मुस्कराई तो खुंबी ज़मीन पर आ गई और जब ज़मीन मुस्कराई तो क़बर निकली।

कबर एक ख़ुदरौ कांटों वाली झाड़ी है जिसके साथ बैर की मानिंद फीके फल लगते हैं। सेहराओं में यह झाड़ी ख़ुदरौ है जिसे बकरियां और ऊंट शौक़ से खाते हैं। सेहरा नशीन इसे मुक़व्वी क़रार देते हैं और तिल्ली बढ़ी में इस्तेअ्माल करते हैं।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

खुंबी एक ख़ुदरौ पौदा है जिसमे न तो शाख़ें हैं और न पत्ते। इसकी माहियत पर कुछ मुहद्दिसीन का ख़याल है कि ख़ुदरौ होने के बाइस काश्त की तकलीफ़ के बग़ैर बनी इसराईल की सकूनत के इलाक़े में पैदा कर दी गई और इस तरह उनके लिए यह तोहफ़ए ख़ुदावंदी बन गई। जबकि दूसरे लोगों का ख़याल है कि अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल की मुश्किलात के ज़माने में इन पर आसमान से पके हुए खाने नाज़िल फ़रमाएं जिनके दो हिस्से थे। सलवा से मुराद परिंदों का गोश्त है और मन से मुराद कई क़िस्म की सब्ज़ियां हैं जिनमें से एक मन भी थी। मन–व–सलवा के यह अज्ज़ा, गिज़ाई नुक़तए नज़र से बड़ी अहमियत रखते हैं। क्यूंकि अल्लाह तआ़ला जब ख़ुद किसी के लिए कोई गिज़ा तजवीज़ या मुहैया करें तो वह गिज़ाई नुक़तए नज़र से जिस्मानी ज़रूरयात के लिए सही क़िस्म की मुतवाज़िन गिज़ा होगी। इसे बहरहाल मिसाली गिज़ा समझना चाहिए। इसका मतलब यह है कि बेहतरीन गिज़ा या मुतवाज़िन गिज़ा यह है कि इसमें सब्ज़ियां हों और परिंदों का गोश्त।

ज़हबी रह० कहते हैं कि इसका ज़राअत के बग़ैर पैदा होना इसकी उफ़ादियत का बहुत बड़ा सबूत है। क्यूंकि ऐसा करके अल्लाह ताला ने मख़लूक़ को अपनी तरफ़ से एक बेश–बहा तोहफ़ह दिया है इस लिहाज़ से खुंबी का मुफ़ीद होना एक लाज़मी अम्र है।

खुंबी न तो सर्दी की शिद्दत में पैदा होती है और न गर्मी का पौदा है बल्कि यह उस वक़्त ज़हूर में आती है जब मौसम मोअ़तदिल और खुश्गवार हो ख़ास तौर पर रबीअ की बारिशों के दौरान अरब क़दीम में लोग उसे ज़मीन की चेचक कहते थे क्यूकि इसकी शक्ल चेचक की फुंसियों से मिलती है। इसी तरह वह अंगूर को कीड़ा कहते थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों नामों को ना पसंद फ़रमा कर आइंदा इस्तेमाल से मनअ फ़रमाया। अरब इसे आसमानी बिजली की सबज़ी" नबातुर्रअ़द" का नाम भी देते आए हैं क्यूंकि यह बिजली चमकने और मींह बरसने के बाद पैदा होती है।

खुंबी को कच्चा भी खाया जा सकता है और पकाकर भी। इसकी सफ़ेद शक्ल खाने में बेहतर है जबकि सुर्ख़ क़िस्म ज़हरीली है। मेअदे को ख़राब करती है। पेशाब में रुकावट पैदा करने के अलावा अअ़साब में सोज़िश का सबब बन कर फ़ालिज का बाइस हो सकती है। इसकी इस्लाह का तरीक़ा यह है कि इसे पकाने में सअ़तर भी शामिल कर लिया जाए जो इसके बुरे असरात को ख़त्म

कर देता है।

खुंबी को आंख में डालना ज़ुअफ़े बसारत और सोज़िश के लिए अज़हद मुफ़ीद है। और इसकी तसदीक़ फ़ाज़िल अतिब्बा में से बू–अलीसैना और मसीही ने की है। खुंबी की सलाहियत और मनो सलवा की शमूलियत के बारे में बाज़ मुहद्दिसीन यह कहते हैं कि सलवा सालन था जिसके साथ मन रोटी का काम देती थी। अगर यह क़रार दिया जाए कि मन बतौर तोहफ़ा उनके लिए ज़मीन से उगाई गई तो सवाल पैदा होता है कि फिर इसके खाने से जो नुक़सानात पैदा होते हैं इसकी वजह क्या है? इसकी वजह इनकी अपनी बदउनवानियां भी हो सकती हैं। क्यूंकि जानवरों और पौधों में बहुत से ऐसे हैं जिनमें नुक़सानात भी हैं। ज़रर से कोई चीज़ भी ख़ाली नहीं। हत्ता के रोटी भी अगर एतिदाल से ज़्यादा खाई जाए तो तकलीफ़ का बाइस हो सकती है। इनसान को इंतिख़ाब और मिक़दार पर क़ुदरत हासिल है। और इसे यहां पर अक़्ल इस्तेअ़माल करनी होगी। यह भी मुमकिन है कि मन की जो क़िस्म इनको मयस्सर थी वह ज़हरीली न थी। जैसे के मसनद अहमद की एक रिवायत से पता चलता है कि अल्लाह तआला ने जो सबज़ियां और अजनास बनी इसराईल के लिए पैदा किए इनकी शक्लो सूरत और ज़ाएक़ा आजकल के फलों, सबज़ियों और अनाज से मुख़तलिफ़ था। इनकी गंदम का दाना बड़ा था और इसमें खजूर का ज़ाएक़ा था। और इन इनआमात के बाद जब उनकी हुक्म अदूलियां हद से बढ़ गईं तो उनपर अज़ाब नाज़िल किया गया। यह अज़ाब भी मुख़तलिफ़ शक्लों में था जैसे के ताऊन के बारे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उन पर अज़ाब में एक ताऊन भी थी। तौरेत की रिवायत के मुताबिक़ एक–एक वबा में लाखों अफ़राद मर गए।

इमराज़े चश्म में खुंबी के फ़वाइद के बारे में मुहद्दिसीन ने जो इमकानात अमल बयान किए हैं।

1. खुंबी का पानी बज़ाते ख़ुद एक दवा है। इसे इसी सूरत में इस्तेअ़माल किया जाए।
2. इसको किसी दूसरी दवाई के साथ शामिल न किया जाए।
3. अल्लामा अलग़ाफ़क़ी रह. के मुशाहिदे के मुताबिक़ खुंबी का पानी दूसरी अदविया के असर को दोबाला करता है। जैसे कि इसे अगर सुरमा पीसते वक़्त इसमें मिला लिया जाए और फिर यह सुरमा आंखों में लगाया जाए तो यह पलको को मज़बूत करता है। नज़र को तेज़ करता है और आंख में पाई जाने वाली हर सोज़िश को दूर करता है।

PROTEIN	.5	CARBOHYDRATES	.	SODIUM	2-6
POTASSIUM	133	CALCIUM	0.8	MAGNESIUM	3.8
FERROUS	.29	COBALT	.18	PHOSPHORUS	38.6
SULPHUR	9.6	CHLORINE	24		

इसके बर–ख़िलाफ़ दूसरे मुहक़्क़िक़ीन ने बताया है कि खुंबी में PROTEIN यअ़नी लहमियात की मिक़दार 3.0 फ़ीसदी होती है। जबकि इसमें 90 फ़ीसदी

पानी और 5 फ़ीसदी निशास्ता और एक फ़ीसदी मअ़दनी नमक और विटामिन होते हैं। भारती माहिरीन अदविया और तग़ज़िया की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ इसमें एक बीरोज़ा कड़वे अजज़ा, गोंद नबाताती अलब्यूमन और मोम होते हैं। इसका सहीह जुज़्वे आमिल AGARIC FUNGIC तेज़ाब हैं। इसके अलावा इसमें फ़ास्फ़ोरिक एसिड एमोनिया पाए जाते हैं।

इसके जुज़्वे आमिल AGRICIN में 97 फ़ीसदी AGARRIC ACID होता है और 3 फ़ीसदी AGARICOL होती है। इसमें मोम, गोंद और बीरोज़ा की मौजूद से जब यह किसी सोज़िश वाली जगह डाली जाएगी तो उसे मक़ामी तौर पर सुकून भी मुहैय्या करेगी।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तजवीज़ कर्दा दीगर अदविया और ग़िज़ाओं की मानिंद इसमें सोडियम की मिक़दार कम से कम और पोटाशियम ज़्यादा है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

सफ़ेद रंग की खुंबी सबसे उमदा है। बाज़ अतिब्बा ने सुर्ख़ को भी अच्छा कहा है मगर सुर्ख़ और सियाह ज़हरीली होती हैं। वैदिक तिब में खाने वाली क़िस्म खुंबी और ज़हरीली "पदभेरा" कहलाती है। इसकी एक क़िस्म कशमीर से आई है और "कांचू" कहलाती है इसे गोश्त के साथ पकाकर खाया जाता है और ख़ुश ज़ाएक़ा और मुक़व्वी बाह बयान की जाती है।

खुंबी का रस निकाल कर और ख़ास कर इसे देगची में डाल कर भूनने पर उस वक़्त जो पानी इसमें से निकलता है। आंख में टपकाने से आंख का जाला कट जाता है। खुंबी के पानी में सुरमा को ख़रल करके आंखों में लगाया जाए तो यह बसारत को तेज़ करता है। पल्कों को कुव्वत देता है। पलकों के गिरते बालों को रोकता और इनको लम्बा करता है। बूअली सेना के उस्ताद अबू सुहैल मसीही और बू अली ने इसे आंख की मुतअद्दिद बीमारियों का अकसीर क़रार दिया है।

खुंबी को सुखा कर पीस कर खाने से दस्त आने रुक जाते हैं। देर में हज़्म होती है। इसके साथ मंशियात का इस्तेअ़माल किया जाए तो पेट में नफ़्ख़ा पैदा करती है और क़ौलंज हो सकता है। इसकी एक क़िस्म कुशंज कहलाती है। यह हरारत को मिटाती है। यह बलग़म को कम और गाढ़ा करती है। दुबली पतंली औरतें इसे हलवा में मिलाकर मोटा होने के लिए इसे मुर्ग़ी के गोश्त या अंडों के साथ खाने और ऊपर से ठंडा पानी पीने से पेट में मुस्तक़िल ख़राबी और अअ़साब में कमज़ोरी पैदा हो जाती है। ज़बान में लकनत पैदा करती है। सांस में तंगी लाती है। और पेशाब में रुकावट हो जाती है। मगर यह सब अलामात बिलख़सूस ज़हरीली अक़साम के बारे में हैं। इसका सबसे बड़ा मुसल्लह सअ़तर है। खुंबी पकाते वक़्त सअ़तर को ज़रूर शामिल कर लेना चाहिए। अगर इसके ज़हरीले असरात पैदा हों तो मूली, पोदीना, सिकंजीन या कांजी या कांजी के साथ बोरा अरमनी और नमक मिलाकर बार–बार दें। अंजीर के दरख़्त की लकड़ी

जलाकर इसकी राख नमक और सिरका के साथ और शहद बार-बार चटाएं।

मक़ामी असरात के सिलसिले में खुंबी को सरीशम माही के साथ कूट कर सिरका में हल करके बच्चों को बढ़ी हुई नाफ़ पर लगाने से वह अंदर चली जाती है। फ़ित्क़ यअ़नी हरनिया HERNIA में भी यही लेप मुफ़ीद पाया गया है। खुंबी ख़ून बढ़ाती है। उसे पीस कर ऐसे ज़ख़्मों पर लगाना मुफ़ीद है। जो आसानी से भरने में न आते हों। वैदिक ख़ुश्क खुंबी सर पर मलने को बाल उगाने का बाइस क़रार देते हैं सूखी खुंबी के इस्तेअ़माल के बारे अतिब्बा का मशवरा है कि इसे पहले एक दिन पानी में भिगोया जाए। फिर साफ़ करके घी में भूनने के बाद इस्तेमाल में लावें। इसके मुज़िर असरात की इसलाह के लिए घी की बजाए ज़ैतून के तेल में भूनना ज़्यादा मुफ़ीद होगा। इसके साथ नाशपाती और सिर्का का इस्तेमाल नुक़सानात से महफ़ूज़ रखता है।

जदीद मुशाहिदात:

खुंबी एक मक़बूल ग़िज़ा है। यौरोपी होटलों में लोग बड़े शौक़ से खुंबी का सालन खाते हैं। अब मुतअद्दिद मुल्कों से क़ाबिल ख़ुर्दनी खुंबियां डब्बों में बंद हो कर स्टोरों पर आसानी से मिल जाती हैं। क्यंकि इनके ज़ाएक़े के अलावा इनमें लहमियात की इज़ाफ़ी मिक़दार इनको मुफ़ीद बना देती है। चीनी खानों में मुर्ग़ी और खुंबी, मुर्ग़ी और बड़े का गोश्त या मछली के अलावा खुंबी का पुलाओ बड़ा मक़बूल है।

खुंबी का तअ़ल्लुक़ (FUNGUS) फ़ंगस ख़ानदान से है, यह वही ख़ानदान है जिसे अब तक की तमाम जरासीम कुश अदविया अज़ क़िस्म पिंसलेन से क्लोरोमाइ स्टेन तक हासिल होती हैं। खुंबी से भी अब तक कई क़िस्म की जरासीमकुश अदविया मयस्सर आई हैं जिन पर मुशाहिदात जारी हैं। और इस अम्र का इमकान मुस्तक़बिल क़रीब में मौजूद है कि खुंबी से हासिल होने वाले मुरक्कबात इलाज में अपना मक़ाम पा लें। इसमें जरासीमकुश अदविया की मौजूदगी साबित हो चुकी है। इसलिए जब अहादीस में इसे आंखों की बीमारियों में शिफ़ा क़रार दिया गया तो वह साबित है। तिब्बे जदीद इस अम्र की तसदीक़ करती है कि खुंबी के पानी में जरासीम को मारने की सलाहियत मौजूद है।

इसके दीगर असरात में इसे मदरबोल, मुख़रिजे बलग़म, मुसहल, दूध पैदा करने वाली और पसीने को रोकने वाला क़रार दिया गया है। इसे शहद के साथ मिलाकर मोती झारा टाईफ़ाइड और दूसरे बुख़ारों में उफ़ादियत के साथ दिया जाता है। थूक में ख़ून आने, तपेदिक़ पुरानी खांसी और रात को पसीने आने में मुफ़ीद है। जौंक लगने के बाद ज़ख़्म से बहने वाला ख़ून इससे रुक जाता है। इसकी बाज़ अक़साम से इस्हाल रुक जाते हैं और जिस्म को ताक़त मिलती है।

जदीद इन्कशाफ़ात के मुताबिक़ ज़हरीली अक़साम में एक ज़हर muscarine होता है। यह ज़हर जिस्म में जाते ही मेअ़दे में ख़ेज़िश पैदा करता है। इसके बाद असबी निज़ाम पर असर अंदाज़ होता है। जिससे पट्ठों में दर्दें, अअ़ज़ा में ऐंठ और रअ़शा की मानिंद कपकपी ज़ाहिर होने लगती है। इसके बाद दिमाग़ी

असरात से फ़ालिज या कंज़ार की तरह तिशनज और उसके बाद मौत वाक़े हो सकती है। मगर मौत वाक़े होने के लिए एक आध खुंबी काफ़ी नहीं होती। ज़्यादा मिक़दार में खाना और इसके बाद अलामात के ज़हूर से मुसलसल लापरवाही मौत का बाइस होती है। जर्मन अतिब्बा का ख़याल है कि MUCARINE के जिस्म पर असरात को ख़त्म करने वाली कोई दवाई नहीं होती। अलबत्तह इब्तिदा में पता चल जाए तो मरीज़ का मेअदा धोकर इसे जिस्म से निकाला जा सकता है।

होम्योपैथिक तरीक़ा इलाज:

ज़हरीली खुंबी खाने से जिस्म में जो असरात नुमायां होते हैं। इनको सामने रखते हुए इलाज बिलमिस्ल के उसूल पर इसी क़िस्म की कैफ़ियात में खुंबी का जौहर AGARICUS होम्योपैथिक तरीक़ा इलाज की एक मक़बूल दवाई है। जब दिमाग़ में घबराहट, चुलबुलाहट मुसलसल बातें करने और गाने को जी चाहे सर में चक्कर आएं, रौशनी बुरी लगे, हिलने–जुलने से चक्कर आएं, सर में भारीपन और सर दर्द, पढ़ने मे मुश्किल पड़े, नज़र उठाने के बाद उसे किताब पर मरकूज़ करने में मुश्किल पड़े, आंखों पर मअमूली काम से बोझ पड़े, एक के दो दो नज़र आएं, पलकें फड़फड़ाएं। कानों में जलन ख़ारिश और यह अकड़े हुए मालूम हों, पेट में अकड़ और चुभन की दर्द, बदहज़मी, शदीद खांसी के दौरे पड़ते हों, माहवारी कम और दर्द से आती हो तो इन कैफ़ियात में AGARICUS का देना मुफ़ीद है।

वबाई इम्राज़ और खुंबी:

पिछले चंद सालों से दुनिया के मुख़तलिफ़ मुमालिक में आंखों की सोज़िश वबाई सूरत में फैलती रही है। चूंकि यह सोज़िश वाएरस की वजह से होती है, इसलिए अभी तक इसके ख़िलाफ़ कोई भी मुअस्सिर दवाई दरयाफ़्त नहीं हो सकी। साल 1985–86 में इस आशोबे चश्म के तक़रीबन एक सौ मरीज़ों की आंख में खुंबी का पानी दिन में तीन मर्तबा डाला गया हर मरीज़ दूसरे दिन से शिफ़ायाब हो गया।

गोगल .... कंदर

BALASMENDRON MUKUL

यह एक पसंद क़द्द दरख़्त है जिसकी ऊंचाई छः फ़िट के क़रीब होती है। बुनियादी तौर पर यह ख़ुश्क और सोहराई इलाक़ों में होता है। जैसे कि सिंध और बहावलपुर, भारत में राजपूताना, ख़ांदेश काठियावार, आसाम और कोरुमंडल के इलाक़ों में गोगल की ज़्यादा तौर पर पैदावार होती है। नदकारनी और सय्यद सफ़िउद्दीन को इसके नबाताती नाम से इत्तिफ़ाक़ नहीं और वह इसे BOSWELIA GLABRA कहना पसंद करते हैं।

गोगल के दरख़्त को भूरे रंग के छोटे–छोटे फूल लगते हैं। सर्दी के मौसम में इसके तने में घाओ लगाएं तो गाढ़ा सा एक सय्याल निकलता है जो ख़ुश्क

हो कर गहरे सब्ज़ रंग की गोंद की शक्ल इख़्तियार कर लेता है। यह गोंद ज़ाएक़े में कड़वा और ख़ुश्बूदार होता है। इसे संस्कृत में कोशी काना और गोग्लू कहते हैं जिससे दरख़्त और इसकी गोंद का नाम गोगल पड़ गया।

इरशादाते नबवी सल्ल०

मुहद्दिसीन ने कंदर और लोबान को एक ही चीज़ क़रार देने की कोशिश की है। जबकि यह दोनों मुख़तलिफ़ हैं। लेकिन यह मुग़ालता आज से हज़ार साल पहले वालों को नही बल्कि आज भी मौजूद है। पाकिस्तान कौंसिल आफ होम्योपैथी ने मुल्क में इस्तेमाल होने वाली होम्योपैथिक अदविया के फ़ारमाकूपिया में भी लोबान और कंदर को एक ही चीज़ क़रार देने की कोशिश की है। हालांकि लोबान आम अंग्रेज़ी में BENZOIN और कंदर को OLIBANUM कहते हैं।

इब्नुलक़ैय्युम रह० ने आदाबुश शिफ़ा की सनद से हज़रत अनस बिन मालिक रह० की ज़बान से नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस से एक वाक़िआ यूं बयान किया है।

انه شكا اليه رجل. النسيان، فقال: عليک بالكندر، وانقعه من الليل، فاذا اصبحت فخذ منه شربةً على الريق: فانه جيد للنسيان. (الطب النبوىؐ)

(एक शख़्स ने इनकी ख़िदमत में याददाश्त की ख़राबी की शिकायत की आपने फ़रमाया कि कंदरे ले कर रात इसे पानी में भिगोदिया जाए। सुबह नहारमुंह इसका पानी पिया जाए। क्यूंकि यह नस्यान के लिए बहतरीन दवाई है।)

इब्नुलक़ैय्युम रह० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से एक रिवायत नक़ल की है जिसमें वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदत के बारे में इरशाद करते हैं।

"انه شربه مع السكر على الريق، جيد للبول والنسيان. (الطب النبوىؐ)

(उन्होंने सुबह नहारमुंह इसे शकर में मिलाकर पिया और फ़रमाया कि यह पेशाब की तकलीफ़ और हाफ़ज़े की कमी के लिए बहतरीन है।)

गोगल और लोबान, दोनों पेशाब आवर और दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन हैं। इसलिए मुमकिन है कि उन्होंने लोबान या गोगल में से किसी एक को इस ग़र्ज़ के लिए पसंद फ़रमाया हो। लेकिन जहां तक हाफ़ज़े की ख़राबी का तअल्लुक़ है इस ग़र्ज़ के लिए सिर्फ़ गोगल मुफ़ीद है। जबकि लोबान का अअसाबी निज़ाम पर इस क़िस्म का कोई असर नहीं। क्यूंकि इन दोनों के बारे में वह ख़ुद फ़रमाते हैं।

(इसलिए वह इन दोनों के फ़वाइद और असरात के दरमियान फ़र्क़ "اللبان: هو الكندر" नहीं कर सके।)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

हाफ़ज़े में कमी तफ़क्करात, ग़म, बुरे माहोल, खट्टे सेब खाने, खड़े पानियों को देखने से होती है। क़बरों की अलवाह को बार बार पढ़ने, चूहों की रौंदी हुई ख़ुराक खाने और सर में जुएं पड़ने से भी हाफ़ज़ा कमज़ोर होता है और यह बात

तजुर्बात से कही जाती है।

गोगल मुफ़ीद होने के साथ साथ बे–ज़रर है। यह जिस्म के किसी भी हिस्से में चोट या बीमारी की वजह से होने वाले अंजमाद ख़ून को दूर करता है। चूंकि यह दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन है। इसलिए इस्हाल को दूर करता है। ज़ख़्मों को भरता है। और ख़ास तौर पर आंखों के ज़ख़्म और सोज़िश इससे ठीक हो जाते हैं।

गोगल गर्म पानी में हल करके अगर इससे ग़रारे और कुल्लियां की जाएं तो यह मुंह के ज़ख़मों और ख़ास तौर पर ज़बान की जलन और सोज़िश को दूर करता है। इसके ग़रारे करने से गले में वबाई सोज़िशें नहीं होतीं। मसूढ़ों के ज़ख़्म मुंदमिल होते हैं। इससे ज़हन को ताक़त मिलती है और सांस ख़ुश्बूदार हो जाती है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

गोगल दरख़्त की लकड़ी हमेशा गीली रहती है क्यूंकि इसमें तेल होता है। दो साल में भी नहीं सूखती, इसे एक मीठा फल लगता है। वैदों ने इसकी सियाह क़िस्म को "भैंसियो गोगल" और दूसरी क़िस्म "हीरा भैंसिया गोगल" क़रार दी है। वैदिक में इसे गंधने के पानी में हल करके या ककरौंदों के पानी के साथ खरल करके बवासीर में इस्तेअमाल करने की सिफ़ारिश की गई है। "अतरीफ़ल व माजून गोगल" वैदिक नुसख़े के मुताबिक़ गोगल को दुगने गाए के घी में डाल कर पकाने के बाद नीचे बैठे हुए मवाद को निकाल लेते हैं इसे मज़ीद नुस्ख़ों में शामिल किया जाता है।

अअ़साबी इम्राज़ में गोगल कसरत से मुस्तैमिल है। जब फ़ालिज की वजह से जिस्म का कोई अज़ू नाकारा हो जाए तो गोगल का इस्तेमाल ख़ून की रुकावट को दूर करके दौरान जारी करता और फ़आलियत को वापस ले आता है। सर दर्द में मुफ़ीद है। ख़नाज़ीर पुरानी खांसी, फेफड़ों के वरम और दर्द में नाफ़ेअ है हलक़ के वरम को दूर करता है, बवासीर के लिए इसका खाना और धूनी दोनों मुफ़ीद हैं। मुकअ़द और ख़सियों का वरम दूर करता है मसूढ़ों की सोज़िश कम करता है। गुर्दा और मसाना की पथरी निकाल सकता है। पेशाब आवर है। दूध बढ़ाता है। अर्क़ुन्निसा, कमर दर्द और नुक़रस को फ़ाएदा देता है।

वैद इसे भूख बढ़ाने, ज़अ़फ़े बाह, गाठों को तहलील करने में इस्तेमाल करते हैं। सोंठ के जोशांदे के साथ गोगल ज़अफ़ हज़्म के लिए और काली मिर्च और सुरंजाने तल्ख़ के साथ गंठिया में देते हैं।

गोगल को सिरके में हल करके लगाने से सर के गंज को फ़ाएदा होता है। नारियल के तेल में इसका मरहम मुतअफ़्फ़ुन ज़ख़्मों को अच्छा कर देता है।

कीमयावी हैइयत:

इसकी कीमयावी हैइयत को मुर के साथ उलझा दिया गया है। बल्कि कर्नल चोपड़ा जैसे सक़्क़ा मुहक़्क़िक़ क़रार देते हैं। गोगल को वही कुछ समझा जाए जो मुर है।

अब तक के तज्ज़ियों से मअलूम होता है कि इसके अज्ज़ाए तर्कीबी में 35 फ़ीसदी के क़रीब बेकार चीज़ें हैं ख़ालिस गोंद 32 फ़ीसदी है। इसमें 1.45 फ़ीसदी तेल हैं यह दूसरे तेलों की तरह मक़ामी तोर पर मुख़्ज़िश और दौराने खून में इज़ाफ़ा करता है। 1950 में भाटी ने मालूम किया कि इसमें 65 फ़ीसदी एक नाम्याती अंसर MYRCENE पाया जाता है, अभी तक किसी ने इस जुज़्व के असरात के बारे में मअ़लूमात हासिल नहीं कीं।

1942 में घोष ने इसमें गोंद के अलावा मादनयाती अनासिर को 19.5 फ़ीसदी की मिक़दार में दरयाफ़्त किया। जिनमें एल्यूमिनियम, मेगनिशियम, कैल्शियम फ़ौलाद और सलीका ज़्यादा अहम है।

गोगल की साख़्त में BALSUM OF TOLU की एक मिक़दार पाई जाती है। अतिब्बा क़दीम की एक तअ़दाद इसे रोग़न बिल्लिसान क़रार देती है। दूसरे अलफ़ाज़ में रोग़ने बिल्लिसान गोगल का एक हिस्सा है। लेकिन रोग़ने बिल्लिसान में गोगल नहीं होता।

अतिब्बा जदीद के मुशाहिदात:

असरात के लिहाज़ से यह कबाब चीनी यअ़नी CUBEBS और COPAIBA से मिलता जुलता है। यह साबित और सालिम जिल्द पर कोई असर नहीं रखता। मगर जब जिल्द पर कोई ज़ख़्म, तअफ़्फ़ुन या सोज़िश हो तो इसके दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन असरात बड़े मुफ़ीद होते हैं। यह पीप को ख़त्म कर देता है। और ज़ख़्म को जल्द भरने में मदद देता है। इसका मरहम कोढ़ के ज़ख़्मों को भी मुफ़ीद है।

इसके मक़ामी और अंदरूनी असरात की बुनियाद इसके दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन मक़ामी तौर पर ASTRINGENT असरात और दौराने ख़ून को जारी रखने के अमल पर मबनी हैं। यह अअ़साब के लिए बयक वक़्त सुकून आवर और मुहर्रिक है। इसके ज़ाएक़े की कड़वाहट इसे भूख बढ़ाने वाला बनाती है और यह पेट से रियाह को ख़ारिज करता है। कोढ़ गंठिया, आतिश्क, लाहोरी फोड़े और इम्राज़ुलबोल में उसे बड़ी शोहरत हासिल है।

इसकी धूनी दिक़, पुरानी खांसी, हलक़ की सोज़िश और बवासीर में मुफ़ीद है। इसके धुएं से घरों के कीड़े—मकोड़े मर जाते हैं और कमरे में अगर्चे जरासीम मौजूद हों तो हलाक हो जाएं। इसके खाने जिस्म की कुव्वत और कमरे में अगर जरासीम मौजूद हों तो हिलाक हो जाएं। इसके खाने से जिस्म की कुव्वते मुदाफ़ेअ़त में इज़ाफ़ा होता है और ख़ून के सफ़ेद दाने WBC बढ़ते हैं। खाने के बाद यह पसीना, पेशाब और झिल्लियों की रतूबत के रास्ते ख़ारिज होता जहां पर जरासीम को मारता है। मदरुलबोल और पथरी को निकालता है। इस्हाल आंतों की सोज़िश, कमज़ोरी, सूखापन में मुफ़ीद है। चूंकि इसके आमतौर पर मुज़िर असरात नहीं इसलिए ज़्यादा अरसह खाया जा सकता है। इसलिए तिब्बी बीमारियां तपे—दिक़ और आंतों की दिक़, पिलोरसी में देते हैं।

इसके ग़रारों से मसूढ़ों के ज़ख़्म भर जाते हैं और हलक़ की सोज़िश मुंदमिल हो जाती है।

लोबान............ लीबान

STYRAX BENZOIN

लोबान एक दरख़्त से निकलने वाली गोंद है। दरख़्त के तने पर जब घाओ लगाते हैं तो बीरोज़ा की मानिंद एक गाढ़ा लेसदार माद्दा ख़ाजिर होता है। जिसे सुखाकर इस्तेअमाल करते हैं। अगर्चे इसके दरख़्त हिंदुस्तान में भी हैं लेकिन दुनिया में ज़्यादा तर लोबान की दरआमद जनूबी थाई लैंड, मलेशिया और जज़ाइर शिर्क़ुल हिंद से होती है। इसे अंग्रेज़ी में BENZOIN और मरहठी में अदू कहते हैं। जोकि ग़लत है। क्यूंकि अदू एक मुख़्तलिफ़ चीज़ है।

अहादीस नबवी सल्ल॰

हज़रत अब्दुल्ला बिन जाफ़र रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

بخرو بیوتکم باللبان والشیح (بیہقی شعب الایمان)

(अपने घरों में लोबान और शीह की धूनी देते रहा करो।)

بخرو بیوتکم باللبان والصعتر (بیہقی)

(अपने घरों में लोबान और साअ़तर की धूनी देते रहा करो।)

मुहद्दिसीन ने इन अहादीस की तफ़सीर को लोबान को कंदर के साथ ख़लत मिला कर दिया है। इब्नुलक़ैय्युम रह॰ ने लोबान को कंदर क़रार देते हुए दोनों के फ़वाइद मिला देते हैं। दूसरी तरफ़ भारती माहिरीन ने अगर्चे कंदर को मुख़्तलिफ़ चीज़ क़रार दिया है मगर एक दूसरी गोंद BOSWELLA SERRATA को भी लोबान ही लिखा है। जबकि यह गोंद अपने असरात और शक्लो सूरत के लिहाज़ से कंदर के ज़्यादा क़रीब है।

तौरैत मुक़द्दस:

तौरेत और अंजील में लोबान का ज़िक्र बार-बार मिलता है। उनकी अंग्रेज़ी में इसे FRANKI SENCE के नाम से मौसूम किया गया है। तौरेत और अंजील में इसका ज़िक्र 8 मर्तबा आया है।

"और अगर कोई ख़ुदावंद के लिए नज़र क़ुरबानी का चढ़ावा लाए" अपने चढ़ावे के लिए मैदा ले और इसमें तेल डाल कर इसके ऊपर लोबान रखे और इसे हारून के बेटों के पास जो काहिन नहीं लाए, और तेल मिले हुए मैदा में से इस तरह अपनी मुट्ठी भर कर निकाले कि सब लोबान इस में आ जाए। सब काहिन इसे नज़र की क़ुर्बानी की यादगारी के तौर पर ऊपर जलाए। (अहबार-2-1:2:3)

.....इसकी मां मर्यम के पास देखा और इसके आगे गिर कर सजदा किया और अपने डब्बे खोल कर सोना और लोबान और मुर उसको नज़र किया। (मना:2-11:12)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

लोबान क़ब्ज़कुशा है। इसमें फ़ाएदे ज़्यादा हैं। और नुक़सान बहुत कम। मैअ़दे के दर्द को दूर करता है। इस्हाल में मुफ़ीद है। खाने को हज़्म करता है। आंखों के ज़ख़्म मुंदमिल करता है। मेअदे को तक़वियत देता है। बलग़म निकालने के बाद इसकी पैदाइश को कम करता है।

अगर लोबान या इसके साथ सअ़तर मिलाकर ग़रारे किए जाएं। तो गले की सोज़िश में मुफ़ीद है। ज़बान के ज़ख़्म मुंदमिल करता है। मेअदे को तक़वियत देता है। बलग़म निकालने के बाद इसकी पैदाइश को कम करता है।

अगर लोबान या इसके साथ सअ़तर मिलाकर ग़रारे किए जाएं। तो गले की सोज़िश में मुफ़ीद है। ज़बान के ज़ख़्म भर जाते हैं। हाफिज़े को बहतर करता है।

गले हुए ज़ख़्मों पर लोबान का इस्तेमाल सोज़िश को दरू करने के साथ सहतमंद गोश्त उगाने का बाइस होता है। इसकी धूनी घर को ख़ुश्बूदार बनाने के अलावा वबाई इम्राज़ को ख़त्म करती है।

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदा:

आयुर्वेदिक किताबों में लोबान का ज़िक्र नहीं मिलता। यूरोप में भी इससे वाक़फ़ियत 1399 के बाद से शुरू होती है जब इब्ने बतूता अपनी सय्याहत के बअ़द इसे ले कर यूरोप गया। उम्दा क़िस्म के लोबान के सफ़ेद दाने हैं, वरना भूरी रंगत का होता है। जो अलकुहल में पूरी तरह हल हो जाता है।

मेअ़दा, दिल और बाह को कुव्वत देता है। भूख बढ़ाता है। रियाह को तहलील करता है। सर्दी खांसी को मुफ़ीद है। बलग़म निकालता है, खाने या लगाने से दांतों का दर्द जाता रहता है। नज़ले में मुफ़ीद है। वरीदों ने इसे मुफ़र्रह क़रार देने के अलावा पसीने को ख़ुश्बूदार करने वाला बयान किया है। इसके खाने से मसाने की सोज़िश दूर हो जाती है। दिक़ और सिल में नाफ़ेअ़ है।

लोबान का लेप नज़लों को रोकता है। रौग़न कंजद या ज़ैतून में मिलाकर अगर कान में डाला जाए तो कान का दर्द जाता रहता है। इसकी धूनी कीड़ों मकोड़ों को भगा देती है। लोबान को नीम कोब करके हांडी में गुले हिकमत करके डाल कर एक नल्की बुख़ारात के इख़राज के लिए लगा देते हैं। इस हांडी को आग देने के बाद लोबान के जो बुख़ारात नल्की के ज़रिए बाहर आते हैं, को शीशी में जमा कर लें। यह लोबान का चव्वा कहलाता है। इस सय्याल को पट्ठों की कमज़ोरी के अलावा दादक़बा और एग्ज़ीमा के लिए मुफ़ीद बताया जाता है।

कीमयावी तज्ज़िया:

यह आंसुओं की शक्ल के ख़ुश्क दानेदार टुकड़े होते हैं जिनमें BENZONIC ACID और CINNAMIC के अलावा ANILINE पाए जाते है। इसके अलावा फ़रारी रौग़न भी मौजूद है। चूंकि लोबान एक दरआमदी चीज़ है इसलिए महंगा होता है। पहले ज़माने में लोग मिस्तगी रूमी को रंग दे कर ख़ुश्बू मिलाकर

नक़ली लोबान बनाते थे। चूंकि अब मिस्तगी भी गिरां है। इसलिए बीरोज़ा से लोबान तैयार करने की सनअत ज़ोरों पर है। पाकिस्तान के दवा फ़रोशों के यहां आमतौर पर असली लोबान देखा नहीं गया।

जदीद तहक़ीक़ात:

राफ़े तअफ़्फ़ुन, हाबिस ख़ून होने की वजह से ज़ख़्मों के इलाज में अहमियत रखता है। जरासीमकुश होने की वजह से सांस की नालियों की सोज़िशों, गुर्दे की सोज़िश और पथरी के अलावा पेश.ब आवर असर की वजह से मकबूल है।

जब पेशाब में फ़ास्फ़ीट ज़्यादा मिक़दार में हों तो लोबान के मुरक्कबात इनको तहलील करके बाहर निकालते हैं। दूसरे पेशाब आवर नमकियात के साथ लोबान के अपने नमक अज़क़िस्म SOD BENZONATE पेशाब आवर होने के अलावा दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन और पेशाब के ज़रिए पानी निकालते हैं। जोड़ों के दर्द में मुफीद है। तपे-दिक़, सिल, पुरानी खांसी में इसका इस्तेमाल बहुत से दूसरी अदविया से बेहतर हे।

पुरानी अदविया में से वह अदविया जो तिबे जदीद में अब भी इस्तेअमाल होती हैं उनमें लोबान अहम है। इसकी टिंक्चर TR. BENZOIN CO को FRIAR'S BALSAM भी कहते हैं। खोलते पानी में यह टिंक्चर मिलाकर पुरानी खांसी नमक और गले की सोज़िश के मरीज़ों को इसकी भाप दी जाती है। दिन में दो तीन भाप लेने से जमी हुई बलग़म बाहर आने लगती है। और वह मरीज़ जिसे सांस लेना भी दूभर था सहूलत महसूस करने लगता है।

ज़ख़्मों के इलाज में टिंक्चर को रूई पर लगाकर ज़ख़्म पर लगाएं तो यह चिपक जाती है, ज़ख़्म से अफ़ूनत को दूर करने के अलावा उसे मुंदमिल करती है। इसको लगाने से बार-बार पट्टी करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। सोडियम निज़वेट अक्सर मरहमों का अहम जुज़्व है। ख़ास तौर पर फफूंदी से पैदा होने वाली सोज़िशों, दाद, चंबल और पुराने एग्ज़ीमा में तन्हा या सेली सिल्क एसिड के साथ एक मक़बूल दवाई है। तिब्बे जदीद की एक मशहूर मरहम WHITFIEDLD OINTMENT का नुसख़ा यह है।

BENZOIC ACID	ग्रीन 60 नब्ज़ोटिक एसिड
SALICYLILIC ACID	ग्रीन 3 सेली सिल्क एसिड
VASELINE	ग्रीन 910 वेसलीन

यह मरहम जोड़ों के दर्द के लिए ख़ास तौर पर मुफ़ीद है।

आधा सेर पानी में टिंक्चर का एक चम्मच डालने से दूधिया महलूल बन जाता है। इस में रूई को तर करके औरतों की अंदामे निहानी की सोज़िशों और लीकोरिया के लिए अंदर रखा जाता है।

लोबान की धूनी:

हशरातुल अर्ज़ से निजात हासिल करने का जदीद तरीक़ा करमकश अदविया हैं। इनमें से अक्सर क्लोरीन से मुरत्तब पाती हैं। यह तमाम अदविया ज़हरीली हैं। एक हालिया जाएज़े से मालूम हुआ है कि हर साल तीन लाख अफ़राद इनके

मुज़िर असरात से मुतास्सिर होते हैं। लाहौर में पिछले साल एक औरत की मौत इन्ही अदविया की वजह से हुई। इन अदविया के स्परे के नतीजे में परिंदे ख़त्म हो गए हैं। अशयाए ख़ुर्दनी पर अगर यह गिर जाएं तो मुहलिक असरात हो सकते हैं। ENDRINE और MALATHION के बारे अब यह तै हो चुका है कि इनको आबादियों में इस्तेमाल न किया जाए।

इस मसले का सबसे आसान और मुफ़ीद हल बारगाहे नबुव्वत से अता हुआ है घरों में लोबान और सअ़तर या लोबान और ईशह मिलाकर धूनी दी जाए। ईशह बुनियादी तौर पर हुब्बुर्रिशाद है। जबकि सअ़तर का जुज़्व आमिल THYMOL है। यह दोनों चीज़ें ख़ुश्बूदार और इनसानी सेहत के लिए मुफ़ीद हैं। अगर किसी कमरे में ख़नाक़ या दिक़ का मरीज़ रहा हो और हम इसे जरासीम से पाक करना चाहें तो तिब्बे जदीद के पास गंधक और फ़ार्मलीने के अलावा कोई चीज़ नहीं। यह दोनों कीड़ों के लिए नुक़सान दह और इन्सानों के लिए मुहलिक हैं। इसके मुक़ाबले में अगर इस कमरे में लोबान के साथ सअ़तर या ईशह मिलाकर धूनी दी जाए तो न सिर्फ़ कि मच्छर, मक्खियां, लाल बेग, छिपकलियां हलाक हो जाएंगे बल्कि जरासीम भी ख़त्म हो जाएंगे। अगर इस धूनी के दौरान अहले ख़ाना कमरे में मौजूद रहें तो इनकी सांस की नालियां भी जरासीम से पाक हो जाएंगी। बदक़िस्मती यह है कि हमें अभी तक यह यक़ीन नहीं आ सका जबकि हमारे नबी सल्ल॰ के नुस्ख़े दूसरों से हर हाल में बहतर हैं।

लहसन ...... सौम

GARLIC ALIUM SATIVUM

लहसन क़दीम तरीन नबातात में से है। एहराम मिस्र की तामीर में काम करने वाले मज़दूरों को दोपहर के खाने में लहसन दिया जाता था। क़दीम हिंदू तहज़ीब में भी लहसन बतौरे ग़िज़ा और दवा शामिल था। अलबत्ता बाज़ बृह्मण लहसन और प्याज के इस्तेमाल को नाजाइज़ क़रार देते आए हैं। इल्मे नबातात की दर्जाबंदी के मुताबिक़ प्याज़ इससे क़रीबी ताल्लुक वाला है। अगर्चे इसकी शक्लो सूरत जुदा है और ALIUM CEPA कहलाता है।

लहसन जंगलों में ख़ुदरौ भी पैदा होता है। इसकी पौथी में मुतअद्दिद जवे होते हैं जिनकी तअ़दाद मुतअय्यन नहीं। पौथी ज़मीन के नीचे होती है और बाज़ क़िस्मों में पौथी में सिर्फ़ एक ही जोया भी हो सकता है। इसकी जिसामत एक इंच से एक फ़िट तक हो जाती है। क्यूंकि जब से इन्सानों ने ग़िज़ा, मसालह और दवा के तौर पर उसे पसंद किया है। इसको महनत से बोया और उगाया जाता है। हिंदुस्तान में गोश्त और सब्ज़ियां पकाते वक़्त लहसन का बघार देने का रिवाज है। इसको डालने से कच्चे गोश्त की बदबू जाती रहती है। लहसन की चटनी बनाई जाती है। इटली और फ्रांस का जंगली लहसन ज़्यादा मक़बूल है। जबकि मश्रिक़े वुस्ता के मुमालिक के जंगली लहसन की रसदार शाख़ों को लोग अलाहिदा पका कर खाते हैं। तिब्ब में इन शाख़ों को साक़ कहते हैं।

जबकि भारती एहले ज़बान उन्हें आल कहते हैं। अहादीस में प्याज़ और लहसन की शैल्फ़ों को क्रॉस का नाम दिया गया है। इनमें बदबू लहसन और प्याज़ की मनिंद होती है।

लहसन का ज़िक्र अहादीस में कसरत से मिलता है। जिससे यह अंदाज़ा होता है कि डेढ़ हज़ार साल पहले उसे मक़बूल आम होने की सनद हासिल थी।

कुरआन मजीद में लहसन के ज़िक्र के बारे में मसअला मुतानाज़िआ है।

واذ قلتم یا موسیٰ لن نصبر علی طعام واحدٍ فادع لنا ابک یخرج لنا مما تنبت الارض من بقلها و قثائها ونومها وعدسها وبصلها. قال اتستبدلون الذی هوا ادنیٰ بالذی هو خیر. (البقرہ۔٦١)

(बनी इसराईल अल्लाह मियां की लाडली उम्मत थी। इनको मनो सिलवा की सूरत में आसमान से भुने हुए परिंदे और सब्ज़ियों का मुरक्कब खाना आता था। उन्होंने अपने नबी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कहा कि अपने रब से कहो कि हम एक ही तरह के खाने से तंग आ गए हैं। हमें वह चीज़ें दी जाएं जो ज़मीन से निकलती हैं जैसे कि साग, खीरा, ककड़ी, गंदम मसूर की दाल और प्याज़, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इनको समझाना चाहा कि वह अच्छी ख़ुराक छोड़ कर घटिया के तलबगार न हों अल्लाह तआला ने भी इस बदले इंतिख़ाब को नापसंद करते हुए इनको हिदायत की कि वह मिस्र चले जाएं। जहां इनको मतलूबा चीज़ें मयस्सर आ जाएंगी। मगर इसके साथ उन पर इताबे इलाही और ज़िल्लत मक़दूर कर दी गई।)

इस आयत में, फ़ौम, के मअने अक्सर मुफ़स्सिरीन लहसन करते आए हैं। बल्कि अलमुन्जद ने फ़ौम को लहसन ही बताया है। मुफ़स्सिरीन किराम में मुजाहिद रह. ने फ़ौम को लहसन क़रार दिया है। अक्सर उर्दू तर्जमों में भी ऐसा ही है। मगर इब्ने कसीर रह० हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. के मुतअद्दिद हवालों और क़दीम अरब शोअरा की मिसालों से फ़ौम, को गंदम क़रार दिया है। क़बीला बनी हाशिम की मक्की लुग़त में फ़ौम गंदम क़रार दिया है। क़बीला बनी हाशिम की मक्की लुग़त में फ़ौम गंदम के आटे के लिए इस्तेअमाल होता था। अलबत्ता मिस्ले प्याज़ है और इसके साथ लहसन को मुन्सलिक समझा जा सकता है। जैसे कि "क़सा" के बारे में है। अगर्चे यह ककड़ी है और खीरा ख़ायार है। लेकिन अतिब्बा और ज़बान दान इसे दोनों के लिए इस्तेअमाल करते आए हैं।

कुतुबे मुक़द्दसा:

तौरेत मुक़द्दस में बनी इसराईल पर मन और सिलवा की नेअमत के ज़िक्र के सिलसिले में बयान हुआ कि

......हम को वह मछली याद आती है जो हम मिस्र में मुफ़्त खाते थे। और हाए वह खीरे और वह ख़रबूजे और वह गंदने और प्याज़ और लहसन लेकिन अब तो हमारी जान ख़ुश्क हो गई। यहां कोई चीज़ मयस्सर नहीं और मन के सिवा हम को और कुछ दिखाई नहीं देता।

(गिंती 11:5–7)

इन आयात में बनी इसराईल ख़ुदा की नेअ़मतो को झुटलाते हुए मन से बेज़ारी का इज़हार करते हुए मिस्र की इन सब्ज़ियों को याद करते हैं जो उन्हें वहां मयस्सर थीं।

इनकी इसी कजरवी में बअद का असर यूं हुआ कि उन्होंने कुरआन मजीद के इरशाद के मुताबिक़ अपने नबी अलैहिस्सलाम से कहा कि हमें ख़ीरों, ककड़ियों वाले देस. ले जाओ हमें ख़ुदा की मुहैया कर्दा गिज़ा पसंद नहीं। जिस पर ख़ुदा तआला ने ख़फ़ा हो कर फ़रमया कि फिर तुम मिस्र को वापस चले जाओ। वहां पर वह सब कुछ मौजूद है। जो तुम चाहते हो। यह लोग ऐसे बे क़द्र थे कि अच्छी चीज़ें छोड़ कर घटिया ख़ुराक चाहते थे। जिसका नतीजा यह हुआ कि इन पर अल्लाह का गज़ब नाज़िल हुआ और वह बेसरोसामानी में दर–बदर भटकते रहे।

अहादीस नबवी सल्ल0

عن عبدالعزیز قال قیل لانسؓ ماسمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی الثوم فقال من اکل فلا یقربن مسجدنا (بخاری)

(अब्दुल अज़ीज़ ने अनस रज़ि. से पूछा कि तुमने लहसन के बारे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्या सुना। उन्होने फ़रमाया कि जो कोई इसे खाए हमारी मस्जिद के क़रीब भी न आए।

यही रिवायत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. और अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि. से तियालसी ने भी दी है। दूसरी रिवायत हज़रत अबूबकर रज़ि. से भी है।

ان جابر بن عبداللہ زعم عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال من اکل توما اوبصلاً فلیعتز اولیعتز (بخاری)

(जाबिर रज़ि. बिन अब्दुल्लाह रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि जो कोई लहसन या प्याज़ खाऐ वह दूर रहे या फ़रमाया कि हमारी मस्जिद में न आए।)

عن ابی ایوبؓ قال کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم اذااتی بطعام اکل منہ وبعث بفضلہ اتی وانہ بعث الیّ یوماً بقصعۃٍ لم یاکل منہا لان فیہا ثوماً نسالتہ احرامٌ ھو قال لا. ولٰکن اکرھا من اجل زیحہٖ قال فانی اکرہ ماکرمت (مسلم)

(अबू अय्यूब रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जब कोई खाना आता वह इसमें से खाने के बाद बक़िया मुझे मरहमत फ़रमा देते थे। एक रोज़ एक तश्तरी ऐसी आई जिसमें से उन्होंने कुछ न खाया था। क्यूंकि इसमें लहसन था। मैंने पूछा कि क्या यह हराम है? फ़रमाय: नहीं! अलबत्ता मुझे इसकी बू नापसंद है। जिस चीज़ से नफ़रत करते थे मैं भी करता हूं।)

عن جابر ان النبی صلی اللہ علیہ قال من اکل ثوماً اوبصلاً فلیعتزلنا وقال فلیعتز مسجدنا اولقعد فی بیتہٖ وان النبی صلی اللہ علیہ وسلم اتی بقدرٍ فیہ

خضـراتٌ من بقولٍ فوجدلها ريحاً قربوها الى بعضِ اصحابه وقال كل فانى انا جى من لاتناجى. (بخاری۔ مسلم)

(जाबिर रज़ि॰ बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो लहसन या प्याज़ खाए हमारे क़रीब न आए या फ़रमाया कि हमारी मसिजद में न आए या अपने घर बैठे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक हंडिया लाई गई थी जिसमें कई क़िस्म की सब्ज़ियां पकी थीं इसमें से बू महसूस करके फ़रमाया कि इसे फ़ुलां असहाब के पास ले जाओ वह खालें क्यूंकि मैं ऐसे लोगों से सरगोशी करता हूं, जिनसे तुम नहीं करते।)

हज़रत अबी सईद अलख़िदरी रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

نهيٰ عن اكل البصل والكراث والثوم. (طیاسی)

(प्याज़, लहसन और गंदने से मना फ़रमाया)

गंदना जंगली लहसन की अक़्साम में से है इसकी भी साक़ होती है। इसी मसअले पर अबी सईद रज़ि॰ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक तफ़सीली रिवायत फ़रमाते हैं।

من اكل من هذه الشجرة الخبيثة شياً فلايقربنا نى المسجد، يا ايهاالناس! انه ليس لى تحريم ما احل الله ولكنها سجرة اكره ريحا. (مسند احمد۔ مسلم)

(जिसने इस ख़बीस पोधे से कुछ भी खाया हमारी मस्जिद में न आए। ऐ लोगो! मैं किसी ऐसी चीज़ को जिसको अल्लाह ने हलाल किया हराम नहीं करता लेकिन मुझे यह दरख़्त और इसकी बू नापसंद है।) मसनद अहमद और तिबरी ने इसे अबी सअलबा रज़ि॰ से भी रिवायत किया है।

जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ि॰ रवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाय:

من اكل من هذه الخضروات: البصل والثوم والكرث والفجل، فلايقربن مسجدنا. (طیالھ)

(जिसने इन सब्ज़ियों यअनी प्याज़, लहसन और क्रास और मूली को खाया वह हमारी मस्जिद में न आए।)

हज़रत सूबान रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसेल्लम ने फ़रमाया:

من اكل من هذه البقلة المنكرة يعني الثوم. فليجلس في بيته (النسائی)

(जो इस बेहूदा पौधे यअनी लहसन को खाए वह अपने घर बैठा रहे।)

हज़रत अबी सईद रज़ि॰ के बारे में शर्त नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसेल्लम की ज़बान मुबारक से यूं बयान करते हैं।

كلوه، ومن اكله منكم فلا يقرب هذا لمسجد. حتىٰ يذهب ريحه منه يعنى الثوم (ابوداؤد۔ ابن حبان)

(तुम इसे खाते हो, तुम में से जिसने इसे खाया हो वह इस मस्जिद के क़रीब न आए हत्ता के उसके मुंह से लहसन की बदबू चली न जाए।

عن امّ ايوب قالت صنعت للنبی صلی الله عليه وسلم طعام فيه بعض البقول.
فلم يا كل. وقال انّی اكره، ان اوذی صاحبی. (ابن ماجہ)

(उम्मे अय्यूब रज़ि. कहती हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए खाना तय्यार किया जिसमें बअज़ सब्ज़ियां (लहसन वग़ैरा थे। उन्होंने वह न खाया और फ़रमाया कि मैं पसंद नहीं करता कि मेरे मुंह से बदबू आए और लोग परेशान हों।)

عن معدن ان بن ابی طلحة العمریّ انّ عمربن الخطاب قام يوم الجمعة خطيباً. نحمد الله واثنیٰ عليه. ثم قال ياايهاالناس انكم تاكلون شجرتين لااراهما الاخبيثتين. هذاالثوم وهذاالبصل. ولقد كنت اری الرجل عمد رسول الله صلی الله عليه وسلم يوجه ريحه منه. فيوخذ بيدهٖ حتیٰ يخرجق به الی البقيع فمن كان اكلهما لا بدّ فليمتهما طبخا (ابن ماجہ)

(मअ़दान बिन अबी तलहा यअ़मरी बयान करते हैं कि एक जुमाअ वाले दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. ख़ुतबा देने मिंबर पर खड़े हुए, अल्लाह तआला की हम्दो–सना के बाद फ़रमाया। "ए लोगो! तुम इन दो सब्ज़ियों को खाते हो जिनको मैं हर तरह से ख़बीस क़रार देता हूं। यअनी के यह लहसन और यह प्याज़ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहद में अगर कोई शख़्स इनको खाता था और उसके मुंह से इनकी बू आ रही होती थी तो उसका हाथ पकड़ कर शंहर के बाहर बक़ीह की सिम्त निकाल दिया जाता था। अगर तुमने इन्हें खाना ही हो तो पका कर खाओ कि इस तरह इनकी बदबू कम हो जाए।)

عن جابر انّ نفراً اتوالنبی صلی الله عليه وسلم فوجد منهم ريح الكراث فقال الم اكن نهتكم عن اكل هذهٖ الشجرة ان الملائكة تتاذّی مما يتاذّی منه الانسان
(ابن ماجہ)

(जाबिर रज़ि. कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लग के यहां कुछ लोग आए जिनके मुंह से क्रास गंद नाम की बू आ रही थी। फ़रमाया कि क्या मैंने तुम लोगों को इस दरख़्त के खाने से मना नहीं किया था?
फ़रिश्ते भी इस चीज़ से परेशान होते हैं जिससे इन्सान होते हैं।)

लहसन की इजाज़त:

हज़रत अली रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

كلوالثوم و تداووابه. فان فيه شفاء من سبعين داء (الديلمی)

(लहसन खाओ और इससे इलाज करो क्यूंकि इसमें सत्तर बीमारियों से शिफ़ा है।)

हज़रत अली रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

لولا ان الملک ینزل علی لاکلته یعنی الثوم. (الخطیب)
(अगर मेरे पास फ़रिश्ते न आते हों तो मैं इसे यअनी लहसन को खा लेता)

अबू-नईम की तिब्ब पर एक तालीफ़ मतबा नवल किशोर लखनऊ से शाए हुई है जिसमें उसने मतन के बग़ैर एक रिवायत बयान की है कि जिसके मुंह से लहसन-प्याज़ या मूली की बदबू आए वह दरुदशरीफ़ पढ़े तो बदबू जाती रहे गी।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदातः

इसके लगाने से जिल्द फट जाती है और इस पर फोड़े निकल आते हैं। इसके लगाने से सांप और बिच्छू के ज़हर के असरात ज़ाएल हो जाते हैं। इब्नुलक़ैय्युम ने कुत्ता काटने के लिए भी इसका लगाना मुफ़ीद क़रार दिया है। जिल्द पर लगाने से मक़ामी तौर पर हिद्दत महसूस होती है। इसे कूट कर सिरका में शहद और नमक मिलाकर फोड़े फुंसियों और झाइयों पर लगाएं तो फ़ाएदा होता है।

लहसन खाने से सीने का दर्द दूर होता है। फ़ालिज में फ़ाएदा हो सकता है। पेट के सुद्दे निकालता है। खाना हज़्म करता है। प्यास को कम करता है, पेशाब आवर है। जिस्म को गर्मी पहुंचाता है। हलक़ की सुर्ख़ी और वरम को दूर करता है। सीने से बलग़म और पेट से कीड़े निकाल देता है। इसके मुज़िर असरात में दिमाग़ और बसारत को कमज़ोर करना, सुफ़रा में इज़ाफ़ा करना है। बाह को कम करता है। सांस को बदबूदार करता है। अगर इसके साथ सदाब के पत्ते खाए जाएं तो इसकी अपनी बदबू भी कम हो जाती है। जोड़ों के पुराने दर्द फिर से शुरू करता है और बवासीर में मुज़िर है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदातः

लहसन सर्द मुल्कों के रहने वालों के लिए मुफ़ीद है क्यूंकि गर्मी पैदा करता है। ग़लीज़ इख़्लात को काट देता है। ख़ून को पतला करता है। ज़्यादा मिक़दार ख़ून को जलाकर सियाह कर देती है। खाने वाले के ख़ून, पेशाब, पाख़ाना और पसीने से भी लहसन की बू आती है। (याद रहे कि जंग में इसतेअमाल होने वाली ज़हरीली गेसों में MUSTARD गैस की बदबू भी लहसन की मानिंद होती है।) लहसन दमा और पत्ती में मुफ़ीद है। तपे बलग़मी, बाओगोला, बलग़म, बवासीर और जज़ाम को ज़ाइल करता है। इसका माजून पथरी को तोड़ता है। इसका मअजून बाह को कुव्वत देता है। फ़ालिज, लक़वा, मिर्गी और रअशा में मुफ़ीद है। लहसन को कुचल कर इसका साढ़े सात तोला पानी निकाल कर इसमें हम वज़न घी और पांच तोला गुड़ और थोड़ा सा आटा मिला कर हरीरा पकाया जाता है। पहले लहसन का ख़ालिस पानी पी कर ऊपर से हरीरा खा लिया जाए। तपे लर्ज़ा को आराम आजाए गा। (साढ़े सात तोला लहसन के पानी से मेअदा में शदीद जलन पैदा हो जाएगी।)

अगर इसे घी में भून कर शहद मिलाकर चटाएं तो दमा में फ़ाएदा होता है। फ़ालिज के लिए मरीज़ को पहले रोज़ एक पौथी, फिर दो, फिर तीन इस तरह चालीस तक जावें और रोज़ाना एक कम करलें। फ़ालिज ठीक हो जाएगा।

बू–अलीसीना ने लिखा कि लहसन के जोशांदे के साथ हुक़ना करने से अर्क़ुन्निसा ठीक हो जाता है अगर इसके साथ ख़ून और सुफ़रा के दस्त आएं तो बेहतर है। इसके इस्तेमाल से बढ़ा हुआ पेट कम हो जाता है। अंजीर और अख़रोट के साथ मिलाकर खाने से फ़वाइद में इज़ाफ़ा होता है। क़ौलिंजे रीही, बलग़मी और आंतों के दर्द को मिटा देता है। इसको खाने से दस्त भी आ जाते हैं मगर ऐसा होने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं। बूढ़े आदमियों में पेशाब की रुकावट दूर होती है।

अंजीर, सुदाब और अख़रोट के साथ लहसन अकसर ज़हरों और ज़हरीले कीड़ों हत्ता कि कुत्ता काटे के लिए भी मुफ़ीद है।

वैद इसे तबीअत को ख़ुश करने वाला क़रार देते हैं। हाज़मा और अक़्ल बढ़ाता है। सुफ़रा और ख़ून में इज़ाफ़ा करता है। बाओगोला, तपे सर्द, वरम आज़ाए बवासीर और जरयान के लिए मुफ़ीद है। खाने के बाद की मतली को दूर करता है। बादी को मिटाता है। लहसन को निचोड़ कर या भुसके डाल कर इसका तेल निकाला जाता है। जिसके ख़वास बिल्कुल लहसन वाले हैं। गर्म पानी में लहसन का अर्क़ खांसी में मुफ़ीद है। इसका हलवा तैयार करके खाने से लक़वा दूर हो जाता है।

जंगली लहसन:

इसकी बू लहसन की मानिंद होती है। पत्ते और साक़ लम्बी होती है। फूल नीले रंग का होता है। फूल के इर्द–गिर्द सितारों की मानिंद पत्ते जमा होते हैं। इसकी पौथियां ज़्यादा नहीं होतीं। इसका मज़ा लहसन से ज़्यादा तेज़ और बू शदीद होती है। इसे किरास अलबरी भी कहते हैं। बाज़ अतिब्बा ने इसे सौमुल हैया भी क़रार दिया है। अलबत्ता इसे 'हाफ़िज़ुल अजसाद' का नाम भी दिया गया है।

मक़ामी इस्तेअमाल:

लहसन को जला कर सिरका और शहद में पीस कर लगाने से फोड़े–फुंसियां, बर्स–बालख़ोरा, गंज, छीप और दाद ठीक हो जाते है।

सिरका और शहद में इसका मुरक्कब लगाने से जोड़ों का दर्द जाता रहता है। ख़ालिस लहसन का अर्क़ मलने से जुएं मर जाती हैं। कमरे में इसकी धूनी देने से भिड़ और दूसरे ज़र्ररसां कीड़े भाग जाते हैं। जिस्म के किसी हिस्से में वरम हो तो लहसन को सिरके में घोट कर लगाने से वह तहलील हो जाता है। दूसरी सूरत में इसे दूध में पका कर यह दूध फोड़ों को पकाने के लिए लगाएं। इसको गर्म चबाने से दांत का दर्द जाता रहता है। इसको राई के तेल में तल कर लगाना ख़ुश्क खुजली के लिए मुफ़ीद है। एक पौथी लहसन को सवा तोला तिल के तेल में तल कर फिर रस निकाल कर कान के आस–पास लगाने से बेहरेपन में मुफ़ीद है। लहसन की धूनी से अध सर का दर्द जाता रहता है।

कीमयावी हैइयत:

लहसन को कूट कर अगर इसे कशीद किया जाए तो इससे एक फ़राज़ी तेल

निकलता है जिसे इसका जुज़्वे आमिल कह सकते हैं इसका रंग खुलता हुआ ज़र्द या ब्राउन होता है। और इसमें से लहसन की शदीद बदबू आती है। यह तेल 15° पर उबालने से उड़ जाता हैं अगर इसे दरजाती कशीद के अमल से गुजारें तो मुख़्तलिफ़ मराहिल पर इससे चार क़िस्म के सय्याल हसील होते हैं जिन में से एक की ख़ुश्बू प्याज़ की मानिंद होती है। अमरीकी मुहक़्क़िक़ कावाल्टिव ने 1944 में प्याज़ को कूट कर इसी से एक जरासीमकश दवाई ALLACIN नाम की हासिल की है। यह दवाई ख़ालिस सूरत में जल्द ज़ाया हो जाती है। इसका 0.2 फ़ीसदी ज़्यादा देर तक मुअस्सिर रह सकता है। जबकि लहसन में इसकी मिक़दार 0.4 फ़ीसदी तक हो सकती है। बअद में 1946 वैनकट रामन और उसके साथियों ने इसे हर क़िस्म के जरासीम के ख़िलाफ़ मुअस्सिर पाया। हत्ता के तपेदिक़ और कोढ़ के जरासीम और मेअदे के जौहर की मौजूदगी में भी मुअस्सिर था। यह ख़ून और मेअदे के जौहर की माजूदगी में भी मुअस्सिर रह सकता है। मगर आंतों में मौजूद लबलबा के जौहरों PANCREATIC JUICE की मौजूदगी में बेकार हो जाता है। यह जौहर दूध के फाड़ने या हज़्म करने वाले हाज़िम करने वाले हाज़िम जोहरों के अमल में रुकावट डालता है। इसके बाद पाकिस्तानी कीमियादान डाक्टर सलीमुज़्ज़मां सिद्दीक़ी ने जो 1947 में गंधक से मुरक्कब नबाताती ज़राए से हासिल होने वाली जरासीमकुश अदविया पर तहक़ीक़ कर रहे थे। उन्होंने लहसन पर फिर से तवज्जह दी और देखा कि उसे छः घंटे तक एथर में भिगोने से इसमें से 0.4 फ़ीसद की मिक़दार में से जरासीमकुश अंसर ख़ारिज होता है। इसकी दो क़िस्में देखी गई हैं एक वह जो क्लोफ़ार्म में हलपज़ीर था और दूसरा ग़ैर हल पज़ीर है। इनको ALLISATIN-I और ALLISATN-ii के नाम दिए गए। पहला पीप पैदा करने वाले STAPHYLOCOCCUS और E-COLI के ख़िलाफ़ मुअस्सिर पायागया। जबकि दूसरा सिर्फ़ LOCOCCUS STAPHY के ख़िलाफ़ मुफ़ीद रहा। इन दो के अलावा एक दानेदार मुरक्कब भी बरआमद हुआ जो अलकुहल में हलपज़ीर न पाया गया।

कावालिटिव ने इन जरासीमकुश अनासिर का तक़ाबुली मुताअला किया तो मअलूम हुआ कि इनकी इस्तेअदाद पिंसलीन की सलाहियत का सवा हिस्सा यअनी एक फ़ीसदी से कम है। उन्होंने मुशाहिदा किया कि क्लोफ़ार्म में हलपज़ीर हो जाने वाला हिसा मैंडक के दिल के लिए मुक़व्वी है। जबकि बिल्ली के ब्लडप्रेशर में इज़ाफ़ा करता है। और ख़रगोश की अंतड़ियों में फ़ालिज पैदा करता है। क्लोफ़ार्म में हल न होने वाले हिस्से में न ता जरासीमकुश असरात थे और न ही उसने मैंडक के दिल पर कोई असर डाला न बिल्ली के दिल को मुतास्सिर किया और न ही ख़रगोश की आंतें मफ़लूज हुईं। इन मुशाहिदात से यह साबित हुआ कि दिल पर इसके मुफ़ीद असरात वाली बात महज़ ख़ुशफ़हमी है हक़ीक़त नहीं।

पाकिस्तान कोंसिल बराए साइंसी तहक़ीक़ात लाहौर के डाएरेक्टर डाक्टर

फर्रख़ा हुसैन शाह ने इस तालीफ़ के लिए ख़ुसूसी तौर पर लहसन के तर्कीबी अज्ज़ा तलाश करके रिपोर्ट मुरत्तिब की है। इनकी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ एक सौ ग्राम लहसन के कीम्यावी अज्ज़ा का तनासुब यूं है:

	पानी	लहमियात	निशास्ता	कैल्शियम	फास्फोरस फौलाद
लहसन की पौथी	63.1	5.1	30.3	23	1.7–146
लहसन के पत्ते	91.1	1.9	5.3	120	1.1–53

सोडियम,पोटाशियम	मैग्नशिम	हयातीन ब–प	विटानि सी		
27	494	33	0.05–32	7.0	
14	587	ग	0.09	0.04	42.6

अतिब्बा जदीद के मुशाहिदात:

इसके ज़्यादा तर असरात इस तेल की वजह से होते है जो इसमें पाया जाता है। इसकी ख़ुराक निस्फ़ दो क़तरे है। यह तेल ज़बर्दस्त जरासीम कुश है। बारबालिक एसिड से दुगनी सलाहियत का मालिक है। इसको खाने से मुंह से नागवार बू आती है। जिसको कम करने के लिए जर्मनी की फ़र्म डाक्टर मेडास ने ALIOCAP नाम के कैप्सूल बनाए हैं। चूंक इनमें ज़ाएक़ा और बू नहीं इसलिए आसानी से खाए जा सकते हैं स्विटज़रलैंड की फ़र्म सैंडोज़ ने लहसन के जौहर के साथ पिसा हुआ कोएला मिलाकर तबख़ीर मेदा के लिए ALLISATIN नामी गोलियां बनाई हैं। जबकि हमारे मुल्क LASONA फरोख़्त होती है।

पाकिस्तान कौन्सिल बराए साइंसी तहक़ीक़ के डाक्टर फ़र्रख़ा हुसैन शाह ने लहसन का जौहर दाने दार सूरत में तैयार किया जिसमें बदबू कम है। इसे मसालह बनाने वाली पाकिस्तानी कंपनियां अब ''लहसन पोडर'' के नाम से बाज़ार में ले आई हैं।

अंदरूनी तौर पर इसका सफ़ूफ़, जौहर, या तेल बदहज़मी, बाओगोला, झोक की कमी में मुफ़ीद हैं आंतों के जरासीम और कीड़े मार देते हैं। इन्ही तकालीफ़ के लिए लहसन का मरहम बनाकर पेट की जिल्द पर मालिश की जाती है।

यह दमा पुरानी खांसी में मुफ़ीद है। 1916 में माहिरीन ने इसे तपे मुहर्रिक़ा से बचाने वाला क़रार दिया है। फिर इसके तपे मुहर्रिक़ा के इलाज में यूं तज्ज़िया किया गया कि लहसन के अर्क़ का एक छोटा चम्मच गाए के गोश्त की यख़नी की एक प्याली में डाल कर इसमें कोई शर्बत मिलाकर मीठा कर लिया जाए। यह प्याला हर छः घंटे के बाद दिया जाए। बारह साल से कम उम्र के बच्चों के लिए निस्फ़ चम्मच काफ़ी है।

ख़न्नाक़ में लहसन की पौथियां बार–बार चबाना मुफ़ीद है। चूंकि इस बीमारी में हिस ज़ाएक़ा नहीं होती इसलिए मरीज़ आसानी से क़बूल कर लेता है। 1018 में क्रासमेन ने दावा किया कि लहसन नमूनिया के लिए मुफ़ीद है। उसने मतबूआ मक़ाला में बयान किया है कि इससे हर मरीज़ को पांच रोज के अंदर फाएदा हुआ इसने लहसन की टिंक्चर TR. ALLII इस्तेमाल की और सांस की दूसरी बीमारियो मे भी उफ़ादियत का इजहार किया।

दिक़ और सिल के इलाज में लहसन को शोहरत रही है। इसका अर्क़

तकलीफ़ दह खांसी को ख़त्म कर देता है। भूख बढ़ जाती है। और बाज़ मरीज़ों में रात को पसीना आना भी बंद हो जाते है। इन बातों से मरीज़ का वज़न बढ़ता है और भूख में इज़ाफ़ा होता है। इसके लिए निस्फ़ से पूरा चम्मच दिन में तीन से चार मर्तबा दिया गया।

हेम्बर्ग (जर्मनी) की एक दवा साज़ कम्पनी ने लहसन में कीम्यावी अनासिर शामिल किए बग़ैर लहसन के तेल के कैप्सूल तैयार किए हैं। इनका दावा है कि यह ख़ून को पतला करते हैं। हाज़मा को दुरुसत करते हैं ख़ून की नालियों की वुसअत को बढ़ाते, दमा, खांसी, गंठिया में मुफ़ीद हैं।

लहसन के अर्क़ में नमक मिलकर आसाबी इम्राज़, मसलन सर दर्द, हिस्टीरिया में मुफ़ीद बताया गया है। इसका तेल बरी के बुख़ार (मलेरिया) में मुफ़ीद पाया गया है। इसको पानी और खांड में पका कर शर्बत बनाकर गंठिया और जोड़ों के दर्दों में दिया जाता है। इसे पीने से सर्दी लगनी बंद हो जाती है।

ख़ारजी इस्तेअमाल:

दाद के ज़ख़्मों पर लहसन कूट कर मलने से वह ठीक हो जाते हैं। इसी मलगूबा को हिस्टीरिया के मरीज़ को सुघाया जाए तो बेहोशी ठीक हो जाती है। नारियल या सरसों के तेल में अदरक को जलाएं। फिर यह तेल ऐसे ज़ख़्मों पर लगाया जाए जिनमें कीड़े पड़े हों या बदबू आती हो। यह तेल खुजली में भी मुफ़ीद है। पट्ठों की अकड़न, चोट और दर्द में इसी तेल में नमक मिलाकर लगाना मुफ़ीद है। इसकी जगह नदकारनी और चोपड़ा SUCCUS ALLII तज्वीज़ करते हैं जिसकी तर्कीब यह है कि लहसन का पानी निकाल कर इसे चारगुना आबे मुक़तर में हल कर लिया जाए। यह लोशन ज़ख़्मों से बहने वाली पीप को भी बंद करता है और उन्हें भरने में मददगार होता है। तिल्ली के तेल या सरसों के तेल में लहसन के दो एक जवे जलाकर तेल कान में डालना कान के दर्द में मुफ़ीद है। इसका जौहर अगर कान के आस-पास रोज़ाना मला जाए तो बहरा पन को दूर करता है। लहसन का ख़ालिस अर्क़ हलक़ का कव्वा बढ़ जाने पर लगाने से इसकी सोज़िश कम हो जाती है।

वैदिक तिब की जदीद तहक़ीक़ात में 21 तोला लहसन फिर हींग, ज़ीरा सियाह नमक लाहौरी नमक सांभर, सौंठ, मिर्च सुर्ख़, मिर्च सियाह में से हर एक डेढ माशा ले कर इन सबको पीस लिया जाए। इस सफ़ूफ़ को बीस ग्राम रोज़ाना सुबह खाने से लक़वा, फ़ालिज, अर्क़ुन्निसा, अधड़ंग को फ़ाएदा होता है। इसी क़िस्म का एक और नुस्ख़ा "सुपर सोना" के नाम से मुरव्विज हुआ है जिसमें 23 तोला अदरक को चार सैर पानी और चार सैर दूध में इतनी देर पकाया जाए कि वह निस्फ़ रह जाए। फिर इसे छान कर रख लें। इसका एक चम्मच रोज़ाना सुबह दिल की कमज़ोरी, पेट में नफ़ख़, वजह अलमुफ़ासिल और हिस्टीरिया में मुफ़ीद है।

हैवानात में लहसन का इस्तेअमाल:

बर्तानवी डाक्टर मिल्टन ड्यूहर्स्ट ने लहसन को जानवरों और ख़ास तौर पर

कुत्तों के अज्साम से कीड़े लगाने में मुफ़ीद बताया। इसके नुस्ख़े के मुताबिक़ लहसन का ताज़ा अर्क़ के औलसन में तीस औंस पानी मिलाकर इसका एक छोटा एक आम जिसामत के कुत्ते के लिए काफ़ी होता है। इस मुरक्कब को अगर किसी ख़ुर्दनी तेल में मिलाकर दिया जाए तो ज़्यादा मुफ़ीद होता है। डाक्टर मिलटन का मुशाहिदा है कि लहसन का अर्क़ हर मर्तबा ताज़ा निकला जाए, पुराना अर्क़ बेकार होता है।

लहसन के बारे में ख़ुसूसी एहतियात:

भारती माहिरीन का बयान है कि लहसन के मुरक्कबात ऐसे इदारों के बने हुए ख़रीदे जाएं जिनकी शोहरत अच्छी हो। क्यूंकि अलसी के ईसेंस की ख़ुश्बू लहसन की तरह की होती है। इसकी क़ीमत लहसन के तेल से बीस गुना कम है। इसकी मिलावट आम होती है और यह ईसेंस ख़तरनाक है। क्यूंकि इसमें सायानाईड ज़हर होते हैं।

मुशाहिदात:

अहादीस से यह बात साबित है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लहसन नापसंद था। उम्मत के लिए उन्होंने शर्त लगाई कि कच्चा न खाया जाए। आम लोग हंडिया में पका हुआ लहसन खा सकते हैं। हज़रत उम्मे अय्यूब रज़ि॰ बयान करती हैं कि उन्होंने लहसन में पका हुआ सालन खाना भी पसंद न फ़रमाया। इस अमले मुबारक के बाद लहसन के इस्तेअमाल की कोई गुंजाइश नहीं रहती। जिस चीज़ को सरकारे दो आलम सल्ल0 ने पसंद न फ़रमाया किसी फ़ाएदे का बाइस न होगी।

लहसन कोई नई चीज़ नहीं लोग इसे छः हज़ार साल से जानते हैं इतनी लम्बी वाक़फ़ियत किसी यक़ीनी फ़ाएदे का बाइस नहीं हो सकी। आजकल मशहूर है कि लहसन खाने से ख़ून में कोलेस्ट्रोल कम हो जाती है। यह ब्लड प्रेशर को कम करता है। बर्रेसग़ीर हिंद के अक्सरो–बेशतर घरानों में लहसन बड़ी बाक़ाइदगी से सालन में डाला जाता है। वह लोग जो सालों से लहसन खा रहे हैं उनमें से हज़ारों ऐसे हैं जिनको ब्लडप्रेशर हुआ। ख़ून मे कोलेस्ट्रोल बढ़ी और दिल के दौरे पड़े। अगर लहसन इस बाब में मुफ़ीद होता हो यह लोग बीमार न होते। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अलस्सुबह शहद पीने वाले को कोई बड़ी बीमारी नहीं होती। इस बात पर अतिब्बा ने इसे "हाफ़िज़ुल अमीन" का लक़ब दिया क्यूंकि वह बीमारियों से बचाता है।। ऐसी कोई सिफ़त किसी भी ज़रिए से लहसन के बारे में मालूम नहीं हुई। 1916 और 1918 में माहिरीन ने इसे तपे मुहर्रिक़ा और ख़ुन्नाक़ में इस्तेमाल किया और बड़े अच्छे नताइज बयान किये मगर सत्तर (70) साल गुज़र जाने के बावजूद फिर किसीने इन मुशाहिदात को क़ाबिले अमल क़रार न दिया।

1945 में लोंगों ने लहसन से ALLISATIN निकाल कर इसे ANTIBIOTIC क़रार दिया। मगर 32 साल में यह दवाई बाज़ार में बिकने न आ सकी। भारती माहिरीन का ख़याल है कि ब्लड प्रेशर के लिए लहसन को पका कर खाया जाए।

जर्मन कहते हैं कि खाएं तो कच्चा मगर ज़्यादा चबाया न जाए। जौ या रोटी के लुक़मे में रख कर निगल लिया जाए। अब कराची यूनिवर्सिटी की इल्मुल अदविया की प्रोफ़ैसर ज़ुबैदा कुरैशी ने असरात का मुशाहिदा करके बताया है कि इसके काग़ज़ की मानिंद बारीक क़तले बनाकर उन्हें चबाए बग़ैर निगल लिया जाए। इल्मुल गिज़ा के एक माहिर से पूछा गया कि क्या उनके ख़याल में लहसन मुफ़ीद है। फ़रमाने लगे मैं दिल का मरीज़ भी हूं। एक दफ़ा नहार मुंह लहसन खाने की बेवकूफ़ी की तो कई दिन उसकी जलन न गई।

अहादीस में मज़कूर है कि लहसन में फ़वाइद भी हैं। चूंकि इसे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नापसंद फ़रमाया इसलिए यह कभी भी तिर्याक़ न होगा। शराब में फ़वाइद भी हैं और बीसवीं सदी तक यह मुतअद्दिद बीमारियों में बतौर दवा मुस्तैमिल रही है। मगर आहिस्ता-आहिस्ता इसका इस्तेमाल मतरूक हो गया। कई बीमारियों में ज़ख़्मों को आग से दाग़ा जाता था। चूंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे नापसंद फ़रमाया था आहिस्ता-आहिस्ता लोग भी इसकी उफ़ादियत के मुन्किर हो गए। कुछ अर्सा पहले आग से गर्म किए ऐसे चाकू ईजाद हुए थे जिनसे ऑप्रेशन करना बड़ा आसान था मगर इन्हें मक़बूलियत मयस्सर न आ सकी।

होम्योपैथिक तरीक़ा इलाजः

लहसन का बराहे रास्त असर अंतड़ियों की झिल्लियों पर होता है। जिससे इनमें ख़ौजिश पैदा होती है और उनकी हरकात में इज़ाफ़ा हो जाता है। ख़ून की नालियों में वुसअत पैदा होती है जिसकी वजह से ब्लड प्रेशर में क़मी हो जाती है। यह अमल मदर टिंक्चर देने के तीस से पैंतालीस मिनट बाद शुरू हो जाता है।

लहसन की होम्योपैथिक शक्ल उन लोगों में ज़्यादा मुफ़ीद है जिनकी चिकनाइयां खाने से बदहज़मी पैदा होती है। जिगर ऊँचा हो, बिस्यार ख़ोरी का शौक़ हो और कूल्हे के जोड़ और रानों के अंदर की तरफ़ दर्द होता हो। तपे-दिक की इस सूरत में जब बलग़म ज़्यादा हो। थूक में ख़ून आता हो बुख़ार होता हो और जिस्म में कमज़ोरी हो लहसन के क़तरे देना मुफ़ीद होता है।

मुंह में थूक ज़्यादा आए, गले में यूं महसूस हो जैसे कि बाल फंस गया है। ज़बान खुरदुरी और ज़र्द हो तबीअत बार-बार खाने को चाहे तो लहसन देना चाहिए। दिल की इस कैफ़ियत में जब बोझ महसूस होता है और सांस में सीटियां बजने की आवाज़ महसूस हो। छाती में दर्द, सुबह उठ कर शदीद खांसी और बलग़म निकालने में मुश्किल पेश आए तो यह अलामात लहसन के इस्तेमाल की हैं

औरतों में रानों के दर्मियान जलन और ख़ारिश महसूस हो जो कि अय्याम के बाद बढ़ जाए और छातियों में वरम, बोझ और दर्द हो तो लहसन दने से फ़ाएदा होता है।

मुरमक्की............मुर

MYRRH COMMIPHORA MYRPHA

यह एक क़दीम और मशहूर पौधा है जिसका ज़िक्र अक्सर मज़हबी किताबों में बार–बार आया। ज़मानए क़दीम में इसे सोने की तरह क़ीमती और बरकत वाला जानते थे जब लोगों को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश का मअलूम हुआ तो इंजीले मुक़द्दस के मुताबिक़ बच्चे को जो तहाइफ़ पेश किए गए वह मुर, लोबान और सोना थे। इस दरख़्त की वजह शोहरत गोंद है जो इसके तने में शिगाफ़ दे कर निकाला जाता है। यह गोंद मुर है। जबकि भारती ज़बानों में यह बोल, बोलम, बोला, हीराबोल, पोलम वग़ैरह के नामों से मशहूर है। संस्कृत में यह ''गर्सगुंधा'' है। इसका दरख़्त जुनूबी अरब, शिमाल मशिरक़ी अफ़रीका, ईथोपिया, ईरान और थाईलैंड में पाया जाता है। भारती बाज़ारों में इसकी दो दरआम्दा क़िस्में कमर और मोतिया ज़्यादा मश्हूर हैं वरना बाज़ार में मिलने वाली मुर आम तौर पर ख़ालिस नहीं होती। क़ीमत ज़्यादा होने की वजह से इसमें मिलावट आम है। बहतरीन क़िस्म वह क़रार दी जाती है जो अरब या मक्के से आई है और इसी मुनास्बत से सनामक्की की तरह इसका नाम भी मुरमकी मशहूर हो गया।

अपने फ़वाइद की अहमियत के एतिबार से यह ब्रिटिश फ़ार्माकूपिया की तस्लीम करदा मुआलिजात की फ़हरिस्त में शामिल है। वहां पर इसका मुस्लिमा नबाताती नाम COMMIPHORA MYRRH क़रार दिया गया है बाज़ मा87हिरीन इसे मुर की बजाए MOLMOL कहना ज़्यादा पसंद करते हैं। जबकि भारती माहिरीन इसे BALSAMODENDRON MYRPHA कहते हैं।

दरख़्तों से हासिल होने वाला यह गोंद पहले गोल–गोल दानों की शक्ल में होता है। फिर यह दाने आपस में जुड़कर एक बड़ा टुकड़ा बना लेते हैं। बाहर से यह दाने भूरे सुर्ख़ रंग के होते हैं और अंदर से सफ़ेद होते हैं। ख़ुश्बूदार हैं। ज़ाएक़ा तल्ख़।

कुतुब मुक़द्दिसा:

इस की अहमियत का अंदाज़ा इस बात से हो सकता है...... कुछ उस शख़्स के लिए नज़राना लेते जाओ, जैसे थोड़ा सा रौग़ने बिल्लिसान, थोड़ा सा शहद, कुछ गर्म मसालेह और मुर और पिस्ता बादाम। (पैदाश्इ 43:11:12)

ख़ुदावंद की इबादत के लिए इर्शाद हुआ।

(और ख़ुदा वंद ने मूसा से कहा तो ख़ुशबू दार मसालेह, मुर और मुस्तगी और नमक और ख़ुश्बूदार मसालेह के साथ ख़ालिस लोबान वज़न में बराबर–बराबर लेना और गुंधी की हिकमत के मुताबिक़ ख़ुश्बू दार रौग़न की तरह साफ़ और पाक बख़ोर बनाना) (ख़रूज 30:34:35)

इसकी ख़ुश्बू को अहमियत देते हुए फ़रमाया:

(तेरे लिबास से मुर और ऊद और तिज की ख़ुश्बू आती है) (ज़बूर 8:45)

इसकी ख़ुश्बू की पसंदीदगी का इज़्हार ग़ज़लुल ग़ज़लात और दूसरे अबवाब में करने के बाद हज़रत मसीह की मफ़रूज़ा तदफ़ीन के तज़्किरे में आया।

.....पचास सेर के क़रीब मुर और ऊद मिला हुआ लाया। पस उन्होंने यसूअ की लाश लेकर उसे सूती कपड़े में ख़ुश्बूदार चीज़ों के साथ कफ़नाया। (यूहन्ना– 60:19)

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की तदफ़ीन एक इख़्तिलाफ़ी मसअला है। क्यूंकि कुरआन मजीद उनके मसलूब किए जाने या क़त्ल किये जाने से पूरी तरह इनकार करता है। अलबत्ता इस आयत की एक तफ़सीर के मुताबिक़ यहूदियों ने जिस शख़्स को सलीब दिया था वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तो हरगिज़ न थे। अलबत्ता इनका हम शक्ल कोई शख़्स था। इसी ज़िम्न में हालिया तहक़ीक़ात के मुताबिक़ कुछ ईसाई मुर्रिख़ भी सलीब के वाक़िए की तफ़सील और हक़ीक़त पर मुश्तबा हैं। इंजीले मुक़द्दस के मुताबिक़ इनका सलीब पर क़याम चार घंटे से ज़ाइद न था और किसी शख़्स की मौत इतने क़लील अर्से में वाक़ेअ होना तबई तौर पर मुमकिन नहीं।

इरशादाते नबवी सल्ल0

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

بخرو بیوتکم بالشیح والمرو الصعتر

(अपने घरों में इशह, मुर और साअतर की धूनी दिया करो।)

यही रिवायत उन्ही मुरत्तिब ने अबान बिन सॉलेह बिन अनस रज़ि. से भी नक़ल की है।

इस हदीस में मज़कूर ईशह WATER CRESS कहते हैं अतिब्बा ने इसको दरमुंह तुर्की या पोदीना की अक़साम में से क़रार दिया है। जबकि यह हर्फ़ या हुब्बुर्रिशाद है। अरब में हुब्बुर्रिशाद के पत्तों का क़हवा बनाकर पेट, दर्द के लिए आम इस्तेअमाल होता है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

मिस्र क़दीम की रिवायत से पता चलता है कि 1700 क़ में मुर का पौधा अफ़रीक़ा से मिस्र लाया गया और उस दौर में मुआलिज उसे ज़ख़्मों के इलाज में इस्तेमाल करते थे। मुर को मअबूदों में बख़ूर के तौर पर जलाया जाता था। फ़राईन मिस्र इसे अपने ख़ज़ानों में बेश क़ीमत ख़ुश्बू के तौर पर रखते थे। उमरा की शराब में खुश्बू के लिए डाली जाती थी। और सर पर लगाने वाले तेल को ख़ुशबू दार बनाने के लिए इसे मिलाया जाता था।

यूनानी देव माला में यह पौधा इस नेक बख़्त बच्ची मिरहा की यादगार है। जिसके बारे में उनके यहां एक बेहूदा दास्तान बयान की जाती है। जबकि अपने लफ़्ज़ी मआनी के एतिबार से इसके मअने ख़ुश्बू के हैं हकीम देसक़ोरीदोस ने इसे समरना के नाम से अपने नुसख़ों में इस्तेअमाल किया है।

अफ़ूनत के मादे को ख़ुश्क करती है। सर्दी और बलग़मी ओराम को तहलील

पूरी तरह इनकार करता है। अलबत्ता इस आयत की एक तफ़सीर के मुताबिक़ यहूदियों ने जिस शख़्स को सलीब दिया था वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तो हरगिज़ न थे। अलबत्ता इनका हम शक्ल कोई शख़्स था। इसी ज़िम्न में हालिया तहक़ीक़ात के मुताबिक़ कुछ ईसाई मुर्रिख़ भी सलीब के वाक़िए की तफ़सील और हक़ीक़त पर मुश्तबा हैं। इंजीले मुक़द्दस के मुताबिक़ इनका सलीब पर क़याम चार घंटे से ज़ाइद न था और किसी शख़्स की मौत इतने क़लील अर्से में वाक़ेअ होना तबई तौर पर मुमकिन नहीं।

इरशादाते नबवी सल्ल0

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

بخرو بيوتكم بالشيح والمر والصعتر

(अपने घरों में इशह, मुर और साअ़तर की धूनी दिया करो।)

यही रिवायत उन्ही मुरत्तिब ने अबान बिन सॉलेह बिन अनस रजि. से भी नक़ल की है।

इस हदीस में मज़कूर ईशह WATER CRESS कहते हैं अतिब्बा ने इसको दरमुंह तुर्की या पोदीना की अक़साम में से क़रार दिया है। जबकि यह हर्फ़ या हुब्बुर्रिशाद है। अरब में हुब्बुर्रिशाद के पत्तों का क़हवा बनाकर पेट, दर्द के लिए आम इस्तेअमाल होता है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

मिस्र क़दीम की रिवायत से पता चलता है कि 1700 क़ में मुर का पौधा अफ़रीक़ा से मिस्र लाया गया और उस दौर में मुआलिज उसे ज़ख़्मों के इलाज में इस्तेमाल करते थे। मुर को मअ़बूदों में बख़ौर के तौर पर जलाया जाता था। फ़राईन मिस्र इसे अपने ख़ज़ानों में बेश क़ीमत ख़ुश्बू के तौर पर रखते थे। उमरा की शराब में खुश्बू के लिए डाली जाती थी। और सर पर लगाने वाले तेल को ख़ुशबू दार बनाने के लिए इसे मिलाया जाता था।

यूनानी देव माला में यह पौधा इस नेक बख़्त बच्ची मिरहा की यादगार है। जिसके बारे में उनके यहां एक बेहूदा दास्तान बयान की जाती है। जबकि अपने लफ़्ज़ी मआनी के एतिबार से इसके मअने ख़ुश्बू के हैं हकीम देसक़ोरीदोस ने इसे समरना के नाम से अपने नुसख़ों में इस्तेअमाल किया है।

अफ़ूनत के माद्दे को ख़ुश्क करती है। सर्दी और बलग़मी ओराम को तहलील करती है। पुराने दस्तों को बंद करती है। पुरानी खांसी और दमा में मुफ़ीद है। सीने और पसली के दर्द को दूर करती है। मुक़व्वी मेअदा और कासरुर्रियाह है। ख़ून के सफ़ेद दानों को बढ़ाती है। आंतों के कीड़े मारने के लिए इसे कस्टरऑयल में मिलाकर देते हैं। मुर को इलाएची, तबाशीर और शहद के साथ मिलामर चटाने से कमज़ोरी जाती रहती है।

मक़ामी तौर पर मुर का इस्तेमाल खुजली, दाद, बग़लों की बदबू, रानों के दरमियान की ख़ारिश के लिए मुफ़ीद है। इस सिलसिले में इसे आम तौर पर

सिरके में मिला कर लेप किया जाता है। इसे सिरके में हल करके ग़रारे करने से मुंह की बदबू जाती रहती है और दांतों पर मलने से मसूढ़ों की सोज़िश ठीक हो जाती है। बाज़ अतिब्बा ने बग़लों की बदबू मिटाने के लिए इसमें फिटकरी मिलाकर अलकुहल या शराब में हल करके इस्तेमाल किया हैं बैरूनी इस्तेमाल के लिए अलकुहल या शराब के बजाए स्प्रिट भी वैसी ही मुफ़ीद है। यही नुस्ख़ा गंज पर लगाने से बाल पैदा करने का बाइस होता है। इसके पत्तों का पानी निकाल कर अगर नाक में टपकाया जाए तो नक्सीर बंद हो जाती है।

कीमयावी तज्ज़िया:

इब्तिदाई तज्ज़िये के मुताबिक़ इसमें गोंद की मिक़दार 40–60 फ़ीसदी के दरमियान, फ़राज़ी तेल 2–10 फ़ीसदी, बीरोज़ा 27–50 फ़ीसदी और इसके अलावा एक कड़वा अंसर शामिल है। इसमें रौग़ने बिल्लिसान के अजज़ा 7.5 फ़ीसदी मिलते हैं और इसके अलावा ख़ुशबूदार अज्ज़ा में BENZYL BENZOATE होता है। यह वह मुन्फ़र्द दवाई जो मुतअद्दी क़िस्म की ख़ारिश पर तिरयाक़ का असर रखती है। बाज़ार में मुतअद्दिद दवासाज़ की तरफ़ इस दवाई का दस फ़ीसद महलूल मक़ामी तौर पर लगाने के लिए आम दस्तियाब है। जिसे सिर्फ़ एक मर्तबा रात को लगाने से ख़ारिश की यह क़िस्म SCABIES जाती रहती है।

इसके अलावा मुर में BENZYL CINNAMAGTE मिलता है। 12–15 फ़ीसदी मिक़दार में CINNAMICACID मिलता है। जबकि 0.05 फीसदी एक ख़ुशबू VANILIN मिलती है। इसमें मौजूद बीरोज़ा ख़ालिस शक्ल में नहीं होता बल्कि दारचीनी के अज्ज़ा के साथ इस तरह मुरक्कब है कि पानी में हल हो जाए। बीरोज़ा ही की एक अलकुहल TOLURECINOTANNOL पाई जाती है। यह चारों अज्ज़ा रौग़ने बिल्लिसान और गोगल में भी मिलते हैं। इसलिए अपने जुमला असरात के एतिबार से मुर इनसे क़रीब तरीन वाक़े हुई। बल्कि एक लिहाज़ से यह बिल्लिसान लोबान और गोगल से ज़्यादा मुअस्सिर है। क्यूंकि इसमें लोबान के तमाम अज्ज़ा के साथ–साथ दारचीनी से मुरक्कब अनासिर भी मिलते हैं। जिनका दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन असर दूसरी चीज़ों से बेहतर है।

इसमें गोकल की तरह MYRCENE 64% DIMYRCENE 55%

नदकारनी की इत्तिला के मुताबिक़ इसमें दो क़िस्म के फ़राज़ी तेल VOLATILE OILS पाए जाते हैं। जो हजम के लिहाज़ से मुर की कुल मिक़दार का 10% होते हैं। बीरोज़ा चौथाई से निस्फ़ के बराबर, गोंद के अलावा एक GLUCOSIDE भी पाया जाता है। फ़राज़ी रौग़न में दारचीनी और बारबॉलिक एसिड की क़िस्म के मुरक्कबात होते हैं। जबकि ग़ैर नामयाती मुरक्कबात में कैलसीम के फ़ास्फ़ीट और कारबोनेट, एलयूमिनयम, सलीका फ़ौलाद भी माजूद होते हैं।

जदीद मुशाहिदात:

मुर अपनी कीमयावी साख़्त और अजज़ा की बिना पर दाफ़े तअफ़्फ़ुन, मुख़्रिज बलग़म, मदरबोल व हैज़ है। इन अफ़आल की बिना पर इसे इन तमाम ज़ख़्मों में इस्तेअमाल किया जाता हैं जहां सोज़िश और बदबू पाई जाती हो, मुंह और

मशहूर मुरक्कबातः हुब्बे मदर, सफ़ूफ़ अरबा TR.MYRRH

होमयो पैथिक तरीक़ा इलाजः

में मुर के मुरक्कब को आलाते तनफ़्फ़ुस की सोज़िश में पसंद न किया जाता है। वह मरीज़ जिनको बलग़म ज़्यादा और गाढ़ी हो इससे फ़ाएदा पाते हैं। नाक के इख़राज में लेस और गाढ़ा पन के साथ बदबू में मुफ़ीद है। एग्ज़ीमा ठीक होता है। सुआल मुज़मिन और सिल के उन मरीज़ों को जिनको रात में पसीने आते हों ज़्यादा फ़ाएदा होता है। पेशाब कम आए और इसके नीचे तह जम जाए तो यह मुफ़ीद है। मक़ामी तौर पर गंदे ज़ख़्मों और ख़ारिश में लगानी मुफ़ीद है।

मरज़ंजोश............मरज़ंजोश

ORIGANUM MAJORANA

फ़ारसी में इसे मरज़गोश कहते हैं। असल नाम मर्ज़ागोश बयान किया जाता है। इल्मुलअदविया की किताबों में इसे "दोनामरवा" लिखा गया है। जो कि दो अदविया के नाम के मुग़ालता है। हिंदी तबीब इसे "मरवा" बयान करते हैं। मर्ज़ा फ़ारसी में चूहे को कहते हैं। जबकि गोश का मतलब कान है। इसके पत्ते चूंकि चूहे के कान से मुशाबहत रखते हैं इसलिए लोगों ने इसे चूहेकनी, या मुरज़ंगोश क़रार दिया है। हालांकि इनकी मुशाबहत चूहे के कान से नहीं होती बल्कि यह सदाब से मुशाबह है और बाग़ों में बतौर ख़ुश्बूदार रौएदगी के काश्त किया जाता है। इसका दरख़्त ऊंचाई में दो से तीन मीटर तक होता है। हिंदी में इसे सुथरा कहते हैं।

इसका एक क़रीबी दरख़्त ROIGANUM VULGARE भी सुथरा कहलाता है। जिसे इन्हीं कामों का में इस्तेअमाल करते हैं। बाज़ लोग इसे मरज़ंजोश की जंगली क़िस्म क़रार देते हैं।

यह दरख़्त मग़रिबी एशिया, भारत और हिमालया की तराई में वाक़े गर्म इलाक़ों में काश्त किया जाता है। पंजाब में घरों की ज़ेबाइश के लिए लगाया जाता है।

अहादीस नबवी सल्ल0

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 रिवायरत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

عليكم بالمرز نجوش فانه خبيد للخشام

यह हदीस मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी रज़ि0 ने हवाले के बग़ैर अपनी अलतिबे नबवी (सल्ल0) में बयान की है। जबकि इमाम इब्नुलक़ैय्युम रह. ने भी अपनी अलतिब नबवी (सल्ल0), में हवाला और सनद के बग़ैर इसी रिवायत को इन्हीं अल्फ़ाज़ में बयान किया है।

(तुम्हारे लिए मरज़ंजोश मौजूद है। यह ज़ुकाम के लिए बड़ी मुअस्सिर दवाई है)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

दिमाग़ की रुकावटें खोल देता है। ज़ुकाम को तहलील करता हुआ बंद नाक को खोलने के बाद इसे ठीक कर देता है। इब्नुलकैय्युम फ़रमाते हैं कि इसकी खुश्बू ज़ुकाम की बंदिश को खोल देती है। इसी ख़ुश्बू से जमा हुआ नज़ला पतला हो कर बह जाता है। फेफड़ो से जमी हुई बलग़म का इख़राज होने लगता है। इसका लेप पुराने दर्दों और ख़ास तौर पर जोड़ों के दर्द और सूजन में मुफ़ीद है। इसके पत्ते कूट कर आंख के नीचे लगी हुई चोट पर लगाए जाएं अगर किसी और जगह भी चोट लगने से नील पड़ गया हो तो इस मुक़ाम पर भी पत्तों के लेप से रंग उतर जाता है। मरज़ंजोश के पत्तों को सिरके में घोट कर बिच्छू के काटे पर लगाया जाए तो फ़ौरन शिफ़ा हो जाती है। इसका तेल लगाने से कमर और घुटनों के दर्द को फ़ाएदा होता है। इनका वरम उतर जाता है। अगर कोई इसे बाक़ाएदा सूंघता रहे या थोड़ी देर इसके दरख़्त के नीचे बैठा करे तो उसकी आंखों में मोतिया नहीं उतरता।

इसके पत्तों को बादाम रौग़न के साथ घोट कर पिलाने से दिमाग़ में अगर इंजमाद ख़ून से कहीं रुकावट आ गई हो तो दूर हो जाती है। यही मुरक्कब पुराने दर्द सर और शक़ीक़ा में मुफ़ीद है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

यह सुद्दों को खोलता है। रतूबतों को जज़्ब करता है। इसके सूंघने से ज़ुकाम ख़त्म हो जाता है। इसका जोशांदा खांसी ज़ुकाम को दूर करता है। माली ख़ोलिया में फ़ाएदा करता है। इसके पीने से गुर्दे और मसाने की पथरी टूट जाती है। इसे दूध में मिलाकर पीने से सर दर्द दूर हो जाती है। लक़वा और मिर्गी में फ़ाएदा होता है। यही जोशांदा शराब का नशा उतार देता है। सीने के अज़लात और आसाबी दर्दों में फ़ाएदा देता है। इसके पत्तों का रस आंखों में टपकाने से इब्तिदाई मोतियाबिंद ठीक हो जाता है। नज़र की कमज़ोरी दूर हो जाती है।

इसके पत्तों के सफ़ूफ़ में नमक मिलाकर चाटने से मुंह से ज़्यादा टपकने वाली राल ठीक हो जाती है। इसका जोशांदा दमे की शिद्दत को कम करता है और जिस्म के अंदर गर्मी पैदा करता है। बलग़मी पत्ती में नाफ़े है।

गीलानी कहता है कि मरज़ंजोश का लेप आंखों की सोज़िश और वरम में मुफ़ीद है। रौग़ने ज़ैतून मिलाकर इसको हल्की आंच पर इतना पकाएं कि पानी सूख जाए यह मरज़ंजोश का तेल है जिसे दर्द, वरम और नील वाली जगहों पर लगाया जा सकता है।

कीमयावी तज्ज़ियह:

इसमें नबाताती जौहरों के अलावा एक फ़राज़ी तेल OLEUM MARGORANAE के अलावा तारपीन और एक कड़वा जौहर होता है। फ़राज़ी तेल पानी की बजाए अलकुहल और ऐथरी में हल पज़ीर है। इसमें मक़ामी तौर पर दौराने ख़ून को बढ़ाने, जिल्द को गर्मी पहुंचाने वाली तमाम सिफ़ात मौजूद हैं जो फ़राज़ी तेलों VOLATILE OILS में होती हैं।

जदीद मुशाहिदात:

भारती पंजाब के आदी नशे बाज़ भंग के साथ मरज़ंजोश मिलाकर इसे हुक़्क़े में पीते हैं। इसके धुएं से पोदीने की तरह ख़ुश्बू आती है। मरज़ंजोश अपने असरात के लिहाज़ से कासरुर्रियाह, आंतों के जरासीम को मारने वाला मुहर्रिक, पसीना लाने वाला हैज़ को जारी करने वाला और मुक़व्वी पौधा है।

मरज़ंजोश का फ़राज़ी तेल खुश्बू के लिए इस्तेअमाल होता है। इसके दर्द से तीन क़तरे किसी चीज़ में मिलाकर पीने से रियाह निकल जाते हैं। सूंघने से दिल डूबने और ज़ुकाम में फ़ाएदा होता है। तेल से माहवारी का दर्द जाता रहता है। पेट से क़ौलंज का दर्द जाता रहता है। मगर यह याद रहे कि क़ौलंज आंतों में रुकावट, अपेंडिक्स, गुर्दों की ख़राबियों और पित्ते में पथरी से भी हो सकता है। ऐसे में मुनासिब तशख़ीस के बग़ैर मरज़ंजोश का तेल या कोई और मुहर्रिक दवाई ख़तरनाक नताइज का बाइस हो सकती है।

रौग़ने मरज़ंजोश में थोड़ा सा ज़ैतून या तिलों का तेल मिलाकर जोड़ों के दर्द में मालिश करते हैं। कान में टपकाने से कान का दर्द कम हो जाता है। पेट पर गर्म करके हलके हाथ से मलने से रियाह ख़ारिज हो जाते हैं। सर के इतराफ़ में इसकी मालिश से दर्दे शक़ीक़ा जाता रहता है। अगर ख़ालिस तेल मयस्सर न हो तो पत्तों को घोट कर रौग़ने ज़ैतून के साथ उबाल कर छान कर तेल हासिल किया जा सकता है।

एक पाओ पत्तों को अड़हाई सेर पानी में पका कर इसका जोशांदा तैयार किया जाता है। जिसे अंदरूनी तकालीफ़ के लिए एक से दो बड़े चमचों की मिक़दार में खाने के बाद दिन में दो से तीन मर्तबा दिया जा सकता है।

होम्यो पैथि तरीक़ा इलाज:

इसमें मरज़ंजोश को मुख़्तलिफ़ ताक़तों में जलक से पैदा होने वाली ख़राबियों में बड़ी कामयाबी से इस्तेमाल किया गया है। इसके इस्तेमाल से छातियों का वरम जाता रहता है।

मुनक़्क़ा ......ज़बीब

RAISIN-VITIS VINIFERA

अंगूर की दो बड़ी किस्में हैं। छोटे अंगूर की सुखाएं तो किशमिश बनती है। और बड़ा अंगूर सूख कर मुनक़्क़ा बनता है। अंगूर को सुखाने का रिवाज उन मुमालिक में है जहां अंगूर की पैदाइश उनकी मक़ामी ज़रूरयात से ज़्यादा होती है या ऐसे इलाक़ों में जहां पर पैदा होने वाली फ़सल मंडियों तक पहुंचाना मुमकिन नहीं होता। जैसे कि ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और चितराल के दूर उफ़तादा इलाक़े, हर इलाक़े में रंग और माहियत जुदा होती है।

यूं तो अंगूर दुनिया के अक्सर मुमालिक में होता है। यूरोप में फ्रांस, जर्मनी, स्पेन वग़ैरा में लाखों टन पैदा होता है। मगर इनकी अकसरियत बदमज़ा और खाने के क़ाबिल नहीं होती। इसलिए यूरोप का अंगूर ज़्यादा तौर पर शराब

साज़ी में इस्तेअमाल होता है।

हिंद–पाक में बिलोचिस्तान और सूबअ सरहद का अंगूर लज़ीज़ और पूरे ऐशिया में मक़बूल है। अंगूर का पौधा दरख़्त की बजाए बेल की सूरत में होता है। और इसके साथ फल गुच्छों की शक्ल में लटकते हैं।

कुरआन मजीद के इरशादात:

कुरआन मजीद में अंगूर का ज़िक्र 11 मर्तबा आया है और हर जगह इसे बेहतरीन फल, परहेज़गारों के लिए इनाम के तौर पर ज़िक्र फ़रमाया गया।

ایود احدکم ان تکون له جنة من نخیل و اعناب (البقرہ)
تجری من تحتها الانهار له فیها من کل الثمرات.

(तुम में से हर कोई चाहेगा कि उसके पास ऐसे बाग़ात हो जिनमें खजूर और अंगूर हों। नीचे नहरें चलें और इसमें हर क़िस्म के फल हों)

ینبت لکم به الزرع والزیتون والنخیل والاعناب ومن کل الثمرات ان فی
ذالک للاٰیته لقوم یتفکون (النحل)

(वह इसी पानी से हर क़िस्म के अनाज, ज़ैतून, खजूर, अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है, जिसमें ग़ौर करने वालों के लिए पिन्हा अलामात हैं)

ان للمتقین مغازا، حدائق واعنابا وکواعب اترابا. وکاساً دهاقا. (النباء)

(परहेज़गारों के लिए जन्नत में बेहतरीन दिल्चस्पी के लिए बाग़, अंगूर, हम उम्र लड़कियाँ और लब्रेज़ जाम हैं।)

अंगूर और दूसरे फल कुदरत का तोहफ़ा हैं। यह उन फलों में से उस जो रास्तबाज़ों को इनाम के तौर पर जन्नत में दिए जाएंगे लेकिन इंसानों की कजरवी का आलम बयान करते हुए फ़रमाया गया।

ومن اثمرات النخیل والاعناب تتخذون منه سکرا. (النحل:٦٧)

(और फलों में से खजूर और अंगूर को तुम मुस्करात बनाने में इस्तेअमाल करते हो।)

कुतुबे मुक़द्दिसह के इरशादात:

अंगूर का ज़िक्र तौरेत और इंजील में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर 82 मर्तबा आया है।

......और अपने ताकिस्तानों का फल तोड़ा और अंगूरों का रस निकाला और ख़ूब ख़ुशी मनाई (क़ज़ात 11:27)

जब किसी अच्छी चीज़ का ज़िक्र आया या नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़सान की नोइयत मज़कूर हुई तो फ़रमाया।

तेरे अंगूर गल जाएंगे (यरमियाह 5:17)

नुक़सान की शिद्दत के बयान में फलों के नुक़सान को बतौर मिसाल अज़ीम तरीन बताया गया।

मैं इसके अंगूर और अंजीर के दरख़्तों को जिनकी बाबत इसने कहा यह मेरी उजरत है जो मेरे यारों ने मुझे दी है। इनको

बरबाद कर दूंगा, इनको जंगल बना दूंगा। (होसीअ 2:12)
जब अच्छे फलों की मिसाल देनी हुई तो यही सामने आते हैं।
ऐ मेरे भाइयो! क्या अंजीर के दरख़्त में ज़ैतून और, अंगूर में अंजीर पैदा हो सकते हैं? इसी तरह खारी चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकता (याकूब 3:12)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादाते ग्रामी:

हजरत तमीम अलदारी रज़ि0 ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसव्वलम की ख़िदमत में मुनक्क़ा का तोहफ़ह पेश किया। अपने हाथों में लेकर उन्होंने फ़रमाया:

كلوا فنعم الطعام الزبيب، يذهب التعب، ويطفى الغضب، ويشدالعصب،
ويطيب النكهة ويذهب البلغم، يصفي اللون." (ابونعيم)

(इसे खाओ कि यह बहतरीन खाना है। थकन को दूर करता है। गुस्से को ठंडा करता है। अअ़साब को मज़बूत करता है, सालन को ख़ुश्बूदार बनाता है। बलग़म को निकालता है और चेहरे की रंगत को निखारता है।)

हज़रत अली रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लल्लाह सल्लललाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

من اكل كل يوم احدى وعشرين زبيبةً حمراء، لم يجد فيجسدهِ مايكره.
(ابو نعيم)

(जिसने रोज़ाना मुनक्क़ा सुर्ख़ के इक्कीस दाने खाए वह इन तमाम बीमारियों से महफ़ूज़ रहेगा जिनमें डर लगता है)

सईद बिन ज़ियाद अपने वालदि और दादा से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

نعم الطعام الزبيب يشوالعصب و يذهب بالوصب ويطيب النكهة ويذهب
بالبلغم ويصفي الدون. (ابن السنى، ابونعيم، ابن عساكر، الديلمى، وخطيب)

(यह रिवायत तमीम अलदारी रज़ि0 से तक़रीबन इन्ही अलफ़ाज़ में अबू नईम में बयान की है। मुहद्दिसीन की तहक़ीक़ में सईद बिन ज़ियाद का शजरा बिन क़ाइद बिन ज़ियाद बिन अबी हिंदुलदारी है। उन्होंने यह वाक़िआ भी अपने बाप और दादा से रिवायत किया है।)

हज़रत अली रज़ि॰ से मुनक़्क़ह के बारे में तक़रीबत यही अलफ़ाज़ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मनकूल हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाय:

عليم بالنربيب فانه يكشف المرة ويذهب بالبلغم وتشد العصب ويذهب
بالعيا ويوسنالخلق ويطيب النفس ويذهب بالهم (ابونعيم)

(तुम्हारे फ़ाएदे के लिए मुनक्क़ह मौजूद है। यह रंग को निखारता, बलगम को निकालता, अअ़साब को मज़बूत बनाता, कमजोरी को दूर करता, मिज़ाज को ख़ुशगवार बनाता, सांस को ख़ुशबूदार करता और गम को दूर करता है)

अहादीस से यह बात साबित है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खजूर या मुनक़्क़ा को पानी में भिगो कर इसका शर्बत नोश फ़रमाया करते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 रिवायत फ़रमाते हैं।

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم ينقع له البيب فيشربه فى اليوم والغداو بعد الغدِ ثم يامربه فيسقى (ابوداؤد)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए मुनक़्क़ा भिगोया जाता था। वह यह शर्बत उस रोज़ पीते, अगले रोज़ पीते और बाज़ औक़ात इससे अगले रोज़ भी, बक़ाया दूसरों को दे देते थे। एक और रिवायत में है कि बचा हुआ मुलाज़मीन को दे दिया जाता था।)

मुनक़्क़ह के इस्तेअमाल की हिदायात में इरशाद हुआ। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

كلا الزبيب واطر حوا عجمه، فان فى عجمه داء وفى لحمه شفاء. (ذہبی)

(मुनक़्क़ा खाया करो मगर इसका छिलका उतार दिया करो, क्यूंकि इसके छिलके में बीमारी और गूदे में शिफ़ा है।)

ग़ालिबन इसकी वजह यह रही कि मिठास की वजह से मक्खियों की गिलाज़त छिलके पर लगी रहती है। इसलिए खाने से पहले इसे उतार दिया जाए।

نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يجمع بين التمر والزبيب فى النق (بخاری)

(भिगोने के लिए रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ही बर्तन में खजूर और मुनक़्क़ा को जमा करने से मना फ़रमाया:)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

इमाम ज़ुहरवी कहते हैं कि जिस किसी को हदीस हिफ़्ज़ करने का शौक़ हो वह मुनक़्क़ा खाए। वह ख़ुद सेब नहीं खाते थे और इसे बतौर ग़िज़ा के खजूर से बहतर गरदानते थे। कहते थे कि जो कोई मुनक़्क़ा के साथ पिस्ता लोबान का छिलका नहारमुंह खाए इसका ज़हन क़वी हो जाता है।

ज़हबी की दानिस्त में मुनक़्क़ह प्यास लगाता, जिस्म में हिद्दत पैदा करता, लाग़र जिस्म को मोटा करता और इसके बीज मेअदा की इस्लाह करते हैं। अनार के दानों के साथ मुनक्क़ह का ख़ासांदा हाज़मे के लिए मुफ़ीद है। इब्नुलक़ैय्युम की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ किशमिश से मुनक़्क़ह बेहतर है। इसका गूदा फेफड़ों के लिए अक्सीर है। पुरानी खांसी में फ़ाएदा देता है। गुर्दा और मसाने के दर्द को दूर करता है। पेट को नर्म करता और मेअदे को मज़बूत करता है। जिगर और तिल्ली को ताक़त देता है। हाज़मा दुरुस्त करता है।

अगर इसे बीज़ों के बग़ेर खाया जाए तो यह बेहतरीन ग़िज़ा है। और अगर इसके बीज भी खाए जाएं तो फिर यह मेअदा, जिगर और तिल्ली को अपने असल हजम पर वापस लाता है। बलग़म को निकालने के बाद इसकी आइंदा पैदाइश को कम करता है। इसका गूदा निकाल कर अगर हिलते हुए नाख़ुनों पर लगाया जाएतो मज़बूत कर देता है।

अतिब्बाए क़दीमे के मुशाहिदात:

इब्ने मास्विया ने अंगूर को तमाम मेवों से अफ़ज़ल क़रार देने के बाद कहा है कि जब वह दरख़्त पर पूरा पक जाए तो इसके बाद खाया जाए। यहां पर अतिब्बा का इख़्तिलाफ़ है। बाअज़ उस्ताद पतले छिलके वाले अंगूर को फ़ौरन खाने की ताकीद करते हैं जबकि दूसरे मोटे छिलके वाले को कुछ दिन पड़ा रहने के बाद क़ाबिले इस्तेमाल क़रार देते हैं। ज़ूनी कहता है कि रोटी के साथ अंगूर खाने से तक़वियत हासिल होती है और इसके बाद तबख़ीर नहीं होती। अगर अंगूर के ख़ोशों पर ज़ैतून का तेल लगा दिया जाए तो इन पर भिड़ें नहीं आतीं। यही अमल आज कल बाज़ार में मिलने वाली खजूरों पर किया जाता है। रहड़ियों वाले खजूरों पर काई बदबूदार तेल मल देते हैं जिससे इन पर मक्खी नहीं बैठती।

अंगूर का ज़िक्र यूनानी देवमाला में देवीसस के हवाले से और भारती देवमाला में इंद्र देवता के ज़रिए मिलता है। जिसने लोगों को अंगूर से शराब बनाने का तरीक़ा सिखाया।

अंगूर सरीउल हज़्म है। ख़ून सॉलेह पैदा करता है। बू–अली सैना का कहना है कि अंगूर से बनने वाला ख़ून अंजीर से हलका और कम होता है। दूसरे अतिब्बा का कहना है कि अंगूर का पोस्त अगर गल जाए तो फिर यह अंजीर से भी ज़्यादा मौलिद ख़ून सॉलहि है जिगर को कुव्वत देता है। आअज़ा की सुस्ती को दूर करता है। इसका गूदा शकर के साथ पका कर पिया जाए तो प्यास को कम करता है।

इसके मक़ामी इस्तेअमाल में वैदों ने क़रार दिया है कि अंगूर की बेल की लकड़ी को जलाकर इसकी राख पानी में घोल कर पीने से गुर्दे और मसाने में पथरी की पैदाइश रुक जाती है। इसके लेप और पिलाने से जिस्म के अक्सर वरम उतर जाते हैं। बवासीर के मस्से उतर जाते हैं। इसकी राख को सिरके में मिलाकर लगाने से बावले कुत्ते के काटे का ज़ख़्म बेज़रर हो जाता है।

(नोट: यह अमल तजुर्बाशुदा नहीं है। इसलिए कुत्ता काटे जैसी मुहलिक बीमारी में तजुर्बा करना ख़तरनाक होगा।)

मुनक़्क़ह का असारा शराब के ख़ुमार को रफ़अ करता है। अगर इसे आग में पका कर जोशांदा बना लिया जाए तो इसके ग़रारे हलक़ की सोज़िश को ख़त्म करते हैं। पीने से ख़ूनी क़ै और नकसीर में फ़ाएदा होता है। इसका लेप बवासीर के ख़ून को बंद करता है और बीमारी को दूर करता है।

अंगूर मेअदे के लिए मुक़व्वी है। खांसी में मुफ़ीद है। इसका लुआब आग पर गाढ़ा करके, इसमें मेथी और अंजीर मिला कर शहद के साथ देने पर पुरानी खांसी का बहतरीन इलाज है। मग़ज़ बादाम के साथ ख़फ़क़ान को नाफ़ेअ है। मिर्गी में मुफ़ीद है। जौ के पानी के साथ मुनक़्क़ह उबाल कर देने से पेशाब आवर है और गुर्दे से पथरी को निकालता है मिर्गी में मुफ़ीद है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात को देखें तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके जितने भी फ़वाइद इरशाद फ़रमाए इनमें से हर एक की तसदीक़ मौजूद

है। जबकि इनमें से अकसर इसके अम्र से आश्ना न थे कि सरकार ने इसकी क्या उफ़ादियत बयान फ़रमाई।

कीमयावी तरकीब:

हकूमते हिंद के एग्रिकलचरल कैमिस्ट बम्बई ने इसमें क़ाबिले ख़ुराक अज्ज़ा की मौजूदगी 90 फ़ीसदी क़रार दी है। इसमें मअदनी नमकों के अलावा तमाम विटामिन, ग्लूकोज़, फ़ौलाद, फ़ास्फ़ोरस कैल्शियम, ऑक्सलेक और टाट्रिक एसिड पाए जाते हैं। इसके बीजों में एक तेल, चिकनाई और टैंक एसिड मिलते हैं। जबकि छिलके में ज़्यादा तौर पर टैंक एसिड होता है। इसमें शकर की मिक़दार 18 फ़ीसदी के क़रीब होती है मगर यह शकर जिस्म में जाकर नुक़सान नहीं देती।

जदीद तहक़ीक़ात:

अंगूर में गिज़ाइयत और जौहर काफ़ी हैं। इसलिए जिस्म को क़वी करता है। बेहतरीन गिज़ा और जल्द हज़्म होने वाला है। ख़ून सॉलेह पैदा करता है। प्यास को रफ़अ करता है। बुख़ारों को दूर करता। दिक़, नज़ला, जुकाम और खांसी के मरीज़ों के लिए एक मुफ़ीद गिज़ा है। तलय्यान शिकम करता है। मुक़व्वी क़ल्ब होने की वजह से ख़ाफ़क़ान और ज़अफ़े क़ल्ब में मुफ़ीद है। इसे रात को पानी में भिगो कर सुबह यह पानी पीने से पुराना क़ब्ज़ दूर हो जाती है।

मुनक़्क़ह के पानी वाला नुस्ख़ह भारती हकूमत के शोअबा तिबे यूनानी ने शाया किया है और यह अम्र दिल्चस्पी से ख़ाली न होगा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा–हमेशा मुनक़्क़ह को पानी में भिगो कर इसका पानी नोश फ़रमाया करते थे।

गिरजा घरों में दिए जाने वाले मुतबर्रक पानी में भी मुनक़्क़ह भिगो कर दिया जाता है। तिबे यूनानी में मुनक़्क़ा जोशांदों का अहम जुज़्व रहा है और मअजून ज़बीब के नाम से एक मशहूर मुरक्कब अब भी दवा ख़ानों में मिलता है।

अंगूर और शराब:

हिंदू देवमाला के मुताबिक़ इंसानों को शराब बनाने का इल्म इंद्र देवता ने सिखाया था। इसलिए इनके अक़ीदे में शराब या सौम रस पीना अच्छी आदत है। ईस्वी तालीमात में भी शराब हराम है। मगर पादरियों ने तौज़ीहात के ज़रिए अंगूर की शराब को मज़हबी रसूम में दाख़िल कर लिया। शराब के मुताल्लिक़ दुनिया के किसी मज़हब ने कोई वाज़ेह हिदायत नहीं दी। इसलिए इनके मानने वाले चाहें तो शराब नोशी कर सकते हैं

इस सिलसिले में पहली अहम हक़ीक़त इस तरह मयस्सर है।

عن طارقؓ بن سويدالحضرمى، قال "قلت يا رسول الله: ان بارضنا اعناباً نعتصرها، ننزب منها؟ قال:لا .فراجعته، قلت : انا نستشفى للمريض. قال انذالك ليس بشفاءٌ ولكنه واء" (مسلم۔ابوداؤد۔ترمذی)

(तारिक़ बिन सवैद हिज़री रज़ि0 ने कहा या रसूलल्ललाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे मुल्क में अंगूर होते हैं। क्या हम इनका रस

निकाल कर पी लें?
फ़रमाया "नहीं" फिर कहा कि हम इससे मरीज़ों का इलाज करते हैं। हज़ूरे अकरम सल्ल. ने फ़रमाया इसमें तो हरगिज़ शिफ़ा नहीं बल्कि यह बज़ाते ख़ुद बीमारी है।)

एक दूसरी रिवायत में इरशादे ग्रामी हुआ।

من تداوى بالخمر فلاشفاه الله (ابونعیم - فتح الکبیر)

(जिस किसी ने शराब से इलाज किया इसके लिए अल्लाह की तरफ़ से काई शिफ़ा नहीं।)

अतिब्बा क़दीम के अक्सर नुस्ख़ों में शराब सुर्ख़ और ब्रांडी का ज़िक्र मिलता है। मगर तजुर्बात से यह बात अतिब्बा को भी वाज़ेह हो गई कि शराब को किसी भी इलाज में कोई बर्तरी हासिल नहीं। कुरआन मजीद ने तबीब को इस अम्र की इजाज़त दी है कि वह इलाज के लिए किसी भी ऐसी चीज़ को इस्तेअमाल कर सकता है जो इस्लाम ने हराम क़रार दी हो। इजाज़त अपनी जगह क़ायम है। मगर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके साथ अपना मुशाहिदा शामिल फ़रमा दिया कि हराम चीज़ों में शिफ़ा नहीं। शराब किसी बीमारी का इलाज नहीं बल्कि बीमारियों की पैदाइश का बाइस होती है।

यूरप में अंगूर का ज़्यादा तर मसरफ़ शराब बना रहा है। इस शराब को कशीद करके ब्रांडी बनती है। ब्रांडी के बारे में यक़ीन किया जाता है कि यह सर्दी SPIRIT VINUM GALICI के नाम से इस्तेअमाल होती रही है। अबकी तहक़ीक़ात यह है कि ब्रांडी देने के लिए फेफड़ों का दिफ़ाई निज़ाम मफ़लूज हो जाता है। शराब का एक गिलास भी गुर्दों में वरम पैदा कर सकता है। इसका हर घूंट दिमाग़ के ख़लियों को ज़ाया करता है और यह ख़लिये दोबारा पैदा नहीं होते। इसलिए शराब का घूंट, दिमाग़ी सलाहियत और याद्दाश्त को मुस्तक़िल तौर पर ख़राब करता है। शराब जिगर और मेअदा के लिए ज़हर हैं। इन नुक़सानात की मौजूदगी में यह किसी बीमार जिस्म के लिए किसी फ़ाएदे की बाइस नहीं हो सकती।

ईरान में मुनक़्क़ा से एक क़िस्म की शराब कशीद की जाती थी जिसे "अर्क़" कहते थे। इसका नशा दूसरी शराबों से तेज़ और इसी मुनास्बत से इसके नुक़सानात भी दूसरों से ज़्यादा होते थे। सुना है अब यह नहीं बनती।

जदीद तहक़ीक़ात ने यह बात साबित कर दी है कि शराब के मुताल्लिक़ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादात कितने सहीह और अहम उसूले इलाज है।

मैथी......हलबा

TRIGONELA GRACECUE FOENUM

मैथी आम पर काश्त की जाती है। खुदरौ पौधे कम होते हैं। गर्म मुमालिक ही में नहीं बल्कि सर्द मुमालिक में भी कस्रत से इस्तेअमाल होती है। अंग्रेज़ी में

इसे FUNERGREEK कहते हैं। ताज़ा मैथी इतनी ख़ुश्बूदार नहीं होती मगर जब इसे सुखाया जाता है तो ख़ुश्बू आने लगती है। ख़ुश्बू का तअल्लुक़ काश्त के इलाक़ा से भी है। मसलन पंजाब में क़ुसूर की मैथी और वह भी एक ख़ास इलाक़ा की, दूसरे इलाक़ों की निस्बत ज़्यादा ख़ुश्बूदार होती है।

अहादीस नबवी सल्ल0

क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

استشفو بالحلبة (ابن القیم فی الطب النبوی) (मेथी से शिफ़ा हासिल करो)

इस ज़िम्न में एक और हदीस भी मज़कूर मिलती है इसे इब्नुल क़ैय्यम रह0 ने अतिब्बा का क़ौल क़रार दिया है जबकि ज़हबी रज़ि0 ने इसे हदीस में बयान किया है।

"لو تعلم امتی مافی الحلبة الشتروها ولوبوتها ذهباً."

(मेरी उम्मत अगर मेथी के फ़वाइद को समझ ले तो वह उसे सोने के हम वज़न ख़रीदने से भी दरीग़ न करे।)

मक्का मुअज़्ज़मा की फ़तह के बाद हज़रत सअद बिन अबी विक़ास रज़ि0 बीमार हुए तो हारिस बिन कलदा हकीम ने उनके लिए "फ़रीका" तैयार करने की हिदायत की जिस में खजूर जौ का दलिया और मेथी पानी में उबाल कर मरीज़ को नहारमुंह शहद मिला कर गर्म-गर्म पिलाया जाए। यह नुस्ख़ा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया। उन्होंने इसे पसंद फ़रमाया और मरीज़ को शिफ़ा हो गई। मुहद्दिसीन ने लिखा है कि खजूर की जगह अंजीर भी शामिल की जा सकती है। मगर दोनों की शमूलियत इसलिए मुमकिन नहीं कि सरकारे दो आलम ने खजूर और अंजीर को एक ही नुसख़े में जमअ कर देने की मुमानिअत फ़रमाई है। एक और रिवायत के मुताबिक़ इस नुस्ख़े में मुल्ठी भी थी।

मुहद्दिसीन के मुशाहिइदात:

मेथी का जोशांदा हलक़ की सोज़िश, वरम और दक्खिन के लिए बहुत मुफ़ीद हैं सांस की घुटन को कम करता है। खांसी की शिद्दत दूर होती है और मेअदे में अगर जलन हो तो जाती रहती है। मेथी का यह असर बड़ी अहमियत का हामिल है। क्यूंकि खांसी के इलाज में इस्तेअमाल होने वाली तमाम दवाएं मेअदे में ख़ैज़िश पैदा करती हैं। इसलिए पुरानी खांसी के तमाम मरीज़ों को मेअदे में जलन और बदहज़्मी की शिकायत रहती है। तिब्बे नबवी सल्ल. में मेथी और सफ़रजल ऐसी मुन्फ़रिद दवाएं हैं जो खांसी को ठीक करने के साथ-साथ मेअदे की इस्लाह भी करती हैं।

मेथी से रियाह ख़ारिज होतीं हैं। बवासीर की शिद्दत में कमी आती है और फेफड़ों की सोज़िश न सिर्फ़ कि दूर करती है बल्कि आइंदा के लिए बचाओ करती है। अगर इसके जोशांदे से सर धोएं तो सर की ख़ुश्की कम करती है एक और रिवायत के मद्दे-नज़र मेथी के साथ हुब्बुर्रिशाद को शामिल किया गया तो न सिर्फ़ कि सीकरी को फ़ाएदा हुआ बल्कि बाल गिरने भी कम हो गए।।

मेथी को पीस कर मोम के साथ मिलाकर अगर सीने पर लेप किया जाए तो छाती के दर्द में मुफ़ीद है।

कीमयावी साख़्त:

इसकी साख़्त में कुदरत ने लहमियात और इनके एमून्याई तिरशों का तनासुब इस ख़ूबसूरती से क़ायम किया है कि अपनी हैइयत के लिहाज़ से यह दूध के क़रीब तरीन है। इसमें फ़ास्फ़ेट के अलावा फ़ौलाद की एक ऐसी नाम्याती क़िस्म पाई जाती है। जो पेट को ख़राब किए बग़ैर फ़ौरन ही जज़्ब हो कर जिस्म की बहतरी में कारआमद हो जाती है। इसमें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अल्कलाइड होते हैं। इनमें में से एक TRIGONELLINE है। जो सिर्फ़ इसी में होती है। इसके नमकियात पेशाब आवर हैं और इसमें ऐसे लेसदार मादे पाए जाते हैं जो झिल्लियों की सोज़िश पुरसुकून आवर असरात रखते हैं। इस तरह गुर्दों की सोज़िश को कम करती है।

एक अमरीकन मुहक़्क़िक़ P-BLUM ने मालूम किया है कि अपने अज्ज़ा और हैइयत तरकीब के लिहाज़ से यह मछली के तेल का नेअमुलबदल है।

भारती माहिरीन ने बलोम की ताईद के साथ–साथ यह क़रार दिया है कि बअज़ औक़ात इसके असरात मछली के जिगर के तेल से भी बेहतर होते हैं। याद रहे कि मछली के तेल के अहम अज्ज़ा में विटामिन एल और डी शामिल हैं जब्कि LECITHIN काफ़ी मिक़दार में मौजूद है।

फ़वाइद और इस्तेअमाल:

यह बुन्यादी तौर पर पेशाब आवर मुख़्रिज बलग़म है इसलिए गुर्दों की सोज़िश में जब पेशाब कम आ रहा हो तो पेशाब लाती है। इसी तरह बलग़म निकलता है। फेफड़ों की अंदरूनी झिल्ली की तंदरुस्ती की निगहदाश्त करती है। बलग़म निकालने के लिए साथ–साथ झिल्लियों को तवानाई देती है। जिससे वह आइंदा मुलतहिब होने से महफ़ूज़ हो जाती है।

मेथी के इस्तेअमाल के दो तरीक़े हैं। एक तरीक़ा इसके पत्ते और शाखें सुखा कर काम में लाना है। दूसरा तरीक़ा मेथी के बीज इस्तेअमाल करना है। भारती मुहक़्क़िक़ बीजों को पत्तों से ज़्यादा मुफ़ीद मिक़दार देते हैं। हमने अपने ज़ाती तजुर्बात में हमेशा बीज इस्तेअमाल किये और यह हमेशा मुफ़ीद रहे।

5 ग्राम (छोटा चम्मच) पिसी हुई मेथी अगर पानी के साथ खाई जाए तो इस्हाल और पेचिश में मुफ़ीद है। अगर इस पानी को गर्म करके इसमें शहद मिलाया जाए तो पेशाब और खांसी के लिए भी मुफ़ीद है। मेथी इश्तिहा आवर है इसलिए भूख की कमी और खट्टे डकारों को दूर करती है। इसका मुसलसल इस्तेअमाल ख़नाज़ीर का बहतरीन इलाज है। चूंकि ख़नाज़ीर गदूदों में तपे–दिक की क़िस्म है। इसलिए इस मक़सद के लिए अगर इसके साथ क़िस्त, शहद और रौग़ने ज़ैतून भी शामिल कर लिया जाए तो इलाज जल्द हो जाएगा और मरीज़ की कमज़ोरी इब्तिदा ही से दूर हो जाएगी।

जदीद तहक़ीक़ात:

यह बात तजुर्बात से साबित है कि मैथी कासरुर्रियाह और पेशाब आवर है

जिन औरतों को हैज़ का ख़ून बार–बार आता हो उनके लिए मुफ़ीद है औरतों के दूध की मिक़दार में इज़ाफ़ा करती है। जिस्मानी कमज़ोरी को दूर करती है। मेथी में फ़ौलाद और विटामिन बी इसको ख़ून की कमी और आअ़साबी कमज़ोरी में मुफ़ीद बना देते हैं।

मेथी के मुसलसल इस्तेमाल से बवासीर का ख़ून बंद हो जाता है। और अकसर औक़ात मस्से गिर जाते हैं। इस नुस्ख़े के साथ अगर अंजीर शामिल कर ली जाए तो उफ़ादियत में इज़ाफ़ा हो जाता है।

इसके कीम्यावी असरात को जाने बग़ैर यह बात मुशाहिदात से साबित होती है कि मेथी खाने से ज़ियाबेत्स की शिद्दत में कमी आ जाती है चंद मरीज़ों को......

कलोंजी 1 तोला, तुख़्म कासनी ½ तोला, तुख़्म मेथी ½ तोला के तनासुब से मिलाकर ज़ियाबेत्स की शिद्दत के दौरान 3 माशा की ख़ुराक में सुबह–शाम दिया गया। छः माह के इस्तेअमल से अकसर लोगों के पेशाब में शकर की मिक़दार बराए नाम रह गई।

मेथी के बीजों में लुआबदार अज्ज़ा आंतों की जलन, गैस, पुरानी पेचिश और मेअदे के अलसर में सुकून देते हैं। सर्दी के मौसम में खाने के बाअद आधा छोटा चम्मच लगातार खाने से मौसम की अक्सर बीमारियों से बचाओ हो जाता है। माहिरीन ने इसे मुफ़र्रह क़रार दिया है। दमा और पुरानी खांसी के इलाज में क़िस्तुलबहरी और हुब्बुर्रिशाद के हमराह मेथी के बीज शामिल कर देने से इलाज ज़्यादा आसान हो जाता है।

वरस............वरस
MEMECYLON TINCTORIUM

अरब में वरस का पौधा यमन के अलावा कहीं और नहीं होता। इसी बिना पर मुहद्दिसीन ने क़रार दिया है कि दुनिया में वरस सिर्फ़ यमन में होती है। इसका पेड़ तक़रीबन 4 मीटर बुलंद होता है। जिसकी काश्त की जाती है। अगर यह मैदानी इलाक़े में हो तो फलियों के अंदर गहरे सुर्ख़ रंग के सख़्त रेशे होते हैं। अगर पहाड़ी इलाक़े में हो तो इन रेशों का रंग सुर्ख़ी माइल सुनहरी होता है। यह रेशे शक्लो सूरत में ज़ाफ़रान की मानिंद होते हैं मगर जब हाथ लगाएं तो सख़्त बल्कि इनको पीसना भी मुश्किल होता है। अतिब्बा क़दीम ने मुश्तर्का शक्ल की बिना पर ज़ाफ़रान को वरस का बदल क़रार दिया है।

वरस का मश्रिक़ी ज़बानों में यही नाम है। अलबत्ता फ़ार्सी में इसे करकम कहते हैं। इन नामों को भारती माहिरीन नबातात ने मख़मसा में डाल दिया है। कर्नल चोपड़ा ने वरस को कुमीद क़रार दिया है। इसकी नावाक़िफ़यत का अफ़सोस नाक अंजाम यह है कि सऊदी अरब में पिसा हुआ कुमेला वरस के नाम से फ़रोख़्त होता है। हालांकि इनकी शक्लो सूरत और ख़्वास में कोई मुमासिलत नहीं। नदकारनी ने हल्दी को कम कुरकम क़रार दिया है जो कि

ग़लत है।

मुहद्दिसीन ने क़रार दिया है कि वरस यमन में होती है और इसकी दो क़िस्में हैं। उम्दा का रंग सुनहरी या सुर्ख़ और घटिया क़िस्म सोडान और हब्शा में सियाह रंग की होती है। इसकी कुव्वत चार साल तक क़ायम रहती है।

सर एडवर्ड विल्यम मेन ने अपनी लुग़त में वरस का अंग्रेज़ी तर्जुमा MEMECYLON किया है। बअज़ लोग इसे TINCTURA क़रार देते हैं और बअज़ ने इसे EDULE का नाम भी क़रार दिया है। मगर दोनों की शक्लें यकसां और फ़वाइद भी क़रीब हैं। जुनूबी हिंद और सिरी लंका में एक पेड़ "वरी काहा" या "अंजाना" पाया जाता है। यह दरख़्त शक्लो सूरत में वरस के क़रीब है और इसके अफ़आल और असरात भी तक़रीबन वरस के से हैं इसलिए वरस को अगर मक़ामी तौर पर अंजाना क़रार दिया जाए तो यह ग़लत न होगा।

इरशादाते नबवी सल्ल0

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसलम ने सबसे पहले तो वरस को रंगने वाली चीज़ क़रार दे कर यह हुक्म सादर फ़रमाया है कि हज के लिए एहराम का कपड़ा वरस से न रंगा जाए। अहादीस में दूसरी मर्तबा इसका ज़िक्र हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि. बिन औफ़ की शादी के सिलसिले में मिलता है। यह जब दरबारे रिसालत में हाज़िर हुए तो उनके चहरे और लिबास पर पीला रंग लगा हुआ था। इस ज़िम्न में उन्होंने बयान किया कि अंसार में दूल्हा के कपड़ों पर शादी के बाद वरस का रंगा डाला जाता है, इसके बाद इनको वलीमा करने की हिदायत फ़रमाई गई।

हज़रत ज़ैब रज़ि0 बिन अरक़म रिवायत करते हैं:

انّ النبی صلی الله علیه وسلم کان ینعّت الزیت والورس من ذات الجنب.

(جامع ترمذی)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ातुलजुंब के इलाज में वरस और ज़ैतून के तेल की तारीफ़ फ़रमाते हैं)

इसी मसले को ज़ैद बिन अरक़म रज़ि. एक दूसरी सूरत में यूं बयान फ़रमाते हैं।

نعتُ رسول الله صلی الله علیه وسلم من ذات الجنب ورساؤ قسطاً وزیتاً یلدبه

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ातुलजुंब के इलाज में क़िस्त हिंदी, वरस और ज़ैतून के तेल की तअरीफ़ फ़रमाई)

ज़ातुल जुंब से मुराद पिलोर्सी है जो कि तपे–दिक़ की अक़साम में से है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

لاتحرقن حلوق اولادکن علیکن بقسط هندی و ورس ناسعطیه ایاه.

(مستدرک الحاکم)

(ऐ औरतों! अपने बच्चो के हलक़ों को सोज़िश से जलाया न करो जबकि तुम्हारे पास क़िस्त हिंदी और वरस मौजूद हैं। यह उनको

चटाया करो)

यह रिवायत अल्फ़ाज़ के मअमूली रद्दो–बदल के साथ दूसरी किताबों में भी मौजूद है।

عن ام سلمةؓ، قالت: كانت النفساء تقعد بعد نفاسها اربعين يوماء و كانت اهدانا تطلى الورس على وجهها من الكف.

(उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि॰ बयान करती हैं कि औरतें हैज़ से फ़राग़त के बाद वरस के पानी में चालीस दिनों तक बैठा करती थीं क्यूंकि उनके चहरे पर छाइयों दाग़ थे)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

जामेअ तर्मिज़ी की सबसे मक़बूल और मुफ़स्सल शरह तोहफ़तुल आरज़ी" अल्लामा अब्दुल्ला मुबारक पुरी ने तस्नीफ़ की है। वह वरस को यमन के अलावा किसी और जगह तसलीम नहीं करते। इनकी तहक़ीक़ के मुताबिक़ वरस का महलूल चहरे से हर क़िस्म के दाग़ और धब्बे उतारने की यकता दवाई है। उन्होंने जिल्द की तकलीफ़ की तीनों अहम अक़साम "नहक़" बहक़ और कलफ़ के लिए और ख़ारिश के लिए अक्सीर क़रार दिया है।

इब्नुलक़ैय्युम ने उम्मे सलमा रज़ि॰ की जिस हदीस का हवाला दिया है अल्लामा अब्दुल्ला इसे हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ के बारे में क़रार देते हैं बयान करते हैं कि हज़रत आइशा के चहरे पर झाइयों के दाग़ थे तो वह वरस के इस्तेमाल के बाद दूर हो गए थे। मगर वह पूरी ज़िंदगी निहायत बाक़ाइदगी के साथ ज़ैतून के तेल में वरस मिला कर रात को चेहरे पर लगाती रहीं। जिससे इनकी जिल्द बे ऐब और इतनी चमकदार थी कि लोग उन्हें "हुमरा" के लक़ब से पुकारते थे।

अबू–हनीफ़ा दीनोरी ने बयान किया है कि इसे यमन के लोग काश्त करते हैं और जब कभी शांदार दावत का एहतिमाम करें तो इसे दीगर मसालहों के साथ सालन में डालते हैं।

इब्नुलक़ैय्युम रह॰ सुर्ख़ रंग की वरस को सबसे उम्दा क़रार देते हैं। वह एक ग्राम दवाई को पानी के साथ पीने की सिफ़ारिश करते हैं। इसके फ़वाइद तक़रीबन वहीं हैं जो क़िस्तुलबहरी के हैं। इसके पीने से ख़ारिश, फुंसियां, जिस्म से आब्ले और एग्ज़िमा दूर हो जाते हैं। अगर किसी कपड़े को वरस में रंग कर पहना जाए तो इससे भी कुव्वत बाह में इज़ाफ़ा होता है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

वरस का नाम अगर्चे इल्मुल अदविया की मुतअद्दिद किताबों में मौजूद है मगर अकसर अतिब्बा ने इसके सही असरात का ज़िक्र नहीं किया। एक जगह मज़कूर है कि वरस ख़ुश्बूदार होती है "मुहज़्ज़बुल असमा" ने इसे ज़ाफ़रान की क़िस्म क़रार दिया है।

यह मुख़ातलिफ़ ज़हरों का तिरयाक है। जिस्म को कुव्वत बख़्शता और फ़रहत देता है। ख़फ़क़ान को दूर करता है। सियाह दाग़ ज़ाइल करता है। रियाह गलीज को तहलील करता है। गुर्दा और मसाना की पथरी को तोड़ कर

निकालता है।

कीमयावी साख़्त

इसमें क्लोफ़िल एक ज़र्द रंग का CLUCOSIDE गोंद, निशास्ता MALIC ACID और ग़ैर नाम्याती नमक पाए जाते हैं।

जदीद मुशाहिदात:

इसके पत्तों का जोशांदा बनाकर इसे आशोबे चश्म के लिए आंखों में डाला जाता है। इसी जोशांदे का एक घूंट दिन में तीन–चार मर्तबा पीने से सोज़ाक और लिकोर्या में फ़ाएदा होता है। इसकी जड़ों का जोशांदा कसरते हैज़ में मुफीद है।

नदकारनी की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ वरस के दरख़्त की छाल को पीस कर इसके साथ काली मिर्च, अजवाइन मिलाकर चोटों पर सैंक दिया जाए तो वरम उतर जाता है।

वरस के बारे में क़दीम और जदीद मुशाहिदात को सामने रखें तो एक अहम चीज़ सामने आती है कि हर दौर में यह सोज़िश को रफ़ा करने के लिए इस्तेअमातल हुई। जिससे लाज़मी नतीजा यह निकलता है कि इसमें जरासीम को हलाक करने की इस्तेअदाद मौजूद है।

इन मुशाहिदात की रौशनी में अहादीस नबवी सल्ल॰ को देखें तो हैरत होती है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वरस को गले की सोज़िश और तपे–दिक़ में तज्वीज़ फ़रमाया। जहां तक सोज़िशों का ताल्लुक़ है क़दीम और जदीद दोनों क़िस्म के अतिब्बा इसके दाफ़ेअ तअफ्फ़ुन असरात के बारे में मुत्तफ़िक़ हैं। जहां तक दिक़ के जरासीम का ताल्लुक़ है किसी ने इस बाब में तवज्जह नहीं दी।

मुज़्मिन इम्राज़ और लोज़तीन की सोज़िश में हमने वरस को ज़ाती तौर पर इस्तेअमाल किया है और अकसर औक़ात इन मरीज़ों को दी गई जिनके गले तमाम जदीद अदविया के बावजूद ठीक न होते थे। इनमें वरस के इस्तेमाल से हैरत नाक नताइज हासिल हुए। मगर इसे काफ़ी देर तक देना पड़ा।

चहरे के दाग़ उतारने वाली सलाहियत बिलाशुबह यकता और बे–नज़ीर है। वरस का मुसलसल इस्तेअमाल जिल्द के ऊपर से हर क़िस्म के दाग़ उतार देता है। इसे ज़ैतून के तेल में एक और बारह की निस्बत से मिलाकर उबालने के बाद लगाया गया। ऐसा मअलूम होता है कि वरस वह मुन्फ़र्द दवाई अै जो जिल्द को साफ़ करने की अहलियत रखती है।

विल्यम लेन ने बू–अली सेना के हवाले से लिखा है कि यह गुर्दों और मसाने से पथरी को निकाल देती है। यह बात मुशाहिदात से न सिर्फ़ कि दुरुस्त साबित हुई बल्कि इसके जरासीम कुश असरात ने गुर्दों से सोज़िश को भी रफ़अ कर दिया।

तिब्बे नबवी

हिस्सा-दोम

शिफ़ा का मज़हर
कुरआन मजीद

जब भी कोई नई किताब मुअ़रिज़े वजूद में आती है तो इसका मुसन्निफ़ वजह तालीफ़ भी बयान करता है। वह इसी क़िस्म की दूसरी किताबों की मौजूदगी के बावजूद इस किताब के लाने का मक़सद वाज़ेह करता है। यही सूरतेहाल कुरआन मजीद के नुज़ूल के वक़्त हुई। अल्लाह ताला ने इसके फ़वाइद और मक़ासिद बयान फ़रमाते हुए इसकी एक अहम ख़ासियत यूं बयान फ़रमाई।

ونُنزّل من القرآن ماهو شفاء ورحمة للمؤمنين (۸۲ک۔السراء)

(बिलाशुबह यह शिफ़ा का मज़हर है लेकिन उनके लिए जो इस पर यक़ीन रखते हैं इसकी यह सिफ़त इससे पहले आने वाली तमाम किताबों से मुम्ताज़ कर देती है। क्यूंकि इनके मज़ामीन उस वक़्त के हालात तक महदूद हैं।

फिर फ़रमाया:

قل هو للّذين امنوا هدىً وشفاءٌ...... (۴۴ک۔فصلت)

(अपनी सिफ़त शिफ़ा के उमूमी इज़हार के बाद वह जिस्म के ख़ुसूसी हिस्सों के मसाइल के हल के लिए अपनी उफ़ादियत के इज़्हार में फ़रमाता है:

قد جائكم موعظة من ربكم وشفاءٌ لّما في الصدور...... (۸۷ک۔یونس)

सीने के मसाइल से मुराद रूहानी मसाइल लिए जाते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि कुरआन मजीद अनशराहे सदर और हयातुल कुलूब के लिए अक्सीर है। इरशादे रब्बानी की जामिअ़त फ़वाइद को महदूद नहीं करती बल्कि इसकी शिफ़ाई उफ़ादियत ज़िस्मानी इम्राज़ पर भी मुहीत है। हाफ़िज़ इबनुलक़ैय्युम रह० बयान करते हैं कि तालिब इल्मी के ज़माने में इनको तबीब मयस्सर न था। इसलिए अपना इलाज सूरह फ़ातिहा की मदद से लिया करते थे। इनको यह नुस्ख़ा हज़रत अबू सईद अलख़िज़री रज़ि० की इस मशहूर रिवायत से मयस्सर आया जिसमें उन्होंने बिच्छू काटने के बाद तड़पते हुए एक मरीज़ का दर्द सूरह फ़ातिहा के दम से दूर कर दिया था। हज़रत मौलाना सय्यद मुईनुद्दीन लखनवी (MNA) फ़रमाते हैं कि वह पिछले बीस सालों से दिल के मरीज़ों का इलाज कुरआन मजीद की इस आयत को पढ़ कर, कर रहे हैं:

ولقد نعلم انک یضیق صدرک بما یقولون...... (۹۷۔الحجر)

इस आयते करीमा की बरकत पर उनके यक़ीन का यह आलम था कि उनके

अपने बेटे को जब दिल का दौरह पड़ा तो किसी माहिरे इम्राज़ क़ल्ब या BUEPASS करने वाले के पास जाने के बजाए ख़ुदा के कलाम पर भरोसह करते रहे। और उनका बेटा शिफ़ायाब हो गया।

واعبد ربک حتیٰ یاتیک الیقین...... (الحجر۔۹۹)

(कुरआन मजीद एक ज़ाब्तए हयात है इसमें इबादात, अख़्लाक़, मुलाक़ात क़ानूने मईशत, नफ़्सियात, ईमान, हत्ता के साइंसी उलूम के बारे में अमली उसूल भी मौजूद हैं इसके लिए यह तो मुम्किन न था कि वह किसी एक मौज़ूअ को हर तरह से मुकम्मल करे और इस तरह दूसरी बहुत सी चीज़ें तिश्ना रह जाएं। फिर यह कि जिस तरह बनी इसराईल को पका–पकाया खाना मिलने लगा तो वह कभी इसके मेअयार पर मुअतरिज़ होते और कभी इनको मिस्र की दालें और प्याज़ याद आते। इसी तरह लोग पूरा नुस्ख़ा पाकर कभी इसकी क़दर न करते। कुरआन मजीद मुख़्तलिफ़ मसाइल की जानिब इशारे देकर हमें तहक़ीक़ की दअवत देता है और हमें यह मौक़ा देता है कि हम इन इशारात पर रास्ता तलाश करें। और मुवज्जद होने की ख़ुशी हासिल करें।

افلا ینظرون ال الابل کیف خلقت...... (الغاشیہ۔۱۷)

ऊंट की तख़्लीक़, उसके जिस्म की फ़आलियत, आअज़ा के तफ़सीली मुतालेअ से तलाश करने वालों को बहुत से मसाइल का हल मअलूम हो सकता है। जिस्म इनसानी का दरजए हरारत गर्मी की शिद्दत के दौरान एतिदाल पर रखने के लिए पसीना आता है लेकिन ऊंट सोहरा की झुलसा देने वाली गर्मी में किसी छतरी के बग़ैर मज़े से चलता है। जब्कि इसके जिस्म में पसीना पैदा करने वाले ग़दूद नहीं होते। शदीद गर्मी में इसका दरजए हरारत क्यूंकि एतिदाल पर रहता है। अगर हम इसका जवाब तलाश कर लें तो हम मौसमी तग़य्युरात का मुक़ाबला करने की आसानियां हासिल कर सकते हैं। कुरआन मजीद ने शहद की मक्खी को इतनी अहमियत दी कि इसके नाम पर पूरी एक सूरत मौजूद है। यह मक्खी जब अपना घर बनाती है तो इसे सहीह मानों में AIR CONDITION करती है। वह सिफ़र दरजए हरारत से नीचे भी ज़िंदा रह सकती है। मनफ़ी दरजए हरारत के बावजूद इसके छत्ते के अंदर का दरजए हरारत 93 दरजे फ़ार्न हीट से कभी भी ऊपर नहीं जाता। कुरआन हमें रास्ता दिखा रहा है कि हम इनसे क्यूं फ़ाएदा नहीं उठाते।

सोहरा में जब पानी नहीं मिलता तो ऊंट कई दिन प्यासा रहने के बावजूद चाक़ो–चौबंद रह सकता है जबकि इसका सवार मौतो–हयात की कशमकश में मुब्तिला होता है पहले ख़याल था कि वह पेट में पानी को ज़ख़ीरा कर लेता है। मगर पोस्ट मार्टम पर इसके मेअदे में पानी का ज़ख़ीरा रखने वाली कोई ज़गह न मिल सकी। फिर क़यास किया गया कि यह कोहान में मौजूद इज़ाफ़ी चरबी को जलाकर पानी बना लेता है। केलीफ़ोर्निया यूनिवर्सिटी में किए गए तजुर्बात में जिन ऊंटों को मौत की हद तक प्यासा रखा गया था उनके जिस्मों में चर्बी की मिक़दार तक़रीबन उतनी ही थी जितनी कि उनके हम वज़न दूसरे तंदरुस्त

ऊंटों में थी। इसका ग़ालिबन मतलब यह है कि उसका जिस्म हवा की हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को मिलाकर पानी बनाने की एहलियत रखता है। जैसे कि एक ज़मीन पर एक ही खाद और पानी से परवरिश पाने वाले दरख़्तों में सेब और शहतूत जैसे मीठे दरख़्तों के साथ नीम का पौदा हासिल करता है।

हयातियात के इस दिलचस्प मुज़ाहिरे का कुरआन मजीद ने भी तज़किरा किया है। अपने इरशादात के साथ वह अपनी तिब्बी उफ़ादियत की एक दिल्चस्प और मुफ़ीद मिसाल हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम के वाक़िए में देता है। यह ख़ातून जंगल में अकेली ज़चगी के अमल से गुज़रने को थीं, उनकी दहशत का यह आलम था कि वह इस दहशतनाक मरहले से गुज़रने की बजाए मौत की आरज़ूमंद हुईं। अल्लाह ताला ने उनको इस मुसीबत से तकलीफ़ के बग़ैर गुज़र जाने की आसान तर्कीब यह बताई कि वह ताज़ा पकी हुई खजूरें खाएं और पानी पिएं। इस ख़ातूने मुअज़्ज़म ने इस नुस्ख़े पर अमल किया तो वह अज़ियत के मरहले से बड़ी आसानी के साथ गुज़र गई। फिर उनमें इतनी तवानाई मौजूद थी कि वह अपने जलीलुल क़द्र मौलूद को उठाए एक तवील मसाफ़त तै करके अपनी बस्ती में तशरीफ़ लाईं जबकि हमारी ख़्वातीन चालीस दिनों तक भी चलने फिरने के क़ाबिल नहीं होतीं। इस मुफ़ीद मिसाल से हमें तिब में पहली मर्तबा INSTANTENEGG का तसव्वुर मिलता है और हमारी बदक़िस्मती मुलाहिज़ा हो कि हम अब भी खोई हुई तवानाई और बीमारी के बअद कमज़ोरी को दूर करने के लिए ग्लूकोज़ के मरहूने मिन्नत हैं जिसका मुसलसल इस्तेअमाल ज़ियाबेत्स का बाइस होता है। खजूर के इन असरात को सामने रखते हुए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मशअले राह के तौर पर मुतअद्दिद फ़वाइद बता दिए जो कि हमारे दिमाग़ इस नहज पर सोचने के क़ाबिल हो जाएं। बल्कि कम नसीबी वालों के तज़किरे में हज़रत सलमा रज़ि॰ बयान फ़रमाती हैं।

ان النبی صلی الله علیه وسلم قال بیت لاتموفیها کالبیت لاطعام فیه......

(ابن ماجہ)

(उन्होंने एक ऐसी कैफ़ियत में जब हज़रत सअद बिन अबी विक़ास रज़ि॰ के दिल ने काम करना छोड़ दिया और उनको शदीद HEART ATTACK हो चुका था, खजूर और उसकी गुठली से इलाज करके दुनिया को यह सिखा दिया कि कुरआन जब किसी चीज़ को तवानाई का मज़हर क़रार देता है तो फिर वह बंद होते हुए दिल को भी चलाने की सलाहियत रखती है, उन्होंने अवारिज़ हैज़ की एक निहायत ही ख़बीस बीमारी के इलाज में खजूर की उफ़ादियत का एतिराफ़ करते हुए फ़रमाया:

مماللنفساء عندی شفاء مثل الرطب وللمریض مثل العسل

(ابوالشیخ۔ ابونعیم۔ عن ابوہریرہؓ)

(मेरे नज़्दीक औरतों में माहवारी की शिद्दत और बार-बार आने वाली बीमारी के लिए ताज़ा खजूर से ज़्यादा अच्छी कोई दवाई नहीं। और मरीज़ के लिए शहद से बहतर कुछ नहीं।)

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खजूर खाने वालों को ज़हर के असर से महफ़ूज़ रहने का मज़दा भी बताया है। और तिब्बे जदीद इस अम्र का एतिराफ़ करती है कि वह चीज़ें जो जिगर को तक़वियत देती हैं और उसकी हिफ़ाज़त करती हैं, वह ज़हरों के असरात को ज़ायल कर देती हैं।

अकसर लोगों का ख़याल है कि अरब में खजूरें चूंकि ज़्यादा होती हैं इसलिए कुरआन और तिब्बे नबवी ज़्यादा तौर इन्ही की तारीफ़ में है। इस ज़िम्न में सूरह अत्तीन पर तवज्जह दें तो इरशाद बारी हुआ।

والتين والزيتون وطوريسنين وهذا البَلَدِالامين.

(क़सम है मुझे अंजीर, ज़ैतून, जबले तूर और इस दारुल अमन व मक्का की।)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस ज़िम्न में इर्शाद फ़रमाया कि अगर कोई मेवा जन्नत से ज़मीन पर आ सकता था तो वह यही अंजीर है, इसे खाओ कि यह बवासीर को ख़त्म कर देती है और नुक़रस में मुफ़ीद है।

इब्नुल क़ैय्युम रह॰ इसकी तफ़सीर में कहते हैं कि कुरआन ने जिस चीज़ की क़सम खाई है बिलाशुबह इसमें फ़वाइद अजीबिया मौजूद हैं। तिब्बे जदीद में आज भी कोई ख़ुर्दनी दवाई बवासीर में मुफ़ीद नहीं लेकिन यह वह मुन्फ़र्द चीज़ है जो ख़ुश ज़ाएक़ा फल होने के साथ–साथ जिगर की इसलाह करती है। ख़ून की नालियों से अंजमाद ख़ून को दूर करती है। खाने को हज़्म करती है। अगर इसको जलाकर सर पर लगाएं तो बाल उगाती है। दांतों पर मंजन करें तो दाग उतार देती है। दिल के मरीज़ों के ख़ून से कोलेस्ट्रोल कम करने में हमने ज़ाती तौर पर मुशाहिदा किया है कि यह ARISTAMID से ज़्यादा मुअस्सिर है। ज़ैतून के बारे में हज़रत उमर रज़ि॰ और अबू हुरैरा रज़ि0 की रिवायत का ख़ुलासा यह है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमया:

تاكلوالزيت وادهنو به. فانهٔ من شجرة مباركة. فان فيه شفاء من سبعين واء ومنهم الجذام .... (ابونعیم، ابن السنی، الحاکم)

(ज़ैतून सत्तर बीमारियों से शिफ़ा है क्यूंकि कुरआन मजीद ने ताकीद मज़ीद में फ़रमाया)

يوقل من شجرة مباركة زيتونة لا شرقية ولا غربية (النور:٣٥)

कुरआन की समझ रखने वालों ने उफ़ादियत को वाज़ेह करते हुए इशारह फ़रमाया कि यह अलावा कोढ़ जैसी ख़तरनाक बीमारी के सत्तर मज़ीद बीमारियों के लिए भी मुफ़ीद इलाज है। कोढ़ के जरासीम अपनी हैइयत के एतिबार से तपे–दिक़ के जरासीम के क़रीब हैं जो दवाई कोढ़ पर असर अंदाज़ होगी। वह तपे–दिक़ के लिए भी शाफ़ी होगी। इसकी निशानदही फिर बारगाहे रिसालत से मयस्सर है।

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पिलोरसी के इलाज में ज़ैतून के तेल, वरस और क़िस्त अलजरी के इस्तेअमाल का हुक्म दिया। इसकी तफ़सीर में इमाम ईसा तर्मिज़ी फ़रमाते हैं कि

पिलोरसी, सिल की क़िस्म है। और यह बात तिब्बे जदीद को 1940 के बाद मालूम हुई। अंजीर बुनियादी तौर पर तुर्की का फल है। जो शाम और लबनान में भी होता है। और ज़ैतून इटली, स्पेन और शाम का फल है। यह सारे फल, क़िस्त और वरस जज़ीरा नुमा अरब में नहीं होते।

हमारे यहां आजकल दिल की बीमारियों और ब्लड प्रेशर के इलाज में लहसन के इस्तेअमाल का बड़ा चर्चा है। कुरआन मजीद ने इसे बतौर ख़ुराक एक कमतर चीज़ क़रार दिया है और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी पूरी ज़िंदगी उसे नहीं चखा बल्कि लहसन और प्याज़ खाने वालों को अपनी मज्लिस में शामिल होने से रोक दिया। सीधी बात है कि जिस चीज़ को हादिये बरहक़ सल्ल॰ ने ना पसंद किया वह कैसे मुफ़ीद हो सकती है? दूसरी तरफ़ देखिए तो हमारे मुल्क का कौन सा घर है जहां सालन में लहसन का बघार नहीं दिया जाता। क्या वह लोग जो बाक़ाइदगी से लहसन खाते हैं इनको ब्लड प्रेशर नहीं होता या दिल का दौरा नहीं पड़ता?

कुरआन मजीद ने जन्नत में मिलने वाली मुफ़ीद, लज़ीज़ और मुअस्सिर ख़ुराकों के साथ एक अहम बात फ़रमाई:

ويسقون فيها كأساً كان مزاجها زنجبيلاً ...... (الدهر:١٧)

(इनको ऐसे बर्तनों में पिलाया जाएगा जिनमें अदरक की महक होगी)

वाज़ेह बात है कि अदरक एक ऐसी मुफ़ीद और लतीफ़ चीज़ है कि किसी जगह पर इसकी ख़ुशबू का होना निहायत अच्छी बात है। भारत में जड़ी बूटियों का साइंसी बुनियादो पर मुताला करने वालों ने क़रार दिया है कि अदरक में वह तमाम फ़वाइद मौजूद हैं जो हम अब तक कम इल्मी की वजह से लहसन में क़रार देते आए हैं। यह ख़ून की नालियों ही से नहीं बल्कि जिगर और आंतों से भी सुद्दे और अंजमाद निकाल देता है। ज़ियाबेत्स का बहतरीन इलाज है। कुरआन मजीद का सहीह और मुस्तनद इल्म इन्ही को हो सकता है जिन पर यह नाज़िल हुआ और उन्होंने इसे समझने के बाद दूसरों को समझाया। इसलिए कुरआन ने अपने इल्मी और तिब्बी मुहासिन की तफ़सील बताने के लिए इनको पूरी तरह मुस्तनद क़रार देते हुए फ़रमाया है।

وانزل الله عليك الكتب والحكمة علّمك مالم تكن تعلم......

(النساء:١٣)

(उनको कुरआन के बैनुस्सुतूर मअ़ने भी मालूम थे और उन्होंने इस बारे में चंद बातें बड़ी अहमियत की मरहमत फ़रमाई।)

عليكم بالشفائين. العسل والقرآن...... (ابن ماجہ۔عن عبداللہ بن مسعود)

(यहां कुरआन मजीद और शहद को शिफ़ा का यकसां मज़हर क़रार दिया है। इस सिफ़त की मिसाल बुख़ारी मुस्लिम और तर्मिज़ी ने हज़रत अबू सईद अलख़िदरी रज़ि॰ की इस मशहूर रिवायत से दी है जिसमें इस्हाल के एक मरीज़ को बार बार शहद पीने की हिदायत

की गई। जब इसके लवाहिक़ीन ने कहा कि शहद से इस्हाल में इज़ाफ़ा हो रहा है तो ख़ुदाई कलाम और इसके इरशादात पर यक़ीन कामिल का इज़हार फ़रमाते हुए इरशादे ग्रामी हुआ।)

صدق الله وكذب بطن اخيك.

(कुरआन मजीद ने शहद की उफ़ादियत के बारे में फ़रमाया:)

يخرج من بطونها شراب مختلف الوانه فيه شفاء للناس (١٩-ك-النحل)

(शहद की मक्खियों के पेटों से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की रतूबतें निकलती हैं जिन में शिफ़ा है।)

चूंकि शहद जमा करने के दौरान यह रतूबतें इसमें शामिल हो जाती हैं। इसलिए छत्ते से मयस्सर होने वाले शहद में जुमला अनासिर के साथ यह शिफ़ाई असर भी शामिल होते हैं।

हज़रत औफ़ बिन मालिक अलअशजई की बीमारी का वाक़िआ अबुल–अब्बास अहमद बिन अली अलउबैदी अलमुक़रेज़ी ने बयान किया है कि उन्होंने अपने बेटे से कहा कि वह बारिश का पानी, ज़ैतून और शहद तलाश करके लाए। इसके ज्वाज़ में फ़रमाया कि कुरआन ने बारिश के पानी, और ज़ैतून को मुबारक क़रार दिया है और शहद को शिफ़ा का मज़हर, वह तीनों को मिलाकर पी गए और तंदरुस्त हो गए।

अस्सुयूती और हमीद बिन ज़ंज्विया ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. के जिस्म पर फुंसियों का हाल बयान किया है। नाफ़ेअ ने कहा कि ऐसी हालत में मिठास का इस्तेअमाल मुनासिब न होगा।

उन्होंने कहा कि इनका इलाज बहरहाल शहद है। चूंकि कुरआन का फ़र्मूदा ग़लत नहीं हो सकता इसलिए वह शहद ही से शिफ़ायाब हुए।

शहद में हर वह चीज़ मौजूद है। जो जिस्म इंसानी की साख़्त में इस्तेअमाल होती या इसको ज़रूरत पड़ सकती है। इंग्लिस्तान की सालफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में डाक्टर लारी क्राफ़ोर्ड ने हिस्सासियत और HAUFEVER के 200 मरीज़ों का इलाज सिर्फ़ शहद से 1987 में किया है। डाकटर टाम्स ने नमूनिया के एक मरीज़ को पांच दिन में एक किलो शहद पिलाकर और किसी दवाई के बग़ैर शिफ़ायाब करके तिब के मुअक़्क़र रिसाला LANEET में छपवाया।

पिछले साल पाकिस्तान की बॉक्सिंग के लिए जाने वाली टीम के एक रुक्न को डाक्टरों ने यरक़ान की वजह से रोक दिया। वह मेरे पास आया तो इसे एक हफ़्ते में दो किलो शहद पिला कर जिस्मानी तौर पर नाक़ाबिले क़रार देने वाले डाक्टर के पास दोबारा भेजा गया। डाक्टर हैरान था कि यरक़ान का मरीज़ एक हफ़्ते में कैसे तंदरुस्त हो गया। इसने मुतअद्दिद टेस्ट करवाए मगर वह लड़का हर तरह तंदरुस्त निकला।

भारती माहिरीन का ख़याल है कि राम मूर्ति पहलवान और हरकोलेस की ताक़त का राज़ शहद पीने में था। मैंने पिछले दस सालों में कोई ऐसा शख़्स नहीं देखा जिसे शहद पीने के दौरान दिल का दौरा पड़ा हो। या गुर्दों की

बीमारी लाहिक़ हुई हो।

कुरआन मजीद जिस्मानी अफ़आल और कमी अनाटोमी का सरसरी ज़िक्र करते हुए एक अजीब तर्कीब सिखाने की कोशिश करता है। वह चाहता है कि बीमारी का इलाज मुज़िर असर वाली दवाओं की बजाए खाने पीने वाली चीज़ों से किया जाए। हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने अहले ख़ाना को हक़ीक़ी रब से रोशनास करवाने में जो इसकी सिफ़ात बयान फ़रमाई उनमें से एक अहम सिफ़त थी कि......

واذا مرضتُ فهو يشفين ...... (الشعراء:٨٠)

(मैं अपनी वजूहात से बीमार होता हूं और मेरा रब वह है जो मुझे उस वक़्त शिफ़ा का रास्ता दिखाता है।)

इसलिए कुरआन तंदरुस्त ज़िंदगी गुज़ारने के उसूल, वुज़ू की तफ़सील, रात को सोने, साफ़ और पाकीज़ह रहने और खाने के बाब में बयान करते हुए कहता है कि:

حرّمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير. وما اهلّ لغير الله به والمنخنقة والموقوذة والمتردية والنطيحة وما اكل السبع...... (المائده:٣)

(तुम पर हराम कर दिया गया मुरदार, ख़ून और सुवर का गोश्त और किसी के नाम पर दिया गया और गला घुट कर मरा हुआ, कुचला हुआ, बुलंदी से गिरा हुआ, टक्कर से मारा हुआ। और दरिंदे का खाया हुआ जानवर हराम है।)

यह आयत हिफ़्ज़ाने सेहत और तंदरुस्ती की बहुत बड़ी ज़मानत है। क्यूंकि वह जानवर जो किसी बीमारी से मर गया है इसका खाने वाला इस बीमारी में मुब्तिला हो सकता है इनसानी मेअदा ख़ून को हज़्म करने की इस्तिताअत नहीं रखता। और सुअर का गोश्त तो बीमारियों का मंबअ है। सुअर को वह तमाम बीमारियां हो सकती हैं जो इंसानों को होती हैं इसलिए इसकी हर बीमारी खाने वालों को आलूदा करेगी। इसके गोश्त में पाए जाने वाले कीड़े उम्र भर के लिए जोड़ों के दर्दों का बाइस बनते हैं। और यही वजह योरप में इन इम्राज़ की कसरत की है।

कुरआन मजीद ने अनार से लेकर बैर तक और केले से मरजान तक की उफ़ादियत की सिम्त इशारा किया है। इसमें परिंदों से ले कर मछली के गोश्त तक का तज़किरा है। मगर हैरत की बात है कि इनमें से किसी चीज़ में भी कीमयाई SODIUM की मिक़दार ज़्यादा नहीं और इनमें से हर चीज़ में पोटाशियम ज़्यादा है। चूंकि सोडियम जिस्म में ओराम पैदा करता और दिल की बीमारियों में इज़ाफ़ा करता है इसलिए कुरआन मजीद में मज़कूर हर चीज़ को दिल का मरीज़ पूरे वसूक़ से खा सकता है। लेकिन सुवर के गोश्त में सोडियम की मिक़दार बहुत ज़्यादा है इसलिए लहमुल ख़ंज़ीर का इस्तेअमाल इम्राज़े क़ल्ब में इज़ाफ़ा का बाइस होगा। बुलंदी से गिरे हुए, कुचले हुए और लाठी से मारे हुए जानवरों के गोश्त में HISTAMINE की मिक़दार ज़्यादा होती है और यह जिस्म को ख़राब करती है। दरिंदों के जिस्म में बावला पन यअनी RABIES के वाएरस मौजूद रहते

हैं, जिस भेड़ को भेड़िये ने मुंह मारा हो, ऐन मुमकिन है कि इसमें बावला पन के जरासीम भी दाख़िल कर दिए हों और इस तरह यह गोश्त खाने वालों के लिए ख़तरनाक हो जाता है। इसी उसूल को सामने रख कर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस बरतन को सात मर्तबा धोने की हिदायत फ़रमाई जिसमें कुत्ता मुंह मार गया हो। बल्कि इनमें से एक मर्तबा मिट्टी से भी धोया जाए। हलाल और हराम का मसअला कुरआन मजीद की एक शांदार इनायत है। इबराहीमी तरीक़े से ज़िबह के बाद जानवर के जिस्म से सारा ख़ून निकल जाता है। यह गोश्त जल्दी हज़्म होता है और जल्द ख़राब नहीं होता। यह सब कुछ उनके फ़ाएदे के लिए है जो इस पर ईमान रखते हैं। इस की हिदायत पर अमल करते हैं और इसके एवज़ हमेशा तंदरुस्त रहते हैं।

हज़रत अली रज़ि॰ से इब्ने माजा रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"خير الدواء القرآن"

एक दफ़अ किसी शख़्स को कोई तकलीफ़ थी उसने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इलाज पूछा तो इब्ने हबान ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ की वसातत से सरकार सल्ल॰ का वह मुफ़ीद मश्वरा नक़ल किया है। "اعالجها بكتاب الله"

यह एक मुसल्लिमह हक़ीक़त है कि इस्लामी तअलीमात पर अमल करने वाला आमतौर पर लम्बी सेहत मंद ज़िंदगी गुज़ारता है क्यूंकि कुरआन मजीद ने हर उस चीज़ की ताकीद की है जो मुफ़ीद है। वह बेहतरीन ग़िज़ा का नमूना बताता है। वह समंदरी ग़िज़ा को बेहतरीन क़रार देता है। हमारी तंदरुस्ती का मुहाफ़िज़ है और इस अम्र की गारंटी करता है कि अगर हम अल्लाह के दोस्त बन जाएं तो वह हमें रंज डर ग़म और दहशत से महफ़ूज़ रखेगा। जब हम ज़िंदगी की चीरा दस्तियों से मायूस हो कर इसकी जानिब देखेंगे तो वादा मौजूद है।

"من يتوكل على الله فهو حسبه"

(वह किसी मुसलमान के लिए ख़ुदकशी का इरादा करने की गुंजाइश नहीं छोड़ता। इस सिलसिले में आलमी आदादो शुमार इस अम्र का सबूत हैं कि किसी भी मुसलमान मुल्क में ख़ुदकशी की शरह क़ाबिले ज़िक्र नहीं क्यूंकि ख़ुदा शाहरग से ज़्यादा क़रीब, पुकारने वाले की सुनने वाला, दुआ को क़बूल काने वाला, बीमारियों से शिफ़ा देने वाला, वालदेन से ज़्यादा शफ़ीक़, रहीम और मुआफ़ करने वाला और इसके यहां हाज़री देने वालों के लिए GUILT COMPLEX और INFERIORITY क़िस्म की कोई चीज़ नहीं होती, और अगर वह किसी अज़तरारी कैफ़ियत में फिर भी मुब्तिला हो जाए तो

"اَلَا بِذِكْرِ اللهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ."

अनार............ रुम्मान

POMEGRANATE

PUNICA GRANATUM

अनार तारीख़ के क़दीम तरीन फलों में से है, मश्रिक़ी मुमालिक में इसे अंजीर के साथ एहमियत हासिल रही है। तौरेत के मुताबिक़ हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास अनारों के बाग़ थे और सोहरा नूरदी के दौरान बनी इसराईल को जिन चीज़ों की याद बार–बार आती थी उनमें अनार भी शामिल था। यह फल बहीरए रूम के ख़ित्ते और ख़लीज अरब के इलाक़े में काश्त होता है अमरीकी गर्म हिस्सों और जनूबी अमरीका में चिल्ली में अनार कसरत से पैदा होते हैं। हिंदुस्तान में पटना का अनार शोहरत रखता हे मगर ऐशिया के दूसरे मुमालिक में पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान के अनार जैसा शीरीं और लज़ीज़ कहीं भी नहीं मिलता। सऊदी अरब में ताइफ़ के एक बाग़ "हवाया" का अनार और वहां के चश्मों का पानी ज़मानए क़दीम से इमराज़े क़ल्ब में मुफ़ीद समझा जाता रहा है। बाज़ मुअर्रिख़ों का ख़याल है कि तुर्की के इलाक़ा सकोतरी अनार के पौधे का घर है। और वहां से लोग दूसरे मुमालिक में ले कर गए। शहंशाह जहांगीर ने अपनी तुज़्क में ऐशियाए कोचक और काबुल के लज़ीज़ अनारों का तज़किरा बड़े शौक़ से किया है।

अनार का दरख़्त सात मीटर के क़रीब, इसको नेज़े की शक्ल के सब्ज़ पत्ते लगते हैं जिनकी लम्बाई तीन इंच तक हो सकती है। इस दरख़्त को नारंजी सुर्ख़ रंग के फूल लगते हैं। इन फूलों का रंग और शक्ल इतनी ख़ूबसूरत है कि लोगों में इन्ही की मुशाबहत की बिना पर एक रंग गुलनारी मशहूर हो गया है। यह फूल गर्म और ख़ुश्क मौसम में फल बनते हैं।

भारत के ज़रई माहिरीन ने अनार की 12 क़िस्में क़रार दी हैं जिनको मस्क़ती, बहीदानों, क़ंधारी, वांगा, चीहू, सहवानी, सिंधी सहवानी, जेसलमेरी, सिंधी जेसलमेरी के नामों से पुकारा जाता है। इनमें क़ंधारी और बही दानों पाकिस्तानी अक़साम में क़ंधारी अगर्चे काबली फल है लेकिन यह बिलोचिस्तान में काबुल से अच्छा और उम्दा होता है। पाकिस्तान के अनारों में बही दाना सबसे उम्दह और मक़बूल है। क्यूंकि इसमें दाने छोटे और रस ज़्यादा होता है। पाकिस्तानी अनारों में पेशावरी ज़्यादा पसंद किया जाता है। इसका छिलका ख़ुश्क भी हो जाए तो अंदर का फल तरोताज़ा रहता है। हालांकि बाहर के ज़रई माहिरीन अनार के फल की उम्र पंद्रह दिन क़रार देते हैं। यह एक फ़न्नी हक़ीक़त है कि दुनिया के किसी भी मुल्क में पाकिस्तान से ज़्यादा लज़ीज़ और उम्दा रस भरा अनार नहीं होता।

इरशादाते रब्बानी:

وجنٰت من اعناب والزيتون والرمّان متشبهاً وغير متشابه انظر والیٰ ثمره

اذا اثمرو ينعبه ان فی ذالکم لاٰیٰتٍ لِقَوْمٍ یُومنون ٥ (الانعام:٩٩)

(और वहां पर बाग़ हैं जिनकी शक्लें आपस में मिलती भी हैं और कुछ ऐसे हैं जो अपनी शक्ल और ज़ाएक़े में मुख़तलिफ़ हैं। तुम तवज्जा दो और ग़ौर करो फलों पर कि वह कैसे फल की शक्ल इख़्तियार करते हैं। क्यूंकि यह वही चीज़ें हैं जिनमें ख़ुदा की कुदरत के करिश्मे नज़र आते हैं।)

अल्लाह तआला ने फल के बनने और पकने के अमल को अपनी कुदरत का मज़ाहिरा क़रार दिया है। और यह हक़ीक़त भी है कि एक ही बाग़ में एक ही ज़मीन में से एक ही पानी से सेराब होने वाले दरख़्तों में ज़ैतून है जिसका ज़ाएक़ा कसेला और फल मिठास के बजाए एक मुफ़ीद तेल भरा है। अंगूर के गुच्छे हैं और अनार के फल के अंदर ख़ाने बने हैं जिन में रस के भरे दाने हर पेड़ में जुदा ज़ाएक़ा और लज़्ज़त से भरे रखे हैं। दरख़्तों के फूल खिलते हैं। और यह फूल महज़ ख़ुश्बू और ख़ूबसूरती का मज़हर होने की बजाए एक लज़ीज़ फल की सूरत इख़्तियार कर लेते हैं और सारा अमल किसी की शांदार मंसूबा बंदी और तख़लीक़ का मज़ाहिरा है और ऐसा करना किसी मअमूली ताक़त का कमाल नही हो सकता।

وھوالذی انشأ جنّٰت معروشاتٍ وغیر معروشٰتٍ والنخل والزرع مختلفاً اکله والزیتون والرمّان متشٰبھاً وغیر متشابهٍ کلوا من ثمرهٖ اذا اثمروا تواحقّه یوم حصادهٖ ولاتسرفوا انه لایحبّ المسرفین (انعام:١٤١)

(तुम्हारा रब वह है कि उसने तुम्हारे लिए मुख़तलिफ़ अक़साम के बाग़ात बनाए हैं, जिनमें रंग–बिरंग की फ़सलें जैसे खजूर, ज़ैतून और अनार लगते हैं। इनकी शक्लें और ज़ाएक़े आपस में मिलते जुलते भी हैं और मुख़तलिफ़ भी, अल्लाह के दिए हुए इन फलों को इस वक़्त ख़ूब खाओ जब वह खाने के क़ाबिल हो जाएं। लेकिन इनमें से हक़दारों यअनी ग़रीब रिश्तेदारों और उन लोगों को जो इन्हें ख़रीदने की इस्तिताअत नहीं रखते, उनका हिस्सा ज़रूर दो। और इसराफ़ न करो, ग़ालिबन इससे मुराद तन्हाख़ोरी है। क्यूंकि अल्लाह तआला ज़ाया करने वालों को पसंद नहीं करता।)

जन्नत में पाई जाने वाली नेअमतों के बारे में इरशाद फ़रमायाः

فیھا فاکھة ونخل ورمان نبایّ الاید ربّکما تکذّبٰن (الرحمٰن:٦٩)

(यह वह जगह है कि जहां हर क़िस्म के फल जैसे खजूर और अनार मौजूद हैं तुम अपने परवर दिगार की कौनसी नेअमतों को झुटलाओगे।)

जन्नत में पाई जाने वाली नेअमतों और सहूलतों की एक तवील फ़हरिस्त इस सूरत में बताई गई है। हर पैरा में मिलती जुलती चीज़ों का ज़िक्र है। यहां पर खजूर और अनार मज़कूर है। हालांकि इन दोनों के ज़ाएक़े में बहुत से लोगों के लिए कोई अजीबो ग़रीब लज़्ज़त नहीं जैसे के हिंदुस्तान के लोग ज़ाएक़े और

ख़ुश्बूदार फलों की अच्छी ख़ासी तअदाद मौजूद है। अरब के सोहराई इलाक़ों में खजूर ही एक फलदार दरख़्त है। इसलिए इनको इसी का ज़ाएक़ा ज़्यादा पसंद है। लेकिन दूसरे मुमालिक में ज़ाएक़े की बिना पर खजूर को इतनी मक़बूलियत हासिल नहीं ऐसा मअलूम होता है कि यह आयत इन फलों के शांदार होने की बजाए दुनिया के रहने वालों के लिए उफ़ादियत के ज़िम्न में बहतरीन इशारह है। जन्नत से ज़मीन पर आने वाले फलों से मुराद इनकी मुनफ़अत में लिया जा सकता है। जैसे कि अंजीर के बारे में इरशादे नबवी है कि अगर कोई फल जन्नत से ज़मीन पर आया है तो वह यही है। अनार के बारे में तक़रीबन इसी क़िस्म की ख़ुशख़बरी मयस्सर है। खजूर को तो सैकड़ों बीमारियों से बचाओ और इलाज के लिए तज्वीज़ फ़रमाया गया।

इरशादाते नबवी:

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं।

انہ سأل من رسول الله صلی الله علیه وسلم عن الرمّان فقال مامن رمّانة الا وفیه حبة من رمّان الجنة (ابونعیم)

(मैंने रसूलल्लाह अलैहि वसल्लम से अनार के बारे में पूछा हुज़ूरसल्ल. ने फ़रमाया कि ऐसा कोई अनार नहीं होता कि जिसमें जन्नत के अनारों का दाना शामिल न हो)

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि. की आदत थी कि जब भी उन्हें अनार का कोई एक दाना भी मयस्सर आ जाता उसे बड़े शौक़ से खाते और फ़रमाते (यही अलफ़ाज़ इब्ने क़ैय्युम ने भी उनसे मौसूम किए हैं।)

انہ بلغنی ان لیس فی الارض رمانة تلقح الا بحبّة من حب الجنة فصلّها هذه (ذہبی)

(मुझे यह ख़ुशख़बरी मयस्सर है कि ज़मीन पर ऐसा कोई अनार नहीं होता कि जिसके दानों में जन्नत के अनारों के दानों की पेवंदगी न लगी हो।)

और अहमद ज़हबी रह. ने यह रिवायत सनद के बग़ैर रिवायत की है:

ما اکل رجُلٌ رمانة الارتد قلبه الیه. ورهرب الشطان منه.

(जब भी किसी ने अनार खाया और शैतान इससे भाग गया)

यह रिवायत दिल की तक़वियत और बीमारियों से बचाओ की सिफ़त की निशांदही करती है। हज़रत अली रज़ि. अन्हा बयान फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

کلواالرمان بشحمه فاله دباغ المعدة (ابن القیم)

(अनार खाओ इसके अंदरुनी छिलके समेत कि यह मेअदे को हयाते नौ अता करता है।)

शहम के लफ़्ज़ी मअने तो चर्बी हैं लेकिन लुग़त में यह छिलका भी लिया गया है। इस बाब में हमने हज़रत मौलाना अताउल्लाह हनीफ़ और मुतअद्दिद शीआ उलमा से भी गुफ़्तुगू की है। छिलके से मुराद बाहर का छिलका तो हरगिज़ नहीं

हो सकता क्यूंकि वह इतना कड़वा और बदमज़ह होता है कि उसे आसानी से खाया जाना मुमकिन नहीं हो सकता। इन सब उलमा का ख़याल है कि शहम से मुराद अंदरूनी बारीक झिल्ली है। तिब्बी तौर पर अनार का छिल्का ख़्वाह अंदरूनी हो या बैरूनी, पेट के कीड़े यक़ीनन मार देता है। इस इरशाद नबवी की तअमील करने वाले को सबसे बड़ा फ़ाएदा यह होगा कि वह अनार खाने के साथ–साथ अपने पेट से तुफ़ैली कीड़े भी निकाल दे।

मुहम्मद अहमद ज़हबी ने सनद के बग़ैर हज़रत अली रज़ि. से यह रिवायत मंसूब भी की है: من اكل رمانة نورا الله قلبه.

(जिसने अनार खाया, अल्लाह तआला इसके दिल को रौशन कर देगा।)

दिल को रोशन कर देने से सूफ़िया की इस्तिलाह में तो हयातुल क़ल्ब लिया जा सकता है लेकिन इसके पसे मंज़र को देखने से पता चलता है कि दिल को ताक़त देता है और वह बीमारियां जिनमें तश्ख़ीस पर तो दिल में कुछ नहीं होता लेकिन मरीज़े दिल के फ़ेएल से मुतमइन नहीं होता। वह इसे मुज़महिल क़रार देता है। ग़ालिबन इसी पसे मंज़र की बिना पर ताइफ़ के मशहूर बाग़ हवाया के बारे में मशहूर है कि इसके अनार और चश्मों का पानी दिल को ताक़त देते हैं। मक्का मुअज़्ज़मा में अरसए दराज़ से मुक़ीम एक फ़ाज़िल डाक्टर साहब ने बताया कि उनके दिल के मरीज़ जब ताइफ़ के अनार खाते हैं तो उनमें बशाशत आ जाती है। यह एक ऐसा फ़ेएल है जिसका तिब्ब जदीद की किताबों में किसी दवाई के बारे में मज़कूर नहीं। अलबत्ता तिब्बे क़दीम के माहिरीन ख़मीरह गाओ ज़बान और इस नोअ के दूसरे मुरक्कबात को मुफ़र्रेह क़रार देते आए हैं और हक़ीक़त में इनमें से अक्सर अदविया दिल को फ़रहत देती है।

कुतुबे मुक़द्दिसा:

अनार का तज़किरा मुतअद्दिद मक़ामात पर मिलता है लेकिन वह आयात जिन में इसे कोई अहमियत अता की गई, इनमें:–

......"तुमने क्यूं हम को मिस्र से निकाला और इस बुरी जगह पहुंचाया है? यह तो बोने की और अंजीर और ताकों और अनारों की जगह नहीं है। बल्कि यहां तो पीने के लिए पानी तक मयस्सर नहीं है।" (गिंती 20:5:6)

जब ज़मीन पर किसी जन्नत नज़ीर टुकड़े का ज़िक्र हुआ तो इरशाद होता है:–

......"वह ऐसा मुल्क है जहां गेहूं और जौ और अंगूर और अंजीर के दरख़्त और अनार होते हैं। वह ऐसा मुल्क है जहां रौग़नदार ज़ैतून और शहद भी है।" (इस्तस्ना 8:8)

अपने हैकल और दरबार की तअमीर जदीद के लिए हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जीरोम नामी एक कारीगर को सूर से बुलवाया जिसने इसकी आरास्तगी में कमालात का मज़ाहिरा किया उस ज़माने में अनार की मक़बूलियत

का यह आलम था कि उसने डिज़ाइन में भी अनार बनाए। बाब सलातीन में हेकल की तज़ईन और उनके ताज की शक्ल का ज़िक्र करते हुए फ़रमायाः

......"इस ताज पर गर्दागर्द जालियां और अनार की कलियाँ सब पीतल की बनी हुई थीं और दूसरे सुतूनों के लवाज़िम भी जाली समेत उन्ही की तरह थे।" (सलातीन 25–16)

इनके हैकल की तअमीर में अनार की पसंदीदगी का ज़िक्र दोबारह "तवारीख़" में तफ़सील से आता है। जहां सुतूनों के साथ ख़ूबसूरत जंजीरें बनाई गई जिनमें अनार पिरोए हुए थे।

......"अनार हुस्न का मज़हर था वह कोई इमारत या तख़्लीके ख़ुदावंदी, तेरी कनपटियां तेरे नक़ाब के नीचे अनार के टुकड़ों की मानिंद हैं।" (ग़ज़लुल ग़ज़ालात –3–4)

किसी बाग़ की ख़ूबसूरती इसमें दरख़्तों और उनके फलों से होती है बेहतरीन बाग़ की तारीफ़ में फ़रमायाः

......तेरे बाग़ के पौधे लज़ीज़ और मेवादार अनार हैं। महंदी और सुंबुल भी हैं" (ग़ज़ल अलग़ज़लात 31:3)

"ग़ज़लुलग़ज़लात" के बाब के हुस्नो रअनाई की मिसाल में और चीज़ों के अलावह अनार को ख़ूबसूरती की मिसाल के तौर पर मुतअद्दिद मक़ामात पर बयान किया गया है। जब उदासी का तज़किरा हुआ तो इरशाद हैः

......"अनार और खजूर और सेब के दरख़्त हां! मैदान के तमाम दरख़्त मुर्झा गए। और बनी आदम से ख़ुशी जाती रही।" (यूएल 1:12)

अनार को ज़रई दौलत का अहम रुक्न क़रार देते हुए फ़रमाया।

......"क्या इस वक़्त बीज खत्ते में हैं (अभी लोताक और अंजीर और अनार और ज़ैतून में फल नहीं लगा आज ही से मैं तुम को बरकत दूंगा।" (हज्मी 2:19)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदातः

मीठा अनार मेअदे और उसमें मौजूद अशया के लिए बड़ा मुफ़ीद है। यह हलक़ की सोज़िश सीने की सोज़िश कौर फेफड़ों के अल्तबाब में अक्सीर है। पुरानी खांसी में बड़ा कारामद है। इसका अर्क़ पेट को नर्म करता है। जिस्म को मुफ़ीद इज़ाफ़ी ग़िज़ाइयत और तवानाई मुहैया करता है। जिस्म को बड़ी मुअ़तदिल क़िस्म की हरारत मुहैया करता है। फ़ौरन ही जुज़्व बदन बन जाता है। पेट में से अल्तबाबी माद्दे ख़ारिज करता है। इसकी अजीब तासीर यह है कि अगर इसे रोटी के साथ खाया जाए तो पेट में किसी क़िस्म की ख़राबी पैदा होने नहीं देता।

अनार खाने से क़ब्ज़ पैदा होता है। मगर वह निहायत ही लतीफ़ और हल्का होता है ऐसा नहीं कि तबीअत पर गिरां गुज़रे। मेअदे में सोज़िश हो तो उसे दूर करता है पेशाब आवर है। सुफ़रा को तसकीन देता है। क़ै को रोकता और इस्हाल को बंद करता है। जिगर की हिद्दत को बुझा कर ख़त्म कर देता है।

जिस्म के तमाम आअज़ा को कुव्वत देता है। दिल की पुरानी बीमारियों को आराम देता है और मेअदे के मुंह की दुक्खन दूर करता है।

अनार का पानी इसके छिलके समेत निकाल कर इसे शहद के साथ उबाल कर मरहम की तरह गाढ़ा करके आंखों में सलाई के साथ लगाया जाए तो आंख से सुर्ख़ी को काट देता है। अगर इसी मरहम को मसूढ़ों पर लेप किया जाए तो पाएरिया में मुफ़ीद है। इसी को पीना पेट की इस्लाह करता है। सोज़िश से पैदा होने वाले बुख़ार दूर करता है।

तुर्श अनार के फ़वाइद भी तक़रीबन मीठे की मानिंद हैं मगर इससे कम, इसके दाने गुठली समीत पीस कर शहद मिलाकर ऐसे गंदे ज़ख़्मों पर लगाए गए जो आम इलाज से ठीक न हो रहे हों तो वह ठीक हो जाते हैं। मशहूर है कि जिसने अनार के कम–अज़–कम तीन पूरे फल मौसम में खा लिए वह अगले साल तक आंखों की सोज़िश से मामून रहेगा।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

अतिब्बा क़दीम में इसकी तासीर के बारे में इख़्तिलाफ़ है। बू अली इसे सर्द तर क़रार देते हैं जबकि दूसरे मुअतदिल क़रार देते हैं। यह मुलय्यन शिकम है। दिलो जिगर को कुव्वत देता है। पुरानी खांसी, इस्तिस्क़ा, यर्क़ान और दर्दे सीने में मुफ़ीद है। पेशाब आवर है। अगर सोज़िश की वजह से इस्हाल आते हों तो इनको कम करता है। वरना क़ब्ज़ को दूर करता है। अनार ज़्यादा खाने से ग़िज़ा में फ़साद पैदा होता है। मेअदा ढीला हो जाता है अलबत्ता बही दाना अनार किसी ख़राबी का बाइस नहीं होता। जिनका रंग ज़र्द या मेअदे की ख़राबी की वजह से होंठों पर सफ़ेदी आ गई हो, उनके लिए मुफ़ीद है। मीठा अनार चूंकि रियाह की तहलील में गड़बड़ करता है। इसलिए इसके साथ थोड़ा सा खट्टा भी मिला लेना चाहिए। जिगर की रियाह को ख़ारिज करता है। जिनको शराब नोशी की वजह से बुख़ार आता हो या सुफ़रावी मादे बढ़ गए हों। उनके लिए अक्सीर है, इसहाल में नाफ़ेअ है।

अनार का सवा सेर पानी थोड़ी देर रखें तो कुछ भारी अज्ज़ा नीचे बैठ जाते हैं इनको छान कर निकाल दें। फिर इसमें एक पाओ खांड और एक तोला सौंफ़ पीस कर मिला कर बोतल में डाल कर धूप में रखें। यह बोतल लबालब भरी हुई न हो।, एक चौथाई ख़ाली हो। एक हफ़ता यूंही पड़ी रहे और हिलाते रहें। इस सय्याल के तीन से नौ तोले रोज़ाना पेट की सोज़िश, भूख की कमी और ज़अफ़े बाह में मुफ़ीद है। (अनार का मीठा पानी एक हफ्ता पड़ा रहने से इसमें ख़मीर उठेगा और उस बोतल के मौजूदात कीमयावी तौर पर अल्कुहल बन जाएंगे जो हमारे अक़ीदे में नाजाइज़ और इस्तेअमाल के लिए ना मुनासिब है।) इन नुस्खो के इन्ही अज्ज़ा को अगर थोड़ी देर पका कर क़वाम बना लिया जाए तो यह शर्बत भी इसी तरह मुफ़ीद होगा और इसमें ख़मीर उठाने की मुसीबत बेकार है। यही नुस्ख़ा सुफ़रावी दस्तूरी में मुफ़ीद है।

वैद कहते हैं कि अनार का पानी सुफ़रा को ज़ाइल करता, दिल और जिगर को ताक़त देता। भूख बढ़ाता, मुक़व्वी, तस्कीन देने वाला और मुफ़र्रह है। पेशाब

आवर होने के अलावा बलगम को रफ़अ करता है।

जिसकी जिल्द से बार–बार ख़ून निकल आता हो या बवासीर से ख़ून बहता हो, अनार के दाने फ़ाएदा देते हैं। अनार के पत्तों को पानी में डालने से नक्सीर बंद हो जाती है। इसके मुज़िर असरात को दूर करने के लिए मिस्तगी रूमी या अदरक का मुरब्बा है।

अनार ख़्वाह मीठा हो या तुर्श, इसका पानी तांबे के बरतन में डाल कर इतना पकाएं कि गाढ़ा हो जाए। इस मरहम को आंखों में लगाने से आंख की ख़ारिश, जलन दूर होती है और ज़अफ़े बसारत में मुफ़ीद है। इस मरहम को मसूढ़ों पर मलने से इनकी सोज़िश रफ़अ हो जाती है।

अनार के दरख़्त का छिल्का पानी में उबाल कर इसमें चावल का पानी या अरबी मिलाकर हुक़्ता करना बवासीर में नाफ़ेअ और पुराने दस्तों को बंद करता है।

कीम्याई तज्ज़िया:

भारत और पाकिस्तान के बाज़ारों में मिलने वाले अनारों की बारह अक़साम हैं उनमें से हर एक के तर्कीबी अनासिर दूसरों से जुदा हैं। ज़रई कालिज पूना में बाज़ार से मिलने वाला और एक बेहतरीन अनार मंगाया गया और इससे तक़ाबुली जाएज़े के लिए मस्क़ती अनार मंगवाया गया और दोनों का कीम्यावी तज्ज़िया ज़ाहिर हुआ।

	बाज़ार से मिलने वाला अनार	मस्क़ती अनार
खाया न जाने वाला हिस्स	40.49	26.30 फ़ीसदी
छिलका	60.32	71.16
दाने	80.16	55.13
जूस	60.50	74.69

अनार के जूस का तज्ज़िया:

गला देने वाली मिठास REDUCING SUGAR	65.14	32.11
न गलाने वाली मिठास NONREDUFING	00.0	0.00
कुल मिठास SUGAR	56.14	32.11

आम अनारों में नाक़बिलें ख़ुराक हिस्सा 28 से 49 फ़ीसदी के दर्मियान और जूस 57 फ़ीसदी से 71 फ़ीसदी के दर्मियान पाया गया।

अनार में कीमयावी अज्ज़ा की मौजूदगी इस तरह सै है। एक सौ ग्राम अनार में तनासुब इस तरह है।

Protiens	Fats	Carbohy drates	Calories	Sodium	Potassium	Calcium	Magnesium	Fats	Copper	Phosphorus	Sulphur	Chlorides
0.2	मामूली	11.6	45	1.1	2.4	2.9	3.1	0.15	0.07	7.5	4.2	52.5

इन तजज़ियों से दो अहम बातें सामने आती हैं। पहली यह कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पसंदीदा गिज़ाओं और दवाओं के एक ख़ुसूसी उसूल के मुताबिक़ इसमें सोडियम की मिक़दार बहुत कम और पोटिशियम ज़्यादा है। जिसका अहम फ़ाएदा यह है कि दिल और गुर्दों की किसी भी बीमारी में अनार बे खटके दिया जा सकता है। दूसरी अहम बात यह है कि इसमें मिठास की ऐसी कोई क़िस्म मौजूद नहीं जो ज़ियाबेतस के मरीज़ों के लिए मुज़िर हो। इसलिए शकर के मरीज़ खुले दिल से अनार जूस पी सकते हैं इसमें चिकनाई न होने के बराबर है। इसलिए अनार खाने से ख़ून की नालियों को नुक़सान न होगा, कोलेस्ट्रोल में इज़ाफ़ा न होगा। और वज़न कम करने वालों के लिए मुफ़ीद है।

खाने और इलाज में अनार के दरख़्त की छाल, फूल, जड़ों की छाल, फल, फल के छिलके हैं। TANNIC ACID 22.25 फ़ीसदी होता है। जड़ की छाल में इसी तिर्शे की एक बेहतर क़िस्म PUNICO TANNIC ACID 20.25 फ़ीसदी पाया जाता है। इसके अलावा इसमें मिठास की क़िस्में, गोंद लहमियात PECTIN और MANNITE पाए जाते हैं। इन अज्ज़ा के अलावा इसमें अल्कलाईड PALLETIERINE के तीन मुख़्तलिफ़ अक़साम।

PSEUDO PELLETIERINE METI YL PELLETIERINE ISO PELLETIERINE मिलती है। इनके अलावा विटामिन पाए जाते हैं।

जदीद तहक़ीक़ात:

अनार के दाने छिलका, फूल और इसका अर्क़ मुक़ामी तौर पर क़ाबिज़ हैं। और पेट के कीड़े मारते हैं। अनार में मौजूद PEELLETIERINE पेट के कीड़ों की जुमला अक़साम के लिए एक निहायत ही मुअस्सर दवाई है। जूस में यह अल्कलाईड कम मिक़दार में होती है। ग़ालिबन इसीलिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसे छिलके समेत खाया जाए क्यूंकि इसी वरम में कर्मकुश अंसर ज़्यादा मिक़दार में होता है। इसका छिलका, दरख़्त की छाल, पिसी हुई जड़ में से हर चीज़ कर्मकुश हैं, कीम्या दानों ने अनार के असरात के ख़ुलासा में इसे मुफ़र्रह, ठंडक पहुंचाने वाला, हाज़िम, भूख बढ़ाने वाला क़रार दिया है। जिसकी तस्दीक़ हकूमत बम्बई के ज़रई तहक़ीक़ात के इदारे से भी मयस्सर है। अनार और इसका शर्बत अर्क़ बहतरीन मशरूब, मुक़व्वी ख़ुराक और मुफ़ीद दवाई है। पुराने हकीम इसका शर्बत रुब्ब अनारशीरीं और खट्टे अनारों से रुब्ब अनार बनाते हैं जिसे इस्हाल के बाद की कमज़ोरी, यरक़ान और जिस्म में नाताक़ती के लिए शोहरत हासिल है। अतिब्बा ने इसे हर क़िस्म के बुख़ार के बअद की कमज़ोरी और ख़ासतौर पर मलेरिया के बाद मुफ़ीद पाया है।

पेट के कीड़े निकालने के लिए कर्नल चोपड़ा ने एक मुफ़ीद नुस्ख़ा तज्वीज़ किया था। जिसकी उफ़ादियत का बड़ा चर्चा रहा है। अनार के दरख़्त की जड़ का ताज़ा छिल्का दो औंस ले लें। अगर यह मयस्सर न हो तो दरख़्त की छाल ले कर इसे तोड़ कर छोटे–छोटे टुकड़े कर लें। इसे दो लीटर पानी में इतना पकाएं कि पानी आधा रह जाए, फिर छान लें। इसमें जोशांदा के दो औंस जो

कि तक़रीबन बड़े घूंट के बराबर होते हैं, सुबह नहारमुंह दिए जाएं। हर आध घंटे बाद ऐसी चार ख़ुराकें दें। इसके बअद थोड़ा सा कस्टर ऑइल पिला दें। ताकि जुलाब के ज़रिए कीड़े निकल जाएं। इस नुसख़े का सबसे बड़ा कमाल या उफ़ादियत है कि इस लम्बे कीड़े को निकाल देता है। जिसकी ख़ाबासत का यह आलम है कि अगर इसका कोई हिस्सा कट कर बाहर भी निकल जाए तो वह फिर नया जिस्म बना लेता है। इस कीड़े से निजात की एक ही सूरत है कि इसका सर निकल जाए और यह काम इतना मुश्किल है कि आम अदविया से होना मुमकिन नहीं, बल्कि बाज़ारी कीड़े निकालने वाली अक्सरो बेशतर अदविया इस बारे में बेकार हैं। कुछ अतिब्बा ने अनार का जोशांदा तैयार करते वक़्त इसमें चंद दाने लौंग डालने की सिफ़ारिश भी की है। हमने अपने मुशाहिदात में इस जोशांदे में दार चीनी मिलाई और देते वक़्त थोड़ा सा शहद मिला लिया। जोशांदा बदमज़ा न रहा और इससे आंतों में ख़ौज़िश भी न हुई।

बच्चों के सूखा और आंतों की दिक़ में भी भारती माहिरीन इसके जोशांदे को मुफ़ीद क़रार देते हैं। अनार के छिलके में पाए जाने वाले अल्कलाइड अलाहिदा करके ख़ालिस सूरत में पेट से कीड़े निकालने के लिए माज़ी में मुस्तेमिल रहे हैं। मगर कीम्यावी ज़राए से हासिल होने वाली जदीद अदविया के बाद लोगों में इससे दिलचस्पी कम हो गई। हालांकि यह जदीद अदविया से ज़्यादा मुअस्सिर और महफ़ूज़ है।

बंगाल के अतिब्बा अनार के जूस में लोंग, अदरक और माजू मिलाकर बवासीर के लिए देते हैं मलेरिया और पुराने बुख़ारों में जब मरीज़ को कमज़ोरी के साथ हर वक़्त प्यास लगी रहती है तो अनार का जूस पिलाना आसान तरीन इलाज है। पुरानी खांसी में गुले अनार को ख़ुश्क करके इसके चार ग्रेन देना मुफ़ीद है। अध खिले फूल सुखा कर इनकी नसवार लेने से नक्सीर ठीक हो जाती है। पुरानी पेचिश और इस्हाल के लिए एक मुक़व्वी नुस्ख़े में अनार की अनखिली कलियां सुखा कर इनमें इलाइची सब्ज़ और पोस्त मिला कर इनमें खांड और पानी मिलाकर गाढ़ा शर्बत बनाया जाता है। गुले अनार के साथ आम घास को पका कर जोशांदा बनाते हैं। जिसमें थोड़ी सी फिटकरी मिलाकर गले की ख़राबी के लिए ग़रारे करते हैं। यही जोशांदा ख़्वातीन की अंदामे निहानी की सोज़िशों और ख़ास तौर पर रहम के ज़ख़्म के लिए अक्सीर बताया जाता है।

भारती माहिरीन ने अनारदाने को खट्टे अनार से बयान किया है जो कि दुरुस्त नहीं। पाकिस्तान के ज़िला हज़ारा में अनार की एक छोटी क़िस्म "दड़न्ना" नाम से बरसात के मौसम में मिलती है। यह अनार इतना खट्टा होता है कि इसे खाने वाले आमतौर पर देखे नहीं गए। इसे सुखाकर अनारदानह बनाया जाता है। मरहटा तबीब इसे बिच्छू काटे के लिए मुफ़ीद बताते हैं। अनार के हरे पत्ते अर्क़े गुलाब में घोट कर आशूबे चश्म में आंखों पर लेप करना मुफ़ीद है।

अनार का छिल्का सुखा कर पीस कर इसके आधे औंस में एक औंस चाक का सफ़ूफ़ और आधा छोटा चम्मच मुरमक्की की टिंक्चर मिलाकर इसे अच्छी तरह

खरल करके मंजन की सूरत में दांतों पर मलना मसूढ़ों की मुतअद्दिद बीमारियों और हिलते दांतों के लिए मुफ़ीद है।

तिब्बे यूनानी में शर्बत अनार, जवारिश अनारीन और जवारिश पोदीना के नाम से इसके मशहूर मुरक्कबात सदियों से मुस्तेअमिल हैं।

होम्योपैथिक तरीक़ह इलाज:

अनार को इस इल्म में मक़बूलियत मयस्सर नहीं रही। अलबत्ता अनार का छिल्का पेचिश और इस्हाल और मसूढ़ों की बीमारियों में तज्वीज़ किया जाता है।।

आबे ज़मज़म......ज़म ज़म

ZAMZAM

मक्का मुअज़्ज़मा की मस्जिदुल हराम में कअबा शरीफ़ से 15 मीटर के फ़ासले पर जुनूब मश्रिक़ में हिजरे असवद की सीध में एक कुआं वाक़े है। जिसके पानी को आबे ज़मज़म कहते हैं। यह कुआं कअबा शरीफ़ से भी क़दीम है और इसकी गहराई के बारे में अब तक क़यास था कि वह 140 फुट है लेकिन हालिया पेमाइश पर यह 207 फुट गहरा पाया गया। मुमकिन है पानी की मुसलसल निकासी की वजह से यह नीचा हो गया है। मुसलमानों के नज़्दीक इसका पानी मुतबर्रक है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसको खड़े हो कर पिया और इस ग़र्ज़ के लिए एक ख़ुसूसी दुआ:

"اللّٰھُمَّ انّی اسالک علماً افعاً ورزقاً واساً وشفاء من کلّ داء"

(ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूं एक ऐसे इल्म का जो फ़ाएदा देने वाला हो और ऐसे रिज़्क़ का जो मुझे खुले दिल से अता किया जाए और मुझे तमाम बीमारियों से शिफ़ा मर्हमत फ़रमा।)

वह ख़ुद इसे बड़े एहतिराम के साथ पीते रहे। और जब हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तश्रीफ़ ले गए तो सुलह हुदैबिया के मौक़े पर मंगवाकर पिया। और वापसी में साथ ले कर आए। इनके बाद हज़रत आएइशा सिद्दीक़ा और दूसरे सहाबा किराम रज़ि. भी इससे मज़ीद इस्तिफ़ादा के लिए सफ़र हज के बाद वापसी में हमराह लाया करते थे और यह ख़ुश रस्म इसी इनहमाक से आज भी जारी है।

तारीख़ी पसे मंज़र:

ख़ुदा तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि वह अपनी बीवी हाजरा अलैहिस्सलाम को उनके नौमूलूद हज़रत इस्माइल अलैहिस्सलाम के हमराह मक्का की बे-आबो ग्याह वादी में छोड़ आएं। जब यह क़ाफ़ला मंज़िले मक़सूद पर पहुंचा तो इस साबिरो शाकिर ख़ातून ने सिर्फ़ एक बात अपने मियां से पूछी। "क्या हमारा यहां आना और रहना अल्लाह के हुक्म की तअमील में है?" हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अस्बात में जवाब दिया, तो वह मुतमइन हो गईं कि अब इनके लिए परेशानी की कोई बात नहीं क्यूंकि जो उनको वहां

लाया है वही उनकी ख़बरगीरी भी करेगा।

ख़ुराक और पानी का वह ज़ख़ीरा जो उनके हमराह था थोड़ी देर में ख़त्म हो गया। बच्चा भूख से बिलकने लगा और वह परेशानी के आलम में सफ़ा और मरवा की पहाड़ियों के दर्मियान दौड़ कर पानी की तलाश करती रहीं।

तौरेत मुक़द्दस में आया:

......ख़ुदा के फ़रिश्ते ने आसामन से हाजरा अलैहिस्सलाम को पुकारा और कहा ए हाजरा अलैहि! तुझको क्या हुआ? मत डर क्यूंकि ख़ुदा ने इस जगह से जहां लड़का पड़ा है उसकी आवाज़ सुन ली है, उठ और लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से संभाल क्यूंकि मैं उसको एक बड़ी क़ौम बनाऊंगा। फिर ख़ुदा ने उसकी आंखें खोलीं और उसने पानी का एक कुआं देखा और जाकर मुश्क को पानी से भर लिया और लड़के को पिलाया...... (पैदाइश 21:17 ता 20)

तौरेत मुक़द्दस की इस रिवायत के मुताबिक़ बच्चे के रोने के बाद ख़ुदा ने वहां पर कुंआं पैदा किया जिसके पानी से वह ख़ानदान सेराब हुआ। इस कुएं का वजूद एक मोजिज़ा था। इसलिए इसका पानी उनके अक़ीदे में भी मुतबर्रक होना चाहिए।

मक्का मुअज़्ज़मा से नूर के फ़ैलाओ से पहले जो लोग इस मक़ाम की ज़ियारत और कुएं से तबर्रुक लेने आया करते थे। एक क़दीम ईरानी शाइर ने ज़मज़म के कुएं के इर्द-गिर्द चक्कर लगाकर दुआ मांगने का ज़िक्र अपनी एक नज़्म में किया है।

मक्का की तारीख़े क़दीम और इस्लाम ने इस कुएं के बारे में जो कुछ बताया है इसमें तौरेत के आख़ारी हिस्से से इख़्तिलाफ़ है। सही बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से इस वाक़िए की पूरी तफ़सील क़लम्बंद की है जिसके मुताबिक़ हाजरा रज़ि. पेरशानी के आलम में कभी सफ़ा की पहाड़ी पर जाकर देखतीं और कभी मरवह से कि शायद कहीं पानी या आने वाला कोई शख़्स नज़र आ जाए जिससे वह मदद ले सकें। घबराहट के इस आलम में उन्होंने एक आवाज़ सुनी। उनहोंने फ़ौरन उसे मुख़ातिब करके नेकी के नाम पर मदद की दरख़्वास्त की और हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ज़ाहिर हुए और उन्होंने अपनी ऐड़ी ज़मीन पर मारी तो ज़मीन से पानी उबलने लगा। हज़रत हाजरा अलैहिस्सलाम ने घबराहट में पत्थर जमा करके इसके इर्द-गिर्द एक हाला सा बना लिया ताकि पानी ज़ाया न हो और कुछ दिनों के लिए ज़ख़ीरा हो जाए। अज़्तरारी कैफ़ियत में तहफ़्फ़ुज़ ज़ात की इस कोशिश के बारे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाजरा अलैहिस्सलाम अगर इसको महदूद न करतीं तो यह चश्मा एक दरिया बन जाता जो पूरे अरब को सैराब करता।

एक बे-आबो-ग्याह सोहरा में महज़ हुक्मे ख़ुदावंदी की तअमील में दुख झेलने वाली हाजरा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा ने रहती दुनिया तक इज़्ज़त और शोहरत अता कर दी। वह जिस हिस्से पर दौड़ी थीं, आज हर मुसलमान हज या उमरा के लिए उनकी तक़लीद करता हुआ उनकी तकलीफ़ और सब्र पर अमली

दाद देता है। उनके बेटे के लिए ख़ुदा ने जो कुआं पैदा किया वह हर मुसलमान के लिए बरकत–एहतराम और शिफ़ा का मज़हर है। उनके बेटे ने जो घर अपने बाप के साथ मिल कर बनाया। रहती दुनिया तक हर मुसलमान उसकी तरफ़ मुंह करके इबादत करेगा और उस घर को कुरआन ने दुनिया में खुदा का पहला घर क़रार दिया।

ان اوّل بیت وضع للنّاس للّذی ببکّۃ مبارکاوھدًی للعٰلمین.

(آل عمران: ۹۶)

(यह दुनिया में एक पहला ऐसा घर मक्का में बनाया गया है जो लोगों के लिए बरकत हिदायत का मंबअ होगा और यह फ़ैज सब जहानों के लिए होगा।)

जिसका तर्जुमा अल्लामा इक़बाल रह॰ ने यूं किया है।

दुनिया के बुतकदों में पहला वह घर ख़ुदा का

हज़रत हाजरा अलैहिस्सलाम के बेटे की नस्ल से एक नबी पैदा हुआ जिसने पूरी दुनिया में रुशदो हिदायत का नूर फैलाया।

ज़मज़म का कुंआं कुछ अरसह तो जारी रहा फिर सोहराई बंगूलों की ज़द में आकर गायब हो गया। एक रिवायत के मुताबिक़ बनू जुरहम ने इसमें रेत डाल कर बंद कर दिया कहा जाता है कि मक्का के रईस अब्दुल मुत्तलिब को ख़्वाब में इस कुएं की निशांदही की गई और हिदायत की गई कि वह इसे खुदवाकर साफ़ करें और ख़ल्क़े ख़ुदा की मुनफ़अ़त के लिए जारी करें। उन्होंने इसे खुदवाया। साफ़ करवाया और इर्दगिर्द पत्थरों से बुलंद मुंडेर तअमीर करा दी। सफ़ाई के दौरान ज़मज़म के कुएं से सोने के दोहरन, कुछ तलवारें और ज़ररह बकतर बरामद हुए। मुअर्रिख़ीन का ख़याल है कि यह चीज़ें ईरानी ज़ायर फैंक गए होंगे। इसके बरअक्स आसारो क़राइन से ऐसा मअलूम होता है कि कोई शिकस्तख़ुर्दा लशकर इधर आ निकला और जब वह तआ़कुब करने वालों के नरग़े में आए तो उन्होंने अपनी मताअ को दुशमन के हाथ पड़ने से बचाने के लिए कुएं में फैंक दिया।

अब्दुल मुत्तलिब ने एक तलाई हरन तोड़ कर इसके सोने से कअबा शरीफ़ के दरवाज़ों पर पतरियां चढ़ा दीं दूसरा हरन नुमाइश के लिए काबा शरीफ़ में रखा रहा हज के दिनों में और इसके बाद हज्जाज और ज़ाइरीन को पानी पिलाना हर दौर में इज़्ज़त का बाइस समझा जाता रहा है। कुरैश ने पानी पिलाने की ख़िदमत के लिए "अस्सक़ाया" का शोअबा क़ायम किया था जिसकी यादगार लफ़्ज़ "सक़ा" उर्दू में भी पानी लाने और पिलाने वालों के लिए मौजूद है।

सन 909 में ज़मज़म के कुएं का पानी तूफ़ान की सूरत में उबलने लगा और इतना पानी निकला कि आस–पास की आबादियां डूब गईं। कहा जाता है कि इस हादसा में सैंकड़ों हाजी डूब गए।

इस्लाम ने जब इस कुएं के पानी को अज़मत अता की तो लोगों ने इसकी तअमीर और बेहतरी पर तवज्जह दी। तुर्क हुक्मरानों ने इसके इर्द–गिर्द ग़ुलाम गर्दश बनाकर इसके ऊपर गुंबद नुमा छत डाल दी। ऑल सऊद की आमद तक इसके इर्द–गिर्द पांच फुट ऊंची संगे–मरमर की मुंडेर थी। जिसके ऊपर छत

तक लोहे की मज़बूत जंगलह नुमा जाली थी। इस जाली में छोटे-छोट दरवाज़े थे। जिनमें पानी निकालने के लिए चर्ख़ियां नसब थीं. इन चर्ख़ियों पर पानी खींचने वाले दिन रात कम करते थे। डोल निकालने के बाद यह सक़्क़ों को मिलता था। वह नोकदार पैंदे वाली तिकोनी सुराहियों में भर कर हरम शरीफ़ में चमकदार कटोरों में लोगों को ज़मज़म पिलाते थे। यही सुराहियां घरों में जाती थीं और सैकड़ों अफ़राद का मआश इस कुंए से वाबस्ता हो गया।

क़यामे मक्का के दौरान हज्जाज अपने लिए कफ़न का कपड़ा ख़रीद कर इस मुतबर्रक पानी में भिगो कर ख़ुश्क करके अपने वतन वापस ले जाते है। ज़मज़म को पीने के लिए साथ ले जाने के दो तरीक़े थे। टीन साज ख़ाली कनस्तर के अंदर मोम पिघलाकर फेर देते थे। फिर इस कनसतर में आबे ज़मज़म भर कर टांका लगा दिया जाता और इस तरह यह पानी महफ़ूज़ किसी भी मुल्क तक चला जाता था। जो कनस्तरों का वज़न नहीं ले जा सकते थे इनके लिए टीन की गोल कुप्पियों सी बनी होती थीं जिनके एक सिरे पर मुह बना होता था इसे "ज़मज़मी" कहा जाता है। इसमें तक़रीबन एक कप पानी आ सकता है। अब प्लास्टिक ने टीन की जगह ले ली है।

सऊदी हकूमत ने हर्म कअबा की तौसीअ में ज़मज़म के कुएं को जदीद शक्ल दे कर प्याऊ को सहन के दर्मियान से हटा दिया है। ज़मानए क़दीम से मस्जिद में चार इमामों के नाम के मुसल्ला और कई साएबान बने हुए थे। उन्होंने यह तमाम इमारतें गिराकर मस्जिद के सहन को नमाज़ियों के लिए कुशादह कर दिया है। इसी अमल में ज़मज़म के कुएं पर छत डाल कर इसके ऊपर एक ताक़तवर पम्पिंग इंजन नस्ब कर दिया गया है जो पानी को एक बहुत बड़ी सबील में डाल देता है।

हज पर आने वाले लाखों अफ़राद के लिए यह बड़ी सबील कारआमद साबित हुई है। पानी पीने, भरने, ले जाने और कफ़न धोने और सुखाने का सिलसिला मस्जिद से बाहर मुंतक़िल होने से नमाज़ के लिए ज़्यादा जगह मुहैया हो गई है। अब लोग ज़मज़म को टीन की कुप्पियों में ले जाने की बजाए प्लास्टिक के डब्बों में ले जाते हैं। क्यूंकि हवाई सफ़र में वज़न की अहमियत है। (प्लास्टिक, टीन से हल्का है।)

आबे ज़मज़म की मक़बूलियत और तक़द्दुस से मुतास्सिर हो कर दीगर कई मज़ाहिब ने अपने मानने वालों के लिए मुक़द्दस पानी तलाश कर लिए। इनमें से अक्सर पानी बीमारियों का बाइस हुए। क्यूंकि आलूदा पानी पीने से पेट की मुतअद्दिद बीमारियां पैदा हो सकती हैं। कमाल की बात यह है कि पूरी तारीख़ इस्लाम में आज तक कोई शख़्स ज़मज़म का पानी पीकर बीमार नहीं हुआ और इसके बरअक्स ऐसा कोई पानी तारीख़ के किसी दौर में और किसी मुल्क में मशहूर नहीं हुआ जिसकी वजह से लोग बीमार न हुए हों हाल ही में कुछ चश्मों का पानी आलमी शोहरत हासिल कर गया है। लोग इनके मअदनी पानी तवानाई के ख़याल से पीते हैं। ऐसा पानी पी कर तवानाई हासिल करने वाला अभी तक

कोई देखा नहीं गया। लाहौर में इस्लामी सरबराही कान्फ्रेंस के शुरका के लिए 1974 में मादनयाती पानी की बोतलें फ्रांस से दरआमद की गईं। चूंकि इस कान्फ्रेंस में सहत आम्मा का मसला हमारे सुपुर्द था। महज़ इश्तियाक़ से एक बोतल खोल कर दो घूंट पानी पिया। ऐसा बदज़ाइक़ा के निगलने की बजाए थूकना पड़ा।

इरशादाते नबवी सल्ल०

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० बयान फ़रमाते हैं:

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم امر رجلاً من قريش فى المدة ان ياتيه بماء زمزم الى الحديبية. فذهب به منه الى المدينة...... (رزين)

(रसूलल्लाहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुलह हुदैबिया के मुज़ाकरात के दौरान) कुरैश के एक शख़्स को इस बात पर हुदैबिया में मअमूर किया कि वह ज़मज़म लाए वह लाया और आप सल्ल० उसे वापसी में मदीना भी हमराह ले कर गए।)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़तेह मक्का के बअद आलिम और ख़तीब सुहैल बिन उमर रज़ि० के नाम फ़ोरी तअमील के लिए एक मुरासला सादिर फ़रमाया:

ان جاء كتابى فلا تصبحن انهار فلاتمسين حتى تبحو الىّ من ماء زمزم. (رسالات نبويہ)

(मेरा ख़त तुमको जिस वक़्त भी मिले, अगर शाम को मिले तो सुबह तक इंतिज़ार न करना और अगर सुबह को मिले तो शाम होने से पहले मुझे ज़मज़म का पानी रवाना कर देना)

ऐसा मअलूम होता है कि इस बयान में कहीं अल्फ़ाज़ की गलती हो गई है। वरना इनहसार की ज़रूरत न थी।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद उम्मुल मुअमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० के दस्तूर के बारे में उन्ही से मज़्कूर है।

انها كانت تحمل ماء زمزم وتخبر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يحمله. (ترمذی)

(वह ज़मज़म अपने हमराह ले जाया करती थीं और बताती थीं कि रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इसी तरह ले जाया करते थे)

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि० बयान करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ان اية مابيننا وبين المنافقين لايتضلعون من ماء زمزم. (ابن ماجہ)

(हमारे और मुनाफ़िक़ों के दर्मियान फ़र्क़ यह है कि वह आबे-ज़मज़म को ख़ूब सैर हो कर नहीं पीते)

ज़मज़म के पानी को नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमेशा बड़ा

एहतिराम और अहमियत दी। एक मर्तबा कुएं के पास खड़े हो कर पानी निकालने वालों की हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई। फ़तावा अलमगीरी और तबक़ात इबने सअद के मुताबिक़ उन्होंने मुतअद्दिद मर्तबा कुएं से ख़ुद डोल निकाल कर इसे खड़ा हो कर पिया। हालांकि आम हालात में वह खड़े हो कर पीने या खाने को निहायत बुरा जानते थे। इसी बिना पर इमाम शाफ़ई तो इस हद तक जाते हैं कि जो शख़्स शारए आम पर खड़ा हो कर खाए या पिए उस की शहादत किसी शरई अदालत में क़बूल न की जाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ماء زمزم لما شرب له• ان شربته تستشفی بد. شفاک .. وان شربته يشبعک، اشبعک الله به. وان شربته لقطع ظمأک قطعه الله وهي هزمة جبريل وسقيا الله الاسماعيل. (دارقطنی)

(ज़मज़म का पानी जिस ग़र्ज़ से भी पिया जाए इसके लिए मुफ़ीद है। अगर शिफ़ा की ग़र्ज़ से पिया जाए तो अल्लाह तुम्हें शिफ़ा देगा। अगर प्यास के लिए पियोगे तो अल्लाह इससे तसल्ली देगा। और अगर सैराब होने के लिए पियोगे तो अल्लाह तुम्हें सैराब करेगा। यह हज़रत जिबरईल का कुआं है और अल्लाह तआला की तरफ़ हज़रत इस्माईल अलैहिस्सला का प्याऊ है।)

यही रिवायत मुस्तदरिक हाकिम में उन्हीं से इज़ाफ़े के साथ मिलती है।

وان شربته مسعيذ اعاذک الله.

(हाकिम के इज़ाफ़े में आया, और अगर तुम अल्लाह से किसी सिलसिले में पनाह लेने के लिए पियोगे तो अल्लाह तुम्हें पनाह देगा।)

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि. रिवायत फ़रमाते है।

سقيت النبی صلی الله عليه وسلم من ماء زمزم. نشرب وهو قائمٌ.

(بخاری، مسلم، ابن ماجہ، النسائی)

(हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. से भी ज़मज़म के फ़वाइद का ख़ुलासा इन अल्फ़ाज़ में मुरव्वी है)

ماء زمزم لما شرب لهٗ (ابن ماجه)

(ज़मज़म का पानी जिस ग़र्ज़ से भी पिया जाए, मुफ़ीद है।)

एक मौक़े पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबी ज़रग़फ़ारी रज़ि. की कैफ़ियत के बारे में फ़रमाया:

قد اقام بين الكعبة و استارها اربعين مابين يوم و ليلة. وليس له طعام وغيره. فقال النبی صلی الله عليه وسلم انها طعام طعم (بخاری ومسلم)

(बुख़ारी ने इन हदीस में इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया है।)

وشفاء سقم.

(हजरत अबू ज़र रज़ि. ने कअबा शरीफ़ और इसके पर्दों के

दर्मियान चालीस दिन–रात गुज़ारे और इनके पास खाने की कोई चीज़ न थी। वह इस दौरान जमज़म पीते रहे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह एक मुकम्मल ख़ुराक थी।) बुख़ारी ने इसमें इज़ाफ़ा किया है कि (ज़मज़म सिर्फ़ ख़ुराक ही नहीं बल्कि बीमारियों से शिफ़ा भी है।)

सक़म से मुराद सिर्फ़ बीमारी नहीं बल्कि तबीअत का मुज़महिल होना भी है जैसे कि हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने आपको सक़ीम कहा था जिससे मुराद मूड भी हो सकता है और यह भी कि तबीअत अच्छी नहीं।

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि० बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

رحم الله امّ اسماعيل لو تركت زمزم. اوقال لولم تغرف من الماء لكانت زمزم عينا معيناً.

(अल्लाह तआला इस्माईल अलैहिस्सलाम की वालदा पर रहम फ़रमाए कि अगर वह ज़मज़म के पानी को वैसे छोड़ देतीं या इसके इर्द–गिर्द दीवार या मुंडेर न बनातीं तो ज़मज़म एक ज़बरदस्त नहर की सूरत इख़्तियार कर लेता।)

इनकी मुराद यह है कि ज़मज़म का कुआं न होता बल्कि यह एक दरिया होता जो पूरे अरब को सैराब कर देता।

मस्जिदुल हराम की इमारत की तारीख़ में हज़रत अब्दुलाह बिन अब्बास रज़ि० से मन्कूल है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

خير الماء علىٰ وجه الارض ماء زمزم (ابن حبان-طبرانی)

(इस कुर्रए अर्ज़ पर सबसे बेहतरीन, मुफ़ीद और उम्दा पानी ज़मज़म का है।)

यह एक एसा इर्शाद ग्रामी है जिससे बेहतर कोई बात नहीं की जा सकती बल्कि "ख़ैर" से मतलब मुबारक और भलाई का ज़रिया भी हो सकता है और जो कुछ इस पानी में या जितना कुछ इसमें है वह किसी और पानी में नहीं।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के बारे में बयान करते हैं कि जब उन्होंने हज किया और आबे ज़मज़म पर आए तो यूं दुआ की:

"ऐ परवरदिगार! इब्नुल मवाली को मुहम्मद बिन अलमुकंदर ने बताया और उन्होंने जाबिर रज़ि० बिन अब्दुल्लाह से सुना कि तुम्हारे पैग़म्बर सल्ल० ने कहा है कि ज़मज़म का पानी जिस ग़र्ज़ से भी पिया जाए गा, मुफ़ीद होगा। मैं इसे उन असहाब रज़ि० के कहने पर पी कर तेरी रहमत का तलबगार हूं।"

इब्नुल मवाली इल्मुलहदीस में अहम मक़ाम रखते हैं और उनकी रिवायत हमेशा मोअतबर एमझी जाती है और इसमें कोई शक नहीं कि ज़मज़म का पानी बाइसे शिफ़ा है। इब्नुलक़ैय्युम रह० कहते हैं कि मैंने ज़ाती तौर पर मुशाहिदा

किया है कि ज़मज़म पीने से पेट में पानी का मरीज़ शिफ़ायाब हुआ। मेरा चश्मदीद वाक़िआ है कि इसके अलावा बड़ी अज़ियत नाक बीमारियों के मरीज़ अल्लाह के फ़ज़ल से ज़मज़म पी कर शिफ़ायाब हुए। हमने एक शख़्स को देखा, जो सारा दिन चलता फिरता और तवाफ़ करता था। आबे ज़मज़म के अलावा न कुछ खाता था न पीता था। उसे न भूख तंग करती थी और न प्यास और वह इसी तरह आधा महीना या कुछ दिन ज़मज़म पीकर शिफ़ायाब हुआ।

हज़रत अबू ज़रग़फ़फ़ारी रज़ि॰ का वाक़िआ बुख़ारी और मुस्लिम में मौजूद है कि वह चालीस दिन खाए पिए बग़ैर कअबा शरीफ़ से लगे सिर्फ़ ज़मज़म के पानी पर गुज़ारा करते रहे जिस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह पानी खाना भी है और पीना भी और सबसे बढ़ कर यह तबीअत को बहाल करता है।

शेख़ सुदूक़ ने "अललुअशराए" में हज़रत अबी अब्दुल्लाह अलैहिस्सलाम से बयान किया कि उनके सामने जब ज़मज़म के पानी का ज़िक्र आया तो उन्होंने इसके माख़ाज़ की अजीब तशरीह फ़रमाई।

تجرى اليها عين من تحت الحجر. فاذا غلب ماء العين عذب ماء زمزم.

(पत्थरों के नीचे, सतह ज़मीन के नीचे एक नहर चलती है। जब इस नहर के पानी ने जोश किया जो ज़मज़म का कुआं वजूद में आ गया)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़मज़म के पानी से नहर बनने के जिस इम्कान का ज़िक्र फ़रमाया ग़ालिबन यह उसी सिम्त इशारह है कि नहर मौजूद है। अगर हज़रत हाजरा अलैहिस्सलाम इसे न रोकतीं।

कीमियावी तजज़िया:

आबे ज़मज़म के शिफ़ाई कमालात और इसके अजीबो ग़रीब असरात सारी दुनिया के लिए हैरत की बात रहे हैं और लोग हमेशा यह जानने की कोशिश करते रहे हैं कि इसमें कौन से ऐसे अज्ज़ा हैं जो इसे प्यास के लिए मुसक्किन, भूख की तसल्ली, बीमारी से शिफ़ा देने वाला बना देते हैं। पुराने हुकमा के नज़्दीक सोना क़ीमती होने की वजह से मुफ़ीद तरीन चीज़ था। चूंकि हजाज़ मुक़द्दस में सोनें की कानें मौजूद हैं इसलिए ख़याल किया जाता था कि इस पानी में सोना शामिल है। जो पीने वालों को तवानाई देता है।

मेरे वालिद मौलाना सय्यद इस्माईल ग़ज़नवी रह॰ ने हजाज़ मुक़द्दस की तत्हीर और इसके बअद मक्का मुअज़्ज़मा की तरक़्क़ी में पूरी उम्र गुज़ारी। उन्होंने ज़मज़म के कुएं पर पानी निकालने वाला पम्प नस्ब करवाया। वह बताते थे कि कुएं की सफ़ाई के दौरान गहराई में दीवारों पर चारों जानिब चमकते हुए सुनहरी ज़र्रे नज़र आए थे जिससे आम लोगों का तास्सिर यह था कि यह कुआं ऐसे इलाक़े से निकाला गया। जहां सोने की कान मौजूद थी। इस मुशाहिदे की बिना पर वह भी इस पानी में सोने की मौजूदगी पर यक़ीन रखते थे।

इब्तिदाई तौर पर मिसरी कीम्यादानों ने आबे ज़मज़म के अज्ज़ा मअलूम करने

की कोशिश की और इनकी तहक़ीक़ के मुताबिक इसमें

MAGNESIUM SULPHATE	SODIUM SULPHATE
SODIUM CHLORIDE	CALCIUM CARBONATE
POTASSIUM NITRATE	HYDROGEN SULPHIDE

पाए जाते हैं। 1935 में किया गया यह तज्ज़िया ना मुकम्मल और गलत है। क्यूंकि इसके मुताबिक़ पानी में क़लमी शूरा और हाईड्रोजन सल्फ़ाइड मौजूद हैं। मोटी बात यह है कि जिस पानी में यह दो अनासिर हों वह इंसानी इस्तेअमाल के क़ाबिल नहीं होता। यह नतीजा किसी भी पानी के बारे में मयस्सर आए तो साफ़ ज़ाहिर है कि इस पानी में गंदे नाले का पानी शामिल हो गया है। मक्का मुअज़्ज़मा में अब तक गंदे पानी के नाले नहीं थे। घरों में बैतुलख़ला के नीचे एक गहरा कुआं बनाकर ग़िलाज़त इसमें जमा होती थी जिसका कुछ हिस्सा रिस्ते–रिस्ते ज़ेरे ज़मीन पानी में शामिल हो जाता था।

पाकिस्तानी साइंसदानों में डाक्टर राजा अबूसमन, अब्दुल मन्नान और प्रोफ़ेसर गुलाम रसूल कुरैशी ने अलाहिदा–अलाहिदा और मुख़्तलिफ़ अदवार में इस पानी का तज्ज़िया किया है। इनको ऐसी कोई चीज़ इस पानी में नज़र नहीं आई जो कसाफ़त का पता दे। मरहूम मियां नज़ीर अहमद जिया बाजी पंजाब के चीफ़ इंजीनियर रहे हैं, उन्होंने सऊदी अरब में ज़राअत को फ़रोग़ देने के लिए आबपाशी के ज़राए तलाश करके अपनी रिपोर्ट एक ख़ूबसूरत किताब की सूरत मुरत्तिब की। जिसमें उन्होंने ज़मज़म का कीम्यावी तज्ज़िया भी किया है। मरहूम से हम को नियाज़मंदी और रफ़ाक़त का शर्फ़ हासिल रहा। उन्होंने ज़मज़म के पानी को किसी भी कसाफ़त से पाक और पीने के लिए कीम्यावी तौर पर दुनिया का बेहतरीन पानी क़रार दिया है।

डाक्टर अब्दुलमन्नान और राजा अबू सुमन ने मक्का मुअज़्ज़मा के तमाम कुओं में ऐसे रेडियाई अनासिर डाल दिए जिनकी मिक़दार अगर किसी चीज़ में लाखवां हिस्सा भी हो तो इनका पता चलाया जा सकता है। मुद्दत तक तवील मुशाहिदात के बावजूद ज़मज़म के पानी में रेडियाई अज्ज़ा की मौजूदगी न पाई गई। इनके इस तजुर्बे से एक अहम बात साबित हुई, मक्का में जितनी भी ग़िलाज़त हो इसके ज़ेरे ज़मीन पानी में अगर कोई आलूदगी या कसाफ़त मौजूद हो तो वह ज़ेरे ज़मीन पानी के आम उसूलों के बरअक्स ज़मज़म में नहीं आती। इल्म सेहत में आम उसूल है कि क़बरस्तान से दो सो गज़ तक और गंदगी के ज़ख़ाइर से 100 गज़ तक कुआं न बनाया जाए क्यूंकि इन मक़ामात की कसाफ़त पानी में शमिल हो जाती है। हमने हरम शरीफ़ के अंदर ख़ुदाम की रिहाइश गाहें बैतुल ख़ला और मुल्हिक़ा महलूल हमीदिया, जयाद, जयाद हस्पताल में ज़ेरे ज़मीन गर्क़ियां देखी हैं फ़न्नी तौर पर इन गर्क़ियों से आलूदगी का क़रीब के किसी भी कुएं में शामिल हो जाना एक लाज़्मी अम्र था। लेकिन किसी भी तज्ज़िया बल्कि अब जदीद तरीन जौहरी मुशाहिदात से 1975 में भी कोई आलूदगी या ग़िलाज़त आबे–ज़मज़म में नहीं मिल सकती।

डाक्टर गुलाम रसूल कुरैशी लाहौर के किंग एडवर्ड मेडिकल कॉलेज में इल्मुल इम्राज़ के प्रोफ़ेसर हैं। प्रोफ़ेसर कुरैशी ने आबे ज़मज़म का तफ़्सीली तज्ज़िया अपनी ज़ाती लेबारेट्री में किया है। इनके मुशाहिदात के मुताबिक़ इस पानी में दीगर अनासिर के अलावा फ़ौलाद, मैग्नीज़, जस्त और काफ़ी मिक़दार में गंधक और ऑक्सीजन से मुरक्कब सलफ़ेट और सोडियम मिलते हैं। प्रोफ़ेसर कुरैशी कहते हैं कि इन मौजूदात की वजह से यह पानी ख़ून की कमी को दूर करता है। दिमाग़ को तेज़ करता है और हाज़मा की इस्लाह करता है।

सऊदी अरब की विज़ारते उज़्मा ने 1971 में आबे ज़मज़म का कीम्याई तज्ज़िया दो मर्तबा करवाया और इनके नताइज मिसरी माहिरीन से मुख़्तलिफ़ रहे हैं। इन तज्ज़ियों में पानी के कीम्यावी अज्ज़ा के अलावा इसमें मौजूद ऑक्सीजन पर भी तवज्जह दी गई। जदीद तहक़ीक़त के मुताबिक किसी पानी में ऑक्सीजन को क़बूल करने की ज़रूरत एक तो कीम्यावी अमल के लिए होती है जिसे सी.ओ.डी. कहते हैं। पानी के कीम्यावी अज्ज़ा में कुछ ऐसे अमल में मसरूफ़ होते हैं जिनमें इनको ऑक्सीजन दरकार होती है। पानी में अगर किसी क़िस्म के जरासीम परवरिश पा रहे हों, तो इनको अपनी अफ़ज़ाइश के लिए ऑक्सीजन की ज़रूरत पड़ती है। जिसे बी.ओ.डी. कहते हैं। ज़मज़म के पानी में इन दोनों का तनासुब आमतौर पर इस तरह है।

सी.ओ.डी. 55 मिली ग्राम फ़ी लीटर

बी.ओ.डी 5.8 मिली ग्राम फ़ी लीटर

आलमी इदारए सेहत ने पीने वाले पानी में सेहत का मेअ़यार क़ायम रखने के लिए जिस क़दर ऑक्सीजन को तंदरुस्ती की हद तक दुरुस्त क़रार दिया है। ज़मज़म में ऑक्सजन की मिक़दार इससे आधी है इसलिए आलमी मेअ़यार के मुताबिक़ ज़मज़म का पानी पीने के लिए महफ़ूज़ और हर तरह से क़ाबिले इस्तेअमाल है।

मक्का मुअज़्ज़मा में दाऊदिया और मुस्लफ़ा के महलों में भी कुएं वाक़ेअ हैं। बाज़ माहिरीन का ख़याल था कि ज़मज़म के पानी में जो कुछ भी है। वह मुमकिन है कि मक्का मुकर्रमा के ज़ेरे ज़मीन पानी की अपनी ख़ासियत हो।

इस नुक़्तए नजर से माहिरीन की एक टीम ने वहां के तीन कुओं का कीम्यावी जाएज़ा लिया जिसका मुवाज़ना यह है:

	Ph.	Total Diskolyed Solid's	Chlorine	Carbonates	Sulphates	Sulpuhp	Nirates	Managanfse	Zink
ज़ुकाम का पानी	6-9	1620	234	365	190	NIL	Nil	Present	Present
दाऊदिया के कुएं का पानी	7.2	2000	190	450	300	NIL	Present	NIL	NIL

मुहल्ला मुस्फला के कुएं का पानी	7.8	2050	140	500	350	Present	Present	NIL	NIL
नहर जुबैदा का कुआं मक्का मुअज्जमा से 18 मील दूर	709	1620	234	365	190	NIL	NIL	NIL	NIL

इस मुवाज़ना में ज़मज़म को तेज़ाबियत की तरफ़ माइल दिखाया गया है हालांकि बअद के मुवाज़नों में यी पानी तेज़ाबी नहीं बल्कि क़लवी रुजहानात का हामिल पाया गया।

ज़मज़म में मौजूद कीम्यावी अनासिर के बारे में राजा अबू सुमन और तराबल्स की टीम ने 1976 और 1977 में मअलूम किया कि यहां मौजूद कीम्यावी अनासिर की तर्कीब यूं है।

TOTAL DISKOYED SOLIDS	1620
CHLORINE	234
CALCIUM CARBONATE	365
SULPHATE	190
+v	CALCSIUM
+V	MAGNESIUM
	IRON
-VE	SUPHUR
-VE	NITRATE

मक्का मुकर्रमा के 18 मील दूर नहर ज़ुबैदा के दामन में जब्ले अरफ़ात के क़रीब एक कुआं वाक़ेअ है इस पानी के कीम्यावी अज्ज़ा ज़म–ज़म से क़रीबतर हैं लेकिन जो कमाल की चीज़ें आब–ए–ज़म–ज़म में मिलती हैं वह इस कुएँ में नहीं।

ज़म–ज़म में इसके अलावा और भी अशयाअ होंगी। लेकिन उन पर पूरी तवज्जह नहीं दी गई। मज़ीद मेहनत की जाए तो इसमें और भी मुफ़ीद चीज़ों की मौजूदगी का पता चलेगा।

ज़म–ज़म का जाएज़ह:

दुनिया के अक्सर मुल्कों में चश्मों के पानी के बारे में कहावतें मशहूर हैं। बअज़ मक़ामात पर यह दुरुस्त भी हैं जैसे कि कराची में मंघुपीर के गर्म पानी के चश्मे में गंधक की वजह से इम्राज़े जिल्द को फ़ाएदा होता है। लाहौर के हॉल रोड के एक पम्प का पानी इम्राज़े जिल्द के इलाज में शोहरत रखता है भारत में अमृतसर के तालाब के साथ एक तवील दास्तान वाबस्ता है, कहते हैं कि एक कोढ़ी वहां से शिफ़ायाब हुआ। इसके बअद दुनिया जहान के कोढ़ी अमृतसर

आने लगे। चूंकि इस पानी में ऐसी कोई सिफ़त न थी इसलिए सिख पंथ ने वहां से 12 मील दूर तरनतारन के एक तालाब को शिफ़ा का मज़हर क़रार दे कर कोढ़ी वहां रवाना कर दिए। यहां पर एक डाक्टर इनका बाक़ाएदा इलाज करता था।

कई मज़ाहिब में दरयाओं, चश्मों, नदी–नालों और तालाबों के साथ शिफ़ा की सिफ़त शामिल की गई है। चूंकि इनमें शिफ़ा नहीं थी इसलिए वक़्त के साथ उनकी शोहरत मांद पड़ गई। हाल रोड और मंघुपीर के पानी के अज्ज़ा किसी ख़ास बीमारी के लिए मुसलसल इस्तेअमाल के बाद किसी क़दर मुफ़ीद होंगे लेकिन वह इम्राज़े जिल्द के लिए गंजीनए शिफ़ा नहीं थे इसलिए लोग कुछ मुद्दत आज़माने के बअद बैठ गए।

इस्लाम ने पानी से शिफ़ा हासिल करने का सबसे पहला वाक़िआ हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के सिलसिले में बयान किया है। इनके सारे जिस्म पर आबले निकल आए और वह 18 साल तक शदीद अज़िय्यत का शिकार रहे। अज़ीज़ रिशतेदार छोड़ गए। उनकी बेगम लोगों के घरों में नौकरी करके दो वक़्त की रोटी लाती थीं। बीमारी की कराहत की वजह से आबादी से निकाल दिए गए और वीराने में सारा दिन तन्हा पड़े विर्द करते रहते।

انی مسّنی الضرّ وانت ارحم الرّاحمین.

(मुझे तकलीफ़ ने जकड़ लिया और इस मुसीबत में तू ही सबसे ज़्यादा रहम करने वाला महरबान है)

आख़िर एक रोज़ ख़ुदावंद तआला ने इसके मिसाली सब्र, और ईमान को पसंद करते हुए इरशाद फ़रमाया:

واذکر عبدنا ایوب از نادیٰ ربّہ انی مسّنی الشیطان نبصب وعذاب. ارکض برجلک ھذا مُغتسلٌ باردٌ ومشراب. ووھبنا له واھلهٗ ومثلھم معھم رحمة منا وذکریٰ لِاُولی الالباب (ص:۴۱تا۴۳)

(और याद कीजिए हमारे बंदे अय्यूब अलैहिस्सलाम की कैफ़ियत जब उन्होंने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब शैतान ने मुझे बहुत दुख और अज़िय्यत दी है। हमने उसे हुक्म दिया कि वह अपना पांव ज़ोर से ज़मीन पर मारे और वहां से नहाने के लिए ठंडा पानी बरआमद हुआ। और पीने के लिए। और हमने उसे एहलो अयाल अता किया और इनकी मिस्ल बतौर रहमत अपनी जानिब से। और यह बातें हैं तुम्हारे रब की जानिब से उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं।)

इब्ने जरीर, और इब्ने हातिम ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि॰ से इस तकलीफ़ की जो दास्तान रिवायत की है उसके मुताबिक़ उन्होंने एक जगह पैर मारा तो ठंडे पानी का एक ऐसा चश्मा फूट निकला जिसमें नहाने से उनके सारे ज़ख़्म और उनमें पड़े हुए कीड़े ख़त्म हो गए। उनको दोबारह पैर मारने की हिदायत की गई जिससे दूसरा चश्मा निकला जिसमें पीने के लिए मुर्रह और

मुक़व्वी पानी था। शिफ़ायाब होने के साथ उनकी कमज़ोरी भी जाती रही। तौरेत मुक़द्दस के मुताबिक वह इसके बाद सौ–साल से ज़्यादा ज़िंदा रहे और उनको माल और औलाद में भी बरकत मयस्सर रही।

तारीख़ दानों में से कई एक का ख़याल है कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने जिस चश्मे से शिफ़ा पाई थी वह ज़म–ज़म था। मगर इसका कोई सबूत मयस्सर नहीं।

ज़म–ज़म की इब्तिदा पीने से की गई। मगर यह ख़ुदा के हुक्म पर हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने पैदा किया। इसलिए यहां का पानी हर लिहाज़ से बरकत वाला होना चाहिए। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसको इतनी अहमियत दी कि जब भी पिया, क़िबला–रू खड़े हो कर और ख़ुदा से सेहत–सलामती और वुसअ़ते इल्म की दुआ के साथ पिया। अबू–ज़रग़फ़ारी रज़ि. की मिसाल मौजूद है कि वह चालीस रोज़ तक खाए पिए बग़ैर सिर्फ़ इसी पानी को पी कर तवाना रहे। इब्नुल क़ैय्युम रह. गवाही देते हैं कि उन्होंने पेट में पानी के मरीज़ ज़म–ज़म पी कर तंदरुस्त होते अपनी आंखों से देखे हैं।

हरम शरीफ़ के एक ख़ादिम ने हमें बताया कि उसने कैंसर के एक मरीज़ को देखा जो जां–बलब था। लोग उसे उठाकर नमाज़ के वक़्त मस्जिद में लाते थे। वह रोज़ाना ज़म–ज़म का पानी पीता और उसी पानी को अपनी रसोलियों पर डाल कर दिन भर के लिए मज़ीद पानी हमराह ले जाता। चंद दिन बअद वह शख़्स अपने पैरों से चल कर आना शुरू हुआ और फिर पूरी तरह तंदरुस्त हो गया।

यह हमारा ज़ाती मुशाहिदा है कि ज़ियाबेत्स का जो भी मरीज़ हज करने गया और उसने बाक़ाइदगी से ज़म–ज़म पिया। इसके ख़ून और पेशाब से शकर ख़त्म हो गई। जितनी देर वह हिजाज़े मुक़द्दस में रहे इनको इंसोलीन लेने की कभी ज़रूरत नहीं पड़ी। इसी क़िस्म का हमारा मुशाहिदा ब्लडप्रेशर के बारे में है। हज के दौरान ब्लड प्रेशर के किसी मरीज़ को कभी किसी दवाई की ज़रूरत नहीं पड़ी। ज़म–ज़म पीने के बअद पेट की गिरानी फ़ौरन ख़त्म हो जाती है। तेज़ाबियत जाती रहती है और भूख बाक़ाइदगी से लगने लगती है। बाक़ाइदगी से ज़म–ज़म पीने के बअद हाफ़्ज़ा बेहतर हो जाता है। ज़म–ज़म के फ़वाइद किसी अक़ीदा या ईमान की बात नहीं, जो भी यक़ीन के साथ इसे पीता है अपना मतलब पा लेता है।

आंखों में लगाने वाला सुर्मा पीसने के लिए अर्क़–सौंफ़ या अर्क़ गुलाब इस्तेअमाल किया जाता है। बअ़ज़ अतिब्बा ने अर्क़ की जगह आबे–ज़म–ज़म में सुर्मा खरल किया है। ज़म–ज़म के पानी की बरकत के साथ–साथ इसमें मौजूद जस्त, मैग्नीज़ और गंधक इस सुर्मे की उफ़ादियत में ख़ुसूसी तौर पर इज़ाफ़ा करते हैं।

बारिश का पानी
माउल मतर
RAIN WATER

ज़मीन के आबादकारों की आसाइश के लिए जो चीज़ें ख़ुदा ने तख़लीक़ की हैं इनमें बारिश एक अजीबो–ग़रीब सहूलत है। बादल आते हैं बिजली चमकती है और मींह बरसने लगता है। नदी–नाले भर कर बहने लगते हैं। खेतों में हरयाली आती है, इन्सानों जानवरों और नबातात के लिए ग़िज़ा का बंदो–बस्त हो जाता है। और अगर ऐसा न हो तो दरख़्त मुर्झा जाते हैं। फ़सलें सूख जाती हैं, जंगली जानवर भूख और प्यास से मरने लगते हैं। बंजर ज़मीन ख़ुराक पैदा करने से आजिज़ हो कर क़हत का बाइस बनती है। इन्हीं दिनों वुस्ती अफ़रीक़ा के कई मुल्कों में कुछ अरसा बारिश न होने से ख़ुश्कसाली हो गई। परिंदे और दरिंदे मैदानों में तड़प--तड़प कर मर गए। जिनमें हिम्मत थी वह नक़्ले मकानी कर गए। जब ग़िज़ा न हो तो इन बीमारियों में ज़्यादा शिद्दत से मुब्तिला होता है। लहमियात की मुसलसल कमी की वजह से अफ़रीक़ी बच्चों की तसावीर एक इबरतनाक नमूना पेश करती थीं, अंदर धंसी हुई आंखें, उभरे हुए गाल, फूले हुए पानी से भरे पेट और सूखी हुई टांगें इन्सानों को याद दिलाती रहीं कि अगर चंद दिन बारिश न हो तो क्या कुछ होता है और कैसे होता है।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَآءً فَيُحْيِيْ بِهِ الْاَرْضَ
مَوْتِهَا. اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُوْنَ...... (والروم: ۲۴)

"(और इसकी निशानियों में से जो वह दिखाता है, बिजली है जिससे तुम डरते भी हो और आसमानी पानी उतारता है जो कि इसकी मौत के बअद ज़िंदगी देता है और इन चीज़ों में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक़्लो दानिश रखते हैं।)

क़ुरआन मजीद ने बारिश बरसने और इसकी वजह से ज़मीन को हयाते नौ मयस्सर आने वाली बात मुतअद्दिद मक़ामात पर वज़ाहत से इन इशारों के साथ बताई है कि लोग इनकी माहियत को समझने की कोशिश करें तो इन पर फ़वाइद के कई और रास्ते खुल जाएंगे अक़्लमंदों के लिए मज़ीद इशारा देते हुए फ़रमायाः

وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُم . (البقره-۲۳)

(और इसने आसमान से पानी बरसाया जिसकी वजह से ज़मीन से तुम्हारी ख़ुराक के लिए फल पैदा होते हैं।)

यही बात सूरह इबराहीम में दुहाराई गई और फिर सूरह तॉहा में यह वाज़ेह किया गया कि नबातात की हर सनफ़ में नर और मादा होते हैं जिनकी क़ुर्बत पौधों की आइंदा नस्ल को चलाती है।

बारिश बरसने का अमल साइंस में WATER CYCLE कहलाता है। क्यूंकि ज़मीन पर जितना भी पानी मौजूद है। कुदरत इसकी एक बूंद भी ज़ाया नहीं करती।

बारिश का अमलः

कुर्रा अर्ज़ समंदर ख़ुशकी से ज़्यादा हैं। इन पर जब सूरज की रौशनी और गर्मी पड़ती है तो इनसे दरयाओं, झीलों, तालाबों और पानी के दूसरे ज़ख़ीरों से पानी बुख़ारात बन कर उड़ता और आसमान की बुलंदियों पर जाकर जमा होता रहता है। बुख़ारात बनने की रफ़्तार गर्मी की शिद्दत, मौसमी हालात और हवाओं की रफ़्तार पर मुनहसिहर होती है। गर्म मुल्कों में बुख़ारात ज़्यादा उठते हैं और ठंडे मुल्कों में कम, बुख़ारात से लबरेज़ गर्म हवाएं जब ऊपर उठती हैं तो वहां पर दबाओ कम होने की वजह से यह फैलती हैं तो नमी में इज़ाफ़ा होता है। इसके ज़र्रे आपस में मिल कर क़तरे बनाते हैं। इनका वज़न बढ़ जाता है और हवा के लिए उन्हें यह मज़ीद मुअल्लिक़ रखना मुमकिन नहीं रहता तो यह बारिश की शक्ल में ज़मीन पर गिर जाते हैं। अगर यह हवाएं मज़ीद बुलंदी पर जाएं और इनमें नमी ज़्यादा हो तो यह जम कर बर्फ़ के गाले बन जाते हैं। जिनका बोझ ज़्यादा होने पर यह बर्फ़ बनकर ज़मीन पर गिरते हैं।

एक अंदाज़े के मुताबिक़ सारी दुनिया में रोज़ाना 2.5 मिली मीटर मिक़दार है। फ़िज़ाओं में यह मिक़दार जमा होती रहती है और जब 25 मिली मीटर हो जाए तो इसे मज़ीद रोके रखना मुमकिन नहीं रहता और वह बारिश की सूरत में ज़मीन पर गिर जाते है। आसमान पर जमा होने वाले आबी बुख़ारात सिर्फ़ दस दिन तक फ़िज़ा में रह सकते हैं। इसके बाद यह बारिश बन कर बरस जाते हैं। दस दिन का यह ज़ख़ीरा ज़मीन पर 25 मिली मीटर बारिश के बराबर होता है इस तरह एक साल में पूरी दुनिया में 914 मीटर (36 इंच) बारिश होती है। यह बारिश यकसां नहीं होती। किसी जगह कम और कहीं ज़्यादा। मिसाल के तौर पर दुनिया में सबसे ज़्यादा बारिश भारत के सूबह आसाम के शहर चरापूंजी में होती है। इसी तरह हिंदुस्तान का मग़रिबी घाट शरकुलहिंद के जज़ाइर बारिश की शिद्दत के लिए मशहूर हैं। माहिरीने मौसम ने इसकी दरजा बंदी करके बारिश का आलमी नक़्शा भी तैयार किया है जिसमें तमाम मुमालिक की सालाना बारिश की शरह देखी जा सकती है।

पहले ख़याल था कि समंदरों से उठने वाले बुख़ारात बादलों की शक्ल इख़्तियार करके तिजारती हवाओं के साथ ख़ुश्की की सिम्त आते हैं और पहाड़ों से टकराकर बरस जाते हैं। कुछ मुल्क ऐसे थे जहां मरतूब बादल जाते थे तो इनको रोकने के लिए पहाड़ न थे इसलिए वहां बारिश न होती थी, कुछ बदक़िस्मत ऐसे थे जहां पहाड़ तो होते हैं लेकिन वहां तक जाते-जाते बादलों की सारी रतूबत रास्ते में बरस कर ख़त्म हो जाती है और वहां बारिश नहीं हो सकती।

लोगों ने बारिश होने या न होने के बारे में और भी कई क़िस्म के अंदाज़े

लगाए हैं लेकिन जब इस अमल को देखते हैं तो ऐसा जान पड़ता कि हम अभी हक़ीक़त से कोसों दूर हैं। सारी दुनिया में एक साल में कुल 36 इंच बारिश होने वाली बात भी अजीब लगती है। सिर्फ एक शहर में सालानह 1700 इंच तक बारिश देखी गई है। जिन वसीअ मैदानी इलाक़ों में पहाड़ नहीं, बारिश वहां भी होती है।

बारिश जब ज़मीन पर गिरती है तो आमतौर पर एक क़तरे का हजम 0.5 मिली मीटर से 6 मिली मीटर तक होता है। बादलों की अगर कई तहें हों तो ऊपर की तेह से जो क़तरे गिरते हैं वह अपने साथ और क़तरे भी मिलाकर अपने हजम में इज़ाफ़ा कर लेते हैं। लेकिन बड़े क़तरे रास्ते में टूट जाते हैं।

बारिश अगर वसीअ रक़बे पर फैल कर हो तो आमतौर पर तो वह ज़्यदा तेज़ नहीं होती और अगर वह एक महदूद हिस्से पर हो तो मिक़दार ज़्यादा होती है। गर्ज चमक के साथ आने वाली तूफ़ानी बारिश 30 मिनट से ज़्यादा नहीं होती और इस मुख़तसर अरसे में तक़रीबन 2.5 मीटर पानी बरसा देती है।

मसनूई बारिश:

जब लोगों को यह मअलूम हो गया कि मरतूब बादल पहाड़ों से टकराकर बारिश बरसाते हैं तो तरकीब निकाली गई कि जब किसी जगह मरतूब बादल आएं तो ज़मीन से उनमें ऐसे गोले फैंके जाएं जो फटने के धमाके से आबी बुख़ारात को बारिश की सूरत में ज़मीन पर गिरा दें। अमरीका के बअज़ इदारों ने इब्तिदाई काम्याबियों के बअद मींह बरसाने वाली कम्पनियां क़ायम कर लीं। यह ख़ुश्क साली के मारे हुए मुल्कों से भारी मुआवज़ा ले कर बारिश बरसाने का ठेका लेते हैं। इस मक़सद के लिए सबसे पहली ज़रूरत बादलों का आना है। फिर इनकी बुलंदी का सहीह तअय्युन करने के बअद सहीह जगह पर गोले को फाड़ना होता था। कभी तो मुद्दतों इंतिज़ार के बअद बादल ही न आए और कभी गोले बादलों से ऊपर जाकर फटे या नीचे, और इस तरह इनमें ऐसी तहरीक न हो सकी कि मूसलाधार बारिश हो जाए। नाकामियों की शर्मसारी के बाद अक्सर इदारे ख़त्म हो गए।

बारिश के अमल में बुख़ारात, इनका वज़न और बादलों में इनको महदूद अरसे तक रोकने वाली सलाहियतों का जाएज़ा लेने के बाद केली फ़ोर्निया के सोहराई इलाक़े में बादलों में हवाई जहाज़ों से ख़ुश्क बर्फ़ के गोले फैंके गए। दूसरे नुस्ख़े में चांदी और आयोडीन के मुरक्कब के बारीक छर्रे इनमें फेंके जाते हैं। यह छर्रे ठंडे बादलों में क़तरों को ठंडा करके इनके क़तरे और बर्फ़ के ज़र्रे बनाते और मींह बरसा देते हैं। इस अमल को एक मर्तबा शुरू कर दिया जाए तो फिर जारी रहता है। चांदी के मुरक्कब का यह तरीक़ा धुएं की सूरत में भी इस्तेमाल किया जा सकता है और इस तरह होने वाली बारिश मिक़दार में ज़्यादा होती है। जबकि ख़ुश्क बर्फ़ या कारबनडाई ऑक्साइड से पैदा की गई बारिश मामूली सी होती है।

कीमयावी उसूलों के मुताबिक़ यह दोनों तरीक़े लेबॉरेट्री में बड़े कामयाब हैं।

लेकिन अमली ज़िंदगी में इनकी उफ़ादियत बड़ी महदूद रही है। कभी–कभी तो इन तरीक़ों से बारिश हो जाती है और कभी बिल्कुल नहीं होती। ऐसा मअलूम होता है कि इस बारे में जुमला मअलूमात हासिल होने के बावजूद मींह बरसाने और ख़ुश्क साली को दूर करने का सारा इंतिज़ाम ख़ुदा ने ख़ुद अपने ही हाथ में रखा है।

आसमानी बिजली और कीम्यावी मुरक्कबात:

ख़याल किया जाता है कि बादलों में बिजली होती है। इनमें कुछ मसबत और कुछ मनफ़ी करंट रखते हैं। जब एक ही नोइयत के बादल फ़िज़ा में तैर रहे हों तो कुछ नहीं होता। लेकिन जब मनफ़ी करंट वाले बादल से मसबत करंट वाला बादल टकराता है और एक ज़बरदस्त आवाज़ आती है और शोला निकलता है। बिजली की आवाज़ की कड़क और चमक इतने ज़ोरदार होते हैं कि लोगों के दिल दहल जाते हैं।

اَو كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌوَّبَرْقٌ ط يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِیْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ط وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ م بِالْكٰفِرِيْنَ ٥ يَكَادُالْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ. (بقرہ:١٩_٢٠)

(और यह आसमान से बरसने वाले मींह की मानिंद है जिसमें अंधेरे हैं, गरज और बिजली की चमक है और यह अपनी उंगलियां मौत की दहशत से कानों में डाल लेते हैं। अल्लाह काफ़िरों को घेरने वाला है। यह ऐन मुम्किन है कि बिजली की चमक इनकी बीनाई को छीन कर ले जाए। जब इससे रौशनी होती है तो यह इसमें चलने लगते हैं।)

क़ुरआन मजीद ने इस कड़कने, चमकने वाली बिजली की उफ़ादियत अहमियत के पेशे नज़र "अर–रअद" के नाम से एक सूरत बयान फ़रमाई जिसमें इरशाद हुआ।

هُوَالَّذِیْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ.
(الرعد:١٢)

(यह वही अल्लाह है जो तुम को दिखाता है बिजली, जिससे तुम ख़ौफ़ भी खाते हो और तमअ भी करते हो, और वह बोझल बादल भी पैदा करता है।)

बिजली की चमक और कड़क लोगों में दहशत का बाइस होती है। और इसमें कोई शक नहीं कि आसमानी बिजली अगर किसी चीज़ पर गिर जाए तो उसे जला कर राख कर देती है इसकी मुहीब आवाज़ सिर्फ़ दहशत पैदा नहीं करती बल्कि यह फ़ि :ावाके नुक़सान करने पर आए तो बरबाद कर सकती है। इसी ख़ातरे के पेशे नज़र नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसकी तबाहकारियों से महफ़ूज़ रहने के लिए मुतअद्दिद मक़ामात पर दुआ फ़रमाई। जिनमें से एक यह है:–

اَللّٰهُمَّ لاتقتلنا بغضبک ولا تهلكنا بعذ ابک،عافنا قبل ذٰلک) ۔(ابن کثیر)

(ऐ अल्लाह! तू हमको अपने ग़ज़ब से न मार देना और न ही अपने अज़ाब से हलाक करना, बल्कि ऐसा होने से क़ब्ल हमको अपनी आफ़ियत में लेले।)

इस सिलसिले में अबू हुरैरा रज़ि. और इबने अब्बास रह. से भी ऐसी दुआएं मनक़ूल हैं जो बिजली की कड़क सुन कर या चमक देख कर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पढ़ने की हिदायत फ़रमाई कि लोग इस बिजली की हलाकत आफ़रीनियों से महफ़ूज़ रह सकें।

इन आयात में रतूबत से लबरेज़ बादलों का तज़किरा फ़रमा कर इस अहम साइंसी हक़ीक़त की तरफ़ इशारह दिया गया है कि बोझल बादल और बिजली अगर्चे दहशत का बाइस होते हैं, लेकिन इनसे बनी नौ इन्सान को फ़वाइद की तवक़्क़ो भी वाबस्ता है। इस आयत की सहीह तफ़सीर हमें अब साइंसी तरक़्क़ी के बअद मअलूम होती है कि मींह सिर्फ़ बोझल बादलों से बरसता है और बिजली का चमकना हमारे लिए फ़वाइद का बाइस होता है।

शहनशाह जहांगीर ने आसमानी बिजली चमकने का एक दिलचस्प वाक़िआ बयान किया है। एक मर्तबा रात को बिजली चमकी तो ऐसा महसूस हुआ कि जैसे बिजली एक गांव के पास ज़मीन में घुस गई है। वह जगह कई दिन तक गर्म देखी गई तो उसे खुदवाया गया। खोदने पर ज़मीन के नीचे से लोहे का एक टुकड़ा बरआमद हुआ। जो कई दिन गुज़रने के बअद भी सुर्ख़ था। ठंडा करके शाही असलह ख़ाना के कारीगरों ने इससे मुरस्सअ ख़ंजर तैय्यार करके बादशाह की ख़िदमत में पेश किया और बादशाह इसकी धार और काट देख कर ख़ुश हुआ।

बिजली और कीम्यावी सनअत:

पहली जंगे अज़ीम के दौरान इत्तहादियों की बहरी नाकाबंदी की वजह से जर्मनी के लिए क़लमी शूरा का हुसूल नामुमकिन हो गया। इत्तिफ़ाक़ से क़लमी शूरा के बग़ैर किसी क़िस्म का कोई भी बारूद नहीं बन सकता। कीमयावी सनअत और इल्म में तरक़्क़ियों के बावजूद बारूद बनाने के लिए क़लमी शूरा आज भी ज़रूरी है। क़लमी शूरा जुनूबी अमरीका की रियासत चिल्ली में बाअफ़रात होता है। इसलिए यह CHILLI SALTPETER भी कहलाता है। इसके अलावा हिंदुस्तान में सीम ज़दह ज़मीनों के कलर और शोर से भी यह हासिल होता है। जर्मनी के लिए यह दोनों ज़राए बंद हो गए। और अंदेशा हो गया कि वह लड़े बग़ैर जंग हार जाएगा। शाह क़ैसर विलियम ने साइंसदानों को तलब करके अपनी मुसीबत सुनाई और इनको हल तलाश करने पर उकसाया।

दो कीम्यादानों बर्कलैंड और आइड ने ग़ौर करना शुरू किया कि ज़मीन पर पड़ा हुआ शूरा ख़ुर्द कुदरत कैसे बनाती है। जुस्तुजू पर मअलूम हुआ कि फ़िज़ा की हवा में ऑक्सीजन और नाइट्रोजन होती हैं। पास रहते हुए भी इनका मिलाप नहीं होता। लेकिन जब आसमान पर बिजली चमकती है तो इसकी चमक और हिद्दत से नाइट्रोजन और ऑक्सीजन मिल कर नाइट्रोजन ऑक्साइड गैस बनाते

हैं। बारिश इसको हल करके नाइट्राइट की सूरत में ज़मीन पर डाल देती है। ज़मीन ख़ुश्क हो तो यह अंदर जाकर इसे ज़रख़ेज़ बनाते हैं। जैसे कि आज कल यूरिया और नाइट्रेट के मुख़्तलिफ़ नमक खाद की सूरत में इस्तेअमाल होते हैं। यअनी बिजली चमके और बारिश हो तो इससे ज़मीन ज़रख़ेज़ होती है। कुदरत बिजली के ज़रिए हमें खाद का तोहफ़ा देती है। कीम्यादानों ने जब कुदरती अमल को समझा तो उन्होंने एक कमरे में बिजली का सूरज बनाया इसमें से हवा गुज़ारी गई तो वहां भी नाइट्रोजन ऑक्साइड तैय्यार हो गई। जिससे शूरे का तेज़ाब बना कर बारूद बना लिया गया इनकी यह कोशिश इल्मे कीमिया में एक अज़ीम इनक़लाब ले आई क्यूंकि दुनिया में पहली मर्तबा ख़ाम माल के बग़ैर कोई चीज़ तैयार कर ली गई। और इसके बअद यह दरयाफ़्त हज़ारों कामों में इस्तेअमाल हुई।

अफ़सोस की बात यह है कि कुदरते ख़ुदावंदी का मुशाहिदा और इससे अपना मक़सद हासिल करने का फ़ेएल दो ग़ैर मुस्लिमों ने किया। जबकि कुरआन जिन के लिए नाज़िल हुआ था, जिनको इससे फ़ाएदा उठाना था वह इस बहस में लगे रहे कि खटमल के ख़ून से लिबास नापाक होता है या नहीं और नमाज़ के दौरान हाथ किस मक़ाम पर बांधे जाएं। कुरआन मजीद रौशनी और हिदायत का सरचश्मा है। लेकिन वह सिर्फ़ उन लोगों के लिए है जो इस पर ईमान रखते हैं और ग़ौर करते हैं।

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَالنَّهَارِ وَالۡفُلۡکِ الَّتِیۡ
تَجۡرِیۡ فِی الۡبَحۡرِ بِمَا یَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡیَا بِهِ
الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَبَثَّ فِیۡهَا مِنۡ کُلِّ دَآبَّةٍ وَّتَصۡرِیۡفِ الرِّیٰحِ وَالسَّحَابِ
الۡمُسَخَّرِ بَیۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ ۝ (البقرہ:۱۶۴)

(ज़मीन और आसमान की तख़लीक़, रात और दिन के फ़र्क़, और जब कशती सतह समंदर पर चलती है तो इनमें लोगों के फ़वाइद के बहुत से उमूर पन्हां हैं और अल्लाह तआला जब आसमान से बारिश को नाज़िल करता है तो यह मुर्दा ज़मीन को बंजर होने के बअद हयाते नौ देती है और यह जानवरों को ज़िंदगी देती है और हवाओं का चलना और आसमान और ज़मीन के दरमियान चलने वाले भरे हुए बादल एक नज़्मो-ज़ब्त के पाबंद हैं जिनको इसलिए बताया जा रहा है ताकि लोग अक़्ल का मुज़ाहिरा करें।)

बिजली, बादल, बारिश, ज़मीन की ज़रख़ेज़ी, सूरज की हिद्दत से बुख़ारात का पैदा होना फ़िज़ा में ऑक्सीजन और नाइट्रोजन का मिलाप और इनसे पैदा होने वाले पेचीदा अवामिल एक दिन की बात नहीं बल्कि एक मुसलसल और जारी मुनफ़अत है। यह सारा कुछ अपने किसी बाज़ाब्ता प्रोग्राम और इसको चलाने वाले के बग़ैर होना मुमकिन नहीं। बारिश और ज़रख़ेज़ी का मुसलसल अमल ही एक ऐसा वाक़िआ है जिसको देखने और समझने वाला मजबूर है कि वह इसको

चलाने वाली हस्ती के वजूद का एतिराफ़ करे।

इस आयत से दूसरी अहम बात यह वाज़ेह होती है कि बादलों के भारी होने और बारिश में हमारे लिए सिर्फ़ पानी नहीं बल्कि और भी फ़वाइद रख दिये गए। अगर हम अक़्ल रखते हैं तो इनसे मज़ीद फ़ाएदे उठा सकते हैं। अब तक इस ज़िम्न में दो अहम बातें मअलूम की जा चुकी हैं कि नाइट्रेट बेहतरीन खाद है और इनके भरोसे कीम्यावी सनअत चलाई जा सकती है। लेकिन यह सिलसिला यहां पर ख़त्म नहीं होता। आगे जाना ही नहीं, जाते रहना ज़रूरी है और हर कोशिश और ग़ोरो फ़िक्र हमारे लिए नई राहें खोल सकते हैं।

बारिश के फ़वाइद:

जदीद मुशाहिदात से मअलूम हुआ है कि जुनूबी बर्रे–आज़म अंटारटिका से उठने वाली हवाओं का बारिश की मिक़दार पर काफ़ी असर है। इसके अलावा जुनूबी अमरीका के साहिल पर एक शहर एलनीनू ELNINO वाक़ेअ है। यहां से उठने वाली समंदरी लहरें और मद्दो–जज़र दुनिया भर के मौस्मों पर असर अंदाज़ होते हैं।

सूरज की हिद्दत समंदरों और झीलों के पानी को गर्म करके बुख़ारात में तब्दील करती है। यह बुख़ारात ऊपर फ़िज़ा में जाकर ठंडे होते हैं। और यह सारा अमल बिल्कुल इसी तरह है जिस तरह हम किसी देग में पानी डाल कर इसको आग देकर बुख़ारात उठाते हैं। जो कैफ़ के रास्ते दूसरे बर्तन में जाकर ठंडे होते है और पानी को साफ़ किया जाता है। इसमें मौजूद जरासीम, ग़िलाज़त, कसाफ़त और मअदनयात निकाल कर पानी की ख़ालिस तरीन शक्ल हासिल की जाती है। इसी पानी को कीम्यावी अवामिल के अलावा मरीज़ों को लगाने वाले टीकों में मिलाया जाता है।

कुरआन मजीद ने बारिश के पानी को हर तरह से पाक और साफ़ क़रार दिया है।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًام بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ط وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا٥ لِنُحْيِيَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا٥

(فرقان:۴۸،۴۹)

(यह वही रब है जिसने बादल और ठंडी हवाएं ख़ुशख़बरी के तौर पर अपनी रहमत से इरसाल कीं और अपनी रहमत के साथ एक पाक पानी नाज़िल किया जो प्यास बुझाता है मुर्दा शहरों की और पीने का ज़रिया है और हमारी मख़लूक़ के लिए जो जानवरों और इन्सानों पर मुशतमिल है।)

इस पानी की कैमिस्ट्री वाज़ेह कर दी गई है कि यह हर तरह से पाक है बल्कि पाक कर देने वाला भी है।

इसी पानी की तारीफ़ में अहमियत का हामिल एक और इरशाद यूं है।

وانزل من السماء ماء مباركة . (ق.٩)

(और उतारा उसने आसमान से एक बा–बर्कत और मुबारक पानी)

यह पानी मुबारक ही नहीं बल्कि चीज़ों को पाक–व–साफ़ करता है क्यूंकि इसमें मअदनयाती नमक नहीं होते इसलिए सफ़ाई के लिए यह बेहतरीन है।

اذيغشّيكم النعاس امنةً منه وينزّل عليكم من السماء ماءً ليطهّركم به ويذهب عنكم رجز الشيطان وليربط علىٰ قلوبكم ويثبّت به الاقدام.

(انفال: ١١)

(जब उसने तुम पर अमन और सलामती के निशान के तौर पर ऊंघ पैदा की और आसमान से पानी बरसाया ताकि वह तुमको पाक करे और शैतान की गंदगी दूर करे और तुम्हारे दिल को मज़बूत करके तुम्हारे क़दम पंक्के कर दे।)

बारिश जब जोती है तो गर्दो–ग़ुबार बैठ जाते हैं। पहाड़, रास्ते और इमारतें धुल जाते हैं। मिट्टी धुल जाती है। और पहाड़ों की ज़रख़ेज़ मिट्टी दरयाओं में बह कर मैदानी इलाक़ों में आती है।

इन फ़वाइद के अलावा सहत और तन्दरुस्ती के बारे में हज़रत औफ़ बिन मालिक अलअशअ़जई के ईमान का नमूना और यक़ीन देखिए कि बीमार हुए तो बेटे से कहा कि वह बारिश का पानी किसी के घर से रखा हुआ ढूंढ कर लाए। उसने वजह पूछी तो फ़रमायाः

وانزل من السّماء ماءً مباركة.

(फिर फ़रमाया कि अब शहद ले कर आओ, कि कुरआन मजीद ने इसके बारे में (النحل: ٦٩)......فِيه شفاءٌ للناس

(इसमें लोगों के लिए बीमारियों से शिफ़ा है।)...... कहा है जब वह आ गया तो ज़ैतून का तेल मंगवाया। क्यूंकि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

(यह ज़ैतून के मुबारक दरख़्त हैं।) (النور: ٣٥)......من شجرة مباركة زيتونة

जब यह तीनों चीज़ें आ गईं तो वह इनको मिलाकर पी गए और एक ख़तरनाक बीमरी से दो–तीन दिन में शिफ़ायाब हो गए।

इबने कसीर रह॰ ने हज़रत अली मुर्तुज़ा रज़ि॰ के बारे में बयान किया है कि वह शफ़ा के लिए बीमारों को हिदायत फ़रमाया करते थे कि कुरआन मजीद की कोई सी आयत लिख कर इसको बारिश के पानी से धो कर इस पानी में शहद मिलाकर पी लें। इन्शअल्लाह शिफ़ायाब होंगे। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

ان الخاصرة عرق الكلية اذا تحرّك اذى ماحبها فداوها بالماء المحرق والعسل.

(ابوداؤد۔ مستدرک حاکم)

(गुर्दे का बतन उसकी जान है अगर इसमें सोज़िश हो जाए तो मरीज़ को शदीद अज़िय्यत होती है। इसका इलाज जले हुए पानी और शहद से किया जाए।)

मुहद्दिसीन ने माउलमुहर्रिक़ का लफ़्ज़ी तर्जुमा तो उबला हुआ पानी ही किया है लेकिन तशरीह के दौरान अकसर की राए यह है कि मरीज़ को बारिश का पानी मिलाकर देना इस नुसखे की मुकम्मल तर्कीब है। हमने अपने कई मरीज़ों

को शहद और बारिश का पानी मुतअद्दिद बीमारियों में दिया है। बिलाशुबह दूसरे नुस्ख़ों से ज़्यादा मुअस्सिर है।

नहाने और कपड़े धोने के लिए जब आम पानी के साथ साबुन लगाया जाता है तो बअ़ज़ औक़ात झाग सहीह नहीं बनती। कुछ लोग मुसलसल शिकायत करते हैं कि साबुन अच्छी तरह लगाने के बावजूद सर से मैल पूरी तरह नहीं निकलती। अमरीका के दीहाती इलाक़ों में देखा गया है कि वहां की ख़वातीन अपने कोठों पर बारिश का पानी सर धोने के लिए जमअ करती हैं। यही तर्कीब जब हमने कुछ ख़वातीन को बताई तो वह हैरान हो गईं। क्यूंकि कबारिश के पानी के साथ जब सर धोया गया तो झाग बड़ी मुलायम बनी और उसने बालों की जड़ों से भी चिकनाई और ख़ुश्की धो कर निकाल दी। बारिश के पानी से कपड़े धो कर देखे गए। सफ़ाई करने और मैल निकालने में लाजवाब पाया गया। बारिश का पानी अगर पीने या दवाई के लिए जमा करना मक़सूद हो तो वह मींह बरसने के शुरू में न लिया जाए क्यूंकि फ़िज़ा में धुवां, कीम्यावी अनासिर और आलूदगी होती है। इब्तिदाई बारिश इन चीज़ों को धो कर ज़मीन पर लाती है। और जब यह ख़त्म हो जाते हैं तो इसके बअद की बारिश हर तरह से साफ़ और पाक होती है।

जब बारिश न हो तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके लिए दुआ की और नमाज़ इस्तिफ़साअ़ पढ़ी और जब ज़्यादा हुई तो रुकने की दुआ की। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ रिवायत फ़रमाती हैं कि:

اِنّ رسول اللّٰہ صلی اللہ علیہ وسلم کان اذرأی المطر قال اللّٰھم صیّباً نافعاً (بخاری)

(जब बारिश होती तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुआ करते कि ऐ हमारे रब! तू इसको हमारे लिए मुफ़ीद बना।)

हज़रत अबी मूसा अल–अशअरी की एक रिवायत में मुस्लिम में मज़कूर है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत और बअ़सत बारिश के मुफ़ीद पानी की तरह है जिससे हर बहार छा जाती है और मुर्दा ज़मीन फिर से ज़िंदा हो जाती है। उन्होंने इंसानियत को ज़िंदा किया।

बैर............सिद्र JUJUBE
ZIZYPHUS JUJUBA

गर्म और सोहराई इलाक़ों में बैर एक आम चीज़ है। जंगलों में छोटे–छोटे ख़ुदरौ बैर झाड़ियों में लगे होते हैं। जबकि कुओं और चश्मों के किनारे बैरी (सिद्र) के क़दआवर दरख़्त लगाए जाते हैं। एक आम दरख़्त छः मीटर के क़रीब बुलंद, जिसकी शाख़ों में कांटे और गोल चिकने चमकदार पत्ते लगे होते हैं। ख़ुदरौ बैर जब तक पक कर सियाही माइल न हो जाए, खट्टे और बद–मज़ह होते हैं। मज़रूआ अक़साम में सेब की क़लम लगा कर ऐसी अक़साम भी पैदा कर ली गई हैं जिनका ज़र्द फल भी शीरीं होता है। यह फल उन इलाक़ों में

उगता है जहां सर्दी के मौसम में दरजा हरारत 90 डिगरी से नीचे न जाए।

बैर का असल घर चीन है जहां पर इस के दरख़्त 9 मीटर तक बुलंद हो जाते हैं। इनको ज़र्द रंग के फूल लगते हैं। जो फल लगने से पहले रंग में गहराई इख़्तियार करने लगते हैं 1906 में चीन से बैर की सफ़ेद क़िस्में अमरीका में दरआमद की गईं। और जुनूब मग़्रिबी इलाक़े में ज़राअत की गई। और अब यह वहां का मक़बूल फल है। भारत में बैर की एक क़िस्म ZIZYPHUS MAURITIANA बड़ी आम है। इसके पत्ते अंदर की तरफ़ से ऐसे होते हैं जैसे कि बारीक ऊन के नर्म–नर्म रेशे हों। इसका फल सफ़ेद और भुर–भुरा होता है लेकिन मिठास कम होती है। पाकिस्तान में बैर की मक़बूलियत रोज़–बरोज़ कम होती जा रही है। पहले लोग बड़े शौक़ से घरों में बेरियां लगाते थे। लाहौर में अछरा से मुस्लिम टाउन तक पूरा इलाक़ा बेरियों के बाग़ात पर मुशतमिल था, जहां लम्बे, ज़र्द और मीठे बैर लगते थे। यहां के लोगों को ग़ालिबन यह फल पसंद नहीं आया। मौसम में कभी–कभी किसी रेहड़ी पर सेब की पेवंद वाले बैर नज़र आते हैं और वह भी चंद दिनों के लिए, फिर ग़ायब हो जाते हैं।

अमरीका में बैर के जूस से छोटी–छोटी मोम बत्तियां बनाई जाती हैं जिनको तक़रीबात में जलाया जाता है इनको JUJUBA CANDLES कहते हैं। बैर से कई क़िस्म की चटनियां बनती हैं। इनको गोश्त के साथ सब्ज़ी की मानिंद भून कर पकाया जाता है। इनको शहद और खांड के साथ पका कर इनका लज़ीज़ मुरब्बा बनाया जाता है। चूंकि यहां ज़ाएके में यह खजूर से मिलते हैं इसलिए अर्फ़े–आम में इनको चीनी खजूर भी कहते हैं। बेरी का दरख़्त नुक़सान करने वाले कीड़ों से महफ़ूज़ रहता है।

इरशादाते रब्बानी:

فاعرضوا فارسلنا عليهم سيل العرم وبدّلنٰهم بجنّتيهم جنّتين ذواتي اكلٍ خمطٍ واثلٍ وشيءٍ من سدرٍ قليلٍ..... (سبا:١٦)

(फिर उन्होंने मुंह फेर लिया और हमने इनके दो बाग़ों को ऐसे दो बाग़ों में तब्दील कर दिया जिनमें खट्टे और कड़वे फल, झाड़–झनकार और चंद दरख़्त बेरी के बाक़ी रह गए।)

واصحٰب اليمين ما اصحٰب اليمين فی سدرٍ مخضودٍ وطلحٍ منضودٍ وظلٍّ ممدودٍ..... (واقعہ:٢٧-٣٠)

(और वह जो दाएं हाथ पर होंगे उनकी शान की क्या ही बात है उनके लिए बेरियां होंगी जिनमें कांटे न होंगे, फिर केले होंगे, गुच्छों में और लम्बे–लम्बे और आब्शारों से गिरता हुआ पानी)

इस बेरी की तअरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ से मुस्लिम में रिवायत है कि उसके बैर जिसामत में मटके की मानिंद होंगे, इनके 72 ज़ाएक़े होंगे, मिठास और ख़ुश्बू इसके अलावा होगी।

ولقد راٰه نزلةً اُخرىٰ. عند سدرة المنتهىٰ (النجم:١٣-١٤)

(उन्होंने इसे दोबार देखा। इस बेरी यअ़नी शजरा अलमुंतहा के पास)

यह ज़िक्र हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम को उनकी हक़ीक़ी शक्लों सूरत मे देखने का है। उनको नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो मर्तबा देखा। दूसरी मर्तबा इस बेरी के पास मिले जो इस जहान और जन्नतुल मावा की सरहद पर वाक़ेअ है।

عندها جنّة الماوىٰ. اذيغشى السدرة مايغشىٰ. مازاغ البصر وما طغىٰ.

(النجم:١٥تا١٧)

(इसके पार जन्नतुल मावा है। इस वक़्त बेरी का इस क़िस्म का साया छा रहा था जो इससे आगे के मंज़र को या उसे नज़रों से ओझल कर देता। मगर ऐसे नहीं कि बसारत पर बोझ बने या नज़र एक हद से आगे न जा सके।)

इरशादाते नबवी सल्ल॰

अहादीस में बैर का ज़िक्र बतौर फल, जन्नत में मिलने वाले मेवा और गुस्ले मय्यत के सिलसिले में इसके पत्तों की उफ़ादियत के बयान में मिलता है।

सलीम बिन आमिर रज़ि॰ कहते हैं कि सहाबा किराम रज़ि॰ नबी सल्ल॰ से हर बात की तशरीह बड़ी बे-तकल्लुफ़ी से पूछ लिया करते थे। एक रोज़ एक देहाती आया और उसने पूछा:

يا رسول الله ذكر الله فى الجنة شجرة توذى صاحبها. فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم وماهى؟ قال السدر فان له شوكاً موذياً. فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اليس الله تعالىٰ يقول: فى سدرٍ مخضود. خضد الله شوكه. فجعل مكان كل شوكة ثمرة. فانها لتنبت ثمرة تفتق الثمرة منها عن اثنين وسبعين لوناً من طعام مافيها لون يشبه الأخر...... (ابن النجار)

(ए अल्लाह के रसूल सल्ल॰! अल्लाह तआला ने जन्नत में एक ऐसे दरख़्त का ज़िक्र किया है जो लोगों को तकलीफ़ देता है। उन्होंने पूछा वह क्या है? कहा कि वह बेरी है क्यूंकि इसके कांटे तकलीफ़दह होते हैं। उस पर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया. कि क्या तुमको मअलूम नहीं कि कुरआन मजीद में ऐसी बेरियां बयान फ़रमाई हैं कि अल्लाह तआला ने इनको कांटे दूर करके उनकी जगह फल लगाए हैं। और वह ऐसे फल हैं जिनके 72 रंग और मज़े हैं और ज़ाएक़े और रंग दूसरे से जुदा हैं।)

कुरआन मजीद में मिलने वाले फलों में बैर का ज़िक्र किया है। यह देहाती ग़ालिबन इस बात से घबरा रहे थे कि बेरियों के साथ तो कांटे लगे होते हैं। क्या जन्नत में भी इनको कांटे ही संभालने पड़ेंगे? जिसका मुफ़स्सल जवाब उनकी तशफ़्फ़ी का बाइस हुआ।

इब्ने दहिया ने सहाबा किराम रज़ि॰ अजमईन में से कई बुज़ुर्गों से बेरी के बारे में दरयाफ़्त किया. इनसे उन्हें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी ज़बाने

गिरामी से बेरी के फल के यह औसाफ़ मअलूम हुए।

اختيرت السدرة دون غيرها. لان فيها ثلاثة اوصاف ظلّ ممدودٍ وطعام لذيذ ورائحة ذكية. (بخاری)

(बेरी के फल का किसी और से क्या मुक़ाबला, कि इसके तीन अहम औसाफ़ हैं। इनका साया घना और ठंडा। इसको लज़ीज फल लगते हैं। और इससे अच्छी ख़ुश्बू आती है।)

बैर की तअरीफ़ में मुहम्मद अहमद ज़हबी रह॰ ने रावी का ज़िक्र किए बग़ैर यह हदीस बयान की है कि: रसूल सल्ल॰ ने फ़रमाया।

لما اهبط ادم عليه السلام الى الارض. كان اوّل شئ اكل من ثمارها النّبق...... (ابونعيم)

(हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने यहां के फलों में से जो फल सबसे पहले खाया वह बैर था।)

यह हदीस इब्नुल क़ैय्युम ने भी बयान की है।

इब्नुल क़य्युम ने यह असनाद के बग़ैर नक़ल की है जिसकी सदाक़त के बारे में वह फ़रमाते हैं। "في الحديث المتفق علىٰ صحته" कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मज्लिस में ज़िक्र फ़रमाया:

انه راى سدرة المنتهىٰ ليلة اسرى به واذا انبقها مثل قلال هجر...... (الطب النبوی)

(उन्होंने शबे मेअ़राज आसमान पर सिदरतुल मुन्तहा (बेरी) देखी, इसको लगे हुए बैर?)

हज़रत उम्मे अतिया अंसारिया रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि:

دخل علينا رسول الله صلى الله عليه وسلم حسين توفيت ابنته فقال اغسلنها ثلاثاً اوخمساً اواكثر من ذٰلك بماءٍ وسدرٍ وّاجعلن فى الأخوة كافوراً اوشيًا من كافور. فاذا رفرغتن فاذا فرغتن فاٰذنّنى قالت فلمّا فرغنا اذنّاه فاعطانا حقوه. فقال اشعرنها اياه يحقوه ازاره (مؤطا امام مالکؒ)

(जब रसूल सल्लल्लाहो अलैहि की साहबज़ादी की वफ़ात हुई। और वह हमारे पास तशरीफ़ लाए और कहा कि इसे ग़ुस्ल दो–तीन बार या इससे भी ज़्यादा, यह ग़ुस्ल पानी और बेरी के पत्तों से दिया जाए। और इसके आख़िर में काफ़ूर या इससे बनी हुई चीज़ शामिल करो। फिर कहा कि जब तुम ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हो तो मुझे मुत्तला करो। जब हम ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हुए तो इनको मुत्तला किया गया आप सल्ल॰ ने अपना तहबंद अता फ़रमाया और कहा कि यह इसके बदन पर लपेट दो।)

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि॰ हुज्जतुल विदाअ का एक वाक़िआ बयान फ़रमाते हैं।

بينا رجلٌ واقفٌ مع النبى صلى الله عليه وسلم بعرفةفوقصته ناقته فمات.

فقال صلى الله عليه وسلم اغسلوه بماءٍ وسدرٍ و كفّنوه فى ثوبين ولا تحنّطوه ولا تخمّروا راسه فان الله تعالىٰ يبعثه يوم القيامة مليًّا.

(ترمذی، ابن ماجہ، ابوداؤد)

(हमारे साथ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक शख़्स खड़ा था मैदाने अरफ़ात में, उसकी ऊंटनी ने उसे गिरा दिया। गरदन टूट गई और वह मर गया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसे पानी और बेरी के पत्तों से ग़ुस्ल दो। और दो कपड़ों में कफ़न दिया जाए। इसका सर कपड़े से ढांपा न जाए और इसे ख़ुश्बू न लगाई जाए क्यूंकि यह क़यामत के रोज़ जब उठेगा तो लब्बैक पुकारता हुआ उठेगा।)

इस हदीस में हज के दौरान और हालते एहराम में वफ़ात पाने वालों को कफ़न–दफ़न के बारे में भी उसूल मरहमत फ़रमा दिया गया। इन लोगों को जो ख़ुदा के रास्ते में वफ़ात पा गए ख़ुश्बू न लगाई जाए।

दो कपड़ों में दफ़्न किए जाएं और उनका सर नंगा रखा जाए क्यूंकि जब यह रोज़े हश्र उठाए जाएंगे तो एहराम की हालत में होंगे और एक हाजी की तरह लब्बैक–लब्बैक पुकारते उठेंगे। इस सिलसिले में कुछ उलमा का ख़याल मुख़्तलिफ़ है। अलबत्ता इमाम शाफ़ई रह. की फ़िक़्ह में यही तरीक़ा दुरुस्त और मुरव्विज है।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

मुहम्मद अहमद ज़हबी रह. के ख़याल में बेहतरीन बैर पहाड़ी इलाक़े की बैरियों से हसिल होते हैं। वह बेरी को उम्र में सौ साल से भी बढ़ता हुआ देखते हैं और इसके पत्तों को तासीर में गर्म और फल को सर्द गर्दांते हैं। बैर का रस निकाल कर इसे खांड के साथ पका कर जो शर्बत बनाया जाता है वह प्यास को तस्कीन देता है। और घबराहट को दूर करता है। बैर के फ़वाइंद में उन्होंने एक बीमारी "अलहैब" बयान की है। इसके लफ़्ज़ी मअने किसी चीज़ को दहशतनाक बना देना है। इसको दहशत और हैबत के मअने में भी इस्तेमाल किया गया है। ग़ालिबन उनकी मुराद यह है कि वह बीमारी जिसमें मरीज़ों पर दहशत सवार हो रही हो, वह नींद में डरता हो, उसके लिए बैर का रस निकाल कर उसका शर्बत पिलाना मुफ़ीद है।

बैर खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। इसका जोशांदा पीने से बढ़ी हुई तिल्ली कम हो जाती है और मुसलसल पिलाने से पेट में अगर पानी पड़ा हुआ हो तो इसमें फ़ाएदा होता है।

इब्नुलक़य्युम रह. ने बैर को बड़ी मुफ़ीद चीज़ क़रार देते हुए इसे इस्हाल और मैअदे की कमज़ोरी के लिए लाजवाब क़रार देते हैं। इनका मुशाहिदा है कि यह निज़ामे हज़्म की इस्लाह करके इसे सहीह हालत पर ले आता है। फ़वाइद में उन्होंने एक जामेअ लफ़्ज़ "ينفع الذرب الصفراوى" बयान किया है। ज़रब के मअने किसी ऐसी बीमारी का इलाज करना भी है जो आसानी से ठीक न हो रही

हो। यह पेचिश के लिए भी मुस्तैअमिल है और जब ज़राब सुफ़रावी बयान करते हैं तो इनका मक़सद ऐसे इस्हाल है जो तबीअ़त में सुफ़रावी माद्दा या दूसरे अलफ़ाज़ में जरासीमी सोज़िश की वजह से आ रहे हों। आंतों की ख़राश और जलन को दूर करता है। जिस्म को उम्दा गिज़ा मुहैया करके गिरी हुई तबीअत को बहाल करता है। भूख बढ़ाता है और अगर इसे कूट कर खाया जाए तो झिल्लियों को ताक़त देता है। इसके खाने से बलग़म ज़्यादा पैदा होती है और बाज़ के नज़्दीक क़ाबिज़ है इसके मुज़िर असरात को दूर करने का आसान तरीक़ा यह है कि इसे शहद के साथ खाया जाए क्यूंकि शहद इसके तमाम मुज़िर असरात को ख़त्म कर देता है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बैर को लज़ीज़ फल क़रार देने और इसे जन्नत का मेवह होने की हैसियत से अहमियत अता फ़रमाने के बअद इसके पत्तों को सफ़ाई के लिए मुन्फ़रिद क़रार दिया है। जब कोई मुसलमान वफ़ात पाता है तो इसको ख़ुदा के सुपुर्द करने से पहले पाक–साफ़ किया जाता है। इसके ज़िस्म से हर तरह की ग़िलाज़त नहला कर दूर करवाते हैं, फिर उसे वुज़ू करवा कर साफ़ कपड़ों में लपेट कर दफ़्न किया जाता है। जिस्मानी सफ़ाई के अमल के लिए बैरी के पत्तों के पानी को यहां पर बेहतरीन क़रार दिया गया कि जब उन (सल्ल॰) की अपनी साहबज़ादी (रज़ि॰) फ़ोत हुई तो उनको भी बेरी के पत्तों के पानी से ग़ुस्ल दिया गया। पुरानी ख़वातीन सर धोने के लिए बेरी के पत्ते और रीठे उबाल कर सर की जिल्द की सफ़ाई किया करती थीं। इस तरह धोने से बाल लम्बे और चमकदार हो जाते थे और यह फ़वाइद आज के किसी भी शैम्पू में नहीं।

अतिब्बाा क़दीम के मुशाहिदात:

बैर के दरख़्त का तना मोटाई में कम होता है। दरख़्त पचास फ़िट ऊंचा भी हो तो यह गोलाई में आठ फ़िट के क़रीब ही रहता है। इसकी शाख़ों का फैलाओ ख़ूब होता है। फागुन और चेत में पुराने पत्ते गिर कर नए पत्ते असाढ़ और सावन में निकलते हैं फागुन तक फल पकते हैं हर टहनी में एक कांटा सीधा और एक मुड़ा हुआ लगता है। पत्तों की ऊपर की सतह गहरी सब्ज़ और चिकनी जबकि अंदर की तरफ़ का रंग हल्का होता है। बैरी की छाल में दराड़ें होती हैं। जिनसे गोंद और लाख निकलती है, छाल से कपड़े और चमड़ा रंगने के लिए लाल रंग हासिल होता है।

बैर से अगर्चे ख़ून कम बनता है मगर जितना भी बनता है वह उम्दा क़िस्म का होता है। देर में हज़्म होता है मगर दूसरी ग़िज़ाओं को हज़्म करने में मददगार हो सकता है। जितना शीरीं और पका हुआ हो उतना ही मुफ़ीद होता है। अगर्चे क़ब्ज़ पैदा नहीं करता लेकिन इसहाल को बंद करता है। बू–अलीसेना कहता है कि बैर ख़्वाह ख़ुश्क हो या ताज़ा, तबीअ़त में लताफ़त और ख़ुश्की पैदा करता है। खाने से पहले खाया जाए तो भूख बढ़ाता है। प्यास बुझाता है। ज़्यादा मिक़दार दस्त आवर है। मीठे बैरों का रस 3 तोला रोज़ाना पीने से आंतों

में जमा सुफ़रा निकल जाता है। पेट के सुद्दे निकालता है और आंतों को तक़्वियत देता है। अगर इसमें खांड मिला ली जाए तो फ़वाइद में इज़ाफ़ा होता है। पके हुए बैर लेकर इनकी गुठली निकाल कर अगर सुखा लिए जाएं तो इनको पानी में डाल कर शहद या खांड के साथ पकाने के बअद ताज़ा बैरों की मानिंद फ़वाइद हासिल किए जाते हैं। यह सत्तू आंतों से निकलने वाले ख़ून को बंद करते हैं। इनको सर्द पानी के साथ फांकने से मेअदा की रतूबत ख़ुश्क हो जाती है। अगर शीरख़्वार बच्चे को मौसमे गर्मा में प्यास लगने लगे तो सूखे बैर चंद घंटे पानी में भिगो कर इनका पानी पिलाएं।

वैद कहते हैं कि खट्टे–मीठे और कसैले बैर क़ाबिज़ और ज़ोद हज़्म होते हैं। थोड़े से मुलय्यन हैं। ख़ुश्की और थकावट दूर करते हैं। मिसरी की चाशंनी में लौंग और बैर की गुठली पीस कर देने से जी मतलाना और उबकाई बंद हो जाते हैं। धूप में सुखाए हुए बैर और इसके दरख़्त की जड़ को पीस कर इसका जोशांदा देने से सुफ़रावी बुख़ार दूर होते हैं। इससे ख़ून साफ़ होता है। कच्चे बैर को नमक और सियाह मिर्च लगाकर खाने से ...... ठीक हो जाता है।

बैर की छाल का जोशांदा पीने से दस्त बंद हो जाते हैं हमारी राए में दस्त बंद करने के लिए छाल पिलाना ख़तरे से ख़ाली नहीं दमा और खांसी में बैरी के पत्ते नमक मिलाकर खाना मुफ़ीद है।

मुंह के छाले दूर करने के लिए कीकर और बैरी की छालों के जोशांदे से कुल्लियां करना फ़ोरी फ़ाएदा करता है। बैरी और नीम के पत्ते घोट कर गंज पर लगाने से बाल उगते हैं। इसकी कोंपलों को पीस कर दही में हल करके जले हुए ज़ख़्म को दुरुस्त कर देता है।

बैर की गुठली पीस कर टूटी हुई हड्डी वाले मक़ाम पर लगाने से दर्द कम होता है। और हड्डी जल्द जुड़ जाती है। इसके फूल घोट कर पानी और सिरका में बदन पर मलने से हिस्सासियत यानी पित्ती उछलना दूर हो जाती है। हिंदू, फ़क़ीर और जोगी तवानाई हासिल करने के लिए बैरी की जड़ें ले कर इनका पानी निकाल कर या इनको पानी में जोश दे कर शहद मिलाकर पीते हैं। बैर का ज़िमाद तमाम सोज़िशी वरम कम करता है। गूलड़ और बैरी के पत्ते पीस कर बिच्छू का ज़हर उतारने के लिए लेप करना मुफ़ीद होता है, अतिब्बा ने इसको मुज़िर असरात को दूर करने के लिए मुस्तगी रूमी या सिकंजीन तज्वीज़ की है।

जदीद मुशाहिदातः

आम बैर की तीन क़िस्में काश्त की जाती हैं। जंगली बैर, यह ज़ाएक़ा में फीके भी हो सकते हैं और खट्टे भी। बहुत कम झाड़ियों में शीरीं बैर मिलते हैं। दूसरी क़िस्म "सूफ़ी मुट्ठी" कहलाती है। क्यूंकि यह बैर छोटे और मीठे होते हैं। "सूफ़ी खेती की कई क़िस्म हैं और राजपूताना के इलाक़े में मिलती है। सोहरांओं के मुसाफ़िर और चरवाहे इनको शौक़ से खाते हैं। जंगली क़िस्म को हुकूमत मुम्बई के ज़रई गज़िट में मुक़व्वी ग़िज़ा होने के अलावा खट्टी होने की वजह से बद–ज़ाएक़ा क़रार दिया है। माहिरीन ने इसे भूख लगाने वाली और मुक़व्वी मैअ़दा क़रार दिया है। सेब के साथ पैवंद बैरी को लम्बे बेर लगते हैं

जिनका गूदा ज़्यादा मीठा और ख़ुश्बूदार होता है। यह ताज़ा और सूख जाने के बाद भी बल्ग़म निकालता और क़ब्ज़ को दूर करता है। इसे गोश्त के साथ सालन की मानिंद दूसरी सब्ज़ियों के साथ पकाते हैं। इसकी गुठली निकाल कर इसमें सुर्ख़—मिर्च और नमक डाल कर अचार डाला जाता है। जो कि आम जिस्मानी कमज़ोरी और ज़अ़फ़ में मुफ़ीद है। इसी नुस्ख़े को अचार की बजाए मार्मलेड की शक्ल भी दी जाती है। बैर का गूदा निकाल कर इसे ख़ुश्क करके महाराष्ट्र में "बोरकट" के नाम से खांड मिलाकर चटनी बनाई जाती है और यह मुरब्बानुमा चटनी हाज़्मा की अकसर ख़राबियों के लिए मुफ़ीद है। हमने बैर की इस चटनी के नुस्ख़े में अदरक को भी शामिल किया तो फ़वाइद मज़ीद बहतर हो गए। हमारी राए में सौंठ और बैर ले कर इनको पानी और शहद में पकाने के बाद लऊक़ बनाया जाए और इसका छोटा चम्चा खाने के बअद इस्तेमाल करना पेट की अक्सर बीमारियों बल्कि जिगर और गुर्दों की ख़राबियों में भी मुफ़ीद होगा।

कर्नल चोपड़ा ने बैर के फ़वाइद का ख़ुलासा करते हुए क़रार दिया है कि मुफ़ीद तरीन बैर वह हैं जो चार हज़ार फुट से ज़्यादा बुलंदी पर पैदा हों। बेरी के पत्ते कूट कर ज़ख़्मों को पकाने के लिए बेहतरीन पलट्स बनाते हैं। खुले ज़ख़्मों पर इसका मर्हम ज़ैतून के तेल में मिला कर लगाने से ज़ख़्म भरते हैं और सोज़िश दूर होती है। बेरी की जड़ का जोशांदा या इसको पीस कर पुराने इसहाल में देना मुफ़ीद होता है।

बैर का फल ख़ुवाह ताज़ा हो या सूखा, अपनी लेस की वजह से मुंह, मेअ़दा और आंतों की जलन दूर करता है। यह ख़ून साफ़ करता है। आंतों या मैअ़दा से अगर ख़ून आ रहा हो तो बैर खाने से बंद हो जाता है। आंतों में होने वाली बेजा हरकत को बंद करके इस्हाल को रफ़अ करता है।

बैर की कीम्यावी साख़्त में लेसदार माद्दों, मिठास, समरी हमूज़ात की मौजूदगी इसे कमज़ोरी के अलावा मेअदा और आंतों के अलसर के लिए मुफ़ीद बना देते हैं। अलसर के लिए दी जाने वाली अक्सर अदविया में ख़राबी यह है कि वह तेज़ाब को ख़त्म करने के साथ ख़ुराक को हज़्म करने वाले जौहर भी ख़त्म कर देती हैं। यह तो दुरुस्त है कि ऐसा करने से दर्द और जलन ख़त्म हो जाते हैं लेकिन मरीज़ की भूख उड़ जाती है। और वह खाना हज़्म करने के क़ाबिल नहीं रहता। तिब्बे नबवी में मज़्कूर बैर, बही और जौ अपने अंदर लेस रखने की वजह से फ़ाल्तू तेज़ाब को ख़त्म कर देते हैं लेकिन वह हाज़्मा के अमल में दख़ल अंदाज़ नहीं होते बल्कि बैर हाज़्मा में मुआविन है। इसमें ख़ुराक को हज़्म करने वाले कीम्यावी अनासिर भी मौजूद हैं। इसलिए अल्सर में इन तीन में से किसी एक का या बहतर फ़वाइद के लिए तीनों का इस्तेमाल मर्ज़ को जल्द दूर करता और मरीज़ की सहत को भी बहाल करता है।

बेरी की जड़ों का रस निकाल कर वैद इसे क़ब्ज़, गंठिया और जोड़ों के दर्दों के लिए पिलाते हैं और इसमें तिल्ली का तेल मिलाकर जोड़ों की तकालीफ़ के लिए मालिश करते हैं।

होम्यो पैथिक तरीक़ए इलाज में BERBERIS को बअज़ तर्जुमा करने वालों ने बैर से हासिल करदा बयान किया है जो कि दुरुस्त नहीं यह सिटराबेरी वग़ैरा से हासिलशुदा है।

नबाताती खान्दान के लिहाज़ से उन्नाब का बैर से क़रीबी तअल्लुक़ है बल्कि शक्लो सूरत में भी तक़रीबन एक जैसे हैं। सबसे अच्छे उन्नाब चीन से आते हैं जिनको उन्नाब विलायती कहते हैं। यह खांसी, ज़ुकाम, गले की सोज़िशों के लिए बड़े मशहूर और मुफ़ीद हैं।

पानी - अलमाअ
WATER

दुनिया में सबसे ज़्यादा पाई जाने वाली चीज़ पानी हैं अंदाज़ा लगाया गया है कि दुनिया के कुल रक़बे का तीन चोथाई पानी पर मुशतमिल है और एक चौथाई में ख़ुश्की है। पानी की मिक़दार को 330 मिल्यन मुकअब फुट क़रार दिया जाता है। जिसमें से 97 फ़ीसदी नमकीन समंदरी पानी की सूरत में है। यह पानी शूर और नमकीन होने की वजह से क़ाबिले शुर्ब नहीं लेकिन समंदरी हैवानात इसमें पलते और ज़िंदा रहते हैं। कुछ समंदर ऐसे भी हैं जिनमें नम्कियात की मिक़दार इतनी ज़्यादा है कि जानवर भी इनमें ज़िंदा नहीं रह सकते। जैसे कि मश्रिक़े वुस्ता में बहीरए मुर्दार। दुनिया के बक़ाया पानी में से दो फ़ीसदी क़ुतबैन, साईबीरिया और दूसरे बर्फ़ानी इलाक़ों में मुंजमिद बर्फ़ की सूरत में है और सिर्फ़ एक फ़ीसदी दरयाओं, झीलों, नदी नालों और तालाबों की शक्ल में मिलता है। दिलचस्पी की बात यह है कि समंदरों में नमक की मिक़दार इनसानी जिस्म में पाए जाने वाले नम्कियात से बराहे रास्त तनासुब में है।

हैवानात और नबातात के अज्साम का मअक़ूल हिस्सा पानी पर मुशतमिल है। जिस्म इनसानी का दो तिहाई पानी है। जदीद तहक़ीक़ात से यह बात अब मालूम हुई है कि कुर्रए अर्ज़ पर ज़िंदगी की इब्तिदा भी पानी से हुई। जिस हक़ीक़त को मुद्दतों पहले क़ुरआन मजीद ने यूं बयान फ़रमाया:

اولم يرالذين كفروآ انّ السّموٰت والارض كانتا رتقاً ففتقنٰهما وجعلنا
من الماء كلّ شئ حيّ ط افلا يؤمنون (الانبياء:۳۰)

(क्या नहीं देखा उन लोगों ने जिन्होंने कुफ़्र किया कि आसमान और ज़मीन के मुंह बंद थे और इन दोनों के दरवाज़े खोले गए और हमने हर ज़िंदा चीज़ को पानी से बनाया।)

पानी से ज़िंदगी शुरू होती है और वही इसका ग़ालिब जुज़्व है और इसी पर मदारे हयात है। एक आम इन्सान को अपनी सफ़ाई, घर की सफ़ाई, खाना पकाने और पीने के लिए रोज़ाना तीस गेलन पानी की ज़रूरत है इसको वक़्ती तौर पर कम तो किया जा सकता है लेकिन मुस्तक़िल तौर पर ऐसा करने से तंदरुस्ती

मुतास्सिर हो सकती है। जैसे कि योरप में जिस्मानी और ज़ाती सफ़ाई का रिवाज नहीं। रफ़ा हाजत के बाद मुसफ़्फ़ा पानी से जिस्म को धोना इस्लाम की ईजाद है। और पत्थरों, मिट्टी के ढेलों या काग़ज़ों से ग़िलाज़त हरगिज़ दूर नहीं होती। ग़िलाज़त जिस्म से चिपकी रह जाती है। बालों में फंस जाती है और बाद में जिल्द की मक़ामी बीमारियों का बाइस होती है। रफ़अ हाजत के बअद जिस्म को पानी से धोने और बाक़ाएदा नहाने वाले को जिल्द की अक्सर बीमारियां नहीं होतीं।

पानी का अपना कोई रंग नहीं। बयान में इसे बे–रंग कहा जात है। हालांकि इसकी मिक़दार ज़्यादा हो तो नीलगूं नज़र आता है। लेकिन बड़े ज़ख़ीरों में रंग में थोड़ा सा फ़र्क़ आ जाता है। चीन के दरयाए यांग्सी को दरयाए ज़र्द कहा जाता है क्यूंकि इसके पानी का रंग पहाड़ों से बह कर आने वाली मिट्टी की वजह से ज़र्द लगता है। इसकी गुज़रगाह में मिट्टी इतनी ज़्यादा है कि सालानह अढ़ाई इंच मिट्टी इसकी तह में बैठ जाती है। यही सूरतहाल नहरों की है क्यूंकि इनमें दरयाओं का पानी आता है और वह अपने किनारों की मिट्टी भी काट कर अपने में शामिल करती हैं।

पीने के लिए पानी हासिल करने के आम ज़राए दरया, नदी–नाले, नहरें, तालाब, झीलें, चशमे, कारेज़ और कुएं हैं। जब बारिश बरसती है या सरदी की वजह से आबी बुख़ारात मुंजमिद होकर पहाड़ों पर गिरते हैं तो यह पानी नालों, दरयाओं और चश्मों की सूरत बहते हुए मैदानी इलाक़ों की सिम्त में आ जाता है। बारिश का पानी रिस्ते–रिस्ते ज़मीन के नीचे चला जाता है। जिसे हैंड पम्प या कुआं खोद कर हासिल किया जाता है। आम कुआं ज़्यादा गहरा नहीं होता। चूंकि बालाई सतह में पानी की मिक़दार ज़्यादह नहीं होती इसलिए ज़्यादह मिक़दार हासिल करने के लिए कुआं ज़्यादा गहराई में खोदा जाए। आम पीने के लिए ज़्यादा गहराई में नहीं जाते लेकिन जब पम्प लगाने का मक़सद खेतों को सेराब करना या किसी वसीअ आबादी को पानी मुहैय्या करना हो तो इसकी गहराई 100 मीटर के लग–भग होती है।

देहात में कुएं के पानी को ठंडा रखने के लिए इसके किनारों पर घने साए वाले दरख़्त लगाने का रिवाज है। ज़्यादा तर बड़ और पीपल के दरख़्त देखने में आते हैं। इन दरख़्तों के सूखे पत्ते, बड़ के गूलर, दरख़्तों पर बसेरा करने वाले जानवरों के पर और उनकी निजासतें कुएं में मुसलसल गिरती रहती हैं। अक्सर कुएं क़बरस्तानों में बनाए जाते हैं। इस क़िस्म के कुओं का पानी इंसानी इस्तेअमाल के क़ाबिल नहीं होता। अलबत्ता आब्पाशी के लिए ठीक है।

समंदर और दरयाओं के क़रीब ज़ेरे ज़मीन पानी की सतह ज़्यादा गहरी नहीं होती इसलिए मअमूली खुदाई पर पानी निकल आता है। दरयाए ब्यास के किनारे भारत की रियासत कपूरथला में सात और आठ फ़ुट गहरे कुएं देखे गए। ख़लीजे अरब के किनारे बहरीन से मुत्तसिल सऊदी अरब के शहर अल–क़तीफ़ में ज़ेरे ज़मीन इतना क़रीब है कि क़ब्र खोदने पर लहद पानी से भर जाती है। इसलिए लोग अपने मुर्दों को ताबूत में रखकर लहद के बग़ैर दफ़न करते हैं।

दुनिया में कुछ मक़ामात ऐसे हैं कि जहां ज़ेरे–ज़मीन पानी का दबाओ इतना ज़्यादा है कि इसको जहां से भी ज़मीन कमज़ोर महसूस हो उछल कर बाहर आ निकलता है। इसे चश्मा कहा जा सकता है। ख़लीज अरब के जज़ीरा तारूत में जब ज़मीन में नल्का लगाने के लिए सुराख़ किया जाता है तो पानी अपने आप उछल कर बाहर आता रहता है। इस तरह नल्के के साथ पम्प लगाने की ज़रूरत नहीं रहती। आस्ट्रेलिया में भी ऐसे ख़ुदकार कुएं पाए जाते हैं जिनको ARTISAN WELL कहते हैं। चश्मा अगर ऊंची जगह से नीचे ज़ेरे ज़मीन गंधक और ख़ामोश आतिशफ़िशां पहाड़ों की तहों से निकलने वाले चश्मों का पानी गर्म होता है जैसे कराची में मंघूपीर के चश्मे, हॉल रोड लाहौर पर एक पम्प का पानी जिल्दी इम्राज़ के इलाज में शोहरत रखता है। इन पानियों में गंधक की मिक़दार ज़्यादा नहीं होती। इसलिए शिफ़ा पाने के लिए मुद्दतों रोज़ाना इस्तेअमाल ज़रूरी है।

सतह ज़मीन के नीचे हर क़िस्म की मिट्टी और मअदनयात पाए जाते हैं। ज़ेरे ज़मीन जिस इलाक़े से भी पानी हासिल होगा इसमें इस इलाक़े की ज़मीन के नम्कियात और मअदनयात की आमीज़िश होगी जैसे गंधक, नमक, कारबोनेट, मैग्नेशियम वग़ैरह। गर्म पानी के चश्मे ज़ेरे–ज़मीन दरजए हरारत की ज़्यादती और गंधक की वजह से गर्म होते हैं। इसी तरह शाही चश्मह श्री–नगर (कश्मीर) और इल्यासी मस्जिद एबट आबाद के पानी में भारी मअदनयात, सलफ़ेट और कारबोनेट ज़्यादा हैं। इसलिए पानी पीने के फ़ौरन बाद डकार आ जाती है। लोग समझते हैं कि उसने खाना हज़्म कर दिया।

दरयाओं, नहरों और नदी नालों का पानी गदला होने के बावजूद किसी बीमारी का बाइस नहीं होता। क्यूंकि बहने के दौरान सूरज की रौशनी, लहरों की अलट–पलट से ऑक्सीजन के असरात, आबी जानवर, पानी की मिक़दार ज़्यादा होने की वजह से निजास्तों की मिक़दार कम हो जाती है और बहाओ की तेज़ी जहां कम हो काफ़ी चीज़ें नीचे बैठ जाती हैं। इस मसले पर एक दिलचस्प वाक़िआ अमरीका में हुआ।

एक रियासत के गंदे नाले दरया में गिरते थे। उससे अगली रियासत के लोग वही पानी पीते थे। एक मर्तबा रियासत में कोई वबा फूट पड़ी उन्होंने बालाई रियासत वालों पर इल्ज़ाम लगाया कि उनकी लापरवाई की बदौलत गंदे पानी की वजह से हमारे यहां वबा फूटी। इसलिए हरजाना दिलाया जाए। मसला सुप्रीम कोर्ट में गया। जहां माहिरीने जरासीम ने फ़न्नी आराअ दीं और फ़ैसला किया गया कि ग़िलाज़त अगर दरिया में डाली जाए तो तीन मील बहने के बाद वह ज़रर रसां नहीं रहती।

लाहौर के मुतअद्दी इम्राज़ के हस्पताल के गंदे पानी को जब आम सीवर में डालने का मसला पैदा हुआ तो हमें अंदेशा था कि तपे–दिक़ और हैज़ह के मरीज़ों की निजासतें जब सीवर में पड़ेंगी और यह सीवर बअज़ औक़ात आबपाशी के लिए भी इस्तेअमाल होते हैं, ख़ुदा न करे कि हमारी ग़लती से कोई वबा फूट पड़े। इस मुआमले में इल्मुल जरासीम के जय्यद उस्ताद प्रोफ़ेसर

अब्दुल मजीद ख़ान साहब से राए ली गई। उन्होंने फ़रमाया कि सीवर में थोड़ी देर रहने के बअ़द जरासीम मर जाते हैं। इसलिए गंदा पानी बेशक शामिल कर दिया जाए। इसके बरअक्स दरियाए गंगा में हरिद्वार से 10 मील दूर तक हैज़ा के जरासीम पाए जाते हैं। इल्मी तौर पर यह वाक़िआ हैरत की बात है मगर इसके रावी एक सक़्क़ह मारता आलिम प्रोफ़ेसर घोश हैं। शायद इसीलिए हुकूमत हिंद, फ़्रांस के तआवुन से दरयाए गंगा को साफ़ करने पर करोड़ों रुपए सर्फ़ कर रही है। मज़े की बात यह है कि हरिद्वार से ऊपर लक्शमन झूला के मक़ाम पर दरयाए गंगा का पानी निहायत लज़ीज़ और महफ़ूज़ है।

यही वुजूहात थीं जिनकी बिना पर इस्लाम ने आबे जारी को पाक क़रार दिया। इससे वुज़ू करना, नहाना और पीना जाइज़ है। बल्कि इसकी दूसरी उफ़ादियत के बारे में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि॰ रिवायत फ़रमाती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ثلاث يحللن البصر. النظر الى الخضرة والى الماء الجارى والى الوجه الحسن (ابونعیم)

(तीन चीज़ें नज़र को जिला यअनी ताक़त देती है। सब्ज़े को देखना, बहते हुए पानी को और ख़ूबसूरत चेहरों को देखना।)

यही हदीस मुस्तदरिकुल हाकिम ने तारीख़ में हज़रत अली रज़ि॰ से और अलख़राइती ने हज़रत अबू सईद रज़ि॰ से, जबकि अबुलहसन अलइराक़ी ने इसे हज़रत बरीदा रज़ि॰ से रिवायत करते हुए बसारत में इज़ाफ़ा करने वाली चीज़ों की फ़हरिस्त में अस्मद ANTIMONY के सियाह सुर्मा को शामिल किया है।

दरया जब जंगलों और खुले मक़ामात से गुज़रते हैं तो इनके पानी के ऊपर ऑक्सीजन की एक क़िस्म OZONE इसके ऊपर मिलती है जिसका रंग नीलगूं होता है यह गैस पानी को इस हद तक साफ़ करती है। कि आज कल बअ़ज़ अमरीकी रियास्तों में पानी को क्लोरीन जैसी बदबूदार गैस से साफ़ करने की बजाए इसकी आमीज़िश से साफ़ करते हैं।

पानी की बीमारियां:

पीने वाले पानी के बारे में शदीद तवज्जह की ज़रूरत है। अगर इसमें जरासीम या ग़िलाज़त मौजूद हो तो मुतअद्दिद मुहलिक बीमारियों का बाइस हो सकता है। बहुत मुद्दत हुई शहर लाहौर के अंदरूनी अलाक़े के पानी में किसी तरह तपे–मुहर्रिक़ा के जरासीम दाख़िल हो गए। चौक सरजन सिंह से लेकर डबी बाज़ार और दहली दरवाज़े तक हज़ारों अशख़ास इसमें मुब्तिला हो गए। रावी रोड पर गुरूदत्त भवन के कुएं में इस्हाल के जरासीम दाख़िल होने से चार सौ अफ़राद हैज़ा में मुब्तिला हो गए। अगर पीने वाला पानी आलूदा हो तो एक ही वक़्त में हज़ारों अफ़राद बीमार होते हैं। इसीलिए शहरों में पीने वाले पानी को साफ़ रखने के साथ–साथ इसमें रोज़ाना क्लोरीन मिलाई जाती है। और रोज़ाना इसका मुआएना किया जाता है ताकि इसमें कोई मिलावट अगर शामिल हो जाए तो इसे बरवक़्त दूर कर लिया जाए।

पानी के ज़रिए आम तौर पर जरासीमी बीमारियों में हैज़ा इस्हाल, पेचिश, तपे मुहर्रिक़ा, यरक़ान, कुकरे, फ़ालिज हो सकते हैं पानी में ग़िलाज़त अगर फ़ुज़ला की आमीज़िश हो तो इस वजह से वहां पेट के तुफ़ैली कीड़े, पेचिश वाला अमीबा हो सकते हैं। अफ़्रीक़ी मुमालिक और मिस्र में बल्हार ज़याफ़ील या और दूसरी ख़तरनाक बीमारियों के कीड़े भी मिलते हैं।

पानी में आयोडीन न हो तो इससे ग़दा वरक़िया बढ़ जाता है। और गुल्हड़ GOITRE की बीमारी लाहिक़ हो जाती है। पानी में फ़्लोराइड न हो तो बच्चों के दांत कम्ज़ोर पड़ जाते हैं और इनमें कीड़ा लग जाता है। अमरीका के मुतअद्दिद शहरों में पानी फ़्लोराईड के बग़ैर होता है। जिससे इनके स्कूल की उम्र के बच्चों के दांत ख़राब हो जाते हैं। इससे बचाओ के लिए वह पानी में फ़्लोराइड अलाहिदा से शामिल करते है लेकिन जिन मक़ामात पर यह मौजूद हो। फिर शामिल करना मुनासिब नहीं। जैसे कि लाहौर के पानी में इनकी मतलूबा मिक़दार पाई जाती है लेकिन हमारे यहां बदक़िस्मती यह है कि अमरीकी मुशाहिदात अक़्ल को इस्तेअमाल किए बग़ैर अपने लिए क़ुबूल कर लिए जाते हैं। इस ज़िम्न में चंद अख़बारी बयान भी जारी हो चुके हैं। जबकि हक़ीक़त यह है कि हमारे यहां दांत बाक़ाएदा सफ़ाई न रखने की वजह से ख़राब होते हैं। दूसरे अलफ़ाज़ में जब हम ज़िंदगी गुज़ारने में इस्लामी तअलीमात को फ़रामोश करें तो दांत ख़राब होते हैं।

पीने वाला पानी के तजज़िया और इससे ख़तरात को तवज्जह रखने के लिए क़ुरआन मजीन ने एक शान्दार रहबरी अता फ़रमाई है।

افرأيتم الماء الذى تشربون. (واقعہ:۶۸)

(और बतलाओ कि जिस पानी को तुम पीते हो वह कहां से आया और वह कैसा है?)

हमारे लिए यह वाजिब है कि हम पानी के मेअ़यार पर नज़र रखें। मुकम्मल और क़ाबिले एतिमाद तजज़िया सिर्फ़ इसी सूरत में मुम्किन है जब हमारे पास टेस्ट करने वाली बाक़ाएदा लेबारेट्री मौजूद हो। लेकिन हर जगह और हर मक़ाम पर ऐसी लेबारेट्री का मयस्सर आना मुम्किन नहीं। किसी गांव या जंगल में रहने वाला अगर यह जानना चाहे कि वह किस तरह फ़ैसला करे कि जिस पानी को वह पी रहा है। वह इनसानी इस्तेअमाल के लिए महफ़ूज़ है या नहीं इसका जवाब हज़रत अबी इमाम तुलबाहिली रज़ि. बयान करते हैं कि नबी सल्ल. ने फ़रमायाः

ان الماء لا ينجسه شئ الا ماغلب على ريحه وطعمه ولونه.

(بيهقى۔ ابن ماجه، ابى حاتم)

(पानी पाक है। कोई चीज़ इसको उस वक़्त तक ख़राब नहीं करती जब तक कि उसकी ख़ुश्बू, ज़ाएक़ा और रंग को तब्दील न कर दे।)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ि. बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने फ़रमाया:

اذا بلغ الماء اربعين قلة فانه لايحمل الخبث (عقیلی)

(और जब पानी की मिक़दार चालीस मश्कों से ज़्यादा हो जाए तो निजासत इस पर ग़लबा नहीं पाती।)

इस एक रिवायत में चालीस मश्क ज़िक्र किया गया है वरना हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से मसनद अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा और दूसरे असहाब की रिवायात में दो मश्क या उससे ज़्यादा बयान किया गया है। दो मश्क पानी एक मअमूली मिक़दार है। इसलिए वह आसानी से गंदा हो सकता है। हमने ज़ाती तौर पर चालीस मश्क वाली बात को माकूलियत के क़रीब क़रार देते हुए इसे ज़िक्र किया है। वरना मुहद्दिसीन की अक्सरियत दो मश्कों पर ही यक़ीन रखती है।

पानी की मिक़दार अगर ज़्यादा हो तो ख़राब नहीं होती। इसमें इल्मे कीमिया का वही उसूल कार फ़रमा है। जिससे दरयाओं का पानी गंदा नहीं होता। क्यूंकि ज़्यादा मिक़दार में DILUTION की वजह से ग़िलाज़त का तनासुब बराए नाम रह जाता है। इस पर इज़ाफ़ा फ़रमाते हुए उन्होंने पानी के ज़ख़ाइर, नदी–नालों और तालाबों के क़रीब रफ़ा हाजत करना मम्नूअ फ़रमाया। जिस शख़्स को गुस्ल या तहारत की ज़रूरत हो वह पानी को ज़ख़ीरे से निकाल कर अलाहिदा ले और अपने जिस्म को साफ़ करे। यह पानी किसी सूरत में ज़ख़ीरे में वापस न जाए।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पानी के बर्तनों को ढांप कर रखने, मशकों के मुंह बदं रखने, मश्क के मुंह को मुंह लगाकर न पीने की हिदायत फ़रमाई। वह अपने ज़ाती इस्तेअमाल के लिए ऐसा पानी पसंद फ़रमाते थे जो कम–अज़–कम एक दिन पड़ा रहा हो। इसका कीम्यावी फ़ाएदा यह था कि ऐसा होने से इसकी कसाफ़तें नीचे बैठ जाती हैं और साफ़ पानी निथरकर ऊपर आ जाता है। जब दरयाई या नहरी पानी की रेत नीचे बैठती है तो अपने साथ तुफ़ैली कीड़ों के अंडों और जरासीम को भी तह में ले जाती है और इस तरह ऊपर का पानी निस्बतन महफ़ूज़ हो जाता है।

पानी की सफ़ाई:

कुदरत ने पानी को कभी कीम्यावी तौर पर ख़ालिस सूरत में मुहैय्या नहीं किया। ज़ेरे–ज़मीन पानी में वह तमाम कीम्यात मौजूद होंगी जो इस इलाक़े में पाई जाती हैं। यही सूरतेहाल दरयाओं और झीलों में है। माहिरीन कीम्या पानी में मौजूद अज्ज़ा को इसके भारी पन या HARDNESS क़रार देते हैं। नम्कियात की मौजूदगी इन्सानों के लिए मुफ़ीद है। बअज़ औक़ात पानी में फ़ौलाद, सिक्का, हाइड्रोजन सल्फ़ाइड केडमेम और संखया भी मिलते हैं जो सहत के लिए मुज़िर हैं। क्यूंकि इनका वजूद पानी से नहीं। बल्कि पानी की टंकी या आब रसानी की नालियों की वजह से होता है जिस पर मुसलसल तवज्जह की ज़रूरत रहती है। पानी को साफ़ करने का आसान तरीक़ा उसे उबालना है। इससे अक्सरो बेशतर जरासीम मर जाते हैं।

इब्नुलक़य्युम ने समंदरी पानी को साफ़ करने के लिए एक मुफ़ीद तरकीब बयान की है। पानी के देगचे को आग पर रख कर ऊपर कोई मोटा ऊनी कम्बल या नम्दा रख दिया जाए। पानी के बुख़ारात उड़ कर ऊनी कपड़े में जमअ़ होंगे। बाद में इसे निचोड़ कर इस्तेअमाल कर लिया जाए। बारिश का पानी दस मिनट की बारिश के बाद पीने के लिए महफ़ूज़ तरीन पानी है। क्यूंकि क़ुदरत ने इसे अमल कशीद के ज़रिए तैयार किया है। लेकिन उबला हुआ या कशीद कर्दा पानी मुसलसल पीने से नम्कियात की कमी लाहिक़ हो जाएगी। फ़ैसल आबाद के शहरियों को पहले नहर का पानी दिया जाता था जिसे रेत और बजरी की तहों से गुज़ार कर साफ़ कर लिया जाता था। अब शहरों का पानी गहराई से हासिल किया जाता है जिसमें ग़िलाज़त के इम्कानात कम हैं। छोटी जगहों पर क्लोरीन के मुरक्कबात या पानी साफ़ करने वाली HALAZONE गोलियां एक मुफ़ीद तरीक़ा है। इन गोलियों के बअद पानी में बदबू आने लगती है। एक दिन बाद बू जाती रहती है।

देहात और छोटी जगहों पर रहने वालों के लिए पानी साफ़ करने वाली गोलियां या इसे उबाल कर इस्तेमाल करना ही मसले का हल है। इनसे आसान तर्कीब मुम्किन नहीं।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समुंद्र के पानी को पाक क़रार दिया है क्यूंकि वह अपनी मिक़दार की वजह से गंदा नहीं हो सकता। बल्कि यहां तक फ़रमा दिया कि अगर आप इससे साफ़ न हुए तो फिर इससे आगे कुछ नहीं।

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक शख़्स ने पूछा कि हम समुंद्र में सफ़र करते हैं और साथ पानी की ज़्यादा मिक़दार नहीं होती। क्या हम समुंद्र के पानी से वुज़ू कर लिया करें, तो उन्होंने फ़रमाया।

هو الطهور مائده. الحل ميتتهٗ (ابوداؤد، ابن ماجہ۔ ترمذی)

(समंदर का पानी पाक है। इसका मुर्दा (मछली) भी हलाल है)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं। कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

لايبولنّ احدكم فى الماء الدائم ولايغتسل فيه من جنابة. (احمد۔ ابوداؤد)

(कोई शख़्स खड़े पानी में पेशाब न करे और न ही जिनाबत के बअद इसमें गुस्ल करे)

मुस्लिम और इब्ने माजह की एक रिवायत में इज़ाफ़ा है कि खड़े पानी में गुस्ल करने की तर्कीब यह है कि पानी वहां से अलाहिदा ले कर गुस्ल करे। मक़सद यह है कि इस पानी को गंदह न किया जाए।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

من لم يطهره البحر فلاطهره الله. (دارقطنی)

(जो समंदर के पानी से भी पाक–साफ़ न हो सके फिर इसके लिए अल्लाह की सफ़ाई कोई नहीं।)

पानी का कीम्यावी तज्ज़िया:

बुनियादी तौर पर यह हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का मुरक्कब है। यह सिफ़र डिग्री सेंटीग्रेड के दरजए हरारत पर जम कर बर्फ़ बन जाता है। सौ डिग्री सेंटी ग्रेड पर उबलने लगता है। ख़्वाह कितनी ही आग दें? पानी का दरजए हरारत 100 से तजावुज़ नहीं कर सकता। अलबत्ता यह भाप बन जाता है। भाप को अगर दबाओ में रखा जाए तो इससे तवानाई पैदा होती है जो इब्तिदा में रेल के इंजन चलाने के काम आती रहती है। पानी के खौलाओ का यह दरजए हरारत मैदानी इलाक़ों में जहां हवा का दबाओ 760 मिली मीटर होता है, बुलंदी पर जाएं तो हवा के दबाओ में कमी आ जाती है जैसे कि 6500 फुट की बुलंदी पर हवा का दबाओ चूंकि 525 मिली मीटर होगा इसलिए पानी 90 दरजे पर खौलने लगे गा। अगर्चे पानी जल्द खौलने लगता है लेकिन दबाओ में कमी की वजह से दाल इस पानी से नहीं गलती। इसलिए दाल या सख़्त गोश्त को गलाने के लिए दबाओ में इज़ाफ़ा के लिए प्रेशर कुकर या ढक्कन को गुले हिक्मत करना ज़रूरी है। तमाम चीज़ें ठंडक से सुकड़ती है। लेकिन 4 दर्जे पर फैलता है और इसके बअद फिर सुकड़ता है। उबलने पर इसका गाढ़ा पन कम हो जाता है।

कीम्यावी अवामिल के लिए पानी की मौजूदगी ज़रूरी है। तजुर्बात से मअ़लूम होता है कि अक्सरो बेशतर तजुर्बात पानी न होने पर वक़ूअ़ पज़ीर नहीं हो सकते। पानी के कीम्यावी अनासिर का पता चलने के बावजूद इसे मसनूई तौर पर बनाना मुम्किन नहीं। अलबत्ता ऊंट के जिस्म में ऐसा बंदोबस्त है कि वह ज़रूरत के वक़्त थोड़ी मिक़दार में पानी बना सकता है जिसके बारे में क़ुरआन मजीद ने एक मुफ़ीद इशारा दिया है।

افلا ينظرون الى الابل كيف خُلِقت. (الغاشیہ:۱۷)

(तुम ऊंट पर क्यूं ग़ौर नहीं करते कि इसको कैसे बनाया गया?)

मुतअद्दि तजुर्बात से मअलूम हुआ है कि इसके जिस्म में पानी ज़ख़ीरा नहीं होता। वह रोज़ाना मअ़मूल की मिक़दार पीता है। अगर इसे पानी न मिले तो वह कुछ दिनों तक अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ पानी तैय्यार करके ज़िंदा रह सकता है। ऐसे और भी बहुत से कमालात इसके जिस्म में मौजूद हैं जिनके बारे में क़ुरआन मजीद ने इशारा दिया है कि ग़ौर करो और फ़ाएदे उठाओ।

पीने के लिए मयस्सर आने वाला पानी अपने अज्ज़ा के लिहाज़ से हर इलाक़े में मुख़्तलिफ़ होता है बल्कि एक ही शहर के एक मुहल्ले का पानी दूसरे से मुख़्तलिफ़ होता है। नमूने के तौर पर जनाब अब्दुलख़ालिक़ आसिम ने हमारे लिए लाहौर के एक ट्यूबवैल का पानी टेस्ट करके इसके अज्ज़ा इस तरह बयान किए हैं।

450	Total Diskolyed Solids
110	Hardness
25	Calcium
22	Magnesium

230	Carbohydrates
38	Sulphates
28	Chlorides
"	Nitrites
"	Nitrites
"	Nitrogne

Treaces Favorides

0.2 Iron

Treaces Lodine

Present Residual Chlorine

पानी से गिलाज़त दूर करने के लिए लाहौर में क्लोरीन इस्तेअमाल होती है, छोटे पैमाने पर पाकिस्तान कोन्सिल बराए साइंसी तरक़्क़ी लाहौर के डाक्टर हनीफ़ चौधरी ने एक आसान और सस्ता आला बनाया है जो जरासीम को भी निकाल देता है। वाटर कूलर बनाने वाला एक इदारा इसको अपने कूलरों में नस्ब करके पीने वालों को महफ़ूज़ पानी मुहैय्या कर रहा है। इस आले में चीनी का एक फिल्टर मोमबत्ती की शक्ल में लगा है। जब पानी इससे छन कर आता है तो वह हर क़िस्म की गिलाज़त और कसाफ़त निकल देता है।

पानी की अहमियतः

पानी इनसानी ज़िंदगी का जुज़्वे लायन्फ़िक है। इनसानी जिस्म में अगर्चे पानी काफ़ी मिक़दार में मौजूद होता है लेकिन यह जिस्म के अंदर ख़ालिस सूरत में नहीं मिलता। यह नाम्याती मुरक्कब की सूरत में होता है। जैसे कि ख़ून का बेश्तर हिस्सा पानी पर मुश्तमिल है लेकिन इसके साथ लहमियात, ख़ून के ख़ल्यात और नमक होते हैं। इसी तरह मेअदा और मुंह के लुआब के ज़रिए पानी की कसीर मिक़दार निकल जाती है। ज़रूरत इस अम्र की रहती है कि जिस्म में पानी की आम्दोरफ़्त के दर्मियान एक बाक़ाएदा तनासुब मौजूद रहे। अगर इस्हाल और क़ै की क़िस्म की बीमारियों या हैज़ा की वजह से जिस्म में पानी की ज़्यादह मिक़दार निकल जाए तो इस कैफ़ियत को DEHYDRATION कहते हैं। पानी निकलने से ख़ून गाढ़ा हो जाता है, पेशाब का इख़राज कम या बंद हो जाता है जिससे ज़हरें जिस्म में सरायत करके मौत का बाइस बन सकती हैं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसी कैफ़ियत में बार-बार शहद पिलाकर बीमारी के सबब और पानी की कमी का बयक वक़्त इलाज फ़रमाया।

जब दिल की ताक़त मांद पड़ जाए या गुर्दों या जिगर में ख़राबी पैदा हो कर जिस्म से पानी के इख़राज और नम्कियात का सिलसिला दरहम-बरहम हो जाए तो पेट में पानी पड़ता है। जिस्म पर सूजन आ जाती है और ज़िंदगी ख़तरे में पड़ जाती है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जहां जिस्मानी सफ़ाई, ग़ुस्ल, बर्तनों की सफ़ाई, लिबास की सफ़ाई के लिए पानी को मुफ़ीद क़रार दिया वहां इसके इस्तेअमाल में कफ़ायत को भी मल्हूज़ रखने की ताकीद फ़रमाई। एक

इरशादे ग्रामी के मुताबिक़ अगर वज़ू करते वक़्त तुम्हारे सामने भरा हुआ दरिया भी हो तो पानी ज़ाया न करो।

शहरों में लोग ज़रूरत के बग़ैर नल्के खुले रखने के आदी हो जाते हैं जिससे ज़रूरत मंदों को कम पानी मयस्सर आ सकता है। पानी का सिलसिला एक गोल चक्कर की मानिंद है। समंदरों, झीलों और दरया बन गया या ज़मीन में जज़्ब हो कर ज़ेरे ज़मीन पानी की सूरत ट्यूब वैल और पम्पों के ज़रिए बाहर आ गया। लाहौर के मुशाहिदात में देखा गया है कि अगर लगातार कुछ अरसह बारिश न हो तो ज़ेरे ज़मीन पानी की सतह नीचे चली जाती है।

पानी की अहमियत का अंदाज़ह इस अम्र से भी लगाया जा सकता है कि अल्लाह ने जन्नत में जिन उम्दा चीज़ों के मुहय्या करने का वअदा फ़रमाया है उनमें से एक पानी भी है।

فیها انهارٌ من ماءٍ غیر آسنٍ وانهارٌ من لبنٍ لم یتغیّر طعمه. (محمد-۵)

(वहां पर ऐसे पानी की नहरें होंगी जो कभी ख़राब न होगा)

पानी को इंसानी ज़िंदगी में जितनी अहमियत हासिल है। इसके पेशे नज़र नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इतना ही अहम क़रार दिया। अहादीस में पानी के मसाइल के बारे में "किताबुल मियाह" और "बाबुत्तहारत" अलाहिदा अलाहिदा मौजूद हैं। उन्होंने पानी को मुफ़ीद और नुक़सान से महफ़ूज़ रखने के लिए काम की मुफ़ीद बातें बताई हैं।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदत मुबारका का हाल बयान करते हैं।

کان یتنفس فی الشراب ثلاثاً. ویقول "انه اروی، انه اروی، وابرأ وامرأ.
(احمد-مسلم)

(वह पानी पीते वक़्त तीन मर्तबा सांस लेते थे और फ़रमाते थे कि ऐसा न करने से तसल्ली हो जाती है। अज़िय्यत और बीमारी से महफ़ूज़ रखता है और हज़्म ख़ूब होता है।)

बुख़ारी और मुस्लिम ने अबी क़तावा रज़ि. से भी पानी पीने में तीन सांस लेने की रिवायत की है क़तावा रज़ि. हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत फ़रमाते हैं।

ان النبی صلی الله علیه وسلم زجرعن الشرب قائماً قال قتادة: قلنا فالا کل؟ قال: ذاک اشرّو اخبث (احمد، مسلم، ترمذی)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खड़े हो कर पीने से डांटा। क़तावा रज़ि. कहते हैं कि हम ने अनस रज़ि. से पूछा कि खड़े हो कर खाना कैसा है? फ़रमाया यह इससे भी बदतर है)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं।

ان النبی صلی الله علیه وسلم نهی ان یتنفس فی الاناء اوینفخ فیه.
(ترمذی-ابوداؤد، ابن ماجه)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पानी पीने के दौरान बर्तन में

सांस लेने से मनअ़ फ़रमाया और इस बर्तन में फूंक मारने से मना फ़रमाया।)

अमरीका में एक शख़्स ने मुतअद्दिद बीमारियों का पानी से इलाज करने का तरीक़ा ईजाद किया है जिसे HYDROTHERAPY का नाम दिया गया है। वह पानी को मुख़्तलिफ़ सूरतों में पिलाता और नहलाता है। जर्मनी में बीमारियों के इलाज में ग़ुस्ल के कुछ तरीक़े मुरव्विज हैं। कहते हैं कि गर्म पानी के टब में मरीज़ को मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से देर तक बिठाए रखें तो गुर्दों की पथरियां निकल जाती हैं या क़ब्ज़ दूर हो जाती है। अतिब्बा क़दीम ने गर्म पानी की धार और ग़ुस्ल से बीमारियों के इलाज में मदद ली है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लल्लम ने बुख़ार का बेहतरीन इलाज़ पानी डालना क़रार दिया है। अपनी अलालत के दौरान उन्होंने जिस्म पर कई मर्तबा डलवाया। जंगे उहद में हुज़ूरे अकरम सल्ल. के ज़ख़्मों का इलाज उन्हें बार–बार पानी से धो कर किया गया। इस तरह ज़ख़्मों से आलाइश दूर हो गई और वह जिस्म की क़ुव्वते मुदाफ़िअत के ज़ोर पर जल्द मुंदमिल हो गए।

चोटों और ज़ख़्मों को अगर पानी से अच्छी तरह धोया जाए तो ज़ख़्म कभी ख़राब नहीं होते। चोट पर बर्फ़ मलने से वरम नहीं आता।

प्याज़............ बसल
ONIONS-ALLIUM CEPA

प्याज़ का शुमार इन सब्ज़ियों में है जो दुनिया के हर मुल्क में पाई जाती हैं और हर जगह लोग इसे कस्रत से इस्तेअमाल करते हैं। गोश्त की बू मारने और सालन को गाढ़ा करने के लिए हिंद–पाक में इसे बड़ी मक़बूलियत हासिल है। यह उन सब्ज़ियों में से है जिनकी ग़िज़ाइयत जड़ों में होती है। जड़ें फूल कर गोल शक्ल इख़्तियार कर लेती हैं जिनको इल्मे नबातात में RHIZOME कहते हैं। प्याज़ के पत्ते आम पोधों के पत्तों से मुख़्तलिफ़, सीधी, बुलंद शाख़ों सी होती हैं जो रसदार होती हैं और इनके आख़िर में सब्ज़ी माइल सफ़ेद फूल लगते हैं। इन पत्तों को लोग "साक़" कहते हैं। और पंजाबी में "फोख" कहते हैं, कुछ लोग यह साक़ भी पका कर खाते हैं। प्याज़ जब हरा हो तो हंडिया के अलावा अंडे का आम्लेट बनाने में अक्सर लोग कच्चा प्याज़ और उसकी साक़ काट कर डालते हैं।

प्याज़ दुनिया की क़दीम तरीन सब्ज़ियों में से है। तारीख़ी वाक़िआत से मालूम होता है कि यह तहज़ीबो तमद्दुन की आमद से बहुत पहले भारत, चीन और ऐशियाए कोचक मे जंगली और मज़रूआ प्याज़ होता था जिसे लोग बड़े शौक़ से खाते थे।

भारत में सबसे ज़्यादा प्याज़ उत्तर प्रदेश में होता है। लेकिन मेअ़यार के लिहाज़ से मुम्बई और बिहार का प्याज़ मशहूर है। लोग बिहारी प्याज़ को ज्यादा पसंद करते हैं कोहे हिमाल्या की तराई और कशकीर में प्याज़ की एक और

क़िस्म पाई जाती है। जिसमें तेज़ी, और कड़वाहट कम होती है। इसे ALLIUM LEPTOPHYLLUM कहते हैं। प्याज़ सफ़ेद, सुर्ख़, सब्ज़, और सुनहरी रंगों में होता है। पाकिस्तान में प्याज़ की उम्दह तरीन क़िस्म पंजाब और सरहद में होती है। बरसात के बअद सिंध का सियाही माइल प्याज आने लगता है और बिलोचिस्तान का प्याज़ उम्दगी में सिंध से बहतर होता है। अगर्चे साल में इसकी दो फ़सलें होती हैं लेकिन ताजिरों के यहां क़ीमत मौसम के मुताबिक़ बदलती रहती है। लाहौर में इसका परचून भाओ तीन रुपए से पंद्रह रुपए किलो तक होता रहता है।

प्याज़ का पौधा जब पक जाता है तो इसको काले रंग के बीज लगते हैं जिनको ज़मीन में बोकर नई फ़सल हासिल की जाती है। इसकी पैवंदकारी भी हो सकती है। यौरप में प्याज़ का पौधा ग़ालिबन तुर्की से गया और बरतानिया को प्याज़ का तोहफ़ा इटली से मयस्सर आया। अमरीका के क़दीम बाशिंदे एक ऐसे प्याज़ की काश्त करते थे जिसमें तेज़ी कम और मिठास ज़्यादा होती थी। मिस्रियों का ख़याल है कि प्याज़ की गोलाई दुनिया की गोलाई को ज़ाहिर करती है। मुख़्तलिफ़ मुल्कों के प्याज़ की शक्ल, रंगत और ज़ाएक़ा मुख़्तलिफ़ होता है। गर्म मुल्कों का प्याज़ तेज़ी में सर्द मुल्कों से कम होता है। बरमोडा का प्याज़ चपटा, कम तेज़ और सफ़ेद होता है। स्पेन का प्याज़ बड़ा, सुर्ख़, इसका अर्क़ मिठास की जानिब माइल जबकि इटली का चपटा और बदबू कम होती है। मैक्सिको, स्पेन और इटली में प्याज़ और मिर्च मसालह डाल कर पंजाब की मानिंद मसालेह दार रोटी बनाकर बड़े शौक़ से खाई जाती है। आज कल प्याज़ की एक क़िस्म PEARL ONION पैवंद कारी से पैदा की गई है जिसका क़त्र एक इंच ग़िज़ाई हैसियत कम है लेकिन यह सिर्फ़ अपनी बू के लिए मुस्तैअमिल है।

ज़मीन से निकालने के बअद प्याज़ को थोड़ा सा ख़ुश्क किया जाता है जिससे इसके ऊपर वाला छिलका खुश्क और भुर–भुरा हो जाता है। दुनिया में भारत, चीन, अमरीका, रूस, इटली, तुर्की, स्पेन, जापान प्याज़ को दरआमद करने वाले बड़े मुमालिक हैं। पाकिस्तान से भी प्याज़ बरआमद होता है मगर इसकी मिक़दार थोड़ी और वह भी ख़लीजी रियास्तों तक महदूद है।

दुनिया के किसी भी मुल्क का कोई बावर्ची ख़ाना प्याज़ के बग़ैर मुकम्मल नहीं होता। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि हर जगह इसका मसरफ़ मुख़्तलिफ़ है। अकसर हालतों में यह सिर्फ़ ख़ुश्बू देने के लिए इस्तेअमाल किया जाता है। भुना गोश्त, शोरबह, सलाद और रोस्ट इसके बग़ैर नहीं खाए जाते। प्याज़ छीलते वक़्त इसका गंधक आमेज़ फ़राज़ी तेल उड़कर आंखों को लगता, इनमें जलन पैदा करता और पानी निकालता है। पुराने बावर्ची बताते हैं कि प्याज़ को छीलते और काटते वक़्त अगर नल्का खोल कर इसके नीचे रखा जाऐ तो आंखों में जलन नहीं होती।

अक्सरो बेशतर मुमालिक मे प्याज़ की मक़बूलियत इसकी मुआलिजाना सलाहियत की वजह से रही है। ज़मानए क़दीम से लोग ज़हरीले जानवरों के

डंग, फोड़े, फुंसियों, पेट की बीमारियों, हैज़ा, इस्हाल, जिस्मानी कमज़ोरी, गले की ख़राबियों, ज़ुकाम, इन्फ़्लोंइंज़ा, कान का दर्द, जलने के बअद मस्सों पर प्याज़ का इस्तेअमाल करते आए हैं। वाक़िआत इस अम्र के शाहिद हैं कि इन तमाम इमराज़ में प्याज़ का इस्तेअमाल ज़्यादा तौर पर ज़हनी तसल्ली का बाइस हुआ। ख़ास तौर पर किसी अहमियत का बाइस नहीं रहा। जैसे कि खांसी, ज़ुकाम और बुख़ार का कोई मरीज़ दूसरी तमाम दवाएं छोड़ कर मुकम्मल तौर पर भरोसा कर सके।

हर मुल्क में कुछ बातें ग़लत मशहूर होती हैं और हक़ीक़त मअलूम होने के बावजूद लोगों के एतिक़ाद में फ़र्क़ नहीं आता। जैसे के अमरूद, खीरा या तर्बूज़ के साथ पानी पीने से हैज़ा हो जाता है। हालांकि हैज़ा एक ख़ास क़िस्म के जरासीम से होता है जब तक इन जरासीम से आलूदा ग़िज़ा जिस्म में दाख़िल न हो। हैज़ा नहीं होता, इसी तरह प्याज़ की अक्सीर एक मफ़रूज़ा है।

इरशादाते रब्बानी:

واذقلتم یا موسیٰ لن نصبر علیٰ طعامٍ واحدٍ فادع لنا ربّک یُخرج لنا ممّا تنبت الارض من بقلها وقثّائها وفومها وعدسها وبصلها. قال اتستبدلون الّذی هوادنیٰ بالّذی هو خیرٌ...... (البقرہ:٦١)

(और जब तुमने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि हम एक खाने पर क़नाअत नहीं कर सकते। तुम हमारे लिए अपने रब को पुकारो और कहो कि वह हमारे लिए वह चीज़ें लाए जो ज़मीन से पैदा होती हैं जैसे तरकारियां, खीरे, लहसन, मसूर की दाल और प्याज़, उन्होंने कहा तुम एक घटिया चीज़ को लेने के लिए अच्छी चीज़ें छोड़ रहे हो।)

मुफ़स्सिरीन में से बाअ़ज ने "फूम" का तर्जुमा गंदम किया है।

किताबे मुक़द्दस:

तौरेत मुक़द्दस में कुरआन मजीद वाली सूरतेहाल के सिलसिले में बनी इस्राईल का अपने नबी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से जो मकाल्मा दर्ज है। इरशाद हुआ:

......हम को वह मछली याद आती है जो हम मिस्र में मुफ़्त खाते थे और हाए वह खीरे और वह ख़रबूज़े और वह गुंदने और प्याज़ और लहसन लेकिन अब तो हमारी जान ख़ुश्क हो गई, यहां कोई चीज़ मयस्सर नहीं और मन के सिवा हमको कुछ भी दिखाई नहीं देता......

(गिंती 11:6—7)

तौरेत मुक़द्दस के इसी बाब में मन की तफ़सील मिलती है मन धुनी हुई रूई की मानिंद था जो दूर से मोती की मानिंद नज़र आता था। रात को आस्मान से मन ज़मीन पर गिराया जाता। लोग उसे जमअ करके पीस लेते। फिर उसे हांडियों में उबाल कर रोटियां बनाते थे। जब यह तंग आए तो उनको अज़ाब के तौर पर बटेरें दी गईं।

इस्लामी अक़ीदे में सूरतेहाल थोड़ी सी मुख़्तलिफ़ है। बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने माजह और दूसरी किताबों की रिवायात के मुताबिक़ मन एक चीज़ न थी। कई सब्ज़ियां थीं जिन में से एक खुंबी भी थी और गोश्त के लिहाज़ से परिंदों का गोश्त सल्वा की सूरत में मौजूद था। यह कई क़िस्म की उम्दा, लज़ीज़ और मुक़व्वी ख़ुराकों को छोड़ कर एक ऐसी फ़हरिस्त के तलबगार थे जिसकी अक्सरियत इल्मुलग़िज़ा के एतिबार से हल्की, और उनको जो मिल रहा था उससे कमतर थी।

इरशादाते नबवी सल्ल०:

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह अलैहि वसल्लम रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

مَن اکل مِن ھذہ الخضروات: البصل و الثوم و الکراث والفجل،
فلایقون بن مسجدنا (مستدطبرانی)

(जिस किसी ने इन सब्ज़ियों यअनी प्याज़, लहसन और गंदना में से कोई चीज़ खाई वह हमारी मस्जिदों में न आए।)

उन्ही जाबिर से यही इरशादे ग्रामी दूसरी सूरत में यूं मुरव्वी है।

مَن اکل من ھذہ البقلة الثوم والبصل والکراث فلایقربنا فی مساجدنا.
فان الملائکة تأذی ممایتأذی منه بنو ادم۔ (مسلم،ترمذی،نسائی)

(जिस किसी ने इन सब्ज़ियों यअनी लहसन, प्याज़, गंदना, को खाया वह हमारी मस्जिदों में न आए। क्यूंकि फ़रिश्तों को भी इस चीज़ से अज़ियत होती है जिससे इंसानों को तकलीफ़ होती है।)

हज़रत अबू सईद अलख़िदरी रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

نھی من اکل البصل والکراث والثوم (طبرانی)

(प्याज़, गुदना और लहसन खाने से मनअ फ़रमाया।)

हज़रत मअदान बिन अबी तल्हा रज़ि॰ बयान करते हैं कि एक रोज़ हज़रत उमर बिन रज़ि॰ बिन ख़त्ताब जुमेअ को ख़ुत्बा देने मिंबर पर खड़े हुए और अल्लाह तआला की हम्दो–सना के बअद फ़रमाया:

یاایھاالناس انکم تاکلون شجرتین لااراھما الا خبیثتین. ھذہ الثوم وھذہ البصل. ولقد کنت اری الرجل علیٰ عھد رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم یوجد ایحه منه فیوخذ بیدہ حتیٰ یخرج به الی البقیع. فمن کان اکلھما الابد فلیمتھما طبخاً – (ابن ماجہ)

(ए लोगो! तुम ऐसे दरख़्तों से खाते हो जिनको मैं ख़बीस होने के अलावह किसी और कुनियत से नहीं जानता। मेरी मुराद उस लहसन और प्याज़ से है। अगर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एहद में कोई शख़्स इनको खाता था और उसके मुंह से उनमें से किसी के मुंह से बदबू आती थी तो लोग इसका हाथ पकड़ कर क़बरस्तान बक़ी की तरफ़ छोड आते थे। अगर तुम में से कोई

इनको खाना चाहे तो वह सिर्फ़ इनको पका कर खा सकता है।)

हज़रत उमर रज़ि. ने यह उसूल वाज़ेह कर दिया कि इनको कच्चा खाना मुनासिब और मम्नूअ है अलबत्ता पका कर खाया जा सकता है। वह भी इसलिए कि पकने के बअद इनकी बदबू ख़त्म हो जाती है।

हज़रत इब्ने ज़ैद से एक दिलचस्प वाक़िआ मज़कूर है।

سئلت عائشة عن البصل. فقالت انّ اخر الطعام اكله رسول الله صلى الله عليه وسلم، كان فيه البصل. (ابوداؤد)

(मैंने आएशह रज़ि. से प्याज़ के बारे में पूछा। उन्होंने फ़रमाया कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़िंदगी का आख़िरी खाना जो तनावुल फ़रमाया था इसमें प्याज़ भी था)

इसी ज़िम्न में अबू दाऊद ही ने एक रिवायत बयान की जिसके मतन के मुताबिक़

انه رسول الله صلى عليه وسلم امر اكله واكل الثوم: ان يميتهما طنحاً.

रसूलल्ल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस (प्याज़) के और लहसन के खाने के बारे में हुक्म दिया कि अगर इनको खाना ही हो तो पकाकर खाया जाए।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

प्याज़ तासीर के लिहाज़ से सख़्त गर्म है और इसमें फ़ुज़ूल किस्म की रतूबतें ज़्यादह मिक़दार में पाई जाती हैं। जिस्म में अगर पानी जमा हो जाता हो तो इसके लिए मुफ़ीद है इसके साथ किसी और चीज़ की बदबू क़ायम नहीं रहती इसलिए गंदी हवाओं को दबा देता है। जिंसी ख़्वाहिशात में इज़ाफ़ा करता है। मुक़व्वी बाह है। भूख लगाता है। रंग साफ़ करता है। बलग़म को कम करता है और मेअ़दे को जिला देता है।

प्याज़ का पानी निकाल कर अगर कानों में टपकाया जाए तो वहां मैल पैदा नहीं होने देता। दर्द को दूर करता है। सोज़िश की वजह से सुर्ख़ी आ गई हो तो उसे कम करता है। समाअ़त को बेहतर करता है। बाअ़ज़ अतिब्बा ... ख़याल है कि इसके लगातार इस्तेअमाल से बहते कान बंद हो जाते हैं। प्याज की गिट्ठी में सलाई डुबोकर इसे बार–बार आंखों में लगाया जाए तो कहा जाता है कि इससे मोतिया उतरने नहीं पाता। आंख की सफ़ेदी के इलाज में प्याज़ के बीज पीस कर इनमें शहद मिलाकर आंखों में लगाया जाता है (प्याज का पानी तेज और मुख्रिश है। इसको आंखों में लगाना ख़तरनाक अमल है। इसका मशवरह नहीं दिया जा सकता।)

प्याज के बीज जिल्द पर पड़ने वाले रंगदार धब्बे दूर करते हैं अगर इनको पीस कर गंज और इसके इर्द–गिर्द लेप किया जाए तो बाल उग जाते हैं। इसके पानी में नमक मिलाकर फुंसियों पर लगाया जाए तो वह बैठ जाती हैं। इसके पानी को सर के इतराफ़ में लगाने से सर दर्द दूर हो जाती है। अकसर औक़ात जुलाब लेने के बाद मरीज़ को इस्हाल के साथ क़ै भी शुरू हो जाती है और ग़शी दूर हो जाती है।

प्याज़ को पका कर देने से यरक़ान, पुरानी खांसी, सीने की जलन, बलग़म के इंजमाद में फ़ाएदा होता है। इसे खाने से पेशाब बार–बार आता है। पेट को नर्म करता है इसको खाना और कूट कर सदाब के पत्तों और नमक के हमराह बवासीर पर लेप करने से मस्सों का वरम जाता रहता है। हज़रत मुआविया रज़ि. की एक मुश्तबह रिवायत के मुताबिक़ इसे खाने से तंदरुस्ती और कुव्वत जाती रहती है। अगर इसे गोश्त के साथ पकाया जाए तो यह गोश्त को जल्द हज़्म करता है और इसकी मुज़रत को दूर करता है।

इसका सबसे बड़ा नुक़सान यह है कि यह सर में दर्द पैदा करता है। पेट में रियाह को बनाती है। बीनाई को कम करता है। मुसलसल खाने से हाफ़्ज़ा कमज़ोर हो जाता है अक़्ल कमज़ोर पड़ती है। मुंह का ज़ाएक़ा ख़राब करता है। अगर पकाकर खाया जाए तो नुक़सानात कम होते हैं।

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदात:

प्याज़ जिस्म के सुद्दे खोलता है । मसाम खोल कर पसीनह लाता है। मदरुलबोल है अगर पका कर खाया जाए तो न सिर्फ़ यह कि हाज़मा की इस्लाह करता है बल्कि गोश्त को भी हज़्म करता है। रियाह को तहलील करता है। सिरके में इसका अचार बनाकर खाना यरक़ान और तिल्ली के दर्द में मुफ़ीद है। इसको सूंघना, खाना बल्कि पास रखना भी वबाई अय्याम में फ़ाएदा करता है। सुफ़रावी मतली को रोकता है। आंख की सोज़िश, सफ़ेदी और मोतिया बिंद की इब्तिदा में प्याज़ के अर्क़ में शहद मिलाकर लगाने से अकसर इमराज़ दूर हो जाते हैं। फुंसी या गोहांजनी बन रही हो तो ठीक हो जाती है। इसको कूट कर 4 से 7½ तोलह मिक़दार में देने से बिच्छू के ज़हर का असर ज़ाएल हो जाता है। वैसे इसे मक़ामी तौर पर लगाना भी मुफ़ीद रहता है।

सफ़ेद प्याज़ की निस्बत सुर्ख़ के तिब्बी फ़वाइद ज़्यादह हैं। इसके अर्क़ को दो गुने शहद में मिलाकर पकाकर क़वाम बनाएं। इस क़वाम के 9 माशह रोज़ाना खाने से जिंसी कमज़ोरी रफ़ा हो जाती है। प्याज़ मेअ़दा में ग़िलाज़त पैदा कर सकता है जिसकी इस्लाह सिरका और नमक से की जाती है वरना ख़ाली प्याज़ खाने से सर दर्द और अक़्ल में फ़ितूर पैदा हो सकते हैं।

गोश्त को प्याज़ के साथ पकाने से इसकी बदबू जाती रहती है लेकिन प्याज़ की मिकदार ज़्यादा न हो, वरना यह बलग़म बढ़ाता है। राज़ी कहता है कि इसको रेत या गर्म राख में भुमलाकर देने से तेज़ी कम हो जाती है। और इस सूरत में यह सीने के इम्राज़ में खिलाया जाए। इसको थोड़ा–थोड़ा देने से बदन में गर्मी आ जाती है। खट्टी डकारें बंद हो जाती हैं। ख़ालिस प्याज़ मतली लाता है। मिक़दार अगर ज़्यादा हो तो क़ै भी आ सकती है लेकिन सिरका और नमक डाल कर देने से भूख बढ़ती है। इसके आध पाव रस में पांच तोला खांड मिलाकर पका कर बार–बार खिलाने से ख़ूनी बवासीर रफ़अ हो जाती है।

वैदों के यहां प्याज़ को दूध में खूब उबालने के बअद गाए के घी में तलते हैं। फिर इसमें शहद मिलाकर जिस्मानी कमज़ोरी में दिया जाता है। हज़्म होने में भारी, कुछ गर्म और लताफ़त बढ़ाता है। ज़हरीले, कीड़ों के काटे के लिए

इसका लगाना मुफ़ीद, खुजली और ख़ारिश के लिए अक्सीर, और इसके कान में डालने से दर्द फ़ौरन जाता रहता है। इसको जोश दे कर पिलाने से बलग़म रफ़अ हो जाती है जबकि सिरका में मिलाकर बार-बार चटाने से गले की सोज़िश जाती रहती है। इसको राई के तेल में मिलाकर जोड़ों पर मालिश करने से गंठिया जाता रहता है। इसके खाने से मसूढ़े ख़राब नहीं होते।

प्याज़ के बारे में कुछ अजीब बातें भी अतिब्बा क़दीम के यहां मिलती हैं। मसलन वबा के दिनों में अपने पास प्याज़ रखना चाहिए ताकि वबा से महफ़ूज़ रहें। बल्कि इसे दरवाज़े पर लटका दें। तो सारा घर महफ़ूज़ रहे। गंज पर लगाए तो बाल उग आएं। कुत्ता काटे के ज़ख़्म पर प्याज़ का अर्क़ लगाया जाए और प्याज़ का अर्क़ पिलाया जाए। अगर प्याज़ बाक़ाएदा खाया जाए तो दांतों की जड़ों में सड़ांद पैदा नहीं होती। यह तमाम बातें रोज़मर्रह के मुशाहिदात से भी ग़लत साबित हुई है। प्याज़ छील कर, काट कर बिजली के बल्ब के साथ लटका दिया जाए तो मौसमे बरसात में पतंगे नहीं आते क्यूंकि वह इसकी तेज़ बदबू से भागते हैं।

वैदिक तिब में प्याज़ का जोशांदा बड़ा मक़बूल है इनके ख़याल में इसे पीने से पेशाब की जलन जाती रहती है। इसकी एक मअ़कूल बात के बअ़द इनके नुस्ख़े अजीब शक्ल इख़्तियार कर लेते हैं। मसलन प्याज़ को छोटे बच्चे के पेशाब में खरल करके तेल में तलें। यह मर्हम पकने से पहले फोड़े पर बांधें तो फोड़ा नहीं पकता। प्याज़ को किसी बर्तन में बंद करके इसे गुले हिक्मत करके जहां गाए-भैंसें बंधती हों, उस अस्तबल में चार माह तक दफ़्न करें। फिर इसमें से दो तोलह प्याज़ रोज़ाना खाएं। कमज़ोरी दूर करेगा। प्याज़ में आध रत्ती अफ़ीयून रख कर खिलाने से पेचिश के दस्त बंद हो जाते हैं।

प्याज़ का ताज़ह रस बदन पर मलने से लू का असर (सन सट्रोक) ठीक हो जाता है बच्चों के गले में प्याज़ छील कर इसका हार बनाकर पहनाने से इनको मौसमे गर्मा में लू नहीं लगती।

इसमें कोई शक नहीं कि क़ुदरत ने कोई चीज़ बेकार पैदा नहीं की मगर ऐसी भी कोई सूरत नहीं कि सिर्फ़ प्याज़ से ही दुनिया भर के मसाइल का हल निकल आए। प्याज़ की बदबू नागवार और इसके बुख़ारात आंखों में जलन पैदा करते हैं। किसी बच्चे के गले में इसका हार पहनाना और फिर इसे पहने रहना नामुम्किन है। लू से बचने के लिए जिस्म पर प्याज़ की मालिश एक ग़ैर-मअ़कूल तर्कीब है। जबकि ऐसे मरीज़ के जिस्म पर ठंडा डालना आसान और ज़्यादा मुफ़ीद है। सन सट्रोक के मरीज़ की शदीद तकलीफ़ के मौक़े पर प्याज़ मंगवाकर इसका पानी निकालने की मुसीबत मोल लेना बगले के सर पर मोम रखनेवाली हिकायत से कम नहीं।

लोगों ने हज़रत मुआविया रज़ि॰ और बू-अली सैना से नक़ल किया है कि यह रंग को निखारता और नए शहरों के पानी की मुज़रत को दूर करता है।

कीम्यावी साख़्तः

प्याज़ में गंधक की मिक़दार ज़्यादा होती है। इसके बाहर के ख़ुश्क छिलकों

में गंधक के नाम्याती मुरक्कबात सल्फ़ाइड की शक्ल में होते हैं जबकि इससे निकलने वाले अफ़राज़ी तेल में गंधक ALLYL PROPYDISULPHIDE की शक्ल में मिलती है। इसके अलावह बैरूनी छिलकों में ज़र्द रंग का माद्दा QUERCETIN पाया जाता है।

एक ताज़ा सुर्ख़ रंग के प्याज़ में 85.60 फ़ीसदी नमी होती है। जबकि उसे मुकम्मल तौर पर सुखा लिया जाए तो इसमें 11.62 फ़ीसदी अलब्यूमन के मुरक्कबात होते हैं इसमें मिठास यअनी शकर के अलावा निशास्ता काफ़ी मिक़दार में पाया जाता है।

इसमें अफ़राज़ी तेल 0.05 फ़ीसदी होता है इसके साथ CATECHOL और PROTO CATECHUIC ACID मिलते हैं।

इसमें मिठास और निशास्ते की कसरत इसे ज़ियाबेत्स के मरीज़ों के लिए मुज़िर बना देती है।

जदीद मुशाहिदात:

करनल चोपड़ा ने प्याज़ के असरात को मुलाहिज़ा करते हुए इक़रार किया है कि यह मुख़्रिज बलग़म है। हैज़ लाता है, मुहर्रिक और मुक़व्वी बाह है। दिल के लिए मुहर्रिक है। नब्ज़ को मज़बूत करता है। ब्लड प्रेशर बढ़ाता और दिल को जाने वाली ख़ून की नालियों में ख़ून की मिक़दार बढ़ाता है। ग़ैर इरादी अज़्लात को हर्कत देने की वजह से अंतड़ियों और रहम में हरकात पैदा करता है। पित्ते से निकलने वाले सुफ़रा की मिक़दार में इज़ाफ़ह करता है और ख़ून में शकर की मिक़दार कम करता है। इनका यह बयान प्याज़ की अपनी साख़्त के बरअक्स है। क्यूंकि इसमें निशास्तह और शकर काफ़ी मिक़दार में होते हैं। इसलिए प्याज़ में ख़ून की शकर को कम करने वाली इस्तेअदाद का होना एक मुश्तबह हक़ीक़त है। अगर इसको दुरुस्त मान लिया जाए तो फिर यह यक़ीन करना पड़ेगा कि प्याज़ की साख़्त में ऐसे अनासिर मौजूद हैं जो ख़ून में शकर की मिक़दार कम कर सकते हैं। जबकि इस क़िस्म का कोई मुशाहिदह किसी और ज़रिए से अभी तक मयस्सर नहीं आया। बल्कि एक मशहूर बात है कि जितनी भी सब्ज़ियां ज़मीन के नीचे पाई जाती हैं। वह सब की सब शकर के मरीज़ों के लिए नुक़सान देह होती हैं।

प्याज़ का अर्क़, जानवरों के डंग और बिच्छू काटे पर लगाने से आराम आ जाता है। नदकारनी की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ प्याज़ में मौजूद तेल बुन्यादी तौर पर आसाब और अज़्लात के लिए मुहर्रिक है। इसको लगाने से ठंडक पैदा होती है। फिर वहां पर दोराने ख़ून में इज़ाफ़ह करता है। इसे भून कर लगाएं या खाएं तो दोनों सूरतों में सुकून आवर है। भुना हुआ प्याज़ फोड़–फुंसियों पर लगाने से वह जल्द पक जाते हैं। अगर वह इब्तिदाई मरहले में हो तो बैठ जाते हैं। चोटों पर प्याज़ लगाने से इनकी तपिश कम होने लगती है।

प्याज़ की बदबू इसकी सबसे बड़ी ख़राबी है लेकिन पेट में जाकर अंतड़ियों के जरासीम मार देता है लेकिन पके हुए प्याज़ में यह फ़ाएदा नहीं। इसलिए लीमूं के अर्क़, काली मिर्च और नमक के साथ खाना ज़्यादा मुफ़ीद रहता है।

कमज़ोरी के लिए प्याज़ का अर्क़ अदरक और शहद मिला कर देते हैं। दिल और गुर्दों की बीमारियों में जब सारे जिसम में सूजन आ जाती है तो इस कैफ़ियत में कच्चा प्याज़ या इसका पानी देना ज़्यादा मुफ़ीद है। क्यूंकि यह मदरुल बोल भी है (मुश्किल यह है कि इसे देने के अक्सर नुस्ख़ों में प्याज़ के साथ नमक शामिल किया जाता है। जब जिस्म में किसी वजह से पानी जमा हो जाए या पेट में इस्तिसक़ा शामिल किया जाता है। जब जिस्म में किसी वजह से पानी जमा हो जाए या पेट में इस्तिस्क़ा हो तो ऐसे में नमक देने से वरम में इज़ाफ़ह होगा।)

इख़्तिनाक़ुर्रहम (हिस्टीरिया) और मिर्गी के मरीज़ों को होश में लाने के लिए तेज़ चीज़ें मस्लन एमूनिया वग़ैरह सुंघाने का रिवाज रहा है। तिब्बे यूनानी में इस ग़र्ज़ के लिए लख़लख़ा सुंघाया जाता रहा है। भारती माहिरीन की राए में प्याज को कूट कर सुंघाना ज़्यादह मुफ़ीद है। सूंघने से सर दर्द जाता रहता है और ज़ुकाम की शिद्दत कम हो जाती है। नक्सीर को बंद करने में प्याज़ के पानी की निस्वार लेना मुफ़ीद होता है। जलते हुए हाथ पैरों पर प्याज़ का पानी लगाया जाता है।

बीनाई को बढ़ाने के लिए प्याज़ को आंखों में सलाई के साथ लगाया जाता है। इसको कान में टपकाने से कान दर्द जाता रहता है। जिल्दी इमराज़ के अलावा कड़वे तेल के साथ प्याज़ का पानी मिलाकर जोड़ों के दर्द में मालिश करने से फ़ाएदा होता है। इस ग़र्ज़ के लिए हमारे अपने मुशाहिदात के मुताबिक़ ज़ैतून के तेल में अदरक की मालिश हर लिहाज़ से बेहतर और मुफ़ीद है। इसको सिरके में मिला कर गले की ख़राबी में देते हैं प्याज़ को सिरके में पका कर यरक़ान, तिल्ली बढ़ने और मलेरया बुख़ार में निहायत अच्छे असरात के साथ दिया जाता है। बअज़ माहिरीन का ख़याल है कि सिरके में सियाह मिर्च का शामिल करना फ़वाइद में इज़ाफ़ह करता है। प्याज़ को गाए के घी में भून कर इसमें ज़ीरा सियाह और खांड मिलाकर देने से बवासीर की शिद्दत में कमी आ जाती है। प्याज़ के साथ जाएफल, शहद और अंडा मिलाकर देने से बच्चों में बढ़ने की रफ़्तार में बहतरी आ जाती है।

हकीम सय्यद सफ़ियुद्दीन अली ने इसे मुहल्लल, मुहर्रिक, मदरुलबोल, मनफ़िस, दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन क़रार देकर हर क़िस्म की सूजन में मुफ़ीद कहा है। अंदरूनी तौर पर इम्राज़े क़ल्ब, पेशाब की रुकावट, हैज़ की कमी पुरानी ख़ांसी, हैज़ा और ज़ोअफ़े बाह में इस्तेअमाल करते हैं। उन्होंने प्याज़ के इस्तेअमाल के जो तरीक़े बयान किए हैं उनके मुताबिक़:–

1. तहलीले औराम के लिए प्याज़ को भूभल में रख कर गर्म–गर्म वरम वाली जगह पर बांध दें। उनकी यह तर्कीब फोड़ों को पकाने का पुराना तरीक़ह है। अब तिब और इल्मे जरासीम बहुत आगे जा चुके हैं। फोड़ों को पका कर इनमें पीप जमा करना, फिर इनको फोड़ना एक अज़िय्यत नाक अमल है। जदीद अदविया और तिब्बे नबवी की बेशतर अदविया से फोड़ा पकने से पहले ख़त्म किया जा सकता है।
2. प्याज़ को काट कर बेहोशी में सुंघाएं।

3. पेशाब और हैज़ की रुकावट दूर करने के लिए प्याज़ को पानी में उबाल कर पिलाएं।
4. प्याज़ के अर्क़ में शहद मिलाकर देने से पुरानी खांसी दूर हो जाती है।
5. हैज़े में आबे प्याज़ और चूने का पानी मिला कर पिलाएं।
6. ज़ुअ़फ़े बाह में आबे–प्याज़, शहद और घी को हम वज़न मिलाकर पकाएं। जब गाढ़ा हो जाए तो मरीज़ को चटाएं।

मक़ामी इस्तेअमाल के लिए इनके नुसख़े हस्बे ज़ैल हैं:

1. प्याज़ के बीज पीस कर शहद मिलाकर गंज पर लेप करें।
2. बीजों को सिरके में पीस कर दाद पर लगाएं।
3. प्याज़ के बीज पीस कर निस्फ़ छोटा चम्मच हम वज़न शहद में मिलाकर ज़ुअ़फ़े बाह के लिए सुबह–शाम दें।

हिंदुस्तान में खाना पकाने के दौरान प्याज़ कसरत से इस्तेअमाल होता है। अकसर घरों में प्याज़ पर लीमूं निचोड़ कर या ख़ालिस प्याज़ रोटी के साथ कच्चा खाया जाता है। मज़दूर और किसान दोपहर के खाने के लिए प्याज़ कूट कर इसपर नमक मिर्च डाल कर रोटी के साथ सालन की जगह कसरत से खाते हैं। गोश्त पकाने में प्याज़ का इस्तेअमाल एक लाज़मी सी चीज़ बन गई है। मगर इसके बावजूद लोगों का पेट ख़राब होता है। इनको इस्हाल आते हैं और ख़ून की नालियों की वह आम बीमारियां होती हैं जिनके लिए प्याज़ को अतिब्बाअ़ ने अक्सीर क़रार दिया है। सरकारी तौर पर कहा जाता है कि हैज़ा के दिनों में कच्चा प्याज़ खाया जाए जिससे हैज़ा नहीं होगा। मगर हैज़ा इसी शद्दोमद से होता है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्याज़ को नापसंद किया है। जिस चीज़ को वह नापसंद करते थे, कभी मुफ़ीद नहीं हो सकती। इसलिए बीमारियों के इलाज में प्याज़ के इस्तेअमाल से पहले भी लोग नाकाम रहे और अब भी ऐसा ही होगा।

होम्योपैथिक तरीक़ए इलाज:

इस तरीक़ए इलाज में प्याज़ को मुख़्तलिफ़ ताक़तों में ALLUMCEPA के नबाताती नाम के साथ दिया जाता है। इसकी अलामात का अहम तरीन उसूल यह है कि मरीज़ को जितनी भी शिकायात होती हैं इनमें बंद कमरे, गर्म हवा, गर्मी या बंद माहौल में इज़ाफ़ा होता है। अगर यह मरीज़ कमरे से बाहर निकल जाए या खुली हवा में बैठा हो तो इसकी शिकायात की शिद्दत में किसी इलाज के बग़ैर फ़ौरन कमी आ जाती है।

गला बैठ जाने से आवाज़ खुरदुरी, गले से बदबू और नज़ला, नाक में जलन और ऐसा मअलूम होता है कि इसके शुरू में कोई चीज़ रुकावट का बाइस बनी हुई है। आंखें सुर्ख़ और इनसे पानी निकलता है। जलन होती है, कान में दर्द और बार–बार छींकें जिनसे कान दर्द में इज़ाफ़ा होता है। भूख कम हो जाती है। हर वक़्त थोड़ी–थोड़ी मतली महसूस होती है पेट से बदबूदार हवा ख़ारिज होती रहती है। अक्सर दस्त लग जाते हैं, मसानह कमज़ोर पड़ जाता है जिसकी

वजह से पेशाब को मअमूली अरसे के लिए रोकना भी मुमकिन नहीं होता। इसलिए बार–बार पेशाब की हाजत होती है और यह ज़रूरी नहीं कि इसकी मिक़दार भी ज़्यादा हो। पेशाब को अगर शीशे के ग्लास में रखें तो इसकी तह में चाक की मानिंद सफ़ेद सफ़ूफ़ बैठा हुआ नज़र आता है।

पीलू ...... अराक

TOOTHBRUSH TREE

SALVADORA PERSICA

पीलू बुनियादी तौर पर एक सोहराई दरख़्त है। जो सोहराओं के अलावा ख़लीज अरब के गर्म साहिलों और ईरान में कसरत से पाया जाता है। बाज़ार में बिकने वाली सफ़ेद मिस्वाकें इसकी शाख़ों और जड़ों से बनती हैं। पंजाब, सिंध, बिलोचिस्तान, सरहद, बीकनेर, राजपूताना, लंका, वुस्ती अफ़रीका, हबशा, मिस्र, नाइजीरिया, सैनीगाल, सूडान, तंज़ानिया और अरब में आम होता है। सऊदी अरब के बहीरए क़ल्ज़म के साहिल से ले कर यमन, नजरान और नजद तक मिलता है। यह दरख़्त अपने बैर जैसे फल और फैली हुई सायादार दरख़्तों से पहचाना जाता है। जंगलों में यह ख़ुदरू होता है। ऊंट और बकरियां इसके पत्तों को शौक़ से खाते हैं। जबकि इनको चराने वाले इस के फल से रग़बत रखते हैं। अतिब्बा क़दीम ने पीलू को सोहराई इलाक़ों की ख़ुदरौ और पहाड़ी क़िस्मों में शुमार किया है। जबकि इल्मे नबातात में इसकी दो क़िस्में पाई गई हैं। जिनमें से एक SALVADORA PERSICA और दूसरी SALVADORIA है। अव्वलुज़्ज़िक्र का दरख़्त कीकर है ज़रा छोटा, मज़बूत तना, मैली सी छाल और रंस भरे पत्ते, ज़र्दी माइल फूल देता है। जबकि दूसरी क़िस्म की शाख़ें अगर्चे काफ़ी होती हैं लेकिन वह झुक कर छतरी की शक्ल इख़्तियार नहीं करतीं। इसकी छाल सफ़ेद, हल्के सब्ज़ रंग के पत्ते, सब्ज़ी माइल सफ़ेद फूल देता है। इसकी लकड़ी सुर्ख़ और सख़्त होती है जिसको दीमक नहीं लगती। वज़न में भारी होती है। इसलिए ज़मानए क़दीम में कई बादशाहों के ताबूत इसकी लकड़ी से बनाए गए। दीमक पहली क़िस्म की लकड़ी को भी नहीं लगती। बल्कि इससे अगर कोई चीज़ बनाई जाए तो इस पर पॉलिश की चमक ख़ूब होती है। इसी ख़ासियत की बिना पर फ़राईने मिस्र में से कई एक के ताबूत इसी से बनाए गए।

एडवर्ड लेन ने अबू–ज़्याद और दूसरे उलमा के हवाले से अराक के दरख़्त की शाख़ों और जड़ों से मिस्वाक करना मुफ़ीद तरीन क़रार दिया है। उसने अपनी लुग़त में अराक से मुराद वह जगह ली है जहां पर अराक के दरख़्त पाए जाते हों। इसकी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ वह ऊंट जो इस दरख़्त पर पलते हैं इनके दूध में मुख़तलिफ़ बीमारियों से शिफ़ा का असर ज़्यादह होता है। बल्कि पीलू खाने वाली बकरियों और ऊंटनियों के दूध में इसका ज़ाएक़ा और ख़ुश्बू पाई जाती है। इसी सिलसिले में तारिक़ बिन शहाब रज़ि॰ से एक दिलचस्प रिवायत मिलती है। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसलल्लम ने फ़रमायाः

عليكم بالبان الابل فنها ترم من كل الشجر وهو شفاء من كلّ داءٍ
(ابن عساکر)

(तुम्हारे लिए ऊंटनी का दूध मौजूद है। यह हर क़िस्म के दरख़्तों पर चरती है इसलिए यह ही बीमारी से शिफ़ा है।)

मुस्नद अहमद बिन हंबल में इसी क़िस्म का एक इरशाद इन्हीं तारिक़ बिन शहाब रज़ि. की वुसातत से गाए के दूध के बारे में इसी बुनयाद पर मयस्सर है कि वह हर क़िस्म के दरख़्तों से चर्ती है। जबकि मुस्तदरिकुल हाकिम में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

ان اللّٰه تعالىٰ لم ينزل داء الّا انزل له الشفاء الاالهرم فعليكم بالبان البقر فانها ترم من كل الشجر
(مستدرک الحاکم)

(अल्लाह अताला ने ऐसी कोई बीमारी नहीं उतारी जिसका इलाज भी नाज़िल न किया गया हो। सिवाए मौत के। तुम्हारे लिए गाए का दूध मौजूद है क्यूंकि यह हर क़िस्म के दरख़्तों से चरती है।)

पीलू के फल को अक्सर लोग पीलू ही कहते हैं। इसी उर्फ़ियत में मुल्तानी ज़बान की एक मशहूर काफ़ी के अश्आर में इस मौसम का तज़किरा किया गया है जब पीलू पक जाएं। अरबी में इसके फल को कबात कहते हैं। जनूबी हिंद और मालाबार के इलाक़ों में इसकी कच्ची टहनियों और हरे पत्तों को पका कर रोटी के साथ सालन की मानिंद खाया जाता है।

हिंदुस्तान के शहनशाह जहांगीर ने अपनी एक बीमारी के इलाज के सिलसिले में ऊंटनी का दूध इस्तेमाल किया। उसे डर था कि दूध बादी न हो। इस ग़र्ज़ के लिए उस ऊंटनी को सौंफ़, ज़ीरा, अज्वाइन, बादाम और चहार मग़ज़ खिलाए गए। इसका दूध इतना शीरीं था कि इसमें शकर मिलाने की ज़रूरत न रही। चंद दिन दूध पीने से वह शिफ़ायाब हो गया। सऊदी अरब के मरहूम शाह अब्दुल अज़ीज़ की तवानाई का राज़ ऊंटनी के दूध में था। उनकी ऊंटनियां सोहराई झाड़ियों के अलावा पीलू कसरत से खाती थीं।

इरशादाते रब्बानी:

क़ुरआन मजीद में लफ़्ज़ अराइक तीन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इस्तेमाल हुआ। मसलन:

ان اصحٰب الجنة اليوم فى شغل فاكهون. هم وازواجهم فى ظلٰل على الارائک متكئون
(یٰس:٥٥:٥٦)

(जन्नत में रहने वाले फल खा रहे होंगे और अपनी बीवियों के साथ घने सायों में तख़्तों पर टेक लगाकर मबसूत होंगे।)

ان الابرار لفى نعيم. على الارائک ينظرون٥
(المطففين:٢٢:٢٣)

(अच्छे आअमाल करने वाले राहतो आराम में होंगे। वह अपने पलंगों पर बैठे (मनाज़िरे जन्नत का) नज़ारा कर रहे होंगे।)

فاليوم الذين امنوا من الكفار يضحكون. على الارائک ينظرون
(المطففين:٣٤_٣٥)

(आज के दिन सूरतेहाल यह होगी कि मोमिन काफ़िरों की हालते ज़ार पर हंस रहे होंगे और वह अपने पलंगों से उनकी ख़स्ता हाली देख रहे होंगे।)

यह तमाम आयात जन्नत में जाने वालों के इनआमात के बारे में हैं। इनकी मसनद को अराइक कहा गया है। मुफ़स्सिरीन किराम ने लुग़त के मुताबिक अराइक को लफ़्ज़ अरीका से माख़ूज़ किया है। जिसके मअ़ने टेक लगाने वाली चारपाई है। बल्कि अहदे हाज़िर का सोफ़ह ज़्यादा दुरुस्त होगा। वह जन्नत में सोफ़ों पर अपनी बीवियों के साथ फल खाते, साए में तकिए लगाए आराम करते हुए, नाफ़रमानों के अंजाम पर हंसी उड़ा रहे होंगे।

"अराक" पीलू के दरख़्त को भी कहते हैं। विल्यम लेन की अरबी अंग्रेज़ी लुग़त के मुताबिक़ "अराइक" इस क़ितअ़ ज़मीन को कहते हैं, जहां पर पीलू के दरख़्त पाए जाते हैं।

जामेउल बयान, इब्ने कसीर और लुग़त की दूसरी जदीद किताबों और अलमिंजद ने अराइक को पीलू से मुश्तक़ क़रार देने की बजाए इसे अरीका से मुतअल्लिक़ क़रार दे कर सोफ़ह बयान किया है। अल्लामा वहीदुज़्ज़मां और दूसरे मुफ़स्सिरीन ने तर्जुमे में तख़्ते बयान किए हैं। इसके मअ़ने सोफ़ह तो हैं ही लेकिन जब दरख़्तों के साये का ज़िक्र आया है तो अराक की मुनासबत से यह भी कहा जा सकता है कि वह अराक की छाओं में तकिए लगाए चैन से होंगे।

इरशादाते नबवी सल्लल्लाहों अलैहि वसल्लम:

हज़रत अबी ईाज़तुस्सहाबी रज़ि॰ रिवायत फरमाते हैं।

اعطانی النبی صلی الله علیه وسلم اراکاً فقال استاکوا بهذا. (ابن سعد)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे पीलू की शाख़ मरहमत फ़रमाई और फ़रमाया कि इससे मिस्वाक किया करो।)

हजरत अबी ज़ैद अलआफ़ाक़ी रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

الاسوکة ثلاثة. فان لم یکن اراک نعنم اوبطم (ابونعیم)

(मिस्वाक तीन ही क़िस्म की दुरुस्त है। अगर पीलू मयस्सर न हो तो अनअ़म या सनूबर)

अ़नअ़म को मुहद्दिसीन ने एक ऐसी बेल क़रार दिया है जिसके साथ नर्म और मुलायम शाख़ें लगती हैं। इल्यास अंतून ने अपनी लुग़त में इस बेल का जो ख़ाका बनाया है इसमें यह अंगूर की बेल से मुशाबहत रखती है। फ़िरोज़ुल्लुग़ात में इसे एक ऐसी बेल क़रार दिया गया है जिसके साथ सुर्ख़ रंग के फल लगते हैं। इसे फल वाली बेल क़रार देना दुरुस्त नहीं। क्यूंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़िलाल और मिस्वाक के लिए, हमेशा तल्ख़ लकड़ी तज्वीज़ फ़रमाई है। ऐसी रिवायात कसरत से मिलती हैं जिनमें फलदार दरख़्तों की लकड़ी से ख़िलाल करने से ख़ुसूसी तौर पर मनअ किया गया। लुग़त की किताबों और उमूमी उसूल को सामने रखकर अनअ़म ग्लू की क़िस्म मालूम होती है। क्यूंकि

इसकी शाख़ें नर्म तल्ख़ और मसूढ़ों को तहरीक देने और मुंह से बदबू दूर करने की सलाहियत रखती हैं।

बतम को ज़बानदानों ने सनूबर बताया है। इसे हमारे यहां अर्फ़ आम में चील का दरख़्त कहते हैं जिसके साथ चिलग़ोज़े लगते हैं।

अगर्चे पीलू का ज़िक्र अहादीस में मुतअद्दिद मक़ामात पर मुख़्तलिफ़ सूरतों में आया है। लेकिन इज्तिमाई ज़रूरत के लिए तमाम साथियों के साथ पीलू की मिस्वाकें मुहैया करने का एक दिलचस्प वाक़िआ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. आप बीती के तौर पर बयान फ़रमाते हैं।

انه يجتبى سواكاً من الاراک وكان دقيق الساقين فجعلت الريح تكفؤه فضحک القوم منه. فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم مما تضحكون؟ قال يا نبى الله! من دقّة ساقيه. فقال والذى نفسى بيده لهما اثقل فى الميزان من احَدٍ...... (مسند احمد)

(वह मिस्वाक उतारने के लिए पीलू के दरख़्त पर चढ़े उनकी पिंडलियां बड़ी कमज़ोर और दुबली थीं। जब हवा का झोंका आया और वह नंगी हो गईं तो सारे साथी हंसने लगे। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी मौजूद थे। उन्होंने पूछा कि तुम लोग किस बात पर हंस रहे हो? उन्होंने कहा कि ए अल्लाह के नबी सल्ल.! हम उनकी दुबली टांगों पर हंस रहे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। क़सम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है। रोज़े हश्र यह तराज़ू में किसी से भी वज़नी होंगी।)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं:

كنّا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم بمرّ الظهران نجنى الكباث فقال عليكم بالا سودمنه، فانّه اطيب، فقيل اكنت نرعى الغنم؟ قال نعم. وهل من نبى الّا رعاها (بخاری ومسلم)

(हम रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हमराही में मरुज़्ज़ोहरान में थे कि पीलू के दरख़्तों का फल (कबास) चुनने को निकले, उनहोंने ने हिदायत फ़रमाई कि देख कर काले-काले चुन कर लाएं। क्यूंकि वह उम्दा होते हैं। हम ने पूछा क्या आप कभी बकरियां भी चराते रहे हैं। तो फ़रमाया हां, कोई नबी ऐसा नहीं जिसने कभी बकरियां न चराई हों।)

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदात:

वैदों ने इसकी दो क़िस्में बयान की हैं। बड़ी क़िस्म का दरख़्त तीस फ़ुट ऊंचा झुका हुआ तना, सफ़ेद रंग की मोटी छाल, फागुन और चेत में हरे सफ़ेद फूल लगते हैं जो मौसमे सरमा में पीले हो जाते हैं। छोटी क़िस्म का दरख़्त चालीस फ़ुट तक बुलंद, तने की गोलाई आठ फ़ुट तक होती है। इन दरख़्तों को नमकोलियों की शक्ल का एक फल लगता है, जो कच्चा हो तो तल्ख़ और कसेला। यह पकने पर सफ़ेद और बअद में नीला पड़ जाता है। आख़िर कार सियाह पड़ जाता है। यह छोटा और सख़्त होता है। सियाह होने पर इसका

ज़ाएक़ा थोड़ा सा शीरीं कड़वाहट की जानिब कसेला होता है। पहाड़ी अक़साम का फल छोटा और कांटों के दरमियान होता है जिसमें बीज नहीं होते बअज़ सोहराई इलाक़ों का फल बड़ा और रसदार होता है। चरवाहे इसे मुंह में दबा कर रस चूस कर फेंक देते हैं। पीलू का मशहूर तरीन इस्तेअमाल मिस्वाक है। यह दांतों को जिला देती है। मसूढ़ों से गंदे मवाद को निकालती और दांतों को मज़बूत करती है। पीलू के पत्तों को ज़ैतून के तेल में उबाल कर इसकी मालिश से जोड़ों के दर्द को फ़ाएदा होता है। यही तेल बवासीर, खारिश और कोढ़ में भी मुफ़ीद बताया गया है।

पीलू की लकड़ी की मिस्वाक दांतों को जिला देती है। मुह की बदबू को दूर करती है। और सालन को ख़ुशबूदार बनाती है। दांतों को मज़बूत करती है। मसूढ़ों को ढीला करने वाली रतूबत को निकाल कर इनको तंदरुस्त बनाती है। ज़्यादा मिस्वाक करने से मुंह पक सकता है। इसके पत्तों के लेप से नज़्ला रुक जाता है। अगर बालों को ख़िज़ाब लगाने से पहले अदविया को पीलू के पानी में थोड़ी देर भिगो लिया जाए तो रंग गहरा आता है। इसके पत्ते कूट कर ज़ैतून के तेल में मिलाकर जली हुई जगह पर लेप करने से न तो आबला पड़ता है और न ही बअद में पीप पड़ती है। यही नुस्ख़ा फोड़ों पर लगाएं तो वह जल्द मुंदमिल हो जाते हैं। इस दरख़्त की कोंपलें, शाख़ें, पत्ते और फल यकसां तौर पर जरासीम कुश और ख़ुश्की पैदा करते हैं यअनी ASTRINGENT हैं।

अतिब्बा क़दीम ने पीलू की कोंपलों को रौग़न इरसा में पका कर नाक में टपकाने से सर दर्द का इलाज किया है। हकीम नजमुल ग़नी का कहना है कि यह नुस्ख़ा दिमाग़ की कमज़ोरी के लिए भी मुफ़ीद है। इसके फूल सुखा कर पीस लिए जाएं और इनकी एक चुटकी शहद में मिला कर दिन में दो तीन मर्तबह खाने से आंतों के मुज़मिन ज़ख़्म भर जाते हैं।

पीलू के पत्ते उबाल कर इनसे ग़रारे करें तो मुंह के ज़ख़्म STOMATITIS में फ़ाएदा होता है। हमने ज़ाती तजुर्बे में इन पत्तों का जोशांदा निकाल कर इसमें सिरका मिलाकर मुंह के ज़ख़्मों में बड़ी उफ़ादियत के साथ इस्तेअमाल किया है।

वैदों के यहां झूठे पीलू को पेट के सुद्दे खोलने वाला, मदरुलबोल, और सांप के ज़हर का तिर्याक़ समझा जाता है। इसके पत्तों का रस निकाल कर मसूढ़ों पर लगाने से इनका वरम उतर जाता है। इसके पत्तों को पीस कर इनमें ज़ैतून का तेल मिलाकर जोड़ों के वरम वाली जगहों पर मालिश करने से फ़ाएदा होता है। इसके तेल में रूई भिगोकर बवासीर के मस्सों पर लगाने से वह ख़त्म हो जाते हैं।

बड़े पीलू के फल को वैद ठंडा, मुक़व्वी, दाफ़ेअ अलम क़रार देते हैं, यह भूख बढ़ाता, बावगोला, संग गुर्दा मसानह को दूर करता और मस्हल है। इसकी छाल को पीस कर छः माशह हमराह सात दाना मिर्च सियाह सात रोज़ तक खाने से बवासीर जाती रहती है। पेट के कीड़े मर जाते हैं। इसी नुस्ख़े को बअज़ अतिब्बा ने जज़ाम में भी मुफ़ीद क़रार दिया है। अलबैरूनी ने पीलू के दरख़्त का ज़िक्र किया है। वह इस फल की तअरीफ़ करता है। वह इसके फ़वाइद में मिस्वाक के बअद फल को बरीरह क़रार देता है। अबू हनीफ़ा दीनोरी ने पीलू के फल की

तीन क़िस्में कबास, मुर्द और बरीरह क़रार दी है। बरीरह ज़ाएक़े में तेज़ और तल्ख़ होता है। जबकि इब्नुल अरबी कबास और बरीर को दो मुख़्तलिफ़ चीज़ें बयान करता है।

इब्नुल बनीतार अगर्चे पीलू की मिस्वाक को दूसरी क़िस्मों से बेहतर तस्लीम करता है। मगर उसने ज़्यादह अहमियत इस दरख़्त के तिब्बी फ़वाइद को दी है। हकीम मुहम्मद आज़ाम ख़ां ने अपनी अदीमुल मिसाल तालीफ़ "मुहीते आज़म" में पीलू की पहाड़ी और ख़ुदरौ अक़साम को अलाहिदा-अलाहिदह फ़वाइद की हामिल बयान किया है।

पीलू के फ़वाइद का तफ़सीली जाएज़ा बग़दादी ने किया है वह इसे जिल्द का रंग निखारने वाला, मुलय्यन, दाफ़ेअ अलम बयान किया है। इसका मुशाहिदा है कि पीलू की मिस्वाक करने से मुंह के लेसदार मादे ख़ारिज हो जाते हैं। दांतों के दरमियान से ग़िलाज़त निकल जाती है। सांस ख़ुश्बूदार होती है। दांतों पर जमा हुआ लाखा उतर जाता है। मुंह के फ़वाइद के साथ यह बलग़म को निकालती है। अगर्चे अतिब्बा ने इस दरख़्त के तमाम हिस्सों को मुफ़ीद बताया। लेकिन जड़ के फ़वाइद दूसरे हिस्सों से ज़्यादह हैं।

कीम्यावी साख़्त:

पीलू के दरख़्त का हर हिस्सा अपनी उफ़ादियत में यकता है। लोगों ने इसके पत्तों, छाल, शाख़ों, फल और जड़ों को मुख़्तलिफ़ मक़ासिद के लिए इस्तेअमाल किया है इसलिए इनकी अलाहिदा-अलाहिदा कीम्यावी साख़्त को मअलूम किया जाए तो अतिब्बा को यह सहूलत मयस्सर होगी कि वह इनकी रौशनी में फ़वाइद को काम में ला सकते हैं।

दरख़्त की छाल में बीरोज़ा, रंगने वाला अंसर और एक कीम्यावी मुरक्कब TRIMEN HYLAMINE पाया जाता है। इस मुरक्कब को कीम्या दानों ने ALVADORINE का नाम दिया है। क्यूंकि यह बुनियादी तौर पर ALKALOID है और नबातात का जुज़्व आमिल कहलाने की हैसियत रखता है। छाल को जलाकर इसके मौजूदात के तज्ज़िये पर CHLORINE की कसीर मिक़दार पाई गई है।

कबास यअनी पीलू का फल मीठा होता है इसलिए मिठास की मिक़दार काफ़ी मिलती है। यह मिठास ऐसी है कि ज़ियाबेत्स के मरीज़ों के लिए मुज़िर नहीं। इसके अलावा ALKALOID रौग़नियात और रंगने वाला अंसर इसमें मौजूद होता है।

पीलू के बीजों में सफ़ेद तेल, पीले रंग का माद्दा और किसी क़दर मिठास पाई जाती है। बीजों से तेल निकालने के बअद जो खली बच जाती है इसमें नाइट्रोजन 4.8 प्रतिशत पोटाश 2.8 प्रतिशत फ़ास्फ़ोरिक एन्हाईराइड 1.05 मिलते हैं।

पीलू की जड़ में नर्म रेशे, टेनिक एसिड, जुज़्व आमिल अल्कलाइड और दूसरे कीम्यावी मुरक्कबात कसरत से मिलते हैं। इसलिए इनका बतौर मिस्वाक

इस्तेमाल एक मुफ़ीद अमल है। क्यूंकि जड़ और छाल में पाए जाने वाले अज्ज़ा जरासीम कुश असरात के साथ दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन भी हैं।

पीलू की जड़ों को साए में सुखा कर जलाया जाए तो इससे 27.1 फ़ीसदी राख हासिल होती है। इस राख में क्लोराईड और दूसरे नमकियात की एक कसीर मिक़दार हासिल होती है। जिसकी वज़ह से कीम्यादान इसे नमकीन झाड़ी SALT BUSH भी कहते हैं। पीलू से हासलि होने वाली नमकियात में TRIMENTHYLAMINE को अहमियत हासिल है इसे इख़्तिसार के तौर पर TMA के नाम से पुकारा जाता है इस अंसर की अजीब सिफ़त यह है कि पानी या दूसरे सयाल इसकी आमेज़िश के बाद चीज़ों को अपने ऊपर तैराने लगते हैं। यह तेह में बैठे हुए ज़र्रों को तैराने लगता है और इस तरह दांतों के दरमियान फंसे हुए ख़ुराक के ज़र्रे और दांतों पर जमा हुआ लाखा बाहर निकल आता है। यह जरासीम कुश असरात रखती है और पीलू में मौजूद दूसरे नम्कियात के साथ मिल कर इसका दाफ़अे तअफ़्फ़ुन असर दोबाला हो जाता है। इन नम्कियात में क्लोरीन के नमक मिक़दार में सबसे ज़्यादह होते हैं। जो सोडियम, पोटाशियम और मैग्नेशियम से मुरक्कब होते हैं। क्लोरीन बज़ाते ख़ुद जरासीमकुश, दाफ़े अफ़ूनत और रंगों को उड़ाने की सलाहियत रखती है। शहरों को मुहय्या किए जाने वाले पानी से जरासीम मारने के लिए क्लोरीन का इस्तेमाल एक मशहूर चीज़ है। जहां पर यह ख़ालिस सूरत में मयस्सर न हो, छोटे शहरों में और महदूद पैमाने पर पानी को साफ़ करने, गंदी सब्ज़ियों और फलों को क़ाबिले ख़ुराक बनाने के लिए इसका मशहूर मुरक्कब SOD. HYPOCHLORITE जो अरफ़े आम में ब्लीचिंग पावडर या रंग काट कहलाता है। आम इस्तेमाल में रहता है। हाल ही में एक बरतानवी दवासाज़ इदारे ने MILTON-2 के नाम से इसका एक मुरक्कब बड़े दावे के साथ पेश किया है। इनसानी जिस्म के मुख़्तलिफ़ आमाल और अफ़आल क्लोराईड और ख़ास तौर पर सोडियम क्लोराइड एक अहम जुज़्व है। हिंदुस्तान के पुराने लोग दांतों को साफ़ करने के लिए यही मुरक्कब जो कि आम ख़ुर्दनी नमक है ख़ालिस सूरत में या सर्सों के तेल में मिलाकर दांतों को साफ़ करने के लिए इसतेअमाल करते आए हैं। यह अब भी कहा जाता है कि अगर मसूढ़े में वरम आ जाए तो शाम को नमक और तेल लगाने से सुबह तक वरम उतर जाता है।

पीलू में गंधक और रेतीले ज़र्रात मिलते हैं। गंधक का जरासीमकुश होना बुक़रात को भी मअलूम था और रेतीले ज़र्रात दांतों को पॉलिश करते हैं।

फ़्लोराईड को दांतों की जिला और हिफ़ाज़त के लिए बड़ा मुफ़ीद समझा जाता है। पीलू में इसकी माअकूल मिक़दार मिलती है इसके अलावा एक अल्क्लाइड SALVADORINE पाया जाता है मगर यह क़लील मिक़दार में सिर्फ़ बड़े पीलू की जड़ों में पाया जाता है।

विटामिन "जे" को सोज़िश के इलाज में हमेशा से अहमियत रही है। अगर्चे आजकल के कुछ माहिरीन इम्राज़ के इलाज में विटामिन की उफ़ादियत पर मुश्तबह हैं लेकिन दांतों को सहतमंद रखने और मसूढ़ों को तंदरुस्ती क़ायम

रखने में इसको बड़ी शोहरत हासिल है। विटामिन "जे" की मुसलसल कमी की वजह से सक़र्वी की मूज़ी बीमारी जहाज़रानों में बड़ी बदनाम रही है। जिसमें जिस्म पर सूजन के साथ मसूढ़ों से ख़ून आता है और दांत गिर जाते हैं। यह विटामिन पीलू में कसीर मिक़दार में पाया जाता है। इसके अलावा बीरोज़ा भी पाया जाता है। जो मिस्वाक करते हुए दांतों के एनिमल पर पॉलिश कर देता है।

जदीद मुशाहिदात:

मग़रिबी मुमालिक के डाक्टर मुंह में किसी लकड़ी को डाल कर इससे मसूढ़ों जैसी नाज़ुक चीज़ को रगड़ने के तसव्वुर से भी घबराते हैं।

लंदन में एक महीना गुज़ारने के बाद मुंह का ज़ाएक़ा ख़राब हो गया। हर वक़्त लेसदार रतूबतों का एहसास होता, ज़बान पर सफ़ेदी जम गई। एक रोज़ ख़याल आया कि यह मिस्वाक छोड़ने का नतीजह है। चुनांचे हाइड पार्क के माली से सुख चैन की हरी शाख़ ली और सेंट पॉल हस्पताल के ग़ुसलख़ाने में इसे मुंह में फेरा गया, जो भी गुज़रा, उसने इस फ़एले शनीअ से मनअ किया। दस मिनट में यह ख़बर पूरे हस्पताल में फैल गई कि एक पाकिस्तानी डाक्टर पागल हो गया है। मसूढ़ों जैसी नाज़ुक चीज़ पर सख़्त लकड़ी फेर रहा है। वार्ड में गए तो प्रोफ़ेसर ने न सिर्फ़ पूछा बल्कि मसूढ़ों में ज़ख़्मों का पता चलाने के लिए तफ़सीली मुआएना किया। ज़ख़्मों की बजाए उन्होंने चमकते हुए दांत देखे। हैरान कि यह क्या माजरा हुआ। और कई उस्ताद भी देखने आए मगर छिले हुए मसूढ़े न पाकर हैरत हुई इन तन आसान और आराम तलब ज़िंदगी गुज़ारने वालों की समझ में यह सीधी बात न आ सकी कि हरी शाख़ के नर्म व मुलाइम रेशे, सुवर के बालों या नाएलोन के सख़्त बुरश से ज़्यादा नर्म होते हैं। पीलू की लकड़ी और मुंह में इसके मुफ़ीद असरात की तअरीफ़ भी मग़रिब से ही मयस्सर है।

विल्यम डाइमाक ने 1890 में बरतानवी हिंद में पाई जाने वाली जड़ी बूटियों के तिब्बी फ़वाइद पर एक जामेअ किताब शाए की। जिसे हमदर्द फ़ाउंडेशन ने 1972 में दोबारह शाया किया है। वह पीलू की दोनों क़िस्मों का मुवाज़ना करने के बाद इसके बीजों के ज़ाएक़े और ख़ुश्बू की तअरीफ़ करता है। जार्ज वाट ने मुशाहिदा किया कि इसकी लकड़ी दीमक नहीं लगती। डाइमाक ने इसमें से एक अल्कलाइड, सिलवाडोरेन हासिल किया और मुशाहिदा किया कि यह मसूढ़ों के दौराने ख़ून में इज़ाफ़ह करती है। जरासीम को मारती है और दांतों के दरमियान फसे हुए सड़ांद पैदा करने वाली ख़ुराक को घोल कर बाहर निकालती है। इस टैनिक एसिड की मौजूदगी मसूढ़ों को इकट्ठा करती है। फ़्लोरीन जरासीमकुश है। सलीका, या रेत का मुरक्कब और बीरोज़ा दांतों को पॉलिश करते हैं। जबकि हयातीन "जे" दांतों को मज़बूत करती है।

तफ़सीली मुशाहिदात का ख़ुलासह यह है कि पीलू पेट से हवा निकालता है। गुर्दा और मसानह की पथरी को तहलील करता, पेशाब आवर है। इसका फल (कबास) क़ब्ज़कुशा है। दरख़्त के पत्ते सक़र्वी को दूर करते। इनको गंठिया वाले जोड़ों पर लगाएं तो दर्द और वरम को दूर करते हैं। बवासीर के मस्सों को

मुंदमिल करते हैं। इसके फूलों का तेल सोजाक, जज़ाम, पेट के कीड़ों में मुफ़ीद है।

पीलू के दरख़्त की ताज़ह छाल से निकाला हुआ अर्क़ लगाने से आबले पड़ जाते हैं। अगर इसका कमज़ोर महलूल इस्तेअमाल किया जाए तो दौराने ख़ून में इज़ाफ़ह करता है। कर्नल हारवर्डवरी ने "हिंदुस्तान की मुफ़ीद नबातात" में बयान किया है कि छाल का जोशांदा हल्के बुख़ार को उतारता कमज़ोरी को दूर करता और हैज़ आवर है। कबीर तीकर सिंह ने इसकी जड़ों के जोशांदे को तिल्ली के वरम में मुफ़ीद बयान करके हैज़ आवर फ़ाएदे की तसदीक़ की है।

करनल चोपड़ा पीलू के फल को मुक़व्वी बाह क़रार देता है। इसे खाने से बढ़ी हुई तिल्ली कम हो जाती है। सांप काटे का बहतरीन इलाज है। इस ग़र्ज़ के लिए इसके साथ सुहाका बर्यां शामिल करना ज़्यादह मुफ़ीद है। इसे रसोलियों और पथरी में मुफ़ीद पाया गया। सेन गुप्ता पत्तों के जोशांदे को जरासीकुश क़रार दे कर इसे सोज़ाक, जज़ाम, सांस की नालियों की सोज़िश बल्कि सरदियों में भी मुफ़ीद बताता है।

दांतों की बीमारियों में पीलू के फ़वाइद:

तिब्बे इस्लामी की पहली कान्फ्रेंस में कुवैत के डाक्टरों मुस्तही उरंजाई, अलजिंदी और शुक्री ने एक तहक़ीक़ी मक़ाला 1981 में SIWAK AN ORAL HEALTH DEVICE के नाम से पेश किया। जिसमें उन्होंने दांतों और मसूढ़ों की मुख़्तलिफ़ बीमारियों में पीलू और इसके मुवाज़ने में दूसरी चीज़ों को इस्तेअमाल किया। माहिरीन की इस जमाअत ने 25–55 साल की उम्र के दरमियान के 80 अफ़राद में से 50 मर्द और 30 औरतों को मुशाहिदात के लिए मुन्तख़िब किया। इनको बीस–बीस के चार गिरोहों में तक़सीम कर दिया गया। इनमें से हर फ़र्द के दांत ख़राब थे इन पर लाखा जमा हुआ था और मसूढ़ों में कई किस्म की बीमारियां मौजूद थीं। इन पर मुख़्तलिफ़ क़िस्म के इलाज आज़माए गए। जिनकी तशरीह और मुशाहिदे यूं हैं।

पहला गिरोह:

इन बीस अफ़राद को बाज़ार में मिलने वाला बेहतरीन विलायती मंजन दिया गया। वह यह मंजन सुबह–शाम बुरश के ज़रिए इस्तेमाल करते रहे। इनको बुरश करने का जदीद तरीन तरीक़ह आम तौर पर सिखाया गया। पांच–हफ़्ते मंजन और ब्रश के इस्तेअमाल के बअद इनकी बीमारी में इज़ाफ़ह हुआ। सिर्फ़ चंद मरीज़ बेहतर हुए। पांच मरीज़ ऐसे थे जिनके मुंह में अंदर की झिल्लियां छिल गईं। जिसकी वजह से इलाज बंद करना पड़ा। इनमें से अक्सर मरीज़ों के मसूढ़ों की तकलीफ़ को फ़ाएदा हुआ। लेकिन दांतों पर जमने वाला माद्दा मिक़दार में मज़ीद बढ़ गया।

दूसरा गिरोह:

इन बीस अफ़राद को ऐसा मंजन दिया गया जिसमें किसी क़िस्म की कोई दवाई न थी। मक़सद यह था कि जिन अफ़राद को दवाएं दी गई हैं इनसे मुवाज़नह करके देखें कि अगर दवाई न दी जाए तो मर्ज़ पांच हफ़्तों में कितना

बढ़ेगा। इनकी बीमारी में न सिर्फ़ यह कि कोई कमी न आई बल्कि हालत मज़ीद ख़राब हुई।

तीसरा गिरोह:

इन बीस अफ़राद को पीलू की मिस्वाक दी गई। इनको मिस्वाक करने का सहीह तरीक़ह सिखाया गया और हिदायत की गई कि मिस्वाक को ज़बान के इतराफ़ में भी फेरा जाए उन मरीज़ों में पहले दो हफ़्तों के दौरान दांतों पर जमे हुए लाखा की मिक़दार बढ़ गई। लेकिन तीसरे हफ़ते में वह कम होना शुरू हुआ। पांचवें हफ़ते तक इसके हजम और मिक़दार में 3.5 प्रतिशत कमी आ गई। मसूढ़े बेहतर हो गए।

चौथा गिरोह:

इनको पीलू की लकड़ियां पीस कर बारीक सफ़ूफ़ दिया गया। अकसर को शिकायत थी कि यह सफ़ूफ़ बदमज़ह है लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता वह इसके आदी हो गए। इन मरीज़ों के दांतों और मसूढ़ों की जो कैफ़ियत इब्तिदा में थी। इसमें शान्दार तब्दीलियां देखने में आईं। दांतों पर जमे हुए लाखा की मिक़दार में कम-अज़-कम 11.2 फ़ीसदी कमी वाक़ेअ हुई।

कुवैत की विज़ारते सहत की निगरानी के किए गए यह तजुर्बात तिब्बे नबवी की उफ़ादियत के बारे में जदीद तरीन मुशाहिदात हैं। इनकी रौशनी में एक आम आदमी भी यह महसूस करता है कि दांतों की तंदरुस्ती की बक़ा और मसूढ़ों की सहत को क़ायम रखने में मिस्वाक और वह भी पीलू की बड़ी मुफ़ीद है। क्यूंकि पीलू में दांतों को साफ़ रखने और इनकी बीमारियों का इलाज करने की इस्तेअदाद मौजूद है। इन्हीं मुशाहिदात की रौशनी में पाकिस्तान में हमदर्द वालों ने टूथ पेस्ट में पीलू को शामिल किया है। यहां पर मसअला यह था कि क्या टूथपेस्ट मिस्वाक का नेअमुलबदल हो सकती है। कुवैत के इन तजुर्बात से यह वाज़ेह हो गया कि उफ़ादियत पीलू में है। अगर इसकी मिस्वाक न की जा सकती हो तो इसका सफ़ूफ़ भी तक़रीबन वही फ़वाइद मुहैया कर सकता है।

कुवैत के मुशाहिदात के बाद हमने मुतअद्दिद मरीज़ों को हमदर्द की पीलू वाली टूथ-पेस्ट तज्वीज़ की. चंद एक को इससे जलन पैदा हुई लेकिन मजमूई तौर पर इसका इस्तेअमाल किसी भी टूथ-पेस्ट से बेहतर रहा। क्यूंकि इसमें पीलू मौजूद है, जिसके जरासीम कुश असरात किसी भी जदीद दवाई से बेहतर और क़ाबिले एतिमाद हैं।

मिस्वाक और पीलू:

दांत साफ़ करने के कई तरीक़े हैं। जिनमें कोएला मलना, दंदासा फेरना, नमक मलना, दरख़्तों की छाल जलाकर लगाना और नमक मलना शामिल हैं। दौरे हाज़िर में बुरश किया जाता है। जबकि हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम की तशरीफ़ आवरी के साथ मिस्वाक का आग़ाज़ हुआ, क़ुरआन मजीद की रौ से वह पहले मुसलमान थे और इस्लाम में जितनी भी मुफ़ीद हिदायात और ईमान के लवाज़िम हैं इन्ही से शुरू होते हैं। चूंकि इतने पुराने मख़तूते मौजूद न रह सकते थे और उस वक़्त के हालात और आज के तक़ाज़े मुख़्तलिफ़ हैं। इसलिए

इन्हीं की ख़्वाहिश पर ख़ुदा ने इनके एक लाइक़ फ़रज़िंद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह ज़िम्मेदारी सौंपी कि वह इबराहीमी सुन्नत के अरकान पर ख़ुद अमल करके दिखाएं और लोगों पर उनकी उफ़ादियत हमेशा के लिए वाज़ेह कर दें। उन्होंने कुरबानी से लेकर हज बैतुल्लाह तक और ख़त्ना से लेकर ख़ुदा की वहदानियत तक हर बात तफ़सील से समझाई और इन्ही इरशादात में एक अम्र मिस्वाक भी था। मिस्वाक की तरह हिंदुओं में भी दांत साफ़ करने का तरीक़ा मुरव्विज है जिसे वह दातुन कहते हैं। दातुन का रिवाज ज़्यादा तौर पर बृह्मणों में रहा है।

दांत साफ़ करने के लिए लोगों ने इन दरख़्तों की शाख़ें मुख़्तलिफ़ अदवार में इस्तेअमाल की हैं।

नीम AZADIRACHTA कीकर ACACIA ARABICA फुलाही ACACIA MODESTA क्रंज PANGAMIA GLABRA पीलू SALVADORA PERSICA जैतून OLIVE

इसके अलावा लोग किसी भी नर्म शाख़ से दांत साफ़ करते देखे हैं। अलबत्ता पंजाब में सुख चैन ज़्यादा मक़बूल है। यह तमाम दरख़्त दांत साफ़ करने के अलावह अपने कीम्यावी अनासिर की वजह से जिस्म इंसानी के लिए उफ़ादियत रखते हैं। यह मसूढ़ों की मुतअद्दिद बीमारियों का इलाज हैं। इसलिए मिस्वाक सिर्फ़ दांतों को साफ़ ही नहीं करती बल्कि मसूढ़ों की बीमरियों का इलाज करती और दांतों को मज़बूत करती है।

इरशादाते रब्बानी:

واذا بتلىٰ ابراهيم ربّه بكلمٰت فاتمهن. قال انّى جاعلك للناس اماماً .... (البقره:١٢٤)

(और जब हमने इबराहीम अलैहिस्सलाम को चंद बातों से आज़माया तो इसने इनको पूरा किया और हमने इसे लोगों का पेश्वा बना दिया।)

हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम को इनके रब ने जिन उमूर में आज़माया इनकी एक तशरीह हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ की एक रिवायत की बिना पर इब्ने कसीर ने की है। जिसके मुताबिक़ इनको अपने सर, जिस्म की सफ़ाई और पाकीज़गी का इरशाद हुआ। उनको मूंछे मूंडने नाख़ुन काटने, कुल्लियां करने, ख़तनां करवाने और ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ करने के अलावा मिस्वाक करने का हुक्म दिया गया। इस सिलसिले में मुफ़स्सिरीन की तफ़सील में इख़्तिलाफ़ है, बअज ने रफ़अ हाजत के बाद पानी से तहारत को भी शामिल किया है और बअज के नज़दीक यह फ़हरिस्त उमूमी सफ़ाई ख़तना, मिस्वाक और नाख़ुन काटने तक महदूद थी। इन कलमात की कोई सी फ़हरिस्त भी देखी जाए, मिस्वाक इन सब में मौजूद है। जिससे यह साबित होता है कि अल्लाह तआला के नज़दीक मिस्वाक करना कितना अहम मक़ाम रहा है।

इरशादाते नबवी सल्ल॰:

हज़रत मिक़दाम बिन शरीह अपने वालिद मुहतरम से रिवायत फ़रमाते हैं।

سالت عائشةٌ بایّ شئٍ کان یبدأ النبی صلی اللہ علیه وسلم اذا دخل بیته؟ قالت بالسواک (مسلم)

(मैंने हज़रत आएशह रज़ि. से पूछा कि घर में तशरीफ़ लाने के बाद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कौन सा काम सबसे पहले करते थे। उन्होंने फ़रमाया: मिस्वाक)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. और हज़रत अबी सलमा रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

لولا ان اشقّ علیٰ امتی لامرتهم بالسواک عند کلّ صلوٰة......
(ترمذی. مسلم)

(अगर मुझे यह एहसास न होता कि मेरी उम्मत पर बोझ होगा तो मैं हुक्म देता कि हर नमाज़ से पहले मिस्वाक की जाए।)

इसी सिलसिले में एक दूसरी रिवायत में जो हज़रत ख़ालिद अलजहनी से बयान की गई है कि मुंदरजह बाला अलफ़ाज़ के साथ यह इज़ाफ़ह भी मिलता है।

ولا خرّتُ صلوة العشاء الیٰ ثلث اللیل (مسنداحمد)

(और मैं इशा की नमाज़ को रात के एक तिहाई हिस्सा गुज़र जाने पर मुअख़्ख़र करता।)

यही इरशादे गिरामी में मसनद अल्बज़ाज़ में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से भी मरव्वी हुआ है। हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब की रिवायत में मुस्तरिकुल हाकिम ने इज़ाफ़ह किया है।

کما فرضت علیهم الوضوء.

(जिस तरह नमाज़ के लिए लोगों के लिए फ़र्ज़ है इसी तरह मिस्वाक भी फ़र्ज़ कर दी जाती।)

मिस्वाक करना नमाज़ के लिए ज़रूरी नहीं है लेकिन इसकी उफ़ादियत का तजकिरा हज़रत आएशा रज़ि. नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत फ़रमाती हैं।

صلوٰة بسواک افضل من سبعین صلوٰة بغیر سواک

(मिस्वाक के बअद एक नमाज़ बग़ैर मिस्वाक के सत्तर नमाज़ से बेहतर है। (इब्ने ज़ंजविया)

यही इरशादे गिरामी ज़रा मुख़तलिफ़ अलफ़ाज़ में इन्हीं से मुस्तरिकुल हाकिम और मसनद अहमद से यूं बयान किया है।

فضل الصلوٰة بالسواک علی الصلوٰة بغیر السواک بسبعین ضعفاً.

(मिस्वाक के साथ वाली नमाज़ बग़ैर मिस्वाक वाली नमाज़ से सत्तर मर्तबा अफ़ज़ल है।)

इब्ने हबान ने यही अहमियत यूं बयान की है।

الرکعتان بعد السواک احب الیّ من سبعین رکعة قبل السواک.

(मुझे मिस्वाक के बअद दो रकअतें बग़ैर मिस्वाक के सत्तर

रकअतों से ज़्यादा पसंद हैं।)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाय:

رکعتان بسواک افضل من سبعین رکعة بغیر سواک و دعوة فی السرّا افضل من سبعین دعوة ف العلانیة وصدقة فی السرّ افضل من سبعین صدقة فی العلانیة (ابن النجار).

(मिस्वाक के बअद दो रकअतें इसके बग़ैर सत्तर से अफ़ज़ल हैं और पोशीदह दअवत एलानिया सत्तर से बेहतर है और छुप कर सदका देना एलानिया से सत्तर मर्तबा बहतर है।)

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

فی السواک عشرة خصال یطیب الغم. ویشداللثة. ویجلو البصر. ویذهب البلغم. ویذهب الجفر. ویوافق السنة ویفرح الملائکة ویرضی الرب ویزید فی الحسنات ویصح المعدة (ابونعیم۔ابوالشیخ)

(मिस्वाक में दस फ़वाइद हैं मुंह को ख़ुश्बूदार करती है। मसूढ़ों को मज़बूत करती है। नज़र को तेज़ करती है। बलग़म निकालती, सोज़िश को दूर करती, सुन्नत पर अमल का बाइस, फ़रिश्तों को ख़ुश करती, रब को राज़ी करती, नेकियों में इज़ाफ़ह का बाइस और मेदह की इस्लाह करती है।)

अबू नईम ने इस हदीस को ज़ईफ़ करार दिया है लेकिन मुस्तदरिकुल हाकिम ने अपनी किताब अत्तारीख़ में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से। अदीमी ने भी इन ही से, फिर इब्ने हबान ने इब्ने अब्बास रज़ि. से, जबकि अब्दुल जब्बार अलख़ोलानी ने भी अनस रज़ि. से तक़रीबन यही दस फ़वाइद गिनवाए हैं। अलबत्ता हज़रत अनस रज़ि. की रिवायत में यूं बयान हुआ है।

فانه مطهرة الهم. مرضاة الرب. مسخطة للشیطان. یشهی الطعام وبیض الاسنان.

(मुंह को पाक करती, रब को राज़ी रकती, शैतान को बदगुमान करती, भूख बढ़ाती और दांतों को चमकाती है।)

एक ही बात अगर मुख़्तलिफ़ ज़राए और मुख़्तलिफ़ अफ़राद से सुनी जाए तो इसमें शक की कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

علیکم بالسواک فانه مطهرة للفم و مرضاة الرب (ابن عساکر)

(यही अलफ़ाज़ तिबरी ने हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि. से भी रिवायत किए है।)

हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ि. और हज़रत अब्दुल्ला इब्ने उमरू बिन हलहलता रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया।

السواک واجب و غسل الجمعة واجب علی کلّ مسلم. (ابونعیم)

(मिस्वाक करना और जुमे वाले दिन ग़ुस्ल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ कर दिया गया।)

मस्नदुल बज़ाज़ में यही इरशाद गिरामी हज़रत सूबान रज़ि. से दूसरी सूरत में मुरव्वी है।

حق علیٰ کلّ مسلم السواک. وغسل یوم الجمعة وان یمس من طیب اهله ان کان.

(हर मुसलमान पर यह हक़ है कि वह मिस्वाक करे। जुमे को ग़ुस्ल करे और अगर मुमकिन हो तो उस रोज़ ख़ुश्बू लगाए।)

मिस्वाक के लिए लकड़ी का इंतिख़ाब:

हज़रत अबी हेज़तुस्सबाही रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं:

اعطانی النبی صلی الله علیه وسلم اراکاً فقال استاکوا بهذا (ابن سعد)

(मुझे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शाख़ अराक की मरहमत फ़रमाई और फ़रमाया कि इससे मिस्वाक किया करो।)

किताबुस्सवाक में हज़रत अबी ज़ैद अलग़ाफ़क़ी रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्ललललाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

الاسوکة ثلاثة. فان لم یکن اراک نعم اوبطم (ابونعیم)

(मिस्वाक तीन ही क़िस्म की दुरुस्त है। अगर अराक (पीलू) न मिले तो अनअम या सनूबर)

अहादीस के मआनी और लुग़त की तमाम किताबों में अनम को एक बेल की तरह बयान किया गया है जिसके साथ नर्म-नर्म शाख़ें मुअल्लिक़ होती हैं। इल्यास अंतून ने इस बेल की जो शक्ल बताई।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

نعم السواک الزیتون من شجرة مبارکة یطیب الفم و یذهب بالجفر وهوسوا کی وسواک الانبیاء قبلی (مسند طبرانی)

(सबसे अच्छी मिस्वाक ज़ैतून के मुबारक दरख़्त की है क्यूंकि यह मुंह को ख़ुश्बूदार बनाती और सोज़िश को दूर करती है। यह मिस्वाक मेरी भी पसंदीदा है और मुझ से पहले आने वाले पैग़म्बरों की भी)

इस हदीस में जफ़र को सोज़िश के मअनों में इसतेअमाल किया गया है वरनह जफ़र से मुराद ग़ैबदानी का हिसाब, बकरी का बच्चा और चीख़ भी लिया गया है।

ज़ैतून के दरख़्त को क़ुरआन मजीद ने मुबारक क़रार दिया है। अहदीस में इसका खाना और मिलना मुतअद्दिद बीमारियों से शिफ़अ का बाइस इरशाद हुआ है। (तफ़सील के लिए जिल्द-! मुलाहिज़ह फ़रमाएं।)

ज़िंदगी का आख़िरी कामः

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ि. से नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुनियावी ज़िंदगी के आख़िरी लम्हात की तफ़सील एक तवील रिवायत से मयस्सर है। जिसका एक हिस्सा हमारे इस मौज़ूअ के सिलसिले में दिलचस्पी का हामिल है।

...... دخل عبدالرحمٰن بن ابی بکر و معه سواک یستن به فنظر الیه رسول الله صلی الله علیه وسلم فقلتُ اعطنی هند السواک فاعطانیه فقضمته ثم مضغته فاعطیته رسول الله صلی الله علیه وسلم فاستن وهو مستند الیٰ صدری (بخاری ومسلم)

(......फिर अब्दुर्रहमान बिन अबूबकर रज़ि. अंदर आए उनके पास मिस्वाक थी। जिससे वह अपने दांत मल रहे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस जानिब नज़र भर कर देखा। मैंने यह मिस्वाक अब्दुर्रहमान रज़ि. से मांग कर इसको कूटा, फिर अपने दांतों से नम किया और उनको दी। उन्होंने (सल्ल.) मिस्वाक की और उस वक़्त उनका सर मेरे सीने पर था।

यह वाक़िआ मिस्वाक की अहमियत के सिलसिले में हर्फ़े आख़िर कह सकते हैं। क्यूंकि हुज़ूरे अकरम सल्ल. ने अपनी दुनियावी ज़िंदगी में जो आख़िरी काम किया वह मिस्वाक था।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदातः

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिस्वाक से जिस क़दर रग़बत थी इसके बारे में रिवायात की कमी नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. ने जब एक रात उनके घर क़याम फ़रमाया तो वह तहज्जुद के लिए उठे और सबसे पहले मिस्वाक की। वह रोज़े के दौरान मिस्वाक करते और ज़िंदगी में उनका आख़री अमल भी मिस्वाक ही था। इनकी इतनी शदीद रग़बत से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि इसके फ़वाइद की तअदाद क्या होगी।

बहतरीन मिस्वाक अराक के दरख़्त से है। दूसरे दरख़्तों की मिस्वाक इतनी ज़्यादा मुफ़ीद न होगी। यह दांतों पर जमी मैल उतार कर इनको चमका देती है। मुंह और मेअ्दे की सोज़िश को ख़त्म करती है। भूख बढ़ाती और सांस को ख़ुश्बूदार करती है। बअ्ज़ मुहद्दिसीन ने मिस्वाक को दिमाग़ की ताक़त के लिए भी मुफ़ीद क़रार दिया है।

मिस्वाक करने की एक अच्छी तर्कीब यह है कि इसे रात भर अर्क़े गुलाब में भिगोकर सुबह इस्तेअमाल किया जाए। ऐसी मिस्वाक हाफ़्ज़ा को बढ़ाती है। इसके दीगर फ़वाइद में साँस को ख़ुश्बूदार बनाना, मसूढ़ों को मज़बूत करना। आवाज़ को गूंज देना शामिल हैं। मिस्वाक करने से ख़ुदा की ख़ुश्नूदी के साथ अच्छी नींद आती है। क़िरअत करने वालों के लिए बेश–बहा तोहफ़ह है।

मिस्वाक किसी भी वक़्त की जा सकती है। लेकिन नींद से उठने के बअद, सोने से पहले, नमाज़ से पहले, मुंह से ग़िलाज़त को निकाल कर मुंह को साफ़ कर

देती है, रोज़ेदार के लिए मिस्वाक एक मुफ़ीद आदत है क्यूंकि यह मुंह को साफ़ करती है। और रोज़ह दार को पाक करती है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदते मुबारका के बारे में हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर रज़ि. रिवायत करते हैं कि:

يستاک اوّل النهار واخره (بخاری)

(दिन के शुरू होने और ख़त्म होने पर वह मिस्वाक करते थे।)

रोज़े के दौरान मिस्वाक करने के बारे में कुछ लोग इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं लेकिन अहादीस में रोज़े के दौरान मिस्वाक की सनद मयस्सर है। हज़रत आमिर बिन रबीअ़ रज़ि. बयान करते हैं।

رایت رسول الله صلی الله علیه وسلم مالا احصی یستاک وهو صائمٌ (ابن ماجه)

(मैंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि वह रोज़े की हालत में मिस्वाक करते थे।)

मिसरी उलमा ने हाल ही में रोज़े की तिब्बी हैसियत पर एक किताब शाए की है जिसमें रोज़े के दौरान मिस्वाक करने की सनद से इस दौरान मुंह और गले में दवाई लगाना और टूथपेस्ट का इस्तेअमाल भी जाइज़ क़रार दिया है। मुमकिन है हमारे यहां के उलमा इतनी दूर तक जाने पर इत्तिफ़ाक़ न करें। लेकिन यह हक़ीक़त है कि रोज़े में मिस्वाक करना रोज़ह दार की सेहत के लिए भी मुफ़ीद है।

इन्सान को यह एहसास एक मुद्दत से हो चुका था कि ख़ुराक दांतों के साथ चिपक जाती है और रात सोने के बअद जब कई घंटे मुह बंद रहता है तो दांतों के साथ चिपकी हुई और दांतों के दरमियान फंसी हुई ख़ुराक में सड़ांद पैदा हो जाती है इससे मुंह में बदबू आती है। मुंह में ज़ख़्म हो जाते हैं। मुंह का ज़ाएक़ा ख़राब रहता है। सोज़िश और सड़ांद के मादे जब थूक के साथ गले और मुंह में दाख़िल होते हैं तो यह उन मक़ामात पर भी सोज़िश पैदा करते हैं।

पिछले चंद माह से हाज़मे की ख़राबी के जिस मरीज़ को भी देखा गया उसके दांत ख़राब पाए गए। मसूढ़े मुतवर्रम निकले और अकसर को शिकायत थी कि मसूढ़े हर वक़्त सुर्ख़ रहते हैं और उनको दबाने से ख़ून निकलता है। इनमें से हर मरीज़ ऐसा था जो दिन में कम–अज़–कम एक मर्तबा अपने दांतों को बुरश और किसी अच्छी टूथ पेस्ट से साफ़ करता रहा। दांतों के डाक्टरों से बात करें तो वह कहते हैं कि यह लोग सहीह तरीक़े से दांत साफ़ नहीं करते। माहिरीन के एक तबक़े का ख़याल है कि साल में एक मर्तबा दांतों के डाक्टर से मिलना ज़रूरी है ताकि वह दांतों का मुआएना करके उनकी ख़राबियों का बरवक़्त पता चलाए। इन पर जमी हुई सख़्त मैल को खुरच कर उतार दे, जहां तक गुफ़्तुगू का तअल्लुक़ है मशवरा बड़ा मअक़ूल और साइब है लेकिन दांतों के किसी मुस्तनद मआलिज के पास जाना। इसके मशवरे के इख़राजात बरदाश्त करना और फिर दांतों को साफ़ करके हर किसी के जेब की क़ुदरत का मुआमला नहीं।

उलूमे तिब्ब के जय्यद उस्ताद करनल इलाही बख़्श मरहूम के यहां एक मश्हूर सनअतकार ज़ियाबेत्स के सिलसिले में ज़ेरे इलाज थे। इनको शिकायत थी कि वह विलायत से भी हो आए हैं। लेकिन न तो शकर की शिद्दत में कमी आती है और न ही उनका हाज़मा दुरुस्त होता है। करनल साहब ने मुआएना के बअद इनको बताया कि वह अपने दस दांत निकलवा दें, यह मशवरह उनको बड़ा नागवार गुज़रा, भला दांतों का हाज़मे और ज़्याबेत्स से क्या तअल्लुक़ है? उनसे पूछा गया अगर कबाबों पर पीप मल कर इनको खिलाया जाए तो वह पसंद करेंगे? यह बात जब उनको मज़ीद बुरी लगी तो फिर उनको समझाया गया कि उनके ख़राब दांतों की जड़ों से मुसलसल पीप निकल रही है जो उनके हर लुक़मे के साथ पेट में जा रही है और वह बिलफ़ेएल पीप आलूद खाना खा रहे हैं। मिसाल समझ जाने पर वह दांतों के डाक्टर के पास गए जिसने उनके तेरह दांतों को नाकारह क़रार दे कर निकाल दिया। दांतों के निकलने के बअद पेट भी ठीक हो गया और शकर की बीमारी भी बराए नाम रह गई।

इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि जिस किसी को शकर आती या पेट ख़राब हो, वह दांत निकलवाने से ठीक हो जाए गा। लेकिन यह बात यक़ीनी है कि जिसके दांत ख़राब हों उसका पेट कभी ठीक न होगा। गले में सोजिश हमेशा रहेगी और अगर यह कैफ़ियात अरसए दराज़ तक रही तो उनकी वजह से पेशाब में शकर आने लग सकती है।

दांतों और मुंह को साफ़ रखने के लिए लोगों ने तारीख़ के हर दौर में अपनी–अपनी समझ के मुताबिक़ कोशिश की है। कुछ लोग तो ऐसे रहे जिन्होंने इस बाब में कभी किसी दिलचस्पी का मज़ाहिरा नहीं किया। अगर महफिल में उनके मुंह से बदबू आती है तो उनको इससे कोई गर्ज न रही।

पंजाब में एक बीमारी "बगल गंढ" के नाम से मश्हूर है जिसमें मुंह से शदीद बदबू आती है। हमारे मिलने वालों में से एक पढ़े-लिखे और साहिबे हैसियत साहब हैं। जिनके मुंह से आने वाली बदबू किसी भी गंदे नाले से ज़्यादा है। हम ज़ाती तौर पर जानते हैं कि वह बड़ी बाक़ाइदगी से उम्दा क़िस्म की टूथपेस्ट इस्तेअमाल करते हैं, कभी–कभी विलायत के बने हुए लोशन भी इस्तेअमाल करते हैं जिनके बारे में मुंह से बदबू दूर करने का शोहरा है। इन मसाई के बावजूद बदबू एक मुस्तक़िल हैसियत रखती है अगर्चे इसका सबब नाक की पुरानी सोज़िश भी हो सकती है लेकिन वह मअमूली तरीक़ो से आगे जाने पर रज़ामंद नहीं।

मसूढ़ों की बीमारियां, इनमें सोज़िश और दांतों का वक़्त से पहले ख़राब होना या घुस जाना या इनहतात पज़ीर हो जाना मग़रिबी मुआशरे की देन है। हमने इंगलिस्तान में मुसफ़्फ़ा मुँह वाले किसी नौजवान को कभी नहीं देखा। कहते हैं कि चिपकदार ग़िज़ाओं और मीठी गोलियों की वजह से उनके दांत ख़राब हो जाते हैं। अमरीकी माहिरीन ने पता चलाया है कि अगर पीने वाले पानी में फ्लोराइड न हो तो छोटी उम्र के बच्चों के दांत भी ख़राब हो जाते हैं। इसलिए अमरीकी शहरों में मुहैय्या किए जाने वाले पानी मे जहा कुदरती फ्लोराइड

मौजूद न हो। वहां के बल्दियाती इदारे उसे अलाहिदा शामिल कर देते हैं।

चूंकि अमरीका से आने वाली हर चीज़ उम्दह होती है इसलिए हमारे कुछ दोस्तों ने भी स्कूलों के बच्चों के दांतों की बीमारियों की शरह तलाश करने में बड़ी महनत की। अख़बारात और रिसाइल में इम्राज़ इस्मान के मुतअद्दिद माहिरीन की ऐसी तहक़ीक़ाती रिपोर्टें शाए होती रहती हैं जिसमें किसी को प्राइमरी स्कूलों के पचास फ़ीसदी और किसी को उनसे भी ज़ाइद तअदाद के बच्चों के दांत ख़राब नज़र आए। चूंकि पाकिस्तान के पानी में फ़्लोराईड नहीं थी इसलिए उन बच्चों के दांत ख़राब हो गए। हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से इन माहिरीने किराम ने पीने वाले पानी का तज्ज़िया करवाने की ज़हमत गवारा नहीं की। हमने इसी क़िस्म की ग़लती करने की बजाए लाहौर में बहम रसानी आब के महकमा के कैमिस्ट अब्दुलख़ालिक़ आसिम से पूछ लिया। उनकी लेबारेट्री की रिपोर्ट के मुताबिक़ हमारे शहरी पानी में फ़्लोराइड की मतलूबा मिक़दार मौजूद है। और अगर यहां के किसी बच्चे के दांत ख़राब हैं तो इसमें फ़्लोराईड की कमी का कोई हाथ नहीं।

फ़्लोराईड से पहले एक मग़रिबी मुहक़्क़िक़ ने दरख़्तों में पाए जाने वाले सब्ज़ मादे के बारे में मअलूम किया कि वह किसी जगह से भी बदबू और सड़ांद को ख़त्म कर देता है। चुनांचे बाज़ार में टूथ–पेस्ट की दर्जनों ऐसी क़िस्में आ गईं जिनमें क्लोरोफ़िल को ख़ुसूसियत से शामिल किया गया था। फिर फ़्लोराइड वाली ट्यूबें भी आ गईं। कुरआन मजीद ने क़ौमों के ज़हनी इनहतात के बारे में एक बड़ा ख़ूबसूरत मुशाहिदा अता किया है।

(तुम ज़लील बंदर हो जाओगे। "كونوا قردة خاسئين"

यह तो आयत का लफ़्ज़ी तर्जुमा है मगर मुफ़स्सिरीन में से बअज़ उलमा का ख़याल है कि वह लोग़ फ़िलवाक़ेअ बंदर नहीं बने थे बल्कि वह आदात में बंदरों की मानिंद हो गए थे। क्यूंकि बंदर दूसरों की नक़ल उतारते वक़्त अक़्ल को इस्तेअमाल नहीं करता। वह नक़ल करने में अपना नुक़सान कर लेगा मगर नक़्क़ाली से बअज़ नहीं आए गा। कुछ इसी क़िसम की जिबिल्लत हमारी मशरिक़ी अक़वाम में भी घर करती जा रही है। चूंकि अमरीकन बन्यान नहीं पहनते इसलिए हमारे नौजवान भी रंगदार क़मीसों के नीचे बन्यान पसंद नहीं करते। हमारे मुमालिक गर्म हैं यहां पसीना आता है, वह पसीना जज़्ब नहीं होता। जीन की मोटे कपड़े की पत्लून, मस्नूई रेशे की क़मीज़ जब बन्यान के बग़ैर पहनी जाएगी तो पसीना खाल को जला देगा। इन नौजवानों में से अक्सर के जिस्म पर रंगदार धब्बे, ख़ारिश और सड़ांद एक मुस्तक़िल मसला है।

एक नौजवान चिलचिलाती धूप में मोटी जीन, चमड़े की फुल बूट और नाएलोन की जुर्राबें पहन कर तशरीफ़ लाए। इनको शिकायत थी कि वह कई रातों से ख़ारिश की शिद्दत के बाइस सो भी नहीं सके। इम्राज़े जिल्द के मुतअद्दिद माहिरीन को मिल चुके हैं। कई क़िस्म की ट्यूबें इस्तेअमाल की जा चुकी हैं। बीमारी की शिद्दत में अगर कमी आई तो वह कुछ अरसह से ज़्यादा के लिए न थी। यह मायूस भी थे और दिल बर्दाश्ता भी। इनको अर्ज़ किया गया कि अगर आप का इलाज दवाई के बग़ैर कर दिया जाए तो क्या वह हिदायात

पर अमल करेंगे? बीमारी की शिद्दत सिर्फ़ तीन दिन में ख़त्म हो गई।

इस नुस्ख़े में अहम तरीन बात जिल्द को हवा लगवानी थी। जिस्म से ख़ारिज होने वाली कीम्यात हवा लगने से उड़ जाती हैं, सूती लिबास पसीने को जज़्ब करता है। ज़ब जिस्म को ताज़ह हवा लगी। पसीना खाल को गलाने की बजाए उड़ने लगा तो तकलीफ़ अपने आप कम हो गई। सिरका जरासीम कुश और फफूंदी को मारने में यक्ता है। और इन्ही सिफ़ात की बिना पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे हमेशह पसंद फ़रमाया। वह इसे खाने और लगाने की ताकीद फ़रमाते थे। बल्कि वह यहां तक फ़रमा गए कि जिस घर में सिरका न हो वह लोग हक़ीक़त में गरीब हैं। तिब्बे जदीद भी इस अम्र की तस्दीक़ करती है कि यह बेहतरीन ख़ुराक, मुहाफ़िज़ और इलाज है। मसूढ़ों की अक्सर बीमारियों में भी बल्कि दांत दर्द में सिर्फ़ सिरका की कुल्लियां दाफ़ेअ अलम हैं।

दांतों को बीमारियों से बचाने की तर्कीब यह है कि इनको साफ़ रखा जाए। जदीद तहक़ीक़ात के मुताबिक़ सेहतमंद रहने के लिए दांतों को सुबह--शाम साफ़ करना ज़रूरी है। इसके मुक़ाबले में हर मुसलमान के लिए यह ज़रूरी है कि वह दिन में कम--अज़--कम 15 मर्तबा नमाज़ के लिए वुज़ू के दौरान दांतों को साफ़ करे। हर मुसलमान के लिए यह ज़रूरी है कि वह सुबह उठ कर खाने पीने की किसी चीज़ को हाथ लगाने से पहले तीन मर्तबह हाथ धोए फिर तीन मर्तबह कुल्ली करे। हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह खाना खाने के बअद मुंह को साफ़ करे।

इस सिलसिले में अबू हमीद सअदी रज़ि॰ का मशहूर वाक़िआ है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में दूध का प्याला पेश किया। उन्होंने दूध पीने के बअद दांत साफ़ करने के लिए पानी तलब फ़रमाया और कहा कि दूध में चिकनाई होती है। जो दांतों से चिपक जाती है। इसलिए दूध पीने के बअद दांत साफ़ करना ज़रूरी है। एक सफ़र के दौरान नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके हमराहियों ने सत्तू खाए इसके बअद भी कुल्ली के लिए पानी इस्तेअमाल फ़रमाया। दांतों की सफ़ाई के बारे में उनके इस्रार का यह आलम था कि हज़रत अबू--हुरैरा रज़ि॰ और हज़रत अबी सल्मा रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं कि सरवरे काइनात ने फ़रमाया।

لولا ان اشق علیٰ امّتی لامرتهم بالسواک عند کل صلوٰۃ (ترمذی۔مسلم)

(मुझे अगर उम्मत पर गिरानी का एहसास न होता तो मैं हर नमाज़ के साथ मिस्वाक का हुक्म देता।)

इसी ज़िम्न में इब्ने ज़जविया हज़रत आइशा रज़ि॰ से रिवायत करते हैं कि नमाज़ जिसके साथ मिस्वाक की जाए वह बग़ैर मिस्वाक की सत्तर नमाज़ों से बेहतर है।

दांतों की ख़राबियों की एक वजह यह है कि हम नर्म, मुलाइम और चिपकदार गिज़ाए ज़्यादा खाते हैं। हमें सख़्त ख़ुराक या नीम ब्रश्त खानों की आदत नहीं रही। दांतों के मुआलिज कहते हैं कि सख़्त चीज़ें खाई जाएं ताकि दांतों की वरज़िश होती रहे। हज़रत आएशह रज़ि॰ रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

لا تقطعوا اللحم بالسكين فانه من صنع الاعاجم وانهسوه فانه اهنأ وامرأ.

(गोश्त को छुरी से न काटो, क्यूंकि यह अजमियों का तरीक़ा है, इसे दांतों से नोच कर खाओ। क्यूंकि ऐसा करना ख़ुश्गवार भी है और लज़ीज़ भी।)

(अबू दाऊद, बेहिक़ी)

ग़िज़ा में ताज़ह सब्ज़ियां और फल मसूढ़ों की तंदरुस्ती के लिए विटामिन "ज़े" मुहैय्या करते हैं। जबकि इनकी कमी सक़र्वी बीमारी का बाइस हो सकेती है। हुज़ूरे अकरम सल्ल॰ ने दस्तरख़्वान को सब्ज़ चीज़ों से मुज़य्यन करने का हुक्म सादर फ़रमाया। खाना खाने के दौरान ग़िज़ा के कुछ अज्ज़ा और गोश्त के रेशे दांतों के दरमियान फंस जाते हैं। वह सड़ कर बद–बू और सोज़िश पैदा करते हैं। दुनियाए तिब में पहली मर्तबा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी फंसी हुई ग़िज़ा को निकालने के लिए लकड़ी के ख़िलाल की तर्कीब अता फ़रमाई, उन्होंने फिर ख़िलाल के लिए मीठी लक्ड़ियों जैसे कि सेब और अंगूर से मुमानिअ़त फ़रमाई और हिदायत की कि ख़िलाल के लिए इस्तेअमाल होने वाली लक्ड़ी तल्ख़ हो। इसमें हिकमत यह है कि मुंह में कड़वाहट जाने से तलख़ी के बाइस थूक पैदा होता है और इसकी ज़्यादह मिक़्दार न सिर्फ़ यह कि ग़िलाज़त वाली जगह को धो देती है बल्कि मुंह में तल्ख़ी की मौजूदगी आसाब के मअ़कूसा असर की बदौलत भूख लगाती है।

माहिरीने इल्मुल इस्नान के मशवरों पर अमल करके दांतों को बुरश करने के बावजूद लोगों के दांत बड़ी तअदाद में ख़राब होते हैं। भरपूर जवानी में ही नहीं बल्कि बचपन में भी डाक्टरों से दांत निकलवाने पड़ते हैं। या उनमें सुराख़ होते रहते हैं जो डाक्टर भरते रहते हैं।

> एक डाक्टर दोस्त का तीसरा दांत जब तीस साल की उम्र में निकाला गया तो उसने माहिरीन से पूछा कि वह अपने बक़ाया दांतों को बचाने के लिए बुरश के अलावा और क्या करे, वह सब हंसने लगे कि यह अमल दांतों के इनहतात का हिस्सा है जिसको रोकने की कोई तर्कीब नहीं।

बच्चों के दांतों के सिलसिले में तो लोग फ्लोराईड का चर्चा करने लगे लेकिन पानी में इसे शामिल करने और टूथ पेस्ट में भी उसे शामिल करने के बावजूद दांतों के ख़राब होने, उनमें सुराख़ पड़ने या उन पर लाखा जम जाने की शरह मे किसी क़िसम की कोई कमी वाक़ेअ नहीं होती। हमारे कुछ दोस्तों को आदादो शुमार के जमा करने का बड़ा शौक़ है और वह कभी कभी इशारात में मुख़्तलिफ़ बीमारियों और दांतों के इम्राज़ में मुब्तिलाओं की शरह बताते रहते हैं। लेकिन उन्होंने कभी यह बयान नहीं किया कि वह लोग जो दांतों को दिन में दो बार बुरश करते हैं, साल के बअद डाक्टर को दिखाते भी हैं। उनके दांत क्यूं ख़राब होते हैं? क्या यह हक़ीक़त नहीं कि जदीद इल्मुल इस्नान, तालीमाते नबवी की सतह पर भी नहीं आ सका। क्यूंकि दांतों को तंदरुस्त रखने के लिए सिर्फ़ धोना काफ़ी नहीं बल्कि उनके बचाओ की बेहतरीन तर्कीब मिस्वाक

है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ाती ज़िंदगी में मिस्वाक को हर तरह से अहमियत हासिल थी। वह ताज़ह शाख़ से मिस्वाक करते थे। पहले उसे दांतों से चबाकर नर्म करते थे। फिर इसे सिर्फ़ इस्तेअमाल ही न करते थे बल्कि करते रहते थे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने उन्हें तहज्जुद से पहले मिस्वाक करते देखा। वह सुबह उठ कर मिस्वाक करते थे। सोते वक़्त मिस्वाक करते थे। हर नमाज़ से पहले मिस्वाक करते थे और हद यह कि उन्होंने अपनी दुनियावी ज़िंदगी में आख़िरी काम भी मिस्वाक ही किया। इस ग़र्ज़ के लिए वह पीलू के दरख़्त की लकड़ी को पसंद करते थे और एक रिवायत में उन्होंने ज़ैतून की मिस्वाक भी पसंद फ़रमाई।

मिस्वाक के फ़वाइद पर तवज्जह करें तो पीलू की कीम्यावी तर्कीब में वह तमाम अनासिर शामिल हैं जिनके बारे में किसी भी माहिरे इम्राज़ दंदान ने आज तक ज़िक्र किया है। इसमें मसूढ़ों को ख़ुश्क करने के लिए टेनिक एसिड है। दांतों के इनहतात को रोकने के लिए फ़्लोराइड हैं। मुंह की झिल्ली की सहत के लिए विटामिन है। जरासीम को मारने वाले अनासिर के साथ नमक की मअकूल मिक़दार मौजूद है। इनका तरीका था कि वह मिस्वाक को दांतों के इतराफ़ में अंदर और बाहर से फेरने के अलावह इसे ज़बान पर भी मलते थे जिसका इज़ाफ़ी फ़ाएदा बलगम का इख़राज और हाज़मा की इस्लाह है।

मिस्वाक करने से दांतों और मसूढ़ों के अज़लात की वरज़िश होती है इनके दौराने ख़ून में इज़ाफ़ह होता है। जब दांतों के दरमियान ग़िज़ा न फंसेगी इन पर चिपकी हुई चीज़ों को दिन में कम–अज़–कम इक्कीस मर्तबा धोकर निकाल दिया जाए गा और इनको दिन में कम–अज़–कम दो मर्तबा वरज़िश के साथ जरासीम कुश और मुहर्रिक कीम्यावी अनासिर से मालिश की जाएगी तो फिर इनका ख़राब होना ना मुमकिन अम्र है। जिसकी सबसे अहम मिसाल जंगे उहद में नज़र आती है।

जंगे उहद में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल्म के कुछ दांत टूट गए और कुछ हिलने लगे। मुंह के इन ज़ख़्मों के अलावा उनके गाल और सर पर भी घाव थे। ग़ालिबन सर और चहरे की हड्डियां भी टूट गई थीं। ऐसे ज़ख़्म अगर किसी भी शख़्स को लगते तो उनके बअद सबसे पहली तकलीफ़ दर्द और आसाब पर दबाओ से सदमा यअनी SURGICAL SHOCK होना एक ज़ुरूरी अम्र था।

यही कैफ़ियत अक्सर मरीज़ों में मौत का बाइस हो सकती है। इसके बअद चहरे पर वर्म, बीनाई का मुतास्सिर होना, मुंह से ख़ून निकलना, मुंह में वर्म, बअद में बुख़ार होना ज़रूरी लवाज़िम हैं। ऐसे मरीज़ के लिए कम–अज़–कम एक माह के लिए रोज़मर्रा की ज़िंदगी गुज़ारना मुमकिन नहीं रहता। लेकिन इस जंग की तफ़सीलात को देखिए तो इन तमाम चीज़ों में से कुछ भी न हुआ। उन्होंने अपने ज़ख़्मों को ताज़ह पानी से ख़ूब धो कर, सोज़िशी अनासिर साफ़ कर दिए। जर्याने ख़ून को बंद करने के लिए बोरी जलाकर राख भरी। और हिलते दांतों के

लिए बअद में सोने की तार लगाई गई। जंग के फ़ौरन बअद उन्होंने ज़ाती तौर पर नुक़सानात का जाएज़ा लिया। शोहदा को इज्तिमाई क़बरों में दफ़्न करने की जगहें मुक़र्रर कीं। शुहदा की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। मदीना से आने वालों के सवालात का जवाब दिया और एक नार्मल आदमी की तरह घर वापस आए।

उहद के बअद जंगे ख़ैबर के मौक़े पर दांतों से नोच कर बकरे की रान खाई इसका मतलब वाज़ेह है कि उनके दांतों में मजरूह होने के बावजूद इतनी ताक़त मौजूद थी कि वह गोश्त को दांतों से काट कर खा सकते थे।

जदीद इल्मुल इस्नान ऐसे किसी भी मरीज़ के दांतों को दस साल में भी ऐसी ताक़त देने से क़ासिर है। उनके दांतों में ताक़त की मौजूदगी इस मुसलसल वर्ज़िश का नतीजा थी जो वह मिस्वाक की सूरत में हर रोज़ करते थे।

हमारे वह बुज़ुर्ग जो मिस्वाक किया करते थे, अपनी आख़री उमरों तक अपने मोतियों जैसे चमकदार दांतों के साथ हर क़िस्म की ख़ुराक खाते थे। और उनके दांत उम्र के साथ, इनहतात पज़ीर न होते और यह मिस्वाक का करिश्मा था।

चुक़ंदर...... सिल्क़ BEETROOTS
BETA VULGARIS

चुक़ंदर, भारत, पाकिस्तान, शिमाली अफ़रीक़ा और यौरप में कसरत से सब्ज़ी के तौर पर काश्त किया जाता है। अगर्चे इसकी जंगली क़िस्म भी है मगर इसको ख़ुराक और इलाज दोनों के लिए बेकार समझा जाता है। यौरप में इसका पौधा 1548 में अफ़रीक़ा से लाया गया और अब यह वहां की ख़ुराक और सनअ़त में आलू के बअद सबसे ज़्यादह मक़बूल सब्ज़ी है।

चुक़ंदर का तअल्लुक़ पालक के साग के ख़ानदान से है अलबत्ता इसका ख़ुराक में पसंदीदा हिस्सा जड़ है जिसमें ग़िज़ाई अनासिर जमअ हो कर शल्ग़म की सी शक्ल बन जाती है। इस गोले के ऊपर जड़ों के मज़ीद रेशे और बाल होते हैं। आम तौर पर चुक़ंदर का रंग अंदर से भूरा और क़ुर्मज़ी होता है जिसे लाल किया जा सकता है। इसकी एक सफ़ेद क़िस्म भी होती है। यौरप में इसकी बस्तानी, सफ़ेद, समंदरी, शकरी, और एक क़िस्म MENGIEL WURZEL पाई जाती है।

चुक़ंदर की फूली हुई जड़ और पत्ते ख़ुराक में इस्तेमाल होते हैं। यह सलाद के तौर पर पकाया जाता है। इसको उबाल कर खाते हैं। गोश्त के साथ सालन के तौर पर पकाया जाता है। इसका अचार डालते हैं और इससे यौरप में खांड बनती है क्यूंकि इसकी शकरी क़िस्म 24 फ़ीसदी शकर पाई जाती है। चुक़ंदर से हासिल होने वाली चीनी ज़्यादह सफ़ेद, छोटे दाने वाली और मिठास में गन्ने की खांड से फीकी होती है चुक़ंदर की एक क़िसम BETA CICLA की जड़ की मोटाई क़ाबिले तवज्जह नहीं होती।

आइरलैंड के साहिली इलाकों में इसे ज़्याबेत्स के तौर पर रस भरे लज़ीज़ पत्तों की वजह से काश्त किया जाता है। इसके पत्तों के दरमियान फूली हुई रगें होती हैं। जिन को लोग "गंदलों के साग" की मानिंद पका कर खाते हैं। दीगर तमाम अक़साम के पत्ते पालक की मानिंद चौड़े होते हैं। पकने पर लज़ीज होते हैं। इसलिए पालक को ज़्यादह खाने से पेशाब में जलन और कभी कभार गुर्दों में पथरी पैदा हो सकती है। जिनको पथरी या दर्द गुर्दे की शिकायत हो इनके लिए मुज़िर है। जबकि चुक़ंदर के पत्ते इस नुक़सादह असर से पाक हैं। जज़ाइर शरकुलहिंद में चुक़ंदर का साग पकाने और सलाद में मक़बूल है।

इरशादाते नबवी सल्ल०

हज़रत उम्मुल मनंज़र रज़ि० रिवायत फ़रमाती हैं:

دخل رسول الله صلى الله عليه وسلم ومعه علىّ رضى الله عنه ولنا دوال معلّقةط فجعل رسول الله صلى الله عليه وسلم يا كل وعلىّ معه يا كل. فقال رسولِ اللہ صلى اللهعليه وسلم مه يا على! انک ناقه فجعلت لهم سلقاً وشعيراً. فقال النبى صلى الله عليه وسلم. فاصب من هذا. فانه اوفق لک.
(ابوداؤد، ترمذی)

(मेरे घर रसूलल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और उनके हमराह हज़रत अली रज़ि० भी थे मेरे यहां उस वक़्त खजूर के ख़ोशे लटक रहे थे। उनकी ख़िदमत में वह पेश किए गए। वह दोनों खाते रहे। और इसके दौरान रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि० से कहा कि तुम अब मज़ीद न खाओ कि अभी बीमारी से उठने की वजह से कमज़ोर हो फिर मैंने उनके लिए चुक़ंदर का सालन और जो की रोटी पकाई। इस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हां अली रज़ि० तुम इसमें से खाओ कि यह तुम्हारे लिए मुफ़ीद है।)

हज़रत सहल बिन सअद रज़ि० रिवायत करते है:

كنا نفرح بيوم الجمعة. كانت لنا تجوزٌ تاخذ اصول السلق فتطرِحه فى القدر و رتكركر عليه حبات من شعير والله مافيه شحم ولا ودكٌ. فاذا صلّينا الجمعة انصرفنا فسلمنا عليها فتقدمه لنا وكنا نفرح بيوم الجمعة من اجله.
(بخاری، مسلم)

(हम जुमे के दिन बहुत ख़ुशी महसूस करते थे। क्यूंकि उस रोज़ एक बुढ़िया आती थी जो हंडिया में चुक़ंदर की जड़ें और जौ डाल कर इनको ख़ूब पका कर पीसती। इसमें ख़ुदा की क़सम! न तो चर्बी होती और न चिकनाई। हम जुमेह के दिन मसरूर रहते।)

यह ख़ातून चुक़ंदर और जौ की देग पका कर हरीसा की मानिंद घोट कर मस्जिद नबवी सल्ल० के दरवाज़े पर फ़रोख़्त करती थी।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

चुक़ंदर अगर्चे ठंडक रखता है मगर ऐसी कि जिस्म को नागवार नहीं

गुज़रती। जिस्म के सुद्दे खोलता है। इसकी सियाह क़िस्म क़ाबिज़ है। चुक़ंदर काट कर सर पर मलने से गिरते बाल रुक जाते हैं। इग्ज़ीमा और पित्ती में मुफ़ीद है। इसको पका कर और पानी में घोट कर लगाने से सरकी जुएं मर जाती हैं। अगर बुफ़्फ़ा मौजूद हो तो इस पानी में थोड़ा सा शहद मिलाकर लगाना मुफ़ीद है।

चुक़ंदर खाने से जिगर का फ़ेएल बेहतर होता है और तिल्ली की सोज़िश को कम करता है। सियाह क़िस्म को मसूर की दाल के साथ पकाना पेट के लिए सक़ील है लेकिन सुफ़ेद क़िस्म को मसूर की दाल के साथ पका कर खाया जाए तो क़ौलिंज से पैदा होने वाली कमज़ोरी को दूर करता है।

इसमें ग़िज़ाइयत कम होती है और इसका खाना पेट को बोझल करता है, ख़ून को जलाता है इसलिए फ़क़रुद्द पैदा करता है। इसकी इस्लाह के लिए सिरका और अल्सी को शामिल करना मुफ़ीद रहता है। चुक़ंदर की अक्सर क़िस्में क़ब्ज़ पैदा करती हैं और देर हज़्म होने की वजह से पेट में नफ़ख़ पैदा करती हैं।

मुहद्दिसीन किराम ने चुक़ंदर के बाब में जो मुशाहिदात रक़म किए हैं उनमें से अक्सर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुशाहिदात के बरअक्स है। उन्होंने हजरत अली रज़ि० के लिए चुक़ंदर के सालन को उस वक़्त पसंद फ़रमाया जब वह बीमारी से उठे थे। नक़ाहत महसूस कर रहे थे। ऐसे में इनको ऐसी ग़िज़ा देनी मक़सूद थी जो आसानी से हज़्म हो सके। और उनकी कमज़ोरी को रफ़अ करे। इस ग़र्ज़ के लिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चुक़ंदर का सालन अगर पसंद फ़रमाया तो यह यक़ीनी बात है कि इस सालन में कमज़ोरी को दूर करने और जल्द हज़्म हो जाने की सलाहियत मौजूद थी।

चुक़ंदर की कीम्यावी हैइयत पर ग़ौर करें तो अहम तरीन बात जो सामने आती है वह इसमें शकर की मौजूदगी है। आम तौर पर यह मिक़दार 42 फ़ीसदी के लगभग होती है। यह आम बात है कि लोग बीमारी के दौरान या उसके बअद की कमज़ोरी के लिए ग्लूकोज़ देते हैं। शकर और निशास्ता की किस्म ख़्वाह कोई हो जिस्म के अंदर जाकर एक मुख़्तसर से अमल के बअद ग्लूकोज़ में तब्दील हो जाती है। इसलिए चुक़ंदर के दीगर अज्ज़ा से क़तअ़ नज़र भी कर लें तो शकर की मौजूदगी कमज़ोरी के लिए यक़ीनन फ़ाएदेमंद होगी। सब्ज़ी और फल जैसे भी हों इनमें नाक़ाबिले हज़्म माद्दा कसीर मिक़दार में होता है जो क़ब्ज़ को दूर करता है। इसकी इस्लाह के लिए दोनों मक़ामात पर सिरका की बजाए जौ इस्तेअमाल किए गए।

इसमें दिल को तस्कीन देने वाली ठंडक है जबकि सियाह अक़साम क़ाबिज़ होती हैं इसका पानी निकाल कर लगाने से ख़ारिश और छीप और ख़ास तौर पर दाद को फ़ाएदा होता है। यहां पर तवज्जा तलब हक़ीक़त यह है कि जिल्द की जो बीमारियां बयान की गई, वह सबकी सब फफूंदी की वजह से होती हैं। जिससे ज़ाहिर होता है कि चुक़ंदर का अर्क़ फफूंदी को ख़त्म करता है। बल्कि यह तहक़ीक़ात के लिए एक नए बाब को खोलने का बाइस हो सकता है। क्यूंकि जितनी भी जरासीम कुश दवाएं आज कल मुस्तैमिल हैं, वह तमाम फफूंदी से

तैयार होती हैं। इसलिए ऐन मुमकिन है कि जिस्म से इनके ज़हरीले असरात को ज़ाइल करने में चुक़ंदर का भी दख़ल हो।

चुक़ंदर के पानी को शहद के साथ पिया जाए तो बढ़ी हुई तिल्ली को कम करता है और जिगर में पैदा होने वाली रुकावटों को दूर करता है। हमारे ज़ाती तजुर्बे में शहद यरक़ान का बेहतरीन इलाज है। तिब्ब जदीद में चूंकि यरक़ान के इलाज में ग्लूकोज़ दिया जाता है इसलिए फ़न्नी नुक़्तए नज़र से शहद और चुक़ंदर का पानी न सिर्फ़ यह कि यरक़ान में मुफ़ीद होगा बल्कि सुफ़रा की नालियों में पथरी या दूसरे असबाब से पैदा होने वाली रुकावटों का इलाज भी है।

सफ़ेद चुकंदर को अगर मसूर की दाल के साथ पकाया जाए तो ताक़त देता है और इस्हाल को दूर करता है।

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदात

चुकंदर सियाह में क़ब्ज़ पैदा करने, हाज़मे को ख़राब करने की इस्तेअदाद सफ़ेद की निस्बत ज़्यादा है। दस्त आवर है। चुकंदर के पौधे की सबसे मुफ़ीद चीज़ उसके पत्ते हैं। इनका पानी निकाल कर उन मक़ामात पर लगाएं जहां से बाल उड़ गए हों, तो बाल निकल आते हैं। इनके जोशांदे से सर धोना सीकरी यअनी बफ़्फ़ा की बीमारी को दूर करता है। चेहरे पर पड़ने वाले दाग़, हिस्सासियत और छीप में मुफ़ीद है। इसकी सर में मालिश करने से जुएं मर जाती हैं। वरम वाले मक़ामात पर इसका पानी मलने से वरम रफ़अ हो जाता है। आग से झुलसी हुई जगह पर इस पानी को लगाने से फ़ाएदा होता है। इसी पानी को शहद या रौग़न बादाम के साथ मिलाकर नीम गर्म कान में टपकाने से वरम और दर्द को फ़ाएदा होता है।

चुक़ंदर के पत्तों का पानी निकाल कर इससे कुल्ली करना या इसे मसूढ़ों पर मलने से दांत का दर्द जाता रहता है। बअज़ अतिब्बा का ख़याल है कि ऐसा करने के बअद आइंदा दर्द नहीं होता। सर के बाल कम हों तो चुक़ंदर के पानी से धोना मुफ़ीद है। जबकि नजमुल ग़नी ख़ान इसमें बूरा अर्मनी मिलाकर इस्तिफ़सार और हाथ पैरों के वरम पर लेप करने की तज्वीज़ करते और फ़ाएदा बयान करते हैं।

चुक़ंदर के अज्ज़ा दस्त आवर हैं। जबकि इसका पानी दस्तों को बंद करता है। सुर्ख़ क़िस्म को पकाकर खाना ज़ोअफ़े मेअदह, कमज़ोरी और ज़अफ़े बाह में मुफ़ीद है। इसको राई और सिरका डाल कर पकाने के बअद खाया जाए तो यह जिगर और तिल्ली से सुद्दे निकाल देता है, इसे काफ़ी दिनों तक खाने से दर्द गुर्दा, मसानह और जोड़ों के दर्द को फ़ाएदा होता है यही तर्कीब मिर्गी की शिद्दत को कम करने में मुफ़ीद है।

हकीम मुफ़्ती फ़ज़्लुर्रहमान ने लिखा है कि चुकंदर के क़तले काट कर इनको पानी में ख़ूब उबाला जाए। इस पानी के साथ सूजे हुए नुक़रस या गंठिया वाले जोड़ों को बार-बार धोने से दर्द और वरम जाता है। चुकंदर के बीज मैअदे में ग़िज़ा को ख़राब करते हैं, अतिब्बा में इसमें नुक़सान के अलावा कोई फ़ाएदा बयान नहीं किया।

कीम्यावी हैइयत:

चुक़ंदर में एक कीम्यावी जुज़्व आमिल BETIN पाई जाती है यह माहवारी के ख़ून को बढ़ाती है। पेशाब आवर है। मेअ़दा और आंतों में अगर जलन हो तो यह इसको रफ़ा करती है। सफ़ेद चुकंदर से हासिल होने वाला जुज़्व आमिल मुलय्यन है जबकि सुर्ख़ क़िस्म मयस्सर आने वाली सिर्फ़ हैज़ आवर है।

जदीद मुशाहिदात:

चुकंदर की जड़ों का जूस निकाल कर अगर इसको नाक में टपकाया जाए तो सर दर्द और दांत दर्द को फ़ौरन दूर करता है। इसे अगर सर के इतराफ़ में लगाया जाए तो आंखों की सोज़िश और जलन में मुफ़ीद है। चुकंदर के पानी को रौग़ने ज़ैतून मिलाकर जले हुए मक़ाम पर लगाना मुफ़ीद है। सफ़ेद चुकंदर का पानी जिगर की बीमारियों में अच्छे तास्सुरात रखता है।

चुकंदर के क़तलों को पानी में उबाल कर इस पानी की एक प्याली सुबह नाश्ते से एक घंटे पहले पीने से पुरानी क़ब्ज़ जाती रहती है। और बवासीर की शिद्दत में कमी आ जाती है। यौरप और ऐशिया में अकसर लोग चुकंदर के क़तलों को उबाल कर खाने के साथ सलाद के तौर पर इस्तेअमाल करते हैं। यह पालक के ख़ानदान से तअल्लुक़ रखने के बावजूद इस जैसे मुज़िर असरात नहीं रखता। इसलिए चुकंदर के पत्ते मुतअद्दिद मक़ामात पर सब्ज़ी की मानिंद पकाए जाते हैं और मुफ़ीद असरात रखते हैं।

सुर्ख़ चुकंदर को निस्वानी आज़ा के लिए मुक़व्वी माना गया है। रहम की कमज़ोरी के लिए बतौर सब्ज़ी या इसका जोशांदा एक तवील अरसे तक इस्तेमाल करना मुफ़ीद है।

जिल्द के ज़ख़्मों, बफ़्फ़ा और ख़ुश्क ख़ारिश में चुकंदर के क़तलों को पानी और सिरका में उबाल कर लगाना मुफ़ीद है। इस मुरक्कब को दो चार मर्तबा लगाने से सर खुश्की ग़ायब हो जाती है। सिरका की मौजूदगी की वजह से ज़ेरेनाफ़ ख़ारिश में भी मुफ़ीद है।

अतिब्बाए क़दीम और मुहद्दिसीन ने चुकंदर को अच्छे अल्फ़ाज़ में बयान नहीं किया। इसके बावजूद दुनिया के अक्सर मुमालिक में यह मक़बूल ग़िज़ा है। अगर इसमें नुक़सानात होते तो लोग कभी का छोड़ चुके होते। मगर मुशाहिदात इसके बरअक्स हैं। चुकंदर एक मुफ़ीद और मुक़व्वी ग़िज़ा, और ख़ारिश की मुतअद्दिद क़िस्मों के लिए मक़ामी इस्तेअमाल की क़ाबिले एतिमाद दवा है।

दूध......लबन

MILK LACTUS

दूध इन्सानों की सबसे पुरानी ख़ुराक है। जब से इन्सानों को मवेशी पालने की समझ आई। उन्होंने उस वक़्त से उनके दूध से फ़ाएदा उठाना भी सीख लिया। मुअर्रिख़ीन कहते हैं कि ज़मानए क़दीम में देवताओं और पैग़म्बरों ने

इन्सानों को दूध से फ़ाएदा उठाना सिखाया। शत्तुल अरब के शहरों में आज से 500 साल क़ब्ल दूध को न सिर्फ़ यह कि बाक़ाएदा इस्तेअमाल किया जाता था बल्कि शहरों से बाहर ऐसे कारख़ाने क़ायम थे जहां दूध को साफ़ करके शहरों में मुहैय्या किया जाता था। फिर उनसे दही, पनीर, और घी बनाकर सप्लाई होता और इस तारीख़ से पहले डेरी फ़ार्मों का सुराग़ मिलता है।

हिंदुस्तान के लोग अगर्चे ज़मानए क़दीम में भी दूध पीते थे लेकिन इसका बाक़ाएदा इस्तेअमाल एशियाए कोचक से आरयों की आम्द के बअद शुरू हुआ। चूंकि गाए इनका ज़रिया मुआश बन चुकी थी इसलिए बअद वालों ने इसकी इज़्ज़त में रोज़–बरोज़ इज़ाफ़ह करते हुए मां का रुतबा दे दिया। कृष्ण जी महाराज का ज़्यादा तर तअल्लुक़ दूध का कारोबार करने वाली ख़्वातीन से रहा है। और इनको मक्खन बहुत पसंद था।

तौरेत मुक़दस ने इन्सान की ज़मीन पर आबादकारी के तज़किरे के साथ पहले बाब पैदाइश ही में दूध का ज़िक्र मुतइद्दिद मक़ामात पर किया है।

कृष्ण जी महाराज के ज़माने में भी दीहात के वह लोग जिनकी अपनी ज़मीन न होती थी या कम ज़मीन के बाइस गुज़ारा न कर सकते थे, गाएं पाल कर उनका दूध फ़रोख़्त करके इज़ाफ़ी आमदन हासिल करते थे। यह शौक़ इब्तिदाई दौर के मश्रिक़ी अफ़रीक़ा में भी मिलता है। अलबत्ता मश्रिक़ बईद के मुमालिक को दूध से वाक़िफ़यत हुए ज़्यादा अरसह नहीं गुज़रा। अगर्चे यह देर से इस मैदान में आए हैं लेकिन आस्ट्रेलिया और न्यूज़ी लैंड दुनिया भर में दूध और इसकी मसनूआत के मुआमले में अपना मक़ाम रखते हैं।

अमरीका में पहली गाए 1611 में जेम्स टाउन के आबादकारों ने दरामद की। और इसके बाद यह सिलसिला इतनी तरक़्क़ी कर गया कि 1851 में पनीर बनाने की एक फ़ैक्ट्री न्यूयार्क स्टेट में क़ायम हुई। वहां पर पनीर आज कल इतना मक़बूल है कि अमरीका के दूध की कुल पैदावार का 24 फ़ीसदी पनीर बनाने में सर्फ़ होता है। इनके यहां तो दूध की रग़बत से नाजाइज़ फ़ाएदा उठाते हुए किसी सितम ज़रीफ़ ने एक मर्तबा मशहूर कर दिया कि ख़्वातीन के दूध में तवानाई की मौजूदगी किसी भी उम्र के लोगों के लिए कारामद हो सकती है। चुनांचे कई ग़रीब औरतें अपना दूध बच्चे को पिलाने के बजाए दुकानों पर फ़रोख़्त करने लगीं। लेकिन यह बेहूदा शौक़ चंद दिनों में ख़त्म हो गया।

दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में ज़्यादह तर गाए का दूध मक़बूल है और इसी ग़र्ज़ से उम्दा से उम्दा गाएं पालना और उनके दूध में इज़ाफ़ह करना एक सनअत की शक्ल इख़्तियार कर गया है। एक आम अमरीकन गाए रोज़ाना एक मन दूध देती है कहते हैं कि इस सलाहियत में हर साल बेहतरी पैदा की जा रही है। गाएं पालने और इनके दूध से फ़वाइद हासिल करने वाले मुमालिक में अर्जन्टाइन, डनमार्क, नारवे ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड आलमी एहमियत रखते हैं।

भैंस का दूध शिमाली हिंदुस्तान में ज़्यादा तर मक़बूल है। बल्कि पंजाब में कोई भी दूध पीने वाला तंदरुस्ती की हालत में गाए के दूध को पसंद नहीं

करता। भैंस का दूध गाढ़ा, इसमें चिकनाई ज़्यादा लहमियात ज़्यादा और पानी कम होता है। इसका मक्खन सफ़ेद, और एक आम भैंस रोज़ाना बीस लीटर दूध देती है और इससे एक किलो मक्खन निकल सकता है।

भैंस अमरीका और अफ़रीक़ा में भी होती है लेकिन इन मुमालिक की भैंस का हुलिया हमारे यहां की भैंस से थोड़ा सा मुख़्तलिफ़ और आदात बरअक्स होती हैं। वहां पर भैंस वहशी दरिंदों में शामिल है। हत्ता कि अरब में "जामूस" से मुराद भैंस की शक्ल का एक वहशी जानवर है। इस नस्ल की भैंसों का दूध बराए नाम होता है। पंजाब में भैंस का दूध तवानाई का मज़हर समझा जाता है। कुश्ती लड़ने वाले पहलवान अपनी ताक़त में इज़ाफ़ा के लिए भैंस का दूध और घी कसरत से इस्तेअमाल करते हैं। हामला औरतें कमज़ोरी को दूर करने के लिए और ज़चगी के बअद भैंस का दुध और घी पसंद करती हैं। इनमें से अकसर को ज़्यादह चिकनाई के इस्तेअमाल से ख़ून की नालियों और दिल की बीमारियों का शिकार होना पड़ता है। पंजाब के लोग चाए में भी गाए का दूध पतला होने की वजह से पसंद नहीं करते।

देहात में बकरियां पालने का रिवाज मौजूद है। लेकिन बकरी का दूध कुवालिटी में उम्दा होने के बावजूद मक़बूल नहीं। हालांकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी हयाते मुबारका में हमेशा पीने के लिए बकरी के दूध को पसंद फ़रमाया। उर्दू मुहावरे में बकरी का दूध भी ज़रबुल मस्ल रहा है जैसे कि "बुज़ा ख़ाफ़श"।

हिंदुस्तान में बकरी को शोहरत महातमा गांधी से हुई। यह भारती राहनुमा सारी ज़िंदगी बकरी का दूध पीते रहे और जब इंग्लिस्तान गए तो अपनी बकरी साथ ले गए।

हिंदुस्तान के मुतअद्दिद घरानों को अगर माँ का दूध मयस्सर न हो तो बकरी का दूध पिलाते थे। मेरे अपने ख़ानदान में एक बच्चे की परवरिश के लिए बकरी ख़रीदी गई जिसे वह क़ालीन वाले कमरे में बांधते थे।

भेड़ का दूध चिकनाई में भैंस से गाढ़ा होता है। हमारे यहां के पीने वाले इसे पसंद नहीं करते, कहते हैं कि इसमें से ख़ास क़िस्म की नागवार बदबू आती है।

चीन, रूस और तिब्बत के बअ़ज़ इलाक़ों में घोड़ियों का दूध बड़ा पसंद किया जाता है। मंगोल हमेशा घोड़ियों का दूध पीते थे। इसमें चिनाई बड़ी थोड़ी होती है इसलिए जल्द हज़्म होता है और तवानाई देने में अहमियत रखता है।

कोह हिमालया के दामन में सरा गाए होती है। यह क़द में आम गाए से छोटी और जिस्म पर पहाड़ी बकरी की मानिंद लम्बे बाल होते हैं। पहाड़ी इलाक़ों में गाए की तरह का एक जानवर याक पाया जाता हैं बअ़ज़ के नज़दीक यह सरा गाए की क़िस्म है। इसके दूध में चिकनाई गाए से ज़्यादा लेकिन दूध कम। वहां के लोग इस जानवर को इस हद तक पसंद करते हैं कि याक का

गोबर सुखा कर चाए में भी डालते और मज़े से पीते हैं।

हिंदुस्तान के मग़रिबी घाट के इलाक़े और मरहटा अक़वाम में गधी का दूध बड़ा पसंद किया जाता हैं हमने मुम्बई में गवाले देखे हैं जो गधियों की क़तार लिए बाज़ार में आवाज़ लगा कर गधी का दूध फ़रोख़्त करते थे। इसकी एक वजह यह भी है कि पुराने वैद गधी का दूध तपे–दिक़ के मरीज़ों को दवा के तौर पर देते थे। कहते हैं कि यह दूध जिस्मानी कमज़ोरी के लिए मुफ़ीद है।

कीम्यावी साख़्त के लिहाज़ से कुतिया का दूध अच्छी चीज़ क़रार दिया जाता है। लेकिन वह लोग जो कि इस्लामी तअलीमात की ख़िलाफ़ वरज़ी में कुत्ते पालते, इनका मुंह चूमते बल्कि अपने साथ सुलाते हैं इनको भी यह दूध पीते सुना नहीं गया। इसकी ग़ालिबन वजह है कि कुत्ता रखना हमेशा ख़तरनाक होता है और इसके दूध से भी सहत के कुछ मसाइल पैदा हो सकते है।

ग़िज़ा में हलाल और हराम का तसव्वुर इस्लाम ने दिया है। इस्लाम ने हराम जानवरों का दुध भी हराम क़रार दिया है। दिलचस्प बात यह है कि वह लोग जो इस्लाम को नहीं मानते और इसके हलालो हराम को इस जदीद ज़माने में जिहालत की बात समझते हैं। इनमें से कोई भी किसी हराम जानवर का दूध नहीं पीता। हमने पूरी दुनया में कोई भी दरिंदों, सुवरनियों, बल्लियों वग़ैरा का दूध पीता नहीं देखा। और यह वाक़िआ और इस अम्र का एक अहम सबूत है कि वह इस्लाम के फ़ल्सफ़ा हलालो हराम पर मुअतरिज़ होने के बावजूद अपनी अमली ज़िंदगी में इस पर अमल करते हैं।

दूध की ख़राबियां और इससे ख़तरात:

दूध हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि यह तंदरुस्त जानवर से हासिल किया जाए। जानवर को अच्छी ख़ुराक दी जाए। दूध निकालने से पहले इसके थन साफ़ किए जाएं ताकि बैरूनी ग़िलाज़त दूध में दाख़िल न हो। जिस बर्तन में दूध निकाला जाए वह बर्तन साफ़ हो वरना दूध ख़राब हो जाए गा। फिर इसे ढांप कर रख जाए।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं।

جاء ابو حميد، رجل من الانصار من النقيع باناءٍ من لبنٍ الى النبىّ صلى الله عليه وسلم فقال النبى صلى الله عليه وسلم الاخمرته ولو ان تعرض عليه عوداً.
(بخاری ومسلم)

(नक़ीअ से अंसार का एक शख़्स अबू हमीद, नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में दूध का एक बर्तन ले कर हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इसे ढांप कर क्यूं नहीं रखा गया। ख़ुवाह इस पर लकड़ी का टुकड़ा ही रख दिया जाता।

आमतौर पर दूध से यह मसाइल पैदा हो सकते हैं।

1. बर्तन नंगा हो तो इस पर मक्खियां, आस–पास की धूल, गवालों के गंदे हाथ व लट्टू ही में जाकर मुतअद्दिद अक़साम के जरासीम दाख़िल कर देते

हैं।

2. गायों में तपे–दिक़ एक आम बीमारी है। कमज़ोर जानवर पर भी तो दिक़ का शुबह हो सकता है। लेकिन इंगलिस्तान मे हैरत इस वक़्त हुई जब हॉरलिक्स कंपनी की एक गाए को सहत और तंदरुस्ती की बिना पर बहतरीन गाए का इनआम दिया गया। बअद में मअलूम हुआ कि इस गाए को दिक़ थी।

3. गले की सोज़िश, जरासीमी सोज़िश, सुर्ख़ बुख़ार, ज़हरबाद, तपे–मुहर्रिक़ा, गवालों के गंदे हाथों से हो सकते हैं।

4. जानवर के थनों की सोजिश और इनकी मुतअद्दिद बीमारियां कच्चा दूध पीने से हो सकती हैं।

5. दूध पड़ा–पड़ा ख़राब हो जाता है। बर्तन अगर गंदा हो या दूध को गर्मी के मौसम में ठंडा न रखा जाए तो ख़राब हो कर पीने वालों को आंतों की बीमारी मे मुब्तिला कर सकता है।

दूध से पैदा होने वाली बीमारियों का एक आसान हल यह है कि बीमार जानवर का दूध न लिया जाए। गंदगी खाने वाले जानवरों का दूध न पिया जाए। दूध के बर्तन, गवाले के हाथ, जानवर के थन साफ़ रखे जाएं। दूध को महफ़ूज रखने में सबसे बड़ी मुश्किल वलटू ही है। अगर दूध एक मर्तबा किसी गंदे बर्तन मे दूध लिया जाए तो इसके बअद कोई भी क़दीम या जदीद तरीक़ा इख़्तियार करें, दूध ख़राब हो जाए।

महफ़ूज़ दूध:

1. साफ बर्तन मे हासिल करने के बअद दूध को ढक्कन दे कर साफ़ बर्तन में उबाला जाए। इसके बअद ठंडा करके किसी ठंडी जगह रख दिया जाए। ऐसा दूध एक दिन तक सहीह रह सकता है। अगले दिन रखना हो तो फिर से उबाला जाए। यह तरीका घरेलू इस्तेअमाल के लिए तो ठीक है मगर वसीअ पैमाना करना मुमकिन नहीं।

2. तरक्की याफ्ता मुमालिक में दूध पैदा करने वाले किसान भी अपना दूध नही पी सकते। जानवरों का दूध मशीन के ज़रिए मुसफ्फ़ा बर्तन में दोह कर टंकी वाली गाड़ी के जरिए फैक्ट्री में जाता है। जहां इसको एक ख़ास दरजए हरारत पर उबालने और फिर एक दम ठंडा करने का अमल किया जाता है जिसे PASTEURISATION कहते हैं। अगर इस दूध को बंद मुसफ्फा बर्तन में रखा जाए तो कई दिन तक ख़राब नहीं होता। इस तर्कीब मे दूध के असल जाएका को कायम रखा जाता है। पीने वाले को यह महसूस नही होता कि दूध उबला हुआ है।

दूध मे चिकनाई ज्यादह होने के बाइस डेरी फार्म में कुछ हिस्सा निकाल कर इसको 3.5 फीसदी के कानूनी मेअयार पर ले आते हैं। इज़ाफ़ी चिकनाई मक्खन, घी और क्रीम की सूरत में फरोख़्त कर दी जाती है। दूध को मुसफ्फा करने के दौरान इसमें चिकनाई के जर्रों को इस तरह बिलो

दिया जाता है कि वह छोटे हो कर आसानी से क़ाबिल हज़्म बन जाते हैं। यह HOMOGENISED दूध बच्चों का पेट ख़राब नही करता और इसे इस्हाल के दौरान भी दिया जा सकता है। आज कल बाज़ार में मिलने वाला आम लिफ़ाफ़ों का दूध इसी क़िस्म से तैयार होता है।

4. पंजाब में रख ग़ुलामां के सरकारी डेरी फ़ार्म में बोतलों में बंद दूध की एक क़िस्म STERILISED बाज़ार में आई थी। इस दूध के तमाम अज्ज़ा क़ायम होते थे और इन बोतलों को अगर न खोला जाए तो यह साल भर में भी ख़राब न होती थीं। बदक़िस्मती से दीगर सरकारी इदारों की तरह यह बद--इंतिज़ामी का शिकार हो कर बंद हो गया।

दूध की मस्नूआत:

गाए या भैंस के थनों से बराहे रास्त दूध पीना पंजाबियों का ख़ास शौक़ है। अब यह हर किसी के बस की बात नहीं, इसलिए घरों में उबला हुआ दूध या हलवाई की कढ़ाई का दूध ज़्यादह पिया जाता है। ठंडक पहुंचाने या पेट की जलन के लिए इसमें ठंडा पानी मिलाकर कच्ची लस्सी बनती है। कड़ाही के दूध में मुसलसल पकने से नमी कम हो कर गाढ़ा हो जाता है लेकिन विटामिन ज़ाए हो जाते हैं रंग और ज़ाएक़ा ख़राब हो जाता है।

दही:

ज़मानए क़दीम से ख़्वातीन उबले दूध में दही की जाग लगा कर दही जमाती आई हैं। इस दही को सुबह बिलोकर मक्खन निकाला जाता है। इसके बअद की छाछ या लस्सी एक मक़बूल मश्रूब है। देहात के लोग गर्मी की तपिश और प्यास की शिद्दत के लिए इसे नमक मिलाकर पीते हैं। दोपहर के खाने के साथ किसानों का यह दिल पसंद मशरूब है। शहरों के लोग सुबह का नाश्तह दही या दही कुल्चा या लस्सी की सूरत में करते हैं। दही में दूध की पूरी गिज़ाइयत ऐसी सूरत में होती है कि फ़ौरन हज़्म हो जाती है। इससे पेट ख़राब नहीं होता। लेकिन इसका सबसे बड़ा ऐब नींद है। लस्सी पीने के बअद सुस्ती तारी हो जाती है और नींद आती है।

नई अरबी में दही को "लबनन" या "लबन हामिज़" कहते हैं। जबकि कुरआनी अरबी में लबन से मुराद दूध था। दही बनाने के फ़न में नई तब्दीलियां आई हैं। मअलूम हुआ है कि लेक्टिक एसिड या जरासीम की कुछ क़िस्में दूध को दही में तब्दील करते हैं अब दही बनाने के लिए इन जरासीम के महलूल के चंद क़तरे डालने से पसंदीदह शक्ल और ज़ाएक़े का दही तैयार हो जाता है। पाकिस्तान के बाज़ारों में भी मशीन से जमा हुआ दही YOGHUR के नाम से प्लास्टिक के ग्लासों में फ़रोख़्त हो रहा है। इस दही का कमाल यह है कि बार में दूध का परचून भाओ 5 रुपए फ़ी लीटर है और इनका निस्फ़ किलो का पैकेट सात रुपए में मिलता है। आम हल्वाई के यहां इसी क़दर दही तीन रुपए से कम का है। यअनी यह दुगना मुनाफ़अ ले रहे हैं। दूसरे मुल्कों में भी दही की यह सन्फ़ सादह या फ़रूट

की शमूलियत के साथ आम पसंद की जा रही है।

रबड़ी:

दूध को कड़ाही में पकाते जाएं और नीचे लगने न दें। जब निस्फ़ रह जाए तो यह गाढ़ा ज़र्द सय्याल रबड़ी है। इसे फ़ालूदा वग़ैरह पर डालते हैं, एक लीटर रबड़ी को जब मज़ीद पकाया जाए तो वह खोया बन जाता है। 5 किलो दूध से एक किलो खोया बनता है। इसे लोग खाते हैं, मिठाइयां बनती हैं और इसे लस्सी में डाल कर पीते हैं।

ग़िज़ाई क़वानीन की रू से खोया में बीस फ़ीसदी चिकनाई होती है। चिकनाई की इतनी ज़्यादह मिक़दार पेट ख़राब करती है और बअद में मसाइल का बाइस बन सकती है। पाकिस्तानी कुल्फ़े में दूध के साथ खोया और मग़ज़ियात की आमेज़िश की ज़ाती है। बल्कि आइस क्रीम में क्रीम की इज़ाफ़ी मिक़दार दूध में डाल कर इसमें चिकनाई की मिक़दार दस फ़ीसदी करना ज़रूरी है। अमरीकी क़ानून के मुताबिक़ इसमें 14 फ़ीसदी चिक्नाई होनी चाहिए। कुल्फ़ा और आइस क्रीम बनाने के बर्तन जरासीम की बेहतरीन आमाजगहें हैं। इसलिए आइस क्रीम वही इस्तेअमाल करनी चाहिए जिसको मुसफ़्फ़ह किया गया हो। बाज़ार में आम मिलने वाली मलाई की बर्फ़ और कुल्फ़ियों से हमेशह पेट में कीड़े और हैज़ा होते रहते हैं।

मक्खन—घी:

इसको बनाने के दो तरीक़े हैं। एक तो पुराना जिसमें दूध से दही बनाकर इसमें से मक्खन निकाला जाता है। जदीद तरीक़े में कच्चे दूध से मर्ज़ी के मुताबिक़ पूरा या निस्फ़ मक्खन क्रीम की सूरत निकाला जाता है। जिससे मक्खन बनाया जाता है। पाकिस्तान के ग़िज़ाई क़वानीन की रू से मक्खन में अस्सी फ़ीसदी चिकनाई और अठारह फ़ीसदी पानी होना चाहिए। इस मक्खन को जब पकाया जाए तो घी बनता है। घी के मेअ़यार के मुताबिक़ इसमें पानी या लस्सी की मिक़दार एक फ़ीसदी से ज़ाइद न होनी चाहिए।

आजकल मुतअद्दिद इदारे पाकिस्तान में दूध पैक करके लिफ़ाफ़ों में बेच रहे हैं। इस तैयारी के दौरान उनके पास क्रीम और मक्खन की काफ़ी मिक़दार फ़ाल्तू हो जाती है। उन्होंने मक्खन और क्रीम फ़रोख़्त करने की कोशिश की मगर यहां के लोगों को जितनी रग़बत दही और इसके बअद दूध से है, इतनी मक्खन और क्रीम से न हो सकी। क्रीम की निकासी की उन्होंने तर्कीब निकाली कि इसे घी की सूरत में फ़रोख़्त किया जाए। एक कंपनी ने टीन के डब्बे में 900 ग्राम घी पचास रुपै में रख दिया.....

बयालीस वालों ने अपनी क़ीमत पचास कर दी है और पचास वाले पचपन पर आ गए हैं। इनको यह सहूलत है कि यूटिलिटी स्टोर इनका माल उठा रहा है। और इस तरह वह अपना एक फ़ालतू सामान बाज़ार में भी महंगा फ़रोख़्त कर रहे हैं। मगर उन लोगों को गाहक कमो बेश ही मिलते हैं इस घी का ज़ाएक़ा हमारी आदत के मुताबिक़ नहीं।

पनीरः

दूध में खटाई डाल कर इसको फाड़ते हैं। फिर यह दूध कपड़े में लटका
देते हैं। पानी निकल जाने के बअद खुश्क पनीर हासिल होता है। इसमें
लहमियात और चिकनाई भरपूर होते हैं। हमारे यहां अभी तक पनीर का
ज़्यादह तर मसरफ़ रस गुल्ले बनाना है। अक्सर लोगों को जब लहमियात
की कमी या कमज़ोरी दूर करने के लिए नाश्ते में पनीर खाने को कहा
जाता है तो वह हैरान होते हैं कि यह क्या चीज़ है। हालांकि पाकिस्तान में
पेशावर का पनीर अपनी उम्दगी और लज़्ज़त में मशहूर है।

पाकिस्तान में आम तौर पर सफ़ेद और खारा पनीर बनाते हैं। जबकि
दुनिया में इस वक़्त पनीर की 400 अक़साम मशहूर हैं। अमरीका का हर
शहरी सालानह 17 पोंड इस्तेअमाल करता है। पनीर की चिकनाई चालीस
फ़ीसदी और बक़ाया लहमियात होते हैं। पानी 30 फ़ीसदी से ज़ाइद नहीं
होता। जबकि पाकिस्तान में खारी पनीर में पानी की छूट अस्सी फ़ीसदी है।

कम्ज़ोरी और बीमारी के ख़िलाफ़ कुव्वते मुदाफ़िअत पैदा करने के लिए
पनीर एक बेहतरीन गिज़ा और दवा है। कम चिकनाई वाला पनीर यर्क़ान के
मरीज़ों के लिए अक्सीर है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं:

اتی النبی صلی الله علیه وسلم بجبنة فی تبوک فدعا بالسکّین فسمّیٰ
وقطع......
(ابوداؤد)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में तबूक के ग़ज़वह
के मौक़े पर पनीर पेश किया गया। उन्होंने छुरी मंगवाई और
बिस्मिल्लाह पढ़कर इसको काटा।)

इब्ने माजह ने सलमान फ़ारसी रज़ि॰ से एक रिवायत बयान की है कि नबी
सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पनीर और घी को खाने के लिए दुरुस्त क़रार
दिया।

पनीर बनाने के अमल में दूध के फाड़ने के बअद ज़र्द रंग के जिस पानी को
आम लोग फेंक देते हैं। वह एक बेहतरीन टॉनिक है। इसमें दूध के तमाम
मअदनी नमक और विटामिन मौजूद होते हैं बल्कि थोड़ी मिक़दार में लहमियात
भी होते हैं। जब कोई बच्चा इस्हाल की वजह से गिज़ा या दूध हज़्म न कर
सके और दस्तों के ज़रिए जिस्म से पानी और नमक निकल गए हों तो ऐसे
बच्चों को फाड़े हुए दूध का यह पानी तिर्याक़ और कुदरती मिठास शामिल होने
की वजह से फ़ोरी तौर पर जुज़्वे बदन बनता और कमी को दूर कर देता है।
अतिब्बा क़दीम भी इस नुस्ख़े से वाक़िफ़ थे। तिब की मुतअद्दिद किताबों में इस
पानी की उफ़ादियत का ज़िक्र मिलता है।

एहदे रिसालत में खजूर से एक हलवा "हसीस" तैयार होता था। जिसमें
खजूर को घी में तलने के बअद पनीर मिलाकर पकाया जाता था। नबी
सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह हल्वह इस क़दर पसंद था कि उन्होंने

हज़रत सफ़िया रज़ि. के वलीमे के लोगों को हसीस खिलाया। खजूर के साथ पनीर को शामिल करने से इसकी गिज़ाई इस्तेअदाद में इज़ाफ़ा होता है और यह जिस्मानी कमज़ोरी के लिए एक मुअस्सिर दवाई बन जाता है।

इरशादाते रब्बानी:

فيها انهار من ماء غيراسن وانهار من لبن لم يتغير طعمه ...... (محمد......١٠٠)

(वहां पर ऐसी नहरें होंगी जिनमें ख़ुश ज़ाएक़ा पानी और ऐसा उम्दह दूध होगा कि जिसका ज़ाएक़ा वक़्त से ख़राब न होगा।

وان لكم في الانعام لبعرة. نسقيكم ممانی بطونه من بين فرث ودم لبناً خالصاً سائغاً لشربين (النحل:٦٦)

(तुम्हारे लिए चोपायों में ग़ोरो फ़िक्र का एक अहम मसअला रख दिया गया है। हम तुमको इनके पेटों में से इस जगह पर जो आलाते हज़्म और ख़ून के दिरमियान है। दूध निकालते हैं जो कि लज़ीज़ होता है। और पीने वालों के हलक़ से बिला किसी कोशिश के अंदर चला जाता है।)

ان لكم في الانعام لعبرة. نسقيكم مما في بطونها ولكم فيها منافع كثيرة و منهاتا كلون...... (مؤمنون:٢١)

(तुम्हारे लिए ग़ौर के लिए चोपायों में कुछ बातें हैं। जैसे कि अल्लाह तुमको उनके पेटों से मशरूब मुहैया करता है और इनसे तुम्हें बेशुमार फ़ाएदे हैं और तुम इनको खाते हो।)

जानवरों से फ़वाइद हासिल करने के बारे में इन आयात में अहम इशारात हैं। जानवर जब तक ज़िंदा है इसके गोबर से खेतों को सरसब्ज़ बनाने के लिए उम्दह खाद, ईंधन, गोबर गैस मिलते हैं। ज़िबह करे तो ख़ून से रंग, जानवरों की ख़ुराक, सींग और खुर दस्ते बनाने के लिए, खाल से जूते और दूसरा सामान, बालों से लिबास, जिस्म के ग़दूदों और जिगर से बीमारियों की दवाएं अंदरूनी झिल्लियों से सरेश, आंतों से ज़ख़्म सीने का धागा, खाने के लिए गोश्त के बअद हड्डियों से फ़ास्फ़ोरस, चारकोल, ख़ून की कमी का इलाज हासिल होते हैं। यह एक इशारह था कि तुम ग़ौर करोगे तो गोश्त के अलावा भी और बहुत कुछ मिलेगा।

कुतुबे मुक़द्दिसा:

तोरैत और इंजील में दूध का ज़िक्र अस्सी मर्तबह मुख़्तलिफ़ सूरतों में आया है।

......"फिर उसने मक्खन और दूध और इस बछड़ो को जो उसने पकवाया था, लेकर उनके सामने रखा......" (पैदाइश 8:18)

इसी बाब में इज़हाक़ के दूध छुड़ाने की दअवत और सारह के दूध पिलाने का तज़्किरा मिलता है।

......"और तीस दूध देने वाली ऊंटनियां बच्चों समीत और चालीस गाएं, और दस बैल, बीस गधियां और दस गधे......" (पेदाइश 15:32)

इन चीज़ों को इस वक़्त की बेहतरीन जाएदाद समझा गया क्यूंकि यह दूध देते और इनकी आइंदा नस्ल को बढ़ाने के लिए कार आमद थे।

......"और में उतरा हूं कि इनको मिसरियों के हाथ से छुड़ाऊं और इस मुल्क से निकाल कर इनको एक अच्छे और वसीअ मुल्क में जहां दूध और शहद बहता है यअनी कनआनियों और हत्तियों और उमूरियों ख़र्ज़ियों और हूयों और बेवसियों के मुल्क में पहुंचाऊं......"
(ख़रूज 3:8)

सबसे बैहतर मस्कन वह है जहां दूध और शहद हों क्यूंकि यही ज़िंदगी की बैहतरीन चीज़ें है।

......"और बकरियां तैरे मैदानों की क़ीमत हैं। और बकरियों का दूध तेरी और तेरे ख़ानदान की ख़ुराक और तेरी लौंडियों की गुज़रान के लिए काफ़ी है......" (इम्साल 27:27)

इसी बाब में दूध बिलोकर मक्खन निकालने का तज़किरा मिलता है।

किताबे मुक़दस में दूध का ज़िक्र मुख़ातलिफ़ सूरतों में और मुख़ातलिफ़ मक़ामात पर कम–अज़–कम अस्सी मर्तबह आया। इन तमाम जगहों में दूध को फ़रावानी रिज़्क़, माली आसूदगी और सहतमंदी का मज़हर क़रार दिया गया।

इरशादातते नबवी सल्ल०

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बासा रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं कि:

ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم شرب لبناً فمضمض و قال ان دسم اللبن ردی، لمحھرم و ذی الصداع (بخاری ومسلم)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूध पिया और इसके बअद कुल्ली की और फ़रमाया कि इसकी चिकनाई बुख़ार के मरीज़ों और सर दर्द के लिए बेकार है)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं:

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يحب اللبن. (ابوداؤد۔ترمذی)

(हज़रल अब्दुल्लह बिन मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:)

وما انزل اللہ من داءٍ الا ولہ دوا فعلیکم بالبان البقر فانھا ترم من کل الشجر. (النسائی)

(अल्लह तआला ने हर बीमारी के लिए दवा नाज़िल फ़रमाई है। पस गाए का दूध पिया करो। क्यूंकि यह हर किस्म के दरख़्तों पर चरती है।)

यही अल्फ़ाज़ अबी अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से दूसरी सूरत में यूं मुरव्वी हैं।

تـدا ووابـالبـان البقر فانی رجوا ان یجعل اللہ تعالیٰ فیھا شفاء فانھا تاکل من کل الشجر...... (طبرانی)

(गाए के दूध से इलाज करो कि अल्लाह तआला ने इसमें शिफ़ा रखी है। क्यूंकि यह हर क़िस्म के दरख़्तों पर चरती है।)

हज़रत मल्लिका बिंते उमरू रज़ि॰ रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलल्लाह सल्लहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

البان البقر شفاء وسمنھا دواءٌ ولحومھا داءٌ (طبرانی)

(गाए के दूध में शिफ़ा है। इसका मक्खन मुफ़ीद है, अलबत्ता इसका गोश्त बीमारी है।)

हजरत अब्दुल्ला बिन मसऊद रज़ि॰ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया:

علیکم بالبان البقر فانھا دواءٌ واسمائھا فانھا شفاء ایّاکم ولحومھا فان لحومھا داءٌ (ابن السنی، ابونعیم، مستدرک الحاکم)

(तुम्हारे फ़ाएदे के लिए गाए का दुध है। क्यूंकि यह और इसका मक्खन मुफ़ीद दवाई है। अलबत्तह इसके गोश्त में बीमारी है।)

यही इरशादे गिरामी हज़रत सुहैब रज़ि॰ से इब्नुस्सनी और अबू नईम ने रिवायत किया है।

हज़रत तारिक़ बिन शहाब रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

علیکم بالبان الابل. فانھا ترم من کل الشجر وھو شفاء من کل داء.. (ابن عساکر)

(तुम्हारे लिए ऊंट का दूध एक मुफ़ीद चीज़ है। यह हर क़िस्म के दरख़्तों से चरते हैं और इसमें ही बीमारी से शिफ़ा है।)

हज़रत मुअम्मर रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

فی البان الابل وابوالھا دواء لذربکم (ابن حبان)

(ऊंटनी के दूध और इसके पेशाब में तुम्हारे पेट में पड़ने वाले पानी का इलाज है।)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम:

ان امّۃ من بنی اسرائیل فقدت اخشی ان تکون الفار، وذالک انھا اذا وجدت البان الغنم شربتہ واذا وجدت البان الابل لم تشربہ.. (بخاری، مسلم)

(बनी इस्राईल के एक गिरोह को तजस्सुस की आदत थी। अंदेशा है इनको चूहा बना दिया गया। और यह इसलिए हुआ कि जब इनको बकरी का दूध मिलता था तो वह उसे ख़ुशी-ख़ुशी पी लेते थे। मगर जब उनको ऊंटनी का दूध दिया जाता तो उसे नहीं पीते थे।)

وقد اتی رسول الله صلی الله علیه وسلم بلبنٍ شیب بالماء. نشرب وقال الایمن فالایمن...... (بخاری)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में दूध पेश किया गया जिसमें पानी मिला हुआ था। आप सल्लल्लाहो ने नोश फ़रमाया और फिर हुक्म दिया कि दाएं तरफ़ से तक़सीम करो।)

दूसरी कई रिवायत से पता चलता है कि नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम अक्सर दूध में पानी और ख़ास तौर पर घड़े का पानी मिला कर पीते थे। इस तरह आप चिकनाई की मिक़दार कम कर लेते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरू रज़ि. रिवायत करते हैं कि :

نهی رسول الله صلی الله علیه ولسم عن اکل الجلالة و البانها ......
(ابن ماجہ، ابوداؤد، ترمذی)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गंदगी खाने वाले जानवर को गोश्त खाने और इसका दूध पीने से मनअ फ़रमाया।)

इसी रिवायत को इन्ही किताबों और अन्निसाई ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. से भी रिवायत किया है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. बयान करते हैं:

اتـی رسـول الـلـه صـلـی الـلـه علیه وسلم لیلةً اسری به بقدح لبن وقدح خمر...... (بخاری)

(मेअराज की रात रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक प्याला दूध, और दूसरा प्यालह शराब का पेश किया गया।)

यह वाक़िआ नामुकम्मल है। दूसरी रिवायात में आता है कि हुज़ूर सल्ल. ने इस में से दूध को पसंद फ़रमाया और इस बात को सही फ़ितरत क़रार दिया गया।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. फ़रमाते हैं

حـلبت لرسول الله صلی الله علیه وسلم شاةٌ داجنٌ و شیب لبنها بماءٍ من البئر التـی فـل دار انـسٍ فـاعـطـی رسـول الـلـه صـلـی الله علیه وسلم القدح. فشرب...... (بخاری، مسلم)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर की पली हुई बकरी का दूध दोहा गया और इसमें अनस रज़ि. के घर में वाक़ेअ कुएं का पानी मिलाया गया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह दूध क़बूल फ़रमाया और पिया।)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

दूध की अहमियत का अंदाज़ह इस अम्र से किया जा सकता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूध पीने के बअद शुक्रे ख़ुदावंदी अदा करने के लिए एक ख़ुसूसी दुआ फ़रमाई:

اللّٰهم بارک لنا فی وزدنا مه.

फिर इर्शाद फ़रमायाः

فانی لااعلم مایجزی من الطعام والشراب الا اللبن (ترمذی،ابوداؤد)

(मैं दूध के अलावह ऐसी किसी चीज़ को नहीं जानता जिसके अज्ज़ा बयक वक़्त खाने और मशरूब का काम दे सकें।)

यह इसलिए भी है कि इसकी तर्कीब में कुदरत ने तंदरुस्ती की ज़रूरयात को निहायत ख़ूबसूती से शामिल कर दिया है इसमें पनीर (लहमियात) चिकनाई को इस तरह समोया है कि लहमियात की तासीर जिस्म को ठंडक देने वाली बन गई है। यह जिस्म को गिज़ाइयत मुहैय्या करता है। यह जिस्म को बढ़ाता है मगर मोटापे की हद तक नहीं। यह जिस्म को मुलायम बनाता है। इसके फ़वाइद बेशुमार हैं इसका सय्याल जिस्म को इसकी अपनी ज़रूरियात के मुताबिक़ हिद्दत मुहय्या करता है, कहा जाता है कि इसकी कुव्वत का सरचश्मा इसका तवाज़ुन एतिदाल है।

बेहतरीन दूध वह है जो ताज़ा हासिल किया गया हो। इस पर जितना अरसह गुज़रेगा वह इतना ही बेकार हो जाएगा। (इसीलिए कुरआन मजीद ने जब जन्नत में मिलने वाले अच्छे दूध का तज़किरा फ़रमाया कि इस दूध का ज़ाएक़ा तब्दील न हुआ होगा। क्यूंकि वक़्त गुज़रने के बअद दूध में ऐसा हो जाना लाज़मी अम्र है। वक़्त के साथ ठंडक और लताफ़त ज़ायल हो जाती है और इसमें मुज़िरे सहत रतूबतें पैदा हो जाती हैं। ख़ास तौर पर जब दूध खट्टा हो जाता है। बच्चे की विलादत के बअद मां के दूध की लज़्ज़त में इज़ाफ़ह होता है इसकी मिठास मज़ीद अच्छी हो जाती है। साथ ही चिकनाई की मिक़दार मोअ़तदिल रहती है।)

फ़वाइद के लिहाज़ से अच्छा दूध बकरी का है, फिर गाए और ऊंटनी का और इसकी उम्दा तरीन शक्ल यह है कि इसे ताज़ह-ताज़ह दूध पिया जाए। पड़ा रहने के बाद यह पीने के लिए बेकार हो जाता है। दूध की अच्छाई का एक उसूल यह है कि हर वह जानवर जिसकी मुद्दते हमल इन्सान से ज़्यादा हो इसका दूध मुफ़ीद नहीं होता। दूध पीने से पेट की तेज़ाबियत कम होती है। ताक़त में इज़ाफ़ह होगा। यह दिमाग़ को ताक़त देता है और तोहिमात को दूर करता है। लेकिन पेट में नफ़ख़ पैदा करता है। अगर इसमें चीनी मिलाई जाए तो यह चहरे पर निखार लाता है। जिल्द और जिस्म पर हिस्सासियत से पैदा होने वाली ख़ारिश को दूर करता है। यह झिल्लियों को ताक़त देता है। इसलिए इस्तिसक़ा (पेट में पड़ना) में मुफ़ीद (इसकी तफ़सील अलाहिदा पेश हैं) इस बीमारी के लिए किसी मौसम की कोई दवाई अभी तक मुजर्रिब साबित नहीं हुई। और अगर मरीज़ कुछ मुद्दत सिर्फ़ दूध पर गुज़ारह करे तो वह ठीक हो जाती है क्यूंकि इसकी बुनयादी वजह जिगर की ख़राबी है।

बकरी का दूध लतीफ़ और मोअ़तदिल है और इम्राज़ दिक़ और वस्ल में मुफ़ीद है। जबकि गाए का दूध अपनी उफ़ादियत के लिहाज़ से यक्ता है। क्यूंकि इसमें बीमारियों से शिफ़ा है।

इब्नुल क़य्युम रह० इस राए से इत्तिफ़ाक़ करते हैं कि दूध दही ठीक है, जो बराहे रास्त जानवर से हासिल किया जाए या इसे दोहे अर्सा न गुज़रा हो। पेट के ज़ख़्म भरता है। यह इम्राज़े सीनह के लिए मुफ़ीद है। इसमें अगर चीनी की बजाए शहद मिलाकर पिया जाए तो यह बहतरीन ग़िज़ा, ज़हनी परेशानी का इलाज, साथ ही मुंह और पेट के ज़ख़्मों का बहतरीन इलाज है।

इसमें कोई शक नहीं कि यह जोड़ों के दर्दों, पेट की ख़राबियों, और मोतिया बिंद की तकलीफ़ में इज़ाफ़ह करता है। अगर इसमें शहद मिलाकर अदरक के मुरक्कब के साथ खाया जाए तो हर तरह से मुफ़ीद और नुक़सानात से मुबर्रा हो जाता है।

अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों का जन्नत की नेअमतों में ज़िक्र किया है उनमें कुछ ऐसी हैं जिनसे मिलती—जुलती दुनिया में पाई जाती हैं। जन्नत में दूध और शहद की नहरों का वादह किया गया है। शहद के ख़वास के बारे में हम जानते है कि वह बेहतरीन ग़िज़ा और एक मुकम्मल दवा है। इसी तरह दूध को भी मुकम्मल ग़िज़ा और मुफ़ीद दवाई होना चाहिए। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब दूध पीते थे तो इसमें पानी मिलाकर चिकनाई को कम करते थे। हुकमाअ ने बअज़ मक़ामात पर दूध से दांत ख़राब होने का शुबह किया है जिसका आसान हल यह किया गया कि इसके पीने के बअद दांत साफ़ किए जाएं ताकि चिकनाई लगी न रह जाए।

इस्लाम इस बात को तस्लीम नहीं करता कि बच्चे मां के अलावह कोई और दूध पिएं। कुरआन मजीद ने बच्चे की मुद्दते रज़ाअत दो साल मुक़र्रर की है। कमज़ोर दिल और नातवानों के लिए दूध को बेहतरीन ग़िज़ा होने का सबसे बड़ा मज़ाहिरा हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के वाक़िए में हुआ वह एक मुद्दत तक मछली के पेट में दहशत और ख़ौफ़ के असरात के साथ फ़ाक़ा कशी में रहे। जब मछली ने इनको किनारे पर उगला तो वह कमज़ोरी से इतने बेहाल थे कि करवट बदलने की हिम्मत भी न रखते थे। सबसे पहले उनको कद्दू की बेल के साये में लिटाया गया। फिर उनको ऐसी ग़िज़ा फ़राहम की गई जिसमें चिकनाई कम, नम्कियात, पानी और लहमियात ज़्यादह थे। ताकि ग़िज़ा जल्द हज़म हो कर तवानाई का बाइस बने। यह ग़िज़ा और दूध था। एक हिरनी उनके पास आकर अपना दूध पिला जाती थी। यहां पर एक और नुक्ता तवज्जह तलब है कि दुध थनों से बराहे रास्त हासिल किया गया।

एक हदीस में हज़रत अबू—बकर सिद्दीक़ रज़ि० और दूसरे असहाब के हमराह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बाग़ की सैर को तशरीफ़ ले गए। बाग़ के मालिक ने घड़े के पानी में बकरी का दूध ताज़ह दोह कर पेश किया क्यूंकि पकाए बग़ैर दूध कुछ अरसे पड़ा रहे तो वह इंसानी इस्तेअमाल के क़ाबिल नहीं रहता।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात

तिब्ब की किताबों में दूध की एक क़िस्म मतलक़ बयान की गई है जिससे

मुराद हमेशा गाए का दूध होता है। तवानाई और ग़िज़ाइयत के एतिबार से सबसे उम्दा दूध औरत का है। इसके बअद गाए का है। मुहद्दिसीन और अतिब्बा ने दूध की एक सलाहियत "जबनिय्यत" का बार-बार तज़किरह किया है। जबन अरबी में पनीर को कहते हैं। जबनियत से मुराद दूध में लहमियात की मौजूदगी है। दूध के लहमियात को CASEIN कहते हैं। जिस दूध में ज़बनियत ज़्यादा हो वह जिस्म को ज़्यादह गर्म करता और सक़ील होता है सुद्दा पैदा करता है।

जामेअ उस्सनाए के मुताबिक़ दूध में अगर पानी ज़्यादह हो तो वह कम नुक़सानदेह होता है और जल्द हज़्म हो जाता है। अगर जबनियत ग़ालिब हो तो इससे गुर्दा और मसानह में पथरी पैदा हो सकती है।

फ़िरदौसुल हिकमत के मुताबिक़ औरत के दूध के बअद सबसे उम्दा दूध गधी का होता है। यह लतीफ़ और मोअ़तदिल होता है। दमा, खांसी और आंतों के ज़ख़्मों को मुंदमिल करता है। इसके बअद वह गाए और भैंसें को बयान करते हैं मगर यह दोनों दूध उनके ख़याल में ग़लीज़ और सक़ील होते हैं

दूध तेज दवाओं और ज़हरों के असर को ज़ायल करता है, शोकरान, अज्वाइन ख़ुरासानी, तेलनी मक्खी, मटकी, साम्निया, ख़रगोश दरयाई और कुचला क़िस्म की ज़हरों के असरात के नुक़सान को ख़त्म करता है।

दूध पीने का सहीह वक़्त ख़ाली पेट है। दूध पीने के फ़ौरन बअद चहल क़दमी करना या सो जाना हाज़मे को ख़राब करता है। बड़ी उम्र के लोगों के लिए दूध में शहद मिलाकर पीना ज़्यादह मुफ़ीद है। क्यूंकि इस तरह वह तबख़ीर पैदा नहीं करता। ज़्यादह दूध पीने से इस्हाल हो जाते हैं। लेकिन बअद में क़ाबिज़ बनता और जिस्म के लिए ग़िज़ाइयत फ़राहम करता है। चूंकि दूध तनक़ियह करता है इसलिए यह पेट के अलसर को मुंदमिल करता है। सर्दी के मौसम के दूध में पानी निस्बतन कम होता है। ख़ुशकी की वजह से निस्यान हो तो यह मुफ़ीद है। ग़म और वसवास को मिटाता है।

वैदों के नज़्दीक दूध मुंह के ज़ाएक़े को मीठा करता है और बुख़ारों में मुफ़ीद है। बदन को मुलायम और फ़रबह करता है। दिक़ में नाफ़ेअ है। दिल जिगर को ताक़त देने के साथ भूख बढ़ाता है। बलग़म, सुफ़रा बादी को रफ़अ करता है।

जब कोई जानवर बियाहने के क़रीब हो या ताज़ह-ताज़ह बियाहा गया हो तो इसका दूध मुफ़ीद नहीं होता। जिन जानवरों को ज़्यादह मिक़दार में खली दी जाती हो इनका दूध सक़ील हो जाता है। दूध को अगर जोश दे कर पिया जाए तो यह सक़ील हो जाता है और देर में हज़्म होता है। वैदों के नज़दीक दूध में इसके हजम का एक चौथाई पानी मिलाकर उबालना चाहिए। यूनानियों के नज़दीक उबला हुआ दूध रियाह की कम मिक़दार पैदा करता है और कच्चे दूध से अफ़ज़ल है।

कच्चा दूध पेट फैलाता है और ज़ुकाम पैदा करता है। शहद मिलाने से यह ख़दशात कम हो जाते हैं।

वैदों के नज़दीक नहार मुंह दूध पीने से क़ब्ज़, गिरानी और गर्मी पैदा होती है। कुव्वते गोयाई और भूख बढ़ती है। बदन भारी होता है। दोपहर के वक़्त दूध पीना बदन को कुव्वत बख़्शता है। बलग़म निकालता और भूख बढ़ाता है। शाम के वक़्त दूध पीने से पुराना बुख़ार दूर होता है। आंखों की बीनाई में इज़ाफ़ह होता है। अगर रात को दूध पिया जाए तो क़ब्ज़ और गिरानी कम होते हैं। इसके हज़्म में जिस्म को मेहनत नहीं करनी पड़ती। उनके नज़दीक दूध को तांबे के बर्तन में दोहना चाहिए। वरनह मिट्टी का बर्तन होना चाहिए। इस बर्तन में दूध दोहने से वह बलग़म को निकालता और जिस्म को तक़वियत देता है।

जिनके बदन से ख़ून निकल गया हो दूध उनके लिए मुज़िर है। यह सुद्दे पैदा करता और जिगर के लिए मुज़िर है। जिनका मिज़ाज और मेअ़दे में फ़ासिद अनासिर मिलते हों और ज़्यादह मशक़्क़त के काम करने के आदी न हों उनको दूध पीने से इस्हाल और बर्स पैदा हो सकते हैं। अलबत्ता ऊंटनी के दूध से बर्स नहीं होता दांतों के लिए मुज़िर है। मुसलसल पीने से वह हिलने लग जाते हैं। सर दर्द और ज़अ़फ़ को बढ़ाता है। शबकोरी और धुंद का बाइस होता है। गाढ़ा दूध क़ौलिंज पैदा करता है।

दूध को फ़वाकहात, अंडा, मछली, प्याज़, मूली के साथ खाना नुक़सानदेह होता है। वैदों ने तुर्श सब्ज़ियों, दही, तिल, मक्खनी, राई और मूंग के साथ दूध पीने को ख़ातरनाक बताया है। घी, खांड, आमला, मुनक़्क़ा, शहद और दार फ़िलफ़िल के साथ दूध मुफ़ीद है। इनके मुरक्कब को वैदिक में पंच सागर कहते हैं।

तिब की पुरानी किताबों में दूध के मुतअ़ल्लिक़ दिए गए अक्सर मुशाहिदात मुग़ालतों पर मब्नि मअलूम होते हैं। जैसे कि हामला औरत को न देना चाहिए या दूध पीने से चहरे पर दाग़ पड़ जाते हैं। जिगर को ख़राब करता और गुर्दों में पथरी का बाइस हो सकता है। दूध के नुक़सानात में अहम तरीन चीज़ पेट में नफ़ख़ा पैदा करना है। पुरानी पेचिश के मरीज़ों को दूध हज़्म नहीं होता। इसलिए इनको इस्हाल होते और पेट में नफ़ख़ पैदा हो सकता है। अय्यामे हमल में बच्चे की उम्दा नशवो नुमा के लिए दूध का इस्तेअमाल यक़ीनन मुफ़ीद है। अलसर, ज़्याबेत्स, दिल और गुर्दों की बीमारियों में दूध मुफ़ीद है। जबकि अक्सर अतिब्बा ने इसे नुक़सान देह लिखा है। जहां तक कमज़ोरी का तअ़ल्लुक़ है तो इसमें फ़ौलाद न होने की वजह से यह खून पैदा करने की सलाहियत नहीं रखता। कमज़ोर मेअ़दा वालों को दूध फाड़ कर पिलाना एक मुफ़ीद तरकीब है जिससे अक्सर मरीज़ बेहतर हो जाते हैं।

दूध की कीम्यावी साख़्त:

मुहद्दिसीन ने सात सौ साल पहले क़रार दिया था कि दूध में तीन अहम अज्ज़ा हैं चिक्नाई, लहमियात, पानी। यह जिस्म के लिए मोअ़तदिल और मुकम्मल ग़िज़ा है और अबके जदीद तरीन मुशाहिदात भी तक़रीबन इसी हद तक हैं। चंद मशहूर जानवरों के दूध के कीम्यावी अज्ज़ा इस तरह से हैं।

	पानी	चिक्नाई	मिठास	लहमियात
1. ऊंटनी का दूध	86.5	3.1	5.6	4.0
2. बकरी का दूध	86.0	4.6	4.2	4.4
3. गाए का दूध	87.35	3.75	4.75	3.4
4. भैंस का दूध	80.9	7.9	4.5	5.9
5. इंसानी दूध	88.2	3.4	6.4	1.7
6. घोड़ी का दूध	89.1	6.1	6.1	2.7
7. व्हील मछली दूध	48.7	43.7		
8. कुतिया का दूध	75.4	9.6	5.1	11.2
9. गधी का दूध	90.0	1.3	6.5	1.7

सबसे ज़्यादह लहमियात कुतिया के दूध में हैं और इसके बअद रेंडियर के दूध में। चिक्नाई की सबसे ज़्यादह मिक़दार व्हील मछली के दूध में तक़रीबन निस्फ़ होती है। इसका दूध कीम्यावी तौर पर ऐसा लगता है जैसे कि सय्याल मक्खन हो। इसके बअद हथनी का दूध है।

दूध पानी से भारी होता है इसकी SPECIFIC GRAVITY जानवर के मुताबिक़ बदलती रहती है। मसलन इंसानी दूध की 1029 से 1035 होती है। बकरी के दूध की 1134, भेड़ का दूध अजीब साख़्त रखता है। इसमें चिकनाई 6 फ़ीसदी और नम्कियात 9 फ़सदी। बरतानवी किताबों ने भैंस में चिकनाई की मिक़दार 8 फ़ीसदी बयान की है। जबकि लाहौर के अनालिस्ट मोहम्मद इस्हाक़ ग़ौरी को तक़रीबन एक लाख दूध टेस्ट करने का तजुर्बा हासिल है। वह इसे 5 फ़ीसदी बयान करते हैं।

दूध की चिक्नाई या मक्खन में कई क़िस्म के शहमियाती तिर्शे होते हैं। यह चिकनाई छोटे-छोटे दानों की सूरत में होती है। जब दूध को मशीन से बिलोया जाता है तो यह दाने ऊपर आ जाते हैं। और इनको जमा करके मक्खन की शक्ल में निकाल लिया जाता है। दूध देने वाले जानवर की ख़ुराक में अगर चिकनाई शामिल हो जैसे कि भैंस को बिनोला, खली या तेल दिया जाए तो यह दाने बड़े होते हैं और मक्खन ज़्यादा आसानी से जमा हो जाता है।

माहिरीन इस बात पर मुत्तफ़िक़ नहीं कि ग़िज़ा में चिक्नाई की मिक़दार बढ़ाने से दूध में चिकनाई बढ़ जाती है। चूंकि खाने के बाद इसे जमा करना आसान होता है इसलिए महसूस होता है कि मक्खन ज़्यादा निकला। जबकि भैंसें पालने वाले इससे मुत्तफ़ि नहीं हैं उनकी राए में बिनोला देने से मक्खन की मिक़दार में इज़ाफ़ा होता है जबकि सब्ज़ चारा दिया जाए तो मक्खन कम होता है और दूध बढ़ जाता है। हाल ही में जानवरों की ग़िज़ा तैयार करने वाले एक पाकिस्तानी इदारे ने दो क़िस्म की ख़ुराक तैयार की है। एक को "घी" बढ़ाने वाली, और दूसरी को "दूध" बढ़ाने वाली" का नाम दिया गया है।

दूध में तैयार होने वाली आम चीज़ों में मसलन दही में चिकनाई 3.5 फ़ीसदी और नम्कियात 9 फ़ीसदी होते हैं। क्यूंकि यह सिर्फ़ जमा हुआ दूध है।

खोया बनाने में दूध से पानी की तीन चौथाई मिक़दार उड़ाई जाती है। इसलिए स्टैंडर्ड के मुताबिक़ इसमें चिकनाई 20 फ़ीसदी और नमी सिर्फ़ 30 फ़ीसदी रह जाती है।

दूध से हासिल होने वाली चीज़ों में दही और पनीर आसानी से हज़्म होती हैं और पेट की ख़राबी के मरीज़ों के लिए इनसे तकलीफ़ नहीं होती। पनीर की कई क़िस्में हैं कुछ मशहूर क़िस्मों की कीमयावी हैइयत इस तरह से है।

	पानी	लहमियात	चिकनाई	मिठास
शेडार पनीर	34.38	26.38	2.95	3.5
स्वीस पनीर	25.80	24.44	---	2.36
फ़ुल क्रीम पनीर	38.00	25.35	2.03	4.07

पनीर की कैमिस्ट्री में ख़ुश आइंद बात चिक्नाई की कमी और लहमियात की ज़्यादती है। पनीर खाने का मतलब यह है कि जिस्म में ताक़त देने, बीमारी का मुक़ाबला करने वाले लहमियात की मअ़कूल मिक़दार मयस्सर रहे औ चिकनाई कम होने की वजह से मोटापा नहीं होता। पनीर की थोड़ी सी मिक़दार ज़्यादा तवानाई मुहैया करती है। लोग इनको मिठास जैसी फ़ुज़ूल चीज़ बनाने में ज़ाया कर देते हैं।

आइस क्रीम में कम--अज़--कम दस फ़ीसदी चिक्नाई का होना ज़रूरी है। चूंकि किसी भी दूध में इतनी चिकनाई नहीं होती इसलिए आइस क्रीम में क्रीम का इज़ाफ़ा किया जाता है। अमरीका में यह तनासुब 14 फ़ीसदी है।

दही को अंग्रेज़ी में बिगड़ा हुआ दूध भी कहते हैं। पुराना तरीक़ा यह है कि दूध में थोड़ा सा दही मिलाकर इसे कुछ देर तक एक मोअ़तदिल दरजए हरारत पर रखते हैं। दूध जम कर दही बन जाता है।

जदीद तहक़ीक़ात से मालूम हुआ कि जरासीम की एक क़िस्म BACTERIUM BALGARICUM जब दूध में दाख़िल होती है तो इसे जमाकर मौजूद नम्कियात की मिक़दार में इज़ाफ़ा कर देती है। इन मुशाहिदात की बिना पर इन जरासीम का एक ख़ालिस महलूल तैयार किया जाता है। और इनको दूध की मिक़दार के मुताबिक बर्तन में डाल कर हिलाते हैं। फिर इनके बर्तनों को INCUBATOR में एक ख़ास दरजए हरारत पर चार घंटे रखा जाता है। मीठा दही तैयार हो जाता है। समरकंद, ईरान, पाकिस्तान की वजह से दही को अब योरप में भी मक़बूलियत हासिल हो गई है। इनकी नाक़िस अक़्ल के मुताबिक यह हिंदू जोगियों की गिज़ा है। तातारियों को घोड़ियों का दूध बड़ा पसंद था। यह पसंद रूस में आज भी मौजूद है। घोड़ी के दूध से चिक्नाई निकालने के बअद इसमें ख़मीर डाला जाता है। जिससे दूध में ख़मीर उठने लगता है और इस अमल में दूध की मिठास, अल्कुहल और लेक्टिक ऐसिड में तब्दील हो जाती है। यह खट्टा, बदबूदार दही KOUMISS कहलाता है। इसमें चिकनाई 1.10 फ़ीसदी होता है। इसी तरह क़फ़क़ाज़ के क़बाइल गाए और बकरी के दूध में ख़मीर उठाकर बड़े शौक़ से खाते हैं। यह शराब का नशह भी देता है और दूध की तवानाई भी।

दूध अपने असरात से मोअ़तदिल होला है। इसलिए जब कोई शख़्स ज़हर खा ले या तेज़ाब पी ले तो दवाई की नोइयत जाने बग़ैर भी दूध देना एक आम तर्कीब है क्यूंकि यह तेज़ाब को भी ख़त्म करता है और अल्कली को भी तफ़सीली तजुर्बात पर इंसानी दूध को अलकली की तरफ़ माइल देखा गया है जबकि तमाम ख़ूंख़ार जानवरों का दूध तेज़ाबियत की तरफ़ माइल होता है।

दूध की एक कुदरती क़िस्म "प्यूसी" जिसे पंजाबी में "बोहली" कहते हैं। जब किसी जानदार के घर बच्चा पैदा होता है। तो बच्चे की आंतों में सियाह रंग की MUCONIUM भरी होती है। नोनिहाल की मां के दूध में पहले तीन दिन ऐसी कीम्यावी तब्दीलियां होती हैं जिससे यह दूध गर्म करने पर दही की मानिंद जम जाता है। यह बच्चे को जुलाब दे कर इसकी ग़िलाज़त निकालता है। जल्द हज़्म होता है। पयूसी COLOSTRUM का रंग ज़र्दी माइल और इसमें चिक्नाई के दाने बड़े होते हैं। लहमियात में अल्ब्यूमिन की मिक़दार ज़्यादह होती है।

दूध मे माअ़दनी नम्कियात में कैलसियम फ़ास्फ़ीट, कैल्शियम क्लोराइड, मेग्निशयम फ़ास्फ़ीट, सोडियम और पोटाशियम के साइट्रेट शामिल होते हैं इसमें विटामिन की मिक़दार जानवर के चारा के मुताबिक़ होती है। सब्ज़ चारा खाने वाले जानवरों के दूध में विटामिन अलिफ़, बे, जीम, और दाल मौजूद होते हैं। दूध को अगर खुले बर्तन में जैसे हल्वाइयों की कड़ाही में ज़्यादा देर तक पकाया जाए तो इसमें से हयातीन 1 और बे तल्फ़ हो जाती हैं। इसके अलावह कीम्यावी जोहर ...... PBRODIDE REDVCTASE मिलते हैं। दूध में फ़ौलाद नहीं होता। इसलिए अगर कोई ज़्यादह मुद्दत तक दूध पर दारोमदार रखे तो उसे ख़ून की कमी हो जाती है।

दूध से निकलने वाले मक्खन में 80 फ़ीसदी चिक्नाई और 18 फ़ीसदी पानी होता है। होशियार दुकांदार इसमें नमक मिला देते हैं। नमक की वजह से यह पानी की ज़्यादह मिक़दार चूस सकता है। मक्खन को गर्म करने से घी बनता है। क़वानीन खुराक की रौ से घी में पानी की मिक़दार एक फ़ीसदी से ज़ाइद नहीं होती। लेकिन बटर ऑइल के नाम से बाहर का घी इस एक फ़ीसदी नमी से भी पाक होता है, जहां तक घी होने का तअ़ल्लुक़ है इसका मेअ़यार निहायत ही आला और ख़ालिस गाए का घी होता है। चूंकि इसमें पानी नहीं होता इसलिए ज़्यादह गाढ़ा नहीं होता। और इसमें दानह नहीं होता। इसलिए हमारे यहां के नावाक़िफ़ लोग इसे पसंद नहीं करते।

इस्तिस्क़ा का इलाज:

कुछ बीमारियां ऐसी हैं जिनमें मरीज़ के पेट में पानी पड़ जाता है। पेट फूलने लगता है। और सेहत गिरने लगती है। पेशाब की मिक़दार कम हो जाती है। जिल्द और ज़बान ख़ुश्क, आंखें वीरान, नब्ज़ कमज़ोर हो कर चलना फिरना दूभर हो जाता है।

इस कैफ़ियत को अंग्रेज़ी में ASCITIES कहते हैं। लेकिन यह पानी चंद एक बीमारियों में पेट तक महदूद रहता है। वरना वरम सारे जिस्म पर पड़ जाता

है। बीमारी अगर गुर्दों में हो तो सबसे पहले वरम चेहरे पर नमूदार होता है। फिर टांगें और बाक़ी जिस्म, दिल की बीमारी का वरम पैरों से शुरू होता है। इसके साथ धड़कन की ख़राबियां, दिल का फैलना और दूसरी कई तकालीफ़ शुरू हो जाती हैं दिल और गुर्दों की जिन बीमारियों में यह सूरते हाल पेश आती है। इनमें आम तौर पर यह बावर कर लिया जाता है कि अब मरीज़ का आख़री वक़्त है। और किसी भी तरीक़ा इलाज से मरीज़ फिर से ज़िंदगी की तरफ़ लौट कर नहीं आते।

गुर्दों की बीमारियाँ:

गुर्दों की बीमारियों में आजकल DIALYSIS का रिवाज निकल आया है जब मरीज़ के अपने गुर्दे फ़ेल हो जाएं और वह काम करना बंद कर दें तो इनकी बजाए एक मशीन ख़ून की सफ़ाई का काम शुरू कर देती है। यह अमल हफ़्ते में दो से तीन बार बल्कि कभी कभी रोज़ाना भी करना पड़ता है। मरीज़ की ख़ून की नालियों के साथ कीम्यावी महलूल लगा कर पूरे जिस्म के ख़ून को खींच कर मशीन में लाया जाता है। वह इससे यूरिया वग़ैरह को अलाहिदा करके कुछ अर्से के लिए मुसीबत तो ख़त्म कर देती है। जिस्म की शिकस्तो रेख़्त के दौरान यूरिया का पैदा होना एक तबई अम्र है। जब गुर्दे इसे निकाल न पाए तो दो एक दिन में फिर अच्छा ख़ासा ज़ख़ीरा जमा हो जाता है और इस तरह यह काम बार–बार करना पड़ता है। एक मर्तबह की सफ़ाई पर दो हज़ार रुपए के क़रीब ख़र्च आता है। यअनी 24000 रुपए माहवार पर गुर्दे फ़ेल होने के बअद किसी शख़्स को थोड़े अर्से के लिए ज़िंदा रखा जा सकता है।

जब गुर्दों पर काम का बोझ न हो तो वह रोज़–बरोज़ मज़ीद सुकड़ने लगते हैं। कुछ अरसे बअद इनका वजूद नाम–निहाद रह जाता है ऐसे हालात में मरीज़ को मशवरह दिया जाता है कि वह गुर्दे तब्दील कर वाले।

अगर्चे पाकिस्तान के कई सरजन गुर्दे तब्दील करते हैं और इस्लाम आबाद की लेबारेट्री में यह पता चलाया जा सकता है कि नया गुर्दा जिस्म को क़ुबूल होगा या नहीं। लेकिन किसी ज़िंदा शख़्स से इसका तंदरुस्त गिरोह हासिल करना कोई खेल नहीं। भाई बहन, या मां–बाप अपने ख़ून की मुहब्बत में कभी गुर्दा किसी को ख़ुशी–ख़ुशी देते हैं लेकिन ऐसे मुख़य्यर लोग अभी सामने नहीं आ रहे जो ज़िंदगी में अपना गुर्दा किसी को ख़ुशी–ख़ुशी दे दें या मरते वक़्त किसी मुस्तहिक़ के लिए अपने गुर्दे की वसिय्यत कर जाएं। भारत में गुरबत की वजह से नादार लोग लाख रुपए में गुर्दा दे देते हैं। इसलिए ऐसे मरीज़ अब मुम्बई की तरफ़ रुख़ कर रहे हैं जहां पर गुर्दा और ऑपरेशन के तमाम इख़राजात दो लाख रुपए के क़रीब सुने जा रहे हैं।

गुर्दों की पैवंदकारी के बअद ज़ियाबेत्स की बीमारी हो जाती है। और वह असबाब जिन्होंने एक गुर्दा ख़राब किया वह नए गुर्दे को भी आहिस्ता–आहिस्ता अपनी लपेट में ले लेते हैं। कुछ अरसे बअद नया गुर्दा भी ख़राब हो कर तब्दीली

का मोहताज हो जाता है। हैरत की बात है कि हमारे फ़ाज़िल माहिरीने इम्राज़े बोल इस मसले के हल की जानिब ख़ुद किसी क़दम को उठाने से डरते हैं। उनके ख़याल में बीमारियों का इलाज दरयाफ़्त करने की ज़िम्मेदारी अमरीकह पर आयद होती है। और इनका वजूद सिर्फ़ उनकी सुन्नत पर अमल करने के लिए है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गुर्दों की ख़राबियों के लिए अगर्चे मुतअद्दिद नुस्ख़े अता फ़रमाए लेकिन एक जगह पर वह NEPHRITIS के इलाज के बारे में बराहे रास्त इरशाद फ़रमाते हैं

हज़रत आएशह सिद्दीक़ा रज़ि. रिवायत फ़रमाती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ان الخاصرة عرق الكلية. اذا تحرک اذی صاحبها فداووها بالماء المحرق والعسل...... (ابوداؤد)

(गुर्दे इन्सान की जान है। अगर इसमें सोज़िश पैदा हो जाए तो मरीज़ को शदीद तकलीफ़ होती है। इसका इलाज जले हुए पानी और शहद से किया जाए।

माउलमहरक़ का लफ़्ज़ी तर्जुमा उबला हुआ पानी या आबे मुक़त्तर हो सकता है। मुहद्दिसीन में से कुछ बुज़ुर्ग इस पानी की जगह बारिश का पानी तज्वीज़ करते हैं। पानी की कीम्यावी हैइयत को सामने रखें तो बारिश का पानी ही ज़रूरत पर पूरा उतरता है। क्यूंकि यह सहीह मअनों में साफ़ तरीन आबे मुक़त्तर है।

गूजर्नवाला से एक नौउम्र लड़का गुर्दों की ख़राबी लेकर आया। इसके पेट में पानी था। चेहरा सूजा हुआ, टाँगें फूली हुई और पेशाब बराए नाम, इस बच्चे को पहले तो शहद से राहेरास्त पर लाने की कोशिश की गई। लेकिन बात न बनी। अलबत्ता कमज़ोरी जाती रही। फिर दूध और ऊंटनी का पेशाब दिया गया। वरम चंद दिनों में ख़त्म हो गया। इस बात को आज सात साल हो गए हैं वह एक तंदरुस्त नौजवान की शक्ल इख़्तियार कर गया है। लेकिन महज़ अपने शौक़ से ऊंटनी का दूध हफ़्ते में एक मर्तबा ज़रूर पीता है। यह नौजवान हमारे इब्तिदाई मरीज़ों में से था और साबित क़दमी से अब तक राब्ता रखे हुए है। और इसका ख़ानदान चार लाख वाला ऑपरेशन करवाने के क़ाबिल न था।

दिल की बीमारियां:

जब दिल के अज़लात अपने वाल्व की खराबी और दूसरे असबाब की वजह से पूरी तरह धड़क न सकें तो जिस्म के दूर उफ़तादह हिस्सों में ख़ून का ठहराओ वाक़ेअ हो जाता है। जिससे पहले टांगों पर और फिर जिस्म के दूसरे हिस्सों पर वरम आता है। पेट में पानी भर जाता है और मरीज़ के लिए कमर के बल सोना मुम्किन नहीं रहता। हस्पतालों में ऐस मरीज़ों के बिस्तरों पर एक अजीब सा मेज़ रखा होता है जिसमें मरीज़ के लिए सर रखने की जगह होती है और वह रात को अपना सर सामने की तरफ़ मेज़ पर टिका कर सोता है। ऐसे

मरीजों की खुराक सिर्फ़ दूध होती है, पेशाब लाने के लिए मदरबोल टीके लगते हैं और पड़े–पड़े जिस्म के आज़ा नाकारह हो कर ख़त्म हो जाते हैं।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसललम ने दिल के दौरे के लिए खजूर और इसकी गुठलियें का सफ़ूफ़ न सिर्फ़ तज्वीज़ फ़रमाया है। बल्कि एक मरीज़ का इलाज फ़रमाकर यह दिखाया है कि ऐसा किया जात सकता है। उन्होने इम्राज़े क़ल्ब के लिए सुफरजल, जौ का दलिया, हिंदबाअद कलोंजी, क़िस्ते शीरीं और शहद जैसी मुफ़र्रह और मुक़व्वी क़ल्ब अदविया का पता भी बताया है अगर किसी का दिल फिर भी काम न करे या वह इन पर ईमान रख कर इस्तेअमाल करने की बजाए टीकों पर भरोसा करना पसंद करे तो फिर जान इसकी अपनी है जैसे जी चाहे ख़त्म कर ले।

जब दिल काम छोड़ जाए इसकी धड़कन में इतनी ताक़त न रहे कि वह ख़ून को गर्दिश दे सके। गर्दन में ख़ून की रगें उभर आएं और जिस्म में पानी भर जाए तो नीचे दिए हुए नुस्ख़े पर अमल करें।

लाइलाज बीमारियों का एक मुबारक इलाज:

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि॰ से रिवायत है:

قدم رهط عرينة وعكل على النبى صلى الله عليه وسلم فاجتوو المدينة. فشكوا ذالك الى النبى صلى الله عليه وسلم فقال: لوخرجتم الىٰ ابل الصدقة فشربتم من ابو الها و البانها. ففعلوا. فلما صحوا عمدوا الى الرعاة. فقتلوهم واستاقو الابل. رحار بو الله ورسوله. فبعث رسول الله صلى الله عليه وسلم فى اثارهم. فاخذو فقطع ايديهم وارجلهم وسمل اعينهم والقاهم فى الشمس حتىٰ ماتوا......

(بخاری، ابوداؤد، نسائی، ترمذی، مسنداحمد)

(एक दूसरी रिवायत में पहला फ़िक़रह ज़्यादह वज़ाहत के साथ यूं बयान हुआ।)

ان رهط من عرينة قدموا علىٰ رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالو انا اجتوينا المدينة فعظمت بطوننا...... الخ

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अरीना से कुछ लोग आकर मअ़रूज़ हुए कि हमारे पेट और जिस्म मरीने की आबो हवा की वजह से फूल गए हैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम वहां चले जाओ जहां हमारे सदक़े के ऊंट रखे जाते हैं और वहां पर उनका दूध और पेशाब पियो तो अच्छा हो। वह वहां चले गए और चंद रोज़ में सेहत मंद हो गए। उन लोगों ने उनके चरवाहों को क़त्ल किया और ऊंट चोरी करके भाग गए और अल्लाह और उसके रसूल के साथ जंग की इब्तिदा कर डाली।

रसूल सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने उनके पीछे हंगामी दस्ता रवाना फ़रमाया जिसने उनको गिरफ़तार करके आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अदालत में पेश किया। सरक़ा बिलजब्र और क़त्ल के जराइम में उनके हाथ और पांव काट दिए गए और उनकी आंखों में

सलाइयां फेर कर उनको धूप में मरने के लिए फैंक दिया गया।)

दूसरी अहादीस में उनके पेट फूलने, टांगों और चहरे के वरम का ज़िक्र भी मिलता है। उन लोगों ने पेशावर मरीज़ो की तरह झूठ से इब्तिदा की कि मदीना में आकर जिस्म सूज गए। हालांकि यह बीमारी चंद रोज़ में पैदा नहीं होती। बल्कि इसके अस्बाब मुख़्तलिफ़ हैं। दिल और गुर्दों की बीमारियों के अलावा जिगर की मुसलसल ख़राबी, शराब नोशी की वजह से जिगर का इनहतात, ग़िज़ा में लहमियात की मुसलसल कमी, और इस्करवी से भी जिस्म वरम आ सकता है। या पेट मे पानी भर सकता है।

अगर यह मरीज़ आज के किसी मआलिज के पास आते तो वह उनके दर्जनों टेस्ट करके पहले मुतअध्यन करता कि ख़राबी कौन से हिस्से में है। यह अलाहिदा बात है कि ख़राबी को मुअय्यन करने के बअद भी इसके पास इसकी शाफ़ी दवा आज भी नहीं है। लेकिन वह मरने से पहले मरीज को कम–अज़–कम यह ख़बर सुना देता कि उसकी मौत कौन सी बीमारी से वाक़ेअ होने वाली है।

इमाम ज़हबी रह० ने इस बीमारी पर तबसिरह करते हुए आज से आठ सौ साल पहले लिखा था कि:

''नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बीमारी का ऐसा शाफ़ई इलाज बताया जिसका तबीबों के पास और कोई इलाज मौजूद नहीं''

इनका यह मुशाहिदा उस रोज़ के लिए नहीं बल्कि आज के लिए भी दुरुस्त है इस इलाज की माहियत पर ग़ौर करें तो इसमें तमाम असबाब का मुकम्मल और जामेअ इलाज मौजूद है। वरम अगर गुर्दों की ख़राबी की वजह से हो तो इसमें चिकनाई और नमकियात देना दुरुस्त नहीं। वरम अगर लहमियात की कमी से हो तो लहमियात दरकार है। लेकिन चिकनाई कम हो तो दिल की बीमारियों में चिकनाई देना दुरुस्त नहीं। ऊंटनी के दूध में चिकनाई की मिक़दार सबसे कम होती है। इसलिए यह दूध बड़े इत्मीनान से इन तीनों बीमारियों में दिया जा सकता है।

पेशाब में यूरिया होता है। यूरिया खाद होने के साथ–साथ पेशाब आवर मदरबोल भी है। चूंकि यह जिस्म का हिस्सह भी है इसलिए यूरिया की मौजूदगी किसी हिस्सासियत का बाइस नहीं होती और यह खुल कर पेशाब लाता है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस नुस्ख़े का सबसे बड़ा कमाल यह है कि यह पेट में पानी पड़ने के हर सबब का मुकम्मल और शाफ़ई इलाज है।

इब्तिदाई अय्याम में हमें यह डर रहता है कि जिन मरीज़ों में गुर्दों की ख़राबी के बाइस यूरिया की मिक़दार पहले ही ज़्यादह है अगर इनको हम बाहर से ऊंट के पेशाब की सूरत में मज़ीद यूरिया दे देंगे तो उनकी मौत जल्द वाक़ेअ हो जाए गी, लेकिन तजुर्बात से साबित हुआ कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी भी नुस्ख़े से कोई ख़राबी पैदा नहीं हो सकती और अगर फ़न्नी तोर पर ऐसा कोई अंदेशह मौजूद हो तो वह बेइमाने हैं क्यूंकि ऊंटनी के

पेशाब में यूरिया के अलावा और भी ऐसे कई अनासिर हैं जिनकी तफ़सील हम नहीं जानते लेकिन वह जिस्मे में जमा रहने वाले ग़ैर मतलूबह पानी का इख़राज कर देते हैं"

दूध के बारे में जदीद मुशाहिदातः

तिब्बे जदीद में दूध का सबसे अहम और बड़ा इस्तेमाल ज़हरों के इलाज में है। अगर किसी ने कोई सी ज़हर भी खाई हो तो उसके मक़ामी असरात को ज़ाइल करने के लिए सबसे पहली और मुफ़ीद दवाई दूध है। मसलन संखिया और दूसरी तेज़ ज़हरों की वजह से मेअ़दे की झिल्लियां जल जाती है। जिससे कै, इस्हाल और ख़ून आने लगते हैं। दूध देने से इन चीज़ों से बचा जा सकता है क्यूंकि यह सुकून देता और जलन को दूर करता है।

दिल, गुर्दा और जिगर के मरीज़ों को जिस्म पर वरम आने के बअद ग़िज़ाई पाबंदियां लगती हैं। इन बीमारियों में दूध ही ऐसी ग़िज़ा है जो उनको पूरे इत्मीनान से दी जा सकती है। ज़ियाबेत्स के मरीज़ों की शकर में जब इलाज के बावजूद कमी नहीं आती तो एक तरीक़ा यह है कि मरीज़ को कुछ दिनों के लिए खाने पीने के लिए दूध के अलावा और कुछ न दिया जाए। चंद दिनों में ख़ून में शकर की मिक़दार कम होने लगती है। जब वह एतिदाल पर आ जाए तो फिर आहिस्ता–आहिस्ता ग़िज़ा में एक–एक चीज़ शामिल करके मुशाहिदात के साथ पता चला लिया जाता है कि कौन–कौन सी चीज़ें खाने से इस मरीज़ की शकर कंट्रोल में रहेगी।

हामलह औरतों और बढ़ने वाले बच्चों की हड्डियों की तअमीर के लिए कैल्शियम और फ़ास्फ़ोरस की ज़रूरत होती है। यह दोनों चीज़ें दूध से मिल जाती हैं। अगर कोई औरत अयामे हमल में रोज़ानह कम–अज़–कम निस्फ़ लीटर दूध नहीं पीतीं तो इसकी अपनी हड्डियां टेढ़ी हो जाएंगी।

पुरानी सोज़िश के इलाज के लिए दूध के टीके लगाए जाते थे। दूध उबाल कर इसको छान कर बालाई निकालने के बअद कम मिक़दार से शुरू करके यह टीके एक प्रोग्राम से लगते थे। और मरीज़ के जिस्म से पुरानी बीमारियां जाती रहती थीं। फिर ऐसे टीके भी मिलते हैं जिनमें दूध के साथ आयोडीन भी मुरक्कब की गई है। यह टीके पुरानी सोज़िश के साथ जोड़ों की पुरानी दर्दों में बड़े मुफ़ीद हैं।

दूध में वह तमाम अज्ज़ा मौजूद हैं जिनकी इनसानी जिस्म को ज़रूरत होती है। अगर्चे कैमिस्ट्री के बयान में इसके अहम अज्ज़ा का तज़किरा किया जा चुका है। लेकिन वह किसी तौर मुकम्मल नहीं। लोगों ने इसमें मौजूद अशया की तअदाद पर किताबें लिखी हैं कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो दूध देने वाले जानवर और इसके दूध पर असर अंदाज़ होती हैं।

आबो हवाः

एक ही नस्ल के जानवर हालात के मुताबिक़ अपने दूध की माहियत तब्दील

कर देते हैं। मसलन पंजाब की गाए जब कशमीर जाती हैं तो उनके दूध की मिक़दार कम हो जाती है। विलाएती नस्ल की जरसी गाएं एक डेरी में 3 फ़ीसदी मक्खन देती हैं तो दूसरी परवरिश गाह में इसी नस्ल की दूसरी गाएं 5 फ़ीसदी मक्खन दे रही हैं। हिसार के बैल और गाएं क़दआवर होती हैं उनका दूध ज़्यादह होता है मगर चिकनाई कम रहती है।

औक़ात:

रात आराम करने के बअद जानवर का सुबह का दूध निकाला जाता है तो इसमें चिकनाई शाम के दूध की निस्बत ज़्यादह होती है। जो दूध शुरू में निकलता है बाद के दूध से चिकनाई कम से कम होता है।

अय्यामे रज़ाअत:

पैदाइश के बअद जब प्यूसी ख़त्म हो जाती है तब भी दो माह तक चिकनाई की मिक़दार मामूल से ज़्यादा होती है। जवान गाए में मक्खन ज़्यादा होता है। जब जानवर को दोबारह हमल होता है तो दूध की मिक़दार कम होने लगती है। जबकि लहमियात की मिक़दार में इज़ाफ़ह ज़्यादह होता है। चिक्नाई भी बढ़ती है, मगर कम।

ख़ुराक:

जब कोई जानवर खुली हवा और सूरज की रौशनी में घूम फिर कर चरता है तो इसका दूध मिक़दार में ज़्यादह, मेअ़यार में आला होता है। इसी जानवर को अगर अस्तंबल में रख कर अच्छी ख़ुराक दी जाए तो दूध इतना अच्छा न होगा। ग़िज़ा में सब्ज़ चारह और चिक्नाई दूध की मिक़दार और मेअ़यार बढ़ाते हैं।

चूंकि एक ही जानवर का दूध हालात, ख़ुराक, मौसम के मुताबिक़ बदलता रहता है। इसलिए अगर किसी बच्चे की परवरिश ऐसे दूध पर करनी हो तो इसकी बेहतरीन तरकीब यह है कि उसे किसी जानवर के बजाए कई जानवरों का दूध मिलाकर इस पर पाला जाए जिससे दूध की क्वालिटी यकसां रहे गी।

नोज़ाएदह बच्चों का दूध:

कुरआन मजीद ने बच्चे के लिए दो साल तक मां का दूध मुक़र्रर फ़रमाया।

तौरेत मुक़द्दस में दूध देने और छुड़ाने का तज़किरा मिलता है जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसलम अयामे तफ़ूलियत में थे तो वालदह के दूध की कमी दूसरी ख़वातीन के दूध से पूरी होती थी जब वह परवरिश के लिए मक्का मुकर्रमा से बाहर भेजे गए तो हलीमह रज़ि॰ सअ़दिया इनको दूध पिलाती थीं। उनके घर में गाएं बकरियां और ऊंट मौजूद थे लेकिन एक नौज़ाएदा बच्चे या तिफ़्ल को ग़ैर फ़ितरी दूध पिलाने का ख़याल तक न आया। हर मां के दूध में ऐसे अज्ज़ा होते हैं जो उसके बच्चे को बीमारियों से महफ़ूज़ रखते हैं। मसलन मां को अगर ख़सरा निकल चुका हो या उसे इससे बचाओ का टीका लगा हो तो उस मां का बच्चा छः माह की उम्र तक ख़सरा से महफ़ूज़ रहेगा। यह बच्चा अगर गाए या डब्बे के दूध पर पल रहा हो तो मां से मारूसी कुव्वते मुदाफ़िअत

तीन माह से ज़्यादह न होगी।

गाए के दूध में भी बीमारियों से बचाओ के अनासिर शामिल हैं। इसके दूध में पाई जाने वाली IGI BODIES सिर्फ़ बछड़े के लिए कारामद हैं। अगर इंसान का बच्चा इस दूध को पियेगा तो गाए के ANTIBODIES इसको किसी भी बीमारी से महफ़ूज़ करने में मददगार न होंगी। इसलिए कि इंसान के बच्चे को कुव्वते मुदाफ़िअत सिर्फ़ इनसे मयस्सर आ सकती है जो इसकी मां के दूध में पाई जाती हैं। एक माहिरे इम्राज़े इतफ़ाल ने यौरप की गाए और मां के दूध का दिल्चस्प तक़ाबुली जाएज़ा यूं पेश किया है।

	लहमियति	चिकनाई	मिठास फ़ीसदी
योरपी मां का दूध	1.5	3.5	6.5
योरपी गाए का दूध	3.0	3.5	4.5

गाए के दूध को मां के दूध के बराबर लाने के लिए योरप के डाक्टर इस में पानी के साथ थोड़ी सी चीनी और मिठास मिलाकर इसे मां के दूध के बराबर लाने की कोशिश करते आए हैं। कीम्यावी तौर पर दूध क़रीब लाए जा सकते हैं। लेकिन इनमें विटामिन और नम्कियात का तनासुब पैदा न होगा और मां के दूध के दीगर फ़वाइद मयस्सर न आ सकेंगे।

आलमी इदारए सेहत ने दुनिया भर के मुल्कों में बच्चों को मां का दूध पिलाने की तलक़ीन के लिए एक ख़ुसूसी प्रोग्राम शुरू किया जिससे यह पता चलाया गया कि जो बच्चे मां का दूध पीते हैं उनके मुक़ाबले में बोतल का दूध पीने वाले बच्चों की शरह अमवात तीन गुना ज़्यादा है। दूध में मिलाने वाला पानी, बोतल, चम्चा, चूसनी को जरासीम से पास रखना एक मुश्किल काम है इसलिए बोतल से दूध पीने वाले बच्चों को जहां दूध की तब्दीली से मुश्किलात का सामना करना होता है वहां बोतल के ज़रिए भी मुतअद्दिद बीमारियां लाहिक़ हो सकती हैं। बच्चे की अपनी सेहत से क़ते नज़र दूध पिलाने वाली औरतों के यहां बच्चों की पैदाइश के दरमियान एक क़ुदरती वक़फ़ा पैदह होता है। जबकि बोतल से दूध पिलाने वाली औरतों को अगली उम्मीदवारी ज़्यादा जल्द होने का इम्कान होगा।

जिन औरतों ने बच्चों को दूध नहीं पिलाया उनको छाती का सरतान दूसरी औरतों की निसबत ज़्यादह होता है। बच्चे को दूध पिलाने के दौरान रहम में ऐसी लहरें उठती हैं जिनसे वह हमल वाली कैफ़ियत से निकल कर जल्द तंदरुस्त हो जाता है। बच्चों को जब मां अपना दूध न देना चाहे तो इसके अवज़ जो सूरतें इख़्तियार की जाती हैं

1. **भैंस का दूधः** इसमें चिकनाई की मिक़दार 5 से 8 फ़ीसदी तक होती है। दूध को नौमौलूद के हाज़मे के मुताबिक़ बनाने के लिए इसे इलाएची और सौंफ डाल कर उबालने के बअद एक हिस्सा दूध में दो हिस्से पानी मिलाया जाता है। इससे दूध की ग़िज़ाइयत कम हो जाती है।
2. गाए के दूध में पानी बराबर का मिलाते हैं और ग़िज़ाइयत को कम कर लिया जाता है।
3. **डब्बे का दूधः** अक्सर इदारे ख़ालिस गाए का दूध ख़ुश्क करके फ़रोख़्त

करते हैं जबकि अपने दूध को मक़बूल बनाने के लिए इसमें गिज़ाइ अनासिर का इज़ाफ़ह किया जाता है। चूंकि कुदरती दूध में फ़ौलाद नहीं होता इसलिए अक्सर इदारे फ़ौलाद के मुरक्कबात विटामिन ए और डी शामिल कर देते हैं।

कमज़ोर बच्चों के लिए: इस्हाल के दौरान या कमज़ोर बच्चों के लिए ऐसे नुसख़े तैयार किए जाते हैं। जिनसे दूध को जल्द हज़्म होने के क़ाबिल बनाया जाता है।

एक तर्कीब कम चिकनाई वाला दूध है जिसमें दीगर अनासिर पूरे होते हैं दूसरी तर्कीब में दूध को फाड़ कर उसे ख़ुश्क किया जाता है। इसे MILK WHEY कहते हैं। पेट में जाकर दूध की दही के मानिंद फुट्टियां बन जाती हैं। यह हाज़्मे का पहला मरहलह है। इस तरह का नीम हज़्म शुदा दूध PEPTONISED के नाम से मिलता है। जहां तक दूध इसके अज्ज़ा और फ़वाइद का तअल्लुक़ है। डब्बे के दूध में हर क़िस्म की चीज़ मिल सकती है बल्कि गाए भैंस के दूध से बेहतर होता है।

4. लिफ़ाफ़ों का दूध: बाज़ार में आम मिलने वाला लिफ़ाफ़ों का दूध बच्चों के लिए मुफ़ीद रहता है। क्यूंकि इसकी चिकनाई तोड़ कर दूध में बिखेर दी गई है। इसलिए हज़्म करना आसान हो जाता।

मसूर............अदस

LENTILS

LENS ESCULENTS

दुनिया के हर मुल्क में दाल खाई जाती है। पाकिस्तान में ज़्यादह तौर पर अरहर, चना, माश, मूंग, मोठ और मसूर की दालें पकाई जाती हैं। यह सब दालें बुनियादी तौर पर मुख़्तलिफ़ पौधों के बीज हैं। चूंकि हर बीज एक नए पौदे का पेशरौ होता है। इसलिए जड़ें ज़मीन में नस्ब होने तक के अरसे के लिए ख़ुराक का ज़ख़ीरा इसमें मौजूद होता है। बीज को मुर्ग़ी के अंडे से तशबीह दी जा सकती है मुर्ग़ी का बच्चा जब अंडे के अंदर तख़लीक़ी मराहिल से गुज़रता है तो इसके लिए ग़िज़ा अंडे के अंदर मौजूद होती है। इंसानों ने इस ग़िज़ा को अपनी तवानाई के लिए काम में लाने के लिए अंडे खाने शुरू किए। बिल्कुल इसी तरह बीज के अंदर की ग़िज़ाइयत से इस्तिफ़ादह करने के लिए इंसानों ने बीज पका कर खाने शुरू कर दिए। हर बीज क़ाबिले ख़ुराक नहीं, जैसे कि जमाल गोटा, कस्टर ऑयल, लेकिन अक्सर इतनी सख़्त होती है कि इसे पकाए बग़ैर खाना मुम्किन नहीं। कुछ मअमूली पकाने से भी क़ाबिले ख़ुराक हो जाते हैं। जैसे चना, मूंगफली, चिलग़ोज़े और कुछ कच्चे भी खाए जाते हैं। जैसे ख़रबूज़ा, तरबूज़, खीरा, कद्दू वग़ैरह।

जिस तरह हर बीज के फ़वाइद और सख़्ती मुख़्तलिफ़ होते हैं इसी तरह

इनको नर्म करने का अरसह भी मुख़्तलिफ़ होता है। कुछ दालें जल्द पक जाती हैं और कुछ को पकाने में ज़्यादह वक़्त लगता है। दालों को जल्द गलाने का एक तरीक़ा यह है कि इन्हें पानी में भिगोने के बअद अच्छी तरह मला जाए। इस अमल से इनके ऊपर का छिलका उतर जाता है। बीज नर्म हो जाते हैं और बाद में पकाना निस्बतन आसान हो जाता है। पकाने के लिए छिल्का उतारना ज़रूरी होता है क्यूंकि बअ़ज छिलके खाए नहीं जा सकते। जैसे गंदम, चावल और जौ का छिलका। लेकिन दालों के कुछ छिलके ऐसे हैं जिनको आसानी से चबाया और खाया जा सकता है। जैसे के चने और मसूर का छिलका। बअ़ज़ लोग छिलके ज़रूर उतारते हैं और बअ़ज़ इनके समैत खाना पसंद करते हैं। छिलका ख़्वाह किसी भी बीज का हो, सहते इंसानी के लिए मुफ़ीद है, बीज और छिलके दरमियान मुफ़ीद कीम्यावी अनासिर और विटामिन बी की एक तह होती है। छिलका उतारने, बीज को रगड़ कर धोने और फिर मशीनों के साथ चमकाने के अमल में विटामिन बी ज़ाया कर दी जाती है।

छिलका बज़ाते ख़ुद हज़्म नहीं होता लेकिन वह पेट में जाकर ऐसी सूरते हाल पैदा करता है। जिससे इजाबत का अमल आसान हो जाता है। यही वह अहम वजह है जिसकी बिना पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आटे से चौकर निकालना मनअ फ़रमाया। बल्कि जब किसी ने बड़ी मुहब्बत के साथ उनके लिए बारीक आटे के फुलके पकाने शुरू किए तो उस ख़ातून को हिदायत फ़रमाई कि इसमें से छान कर जो कुछ निकाला गया है उसे दोबारह शामिल करके रोटी पकाई जाए।

इंसानी ख़ुराक के लिए काश्त की जाने वाली नबातात में मसूर क़दीम तरीन चीज़ है। तौरेत मुक़द्दस में इसका ज़िक्र इन अय्याम के वाक़िआत में मिलता है जब इंसानों को ज़मीन पर पहली मर्तबह आबाद किया गया था। और उनकी नस्ल अभी पूरी तरह फैली भी न थी।

सहत मंद रहने, जिस्म में बीमारियों का मुक़ाबला करने और जिस्म की अपनी टूट फूट की मरम्मत के लिए हमें प्रोटीन और लहमियात की ज़रूरत होती है।

लहमियात का क़ाबिले एतिमाद ज़रिया मछली, गोश्त और अंडे हैं। लेकिन इनकी क़ीमत ज़्यादह होती है और इन्हें बाक़ाइदगी से मतलूबह मिक़दार में खाना अब हर किसी के बस की बात नहीं रही। क़ुदरत ने ग़रीब आदमी की सहूलत के लिए मुख़तलिफ़ बीजों में लहमियात का मअ़कूल ज़ख़ीरह जमअ कर दिया है। इनको ग़रीब आदमी के लहमियात का नाम भी दिया गया है।

इलमुल ग़िज़ा में गोश्त से हासिल होने वाली तवानाई के ज़रिए लहमियात को दरजए अव्वल और नबाताती ज़रिये को दरजह सौम की लहमियात क़रार देते हैं। पुराने हिंदुओं की मिसाल हमारे सामने है। यह लोग वैश्नौ बन कर गोश्त अंडा और मछली न खाते थे। और इसके बावजूद लम्बी सहतमंद ज़िंदगी गुज़ारते थे। दाल खाने से बराबर इनको जिस्मानी ज़रूरयात मयस्सर आ जाती थीं। अगर्चे इनका मेअ़यार गोश्त के बराबर नहीं होता लेकिन गुज़ारा ठीक-ठाक

होता रहा। अलबत्तह जुरूरत पूरी करने के लिए इनकी ज़्यादह मिक़दार दरकार होती थी। इसी गिज़ाइ अहमियत का इज़हार कुरआन मजीद ने बनी इस्राईल के मुतालबे पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बाने मुबारका से किया।

हज़रत मूसा अलहिस्सलाम की क़ौम को आसमान से हर एक गिज़ा का एक बेहतरीन इंतिख़ाब "मन्नो सल्वा" की सूरत में मुहैय्या किया जा रहा था। उन्होंने अपने नबी से कहा कि वह ख़ुदा से कहे कि उनको वह चीज़ें दी जाएं जो ज़मीन से पैदा होती हैं। उनके मतलूबात में खीरा, लहसन, प्याज़ और दाल मसूर थे। इस पर उनको एक ठोस हक़ीक़त बताई गई।

قال اتستبدلون الّذی هو ادنیٰ بالّذی هو خیرٌ. (البقرہ-۶۱)

(उन्होंने कहा कि तुम एक अच्छी और उम्दह चीज़ के अवज़ अदना चीज़ तलब कर रहे हो।)

इस अम्र में कोई शक नहीं कि गिज़ाई एतिबार से कोई भी दाल, गोश्त का मुताबादिल नहीं हो सकती। और अगर गोश्त मयस्सर न हो या इसे ख़रीदने की इस्तितात न हो तो दाल सबसे बेहतर चीज़ है।

गिज़ाइयात के तक़ाबुली जाएज़े के मुताबिक़ दालों में सबसे अच्छी दाल मसूर है और इसे दुनिया के हर मुल्क में किसी न किसी सूरत में पसंद किया जाता है। योरप, एशिया और शिमाली अफ़रीक़ा में मसूर की दाल को बड़ी मक़बूलियत हासिल है और इसी ग़र्ज़ के लिए कसरत से काश्त की जाती है। क्यूंकि यह लहमियात, फ़ास्फ़ोरस, फ़ौलाद और विटामिन बी का एक अर्ज़ा ज़रियह है। धात के ज़माने के नवादिरात में स्विटज़रलैंड की झील बाईल, सैंट पीटर जज़ीरे से मसूर के दाने मयस्सर आए हैं। अफ़रीक़ा और मश्रिक़े वुस्ता से मसूर का शौक़ जर्मनी हालैंड और फ्रांस में भी दाख़िल हो गया है। इन इलाक़ों में दाल का शोरबह या दूसरे शोरबे में दाल एक मक़बूल इज़ाफ़ह है। दाल को भिगोकर तलने के दौरान नमक, मिर्च और खटाई लगा कर लिफ़ाफ़ों में बंद करके सफ़री गिज़ा के तौर पर इस्तेअमाल किया जाता है।

मसूर का पौधा डेढ़ फ़ुट तक बुलंद होता है। इसकी कई एक ऊपर को उठती हुई शाख़ें होती हैं जिनको ज़र्दी माइल नीले फूल लगते हैं। हर शाख़ के साथ जून-जोलाई में चार पांच फूल पत्तों के दर्मियान से नमूदार होते हैं, इन फूलों से फलयां बनती हैं। फल की लम्बाई एक इंच के क़रीब और हर फली में दो बीज होते हैं। इनकी शक्ल मुहद्दिब शीशे की मानिंद होती है। जिसकी बिना पर इसका नबाताती नाम LENS, ESCULENTA और अरबी में अदस है जिसके मअ़ने बड़ा करने वाला शीशा है। काश्तकारों ने इस दाल की मुतअद्दिद क़िस्में पैदा की है। जिनमें फूलों की रंगत और दानों की तअदाद हालात और कोशिश के मुताबिक़ बदल सकती है। इनसे हासिल होने वाली दाल सुर्ख़ भूरे रंगों के दरमियान हो सकती है। मूसर की दाल की जंगली क़िस्म भी मिलती है जो ख़ुदरौ है। इसका दाना छोटा और गोल होता है।

इरशादे रब्बानी:

واذ قلتم يا موسىٰ لن نصبر علىٰ طعام واحد فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الارض من بقلها وقثائها وفومها وعدسها وبصلها قال اتستبدلون الذى هو ادنىٰ بالذى هو خير. اهبطوا مصراً فانّ لكم مّاسالتم (البقره:٦١)

(और जब तुमने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि हम एक खाना खाते--खाते उक्ता गए हैं। हमारे लिए अपने रब को पुकारो कि वह हमारे लिए वह चीज़ें लाए जो ज़मीन से पैदा होती हैं जैसे कि साग, खीरा, लहसन, मसूर की दाल, प्याज़। उन्होंने कहा कि तुम लोग एक उम्दह चीज़ को छोड़ कर घटिया के तलबगार हो रहे हो। इनको बताया गया कि अच्छा अब तुम मिस्र चले जाओ और वहां पर तुमको तुम्हारी मतलूबात मिल जाएंगी।)

कुतुबे मुक़द्दस:

......और याअक़ूब ने दाल पकाई और ईसू जंगल से आया और बेदम हो रहा था और ईसू ने याअक़ूब से कहा कि यह जो लाल--लाल है, मुझे खिला दे। क्यूंकि मैं बे--दम हो रहा हूं।

(पैदाइश. 25:29:30)

इसी सिलसिले में दाल पकाने और खाने की मज़ीद तफ़सील आगे यूं मज़्कूर है।

......तब याअक़ूब ने ईसू को रोटी और मसूर की दाल दी। वह खा--पी कर उठा और चला गया। यूं ईसू ने अपने पहलू ठही के हक़ को नाचीज़ जाना।

(पैदाइश: 25:34)

इसी बाब में इरशाद फ़रमाया गया कि इज़हाक़ ईसू को प्यार करता था क्यूंकि वह इसके शिकार का गोश्त खाया करता था। इसका मतलूब यह हुआ कि गोश्त के होने के बावजूद ईसू ने मसूर की दाल को पसंद किया।

......पलंग और चारपाइयों और बासन और मिट्टी के बर्तन और गेहूं और जौ और आटा और भुना हुआ अनाज और लोबिये की फलियां और मूसर और भुना हुआ चीना और शहद और मक्खन और भेड़--बकरियां और गाए के दूध का पनीर, दाऊद और इसके साथ के लोगों के खाने के लिए लाए......

(सिमोइल--17:28:29)

दाऊद की मेज़बानी के लिए उन लोगों ने अशयाए ख़ुर्दनी में जो बेहतरीन था उनके आगे पेश किया। उस फ़हरिस्त में जहां उम्दह क़िस्म के गोश्त, शहद और मक्खन हैं वहां मसूर की दाल भी है।

......अगर कोई पाक गोश्त को अपने लिबास के दामन में लिए जाता हो, और उसका दामन रोटी या दाल या तेल या किसी तरह के खाने की चीज़ को छू जाए तो क्या वह चीज़ पाक हो जाएगी? काहिनों ने जवाब दिया हरगिज़ नहीं......

(हज्जी 2:12)

अहादीसे नबवी सल्ल०

हज़रत वासिला रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

عليكم بالقرع فانّه يزيد فى الدماغ...... وعليكم بالعدس فانه قدس على لسان سبعين نبيًا (طبرانی)

(तुम्हारे लिए कद्दू मौजूद है। यह दिमाग़ की सलाहियत को बढ़ाता है। और तुम्हारे लिए मसूर की दाल मौजूद है जिसकी तअरीफ़ कम–अज़–कम सत्तर अंबिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़बाने मुबारक पर रही।)

हज़रत आएशह सिद्दीक़ा रज़ि० से मनक़ूल है।

من اكل القرع بالعدس دق قلبه وزيدنى جماعه وان اخذ بالرّمان الى مرض والسماق نفع الصراء (ابن القیم)

(जिस किसी ने कद्दू के साथ दाल मसूर खाई उसका दिल तंदरुस्त हुआ उसकी कुव्वतं मर्दमी में इज़ाफ़ह हुआ और अगर उसके साथ मीठे अनार और सिमाक़ को इस्तेअमाल करे तो सुफ़राट की तलख़ी भी कम हो जाए।)

सिमाक़ एक पत्थर के तौर पर हमको मअलूम है। जबकि ज़हबी इसको नबातात में एक हाज़िम और मुक़व्वी दरख़्त बयान करते हैं।

मुहम्मद अहमद ज़हबी ने रावी का ज़िक्र किए बग़ैर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दाल के बारे में यह रिवायत अपनी शानदार तालीफ़ "अल तिब्बे नबवी" में बयान की है जिसे वह बेहिक़ी से मंसूब करते हैं।

ان اكله يرقق القلب، يدمع العين ويذهب الكبر...... (بیہقی)

(इसका खाना दिल को नर्म और सुबक करता है। आंखों से पानी के इख़राज में इज़ाफ़ह करता है और ग़ुरूर को कम करता है।)

यहां पर "किबर" ज़ूमअने लफ़्ज़ है। इसका मतलब बुढ़ापा भी हो सकता है यानी बुढ़ापे के मसाइल को कम करने में मुफ़ीद है। किबरो ग़ुरूर के माअने में भी मुस्तैअमिल है। यअनी दाल खाने से चूंकि इमारात का ग़ुरूर टूटता है। इसलिए मसूर खाना ग़ुरूर के सर को नीचा करता है।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदातः

अहादीस में मसूर की दाल का ज़िक्र मुतअद्दिद मक़ामात पर मिलता है बल्कि तौरेत में भी मज़्कूर है। लेकिन मुहद्दिसीन किराम और तिब्बे नबवी पर लिखने वालों ने इस पर कोई तब्सिरा नहीं किया। हत्ता कि इब्नुल क़य्युम रह० जैसा सक़्क़ा मुहद्दिस अपनी "अल–तिब्बे नबवी" में दाल को यक्सर फ़रामोश कर गया। उनके हम–अस्र मुहम्मद अहमद ज़हबी ने दाल का ज़िक्र किया है। फ़रमाते हैं।

इसमें ठंडक है और जिस्मानी अज़लात में बंदिश पैदा करती है। इसका खाना बसारत को कमज़ोर करता है। मेअ़दे के लिए बेकार तरीन चीज़ है। पेट

में नफ़ख़ पैदा करती है। इसका मतबूख़ा पानी चेचक में लगाना और पिलाना मुफ़ीद है। इसके नुक़सानात से महफ़ूज़ रहने का एक तरीक़ह यह है कि इसे चुक़ंदर के साथ पकाया जाए एक दूसरे तरीक़े में इसमें ज़ैतून का तेल और सिमाक़ के पत्ते शामिल किए जाएं तो मुज़िर नहीं रहती।

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदात:

जंगली मसूर का दानह गोल और छोटा होता है। इसे सिर्फ़ दवा के तौर पर इस्तेअमाल करते हैं। जबकि मज़दूआ अक़साम दो हैं। एक का दानह बड़ा, चपटा और गोल होता है। ख़ाकी रंग का बड़ा और चौड़ा दानह "मल्का मसूर" कहलाता है। इसका ज़ाएक़ा उम्दह है, देर से गलती है। पेट में नफ़ख़ पैदा करती है। दूसरी क़िस्म का दानह छोटा और गोलाई की तरफ़ माइल होता है। इसे "मतलक़ मूसल" भी कहते हैं। बेहतर क़िस्म वह है जिसका दानह सफ़ेदी माइल हो। दाल मसूर छोटे-छोटे सुर्ख़ दाने भी होते हैं जिनको "गोखड़ू" शौख़दाना या "अकरी" कहते हैं। इनको जितना भी पकाएं, गलने में नहीं आते। इसलिए पकाने से पहले घरेलू ख़वातीन इनको चुन कर निकाल देती हैं।

मसूर को दलने के बअद छिल्के उतार कर पकाएं तो क़ब्ज़ पैदा करती है। अगर छिलकों समेत उबाल कर पीला पानी फैंक दें तो क़ब्ज़ कुशा है। बअ़ज़ अतिब्बा ने दाल के छिलके को क़ाबिज़ लिखा है। हालांकि इसमे रद्दी मवाद कसरत से होता है। इसलिए यह क़ब्ज़ कुशा है। बल्कि छिलके और दाने के दरमियान हयातीन बी पाई जाती है। जिसे दैलने और गंदे जोहड़ों के पानी में धोने से ज़ाया कर दिया जाता है।

धुली हुई मसूर पकाने से क़ब्ज़ होती है। छिलकों समेत दाल उबाल कर, इसका पानी फैंक कर दोबारह पानी डाल कर पकाई जाए तब भी क़ाबिज़ है। अगर जोशांदे का पानी पिलाया जाए तो वह मुस्हल है। इसके क़ाबिज़ होने के बारे में अतिब्बा का इख़्तिलाफ़ है। बअ़ज़ कहते हैं कि दाल का छिलका क़ाबिज़ है। बअ़ज़ कहते हैं कि छिलकों के साथ मुलय्यन शिकम है। बलिक दाल को बज़ाते ख़ुद भी क़ाबिज़ बयान किया गया है। असल में यह ख़ुद क़ाबिज़, देर हज़्म और पेट में नफ़ख़ पैदा करने वाली है। सौदादी खून पैदा रकती है ख़ूनको गाढ़ा करती है। लक़्वा, फ़ालिज और रअ़शा में मुफ़ीद है। नज़ला को रफ़ा करने के साथ जिस्म के औराम को उतारती है। इसको मुसलसल खाने से परेशान ख़्वाब आते हैं। ज़हनी घुटन महसूस होती है और सरतान के अलावह खुजली पैदा होने का एहतिमाल रहता है। बवासीर, पेशाब की रुकावट, क़ौलिंज और पेट में पानी पैदा रकती है। कुव्वते बाह को कम करती है। बीनाई को कमज़ोर करती है।

मसूर की दाल फेफड़ों, मेअ़दे और दिमाग़ के लिए ख़ास तौर पर मुज़िर है। जिसकी इस्लाह की एक सूरत यह है कि बकरी का गोश्त या बादाम रौग़न और गाए का घी मिलाकर पकाया जाए।

बअ़ज़ अतिब्बा ने इसको खाते वक़्त सिरकह और प्याज़ को शामिल करना भी

सुलह क़रार दिया है। नज्मुलग़नी ख़ान इसे पकाते वक़्त चुकंदर के पत्ते शामिल कर लेना या बकरी का गोश्त मिलाना इस्लाहे हाल के लिए बेहतर क़रार देते हैं।

मसूर और चुक़ंदर मिलाकर पकाने से जिस्म को उम्दह गिज़ा मिलती है इसमें सअ़तर व पौदीना डालना बेहतर होता है। मसूर को अगर ख़ुश्क मछली के साथ खाया जाए तो बदतरीन गिज़ा है। अतिब्बा ने मसूर की दाल का सिरके में "लिपटा" पकाना बयान किया है। जिसको अदसी या तफ़शील भी कहते हैं। इसके नुक़सानात न होने के बराबर हैं। यह मुक़व्वी और हैज़ आवर है। रुका हुआ पेशाब जारी करती है। बलग़म की वजह से आने वाले बुख़ार को रोकता है।

मसूर की दाल को घी और दूध मिलाकर चेहरे पर मलने से जिल्द चमकदार होती है। इसे गर्म पानी में घोट कर लगाने से पैरों की जलन रफ़अ़ होती है। मसूर की राख में सफ़ेद कथ हम–वज़न मिलाकर ज़ख़्मों के लिए मुफ़ीद छिड़काओ है। मसूर और ख़रबूज़े के बीज दूध में पीस कर बदन पर मलने से जिल्द सेहतमंद नज़र आती है। लीमू के साथ खरल करके लगाने से चहरे पर से छीप के दाग़ मिट जाते हैं।

रौग़ने गुल या अक्लीलुल मुल्क के साथ मिला कर इसका लेप आंख के वरम को ठीक करता है। शहतूत के पत्तों के साथ दाल उबाल कर इस जोशांदे से कुल्लियां करना मुंह आने में मुफ़ीद है। अंडे की सफ़ेदी के साथ इसे खरल करके फुंसियों पर लगाना इनको ख़त्म कर देता है।

जंगली मसूर का रंग सफ़ेदी माइल होता है। दानह छोटा और कड़वा होता है। यह दस्तावर और मदरहैज़ है। इब्ने जुज़्के इसे फ़वाइद और असरात में मसूर की तरह का क़रार देता है।

अतिब्बा क़दीम ने मसूर को ज्यादह नुक़सान देह और मुज़िर-क़सर दिया है। इन बयानात में अक्सर चीज़ें क़ाबिले फ़हम नहीं। जैसे कि मसूर खाने से जिल्द इम्राज़ का पैदा होना और दूसरी तरफ़ इन्हीं बीमारियों के इलाज में इसे लेप करना मुफ़ीद बताया जाता है।

बर्रेसग़ीर हिंद–व–पाक में मसूर की दाल सदियों से खाई जाती है। बल्कि हिंदू मसूर और दूसरी दालों के अलावह कुछ नहीं खाते थे। अगर दाल के यह नुक़सानात दुरुस्त हों तो कोई भी हिंदू तंदरुस्त नज़र न आता। इन मुमालिक में रहने वाले गोश्त ख़ोर भी रोज़ अफ़्ज़ूं गिरानी की वजह से और देहात के रहने वाले अब ज़्यादह तौर पर सब्ज़ियों और दालों पर गुज़ारह करते हैं। इसके बावजूद इनकी उमूमी सेहत अच्छी भली होती है। यह दुरुस्त है कि मुसलसल दाल खाना सेहत मंद अमल नहीं। लेकिन दूसरी चीज़ें शामिल करके इसे क़ाबिले क़ुबूल बनाया जा सकता है।

कीम्यावी साख़्त:

कीम्यावी तज्ज़िये के मुताबिक़ मसूर की दाल में नमी की मिक़दार 8.15 फ़ीसदी अलब्यून 26 फ़ीसदी, निशास्ता 63 फ़ीसदी, नाक़ाबिले हज़्म फूक 5.5

फ़ीसदी के साथ 2.35 फ़ीसदी रेत भी मिलती है।

हकूमत मुम्बई ने अपने ज़रई गज़ट में दाल मसूर साबुत और धुली हुई का मुवाज़ना शाया किया है।

	धुली हुई दाल फ़ीसदी	छिलकों वाली दाल फ़ीसदी
पानी	11.8	11.7
अलब्यून की तरह के मुरक्किबात अज़–क़िस्म LEGUMIN	25.1	24.9
निशास्तह	58.4	56
चिकनाई (तेल)	1.3	1.5
रेशे	1.2	3.6
राख	2.2	2.3

इस तक़ाबुली जाएज़ा में अहम बात नाक़ाबिले हज़्म रेशह है जिसकी मिक़दार धुली हुई दाल में कम हो जाती है। और इस तरह वह क़ाबिज़ हो जाती है।

हकूमत बर्तानिया ने गिज़ाओं के कीम्यावी मेअ्यार की फ़हरिस्त में मसूर की दाल के कीम्यावी अज्ज़ा के तक़ाबुली जाएज़ा में पकी हुई और कच्ची दाल का मुवाज़ना किया है। इस जाएज़े में अनासिर की तर्तीब इस तरह है।

	कच्चीदाल	उबली हुई दाल
MOISTURE	23.8	6.8
FATS	बराए नाम	बराएनाम
CARBOHYDRATES	53-2	18.3
CALORIES	316	1.3
SODIUM	36-0	9.4
POTASSIUM	673	217
CALCIUM	28-6	10.5
MAGNESIUM	76-5	20.7
IRON	7.62	2.20
COPPER	0.58	0.27
PHOSPHORUS	242	80.0
SULPHUR	122	37.3
CHLORINE	63.5	12.7

इस जाएज़े से एक अहम चीज़ यह मअलूम होती है कि दाल में सोडियम की मिक़दार है और दिल के मरीज़ खा सकते हैं। दाल को उबालने से गिज़ाइयत कम हो जाती है।

जदीद मुशाहिदात:

नबाताती दरजह बंदी के लिहाज से मसूर की दाल का तअल्लुक़ इसी ख़ानदान से है जिससे मटर आया है।

करनल चोपड़ह की तहक़ीक़ात के मुताबि मसूर की दाल में जरासीम कुश सलाहियत पाई जाती है। इसलिए इसका खाना और लगाना सोज़िश के लिए मुफ़ीद है। सोज़िश के ख़िलाफ़ इसके असर का बाइस इसमें LEGUMIN की मौजूदगी है। यह लहमियात में से है जो जिस्म को तक़वियत और बीमारियों से मुक़ाबलह करने की इस्तितआअत मुहय्या करते हैं। दाल का शोरबह या गोश्त की यख़नी में दाल का इज़ाफ़ा करने से इसकी उफ़ादियत में इज़ाफ़ह होता है। एक पुराने डाक्टर बुख़ार में मसूर की दाल और मटरों की यख़नी पिलाया करते थे। भारती माहिरीन दाल का शोरबह इस्हाल में मुफ़ीद बताते हैं इस्हाल में अगर आंव ज़्यादा आ रही हो दाल से नुक़सान होगा।

मसूर की दाल जिस्म को ताक़त देती है। यह बुनियादी तौर क़ब्ज़कुशा है। अगर इसे छिलके समेत खाया जाए तो ज़्यादह मुलय्यन है। दाल मसूर की सबसे बड़ी बुराई यह है कि हज़्म के दौरान इससे यूरिक एसिड बन सकता है। इसलिए जोड़ों के दर्द, गुर्दे की तकलीफ़ और पथरी के मरीज़ों को इससे नुक़सान होगा। बअ़ज़ लोग इसे पकाते वक़्त ऐसी चीज़ें शामिल कर देते हैं जिससे यह आसानी से हज़्म हो जाती हैं। इस ग़र्ज़ के लिए लौंग, दारचीनी, ज़ीरह और बड़ी इलाएची को इस्तेअमाल किया जाता है। जाएफ़ल और जावितरी भी डाली जाती है। पाकिस्तान में दाल पकाते वक़्त घी में अदरक, लहसन डाल कर इनको जलाकर इनका बघार डाला जाता है। जबकि भारत में हींग मिलाई जाती है। इन तमाम चीज़ों में अदरक एक क़ाबिले एतिमाद चीज़ है। जिसके बारे में यह यक़ीन किया जा सकता है वह गुर्दों की ख़राबियों को दुरुस्त करने की एहलियत रखता है। बाक़ी तमाम चीज़ें हाज़मे को बेहतर करती हैं और पेट से रियाह को निकालती हैं। लोगों का आम ख़याल है कि दाल खाने से पेट में नफ़ख़ पैदा होती है। मसालहजात चूंकि रियाह को निकालते हैं इसलिए मुफ़ीद होंगे। घी का बघार अगर्चे इसे लज़ीज़ बनाता है मगर इसको मज़ीद सक़ील बना देता है। इसलिए घी की ज़्यादती हाज़मे की ख़राबी में इज़ाफ़ह करेगी।

जब दाल का दानह पोदे पर अभी कच्चा हो तो बअ़ज़ लोग इसे साग की मानिंद पत्तों समेत पकाते हैं। ख़याल किया जाता है कि इस क़िस्म का साग ज़्यादह मुक़व्वी होता है।

फोड़े फुंसियों और गंदे ज़ख़्मों पर दाल का जोशांदह और पलट्स बनाकर लगाई जाती है। बहुत से मुतअफ़्फ़ुन फोड़े इस जोशांदे से ठीक हो जाते हैं। हमने पके हुए मुंह के ज़ख़्मों में दाल के जोशांदे में सिरका मिलाकर अच्छे नताइज देखे हैं।

रैहान............तुल्सी

TULSI - OCIMUM SANCTUM

हिंदू मज़हब में तुल्सी का पौदा मुक़द्दस है। वह इसे बरकत के लिए घरों में लगाते और इसकी पूजा करते हैं। क़ुरआन मजीद ने जन्नत में मिलने वाली बेहतरीन चीज़ों में रैहान को शामिल फ़रमाया है जिससे ज़ाहिर होता है कि यह

लज़ीज़, मुफ़ीद और अपने फ़वाइद में यक्सां है। जैसे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंजीर के बारे में फ़रमाया कि अगर कोई फल जन्नत से ज़मीन पर आ सकता तो यही होता। मगर हमारी बदकिसमती यह है कि हम अभी तक यह तै नहीं कर सके कि रैहान हक़ीक़त में क्या है, भारती हुकूमत की "किताबुल अदविया" में सय्यद सफ़ियुद्दीन ने क़रार दिया है कि रैहान बज़ाते ख़ुद कोई पौदा नहीं बल्कि वह तमाम पौदे जिनके बीज ख़ुश्बू दार और लतीफ़ हैं इनमें से किसी एक को भी रैहान कहा जा सकता है। जैसे कि:

तुख़मे कनूचा– रैहानुश्शुयूख़ SALVIA SPINOSSA

फ़रंजमुश्क OCIMUM BASILICUM (सफ़ियुद्दीन ने इसे तुल्सी ही का नाम दिया है)

गोला तुल्सी OCIMUM CARYOPHYLLATUM (इसमें क़रनक़ल की तरह की ख़ुश्बू होती है)

हबक़ OCIMUM PILOSUM (नदकारनी ने इसे रैहान लिखा है)

अफ़रीक़ा के मच्छर दूरबीज OCIMCM SANCTUM

तुख़म बालिंगू LALLEMANTIA ROYLEANA

मरज़ंजोश–मरवा ORIGAN MAJORANA

रैहान काफ़ूरी OCIMUM KILMINDSCHORICUM

कपूर तुल्सी: इससे भारत में काफ़ूर हासिल किया गया था।

इनमें मरवा या मरज़ंजोश का ज़िक्र तो अहादीस में ज़ुकाम के इलाज के लिए अलाहिदा मिलता है जबकि हबक़ भी अलाहिदा मज़कूर है। इसलिए गुमान यही है कि रैहान का तअ़ल्लुक़ तुल्सी के ख़ानदान से है और इसके ख़ानदानी नाम OCIMUM के अक्सर अराकीन जो कि अपनी ख़ुश्बू दार लताफ़त में सारे यक्सां हैं। रैहन क़रार दिए जाएं। बाज़ार में तुख़म रैहान के नाम से मिलने वाले बीज यक्सां नहीं होते, और इनमें ख़ुश्बू भी ज़्यादह नहीं होती। इसलिए पंसारी अपनी सहूलत के मुताबिक़ इनमें से किसी एक को रैहान क़रार दे देते हैं। जहां तक हमें समझ आती है तुल्सी के बीज ही रैहान हैं जबकि दूसरे अतिब्बा ने बारदोज या जंगली तुल्सी को भी रैहान ही क़रार दिया है जबकि माहिरीन हबक़ और फ़रंजमुश्क को भी रैहान कहते हैं।

तुल्सी को हिंदू मज़हब में बड़ी अहमियत हासिल है। हर वह हिंदू जिसे अपने घर की खुली जगह मयस्सर है, तुल्सी का पौधा लगाना बाइसे बरकत ख़याल करता है। सहन के दरमियान ऊंचा चबूतरा बनाकर इसमें तुल्सी का पौदा लगाया जाता है। इस पौदे की परवरिश और निगहदाश्त बड़ी अक़ीदत से की जाती है। घर के बुज़ुर्ग सुबह उठ कर इसको बड़ी अक़ीदत के साथ पानी देते हैं। बअ़ज़ इस पौदे के गिर्द तवाफ़ की मानिंद चक्कर लगाते हैं फिर इसके आगे हाथ जोड़ कर पूजा करते हैं। पूजा के अलावह इसकी चंद ख़ुश्बूदार पत्तियां मुंह में रख ली जाती हैं। गुमान किया जाता है कि तुल्सी जो कि एहले ख़ाना की मां है उनकी हिफ़ाज़त करती है और घर में रहमत के फ़रिश्ते आते हैं...... क़तअ़ नज़र अक़ीदत या बरकत के तुल्सी का पौधा अपनी ख़ुश्बू बिखेरता रहता है। इसको

लगने वाले दाने तिब में हुब्बुलआस कहलाते हैं। जबकि अरबी में हम इसे रैहान कहना पसंद करते हैं।

तुल्सी का पौदा सदा बहार है। ख़िज़ां में इसके पत्ते नहीं गिरते। जंगलों में यह पौधा ख़ुदरौ भी होता है। लेकिन आम तौर पर काश्त किया जाता है। ज़मीन में बोने के बअद बीज से जड़ें बनती हैं और इनसे एक तने की बजाए कई शाख़ें निकलती हैं। हर शाख़ के साथ फूलों की मानिंद ख़ोशे लगते हैं जिनमें ख़ुश्बू दार बीज या तुख़्म रैहान होता है।

रैहान को फ़ारसी में "असफ़र्म" और "असपर्ग़म" भी कहते हैं। रैहान की बअ़ज़ ईरानी किस्मों में ख़ुश्बू सग़ज़ की मानिंद और बहुत तेज़ होती है, इसे रैहान किर्मानी कहते हैं। असफ़हान के पहाड़ी इलाके में इश्क़ पीचा की मानिंद एक बेल दरख़्तों पर चढ़ने के बअद फैलती है और दूसरे तुफ़ैली पौदों की मानिंद अपनी ग़िज़ा महमान दरख़्त से हासिल करती है। इसको तुल्सी की मानिंद ख़ोशे लगते हैं। इस बेल को लगने वाले फूल बाहर से नीले और अंदर से ज़र्द होते हैं। चूंकि शक्ल में बिच्छू की मानिंद होते हैं इसलिए इनको "गुले अक़रब" भी कहा जाता है। बेल के साथ लगने वाले ख़ोशों के अंदर के दानों की ख़ुश्बू बड़ी लतीफ़ होती है और इसे रैहान सुलैमानी कहते हैं। अतिब्बा का ख़याल है कि अपनी शक्ल में बिच्छू से मुमासिलत रखने की वजह से इसके पत्ते और बीज पीस कर बिच्छू काटे पर लगाते हैं और अक्सर मरीज़ फ़ाएदा पाते हैं। गीलानी ने सोसन के पौदे से हासिल होने वाले रैहान को जिसे हिंदुस्तान में "कपूर तुल्सी" कहते हैं। रैहान काफ़ूरी नाम दिया है।

माहियत के एतिबार से रैहान को तुल्सी के बीज को समझना चाहिए। लेकिन हर इलाक़े के माहिरीन ख़ासियत की बिना पर अपने यहां के पौधों में ख़ुश्बू दार बीजों वाली किसी भी मुनाफ़ह बख़्श नबातात को रैहान क़रार दिया जाता है। इनमें से अक्सर के फ़वाइद रैहान की मानिंद हैं इसलिए अगर इनको भी रैहान ही क़िस्म फ़र्ज़ कर लिया जाए तो ग़ालिबन कोई मज़ाइक़ा नहीं। लेकिन नबातात के उसूल के मुताबि वह आठ चीज़ें जिनको मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर रैहान समझा जाता है। किसी एक ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ नहीं रखतीं. उनकी माहियत, नाम और आदात मुख़्तलिफ़ हैं। अलबत्ता फ़वाइद यक्सां हैं।

कुरआन मजीद के इरशादात:

والحب ذو العصف والريحان. فبأیّ آلاءِ ربکما تکذّبان (الرحمٰن ۱۲:۱۳)

(इसमें अज्नास गंदम, जौ नख़ूद, बाजरा, मक्की वग़ैरहुम के दाने होंगे और पत्तों वाले पौधे और रैहान होंगे। तुम अल्लाह की कौन–कौन सी नेअ़मतों को झुटलाओ गे)

रैहान को मुफ़स्सिरीन ने रिज़्क़ भी क़रार दिया है और रैहान ख़ुश्बूदार चीज़ों को भी कहते हैं। एक मशहूर अरबी कहावत है कि " "خرجتُ ریحان الله"यानी मैं घर से अल्लाह का रिज़्क़ तलाश करने निकला।

فاما ان کان من المقربین. فروحٌ و ریحان و جنّت نعیم واما ان کان من

اصحاب الیمین فسلم لک من اصحاب الیمین. (الواقعہ:۸۹تا۹۱)

(पस अगर वह फ़ौत शुदह लोगों में से है तो उसके लिए राहत है और रिज़्क़ हुस्न और रैहान है और नेअ़मतों से भरी जन्नत है। और अगर वह दांए तरफ़ वाले लोगों से है तो इसको कहा जाएगा कि तेरे लिए सलामती है ए दाएं तरफ़ वालो।)

एक मशहूर रिवायत तिर्मिज़ी में है एक वलीउल्लाह की जान निकालने मलकुलमौत 500 फ़रिश्तों के हमराह आया और हर एक के हाथ में रैहान की ख़ुश्बूदार शाख़ें थीं।

कहा जाता है कि शजरे रैहान का तना एक होता है और उसके सर में बीस रंग के फूल होत हैं और हर रंग की ख़ुश्बू मुख़तलिफ़ होती है। (जामेउलबयान)

इरशादाते नबवी सल्ल॰

हज़रत उसामा बिन शरीक रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

الامشمرٌ للجنة. فان الجنة لاخطرلها،هی. ورب الکعبة نورٌ یتلالا وریحانة تهتزّ و قصر مشید ونهر مطرد وتمرة نضیجة و زوجة حسناء جمیلة. وحلل کثیرة و مقام فی ابدٍ فی دار سلیمة. و فاکفهة وخضرة. حبرة ونعمة. فی محلة عالیة بهیمة. قالو نعم یا رسول الله نحن المشمرون لها. قال: قولو انشاء الله تعالیٰ. فقال القوم. ان شاء الله. (ابن ماجہ)

(क्या जन्नत के लिए कोई तैयार है? बेशक जन्नत के इर्द–गिर्द कोई बाढ़ नहीं है। रब्बे कअबह की क़सम! वह नूर और चमकती रौशनी है और वह रैहान की डालियां हैं। जो लहलहाती हैं। वहां मज़बूत महल हैं और सीधी नहर है और पकी हुई खजूरें हैं और ख़ुश अतवार ख़ूबसूरत बीवियां हैं बेशुमार उम्दह लिबास हैं यहां पर हमेशह रहने के लिए सलामती और इत्मीनान के घर हैं। यहां पर फल हैं। सब्ज़ियां हैं, यहां पर धारीदार चादरें हैं और उम्दह–उम्दह नेअ़मतें हैं। बुलंद और बारौनक़ महल है। लोगों ने अर्ज़ की कि हम वहां जाने को तैयार हैं। फ़रमाया नहीं, कहो इनशाअल्लाह हम जाएंगे। चुनांचे हाज़रीन ने इनशाअल्लाह कहा।)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

من عرض علیه وریحان فلا یردّه. فانه خفیف المحمل وطیب الرائحة (بخاری ومسلم)

(जिस किसी को रैहान पेश किया जाए वह इसको लेने से इंकार न करे क्यूंकि यह अपनी ख़ुश्बू में निहायत उम्दह और वज़न में हल्का होता है।)

हज़रत अबी उसमान अलहिंदी रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اذا اعطی احدکم الریحان فلا یردّه فانه خرجمن الجنة. (ترمذی)

(जब तुम में से किसी को रैहान दिया जाए तो इनकार न करो क्यूंकि यह पौधा जन्नत से आया है।)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अहलेबैत से मुहब्बत और इनकी अज़मत के इज़हार में अपने अज़ीम नवासों हज़रत हसन रज़ि॰ और हज़रत हुसैन रज़ि॰ के बारे में फ़रमाया:

هما ريحانىّ من الدنيا...... (بخاری)

(यह दोनों दुनिया में मेरे ख़ुश्बू दार फूल हैं।)

हज़रत अबू मूसा अलअशअरी रज़ि॰ रिवायत करते हैं। कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مثل المنافق الذى يقرأ القرآن مثل الريحان. ريحها طيب وطعمها مرٌّ ......(بخاری)

(कुरआन पढ़ने वाले मुनाफ़िक़ की मिसाल रैहान की मानिंद है जिसकी ख़ुश्बू तो उम्दह है लेकिन ज़ाएक़ह कड़वा होता है)

इस क़िस्म की मिसाल को बुख़ारी ने इन्हीं से दूसरी सूरत में रिवायत किया है कि जब कोई मोमिन ख़ुलूसे दिल और हुज़ूरे क़ल्ब के साथ कुरआन पढ़ता है तो वह संगतरे की मानिंद है जिसका ज़ाएक़ा भी उम्दह है और ख़ुश्बू भी लतीफ़ है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

الميت تحضره الملائكة فاذا كان اكان الرجل الصالح قالوا اخرجى ايتها النفس المطمئنة كانت فى الجسد الطيب اخرجى حميده والبشرى بروح وريحان و ربّ غير غضبان...... (مشكوٰة)

(क़रीबुल मर्ग पर जब फ़रिश्ते आते हैं। अगर वह नेक आदमी हो तो वह कहते हैं कि ऐ मुतमइन नफ़्स की रूह तू इस जिस्म से निकल, तू पाकीज़ह जिस्म में रही। अब निकल के तू तअरीफ़ वाली है और ख़ुश हो जा राहत के साथ और रिज़्क़ हुस्न के साथ और इस रब की तरफ़ जो तुझ से नाराज़ नहीं होगा)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

इब्नुल क़ैय्युम रह॰ हर इस चीज़ को जो ख़ुश्बूदार और लतीफ़ हो, रैहान कहते हैं। क्यूंकि हर इलाक़े के लोगों की दानिस्त में रैहान मुख़्तलिफ़ है। मसलन अरब में हुब्बे आलास (तुल्सी) को रैहान मानते हैं। इराक़ और शाम में हबक़ रैहान है और ईरानी कपूर तुल्सी या रैहान सुलैमानी काफ़ूरी को रैहान कहते हैं।

हुब्बे आलास में सर्द और गर्म का एक अजीब मिला जुला तास्सिर है कि यह जिस्म को कुव्वत देती है। सिरे से बोझ को उतारती है। मअ़दे से सुद्दे निकालती है और क़ाबिज़ भी है। यह खांसी, नज़ला और बुख़ारों के लिए अक्सीर का हुक्म रखती है इसके इस्तेअमाल से बुख़ार टूट जाता है। दिल को फ़रहत देती है।

इसको सूंघना नज़ले ही को दूर नहीं करता बल्कि वबाई बुख़ारों को रोकता है।

इसके बीज मेअ़दे को तक़वियत देते हैं। सीने के बोझ और वहां जमे हुए ख़ून को दूर करते करते हैं। अगर खांसी के साथ इस्हाल की शिकायत हो तो यह वह मुन्फ़र्द दवाई है जो दोनों बीमारियों को बयक वक़्त मुफ़ीद होगी। मसानह की सोज़िश, पेशाब में तेज़ाबी माद्दों के इख़राज और जलन को दूर करने के साथ वहां पर सुकून लाते हैं।

इन बीजों का इस्तेअमाल जिस्म की चोटों से पैदा होने वाले वरम को दूर करता है। इनको पीस कर रौग़ने ज़ैतून या अर्क़ गुलाब या सबसे बेहतर सिरका मिलाकर सर पर लेप करें तो गिरते बाल रुक जाते हैं। फुंसियां ठीक हो जाती हैं और ख़ुश्की जाती रहती है। यह लेप हर क़िस्म के औराम, ख़ारिश, एग्ज़िमा, गंदे ज़ख़मों और बाल झड़ के लिए मुफ़ीद है। बवासीर की सोज़िश जाती रहती है। अंदामे निहानी में रखने से रहम की सोज़िश ठीक हो जाती है। जोड़ों पर लेप करने से इनका वरम और दर्द जाता रहता है।

हाथों, पैरों पर हिस्सासियत पैदा होने वाले ज़ख़्मों, ख़ारिश, जलन बल्कि पैरों के फट जाने के लिए हुब्बुलआस को कूट कर ज़ैतून के तेल में मिलाकर लेप करने से वह ठीक हो जाते हैं।

इनका सबसे अहम इस्तेअमाल पेट के अलसर में है। इनकी लैस अलसर की जलन और आंतों की सोज़िश को ख़त्म कर देती है। इस ग़र्ज़ के लिए आम तौर पर निस्फ़ छोटा चम्मच शहद के शर्बत या अर्क़ सौंफ़ के हमराह दिया जाता है।

मुहम्मद अहमद ज़हबी रह० इसे मुक़व्वी क़ल्ब क़रार देते हैं और बताते हैं कि इसे गर्म पानी में पका कर शहद मिलाकर रात को पिलाया जाए तो बे ख़्वाबी को दूर करता है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

तुख़्म रैहान को पानी में उबाल कर उस पानी से सर धोएं तो बाल लम्बे होते हैं। सर में फुंसियां हो या ख़ुश्की (बफ़्फ़ा) मौजूद हो तो वह जाते रहते हैं। किताबुल मंज के मुताबिक़ सर में इस तरह पानी का डालना सर दर्द का यक़ीनी इलाज है। रैहानी सुलैमानी को पीस कर पानी मिला कर इसका लेप जोड़ों के सूजन और दर्द में मुफ़ीद है। हमने रैहान को सिरके में खरल करके जोड़ों पर लेप किया तो फ़ाएदा हुआ। रैहान काफ़ूरी के फूलों को घोट कर यह मरहम अगर बिच्छू काटे पर लगाई जाए तो दर्द और जलन ठीक हो जाते हैं। इसी लेप को अतिब्बा ने लक़वह में लगाने को मुफ़ीद बताया है और इसी लेप में शहद मिलाकर मरीज़ को चटाना भी मुफ़ीद बताया जाता है। इसके पत्तों से कुल्लियां करना मुंह के ज़ख़्मों को भर देता है। मुंह पक जाने या गले की ख़राश में पत्तों को उबाल कर इनके नीम गर्म पानी से कुल्लियां और ग़रारे मुफ़ीद हैं।

आलाते तनासुल की सूजन और फ़ोतों पर सोज़िश की वजह से आने वाले वरम के इलाज में अतिब्बा ने तुख़्म रैहान को पानी में पका कर इसके नीम गर्म पानी से बार-बार धोने का मश्वरह दिया है। फ़ोतो में वरम कीड़ों, जिन्सी

इम्राज़, तपे–दिक़ और कनपेड़ों की वजह से होता है। यह तमाम बीमारियां ख़तरनाक हैं। इनमें महज़ धोने पर इक्तफ़ा करना बअद में मसाइल का बाइस होगा। इसलिए इनके लिए किसी मुस्तनद मुआलिज से बाक़ाएदह इलाज करवाना ज़रूरी है। अलबत्तह वरम अगर किसी चोट या कीड़ा काटने से हो तो ऐसे में धोना मुफ़ीद हो सकता है। वह भी इस सूरत में कि चोट लगे को 48 घंटों से ज़्यादह का अरसा गुज़र चुका हो। वरनह फ़ोरी तौर पर ठंडे पानी से धोना या बर्फ़ मलना ज़्यादह मुफ़ीद है।)

तुल्सी के पत्तों का रस निकाल कर इसमें शहद या शकर मिलाकर बार–बार चटाने से पुरानी खांसी ठीक हो जाती है। दमे की शिद्दत कम होती है और तपे–दिक़ की वजह से आने वाली खांसी में भी कमी आती है। इस पानी को मुसलसल पीने और तुख़्म रैहान लगातार खाने से बवासीर ठीक हो जाती है।

अतिब्बा ने रैहान को बुनियादी तौर पर दाफ़ेअ क़ौलिंज बयान किया है। इसलिए यह हर क़िस्म के इनक़बाज़ को दूर करता है। ओराम को तहलील करता है। दिमाग़ के सुद्दे खोलता है। बल्कि इसको सूंघने से भी दिमाग़ में कुव्वत पैदा होती है। अगर इस पर पानी छिड़क कर सूंघा जाए तो सर दर्द ठीक होता है। इसकी ख़ुश्बू से नींद आती है। इसका सूंघना दिल को ताक़त देता है। ख़फ़क़ान और ज़ुअफ़ो मेअ़दा को मुफ़ीद है। पत्तों का रस निकाल कर इसमें शकर मिला कर देने से दमे का दौरह कम हो जाता है। नाक के पिछले हिस्से में अगर ग़लीज़ रतूबत जमअ हो और आसानी से निकलने में न आती हो तो रैहान को बार–बार सूंघने से वह निकल जाती है।

रैहान सुलैमानी के इस्तेअमाल से पेट की ग़िलाज़त दस्तों की राह से निकल जाती है और यह ख़ुद ही दस्तों को बंद करने के बअद आंतों की ख़ौज़िश को रफ़अ करता है। बअ़ज अतिब्बा इसकी बजाए मरज़ंजोश (मरवाह) को तर्जीह देते हैं।

रैहान काफ़ूरी और तुल्सी के पत्तों को घोट कर पीने से चूंकि जिगर के सुद्दे निकल जाते हैं इसलिए यरक़ान में इसे मुफ़ीद माना गया है। (हक़ीक़त में यरक़ान की मुतअद्दिद क़िस्में हैं। इसका एक बाइस पत्ते की नालियों में रुकावट है। जिगर की ख़राबी और मुतअ़द्दी बीमारियों में भी यरक़ान होता है। अगर रुकावट मअमूली हो या ज़िगर में ख़राबी हो तो तुल्सी के पत्तों के जोशांदे में शहद मिलाकर बार बार पिलाने से आराम आ सकता है।)

चूंकि रैहान की तमाम क़िस्में मक़ामी तौर पर सोज़िश को रफ़अ करती हैं। इसलिए यह जिस्म के किसी भी मक़ाम की जलन और ख़ौज़िश को दूर कर सकता है। इसे अक्सर औक़ात शर्बत नीलोफ़र के हमराह तज्वीज़ किया गया है। क्यूंकि नीलोफ़र को इसका मुसल्लह माना गया है। अक्सर औक़ात आंतों नाक और पेट से आने वाला ख़ून 2 माशा रैहान सुबह शाम शर्बत नीलोफ़र के हमराह देने से रुक जाता है।

कीम्यावी साख़्तः

बीजों में तेल के अलावह लेसदार अज्ज़ा होते हैं। पत्तों से ज़र्द रंग का सब्ज़ी माइल फ़राज़ी तेल निकलता है जो थोड़ी देर पड़ा रहे तो इसकी ख़ुश्क क़लमें बन जाती है। जिनको BAISL CAMPHOR कहते हैं। तुल्सी औराम तुल्सी के पत्तों से जो कीम्यावी अनासिर मयस्सर आए हैं उनमें THYMOL EUGENOL METHYL CHAYICOL ज़्यादह अहमियत रखते हैं। इनमें EUGENOL बुनियादी तौर पर लौंग में पाई जाती है। और दांतों के दर्द को दूर करने में बड़ी अहमियत रखती है। THYMOL इसके अलावह सअ़तर में भी पाई जाती है। और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे घरों में धूनी देने के लिए मुनासिब क़रार दिया है।

कीम्यावी अनासिर की ख़ुश्बू की वजह से तुल्सी की तमाम क़िस्में कीड़ों–मकोड़ों और मच्छर को भगाती हैं। इसलिए बाअ़ज़ माहिरीन मलेरिया के इंस्दाद के लिए घरों के आस–पास तुल्सी की जुमला अक़्साम की काश्त को बड़ा मुफ़ीद क़रार देते हैं। काफ़ूर एक ख़ास दरख़्त के तेल से हासिल होता रहा है। लेकिन अमरीका में 1933 में मसनूई काफ़ूर बनाने के कामयाब तजुर्बात के बअ़द हिंदुस्तान के इदारा तहक़ीक़ाते जंगलात, देहरादून ने कपूर तुल्सी या रैहान काफ़ूरी से एक तेल हासिल किया। यह तेल तुल्सी की इस क़िस्म में वज़न का पांच फ़ीसदी पाया जाता है। इस तेल से भारत में 47 से 74 फ़ीसदी मुश काफ़ूर हासिल किया, जो कि कीम्यावी तौर पर भी काफ़ूर ही है। इससे काफ़ूर की क़ीमत काफ़ी कम हो गई।

जदीद मुशाहिदातः

रैहान की तमाम क़िस्मों के असरात का ख़ुलासह भारती माहिरीन के नज़दीक यह है कि इससे पसीनह आता है और पुराना बुख़ार टूट जाता है। बअ़ज अतिब्बा इस ग़र्ज़ के लिए जड़ों के जोशांदे को ज़्यादह पसंद करते हैं। यह पेट से रियाह को निकालते हैं। मुहर्रिक बाह, मुक़व्वी, पेशाब आवर, दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन हैं। पाधे का रस निकाल कर पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं और इस रस को सांप का ज़हर ज़ाएल करने के लिए इस्तेअमाल किया जाता है।

भारती हक्कूमत के महकमा तिब्ब की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ इसकी तमाम अक़्साम मुक़व्वी क़ल्ब हैं। दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन, मुलतफ़, और मुन्फ़स हैज़ असरात रखती हैं। इसलिए इनको ज़ुअफ़े क़ल्ब, ख़फ़क़ान, नज़लह, ज़ुकाम, पुरानी खांसी, इस्हाल और मलेरिया बुख़ार में देना फ़ाएदे का बाइस होता है।

लम्बे पत्तों वाली तुल्सी के ख़ुश्क पत्तों को चाए की मानिंद उबाल कर देने से गुर्दा, मसानह और पेशाब की नाली की सोज़िश ठीक हो जाती है। हमने ज़ाती तजुर्बात में इस जोशांदे में शहद मिलाकर ज़्यादह अच्छे नताइज हासिल किए हैं।

फ़रंजमुश्क के तक़रीबन वही असरात हैं जो रैहान की दूसरी क़िस्मों के हैं। लेकिन इसे खाने से खांसी के इलाज के तमाम नुस्ख़ों में ख़ुसूसी तौर पर शामिल किया जाता है। इसके बीजों को पका कर इनका जोशांदह पेशाब की

नालियों की सोज़िश में मुफ़ीद है। सर्दी के बाइस हाथ पैरों के वरम को दूर करने में फ़रंजमुश्क के पत्तों को उबालते वक़्त इनके साथ गुले अर्मनी शामिल कर देते हैं। इनमे हाथ पैर डुबोने से वरम जाता रहता है और यही नुस्ख़ा जोड़ों के दर्द को आराम देता है।

हबक़ की खीर बनाकर पुरानी क़ब्ज़ और जरयान में देनी मुफ़ीद है। चक्रोता में अदरक के साथ तुलसी और दूसरी जड़ी बूटियों को मिलाकर देना छाती के जुमला अवारिज़ के लिए मुफ़ीद बताया है हमने इन तमाम चीज़ों की बजाए तुल्सी के बीज, अंजीर, बही दाना और बनफ़शह को ख़ूब उबाल कर शहद मिलाकर इससे बेहतर फ़वाइद का हामिल पाया है। वैद इस नुस्ख़े में इलाइची डालने के बअद इसे मुक़व्वी क़रार देते हैं।

तुल्सी के पत्तों का रस निकाल कर इसमें शहद मिलाकर नहार मुंह पीने से चेहरे की रंगत निखर आती है। इसे तवील अरसह इस्तेअमाल करने से अक्सर दाग़ भी उतर जाते हैं। यही रस कान दर्द के लिए अक्सीर है। चंद क़तरे डालने से पेट के बड़े कीड़े मर जाते हैं। वैदिक तिब में सांप काटे के लिए इसके पत्तों का रस बार–बार देना तिरयाक़ बताया जाता है। वैदों के मुताबिक़ मरीज़ अगर बेहोश हो यह रस उसके कानों में डाला जाए। नाफ़ में डालें और जिस्म पर मालिश करें।

यक़ीन किया जाता है कि तुल्सी के पत्तों और शाख़ों का हार बनाकर अगर मुस्तक़िल पहना जाए तो जरासीम से होने वाली अक्सर बीमारियां न होंगी बल्कि इनकी ख़ुश्बू से कई एक बीमारियां ठीक हो जाएंगी। जड़ का सफ़ूफ़ अगर बिच्छू काटे पर मला जाए तो दर्द ख़त्म हो जाता है। तुल्सी के बीजों को गाए के ताज़ह दूध के साथ खरल करके कै, मतली और इस्हाल में फ़ोरी फ़ाएदा करता है।

होम्योपैथिक तरीक़ह इलाजः

इसमें रैहान के ज़िम्न में आने वाली तमाम चीज़ों के असरात अलाहिदा OCIMUMCANUM को उनके यहां BRAZILIAN ALFAVACA के नाम से देते हैं। यह गुर्दा, मसानह और नालियों की तमाम बीमारियों के लिए अक्सीर है। यूरिक एसिड का इख़राज करती है। पेशाब में सुर्ख़ रेत आती हो, नाली के इर्द–गिर्द के ग़दूद मुतवर्रम हों, बाएं फ़ोते में दुख्खन हो, पेशाब से कस्तूरी की मानिंद ख़ुश्बू आए, गुर्दे में क़ौलिंज, अंदामे निहानी के बाहर सूजन और छातियां सूजी हों तो इसका इस्तेमाल किया जाता है।

अतरज……संगतरह, नारंगी
ORANGES
CITRUS AURANTIFOLIA

अहादीस में अतरज नामी एक फल की तअरीफ़ मज़्कूर है। लुग़त में इसको नीमू के क़रीब की कोई चीज़ बयान किया गया है जबकि वहां पर इसका

ज़ाएक़ह उम्दह और फ़रहत बख़्श बयान किया गया है। इसलिए यह लीमूं नहीं हो सकता। बअ्ज़ मुसन्निफ़ीन ने इसे मीठा लीमूं क़रार दिया है। यह नाम हमें इसलिए क़बूल नहीं कि लीमूं की क़ाशें नहीं होतीं जबकि एक रिवायत में हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि॰ को देखा गया कि वह किसी साहब को अतरज की क़ाशें छील कर खिला रही थीं इस इशारात को सामने रखें तो अतरज ग़ालिबन संगतरा, किन्नू वग़ैरह की क़िस्म का कोई फल हो सकता है। जिसका ज़ाएक़ा अच्छा, ख़ुश्बू उम्दह और तबीअ़त को फ़रहत देने की सलाहियत मौजूद है। नबातात में फलों का एक ख़ानदान कहलाता है। जिसमें माल्टा, मीठा लीमूं, लीमूं, खट्टी चकोतरह, मीठा, संगतरा किन्नू और फ़रूटर शामिल हैं। इस ख़ानदान के अहम अफ़राद यह हैं।

नारंगी—चीनी नारंगी	CITRUS AURANTIUM
कड़वा संगतरा	CITRUS BICARDIA
असली लीमूं	CITRUS BERGAMIA
चकोतरा,सदा फल, गिलगिल	CITRUS DECUMANA
मीठा लीमू, मधुकर कीता	CIRTUS LIMETTA
लीमू	CITRUS LIMONUM
कागज़ी लीमू, महाफल, बाजोरी लीमू	CITRUS MEDICA

इन तमाम अक़साम का बैरूनी रंग तक़रीबन यक्सां होता है, अंदर से यह तमाम रस के भरे और ख़ुश्बू में यक्सां होते हैं। जिस जगह इनके छिलके की ज़रूरत हो सभी का छिलका मुफ़ीद है फ़र्क़ इतना है कि बअ्ज़ छिलके ढीले और फूले हुए और बअ्ज़ के माल्टा और लीमू की मानिंद अंदरूनी फल से चिपके हुए होते हैं।

किसानों ने इनकी आपस की पैवंदकारी से संगतरे की एक क़िस्म ईजाद की है जो नागपुरी संगतरे की मानिंद फूली हुई नहीं है। छिलका इसका क़ाशों से जुड़ा हुआ नहीं होता और आसानी से उतर जाता है। ज़ाएक़ह उम्दह और शीरीं, ख़ुश्बू और फ़वाइद भी उम्दह, यह किन्नू है। अब किन्नू की भी मुतअद्दिद अक़साम पैदा कर ली गई हैं। जिनकी जिसामत और शक्ल मुख़्तलिफ़ होती है। कुछ क़िस्मों में क़दरें खटाई होती है। लेकिन बुनियादी तौर पर यह संगतरे की अक़साम हैं। और इनमें से हर एक शीरीं है। इस सिलसिले की इब्तिदा ज़िला हज़ारा के इलाक़ह ख़ानपुर में हुई जहां मरहूम क़ाज़ी मुहम्मद आज़म ने वीकफ़ील्ड के साथ मिल कर एक वसीअ रक़बह संगतरों का बाग़ लगाया और इनकी क़लमें फ़्लोरीडा से मंगाई गईं। इसी ज़िले के मरहूम मौलाना महदी ज़मांख़ान ने मौजूदह तर्बीला झील के किनारे संगतरह, माल्टा और मीठे लीमूं की काश्त में अजीबो–ग़रीब तजुर्बात किए। उन्होंने सुर्ख़ माल्टा की ज़ैली नसलें पैदा करके इसे मिठास दी। इनके माल्टों का छिलका लीमूं से भी बारीक रहा। उन्होंने एक ऐसा मालटा पैदा किया जिसमें कोई बीज न था और जमहूरिया शाम के सदर ने इनको इनाम दिया। मरहूम महदी ज़मांख़ान लगातार तीस साल तक इस

नौअ के फलों की नुमाइश में पहला इनआम लेते रहे।

इनके बअद इसी ज़िले में मरहूम सदर अय्यूब ख़ान ने एक वसीअ बाग़ लगाया और यह भी शानदार ईनाम हासिल करते रहे।

पंजाब में ज़िला सरगोधा और साहीवाल में भी संगतरे की अक़साम पर तजुर्बात हुए हैं मगर इनमें मचल फ़रूट फ़ार्म मुनफ़र्द है। यह एक शानदार हक़ीक़त है कि संगतरे के ख़ानदान के फलों में पाकिस्तान से ख़ुशज़ाएक़ह, रस भरे और ख़ुशबूदार फल दुनिया के किसी मुल्क में नहीं होते।

हिंदुस्तान में नागपुर का संगतरा अपने रस के लिए मशहूर है वरनह खासी आर गारू के इलाक़े में लीमूं और संगतरे ख़ूब होते हैं। इटली भी संगतरे का घर है। अमरीकी रियासत फ़्लोरीडा में संगतरे के बाग़ मीलों तवील हैं। कुछ बाग़ ऐसे हैं जहां माअमूली टिकट पर लोगों को पिकनिक मनाने की आम इजाज़त है। इन बाग़ों में जगह–जगह रस निकालने की मशीनें लगी हैं। जहां पर आपके सामने ताज़ह संगतरों का रस निकाल कर एक डालर में चार गिलास मिल जाते हैं। स्पेन और शिमाली अफ़रीक़ा में भी संगतरह होता है। लेकिन यौरप और अमरीका के संगतरे में मिठास के साथ कड़वाहट भी शामिल होती है।

संगतरह ख़ानदान में विटामिन सी की मौजूदगी इस की मक़बूलियत का बाइस बन गई है। लोग बड़े शौक़ से इसका रस पीते हैं। कारोबार को फ़रोग़ देने के लिए इसका रस निकाल कर इसको साफ़ करके डब्बों में बंद पेश किया जाता है। जिसकी उमूमी तर्कीब यह है कि संगतरे का रस निकाल कर इसे साफ़ करके इसमें से पानी निकाल कर इसको गाढ़ा कर लिया जाता है। यह शहद से भी गाढ़ा होता है और इस तरह इसे देर तक रखा जा सकता है और यह जगह कम घेरता है। संगतरे की जूस की आलमी मार्किट जर्मनी में है। जहां से इसका रूई की मानिंद रोज़ानह भाओ निकलता है और नर्ख़ गाढ़े यख़बस्ता जूस का सा होता है इसे ख़रीद कर इस्तेअमाल करने वाले दुगना आबे मुक़त्तर मिलाकर फिर से ताज़ह जूस बना लेते हैं।

संगतरे की एक क़िस्म लबनान और शाम से दरामत सऊदी अरब में देखी गई, इसको "सकरिया" कहते हैं। हमारे यहां के मीठे की मानिंद मगर निहायत मीठा। इस्राईल का इलाक़ा जाफ़ा बहीरह रौम के ख़ित्ते में संगतरों की पैदाइश के लिए मशहूर है। हमने कुबरस में इस्राईल के संगतरे और मालटे खाए हैं। इसे "बर्तक़ाल" कहते हैं। बड़े मोटे, फूले हुए छिलके वाले यह मालटे फीखे, ख़ुश्क और बदमज़ह होते हैं। जिसने पाकिस्तान के माल्टे खाए हो उसके हलक़ से इनका उतरना मुश्किल है और लुत्फ़ यह है कि यहूदी अपने इन माल्टों पर बड़ा फ़ख़्र करते हैं। इनको मुरस्सह काग़ज़ में अपने तिजारती निशानात के साथ मंडियों में पेश किया जाता है।

अमरीकह में संगतरा इस हद तक पसंद किया जाता है कि सुबह नाश्ते से पहले हर शख़्स इसके जूस का एक गिलास पीता है। बच्चों को सर्दी के मौसम में गर्म पिलाया जाता है। यौरप में भी यह तास्सुर आम है कि ज़ुकाम के दौरान गर्म करके संगतरे का अर्क़ पीना मुफ़ीद होता है। इस ग़र्ज़ के लिए तुर्श संगतरा

मुफ़ीद नहीं होता, पाकिस्तान के मौसमी या किन्नू का जूस ज़्यादह मुफ़ीद है। रहनुमाए हिंद महात्मा गांधी अक्सर वृत रखा करते थे। जब भी वह एहतिजाजी भूख हड़ताल करते थे तो उस दौरान में मीठे संगतरे का रस और बकरी का दूध पीते रहते थे। इस गिज़ा पर वह कई दिन गुज़ार लेते थे। फ़ाक़हकशी के इस अरसे में इनको माअ्मूली सी कमज़ोरी होती थी। कुछ लोगों का कहना था कि वह अपने फ़ाक़ह या वृत के दौरान दूध नहीं पीते थे। सिर्फ़ संगतरे के रस पर गुज़ारह करते थे। तिब्बी नुक़तए नज़र से ऐसा मुमकिन नहीं है क्यूंकि इसकी कीम्यावी साख़्त को देखें तो इसमें लहमियात, नमकियात और शकर मौजूद हैं। अगर्चे लहमियात की इतनी मिक़दार नहीं होती कि एक तंदरुस्त आदमी की जिस्मानी ज़ुरूरयात पूरी कर सके। लेकिन गिज़ाई कमी की अलामात भी पैदा नहीं होतीं।

योरपी जहाज़रान नई दुनिया (अमरीका) की तरफ़ यलग़ारें कर रहे थे। वहां से लूट का माल लाने जहाज़ों को रास्तह में लूटना इतना मक़बूल और मुअज़्ज़िज़ पेशह था कि मल्का अलज़बथ अव्वल ने बरतानवी लुटेरों को "सर" के ख़िताब दिये। इस ज़माने में जहाज़ रानों में एक अजीब बीमारी पैदा हुई जिसे "सकरवी" का नाम दिया गया। मरीज़ के जिस्म पर सूजन पड़ने के बअद मुतअद्दिद मुक़ामात से ख़ून बहने लगता। दांत अपने आप गिर जाते और चंद दिनों में मौत वाक़ेअ् हो जाती। तवील मुशाहिदों के बअद माअ्लूम हुआ कि यह बीमारी गिज़ा में विटामिन "सी" की मुसलसल कमी से पैदा होती है। इससे बचाओ और इलाज के लिए संगतरह अक्सीर माना गया है रोज़ाआना दो से तीन संगतरे खाने से मरीज़ चंद दिनों में तंदरुस्त हो जाता था। जब से यह इनकशाफ़ हुआ है कि सक़र्वी विटामिन सी की कमी से होती है और इसकी मअ्क़ूल मिक़दार संगतरह, लीमूं और माल्टा में होती है। लोग संगतरे की जानिब ज़्यादह मुतवज्जह हो गए हैं।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे ख़ुश्बू के लिहाज़ से उम्दह फल क़रार दिया है और अब ख़ुश्बू की मक़बूलियत का यह आलम है कि लोग इसे इतरियात में शामिल करते हैं। संगतरे के छिलके का तेल हशरातुल अर्ज़ को भगाने में अपना जवाब नहीं रखता। इस तेल में नारियल का तेल या बदबू के बग़ैर मिट्टी का तेल किसी कमरे में अगर छिड़क दिया जाए तो इस कमरे में मच्छर, मक्खी और दूसरे तकलीफ़ देने वाले पतंगे नहीं आते। इसे अंग्रेज़ी में CITRONELLA OIL कहते हैं और इत्र, तेल फ़रोख़्त करने वाली हर दुकान से मिल जाता है।

इस मुताअ्लेह में अतरज से मुराद संगतरह और इस ख़ानदान के तमाम अफ़राद लिए गए हैं और इनके फ़वाइद भी यक्सां हैं।

इरशादे नबवी सल्ल०

हज़रत अबू मूसा अलअशअरी रज़ि० रिवायत फ़रमाते हैं।

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مثل المؤمن الذى يقرأ القران مثل

الاترنجه، ريحها طيب وطعمها طيب (بخاری)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह मोमिन जो कुरआन पढ़ता है इसकी मिसाल अतरज की तरह है जिसकी ख़ुश्बू भी उम्दा होती है और ज़ाएक़ा भी लतीफ़ और लज़ीज़ होता है।)

हज़रत्त अब्दुर्रहमान बिन विलहम रज़ि.

عليكم بالا ترج فانه يشدّ الفوائد. (مسند فردوس الدیلمی)

(तुम्हारे लिए अतरज में बेशुमार फ़वाइद मौजूद हैं, क्यूंकि यह दिल के दौरे की शिद्दत को कम करता और दिल को मज़बूत बनाता है।)

हज़रत मसरूक़ रज़ि. बयान करते हैं:

دخلت علىٰ عائشةؓ وعندها رجل مكفوف تقطع له الاترج وتطعمه اياه بالعسل. فقلت لها: ماذا؟ قالت هذا ابن ام مكتوم الذى عاتب الله فيه نبيّه صلى الله عليه وسلم.

(मैं हज़रत आएशह रज़ि. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो इनके पास एक नाबीना बैठे थे। यह इनको संगतरे काट कर साफ़ करके फिर शहद में डुबो कर दे रही थीं। मैंने पूछा कि यह कौन हैं? फ़रमाने लगीं कि यह इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि. हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तंबीह फ़रमाई थी।)

इनका इशारह सूरह अ.ब.स. के वाक़िए की सिम्त था। अल्लाह तआला ने इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि. के ख़ुलूस की क़दर फ़रमाते हुए उनकी अहमियत पर यह पूरी सूरह नाज़िल फ़रमाई। इसलिए हज़रत आएशह रज़ि. उनकी ख़ातिर दारी में बहतरीन चीज़ें पेश फ़रमा रही थीं।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

अतरज को बअ़ज़ उलमा ने "लीमू अलयहूद" और बअ़ज ने "तफ़ाहुल अ़जम" का नाम भी दिया है अगर इससे मुराद खट्टा लीमूं होता तो उसके साथ यहूद की इज़ाफ़त की ज़रूरत न थी। अहादीस में इसका ज़ाएक़ह ख़ुशगवार और उम्दह मज़कूर है।

अतरज चार अशया से मुरक्कब है, छिलका, गूदा, जूस और बीज और चारों में से हर एक के फ़वाइद अलाहिदा–अलाहिदा हैं बल्कि इसमें बेकार कोई चीज़ भी नहीं।

इसके छिलके ज़ाइद में अहम तरीन चीज़ यह है कि अगर यह कपड़ों में रखा जाए तो इनको टिड्डी नहीं काटती, इसकी ख़ुश्बू फ़िज़ा को साफ़ करती है। मुंह की बदबू दूर करता है। अगर थोड़ी देर मुंह में रखा जाए तो पेट की गंदी हवा निकाल देता है। अगर हंडिया में इसे मसालहों की मानिंद डाल दिया जाए तो खाने को हज़्म करता है। बू–अली सैना का मुशाहिदह है कि सांप काटे के

इलाज में छिलका का रस निकाल कर पिलाना और इसे ज़ख्म पर लगाना मुफ़ीद है। इसे फुलबहरी के दाग़ों पर लगाने से फ़ाएदह होता है।

संगतरे का गूदा और अर्क़ मेअ़दा की हिद्दत को बड़ी लताफ़त के साथ मोअ़तदिल कर देते हैं। सुफ़रावी अलामात को दूर करता और अल्लामा फ़िक्की के नज़्दीक बवासीर से निजात दिलाते हैं इसका जूस आलाते शिकम के सुफ़रावी को दूर करता है। क़ै और मतली को दूर करता है. इस्हाल ठीक करता और भूख बढ़ाता है। इसका अर्क़ औरतों में हीजान बाह (ग़लतुन्निसा) यअ़नी NYMPHOMANIA को देर करता है। प्यास को तस्कीन और जिगर की इस्लाह करता है। अपने फ़वाइद की बिना पर यरक़ान में ज़्यादह मुफ़ीद है। इसको लगाने से जिल्द के दाग़ और ख़ास तौर पर फफूंदी से होने वाली सोज़िशें जैसे कि दाद और कूबा दूर हो जाते हैं।

इब्ने मास्वियह कहता है कि संगतरे का बीज हर क़िस्म की ज़हरों का तिर्याक़ है। यह वरम और सोज़िश को तहलील करके सेहत लाता है। बीज का छिलका उतार कर इसे पीस कर एक ग्राम सफ़ूफ़ को पानी के साथ फांक लेना अक्सर ज़हरीले कीड़ों के काटे का असर ज़ाएल कर देता है। क़ब्ज़ और सांस की बदबू दूर करता है। दूसरे अतिब्बा भी इससे इत्तिफ़ाक़ करते हैं कि बीजों को बार–बार पिलाना और हर क़िस्म के सांपों और बिच्छू के काटे पर लगाना फ़ौरी फ़ाएदह देता है

अतिब्बा का एक गिरोह क़यास करता है कि रैहान से मुराद ख़ुश्बूदार दाने हैं। चूंकि संगतरे की ख़ुश्बू और ज़ाएक़ह उम्दह है इसलिए इसको भी रैहान की सिफ़ात का हामिल क़रार दिया जा सकता है। इस हैसियत में यह मुफ़र्रह, तबीअ़त को बहाल करने वाला है। छिलके की ख़ुशबू उम्दह, गूदे का ज़ाएक़ह अच्छा, गूदे में लज़्ज़त के साथ तवानाई, इसके बीज ज़हरों का तिर्याक़ और इसमें एक ख़ुशबूदार तेल भी मौजूद है।

अगर इसके फ़वाइद पर दोबारह तवज्जह करें तो यह बिल्कुल इस हदीस की तस्वीर नज़र आता है जिसके मुताबिक़ कुरआन पढ़ने वाला मोमिन संगतरे की मानिंद सिफ़ात का हामिल है। क्यूंकि इसकी सिफ़ात लामहदूद हैं और इसे देखना भी फ़रहत का बाइस हो सकता है।

ज़हबी रह. कहते हैं कि संगतरे के छिलके को पीस कर इसकी शहद के साथ अगर मअ़जून बनाली जाए तो यह क़ौलंज को दूर करती है। कमज़ोरी का इलाज करने के अलावह भूख बढ़ाती है। पेट के रियाह को ख़ारिज करती है। तबीअ़त को फ़रहत देती है। इसको सूंघना भी बाइसे फ़रहत है। संगतरह अगर खट्टा हो तो इससे हाज़मा ख़राब होता है, भूख कम होती है, मेअ़दा ख़राब करता है। संगतरह खाने से आअ़साबी कमज़ोरी रफ़ा हो जाती है। यह दिमाग़ को ताक़त देता है। रंज, ग़म, परेशानी और नक़ाहत को दूर करता है।

खट्टे संगतरे के बारे में जो नाख़ुशगवार मुशाहिदात बयान किए गए हैं उनमें से चंद एक का बाइस इसमें सिट्रिक एसिड की ज़्यादती है। इसका एह हल तो

यह है कि अर्क़ निकाल कर इसमें नमक और चीनी मिलाकर ज़ाएक़ह दुरुस्त कर लिया जाए वरना शहद मिलाना सबसे उम्दह और मुफ़ीद तर्कीब है। क्यूंकि इसके अपने फ़वाइद संगतरे के साथ शामिल हो कर उफ़ादियत में मज़ीद इज़ाफ़ह हो जाएगा।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

संगतरा, नारंगी से मुख़्तलिफ़ चीज़ है। इसकी जिल्द चमकदार और फूली हुई होती है। अतिब्बाए क़दीम ने लीमूं के दरख़्त के साथ संगतरे की पैवंद लगाकर मीठे संगतरे पैदा करने का नुस्ख़ा बयान किया है।

यह दिल और मेअ़दे को ताक़त देता है। प्यास को बुझाता है। मदरुलबोल है। मन्शियात के बुरे असरात को दूर करता है। तालीफ़ शरीफ़ के मुताबिक़ इसकी तुर्शी खांसी और गले की ख़राबी में मुज़िर नहीं। बल्कि अकसर मरीज़ों को मुसलसल इस्तेअमाल से फ़ाएदह होता है। मुग़ल बादशाह संगतरह छील कर इसके बीज और गूदे को चीनी और गुलाब का शर्बत में रात भर मिट्टी के बरतन में भिगोने के बाद सुबह बर्फ़ में ठंडा करके खाते थे इसका नाम "राहते जां" था। तर्कीब और नुस्ख़े के लिहाज़ से यह वाक़ई राहते जान है। क्यूंकि यह तबीअ़त में बशाशत पैदा करता, चेहरे को निखारता और जिस्म में तवानाई पैदा करता है। अगर नुस्ख़ा में हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि॰ वाली तर्कीब के मुताबिक़ चीनी की बजाए शहद और अर्क़ गुलाब शामिल कर लिया जाए तो हमारी राए में यह ज़्यादह मुअस्सिर, मुफ़ीद, मुक़व्वी और मुफ़र्रह होगा। इसका गूदा मुक़व्वी मेअ़दा है। दिल को ताक़त देता है। जिगर की इस्लाह करता है। संगतरे को मुद्दत तक किसी ठंडी जगह पर रखें हत्ता कि सूख जाए। फिर इसको पानी मिलाकर छिलके और बीजों समैत पीस कर चने के बराबर गोलियां बनाई जाती हैं। इस क़िस्म की पांच से दस गोलियां मतली, क़ै बल्कि हैज़ा में भी देते हैं क़ै रुक जाती है और तबीअ़त बहाल हो जाती है।

संगतरे की फांक में से अर्क़ निकाल कर महज़ छिलका देने से रियाही दर्द दूर होता है। इसके फूलों का अर्क़ कशीद के पिलाने से तशनजी दौरे मिट जाते हैं। सर्दी की वजह से होने वाले बुख़ारों और खांसी के इलाज के दौरान नारंगी को गर्म करके थोड़ी-थोड़ी मिक़दार में देना चाहिए। वरनह इसका गूदा निकाल कर इसको गर्म करके इस पर खांड छिड़क कर खिलाना इस बीमारी के अरसे को कम कर देता है। इसका शरबत बनाकर पिलाने से इस्हाल में कमी आती है। इसके छिलके का जोशांदह पका कर हींग मिला कर देने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। बुख़ार के दैरान प्यास की शिद्दत को कम करने के लिए नारंगी का अर्क़ गर्म करके शहद मिला कर दिया जाता है। गर्मी के मौसम में लीमूं की बजाए संगतरे का शर्बत या स्क्वेश ज़्यादह मुफ़ीद होते हैं। दाद और चंबल की इन अक़साम में जहां छिलके बार-बार आते हैं और नीचे ज़ख़्म हरा रहता है। नारंगी के छिलके का कूट कर पलट्स की मानिंद बांधने से आराम आ जाता है, छिलके को पानी के साथ पीस कर फुंसियों पर लगाने से वह दूर हो जाती हैं।

कीम्यावी तर्कीब:

अमरीकी माहिरीन ज़राअ़त ने केलीफ़ोर्निया, फ़्लोरीडा और रोज़ाना की मोअ़तदिल आबो हवा में संगतरों की वसीअ़ पैमाने पर काश्त की है और उनके यहां सालानह आठ लाख गैलन जूस की पैदावार होती है। अपनी तख़सीस के लिए उन्होंने इस की नसली दरजह बंदी में यह तब्दीलियां की हैं।

भारत का पठान कोटी संगतरा	CITRUS INDICA
चकोतरा	CITRUS SINENSIS
मीठा संगतरह—मौसमी	CITRUS PARADISE

इसका बैरूनी छिलका अंदर के नाज़ुक ख़ानों की हिफ़ाज़त के लिए है। हर ख़ाने के अंदर मख़रूती रेशे हैं जो रस से भरे हैं और इनके गिर्द एक झिल्ली की दीवार है। इन झीलों के अंदर अर्क़ के अलावह एक रंगदार तेल भी पाया जाता है। इन ख़ानों के अंदर बीज पाए जाते हैं। जो बअ़ज़ क़िस्मों में रेशों के ज़रिये गूदे और मरकज़ से वाबस्तह होते हैं। एक आम संगतरे में रस की मिक़दार 40 से 45 फ़सदी, छिलका, 32 से 40 फ़सदी, अंदर का फोक 20 से 30 फ़ीसदी होता है।

कीम्यावी तज्ज़ियह पर इसमें:

पानी की मिक़दार	86—92 फ़सदी
मिठास	8—8 फ़ीसदी
ग्लूकोह साइड	1.5—0.1
तेज़ाब	1.5
रेशह	1.0
लहमियात	0.6—0.8
चिकनाई	0.2—0.5
फ़राज़ी तेल	0.2—0.5
मअ़दनी नमक	0.5—0.9
मिठास	5—8

संगतरे में पाई जाने वाली मिठास को दो क़िस्मों में बयान किया जाता है, एक तो आम चीनी और ग्लूकोज़ की मानिंद है जिसका तनासुब 2.5 से 5 फ़ीसदी के दरमियान हो सकता है। जबकि REDUCING SUGARS 3 से 4 फ़ीसदी के क़रीब होती हैं। अमरीकी माहिरीन मिठास की कुल मिक़दार को 8 फ़ीसदी तक ले जाते हैं जिसमें से निस्फ़ चीनी और ग्लूकोज़ हैं।

संगतरे में कड़वाहट छिलके के अंदर की जानिब और गूदे की झीलों में पाई जाती है इसके अलावह अज्ज़ाए तरकीबी में LIMONIN पाई जाती है। जो कि निहायत कड़वी होती है और वह इसके ज़ाएक़े में कड़वाहट का बाइस होती है।

चोधरी मुहम्मद अकरम साहब को फलों की मसनूआत तैयार करने, उनके तज्ज़ियह और कीम्यावी असरात चालीस साल से ज़्यादह अरसह गुज़रा है। वह

लाहौर की शेजान फैक्ट्री से वाबस्ता हैं। इनके अलताफ और उनके रफ़ीक़ चोधरी ताहिर अहमद की मुहब्बत से संगतरों की कैमिस्ट्री के बारे में यह दिलचस्प हक़ाइक़ पेश करने मुम्किन हुए।

संगतरे के जूस के कीम्यावी असरात, उनकी मिक़दार और तनासुब, मौसम, ज़मीन और बीज की अक़साम से तब्दील हो जाते हैं। संगतरे का जूस निकालने में छिलके का कुछ हिस्सह भी दब कर आ जाता है। अगर्चे इब्तिदा में यह रस को बड़ी अच्छी ख़ुश्बू देता है मगर कुछ अरसेह के बअद यह ख़ुश्बू एक ऐसी सड़ांद में तब्दील हो जाती है जो फलों के स्टोरों में दाख़िल होने पर महसूस होती है।

छिलके का तेल:

इसे CITRONELLA OIL कहते हैं। बुनियादी तौर पर यह एक फ़राज़ी तेल है लेकिन जब छिलके को मशीन में दबा कर इसका अर्क़ निकाला जाए तो इनमें LIMONENE CITRAL ACETIC ACID FORMIC ACID LINALOOL OCTYL ALCOHOL TERPINEOL के अलावह तक़रीबन अठारह और अज्ज़ा अभी तक शनाख़्त हो सके हैं। कहते हैं कि इल्में कीम्या में बेहतर वसाइल में तरक़्क़ी के बअद मज़ीद भी मअलूम होंगे। उम्दह तरीन मुसफ़्फ़ह जूस के कीम्यावी तज्ज़िया पर इसमें छिलके के अज्ज़ा भी भी मिलते हैं। इनकी मौजूदगी हल्की सी कड़वाहट देती है मगर कुछ अरसह बअद इन्हीं की वजह से जूस में ख़मीर उठता है और कुछ हिस्सा अलकुहल में तब्दील हो जाता है।

संगतरे के कीम्यावी अज्ज़ा का ख़ुलासह:

इसमें मौजूद मिठास में चीनी के अलावह ग्लूकोज CALACTOSE LEVOLUSE मिलते हैं। जूं-जूं संगतरह पकता है, चीनी की मिक़दार कम हो कर दूसरी शकरें बढ़ जाती हैं।

संगतरे में पाई जाने वाली चीज़ों में हाज़िम जोहरों यअनी ENZYMES की ख़ासी मिक़दार मिलती है। अब तक लोगों को PEROXIDASE PECTINESTERASE INDOPHENOL OXIDASE PHOSPHATASE के अलावा चंद और जौहर शनाख़्त हुए हैं। यह जौहर जिस्म के अंदर ख़ुराक के जुज़्वे बदन बनने के अमल और दूसरे कीम्यावी अफ़आल में बड़े मुफ़ीद होते हैं। इन जोहरों में से बअज़ गोश्त और दूध में भी मिलते हैं।

संगतरे में ऑक्सीलिक एसिड मअमूली मिक़दार मे पाया जाता है जिन लोगों को गुर्दे की तकलीफ़ हो या पेशाब में जलन महसूस होती हो, अगर वह ज़्यादह मिक़दार में संगतरे खाएंगे तो इनकी जलन में इज़ाफ़ह हो सकता है लेकिन अमली तौर पर ऐसा देखने में नहीं आया। इससे मअलूम होता है कि यह कीमयात, पेट में अमले इनहज़ाम पर यूं असर अंदाज़ होते हैं कि ऑक्सलेट बनने नहीं पाते।

यह एक मशहूर हक़ीक़त है कि संगतरह खाने से वबाई इमराज़ और सोज़िशों के ख़िलाफ़ कुव्वते मुदाफ़िअत पैदह होती है। यह दुरुस्त है कि मिठास

और विटामिन इस काम में मददगार होते हैं लेकिन यह महज़ इनकी सलाहियत नहीं तफ़सीली मुतालअ़ पर संगतरे में लहमियात की एक मोअ़तदिल मिक़दार मिलती है। इनमें HISTADINE वह ईमोनियाई तिर्शा है जिससे लबलबा में इंसूलीन बनती है इसके अलावह CHOLIN HESPERIDINE AGRININ ASPARAGINE STACHYDRINE मिलते हैं। इनमें से हर जगह को तक़वियत देता, जिस्म क़ो तवानाई और कुव्वते मुदाफ़िअत देता और गुदूदों को इनके कीम्यावी जौहर तैयार करने के लिए ख़ाम माल मुहैय्या करता है। संगतरे में विटामिन जे या सी वाफ़र मिक़दार में होती है। अगर यह दरख़्त के साथ पका हो तो विटामिन की मिक़दार ज़्यादह होती है। हर ग्राम जूस में निस्फ़ मिली ग्राम विटामिन "जे" मिलती है। इसके अलावह विटामिन बी और ए की मअमूली मिक़दार, ख़ून पैदा करने वाला फ़ोलिक एसिड भी मिलता है। आअसाबी सोज़िश को रोकने वाले विटामिन बी के अज्ज़ा भी होते हैं। जापन में पाए जाने वाले क़लमी संगतरों से एक ग्लूकोसाइड RUTIN दरयाफ़्त हुआ है। इसमें अजीब ख़सलत यह है कि ख़ून की बारीक नालियों यअनी अरूक़े शेरिया की हिफ़ाज़त करता है और इसके ख़लियों के दरमियानी जगह इस तरह हिफ़ाज़त करता है कि वहां से कोई सय्याल निकल कर जिस्म बाफ़्तों में दाख़िल न हो सके। इन असरात की बिना पर विटामिन पी "जे" किसी भी हिस्सए जिस्म से बहने वाले ख़ून को बंद करने और वरम के इलाज में शोहरत रखते हैं।

इन अहम अजज़ा के अलावह संगतरे में PECTIN भी पाई जाती है। यह आंतों में पैदा होने वाली लहरों को कम करती और इस्हाल के इलाज में मुफ़ीद है।

अतिब्बा जदीद के मुशाहिदात:

इस ख़ानदान के तमाम अफ़राद मुक़व्वी मेअ़दा कासरुर्रियाह, मुक़व्वी, ख़ुश्बूदार और सकरवी का इलाज हैं। इसके फूलों से कशीद किया हुआ तेल न सिर्फ़ यह कि एक उम्दह ख़ुश्बू है बल्कि मेअ़दे को तक़वियत देता है। और रियाह को ख़ारिज करता है इसके छिलके और पत्तों का तेल जरासीम कुश और कासरुर्रियाह है।

संगतरह ख़ून को साफ़ करता है, भूख बढ़ाता है। खाने के साथ इसका इस्तेअमाल हाज़िम है। इसका अर्क़ मुफ़र्रह, खांसी, बलगम, ज़ियाबेत्स, जिगर और दिल की ख़राबियों मे बड़ा मुफ़ीद है। संगतरे की मिठास LEVOLUS ज़ियाबेत्स के मरीज़ों में बड़ा मुफ़ीद है। सुफ़रावी इस्हाल को दूर करता है। जिन बच्चों को कमज़ोरी और इस्हाल हमेशह रहते हों इनको संगतरे का अर्क़ उबले पानी में हम वज़न मिलाकर छान कर हर तीन घंटे बअद चम्चह–चम्चह पिलाना फ़ाएदे का बाइस होता है। कमज़ोर बच्चों को संगतरह और चकोतरा हम वज़न अर्क़ शहद में मिलाकर देना ख़ून की कमी भी दूर करता है।

संगतरे का छिलका सुखा कर देना क़ै को रोकता और पेट के कीड़ों से बचाता है। भूख बढ़ाने के लिए इसका टिंकचर इस्तेअमाल किया जाता है। जब

आंतों और मेअ्दा में ख़राश की वजह से पेट में तबख़ीर रहे तो यह इस मुसीबत का एक आसान हल है, संगतरे के छिलकों से बना हुआ मार्मलेड बदहज़मी के लिए नाश्ते में मुफ़ीद इज़ाफ़ह है। इस मार्मलेड के एक दो चमचे डबल रोटी पर लगा कर खाने से ग़िज़ाइयत भी मयस्सर आती है। न्यू हस्पताल में सरजरी के एक जय्यद उस्ताद पिछले चालीस साल से नाशते में संगतरे के छिलके का मार्मलेड खा रहे हैं। अब वह यह ख़ुद तैयार करते हैं। इनको शिकायत है कि बाज़ार की बोतलों नें मिठास ज़्यादह होती है जिससे छिलके कड़वाहट का ज़ाएकह दब जाता है। चहरे की कीलों, मुहासों पर छिलके को रगड़ने से फ़ाएदा होता है। बअज़ लोग इसे झाइयों का इलाज भी बताते हैं लेकिन इनके रगड़ने से दाग़ भी पड़ सकते हैं। संगतरे के फूलों से कशीद किया हुआ पानी ORANGE WATER हिस्टीरिया, घबराहट और आअसाबी ख़लल के लिए एक मुफ़ीद दवाई है।

गंठिया, नुक़रस के मरीज़ों के लिए संगतरे के छिलके सुखा कर इनको पीस कर मेग्निशिया कारबोनेट मिलाकर देने से बदहज़मी रफ़अ होती है और पेट की जलन कम हो जाती है और इसी तेल की मालिश जोड़ों की दर्दों में मुफ़ीद है।

भारती डाक्टर लक्शमी पाथी बयान करते हैं कि मोतिया बिंद के एक सत्तर सालह मरीज़ की आंखों में हर सुबह लीमूं के ताज़ह अर्क़ के चंद क़तरे डालने से मोतिया रोज़–बरोज़ कम होता गया और बीनाई दुरुस्त हो गई। अंदरूनी जरयाने ख़ून में लीमूं की सिकंजीन मुफ़ीद है।

कुछ डाक्टर दअ्वा करते हैं कि पेशाब में ऑक्सलेट और यूरिट के मरीज़ों को अगर ज़्यादह अरसे तक लीमूं का अर्क़ पिलाया जाए तो उनको पथरी बन जाती है इसलिए पेशाब में तेज़ाबियत के मरीज़ों के लिए अरसे तक लीमूं पीना ख़तरनाक हो सकता है।

जिन लोगों को नफ़्सियाती वजूहात की बिना पर इख़्तिलाजे क़ल्ब की शिकायत होती है वह अगर रोज़ाना आध औंस अर्क़ लीमू पी लिया करें तो तंदरुस्त हो जाएंगे। भारती डाक्टरों ने पुराने मरीज़ों को अर्क़ के 12 औंस तक पानी और मिठास मिलाकर किसी नुक़सान के बग़ैर दिए हैं। सब्ज़ चाए में, लीमूं डाल कर पीने से मलेरिया बुख़ार टूट जाता है।

ज़ैतून का तेल, अंडे की सफ़ेदी और लीमू के अर्क़ को अच्छी तरह बिलोकर पीने से ज़ुकाम, खांसी, बलग़म और मौसम सर्मा की कमज़ोरी से निजात हो जाती है। जमाल गोटह कास्ट्रॉइल और इस क़िस्म की दूसरी ज़हरों का असर ज़ाएल करने के लिए चार औंस अर्क़ लीमू हम–वज़न पानी मिलाकर बार–बार देना इस्हाल और क़ै को फ़ौरन रोक देता है। सर में लीमू रगड़े से बफ़ा (सीकरी) ख़त्म हो जाती हे।

वैदिक तिब में लीमू के अर्क़ के साथ काफ़ूर मिलाकर जज़ाम में लगाने और खाने को देते हैं। लीमू के अर्क़ में गुलाब और गिलिसरीन मिलाकर चेहरे के कीलों और हाथों के खुरदुरे पन को दूर करने से लिल्द साफ़ हो जाती है।

संगतरे को भूभल में ख़ूब गर्म करके इसका पानी निकाल कर इसमें शहद मिलाकर रोज़ाना सुबह एक चम्चह देने से पुरानी खांसी ज़ुकाम और गले की ख़राश में मुफ़ीद है।

मौसम सरमा के ज़ुकाम में संगतरे के अर्क़ को गर्म करके इसमें शहद और पानी मिलाकर देना एक मशहूर नुस्ख़ा है। कुछ लोग सरसों के तेल, लाल मिर्च, नमक, कलौंजी और लोंग मिलाकर लीमू का अचार बनाते हैं। यह अचार भूख बढ़ाता है अलबत्ता तेज़ाबियात के मरीज़ों के लिए नुक़सान देह है। संगतरे का तेल जिस्म पर लगाने से मच्छर भाग जाते हैं।

होम्योपैथिक तरीक़ह इलाजः

इस तरीक़ए इलाज में संगतरे को CITRUS VULGARI के नाम से इस्तेअमाल किया जाता है। यह दवाई कड़वे संगतरों से बनाई जाती है और इसको ज़्यादह तौर पर सर दर्द, मतली, चक्कर, क़ै के लिए देते हैं। ऐसे मरीज़ों के चहरे के दाएं तरफ़ शदीद दर्द होता है। जो कनपटी के इतराफ़ में भी जाता है। मरीज़ को कसरत से जमाइयां आती हैं और सोते में नींद बार-बार टूट जाती है।

इसी तरीक़ह इलाज में चकोतरे से CITRUS DOCUMANA तैयार होती है। इसे चक्कर आने, कान बजने, कनपटी पर दबाओ, हाथों में सुर्ख़ी, जिस्म में सर्दी की कैफ़ियत और हथेलियों में जलन के लिए देते हैं।

लीमू से तैय्यार होने वाली CITRUS LIMONIUM गले की ख़राबियों अअसाबी दर्दों, ख़ास तौर पर कैंसर की वजह से होने वाली शदीद दर्दों के लिए दी जाती है। कहा जाता है कि जिन औरतों को माहवारी की मानिंद ख़ून महीने में कई बार आए या मुसलसल जारी रहता हो उनके लिए यह दवाई बड़ी मुफ़ीद हे।

संगतरे का छिलका पानी में उबाल कर देने से आंतों की हरकात में इज़ाफ़ा होता है। अगर किसी वजह से पित्ता सुफ़रा पैदा न कर रहा हो तो छिलके का जोशांदह इसे तहरीक दे कर पैदाइश में इज़ाफ़ह करता है।

सौठ......अदरक-जंजबील
GINGER
ZINGIBER OFFICINALE

अदरक एक मश्हूर सब्ज़ी है जो दुनिया के अक्सर मुमालिक में खाना पकाने में और बअज़ औक़ात अपनी मुनफ़र्द, तेज़ और ख़ुश्गवार ख़ुशबू की वजह से मशरूबात को दिलपसंद बनाने के काम आता है। दुनिया के अकसर मुलकों में अदरक की काश्त होती है, अरब मुमालिक में ओमान और यमन इसके लिए मश्हूर हैं। जुनूबी हिंद में मद्रास, ट्रावंकूर कोचीन और तिर्चनापल्ली में इसकी काफ़ी काश्त होती है। बंगला देश में भी इसका बड़ा मरकज़ है। चंद साल पहले पाकिस्तान में अदरक की काश्त बराए नाम थी, अब काफ़ी मिक़दार में पैदा होने

लगा है।

अदरक का शुमार इन पौदों में से है जिनका ख़ुर्दनी हिस्सह ज़ेरे ज़मीन होता है। इसकी फूली हुई जड़ें इस्तेमाल होती हैं। माहिरीन नबातात ने जज़ाइर ग़रबुलहिंद में इसकी काश्त की तफ़सीलात को बड़ा दिलचस्प क़रार दिया है। यह उन इलाक़ों में पैदा होता है जहां गर्मी भी हो और बारिश की सालानह मिक़दार 80 इंच के क़रीब हो।

अदरक की गांठों से आंख या छिलके वाले हिस्से काट कर मार्च–अप्रैल के दौरान ज़मीन में हाथ बराबर का गड्ढा खोद कर दफ़न कर दिए जाते हैं, भारती किसान इन गड्ढों में ख़ुश्क गोबर बतौर खाद डालते हैं। कुछ दिन के बअद खेतो को पानी दिया जाता है। दिसम्बर और मार्च के दरमियान पौदों को फूल लगते हैं। जब यह फूल मुर्झा जाए और पौदो का तना सूख जाए तो वह वक़्त फ़सल काटने का होता है। ज़मीन से अदरक की गाठें निकाल कर इनको एक ख़ास क़िस्म के चाक़ू से छीला जाता है। यह काम ग़रीब ख़ानदान करते हैं। इसको छीलना एक फ़न है जो अनाड़ी अंजाम नहीं दे सकते। फिर इसको अच्छी तरह धोया जाता है और एक दिन के लिए पानी में भिगो देते हैं। बअज़ मुल्कों में अदरक को धोने में चूना इस्तेअमाल होता है। बरतानियह के किसानों का ख़याल है कि अदरक को चूना लगाने के बअद इसे कीड़ा नहीं लगता। अदरक को सफ़ेद करने के लिए इसे ब्लीचिंग पावडर और गंधक के हल्के तेज़ाब से धोने का रिवाज भी मिलता है। अदरक की गांठ में पानी को जज़्ब करने की सलाहियत पाई जाती है। इसलिए सब्ज़ी फ़रोश इसको फिर से पानी में डुबोकर भारी कर लेते हैं। ख़ुश्क करने के बअद अदरक आम फ़रोख़्त के लिए रवाना हो जाता है लेकिन सौंठ बनाने के लिए इसे चटाइयों पर धूप में फैला देते हैं। रोज़ानह उल्टा–पुल्टा किया जाता है। और छः सात दिन में सूख कर अपने पहले वज़न से 70 फ़ीसदी कम हो जाता है। आम घरेलू अदरक से सौंठ बनाना मुश्किल है।

पाकिस्तान कोन्सिल बराए साइंसी तहक़ीक़ात के डाएरेक्टर डाक्टर सय्यद फ़रुख़ हसन शाह ने अदरक को ख़ुश्क करने के बअद इसका सफ़ूफ़ तैयार किया और यह सफ़ूफ़ मुद्दतों ख़राब नहीं होता। यूं तो अदरक का सफ़ूफ़ बाहर के मुल्कों से भी आता है मगर पाकिस्तानी सफ़ूफ़ मैअयार और ज़ाएक़ेह में दूसरों से बहुत बेहतर है।

दुनिया की मंडियों में अदरक को अफ़रीक़ी, जापानी, कलकत्ता और कोचीन क़िस्मों के लिहाज़ से बयान किया जाता है क्यूंकि इनमें से हर एक की शक्ल और ज़ाएक़ह मुख़्तलिफ़ होता है। पहली जंगे अज़ीम से पहले हिंदुस्तान का अदरक सारी दुनिया में जाता था। फिर सैराल्यून और ग़रबुलहिंद मुक़ाबला पर आ गए और अब भारती बराम्दात में ख़ासी कमी हो गई है।

अदरक ज़ामानाए क़दीम से ख़ुराक को लज़ीज़ बनाने और इलाज के लिए इस्तेअमाल में है। क़दीम चीनी मुआशरह और इलाज में अदरक को अहमियत रही है। पराचीन भारत में भी यह मक़बूल था और वेदों में इसका ज़िक्र मिलता है।

रूम और यूनान क़दीम में भी यह मक़बूल था मगर वह इसे अरब मुमालिक की पैदावार गरदांते थे। क्यूंकि इसकी दरामद बहीरए क़लज़ुम के रास्ते से होती थी। इसके घरेलू और तिब्बी इस्तेअमाल इतने ज़्यादह हैं कि इनको असानी से शुमार में लाना मुहाल है। यौरप में अब यह अपनी ख़ुश्बू की वजह से बीअर शराब में शामिल किया जा रहा है। फिर खाने का सोडा के साथ सौंठ मिलाकर जिंजर की बोतल पेट के दर्द में बड़ी मक़बूल है। अब लोगों ने इस के शर्बत बनाए हैं। पाकिस्तान में भी एक इदारह ज़ंजबील का शर्बत तैयार करता है।

मज़कारनी का ख़याल है कि कोरिया की मश्हूर मुक़व्वी बूटी "जनसंग" भी अदरक ही की एक क़िस्म है और इसे जो शोहरत मिली है वह अदरक के अपने असरात हैं। वहां के अदरक में मुम्किन है आबो–हवा की वजह से कुछ बहतर हों। और दूसरे मुमालिक के अदरक की निस्बत फ़वाइद ज़्यादह हों।

इरशादे रब्बानी:

يسقون فيها كاساً كان مزاجها زنجبيلاً. (١٧۔م۔الانسان)

(इनको ऐसे ग्लासों से पिलाया जाएगा जिनमें अदरक की महक होगी।)

जन्नत में जगह पाने वालों को जो अच्छी चीज़ें मिलेंगी उनके तज़किरे में कुरआन ने बयान फ़रमाया है कि उनको मश्रूबात ऐसे बरतनों में दिए जाएंगे जिनकी साख़्त में ख़ुश्बू होगी। हौज़े कौसर पर मिलने वाले बर्तनों में कस्तूरी की महक बताई गई है। जबकि जन्नत की नहरों का पानी अदरक की ख़ुश्बू के साथ मयस्सर होगा।

इरशादाते नबवी सल्ल॰

हज़रत अबू–सईद अलख़िदरी रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं।

اهدى ملكالروم الىٰ رسول الله صلى الله عليه وسلم جرّه زنجبيل فاطعم كل انسان قطعةً واطعمني قطعةً. (ابونعيم)

(शहंशाहे रौम ने रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में अदरक के मुरब्बे का एक मर्तबान तोहफ़े के तौर पर पेश किया। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे क़बूल फ़रमाने के बअद तमाम लोगों को इसका एक–एक टुकड़ा मरहमत फ़रमाया और मुझे भी एक टुकड़ा मिला जिसे मैंने खाया।)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

यह जिस्म में गर्मी पैदा करता है। (इसकी कीम्यावी हैइयत से ज़ाहिर है। क्यूंकि 100 ग्राम जिस्म में हिद्दत के 472 हरारे पैदा करता है।) ख़ुराक को हज़्म करने में मददगार है। पेट को नर्म करता और क़ब्ज़ को रफ़अ करता है लेकिन मुस्हल नहीं। पेट और जिगर से पुराने सुद्दे जल्द निकाल देता है। बल्कि सक़ील अश्या की वजह से पैदा होने वाली तब्ख़ीर को दूर करता है। आंखों में सोज़िश की वजह से नज़र में कमी आ गई हो तो उसे दूर करता है। इस ग़र्ज़ के लिए

अदरक में सलाई डाल कर आंख में फेरी भी जाती है आंतों से ग़लीज़ माद्दों और गंदी हवा निकालता है। मुक़व्वी बाह है।

अगर दो माशह अदरक हम–वज़न खांड के साथ मिलाकर गर्म पानी के साथ खाया जाए पेट की हज़्म करने वाली रतूबतों में इज़ाफ़ह करता है। इस सिलसिले में इब्नुल क़ैय्युम रह. के अलफ़ाज़ से ऐसा गुमान पड़ता है कि यह लबलबा की रतूबतों में भी इज़ाफ़ह करता है जिससे मुराद यह हुई कि ज़ियाबेत्स में मुफ़ीद होगा। खांसी और बल्ग़म को दूर करने वाले मुरक्कबात में अदरक की शमूलियत इनके फ़ाएदे को बढ़ाती है।

मुसलसल ख़राबी की वजह से मेअ़दा अगर सुस्त पड़ गया हो, भूख कम हो गई हो, और खाना हज़्म होने में देर लगती हो तो अदरक बड़ा मुफ़ीद है। यह सांस से बदबू को दूर करके मुंह के ख़राब ज़ाएक़े को ठीक करता है। ज़हबी की तहक़ीक़ात के मुताबिक मक्खन के हमराह अदरक खाने से बलग़म ख़त्म हो जाती है।

मछली के साथ अदरक खाने से ज़्यादह प्यास नहीं लगती। इसका मुरब्बा इस्तेमाल के लिए आसान और मुफ़ीद शक्ल है।

अतिबाए क़दीम के मुशाहिदात:

इसकी पहाड़ी क़िस्म की जड़ बड़ी और मोटी होती है। मैदानी क़िस्मों में बंगाली अदरक से कच्चे आम की मानिंद ख़ुश्बू आती है। जिसे आम की सौंठ भी कहते हैं। पहले ज़माने में चीन से इसका मुरब्बह आता था जिसमें रेशे नहीं होते थे। वह मुरब्बह साज़ी के अमल में रेशों को गला लेते थे। या उनके यहां रेशों के बग़ैर की कोई क़िस्म पाई जाती थी। इसका मुरब्बह अगर शहद में बनाया जाए तो ग़लीज़ माद्दों के इख़राज में ज़्यादह मुफ़ीद होता है। हाज़िक़ुल मुल्क हकीम मुहम्मद काज़िम ने लिखा है कि सौंठ का मुरब्बह बनाने के लिए इसके बड़े बड़े टुकड़े काट कर इनको बीस रोज़ तक पानी में भिगोएं, फिर निचोड़ कर इसमें पानी और शहद मिलाकर मिट्टी की हांडी में ख़ूब जोश दें। फिर शहद को अलाहिदा करके इसकी झाग दूर करें। और अगर सौंठ के 100 टुकड़े हों तो इसके लिए दारचीनी, लौंग, इलाइची हम–वज़न मिलाकर उनके अढ़ाई तोले पीस कर मिलाएं। और इसी निस्बत के मुताबिक़ तीन रत्ती कस्तूरी मिलाना भी मुफ़ीद होगा (यह बात तवज्जह में रहे कि असल कस्तूरी अब एक अनक़ा जिंस है। बाज़ार में मिलने वाली कस्तूरी मुख़्तलिफ़ कीम्यावी तराकीब से तैयार होती है। जो कि नुक़सान देह भी हो सकती है।) यह मुरब्बह गुर्दा, मसानह और मेअ़दे की कमज़ोरी को रफ़अ करता है। पेशाब आवर है। मलेरिया बुख़ार की शिद्दत को कम करता है।

अदरक मेअ़दे और दिमाग़ के लिए मुक़व्वी है। भूख बढ़ाता है, हाफ़्ज़े की ख़राबी को दूर करता है। रियाह को तहलील करता और ग़िज़ा को हज़्म करता है। एक ही वक़्त में यह क़ाबिज़ भी है और दस्त आवर भी। अगर पेट में ग़िलाज़त जमा हो तो इसको निकालने के लिए जुल्लाब लाता हैं जब वह निकल जाती है तो क़ाबिज़ बन जाता है। अतिब्बा क़दीम सात माशह सौंठ को पीस कर

इसमें खांड मिलाकर पानी के हमराह पेट को साफ़ करने और सीने में जमी हुई बलग़म निकालने के लिए देते आए हैं। इस नुसख़े के बअद बलग़म खांसी के ज़रिए ख़ारिज होती है। हमारे तजुर्बे में इस ग़र्ज़ के लिए शहद में इस का मुरब्बह बहतरीन सूरत है।

अदरक के साथ पिस्तह और बादाम मिलाकर खाना मुक़व्वी बाह है। मछली खाने के बअद सौंठ का सफ़ूफ़ फांक लेने से बअद में प्यास नहीं लगती। और भूख बढ़ती है।

चूंकि अदरक जिस्म से ग़लीज़ रतूबतों को निकालता है इसलिए जब किसी जगह वरम हत्ता के फ़ीलपा भी हो तो इसके खाने से फ़ाएदा होता है। दमे के मरीज़ों को इसके इस्तेअमाल से राहत होती है। आंख में सलाई लगाने से जाला और फोला ठीक होते हैं। इसको पीस कर तेल में मिलाकर मालिश करने से पट्ठों की दर्दें ठीक हो जाती हैं। यह नुसख़ा हमने सैंकड़ों मरीज़ों पर काम्याब पाया।

वैद कहते हैं कि सौंठ को बकरी के दूध में मिलाकर सिर के इतराफ़ में लेप करने से दर्दे शक़ीक़ा जाता रहता है। इसे बकरी के दूध के साथ खाने से खाना जल्द हज़्म होता है। क़ै रुकती है और जिस्म में हरारत पैदा होती है। और कुव्वते बाह में इज़ाफ़ह होता है। सौंठ के साथ बेलगिरी (बही) का जोशांदह पीने से गला साफ़ होता है। आवाज़ में निखार आती है। क़ै और हैज़ा ठीक हो जाते हैं। सौंठ के साथ आमलह और पीपल की जड़ पीस कर शहद में मिला कर बार बार चटाने से हिचकी बंद होती है। हिचकी के लिए ख़ालिस सौंठ का सफ़ूफ़ भी अगर बकरी के दूध के साथ दिया जाए तो फ़ाएदह होता है। सौंठ और सैंधा नमक पीस कर सूंघने से बादी का सर दर्द जाता रहता है। वैदिक तिब में बुख़ार और सोज़ाक को दूर करने के लिए जो खार, गोखरू और सौंठ का जोशांदह बनाकर पिलाने की तज्वीज़ की गई है। हमारी राए में यह नुस्ख़ा नुक़सान देह है। जो खार को अंदरूनी इस्तेअमाल में लाना हमेशा नुक़सान का बाइस होता है।

वैद सौंठ को गाए के पेशाब के साथ फांकने को चंबल पा और जिस्म के दीगर ओराम के लिए मुफ़ीद क़रार देते हैं। ज़ाहिरी तौर पर यह नुस्ख़ा फ़ुज़ूल मालूम होता है। लेकिन इसे माअमूली फ़र्क़ के साथ बारगाहे नबुव्वत से मुजर्रिब होने की सनद हासिल है इसका तफ़सीली ज़िक्र दूध के ज़िम्न में किया जा रहा है।

सौंठ के साथ जाएफ़ल और इसगंध को पीस कर तेल में मालिश करना जोड़ों के दर्दों में अज़हद मुफ़ीद है। हमने इस नुसख़े का ज़ैतून के तेल में डाल कर पांच मिनट उबालने के बअद अगले रोज़ छान कर मालिश में इस्तेअमाल किया। अज़हद मुफ़ीद पाया।

कीम्यावी तज्ज़िया?:

अदरक में 12–15 फ़ीसदी पानी में हल हो जाने वाले नम्कियात होते हैं। और 1–4 फ़ीसदी के दरमियान एक फ़राज़ी तेल होता है। जिसकी मिक़दार फ़सल

और काश्त के इलाके के मुताबिक बदलती रहती है। जैसे कि अफ़रीका में 2 फ़ीसदी। जमीका में एक फ़ीसदी और भारती अदरक में तीन फ़ीसदी। इस तेल को OIL OF GINGER कहा जाता है। अदरक की ख़ुश्बू इसी तेल की वजह से होती हैं जिस के अज्ज़ाए तर्कीबी में तारपीन के ख़ानदान के अनासिर जैसे कि L.D. CAMPHENE और B.PHELLANDRENE मज़ीद बरां ZENGBERENE CITRAL CINEOLF और BORNEOL होते हैं। अदरक की ख़ुश्बू की तुंदी इसके जौहर GENEROL की वजह से है जो कारबॉलिक एसिड के ख़ानदान का शहमी बीरोज़ह है। इसे अगर दो फ़ीसदी कास्टिक पोटाश के साथ उबाला जाए तो ख़ुश्बू ख़त्म हो जाती है। इसे दीगर कीम्यात के साथ उबाल कर एक और ZINGERONE हासिल किया जाता है। इसमें भी ख़ुश्बू इसी तरह होती है मगर वह मीनी और मुलायम होती है। इसमें भी ख़ुश्बू इसी तरह होती है मगर वह मीनी और मुलायम होती है। यह एक सफ़ेद रंग का सफ़ूफ़ है कीम्यावी तौर पर VANILIN के ख़ानदान से है और अब कुछ इदारे इसी से अदरक का मसनूई तेल तैयार करने लगे है।

एक सो ग्राम ख़ुश्क अदरक (सौंठ) में दीगर अनासिर की तर्कीब यूं है:

FATS 3.3 CARBOHYDRATES 20.7 PROTIENS 7.4
MOISTURE 472 DODIUM 5 POTASSIUM 943
CALORIES 333
MAGNESIUM 265 PHOSPHORUS 177 SULPHUR 1280 FE 109
CHLORIDES 62

जदीद मुशाहिदात:

लहसन के बारे में अजीबो ग़रीब कमालात मशहूर हैं। कुछ का ख़याल है कि इसको खाने से ख़ून की नालियां खुल जाती हैं और कुछ इस उम्मीद पर इसे मुद्दतों खाते रहते हैं कि इससे ब्लड प्रेशर में कमी आती है। हालात और वाक़िात इस अम्र के शाहिद हैं कि लहसन के सालों इस्तेअमाल के बावजूद यह फ़वाइद हरगिज़ हासिल नहीं होते लोग लहसन और इसकी गोलियां खाते रहते हैं और उनको दिल के दौरे पड़ते रहते हैं। माहिरीन कीम्या ने 1846 में लहसन से ऐसे अज्ज़ा हासिल किए थे जिनके इस्तेअमाल से तपे मुहर्रिक़ा समैत मुतअद्दिद बीमारियों के जरासीम हलाक हो जाते हैं। लेकिन बयालीस साल गुज़रने के बावजूद इनमें से कोई दवाई भी बाज़ार में उफ़ादियत के दावे के साथ पेश न हुई। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे ना पसंदीदह फरमाया। जिस चीज़ को उन्होंने नापसंद किया वह कभी भी मुफ़ीद नहीं हो सकती। दरहक़ीक़त शिफ़ह के वह तमाम फ़वाइद जो लहसन से मौसूम किए जाते हैं वह तमाम के तमाम अदरक में पाए जाते हैं। यह एक हक़ीक़त है कि अदरक ख़ून की नालियों पर जमी हुई चर्बी की तहें उतार देता है। यह दिल के फ़ेएल को मज़बूत करके दौराने ख़ून में सुस्ती की वजह से पैरों या दूसरें

मक़ामात पर जमअ पानी को निकाल देता है। इसका आसान मुशाहिदह बवासीर की सूरत में किया जा सकता है। जिसके असबाब में पेडू के इलाक़े में दौराने ख़ून की सुस्ती, पुरानी क़ब्ज़ और जिगर की ख़राबी ज़्यादह अहम हैं। अदरक खाने से जब बवासीर में कमी आती है तो यह इस अम्र का सबूत है कि इसने ख़ून का दौरान दुरुस्त किया और नालियों के ठहराओं को दूर कर दिया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बवासीर से हत्मी शिफ़अ के लिए अंजीर तज्वीज़ फ़रमाई है। हमने पिछले दस सालों में इसके सैंकड़ों मरीज़ों को अंजीर खिलाई बल्कि ब्लड प्रेशर और इमराज़े जिगर में भी अंजीर दी और नताइज हमेशह हौसलह अफ़ज़ा रहे। चूंकि अदरक के फ़वाइद अंजीर से मिलते जुलते हैं इसलिए दोनों को मिलाकर इस्तेअमाल करवाया गया तो बेहतरी ज़्यादा जल्द हुई। इत्तिफ़ाक़ से आजकल लाहौर के एक इदारे ने प्लास्टिक की डब्बियों में अदरक का मुरब्बा बनाना शुरू किया है। अकसर मरीज़ों को किसी लम्बे नुसख़े की बजाए खाने के बअद अंजीर के दो–तीन टुकड़े और अदरक का मुरब्बह बताया और सब ख़ुशो–ख़ुर्रम रहे।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेट में पानी (इस्तिसक़ा) और जिस्म की सूजन के चंद मरीज़ों को ऊंट का पेशाब और दूध तजवीज़ फ़रमाया। जिससे इनको चंद दिनों में शिफ़ा हुई। वैदिक तिब में अदरक के साथ गाए के पेशाब की मिलावट इस नुसख़े की तब्दील शुदह सूरत है। लेकिन इसकी उफ़ादियत में एक फ़न्नी नुक़्स है, इसलिए हमने इसे इस सूरत में इस्तेअमाल करना मुनासिब न जाना।

भारती माहिरीन ने अदरक के असरात का खुलासा बयान करते हुए इसके कासिरुर्रियाह मुहर्रिक, मुक़व्वी, हाज़िम, पेशाब आवर, जिस्म से औराम को दूर करने वाला क़रार दिया है। इसके मक़ामी असरात को ख़ून के दौरान में इज़ाफ़ह करने वाला और ठंडक मुहैया करने वाला बयान करते हैं, अदरक के साथ फ़िलफ़िल सियाह और फ़िलफ़िल दराज़ मिलाकर "तरीकाटो" नाम का मशहूर मुरक्कब बनता है। जिसे बदहज़्मी, तबख़ीर मेअदह, क़ौलेंज, कै, इस्तिफ़राक़ खांसी, ज़ुकाम, नज़ला, दमा में बड़ी कामयाबी से दिया जाता है।

"इलाई पाक" के नाम से भारत में एक शर्बत बड़ा मक़बूल है। इसमें अदरक का रस निकाल कर इसमें पानी और खांड मिलाकर शर्बत की मानिंद क़वाम बनाया जाता है। फिर इसमें इलाइची सब्ज़, लौंग, जावितरी, और ज़ाफ़रान मिलाकर एक पोटली डाल कर मज़ीद उबालते हैं। इन अदविया का असर जब शर्बत में चला जाता है तो उसे उतार का ठंडा करके उबली हुई बोतल या पत्थर के मर्तबान में रखा जाता है। इन तमाम नुस्ख़ों में मसालेह ज़्यादा हैं। जिन लोगों की आंतों में सोज़िश होगी या वह तेज़ाबियत का शिकार होंगे इनको इनके इस्तेअमाल से तकलीफ़ में इज़ाफ़ह होगा। इसलिए यह नुसख़े सिर्फ़ उन मरीज़ों के लिए हैं जिनके पेट में तेज़ाब कम हो।

बदहज़्मी और भूख में कमी के लिए अदरक और लीमूं के हमवज़न इसमें

नमक लाहौरी मिलाकर खाने से पहले दिया जाता है। अदरक के साथ नमक मिलाकर अगर खाने से पहले खाया जाए तो यह ज़बान से मैल उतारता और गले को साफ़ करता है। अदरक को चबाने से मुंह में लुआब पैदा होता जिससे गला साफ़ हो जाता है। दो तोलह अदरक का पानी सात तोला गाए के दूध में इतना पकाया जाए कि वह आधा रह जाए। इसमें खांड मिलाकर रात सोते वक़्त देना दिमाग़ी बोझ को कम करने में मुफ़ीद है।

ज़्याबेत्स की दोनों शदीद क़िस्मों के लिए अदरक के पानी में शहद मिलाकर दिन में बार–बार चटाने से फ़ाएदा होता है। अदरक का जोशांदह और सौंठ का सफ़ूफ़ सोडा बाईकारिब के हमराह देने से जोड़ों की सोज़िश और गंठिया ठीक हो जाते हैं। "सिम्सर कारा चूरन भारती अतिब्बा का एक मक़बूल नुसख़ा है। जिसमें इलाइची ख़ुर्द एक तोलह, दारचीनी 2 तोलह, काली मिर्च 4 तोला, सुर्ख़ मिर्च 5 तोलह, सौंठ 6 तोलह और खांड 18 तोलह, इनको पीस कर चाए वाला पोन चम्मच नाश्ते के बाद बदहज़मी, पेट की ख़राबी और बवासीर में मुफ़ीद है। हमारी राए में मिर्चों की मिक़दार ज़्यादह होने के बाइस मरीज़ के पेट में जलन होगी। इसी तरह उन्होंने घी, दूघ, तेजपात, मिर्च, दारचीनी, इलाइची मिला कर हलवे की शक्ल का एक मुरक्कब तजवीज़ किया है। वजह अलमुफ़ासिल में एक तोला अदरक को 24 तोलह पानी में ख़ूब जोश देकर यह जोशांदह मरीज़ को बिस्तर पर लिटा कर देते हैं। फिर ऊपर रज़ाई दे दी जाती है ताकि ख़ूब पसीनह आए। अकसर मरीज़ इस इलाज से आराम महसूस करते हैं।

मालाबार के वैद ताज़ह अदरक का पानी निकाल कर इसको आहिस्तह–आहिस्तह इस्तिस्क़ा के मरीज़ों को देते हैं। एक भारती तहक़ीक़ी इदारे में चंद ऐसे मरीज़ों को जिनको जिगर की ख़राबी की वजह से पेट में पानी पड़ गया था, अदरक का ताज़ह पानी निकाल कर पिलाया गया, उनको बार–बार पेशाब आए और चंद दिनों में सारा पानी ख़त्म हो गया। यह नुस्ख़ह गुर्दों की ख़राबी या दिल की बीमारी से पैदा होने वाले इस्तिसक़ा में मुफ़ीद साबित न हुआ। बल्कि चंद मरीज़ों की हालत ख़राब हो गई। जिगर के पुराने मरीज़ों को भी इतना फ़ाएदह न हुआ। जितना नए मरीज़ों को हुआ। इस तहक़ीक़ में पहले रोज़ानह अढ़ाई तोलह अदरक से पानी निकाला गया और इसमें शकर मिला कर दिया गया। रोज़ानह एक तोलह बढ़ाने और पच्चीस तोलह की मिक़दार तक जाने में मर्ज़ जाता रहा। अगर इस क़िस्म के एक कोर्स से मुकम्मल फ़ाएदह न हुआ तो यही तर्कीब दोबारह इस्तेअमाल की गई।

मदरास में डाक्टर कोमन ने इस इलाज के दौरान मरीज़ की ग़िज़ा में ज़्यादह तर दूध दिया। यह नुसख़ाह इस्तिसक़ा में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूध देने वाले नुसख़े के क़रीब तरीन है।

सौंठ के साथ काली मिर्च हमवज़न पीस कर बेहोशी में नसवार देने से हिस्टीरिया का दौरह ख़त्म हो जाता है। बरतानवी मुहक़्क़िक़ बरडोड ने बदहज़मी के लिए 30 ग्रीन सौंठ, अजवाइन 60 ग्रीन, इलाइची ख़ुर्द 30 ग्रेन को

पीस कर सुबह शाम बदहज़मी के लिए मुफ़ीद बयान किया है।

भारती तबीब करनल चोपड़ा बिच्छू और सांप के काटे में अदरक और सौंठ को मुफ़ीद तरीन दवाई क़रार देते हैं।

होम्योपैथिक तरीक़ए इलाजः

इस तरीक़ए इलाज में अदरक को ZINGERONE के नाम से मुख़्तलिफ़ ताक़तों में सांस की ख़राबियों, बदहज़मी और ज़ुअफ़े बाह में दिया जाता है। जब गुर्दे काम न करें तो यह मुफ़ीद है। दर्द सर के साथ नाक पर फुंसियां हों, आंखों के ऊपर दर्द हो, पेट में खाना देर तक पड़ा रहे। खाने के बअद पेट में बोझ महसूस हो, सुबह उठने पर पेट में बोझ, छाती में जलन, क़ौलिंज, इस्हाल, मुक़अद में जलन, अंतड़ियों की सोज़िश और बवासीर में मुफ़ीद है बार-बार पेशाब आए, नाली में जलन हो पेशाब करने के बाद क़तरे गिर कर कपड़े नापाक करें आवाज़ बैठ गई हो। दमे के दोरों और ख़ुश्क खांसी में में मुफ़ीद बार बार पेशाब आए, नाली में जलन हो पेशाब के बअद क़तरे में अज़हद मुफ़ीद बयान की जाती है।

काफ़ूर......CAMPHOR
CINNAMOMUM-CAMPHORA

काफ़ूर एक रोज़मर्रह के इस्तेअमाल की चीज़ है। जो हिंद-पाक में हर जगह किसी न किसी सूरत में इस्तेअमाल होती है। इतनी कसरत से इस्तेमाल होने के बावजूद इसका दरख़्त जापान, चीन, फ़ारमूसा और बोर्नयू में होता है। इसकी बुलंदी 100 फ़ुट तक हो सकती है और दरख़्त का तना 6-8 फ़ुट कुत्र में, पत्तों के लिहाज़ से सदा बहार है। इसकी काश्त सतह समंदर से 4000 फुट की बुलंदी से कम पर नहीं होती। और इन इलाक़ों में ख़ूब फलता फूलता है, जहां पर सालानह 40 इंच से ज़्यादा बारिश होती है।

श्री-लंका में इसे 5000 फुट की बुलंदी पर काश्त किया गया है। हिंदुस्तान में देहरा-दून, नीलगिरी, सहारनपुर, कलकत्तह और मैसूर में काफ़ूर के दरख़्त तजुर्बाती तौर पर लगाए गए और ख़ूब बढ़ रहे हैं। लाहौर के बाग़े जिनाह में भी इसका दरख़्त मौजूद है और शक्लो सूरत से ठीक ही मअलूम होता है। कहा जाता है कि रेतीली ज़मीन में पत्तों की खाद डाल कर इसे गहराई में बोया जाए और इस इलाक़े में मौसम सरमा में सरदी ज़्यादा न पड़ती हो तो दरख़्त बढ़ जाता है।

तिब्बे यूनानी में एक तो आम काफ़ूर बयान किया गया है। यह वह काफ़ूर है जो काफ़ूर क़ैसूरी भी कहलाता है। डलियों और क़ल्मों की सूरत में मिलता है। यह काफ़ूर जापान और फ़ार्मूसा से आता है। जबकि मजमअ़ अलजज़ाइर शर्क़ुल हिंद और समाट्रा का काफ़ूर "भीम सैनी" कहलाता है।

काफ़ूर ऐसे दरख़्तों से हासिल किया जाता है जिनकी उम्र 50 साल से ज़ाइदह हो दरख़्त को गिराने के बअद इसकी हरी शाख़ों के छोटे–छोटे टुकड़े किए जाते हैं। फिर इनको ऐसे कनस्तरों में डाला जाता है जिनके पैंदों में सुराख़ होते हैं। फिर इनमें भाप दाख़िल की जाती है। भाप की हिद्दत से काफ़ूर टहनियों से निकल कर ड्रम के इतराफ़ में सफ़ूफ़ की सूरत में लग जाता है। जबकि सुराख़ों में से एक गाढ़ा सयाल नीचे गिरता है जिसको रौग़ने काफ़ूर कहते हैं। इसके बअद इन लकड़ियों और पत्तों को अर्क़ निकालने की तर्कीब की मानिंद कशीद करते हैं। इस अमल के दौरान हासिल होने वाला काफ़ूर उम्दह नहीं होता है इसमें चूना और कोएलह मिलाकर इसको साफ़ किया जाता है। फिर क़लमें या टिकिया बना ली जाती हैं। आम तोर पर दरख़्त की जड़ों में काफ़ूर की मिक़दार ज़्यादह होती है।

पहली जंगे अज़ीम के दौरान जर्मनी ने तारपीन के तेल से मसनूई काफ़ूर बनाने का तरीक़ह ईजाद किया और अब इंग्लिस्तान, रूस, अमरीका, इटली, स्पेन, और चीन में मसनूई काफ़ूर बनाने की सनअ़त बाक़ाएदा मौजूद है। बल्कि पाकिस्तान में जितना भी काफ़ूर आज कल इस्तेअमाल में है वह मसनूई है। असल कफ़ूर चूंकि महंगा होता है इसलिए लोग दरामद करने में हिचकिचा रहे हैं।

कीम्यावी तज्ज़िया पर मअलूम हुआ है कि अदरक, दारचीनी, रैहान, ख़ालंजान, इलाइची ख़ुर्द और रबनाद (कपूर–कचरी) में भी काफ़ूर बतौर जुज़्व शामिल होता है। यह तमाम अदवियह महंगी हैं और इनसे काफ़ूर निकालना महंगा होगा। इसलिए रूस में OCIMUM ख़ानदान के मुतअद्दिद दरख़्तों से कशीद करके काफ़ूर निकालने के तजुर्बात किए गए जो कि काम्याब रहे। और इस क़िस्म का काफ़ूर असली दरख़्त के काफ़ूर से महंगा नहीं होता।

भारत के इदारए तहक़ीक़ाते जंगलात ने कीन्या से एक ऐसा दरख़्त मंगवाया है जो काफ़ूर के ख़ानदान से तो नहीं लेकिन इससे काफ़ूर की मअ़क़ूल मिक़दार हासिल हो सकती है।

काफ़ूर को अदविया और ख़ुश्बुओं में इस्तेअमाल किया जाता है। मुसलमान अपने मुर्दों को लगाते हैं। इसका मक़सद इसकी ख़ुश्बू के अलावा कीड़ों–मकोड़ों को दूर रखना भी है। क्यूंकि अगर काफ़ूर की बत्ती जलाई जाए तो कमरे से तमाम हशरात भाग जाते हैं।

अंदाज़ह लगाया गया है कि दुनिया भर में सालानह 6000 टन असली काफ़ूर पैदा किया जाता है। लेकिन पित पावडर, टूथ पेस्ट और दूसरे पावडरों में हमेशह मसनूई काफ़ूर इस्तेअमाल किया जाता है जिसकी पैदावार और क़ीमत हालात के मुताबिक़ होती है।

इरशादे रब्बानी:

क़ुरआन मजीद में जन्नत की नेअ़मतों के सिलसिले में इरशाद हुआ:

انّ الابرار یشربون من کاسٍ کان مزاجہا کافوراً عیناً یشرب بہا
عباداللہ یفجرونہا تفجیرا۔ (الانسان:٦-٥)

(नेकी करने वाले बरगुज़ीदह बंदों के लिए मशरूबात ऐसे गिलासों में पेश किए जाएंगे जिनमें काफ़ूर की महक होगी। काफ़ूर ऐसा चश्मह है कि इसे सिर्फ़ वही लोग पिएंगे जो अल्लाह के ख़ास बंदे होंगे और इनको ये सहूलत भी हासिल होगी कि वह इस पानी को जिस तरह चाहें बहा ले कर जाएं यानी इस का बहाओ इनकी मरज़ी के ताबेअ होगा।)

काफ़ूर की बुनियादी तौर पर दो सिफ़ात हैं, ठंडक और उम्दह खुश्बू, इस जगह से पीने वालों को मशरूबात मिलेंगे जिनमें काफ़ूर की ठंडक और अदरक की ख़ुश्बू शामिल होगी। इमाम हसन रज़ि॰ कहते हैं कि इस नहर के पानी से ख़ुश्बू ऐसी होगी जैसे कि काफ़ूर की होती है।

इसकी तफ़सीर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब तक कोई मशरूब न हो कासा नहीं होता। बल्कि क़दीम लुग़त में कासा शराब के जाम को कहते थे। और जन्नत की एक नहर का नाम "ऐनुल काफ़ूर है। इस नहर के पानी में काफ़ूर की सी ठंडक होगी। लेकिन वह ख़ुश्बू दुनियावी काफ़ूर की ख़ुश्बू से मुख़्तलिफ़ होगी। सईद बिन क़तावह रज़ि॰ इसकी तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि इस नहर के पानी के जाम के मशरूब से काफ़ूर की महक आती होगी और इनको सरबमुहर करने के लिए कस्तूरी की मुहर लगी होगी।

अक्रिमा रज़ि॰ इसमें इज़ाफ़ह करते हैं कि इस मश्रूब में काफ़ूर की महक होगी। गिलास की साख़्त से अदरक की महक आती होगी और इस पर कस्तूरी की मुहर होगी यह वह चीज़ें हैं जो अल्लाह तआला अपने बरगुज़ीदह बंदों को जन्नत में ठंडक के लिए मुहैया करेंगा। इब्ने कसीर रह॰ मजालिसं में भी इन ख़ुश्बुओं की मौजूदगी बयान करते हैं।

इरशादाते नबवी सल्ल॰

अहादीस में काफ़ूर का ज़िक्र सिर्फ़ मय्यत के ग़ुस्ल और कफ़न देने के सिलसिले में आता है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे किसी और मक़सद के लिए बयान नहीं फ़रमाया। बिअर के तज़किरे में ग़ुस्ल मय्यत का ज़िक्र करते हुए वह अहादीस बयान की जा चुकी हैं जिनमें काफ़ूर का तज़किरा हुआ।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

यह एक दरख़्त की गोंद है जो कि शरक़ुलहिंद और सरांदीप के इलाक़ेह में पैदा होता है। इसकी मुतअद्दिद क़िस्में हैं। जो ख़ालिस है इसे रियाही कहते हैं। वरनह यह ऊद में भी पाया जाता है। यह ज़हरों के असर को ज़ाइल करता है। यह रीह की दरदें दूर करता है और जिंसी क़ुव्वत को बढ़ाता है। इसका तेल दर्दों के लिए मालिश की बहतरीन दवाई है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे ग़ुस्लुल मय्यत के सिलसिले में बयान फ़रमाया। यह सर्दतर और तबीअत में इनक़बाज़ पैदा करता है। ज़हन को बेदार करता और हवास को मज़बूत करता है। इसके लगाने और सूंघने से

नकसीर बन हो जाती है। इसे माअमूली मिक़दार में पीने से इस्हाल में फ़ाएदह होता है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदातः

इब्तिदाई दौर में अतिब्बा को मअलूम न था कि काफ़ूर कहां से हासिल होता है। "दस्तूरुल अतिब्बा' में लिखा है कि केले का दरख़्त अगर पुराना हो जाए तो इसके तने से काफ़ूर निकलता है। इबने बैतार जैसा इल्मुल अदविया का अल्लाभा भी इसके बारे में मुग़ालते में मुब्तिला रहा। एक अंग्रेज़ मुहक़्क़िक़ ने पता चलाया है कि यूनानी अतिब्बा काफ़ूर से वाक़िफ़ न थे। अलबत्ता अरब अतिब्बा को इसके फ़वाइद का इल्म था। चूंकि मुतअद्दिद चीज़ों से काफ़ूर की तरह की ख़ुश्बू आती है इसलिए कई एक मुग़ालता खा गए। बर्मा के इलाक़े में एक घास छः फुट तक ऊंची और ख़ुदरौ होती है। इसके पत्तों को अगर हाथों में मलें तो काफ़ूर की तरह ख़ुश्बू पैदा करती है।

तिब्बे जदीद में इसे मक़ामी तौर पर हिद्दत पैदा करने वाला बयान किया जाता है। यूनानियों को हरारत मअमूली दरजे की नज़र आती है। वैद गर्म और ख़ुश्क मानते हैं...... गीलानी का मुशाहिदा था कि हिंदू इसको पान की ख़ुश्बू के तौर पर खाते हैं। काफ़ूर मुफ़र्रेह है। दिलो–दिमाग़ को क़ुव्वत देता है। इस्हाल, ज़ातुल जुंद, सिल फेफड़ों के ज़ख़्म को ठीक करता है। काहू के तेल में हल करके नाक में टपकाएं तो नाक की सोज़िश में फ़ाएदे के साथ नींद जल्द आती है।

हकीम नजमुलग़नी ख़ान रामपुरी अपने मरीज़ों को चंबेली के तेल में काफ़ूर मिलाकर दिमाग़ी कमज़ोरी के लिए सुंघाते थे और यही नुस्ख़ा वह दांत के सुराख़ों पर दर्द रफ़अ करने के लिए लगाते थे। यह किसी भी ज़ख़्म का दर्द साकिन करता है। ख़ुजली को रफ़अ करता है। अगर किसी जगह से ख़ून बह रहा हो और रुकने में न आता हो तो काफ़ूर छिड़कने से बंद हो जाता है। हरे धनिया के पत्तों या सिरकह या रैहान के पत्तों में काफ़ूर हल करके सर और पेशानी पर मालिश करने से दर्दे सर जाता रहता है; नाक में डालने से नकसीर बंद हो जाती है।

क़ुव्वते बाह पर काफ़ूर का असर अतिब्बा में भी बहस का बाइस बना हुआ है, इब्ने असवद इसे कमज़ोर कर देने वाला बयान करता है। वैदिक तिब्ब में भी इसे कमज़ोरी का बाइस माना जाता है जबकि भाओ प्रकाश इसे कमज़ोरी को दूर करने वाला कहती है। यह दर्द, तशन्नुज, रअशह, वरम मिटाता है। प्यास को बुझाता है। पपूटों पर लेप करने से आंखों का वरम चला जाता है। दमें के दौरे की शिद्दत के दौरान हुकमा ने 2 रत्ती काफ़ूर में 2 रत्ती हींग की गोली चार चार घंटे बअद बड़े दावे के साथ बयान की है मगर वह इसके साथ मरीज़ की छाती पर गर्म पानी में ज़ैतून मिला कर इसकी टकोरी करते हैं। काफ़ूर को सिरकह में हल करके इसमें गर्म पानी मिला कर इसमें कपड़ा तर करके गंठिया और नुक़रस के मुतवरम जोड़ों पर सैंक करने से सूजन उतर जाती है।

बलग़म निकालने वाली अदविया के साथ काफ़ूर मिलाने से पुरानी खांसी ठीक हो जाती है। खांसी के जदीद शर्बतों में अकसर के नुसख़े में काफ़ूर शामिल होता है। इसके अलावह हैज़ का दर्द, मिर्गी, रअ़शा और इख़्तिलाजे क़ल्ब में काफ़ूर देना मुफ़ीद है। काफ़ूर की धूनी से भी जर्याने ख़ून रुक जाता है। एक हिस्सा काफ़ूर को चार हिस्सा कथ में मिलाकर 2 रत्ती की गोलियां बनाई जाती हैं। यह गोलियां सुफ़रावी बुख़ार उतार देती है।

काफ़ूर को सिरकह में हल करके भिड़ या बिच्छू के काटे पर लगाने से वरम उतर जाता है। यही नुसख़ह दर्द वाले दांत के लिए भी मुफ़ीद है।

काफ़ूर दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन है। यह जिल्द की शर्यानों को फैलाता है। इसलिए यह पेट से रियाह को निकाल देता है। बअज़ अफ़राद के लिए यह इब्तिदा में मुहर्रिक होता है और बअद में सुस्त कर देता हे। पुराने एग्ज़िमा में हमने सैलीसिल्क एसिड के एक फ़ीसदी मरहम में 5 फ़ीसदी काफ़ूर, निशास्तह और बिस्मिथ शामिल करके एक मर्तबह मरहम बनाया था जिसे जिल्द की दीगर बीमारियों बल्कि दाद और चंबल में भी मुफ़ीद पाया। मगर अब तैय्यार करने की कभी ज़रूरत नहीं पड़ी। क्यूंकि इसकी बजाए तिब्बे नबवी से महंदी, सना मक्की, हुब्बुर्रिशाद कलौंजी जैसे मुफ़ीद अज्ज़ा मयस्सर आ गए हैं। जिनके फ़वाइद ला इंतिहा और इनसे किसी क़िस्म के नुक़सान का भी अंदेशह नहीं। जिंसी इमराज़ में एक बीमारी में पेशाब की नाली के अंदर खून का ठहराओ पैदा हो जाता है। जिसकी वजह से मरीज़ को हर वक़्त ख़ौज़िश और सुरअन महसूस होती है। तिब्ब जदीद में इसके इलाज के लिए सिल्वर नाइट्रेट या अरजीरोल को एक पेचीदह औज़ार के ज़रिए नाली के अंदर लगाया जाता है। सिल्वर नाईट्रेट से कई एक नाखुशगवार मसाइल पैदा हो सकते हैं।

म्यू अस्पताल में महकमह इमराज़ मख़ासूसह में तईनाती के दौरान हमने मरहूम डा० अब्दुलहमीद मलिक के साथ ज़ैतून के तेल में काफ़ूर, मिंथोल और क्लोरल हाइड्रेट का एक मुरक्कब तज्वीज़ किया जिसे सैंकड़ों मरीज़ों को निहायत शांदार असरात के साथ लगाया गया।

हक़ीक़त यह कि अंदरूनी तौर पर काफ़ूर का इस्तेअमाल महफ़ूज़ नहीं। इसके ज़ैली असरात काफ़ी हैं लेकिन बैरूनी इस्तेअमाल के लिए काफ़ूर एक लाजवाब दवाई है। हर क़िस्म की खुजली, दर्द, वरम और सोज़िश में इसे पूरे एतिमाद के साथ इस्तेअमाल किया जा सकता है। मगर आम हालात में इसे जिस शक्ल में भी इस्तेअमाल किया जाए नुसख़े में इसकी अपनी शरह दस फ़ीसदी से ज़्यादह न हो।

अतिब्बा जदीद के मुशाहिदात:

काफ़ूर बुनियादी तौर पर जिल्द के लिए मुहर्रिक है। वहां लगने के बाद ठंडक महसूस होती है। फिर दौराने ख़ून में इज़ाफ़ह होता है। इस सलाहियत की बिना पर पट्ठों और जोड़ों की दर्दों में मालिश के जितने भी तेल या लोशन बनते हैं, काफ़ूर इनका जुज़्वे लायन्फ़िक है। ख़ारिश को दूर करने के अक्सरो

बेश्तर नुस्ख़ों में यह ज़रूर शामिल होता है। क्यूंकि ख़ारिश को, ख़्वाह किसी वजह से हो, दूर करना इसकी बुनियादी सिफ़त है।

काफ़ूर खाने से पसीनह आता है। यह दिल को ताक़त देता है। ज़मानए क़दीम में मरीज़ के डूबते दिल को तक़वियत देने के लिए तेल में काफ़ूर मिलाकर इसके टीके लगाए जाते थे। इस बाब में इल्मुल अदविया के माहिरीन का ख़याल था कि टीके से काफ़ूर जज़्ब हो कर जिस्म में किसी उफ़ादियत का बाइस नहीं होता। अलबत्ता टीके का दर्द दिल पर मअकूस असरात से हरकत पैदा करता है। इसलिए टीके में ख़्वाह ख़ालिस तेल ही हो फ़ाएदह यक्सां होगा। इस मुशाहिदे की बिना पर लोगों ने काफ़ूर के टीके लगाने छोड़ दिए हैं।

काफ़ूर का लगाना और खाना जरासीम को मारता है। यह बलग़म को निकालता है। सुकून आवर है और थोड़ी मिक़दार में मुहर्रिक बाह है हमारे मुल्क में काफ़ूर और धनिया के बारे में यह ग़लत तास्सिर एक अरसे से क़ायम है कि इन दोनों में से किसी एक का इस्तेअमाल कुव्वते बाह को ख़त्म कर देता है। बल्कि बाज़ अतिब्बा इन्हें नामर्दी का बाइस क़रार देते हैं। यह दोनों बातें ग़लत हैं। अलबत्तह ज़्यादह मिक़दार में काफ़ूर का इस्तेअमाल कुव्वते बाह को कमज़ोर कर देता है।

तिब्बे जदीद में काफ़ूर बलग़म निकालने, तपे-दिक़ के इलाज, ज़हरों के इलाज, इस्हाल, मुंह की सोज़िश, दिमाग़ी कमज़ोरी, सर दर्द, गुर्दों और जिगर की सोज़िश के लिए इस्तेअमाल में रही है। तिब्बे जदीद में इसके दो मशहूर मुरक्कब आज भी ज़ेरे इस्तेअमाल हैं। TR. CAMPHOR CO. खांसी की एक मुफ़ीद और क़ाबिले एतिमाद दवाई है। जबकि बैरूनी इस्तेअमाल के लिए LINT. CAMPHOR CO. मक़बूल है।

काफ़ूर की अपनी एक अजीब सी ख़ुश्बू और तेज़ कसेला ज़ाएक़ह है। यह पड़ा-पड़ा उड़ जाता है और अगर जलाएं तो तेज शोअले देता हुआ धुएं के साथ जल जाता है। मुख़तलिफ़ माहिरीन ने इसे टाईफ़िस बुख़ार, तपे मुहर्रिक़ा की क़िस्म के बुख़ारों, ख़सरह, बुख़ार की वजह से पैदा होने वाले हज़यान, काली खांसी, दमा, हिचकी, हिस्टीरिया, मराक़, गंठिया, हैज़ के दर्दों, दांत दर्द, मिर्गी और मालीख़ोलिया में इस्तेअमाल किया है। बुख़ारों की शदीद कमज़ोरी और दिल बैठने में यह मुफ़ीद है। काफ़ूर आसाब को सुकून देता है इसलिए लोगों ने रअशा में इसे मुफ़ीद क़रार दिया है। 3-5 ग्रेन काफ़ूर को किसी गोली या शर्बत में देने से बेक़रारी कम हो कर बुख़ार के मरीज़ों की नब्ज़ बहतर हो जाती है। और उनको नींद आ जाती है। चूंकि इसका असर देर पा नहीं होता इसलिए बार-बार देना पड़ता है। इसकी नसवार ज़ुकाम की शिद्दत को कम करती है। बअज़ तबीब इसका धुवां नानी के ज़रिए देते हैं। यह धुवां छाती की सोज़िशों को कम करता है। काफ़ूर के धुऐं से मच्छर और दूसरे हशरात भाग जाते हैं। बच्चह दानी के दर्द के लिए 4 से 6 ग्रेन काफ़ूर दिया जाता है। इसी तरह जर्यान वग़ैरह में भी काफ़ूर का इस्तेअमाल मुफ़ीद समझा जाता है। गाजरों

की कांजी के पंदरह औंस में काफ़ूर की अंग्रेज़ी लेनीमंट का एक औंस मिलाकर अनीमा के ज़रिये पेट के चरनों का इलाज करते हैं।

आध औंस काफ़ूर को मलमल की पोटली में बांध कर एक गैलन पानी में चंद घंटे लटकाते हैं। इससे "माउल काफ़ूर" बन जाता है। हिस्टीरिया और दिमाग़ी अवारिज़ में इस पानी के एक से दो औंस मुफ़ीद माने जाते हैं।

भारती हुकूमत के तिबे यूनानी के महकमा की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ काफ़ूर इब्तिदाई तौर पर मुहर्रिक है और बअद में मुसक्कन हो जाता है। दाफ़ेअ तिशनज, कासरुर्रियाह, मनफ़स बलग़म पसीनह लाने वाला, दाफ़ेअ तअफ़्फ़ुन और मक़ामी तौरपर ख़ारिश और दर्दों को तस्कीन देने वाला, बयान किया है। इसलिए काफ़ूर को हर क़िस्म के दर्द, ख़्वाह अज़्लात, मौच या आसाब की वजह से हों, में और सुआल, ज़ातुर्रियाह और ज़ातुलजुंब में बैरूनी तौर पर लगाते हैं। इस्हाल, हैज़ा, नफ़्ज़ और हम्यात में इसका खाना मुफ़ीद है। तिब्बे यूनानी में क़रस तबाशीर काफ़ूरी, तिर्याक़ आज़म, कुर्स सस्तान काफ़ूरी, इसके मशहूर मुरक्कबात हैं।

एक ज़माने में डाक्टरों को काफ़ूर पर इस हद तक एतिमाद था कि जर्मनी में कभी कोई मरीज़ ऐसा नहीं मरता था जिसे आख़री वक़्त में जिंदगी दिलाने के लिए काफ़ूर का टीका न लगाया जाए। ख़याल किया जाता था कि यह डूबते हुए दिल को भी चला सकता है मगर अब जबकि अदविया के असरात की पड़ताल और तसदीक़ के लिए आलात ईजाद हो गए हैं। काफ़ूर का दिल को हयाते नौ देने वाले असरात की पड़ताल और तसदीक़ के लिए आलात ईजाद हो गए हैं। काफ़ूर का दिल को हयाते नौ देने वाले असर की तसदीक़ नहीं हो सकी। माहिरीन अदविया का ख़याल है कि टीका के दर्द की वजह से दिल पर तहरीक के मअ़कूसा असरात किसी फ़ाएदह का बाइस होते हैं लेकिन यह फ़ाएदा किसी भी टीके से हासिल किया जा सकता है। काफ़ूर ज़रूरी नहीं, इसकी मक़बूलियत घटते-घटते मालिश की दवाओं और ख़ारिश के मरहमों तक रह गई।

होम्यो पैथिक तरीक़ए इलाजः

काफ़ूर के बारे में इस तिब्ब के मूजिद हिनमैन ने भी शुबेह का इज़्हार किया है। वह लिखता है कि इसके असरात और फ़वाइद हर हाल में मुख़्तलिफ़ और बअज़ जगह बिल्कुल उलट होते हैं। जब जिस्म सर्द रहता हो। दिल डूबता महसूस हो, नब्ज़ कमज़ोर हो, दरजए हरारत एतिदाल से नीचे चला जाए और ठंडे पसीने आते हों तो यह मौक़ा होम्यो पैथिक कैम्फ़रो देने का है। मरीज़ को चक्कर आते हैं। सर्दी महसूस होती है, अज़्लात में निश्नजी हरकात होती हैं। मौसम में मअ़मूली तब्दीली से ज़ुकाम हो जाता है। कंधों के पीछे दर्द होता है। नींद उड़ जाती है और चहरा नीलगूं नज़र आता है।

कद्दू.....यक़तीन

PUMPKIN
CUCURBITA PEPO

फलों और सब्जियों का एक अज़ीम ख़ानदान इल्मे नबातात में CUCURBITACEAE के नाम से मशहूर है। जिनमें खरबूज़ह, इंदराइन, खीरा, ककड़ी, कद्दू, पेठा, हलवा कद्दू तोरी, इंदराइन फल, अरंड ख़रबूज़ह ज़्यादह मशहूर हैं। कद्दू की मुतअद्दिद अक़साम हैं। जिनमें गोल कद्दू, लम्बा कद्दू या घिया, हलवा कद्दू, सुर्ख़ कद्दू, पीला या सफ़ेद कद्दू बल्कि कड़वा कद्दू इनमें से कड़वे को GOURO और दूसरी पकाने वाली अक़साम को आम तौर पर PUMPKIN कहते हैं। आम खाने वाले कद्दू को CUCUR ALBA कहते हैं लेकिन नदकारनी ने इसे LAGENARIA VULGARIS कहना पसंद किया है। इस जिंस को करनल चोपड़ा किसी मुस्हल की क़िस्म क़रार देता है। होम्योपैथी में आम घरेलू कद्दू को CUCURBITA PEPO का नाम दिया गया है।

क़ुरआन मजीद में इसे यक़तीन के नाम से पुकारा गया है। आम अरब इसे "दबाअ़" या "क़रअ़" कहते हैं। सर विल्यम लेन ने कद्दू के नाम पर तफ़सीली बहस की है और वह इब्नुल हिज्र की माई के साथ दबाअ़ को लुग़वी लिहाज़ से ग़लत क़रार देते हैं और इस का सही नाम "यक़तीन" क़रार देते हैं। अहादीस में कद्दू को "क़रा" के नाम से बयान किया गया बल्कि दो–एक रिवायात ऐसी भी हैं जिनमें इसे दबाअ के नाम से भी ज़िक्र किया गया है। क़ुरआन मजीद का नाम ग़लत नहीं हो सकता। और अहादीस को लुग़वी तौर पर ग़लत क़रार देने की जुरअ़त आज तक किसी ज़बान दान को मयस्सर नहीं हुई इसलिए इम्कान यह है कि यक़तीन, दबाअ और क़रअ़ अगर्चे तीनों कद्दू के नाम हैं लेकिन वह नबाताती नामों की तरह इसकी मुख़्तलिफ़ शक्लों की वज़ाहत करते हैं। मसलन बड़ा गोल कद्दू अगर यक़तीन समझा जाए तो लम्बा दबाअ़ हो सकता है।

कद्दू एक आम सब्ज़ी है जो कि दुनिया भर में काश्त की जाती है। चूंकि इसके फल का वज़न ज़्यादह होता है। इसलिए एक बेल के साथ लगती है जो ज़मीन पर रेंगती है। ज़रई क़िस्म के अलावह जंगलों में इसकी एक ख़ुदरौ क़िस्म भी मिलती है। जिसे जंगली कद्दू कहते हैं। यह ज़ाएक़ेह में कड़वा और हजम में मज़रूआ अक़साम से बड़ा हो जाता है। अगर्चे मज़रूआ अक़साम में भी कड़वे कद्दू मिलते हैं। लेकिन इनकी तअदाद बहुत कम होती है। हमारे यहां के आम कद्दू आध पाओ से एक किलो ग्राम वज़न तक होते हैं। लेकिन उम्दह सब्ज़ियां काश्त करने का शौक़ रखने वालों के यहां बड़े कद्दू भी पैदा होते हैं। ज़िला हज़ारा के मरहूम महदी ज़मान ख़ान ने दस किलो का कद्दू अक्सर काश्त किया।

अमरीका में 4–6 किलो वज़न के क़द्दू अकसर देखने में आते हैं बल्कि बअज़

किसानों का दअवा है कि उनके यहा 30 किलो का कद्दू भी होता है।

हिंदुस्तान में कद्दू बड़े शौक़ से खाया जाता रहा है। इसकी सब्ज़ी, अराएता, खीर, मुरब्बह और हलवे में इसतेअमाल किया जाता है। मौलवी अब्दुल हलीम शरर लखनवी ने लखनऊ के बावर्चियों के कमालात के सिलसिले में बयान किया है कि वह बड़े–बड़े कद्दू ले कर इनको इस कमाल से पकाते थे कि बाहर का छिलका कच्चे कद्दू की तरह सब्ज़ और चमकदार रहता था। और खोलिए तो अंदर से पूरी तरह पका हुआ और निहायत लज़ीज़।

लाहौर के एक मशहूर होटल की "खीर ख़ास" मशहूर है। मअलूम हुआ है कि यह खील चावल की बजाए कद्दू से बनाई जाती है। यौरप में इसका शोरबह और पुडिंग बड़े शौक़ से खाते हैं। कनेडा और अमरीकह में क्रिस्मस के मौक़े पर कद्दू का हलवह इसी शौक़ से लाज़मन पकाया जाता है जिस तरह हमारे यहां ईद पर सिवय्यां बनती हैं।

मौसीक़ी की दुनिया में कद्दू को बे–पनाह मक़बूलियत हासिल है। बड़े कद्दू या जंगली कद्दू जब शाख़ के साथ लगा–लगा सूख जाए तो इसकी बैरूनी जिल्द सख़्त हो जाती है। इसे अंदर से साफ़ करके साधू अपने हाथ में रखते हैं। कमंडल नुमा यह बरतन इनका ट्रेडमार्क सा बन कर रह गया है। ख़ुश्क कद्दू से तार वाले तमाम साज़ों का पैंदा बनता है। जैसे कि सितार, विचित्र बीन, तानपुरा, यीन, इक्तारा, किंग, सारंगी, सरोद वग़ैरह। अगर्चे इनका ढोल लकड़ी से भी बन सकता है लेकिन आवाज़ जो गूंज और सुरों का इज़हार कद्दू के पैंदे से होता है वह किसी और चीज़ से नहीं होता। सपेरों की बीन में कद्दू इसके दरमियान में लगा होता है बल्कि बीन की बअज़ शक्लों में इसका निचला हिस्सा भी कद्दू ही से मख़लूक़ होता है।

कुरआन मजीद के इरशादात:

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को आज़माइश का एक अरसह मछली के पेट में महबूस हो कर गुज़ारना पड़ा जहां वह ख़ुदा से तौबह करते और उसकी इबादत करते रहे। फिर उनका दौरे इब्तिला ख़त्म हुआ और तौबह क़बूल कर ली गई। मछली ने उन्हें किनारे पर उगल दिया। मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि यह मक़ाम यमन का साहिली इलाक़ा था। इस बाब में इरशाद बारी तआला है:

فنبذنه بالعراء وهو سقيم. وانبتنا عليه شجرة من يقطين. وارسلنه الى مائة الف اويزيدون. فامنوا فمتعنهم الى حين.

(१४६:४८)

(फिर हमने डाल दिया उनको खुले मैदान में जबकि बीमार और कमज़ोर थें, उनके ऊपर हमने कद्दू की बेल उगा दी इनको हमने मअमूर किया एक लाख या इससे भी ज़्यादह अफ़राद पर। पस वह लोग ईमान लाए और हमने उनको फ़ैज़याब किया एक अरसह तक।)

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की हालत बिल्कुल ऐसी थी जैसी कि एक नौज़ाएदा बच्चे की होती है। वह हिलने–जुलने तक के क़ाबिल न थे इसलिए

इनको यक़तीन के पेड़ के नीचे डाला गया जिसके बड़े–बड़े पत्तों की छाओं में वह आराम से लेटे रहे। हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद रज़ि. और हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि. यक़तीन से मुराद क़रअ़ लेते हैं। यअनी कि कद्दू। जबकि हज़रत सईद बिन जबीर रज़ि. यक़तीन से मुराद हर वह दरख़्त लेते हैं जिसका तना न हो और वह बेल की मानिंद हो। क़ुरआन मजीद ने यक़तीन का शजर बयान किया है। शजर के मअने दरख़्त के हैं। जबकि कद्दू का दरख़्त नहीं होता। इब्ने कसीर रह. यक़तीन के बारे में सईद बिन जबीर रज़ि. से इत्तिफ़ाक़ करते हैं और इनको ज़बान दानी के माहिर विल्यम लेन से भी ताईद मयस्सर है कि यक़तीन से मुराद कद्दू भी हो सकता है। और इसका यह मतलब भी हो सकता है कि कद्दू के ख़ानदान के किसी दरख़्त के साये में जैसे कि तोरी या ककड़ी या पेठा वग़ैरह।

एक कमज़ोर और नातवान को यक़तीन के बड़े–बड़े पत्तों के साये में आराम मिला। ग़ालिबन वह इसे खाते भी रहे। क्यूंकि कद्दू सक़ील नहीं होता और किसी भी बीमारी के मरीज़ को बिला झिझक दिया जा सकता है। इसलिए अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की कमज़ोरी के मद्दे–नज़र उन्हें ग़िज़ा में कद्दू मरहमत फ़रमाया। इसे खाने से इनको तवानाई मयस्सर हुई कि वह एक लाख अफ़राद या इससे भी ज़्यादह के एक क़बीले में रुशदो हिदायत के लिए तशरीफ़ ले गए।

किताबे मुक़द्दस:

तौरेत मुक़द्दस में हज़रत युनुस अलैहिस्सलाम का वाक़िआ बड़ी तफ़सील से मज़कूर है इनकी ज़मीन पर वापसी के सिलसिले में इरशाद हुआ:

> "तब ख़ुदावंद ने कद्दू की बेल उगाई और इसे यूनाह (यूनुस अलैहिस्सलाम) के ऊपर फैलाया कि उसके सर पर सायह हो। और वह तकलीफ़ से बचे और यूनाह इस बेल के सबब से निहायत ख़ुश हुआ।"
>
> (यूनाह: 4–6:7)

यहां पर जिस तरह बयान किया गया है वह तक़रीबन इसी तरह है जिस तरह कि क़ुरआन मजीद में आया।

इरशादाते नबवी सल्ल.:–

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने एक ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया। उसने दरज़ी का काम शुरू किया। ख़ुदा ने बरकत डाली और ममनूनियत के इज़हार में उसने आपकी ख़ादिमे ख़ास समेत खाने की दअवत की। इस दावत की रोएदाद हज़रत यूनुस बिन मालिक रज़ि. यूं बयान करते हैं।

انّ خياطاً دعا النبيّ صلى الله عليه وسلم بطعام صنعه فذهبتُ مع النبى صلى الله عليه وسلم نقرّب خبز شعير ومرقاًفيه دباءٌ قد يدّفرأيتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يتتبّع الدباء من حواللى القصعة فلم ازل احبُّ الدباء يومئذٍ.

(بخاری، ترمذی، ابوداؤد)

(एक दर्ज़ी ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खाने की दअवत की। मैं इन के साथ गया। इसने जौ की रोटी और सूखे गोश्त के सालन में कद्दू पेश किया। मैंने देखा कि नबी सल्लल्लाहो वसल्लम थाली के इत्तराफ से कद्दू के टुकड़े तलाश करके खाते थे। उस दिन के बअद से मुझे कद्दू से मुहब्बत हो गई।)

यह हदीस बुख़ारी ने चार मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर कई ज़राए से बयान की है और हर जगह अलफ़ाज़ और मआनी तक़रीबन यक्सां हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि॰ बयान करते हैं।

كان النبي صلى الله عليه وسلم يحبّ القرع (ابن ماجه)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कद्दू से मुहब्बत करते थे।)

हकीम बिन जाबिर रज़ि॰ अपने वालिदे ग्रामी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लह रज़ि॰ से रिवायत करते हैं।

دخلتُ على النبي صلى الله عليه وسلم في بيته وعنده هنده الدباء فقلت ایّ شئٍ هذا قال هذا القرع هو الدباء نكثر به طعامنا. (ابن ماجه)

(मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, इनके पास एक कद्दू था। मैंने पूछा यह क्या चीज़ है। उन्होंने कहा कि यह कद्दू है हम इसे बहुत खाते हैं।)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं।

بعثت معی امّ سليم بمكتلٍ فيه رطب الىٰ رسول الله صلى الله عليه وسلم فلم اجده وخرج قريباً الىٰ مولاً لهٗ دعاه. فصنع له طعاماً فاتيته وهو ياكل قال فدعاني لأكل معه قال وضع ثريدةً بلحمٍ وقرعٍ وقال فاذاهو يعجبه القرع قال فجعلت اجمعه فادينه منه فلما طعمنا منه رجع الىٰ منزله ووضعت المكتل بين يديه فجعل ياكل ويقسم حتىّٰ فرغ من اخره. (ابن ماجه)

(मेरी वालदह उम्मे सलीम रज़ि॰ ने खजूरों का एक टोकरह दे कर मुझे नबी सल्लल्लाओ अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रवानह किया। वह घर में तशरीफ़ न रखते थे। अपने एक ग़ुलाम के यहां दअवत पर गए थे। मैं वहां गया तो आप खाना खा रहे थे। खाने में गोश्त और कद्दू का सरीद पेशे ख़िदमत था। उन्होंने मुझे भी शामिल फ़रमाया। मैं जानता थ कि आपको कद्दू पसंद है। मैं इसके क़तले इकट्ठे करके आपके सामने करता गया। खाने से फ़राग़त पाकर हम घर गए तो मैं ने खजूरों का टोकरा आपके सामने रखा। आप इसमें से खा भी रहे थे और लोगों को तक़सीम भी करते जाते थे। और इस तरह इसे इसी वक़्त ख़त्म कर दिया।)

इस हदीस को तिर्मिज़ी ने भी खजूर के ज़िक्र के बग़ैर इन्हीं से रिवायत किया है। हज़रत हकीम बिन जाबिर रज़ि॰ जिन को इब्ने तारिक़ या इब्ने अबी तारिक़ भी कहते हैं। रिवायत करते हैं।

دخلت على النبي صلى الله عليه وسلم فرأيتُ عنده دباء يقطع فقلت ماهذا قال نكثر به طعامنا (شمائل ترمذی)

(मैं नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, देखा कि आप कद्दू के क़तले कर रहे हैं। मैंने अर्ज़ किया कि इससे क्या बनेगा? इरशाद हुआ कि इससे सालन में इज़ाफ़ह किया जाए गा।)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

الدباء يكثر الدماغ ويزيد فى العقل (ديلمى)

(कद्दू दिमाग़ को बढ़ाता और अक़्ल में इज़ाफ़ह करता है।)

हज़रत अता बिन अबी रुबाह रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:–

عليكم بالقوع فانه يزيد فى العقل ويكثر فى الدماغ (ابن حبان)

(तुम्हारे लिए कद्दू मौजूद है वह अक़्ल को बढ़ाता और दिमाग़ को ताक़त देता है।)

हज़रत वासला रज़ि. रिवायत करते हैं कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

عليكم بالقرع فانه يزيد فى الدماغ وعليكم بالعدس فانه قدس علىٰ لسان سبعين نبيًا. (طبرانى)

(तुम्हारे लिए क़द्दू मौजूद है वह अक़्ल को बढ़ाता है, मज़ीद तुम्हारे लिए मसूर की दाल है जिसे कम–अज़–कम सत्तर पैग़म्बरों की ज़बान पर लगने का शर्फ़ हासिल रहा है।)

हश्शाम बिन अरवाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि उन्होंने ने हज़रत आएशा रज़ि. से कद्दू के बारे में पूछा तो उनहोंने फ़रमाया:

قال لى رسول الله صلى الله عليه وسلم يا عائشة! اذا طبختم قِدرًا فاكثرو فيها من الدباء. فانها تشد قلب الحزين. (الغيلانيات)

(मुझे मुख़ातिब करते हुए रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ आएशह रज़ि. जब ख़ुश्क गोश्त पकाओ तो इसमें कद्दू डाल कर इज़ाफ़ह कर लिया करो। क्यूंकि यह ग़मगीन दिल को मज़बूत करता है।)

अबू तालूत बयान करते हैं:

دخلتُ علىٰ انس بن مالكٌ. وهو ياكل القرع. يقول: يالك: من شجرة ما احبك الى الحب رسول اله اياك.

(मैं हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से मिलने गया तो वह कद्दू खा रहे थे। और उसे मुख़ातिब करके फ़रमा रहे थे कि तू एक ऐसे दरख़्त से है जिससे मैं इसलिए मुहब्बत करता हूं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसे पसंद करते थे।)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

कद्दू एक हल्की ग़िज़ा है जो ख़ुद जल्द हज़्म होता है और इस दौरान किसी किस्म की मुश्किल पैदा नहीं करता। ख़ुद जल्द हज़्म होने के साथ दूसरी

ग़िज़ाओं को हज़्म करने में मददगार होता है। बुख़ारों के मरीज़ों को बेहद मुफ़ीद है। एक और रिवायत में यह बुख़ार के मुब्तिलाओं को आराम और सुकून देता है।

कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर रज़ि॰ के दस्तरख़्वान पर एक रोज़ कद्दू का सालन था इनके फ़रज़िंद हज़रत सालिम बिन अब्दुल्ला ने कहा कि मुझे कद्दू पसंद नहीं। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि॰ ने फ़रमाया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कद्दू से मुहब्बत फ़रमाते थे। सालिम ने जवाब में कहा कि मुझे तो पसंद नहीं । हज़रत अब्दुल्ला रज़ि॰ ने फ़रमाया कि किसी चीज़ को पसंद या ना पसंद करना तुम्हारा हक़ है मगर जब तुम्हें यह बताया जाए कि कोई चीज़ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को महबूब थी और तुम इसके बअद फिर रद करो तो यह अमल तोहीने रिसालत के मुतरादिफ़ है। ऐसे बे-अदब के लिए मेरे घर में कोई जगह नहीं। उन्होंने अपने बेटे के साथ एक अरसेह तक बोल-चाल बंद क़र दी।

सुन्नते नबवी सल्ल॰ के पेशे-नर मुहद्दिसीन के यहां कद्दू को बड़ी अहमियत हासिल रही है और मुख़तलिफ़ बीमारियों बल्कि कमज़ोरियों के इलाज में भी इसे बड़ी अक़ीदत के साथ खाया जाता रहा है।

हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि॰ से मनकूल है:

من اكل القرع بالعدس رق قلبه وزيد فى جماعه و ان اخذ بالرمان الحامض والسماق نفع الصفراء (ابن القيم)

(जिस किसी ने मसूर की दाल के साथ कद्दू पका कर खाया उसका दिल मज़बूत हुआ और कुव्वते मर्दमी में इज़ाफ़ह हुआ। अगर इसे मीठे अनार और समाक़ के साथ मिलाया जाए तो यह सुफ़रा को दूर करता है।)

समाक़ एक पत्थर है जिससे लोग खरल बनाया करते थे। इसके एक मअने तो यह हैं कि इसे अनार के पानी के साथ समाक़ खरल में घिसने के बअद इस्तेअमाल करें, मुहम्मद अहमद ज़हबी रह॰ ने समाक़ को नबातात में बयान करके इसे भूख बढ़ाने वाली क़रार दिया इसके छिलके का पानी निचोड़ कर अर्क़ गुलाब में मिलाकर कान में डालने से वहां के वरम कम हो जाते हैं। यह नुस्ख़ा आंखों की सोज़िश में मुफ़ीद है। कद्दू का पानी जोड़ों पर मलने से दर्दों को आराम आता है।

कद्दू को अलसी के साथ पकाकर खाने से खट्टी ख़लतें पैदा होती हैं। सिरकह और मुर-मकी के साथ मिलाकर खाने से जिस्म के ग़लीज़ मादे निकल जाते हैं। अगर इसे बही (सुफ़रजल) के साथ पकाकर खाया जाए तो जिस्म को उम्दा ग़िज़ाइयत और तवानाई मुहैया करता है। अगर क़ाबिज़ चीज़ों के साथ खाया जाए तो यह क़ाबिज़ है। वरनह गोश्त या दाल मसूर के साथ क़ब्ज़ कुशा है। प्यास को कम करता है। गर्मी के सर दर्द को दूर करता है। पेट को नर्म करता है। बुख़ार तोड़ने के लिए कद्दू को खिलाने और इसको काट कर जिस्म पर फेरने से कोई दवाई अफ़ज़ल नहीं। इसे अजबीन के हमराह गुले हिमत करके पकाया

जाए या तन्नूर में रख कर गर्म कर लिया जाए तो इससे पानी निकलता है। यह पानी शदीद बुख़ार की हिद्दत को कम करता है। प्यास बुझाता है और उम्दह गिज़ा है। इस पानी में सिरका या संगतरे का रस मिलाएं या बही के साथ पकाएं तो जिस्म से तमाम सुफ़रावी मादे निकाल देता है।

कद्दू को पकाकर इसका पानी शहद मिलाकर देने या नज़रान के साथ पकाकर देने से जमी हुई बलग़म निकल जाती है। कद्दू को घोट कर इसे सर पर लगाने से खोपड़ी की जिल्द की जलन जाती रहती है।

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदात:

प्यास बुझाता है। जिगर की गर्मी और सुफ़रा को दूर करता है। सुद्दे खोलता, और पेशाब आवर है। पेट को नर्म करता है। इसको नमक और राई में मिलाकर पीने से मुज़िर असरात ख़त्म हो जाते हैं। सुफ़रावी मिज़ाज वाले अगर अनार शीरीं और समाक़ के साथ खाएं तो जिस्म पर फुंसियां ख़त्म हो जाती हैं। इसको सूंघना भी मुफ़ीद है, कच्चे कद्दू का रस निकाल कर रौग़ने गुल मिलाकर कान में डालने से वरम जाता रहता है। और सर पर मलने से सर दर्द को सुकून आता है। कद्दू का भुर्ता करके इसका पानी निकाल कर आंखों में डालने से यरक़ान की ज़रदी जाती रहती है।

कद्दू को खांड के साथ पकाकर देने से जुनून और ख़फ़क़ान में फ़ाएदह होता है। इसके पानी की कुल्लियां करने से मसूढ़ों का वरम जाता रहता है। कद्दू का छिलका पीस कर खाने से आंतों और बवासीर से आने वाला ख़ून बंद हो जाता है। जिगर की सोज़िश में कद्दू का मुरब्बह अज़हद मुफ़ीद है।

कच्चा कद्दू आंतों को मुज़िर है। इसकी राई और नमक, लहसन और सियाह मिर्च से इस्लाह होती है। गर्म मिज़ाज वालों के लिए सिरकह या अंगूर से इस्लाह करें।

कद्दू की बेल के पत्ते दस्तआवर हैं। इनको उबाल कर चीनी मिलाकर पीने से यरक़ान को फ़ाएदह होता है। ख़फ़क़ान के मरीज़ों का सर मूंढ कर इस पर कद्दू पीस कर लेप किया जाए। कद्दू के बीज ख़ून निकलने को रोकते हैं। जिस्म को फ़रबह करते हैं। वैद कहते हैं कि यह बीज ठंडे होते हैं और सर दर्द को दूर करते हैं। कद्दू का तेल सर में मलने से नींद आती है।

कीम्यावी हैइयत:

भारत में मुम्बई के महकमा ज़राअत के गज़ट के मुताबिक़ इसमें तेल, बीरोज़ह लहमियात, मिठास पाए जाते हैं। ताज़ह कद्दू में 89.5 फ़ीसद पानी होता है इसके अलावह निशास्ता और अल्ब्यूमन की तरह के मुरक्कबात हैं। गोल कद्दू के बीजों में हर सो ग्राम में 0.009 मिली ग्राम संख्या भी मिलता है।

एक सौ ग्राम कद्दू में मुंदरजह ज़ैल कीम्यावी अनासिर इस तर्तीब से मिलते हैं।

PROTIENS	0.6	FATS	--	CARBOHYDRATES	3-4
CALORIES	16	SODIUM	1-30	POTASSIUM	3.9
CALDIUM	39	MAGNESIUM	8.2	IRON	0.39
COPPER	0.08	PHOSPHORUS	19.4	SULPHUR	9.5

CHLORIDES 36.1

हकूमत बरतानियह के तहक़ीक़ी इदारे के मुताबिक इसमें पानी की मिक़दार 81–94 फ़ीसदी के दरमियान होती है। मिठास 2.7 फ़ीसदी, निशास्ता 0.7 फ़ीसदी और नाइट्रोजन वाले अनासिर 0.10 फ़ीसदी होते हैं इसमें LUTEIN और CURCUBITIN भी मिलते हैं. बीजों में ग्लूकोसाईड PALMATIC OLEIC LINOLEIC तिरशे पाए जाते हैं।

जदीद तहक़ीक़ात:

कद्दू की मुख़तलिफ़ अक़साम को इल्में नबातात के माहिरीन ने उसकी शक्ल और रंगत के मुताबिक़ सफ़ेद कद्दू को CUCURBITA ALBA सफ़ेद की एक और क़िस्म C.PEPO है जो दवासाज़ी में मुस्तैअमिल है। सुर्ख़ कद्दू C.MAXIMA C LAGENARIA C MOSCHATA को असल में सहीह कद्दू समझा जाता है।

बंगाल, उत्तर प्रदेश और दक्किन में कद्दू की एक क़िस्म CUCUMIS VITALISSIMUS घरों में काश्त की जाती है। हुकूमत बम्बई के महकमा ज़राअत ने इसे गुर्दों से पथरी निकालने वाला मदरुलबोल क़रार दिया है। इसके बीजों में भी तेल होता है। मरहटी में इसे तर ककड़ी कहते हैं।

इसी ख़ानदान का एक और CUUMIS GRIGONUS जिसे अंग्रेज़ी में कड़वा कद्दू भी कहते हैं। इसका फल भूख बढ़ाता है और सुफ़रा को दूर करता है। इसकी मीठी और कड़वी दोनों क़िस्में होती हैं, कड़वी न तो पकाई जाती है और न ही दवा में पड़ती है। अंडे की तरह कद्दू CUCUMIS AGRESTIS कहलाता है। इसी ख़ानदान का एक रुक्न C.CITRULUS भी है जो कि तरबूज़ है।

कद्दू की इतनी अक़साम की तशरीह करने के बअद माहिरीन ने तरबूज़ को भी फ़वाइद में इसी के साथ शामिल किया है। वुस्ती हिंद और बम्बई में कद्दू के बीज पेट के कीड़े मारने में बड़ी शोहरत रखते हैं। तरीक़ह यह है कि एक चम्मच मग़ज़ कद्दू को चीनी के साथ सोते वक़्त खा कर सुबह कस्ट्रॉएल पिला देते हैं।

भारती माहिरीन ने कद्दू के तिब्बी असरात के ख़ुलासे में इसे पेट से कीड़े निकालने वाला और मदरुलबोल क़रार दिया है। मगज़–कद्दू के दो बड़े चमचे शहद के साथ देने से पेशाब की जलन ख़त्म हो जाती है। कद्दू का गूदा ख़ुश्क करके इसका जोशांदह बवासीर और फेफड़ों से आने वाले ख़ून की बहतरीन दवाई है।

हमने कद्दू के छिलके पीस कर रौग़ने ज़ैतून और मेहंदी के पत्तों के हमराह खरल करने के बअद हलकी आंच पर पांच मिनट पकाने के बअद ऐसे मरीज़ों पर आज़माया जिनका बवासीर का ख़ून बंद नहीं होता था। इसके साथ ही कद्दू पीस कर शहद मिलाकर दिन में तीन मर्तबह खिलाया गया। ख़ून दो दिन में बंद हो गया। एक मरीज़ के फेफड़े ठीक होने के बावजूद थूक में ख़ून आता था। कद्दू देने से ठीक हो गया।

कद्दू की डंडी का वह हिस्सा जो फल के साथ होता है इसे काट कर सुखाया जाए अगर किसी को ज़हरीला कीड़ा और ख़ास तौर पर हज़ारपा काट ले तो इसको शहद मिलाकर बार–बार चटाया जाए और उसको लगाया जाए तो वह ठीक हो जाता है।

हमारे तजुर्बात में कद्दू पेट की तेज़ाबियत में भी अकसीर पाया गया। मरीज़ को ख़ुसूसी एहतिमाम के बग़ैर कम मिर्च के साथ कई दिन तक कद्दू का सालन खिलाने से आंतों की जलन ठीक हो गई। अकसर में तो मर्ज़ की शिद्दत में पहले रोज़ ही से कमी आ गई।

कद्दू के पत्तों का जोशांदह क़ब्ज़ का आसान और महफ़ूज़ इलाज है। कद्दू के फल को सिरकह में खरल करके पैरों पर लगाने से और इसी महलूल को खाने से पैरों की जलन ठीक हो जाती है अतिब्बा देहली कड़वे कद्दू को ख़ुश्क करके जलाकर शहद में मिलाकर इसकी सलाई ऐसे मरीज़ों की आंखों में लगाते थे जिन को रात को ठीक से नज़र नहीं आता। हकीम मुफ़्ती फ़ज़्लुर्रहमान बुख़ार और सर में जलन के मरीज़ों के जिस्म पर कद्दू काट का फेरते थे और बुख़ार चंद मिंटों मे कम हो जाता था। मुफ़्ती साहब यरक़ान और आंतों की जलन और पुराने ज़ुकाम के लिए कद्दू पर आटा लेप करके इसे गर्म बरतनों में कुछ देर रखते थे। फिर इसके पैंदे में सुराख़ करते तो इसका सारा पानी निकल जाता। यरक़ान में यह पानी शहद मिलाकर पिलाया जाता और पुराने ज़ुकाम में इसके क़तरे नाक में डाले जाते थे।

होम्योपैथिक तरीक़ा इलाजः

इस तरीक़ह इलाज में कद्दू की क़िस्म C.PEPO को इस्तेअमाल किया जाता हैं यह मतली और क़ै की बेहतरीन दवाई है। हामला औरतों को हमल के इब्तिदाई अय्याम में सुबह की मतली और इस्तिग़राक़ को रोकने के लिए अक्सीर है। ज़हरीली अदवियह से पैदा होने वाली सोज़िश और मतली में मुफ़ीद है। पेट के कीड़े निकालने की महफ़ूज़ और यक़ीनी दवाई है।

कस्तूरी ...... मुस्क
MUSK
MOSCHUS MOSCHIFEROUS

हैवानी ज़रिये से हासिल होने वाली ख़ुश्बुओं में कस्तूरी को एक मुनफ़र्द मक़ाम हासिल है यह किसी भी ख़ुश्बू पर ग़लबा पा सकती है। इस सलाहियत के बारे में एक फ़ारसी शाएर ने कहा है कि कस्तूरी अपना पतह ख़ुद बता देती है। और इस बारे में अत्तार को कुछ बताने की ज़रूरत नहीं रहती। हैवानी ज़राए के अलावह ख़ुश्बुओं की एक कसीर तअदाद नबाताती और कीम्यावी तरीक़ों से हासिल होती है। ख़ुश्बू साज़ी की सनअत में इस वक़्त फ्रांस को दुनिया भर में बरतरी हासिल है वहां पर तैयार होने वाली हर उम्दह ख़ुश्बू में या तो कस्तूरी शामिल होती है या मसनूई तरीक़े से इसकी ख़ुश्बू पैदा कर ली जाती है। क्यूंकि इल्म में तमाम तर तरक़्क़ियों के बावजूद आज तक इससे उम्दह ख़ुश्बू मयस्सर नहीं आ सकी बल्कि जब वह किसी ख़ुश्बू के असर को नुमायां या देरपा करना चाहें तो इसमें कस्तूरी शामिल करते हैं।

कस्तूरी बुलंद पहाड़ों पर पाए जाने वाले एक हिरन नुमा जानवर MOSCHUS

MOSCHFERUS के जिस्म के एक थैली में पाई जाती है। इस हिरन को फ़ारसी दानों ने "आहू" और "आहूए ख़तन" किस्म के नाम दिए हैं। यह क़द और जिस्म में आम हिरन से क़दरे छोटा, तनहाई पसंद और तिब्बत भूटान, चीन, रूस, नेपाल, आसाम और कोह हिमालया के उन इलाक़ों में पाया जाता है जिनकी बुलंदी आठ हज़ार फुट से ज़्यादह हो इस तन्हाई पसंद जानवर पर जब बहार आती है तो नर के तौलीदी ग़दूद एक लेसदार रतूबत पैदा करते हैं जिसमें तेज़ ख़ुश्बू होती है। यह ख़ुश्बू मादह को अपनी तरफ़ मुलतफ़ित करने के लिए पैदा होती है और नाफ़ और तौलीदी आज़ा के दरमियान जिल्द के नीचे एक थैली में जमा होती है। चूंकि थैली नाफ़ के नीचे होती है। इसलिए उर्फ़ेआम में "नाफ़ह" कहलाती है।

अतिब्बा क़दीम में इसकी माहियत और नौइयत मुद्दतों मख़मसे का बाइस रही है। जैसे कि इब्ने ज़ुह्र जैसा माहिर तबीब इसे मगरमछ का गोबर क़रार देता है। हमारे यहां के अतिब्बा का ख़याल है कि हिरन को मारने के फ़ौरन बअद शिकारी इसकी नाफ़ को रस्सी से बांद देते हैं। इस तरह नाफ़ का ख़ून इस बंद की वजह से एक जगह महदूद होकर जम जाता है, जिसे कस्तूरी कहते हैं।

मुश्क अज़फ़र चीज़ क्या है, इक लहू की बूंद है
मुश्क बन जाती है रह कर नाफ़ए आहू में बंद

कस्तूरी की थैली हिरन के जिस्म में सिर्फ़ उस अरसेह तक मौजूद रहती है जब तक उसे अपनी नस्ल कुशी के लिए दरकार हो। जब उसकी बहार ख़त्म हो जाती है तो वह पैर की ठोकर से इस थैली को फोड़ देता है और कस्तूरी ज़मीन पर गिर जाती है। कस्तूरी की तिजारत पर ज़माना क़दीम से चीनी ताजिरों का क़ब्ज़ह रहा है। वह हमेशा बुलंदियों पर इन हिरनों की आमाजगाहों की तलाश में रहते हैं और इनका कहना है कि वह कस्तूरी जो हिरन ख़ुद नाफ़ह फोड़ कर गिरा जाता है। मेअ़यार में सबसे ज़्यादह उम्दह होती है। क्यूंकि वह इसके जिस्म में ज़्यादह देर तक रही वह औसत से ज़्यादह गाढ़ी होती है।

नाफ़ह की लम्बाई आम तौर पर दो इंच से कम होती है जिससे दो औंस के लगभक कस्तूरी हासिल होती है। हिरन की उम्र अगर एक साल से कम हो तो यह मिक़दार कम होती है। दो साल के नर हिरन में कस्तूरी की भरपूर मिक़दार मिलती है। चीनी ताजिरों में मशहूर है कि उस हिरन को अगर किसी जगह बंद करके रखा जाए तो कस्तूरी का मेअ़यार गिर जाता है। और उसकी हासिल होने वाली मिक़दार भी कम होती है। नाफ़ह बाहर से चमकदार और अंदर खुरदुरे और सख़्त बाल होते हैं। जिसमें लेसदार रतूबत होती है। जिसका रंग हिरन की नस्ल, इलाक़ह और आबो-हवा के मुताबिक़ मुख़तलिफ़ तब्दीलियों से गुज़रता है। ताजिरों के यहां कस्तूरी का रंग, ख़ुश्बू और नाफ़ह की जिसामत उसकी क़ीमत और उम्दगी का तअय्युन करती है। मसलन सबसे उम्दह कस्तूरी चीन में काश्ग़र, ख़तन, मंगोलिया के इलाक़ों की क़रार दी जाती है। जबकि रूसी कस्तूरी सबसे घटिया है। हिंदुस्तान में भूटान की कस्तूरी आसाम से उम्दह सम्झी जाती है। शिमलह और कश्मीर में भी कस्तूरा हिरन पाया जाता है। मगर इससे हासिल होने वाली मिक़दार कम और मेअ़यार हल्का होता है। माहिरीन हयातियात ने

मैदानी इलाक़ों में पाए जाने वाले ग़िज़ाल की बअज़ किस्मों के पेट से भी नाफ़ह बरामद किए हैं मगर इनमें कस्तूरी की मिक़दार बराए नाम होती है और यह ज़रिया क़ाबिले ऐतिमाद भी नहीं यह एक मुस्लिमह अम्र है कि इस वक़्त दुनिया में सबसे उम्दह और मैअ़यारी कस्तूरी चीन से आती है। और चीनी कस्तूरी में भी टांकन का मारकह बहतरीन समझा जाता है इसकी वजह यह है कि इसमें कुदरती तौर पर एमोनिया शामिल नहीं होता। एमोनिया की मौजूदगी ख़ुश्बू को कम करती और मेअ़यार को ख़राब करती है। अगर्चे चीन के अपने सूबह होनान में कस्तूरी होती है फिर मंगोलिया और मंचूरया बल्कि साइबीरिया तक की कस्तूरी का निकास चीन के रास्ते से होता है लेकिन चीनी सौदागर अपने माल को उनसे अलाहिदा रखते हैं।

बादशाहों से वफ़ादारी के इज़्हार में ख़ुश्बू पेश करना एक तारीख़ी दस्तूर है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश पर उनकी ख़िदमत में लोबान और मुर पेश किए गए। इसी तरह ताजे बरतानिया से वफ़ादारी के इज़्हार में जार्ज पंजुम की तख़्त नशीनी के मौक़अ पर 1911 में महाराजा नेपाल ने जो तहाइफ़ नज़र गुज़ारे उनमें छः छः तोलह वज़न के कस्तूरी के नाफ़े भी थे। कहते हैं कि इससे बड़ा नाफ़ह कभी देखने में नहीं आया। चीनी ताजिरों के यहां कस्तूरी के वज़न का पैमाना CATTY है एक केटी वज़न के लिहाज़ से डेढ़ पोंड या 24 औंस होती है। इस में अंदाज़न 22 नाफ़े होते हैं जिनको रेशम के कीड़ों में अलाहिदा–अलाहिदा लपेट कर रेशम ही की थैली में रखा जाता है और यही थैली लेन–देन का ज़रियह होती है। बअद में इसे अल्यूमिनियम लगे लकड़ी के डब्बे में ख़ूश्बू को महफ़ूज़ करने के लिए रखा जाता है। एक केटी कस्तूरी हासिल करने के लिए कम–अज़–कम 32 कस्तूरा हिरन हलाक किए जाते हैं क्यूंकि दूर से नर और मादह में शनाख़्त नहीं हो सकती। कस्तूरी हर हिरन में हर वक़्त नहीं होती। ग़लती या नाकामी का पता जानवर को हलाक करने के बअद लगता है। इस हिरन का गोश्त बदज़ाएक़ह होता है।

शहनशाह जहांगीर ने अपनी तुज़्क में लिखा है कि एक मर्तबह आहुए मुश्कीं का गोश्त पकाया गया। बहुत बदमज़ह था किसी जंगली हैवान का गोश्त ऐसा बद–मज़ह न पाया गया।

कस्तूरी हासिल करने के लिए कस्तूरी की मांग में इज़ाफ़ह और क़ीमत ज़्यादा होने के बाइस लोगों ने इनका अंधा–धुंद शिकार किया। जिसकी वजह से इसकी नस्ल नापेद हो रही है। अब बाज़ार में कस्तूरी नहीं मिलती। जो नाफ़े फ़रोख़्त के लिए आते हैं वह ताजिरों की सन्नाई के शाहकार होते हैं। सुना जा रहा है कि चीनी हकूमत ने कस्तूरी की तिजारत पर अपने मुल्क की इजारा दारी को क़ायम रखने के लिए आहूए ख़ुतन के फ़ार्म बनाए हैं। जहां उनकी नस्ल भी महफ़ूज़ रहेगी और उनसे कस्तूरी के क़ाबिले एतिमाद मिक़दार इनकी जान लिए बग़ैर हमेशह हासिल होती रहेगी।

इरशादे रब्बानी

कुरआन मजीद में जन्नत में मिलने वाली नेअ़मतों को ज़िक्र करते हुए फ़रमाया गया:

تعوف فی وجوههم نضرة النعیم. لسیقون من رحیق مختوم. ختمه مسک وفی ذلک فلیتنافس المتنافسون. مزاجه من تسنیم. عینا یشرب بها المقربون (المطففین۔۲۲تا۲۸)

(राहतों की शगुफ़्तगी उनके चेहरों से ज़ाहिर हो रही होगी। उनको ख़ालिस शराब ऐसे बर्तनों में मुहैया की जाए गी जिन पर कस्तूरी की मुहर लगी होगी। इस नेअ़मत को हासिल करने के लिए लोग एक दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिश करेंगे। इसमें तस्नीम की आमीज़िश होगी और यह वह चश्मह है कि जो बरगुज़ीदह लोगों के लिए मख़सूस है।)

जन्नत में मिलने वाली शराब में किसी मिलावट का कोई इम्कान न होगा क्यूंकि इसका हर जाम कस्तूरी के ज़रिए सरबमुहर होगा। बअ़ज मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि जाम के अंदर से कस्तूरी की महक होगी। जिसे अंग्रेज़ी मुहावरे में MUSK FLAVOURED कह सकते हैं। इन औसाफ़ की बिना पर हर शख़्स यह चाहेगा कि उसे यह मशरूब दूसरों से पहले मयस्सर आए। फिर इसमें जन्नत के चश्मे तस्नीम के पानी की आमेज़िश होगी। जन्नत की नहरों में कौसर और तस्नीम मुन्फ़र्द हैसियत रखती हैं। कौसर के बारे में तो हदीस शरीफ़ में आया कि इसकी तह में मिट्टी की बजाए कस्तूरी होगी। इन नहरों से पानी पीना एक फ़ज़ीलत है जो ऐसे लोगों को हासिल होगी जिनको बारगाहे इलाही में क़ुर्ब की सआदत नसीब हुई।

इरशादाते नबवी सल्ल॰

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुश्बू हमेशह पसंद रही और इस ज़िम्न में कस्तूरी उनकी ख़ुसूसी पसंद थी।

हज़रत अबी सईद अलख़िदरी रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

الطیب الطیب المسک (مسلم، مسند احمد)

(सबसे बेहतरीन ख़ुश्बू कस्तूरी है)

हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि॰ बयान फ़रमाती हैं:

کنت الطیب النبی صلی الله علیه وسلم. قبل ان یحرم. ویوم النحر، وقبل ان یطوف بالبیت بطیب فیه مسک (بخاری،مسلم)

(मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एहराम से पहले क़ुरबानी वाले दिन तवाफ़े कअ़बा से पहले ख़ुश्बू लगाती थी। उसमें कस्तूरी शामिल होती थी।)

मसनद अहमद में बनी इसराईल की एक ख़ातून का तज़किरह मिलता है जिसका क़द बहुत छोटा था। उसने लकड़ी की टांगें बनवालीं और वह अपने पैरों के नीचे लगा कर अपना क़द ऊंचा कर लिया करती थी। (जिस तरह आजकल ख़्वातीन ऊंची ऐड़ी की जूती पहनकर क़द ऊंचा कर लेती हैं।) फिर उसने सोने की एक अंगूठी बनवाई जिसमें एक नगीनह बड़ी कारीगरी के साथ लगाया गया। जिसके अंदर कस्तूरी भरी रहती थी जब वह लोगों के पास से गुज़रती तो नगीनह दबा देती और इससे कस्तूरी निकल कर स्प्रे करके ख़ुश्बू

फैल जाती। यही वाक़िअह हज़रत अबू सईद अलख़िदरी ने मुख़्तसर अलफ़ाज़ में यूं बयान किया है:

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم ذكر امرأة من بنى اسرائيل حشت خاتمها مسكا والمسك الطيب الطيب۔ (مسند احمد۔ مسلم)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनी इस्राईल की एक औरत का तज़किरह फ़रमाया जिसने अपनी अंगूठी के अंदर कस्तूरी भरी थी। क्यूंकि कस्तूरी ख़ुश्बू के लिहाज़ से बेहतरीन है।)

दूसरी रिवायत में उस ख़ातून की ख़ुश्बू फैलाने वाली इन्फ़रादियत के ज़िक्र में फ़रमया:

اذامرأت باالمجلس حركت فنفخ ريهه (مسند احمد)

(जब वह किसी मज्लिस में अंगूठी को हरकत देती थी तो इतराफ़ में ख़ुश्बू बिखर जाती थी।)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. बयान फ़रमाते हैं:

سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم من الكوثر قال هونهو أعطانيه الله عزوجل فى الجنة. ترابه المسك. ماؤه ابيض من اللبن. واهلى من العسل ترده طير أعناقها مثل اعناق الجزر. قال قال ابو بكر يا رسول الله صلى الله عليه وسلم. انها لنا عمة. فقال اكلتها انعم منها

(بخاری۔ مسند احمد۔ النسائی)

(हमने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कौसर के बारे में सवाल किया। उन्होंने फ़रमाया कि वह एक नहर है जो अल्लाह तआला मुझे जन्नत में अता फ़रमाए गा इस नहर की मिट्टी में कस्तूरी है। इसका पानी दूध से भी ज़्यादह सफ़ेद है और मिठास में शहद से भी ज़्यादह है। इस पर ऐसे परिंदे मंडलाते होंगे जिन की गर्दनें ऊंट की गर्दन की तरह होंगी। हज़रत अबू बकर रज़ि. ने इस पर फ़रमाया कि यह तो अल्लाह तआला की बड़ी नेअ़मत हुई। उन्होंने फ़रमाया कि वह इनको खाएंगे वह इनसे भी ज़्यादह ख़ुश नसीब होंगे।)

जन्नत में मौजूद बेहतरीन चीज़ों में ख़ुश्बू की बेहतरीन सनफ़ कस्तूरी इस्तेअमाल होगी। हत्ता कि वहां की नहरों में आम आबी गुज़रगाहों की तरह मिट्टी की बजाए कस्तूरी होगी और यह तफ़सील दूसरे मुतअद्दिद मक़ामात पर भी मिलती है।

ان الرسول الله صلى الله عليه وسلم قال ان لاهل الجنة سوقا ياتونها كل جمعة. فيها كثبان المسك. فاذا خرجو اليها هبت الريح. قال حماد. احسبه قال شمالى قال فتمك وجوههم وثيابهم وبيوتهم مسكا.

(مسند احمد)

(रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत वालों के लिए हर जुमेअ को एक बाज़ार लगेगा। जिसके दोनों सिरों पर कस्तूरी के टीले होंगे। जब हवा चलेगी तो वह इस कस्तूरी को

हर सिम्त फैला देगी। हम्माद की दरयाफ़्त पर उन्होंने फ़रमाया: इनके लिबास चेहरे और घर कस्तूरी की ख़ुश्बू से लबरेज़ होंगे।)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन नोअमान बिन गोअबद बिन हूदह अलनसारी अपने वालिदे मोहतरम से रिवायत करते हैं:

ان الرسول صلى الله عليه وسلم امر بالا ثمد المروح عندالنوم

(ابوداؤد)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि रात सोते वक़्त असमद का ख़ुश्बू दार सुर्मह लगाया जाए।)

इस हदीस मुबारक की तफ़सीर में मुहद्दिस अबू उबैद फ़रमाते हैं कि मरूह से मुराद वह सुर्मह है जिसमें कस्तूरी शामिल की गई हो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से इब्ने माजह ने रिवायत की है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक सुर्मे दानी थी जिससे वह हर रात अपनी आंखों में सुर्मह लगाया करते थे। दूसरी रिवायत से मअलूम होता है की इसके सियाह सुर्मे में कस्तूरी मिलाई गई थी ओर इसे "अलअसमद अलमरूह" का नाम दिया गया।

मुहम्मद अहमद ज़हबी रह० ने दर्जज़ैल दो अहादीस रावी और माख़ज़ ज़िक्र किए बग़ैर बयान की है।

وامر رسول الله صلى الله عليه وسلم الطيب والغسل يوم الجمعة

(الطب النبوی)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि जुमेअ वाले दिन ग़ुस्ल किया जाए और ख़ुश्बू लगाई जाए।)

जिस्मानी ग़िलाज़तों से बचने के और इनके बअद जिस्म को साफ़ करने के सिलसिले में ख़वातीन को अय्याम के दौरान मस्जिद में न जाने की हिदायत के बअद पाक होने पर ग़ुस्ल को ज़रूरी क़रार दिया गया और इस ग़ुस्ल के बअद:

أنه عليه الصّلاة والسلام كان يطلب الطيب فی رباع نسائه (الطب النبوی)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी अज़वाजे मुतहरात के पाक होने के बअद उनके लिए ख़ुश्बू तलब फ़रमाते थे।)

यह ख़्वातीन जब अय्याम से फ़ारिग़ हो कर ग़ुस्ल करके पाक साफ़ हो जाती थीं तो उनको कस्तूरी लगाने की हिदायत फ़रमाई जाती थी।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

कस्तूरी एक ऐसी ख़ुश्बू है जिससे कोई बेहतर नहीं और इसकी उम्दगी यहां तक है कि जन्नत की एक नहर की मिट्टी इससे बनी होगी। इसकी ख़ुश्बू ज़रबुलमस्ल के तौर पर मशहूर है। यह सांस की नालियों को खोलने के साथ इसको ताक़तवर बनाती है बल्कि जिस्म के अंदर के तमाम आअज़ा को यक्सां ताक़त देती है इसे सूंघना, लगाना और खाना यक्सां तौर पर मुफ़ीद हैं। यह बड़ी उम्र के उन लोगों के लिए ख़ास तौर पर मुफ़ीद है जो हर वक़्त ठंडक महसूस करते हैं। यह बाओगोलह और दूसरे अस्बाब से होने वाली बे–होशी को दूर करती है। सर्दी के मौसम में जब दांत बज रहे हों तो इसकी एक ख़ुराक ही जिस्म को गर्मी देती है। याददाश्त की कमज़ोरी, घबराहट और ज़ुअफ़ में बड़ी

मुफ़ीद है। जिस्म की हरारत में इज़ाफ़ह करती है। इसका खाना और लगाना आंख की सफ़ेदी को दूर करके इसे रौशन करता है।

"इब्नुल क़य्युम" ने यहां पर " يجلوا بياض العين " लिखा है। आंख में सफ़ेदी से मुराद मोतियाबिंद भी हो सकता है और फोला भी। चूंकि उन्होंने यहां पर सफ़ेदी की वज़ाहत नहीं की और दूसरी अहादीस से मअलूम होता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ाती इस्तेअमाल के सुर्मे में कस्तूरी भी शामिल फ़रमाते थे। इससे यह साबित होता है कि कस्तूरी दोनों अक़साम की सफ़ेदी को रोकती और अगर हो जाए तो इनका इलाज है।

यह आंख से निकलने वाली ग़लीज़ रतूबतों को ख़ुश्क करती है जिस्म के मुख़तलिफ़ आअज़ा में जमअ होने वाली रतूबतों और रियाह को ख़ारिज करके ओराम को दूर करती है। यह ज़हरों का तिर्याक़ है। हत्ता कि सांप के ज़हर के असर को ख़त्म कर देती है। जिस्म और ज़हन को फ़रहत देने वाली कोई भी दवाई कस्तूरी के बग़ैर मुकम्मल नहीं और इसके फ़वाइद इतने ज़्यादह हैं कि उनका शुमार में लाना मुहाल है।

मुहम्मद ज़हबी रह. इस अम्र से इत्तिफ़ाक़ करते हैं कि कस्तूरी की ख़ुश्बू हर क़िस्म की ख़ुशबुओं से अरफ़ा–व–आला है और यह दिल को तक़वियत देने के साथ जिस्म की हरारत अज़ीज़ी को बेहतर करती है जिस्म के हर अज़ू को तवानाई बख़्शती है। रियाह को ख़ारिज करती है। और ज़हरों के असर को ज़ाइल करती है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़वातीन को अय्याम के बाद ख़ून की बदबू दूर करने के लिए कस्तूरी हिदायत फ़रमाई।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुमे वाले दिन ग़ुस्ल करने और ख़ुश्बू लगाने का हुक्म दिया है। उलमा की तफ़सीर के मुताबिक़ बेहतरीन ख़ुश्बू कस्तूरी है क्यूंकि वह सुन्नते नबवी है। इसलिए हज़रत आएशह रज़ि. ने इनको एहराम पहनते वक़्त और क़ुर्बानी के दिन यही ख़ुश्बू लगाई।

कस्तूरी का इस्तेअमाल वबाओं के मुज़िर असरात से बचाता है। बल्कि इन दिनों बीमारी का इलाज भी है कस्तूरी जानवरों से हासिल होती है ख़ारासान से दरामद होने वाली कस्तूरी असर में बहतरीन है इसके बअद चीन और हिंदुस्तान का नंबर है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

मुश्क बेडोल सियाह रंग के सुर्ख़ी माइल दाने होते हैं जिसका ज़ाएक़ा तल्ख़ और ख़ुश्बू तेज़ होती है। यह दो इंच क़ुत्र की एक थैली में मिलती है जिसे नाफ़ह कहते हैं। सबसे बेहतर मुश्क चीन के इलाक़ह ख़ातन का, इसके बअद तिब्बत, फिर नेपाल फिर रूस फिर कांगड़ा और कश्मीर का। हिंदी कस्तूरी की रंगत के एतिबार से पांच क़िस्में हिंदी, चीनी, तिब्बती, इराक़ी और मिस्कुलयदबयान की है। दिलचस्पी की बात यह है कि इराक़ में कस्तूरी वाला हिरन नहीं होता। अगर कस्तूरी नाफ़ेह में बंद रहे तो इसकी उफ़ादियत तीन साल तक क़ायम रहती है जबकि बाहर निकालने के बअद फ़वाइद एक साल तक रह सकते हैं इसलिए चीनी ताजिर इसे लकड़ी के डब्बों में बंद रखते हैं।

फ़वाइद के लिहाज़ से इसका अहम तरीन अमल तबीअत में फ़रहत लाना है।

तबीअत में लताफ़त पैदा करती है। दिल–दिमाग़ और आलाते तनफ़्फ़ुस को ताक़त देती है। हरारत अज़ीज़ी को बढ़ाती है। हवास ज़ाहिरी व बातिनी को पाक साफ़ करती है। सांप–बिच्छू वग़ैरह की हैवानी ज़हरों के अलावह नबाताती ज़हरों का भी तिर्याक़ है।

दिमाग़ी अवारिज़ में फ़ालिज, लक़वह, रअशा, नस्यान, ख़फ़क़ान और जुनून में मुफ़ीद है। मुसलसल इस्तेअमाल से मिर्गी में नाफ़ेअ है। गाढ़ी ख़लतों को पतला करके निकालती है। रियाह को तहलील करती है बल्कि इसके सूंघने से नज़लह को फ़ाएदा होता है। सर्दी के सर दर्द में मुफ़ीद है। आंख में लगाने से धुंध, जाला, सेलान और दमह को दूर करती है। अगर आंखों के इलाज में इस्तेमाल होने वाली अदवियह में कस्तूरी शामिल की जाए तो इन अदवियह का अंज्ज़ाब और असरात बेहतर हो जाते हैं।

कस्तूरी खाने या सूंघने से भी सर्द मिज़ाज वालों की दिमाग़ी सलाहियत बेहतर होती है वह लोग जो हर वक़्त थके–थके और मुज़महिल रहते हैं उनके लिए यह बेहतरीन दवाई है। बअज़ अतिब्बा ने क़रार दिया है कि कस्तूरी के इस्तेअमाल से बुज़दिली रफ़अ हो जाती है। इसे तकिये में रख लिया जाए तो रात को पसीने नहीं आते। यहां पर यह अम्र तवज्जह तलब है कि रात को पसीना आना तपे–दिक़ की अलामात में से एक है। अगर्चे पसीनह इसके अलावह और बीमारियों में भी आ सकता है। आम हालात में कमज़ोरी से आने वाले पसीने में मुफ़ीद है।

फ़साद बलग़म, वरम आअज़ा, यर्क़ान और ख़ारिश्त में बड़े एतिमाद के साथ इस्तेअमाल करते हैं। कमज़ोरी को दूर करने के लिए दवाई मुश्क पान में रख कर दी जाती है। वैदिक तिब में अदरक के रस में कस्तूरी मिला कर दमह के मरीज़ों को दी जाती है मक्खन के साथ इसे मिलाकर देने से ग़ौतह वाली खांसी रफ़अ हो जाती है इसे मालकंगिनी के तेल के साथ देने से मिर्गी को फ़ाएदा होता है। वैद कस्तूरिया हिरन के गोश्त को सुबक और पेट में नफ़ख़ पैदा करने वाला बयान करते हैं। जबकि इसकी मादह के गोश्त को शीरीं, सुबक और मुफ़ीद क़रार दे कर फ़सादे ख़ून को रफ़अ करने वाला क़रार देते हैं।

इसके मुज़िर असरात को रफ़अ करने के लिए अर्क़े गुलाब मुख़्तलिफ़ सूरतों में तजवीज़ किया जाता है। जबकि बअज़ उस्ताद रौग़ने बनफ़शा या रौग़ने गुल को इसका मुसल्लह बयान करते हैं। मुंह से इसकी बदबू दूर करने के लिए थोड़ी सी क्रिफ़्स चबा लें।

हकीम सय्यद सफ़ियुद्दीन ने इसके असरात का ख़ुलासह करते हुए इसे मुफ़र्रह, मुक़व्वी आज़ाए रईसा, मुलतफ़ दाफ़ेअ तश्नज, मुक़व्वी बाह, मुक़व्वी हवासे ज़ाहिरी व बातिनी और सुद्दों को खोलने वाली बयान किया है। इन असरात की वजह से ज़अफ़े क़ल्बो दिमाग़, ख़फ़क़ान, मालीख़ोलिया, मराक़, मिर्गी, हिस्टीरिया, बच्चों के तश्नजी दौरों, सकता, उम्मुस्सिबयान निस्यान, फ़ालिज, लक़वह, ग़शी, काली खांसी वग़ैरह क़िस्म की बीमारियों में मुफ़ीद है।

अक्सर अतिब्बा ने इसकी मिक़दार, ख़ुराक 2 माशह तक बयान की है। लेकिन हकीम नजमुल ग़नी ख़ां ख़ालिस कस्तूरी की बजाए इसकी टिंक्चर की दस बूंदें सुबह–शाम तजवीज़ करते हैं।

तिब्बे यूनानी के मश्हूर मुरक्कबात में दवाउल मुस्क, मुफ़र्रह कबीर और ख़मीरह आब्रेशम हकीम अरशद वाला में कस्तूरी शामिल है। बअज़ अतिब्बा के नज़दीक इन तमाम मुक़व्वियात में कस्तूरी को जुज़्वे आमिल की हैसियत हासिल है।

कस्तूरी तबीअत को फ़रहत देती बल्कि तिब्बी ज़बान में कहें तो आअ़साब को तहरीक देती है और यह फ़रहत कमज़ोरी को वक़्ती तौर पर कम कर देती है। मगर इसका हरगिज़ यह मतलब न लिया जाए कि दिक़ के मरीज़ इस पर भरोसह न करें। दिक़ का बाक़ाएदा और तवील इलाज बहरहाल ज़रूरी है।

बूढ़े और कमज़ोर अफ़राद के लिए कस्तूरी एक अजीब चीज़ है। ख़ास तौर पर मौसमे सरमा के अवारिज़ को कम करने और सख़्त सर्दी के दौरान इनको ठिठरने से महफ़ूज़ रखती है। माहिरीन का एक तबक़ा इसे इस्हाल में मुफ़ीद क़रार देता है और तज्वीज़ करते हैं कि इस्हाल मुज़्मिन और संगरहनी के इलाज में मुनासिब अदविया के साथ कस्तूरी को भी शामिल किया जाए। जबकि माहिरीन का दूसरा गिरोह इस फ़ाएदे से यक्सर इन्कारी है। उनका ख़याल है कि अगर यह जिगर, मेअ़दा और आंतों पर कोई अच्छे असरात दिखाती है तो वह निज़ामे असबी, दिल और तनफ़्फ़ुस पर मुहर्रिक असरात की वजह से और इस तरह फ़वाइद किसी और जगह तक महदूद न होंगे। बल्कि पूरे जिस्म पर मुहीत होंगे। इसी वजह से इसकी तिब्बी ख़ुराक से थोड़ी सी भी ज़ाइद दी जाए तो सर में गिरानी तबीअत में मालिश और चक्कर आते हैं जबकि मिक़दार में मज़ीद इज़ाफ़े तश्नज और रअ़शा का बाइस होता है। हालांकि आम हालात में यह रअ़शह और तश्नज का इलाज है।

जिस्म से इसका इख़राज पसीनह और पेशाब के रास्ते होता है। अगर मिक़दार ज़्यादह हो तो सारी ख़ुराक जज़्ब नहीं होती इसलिए फ़ुज़ला में भी इसकी ख़ुश्बू मौजूद होती है। अतिब्बा क़दीम ने सोज़िश से पैदा होने वाली बअज़ ख़तरनाक बीमारियों मसलन नमूनिया, पिलोरसी, गर्दन तोड़ बुख़ार, तपे-मुहर्रिक़ा, पुराने बुख़ारों और दिक़ के आख़री मराहिल में इसे मुहर्रिक के तौर पर दिया है और अक्सर औक़ात अच्छे नताइज हासिल किए हैं। लेकिन यह आरज़ी फ़ाएदह के बअद मज़ीद कमज़ोरी का बाइस हो सकता है। क्यूंकि आअसाब को किसी भी तर्कीब से जब तहरीक दी जाए तो इस तहरीक का रद्दे-अमल बअद में अज़आफ़ की सूरत में होता है। शराब के जिगर और आंतों पर ज़हरीले असरात को ख़त्म करने और पुरानी खांसी में भी इसकी उफ़ादियत मशहूर रही है मगर अब अतिब्बा में इसे देने का रुजहान कम होता जा रहा है।

वैदिक तिब में इसके मुफ़र्रह असरात को तसलीम करती है। यह बीनाई को बढ़ाती और जिस्म के सुद्दे खोलती है। जिस्मानी क़ुव्वत में इज़ाफ़ह करती है और वैद इसे खांसी, दमह, बतलान हिस शमद, बदबूए दीन में दिया जाता है।

आयुर्वैदिक तिब में कस्तूरी:

भाओ प्रकाश ने कस्तूरी की तीन किस्में उनके माख़ज़ की बिना पर क़रार दी हैं पहली करकाम का नाम दिया गया है। इसकी ख़ुश्बू सबसे तेज़, सियाह रंग और आसाम से आती है। हालांकि आसाम में कस्तूरी नही होती। इनकी ग़ालिबन मुराद शिमाल मश्रिक़ी भारत के रास्ते आनेवाली क़िस्म से है जो कि चीन या तिब्बत से आती है। दूसरी नेपाला है जिसका रंग सियाही माइल नीला और

इसके बअद कशमीरा है। जो कि कश्मीर या रूस से आती है मेअ़यार में सबसे अदना है।

वैदिक तिब की मशहूर किताब "रासिंदर सर्स अंगराहा" में एक नुस्ख़ह कस्तूरी रसा मशहूर है। जिसमें हड़ताल, मीठा तेलिया, सुहागह, फिलफ़िल सियाह व सुर्ख़ को कस्तूरी के साथ मिलाकर पुराने बुख़ारों में देते हैं। गले की ख़राबियों के लिए मर्ग नाभयादरा अबलीहा" एक चटनी है जिसमें कस्तूरी, इलाइची, क़रनफ़ल, खजूर, दारचीनी को ख़ूब घोट कर इसमें शहद और मक्खन मिलाकर बार–बार चटाते हैं। पहला नुस्ख़ाह ख़ातरनाक है जबकि दूसरे में उफ़ादियत का इम्कान मौजूद है।

दमह और छाती की सोज़िश के अलावह क़ौलिंज की मुख़तलिफ़ अक़साम में अध चम्मच कस्तूरी, चार चम्मच हींग, दो चम्मच सौंठ, फ़िलफ़िल सियाह दो चम्मच को पीस कर इसकी एक चुटकी दी जाती है। इसमें कस्तूरी की शमूलियत हिस्टीरिया में मुफ़ीद बना देती है। अलबत्तह तेज़ाबियत में इज़ाफ़ह करेगा।

दवाख़ना नूरुद्दीन में एक क़दीम नुस्ख़े के मुताबिक़ एक मुरक्कब ज़दजाम इश्क के नाम से बनाया जाता है। इस दवाई के नाम के अज्ज़ा में नुसख़ह है। ज़े से ज़अफ़रान दाल से दारचीनी, जीम से जाएफ़ल, अ से अफ़यून मीम से मुश्क (कस्तूरी) ऐन से अक़रे क़रहा, शीन से ज़रिश्क और क़ाफ़ से क़रनफ़ल। इन अश्या के अलावह इस में संखया की एक मअमूली मिक़दार भी शामिल की जाती है। यह नुस्ख़ह उनके यहां पिछले 90 साल से तैयार हो रहा है और अकसर लोगों को जुमलह कमज़ोरियों से शिफ़ा याब होते देखा गया है।

कस्तूरी में मिलावट:

कस्तूरी चूंकि आसानी से मयस्सर नहीं आती और इसकी क़ीमत भी काफ़ी गिरां है। इसलिए बेज़मीर ताजिरों के लिए इसमें मिलावट करने की ख़्वाहिश पैदा होती है। भारत के करनल सर चोपड़ा को इल्मुल अदविया में आलमी शोहरत हासिल है। उन्होंने मक़ामी अदवियह पर एक किताब लिखी है जो सारी दुनिया में इस इल्म की मोअ़तबर तरीन किताब मानी जाती है। असली कस्तूरी के हुसूल में उनको जो मुश्किलात पेश आईं उन्होंने बड़ी तफ़सील से इनका तज़किरा किया है। हालांकि वह रिटायर्ड होने के बअद महाराजा कश्मीर की ड्रग टेस्टिंग लेबारेट्री के सरबराह थे। मगर उनको अपने तजुर्बात के लिए क़ाबिले एतिमाद कस्तूरी कशमीरी और तिब्बती सौदागरों से भी मयस्सर न आ सकी। उनमें रफ़ुक़ा में मदालियार और डेविड ने 1929 में बिरमिंघम की एक फ़र्म से कस्तूरी की टिंक्चर मंगवाकर अपने तजुर्बात इस पर मुकम्मल किए। इन मुश्किलीत की वजह से उन्होंने इसकी मिलावट का पतह चलाने के लिए कुछ टेस्ट तजवीज़ किए हैं। इनमें हकीम नजमुल ग़नी ख़ान के मुशाहिदात भी शामिल हैं।

1. कस्तूरी के कुछ दाने पानी में डाल दिए जाएं। अगर यह दाने हल न हो तो कस्तूरी ठीक है वरनह मिलावट है।

2. लकड़ी के कोएले ख़ूब दहकाकर कस्तूरी के दो एक दाने किसी कोएले पर डाल दें अगर वह पिघल कर बुलबुले देने लगें तो कस्तूरी असली है और अगर जम कर सख़्त हो जाए तो मिलावट है।
3. सूती धागा लेकर इसे हींग से गुज़ारें। फिर इस धागे को फ़ौरन ही कस्तूरी में गुज़ारा जाए अगर कस्तूरी से गुज़रने के बअद भी इसमें हिंग की बू बाक़ी रहे तो कस्तूरी ख़ालिस नहीं।
4. अगर दाने ज़्यादह स्याह और भारी हों मज़ह कसैला और ख़ुश्बू कम हो तो यह नक़ली है।
5. असली नाफ़े के अंदर ख़ाने बने होते हैं। जैसे कि अनार में, नक़ली में ख़ाने नहीं होते।
6. धागे को लहसन की पौथी में से गुज़ार कर फिर कस्तूरी में से गुज़रें, कस्तूरी अगर ख़ालिस हो तो धागे से लहसन की बदबू ग़ायब हो जाएगी।
7. मुश्क को किसी बर्तन में डाल कर गर्म करें अगर इसमें से जले हुए चमड़े या किसी और तरह की बदबू निकले तो वह नक़ली है। असली में से सिर्फ़ कस्तूरी की खुश्बू बरआमद होगी।
8. रिस्तू से मंसूब है कि कस्तूरी को तोल कर किसी नमी वाले बर्तन में थोड़ी देर रखें फिर तोलें असली कस्तूरी नमी को जज़्ब करके वज़न में बढ़ जाती है।
9. हिंदुस्तानी कस्तूरी को अर्क़े गुलाब में पीस कर डाल दें। अगर अर्क़ का रंग गदला हो जाए तो कस्तूरी असली नहीं।
10. इराक़ी मुश्क में सुर्ख़ी के साथ ज़रदी और सियाही की झलक होती है। इसे मुंह में रखें तो कोई ज़ाएक़ह नहीं होता और ख़ुश्बू बहुत होती है।

कस्तूरी वाले दीगर हैवानात और नबातात:

कस्तूरिया हिरन के अलावह ग़िज़ाल की क़िस्म ANTILOPE DORCAS एक चोपायह MUSTELA FOINA के गोबर से कस्तूरी की ख़ुश्बू आती है कोहे इलैस पर पाई जाने वाली बकरी COPERA IBEX का ख़ून जम जाने के बअद कस्तूरी की मानिंद ख़ुश्बू देता है। अमरीकी इंडियन बेल की तरह के एक जानवर OVIBOX MOSCHATUS का बड़ी रग़बत से खाते हैं। यह जानवर जिधर भी जाता है उसके जिस्म से ख़ुश्बू निकलती है। गोल्ड कोस्ट और जमीका में पाई बतख़ ANAS MOSCHATA को लोग कस्तूरी की ख़ुश्बू की वजह से MUSK DUCK भी कहते हैं। दरयाए नील में पाया जाने वाला मगरमछ CROCODILUS VULGARIS कछुओं की मुतअद्दिद अक़साम ख़ासतौर पर CINOSTERNUN PRENNSYLVANIANUM और इनके अलावा भारत में रहने वाले मुतअद्दिद क़िस्म के सांपों से मुश्क की सी ख़ुश्बू आती है। जिन में गुलाब की कुछ अक़साम, कद्दू की क़िस्म BENNICASA CERIFERA सर्सों की BRASSICA-OLERACEA सुंबलु तय्यिब, मुश्कदाना, मैक्सिको में पाया जाने वाला एक अजीब फूल MIRABILIS LONGIFLORA रात के वक़्त कस्तूरी की सी ख़ुश्बू देवे हैं।

इनके अलावा कम–अज़–कम पौदों की जीराडेन ने 14 अक़साम ऐसी गिनवाई हैं जिनसे कस्तूरी की सी ख़ुश्बू निकलती है।

कस्तूरी के कीम्याई बदल:

एक अरसह से माहिरीन इल्मुल अदवियह का ख़याल है कि कस्तूरी के अपने कोई असरात नहीं। इससे जो कुछ भी होता है वह दिमाग़ पर इसकी ख़ुश्बू के असरात से होता है। अतिब्बा क़दीम ने इसके फ़वाइद में जगह–जगह फ़रहत का तज़किरह किया है। यह फ़ाएदह दवाई का नहीं बल्कि ख़ुश्बू का है। चूंकि हैवानात और नबातात में बहुत स॰ जगहों पर एक ख़ास हिरन के अलावह इसी क़िस्म की ख़ुश्बू अकसर जगहों से मिल जाती है। इसलिए कीम्यादानों ने चाहा कि वह लेबारेट्री में कस्तूरी जैसी ख़ुश्बू पैदा करके वह फ़वाइद हासिल कर लें ऐसा करना इसलिए भी ज़रूरी हो गया कि कस्तूरी का असल हालत में मयस्सर आना रोज़–बरोज़ मुश्किल हो रहा है। कस्तूरिया हिरन की नस्ल ख़त्म हो रही है फिर यह भी ज़रूरी नहीं कि अगर हिरन मार भी लिया जाए तो उसके जिस्म में नाफ़ह मौजूद हो। क्यूंकि नाफ़ह एक ख़ास मौसम के मुक़र्रिरह औक़ात ही में मयस्सर आ सकता है। इसके अलावह इस हिरन से और कोई फ़ाएदह हासिल नहीं। इसलिए कीम्यादानों ने एक महक TRINITROMETA TERITARY BOTYL TOLUENE पर मुशाहिदात में मअलूम किया कि यह कस्तूरी की सी ख़ुश्बू दे सकता है। इसके बअद लोगों ने TOCUENE के दूसरे ग़ैर ज़हरीले मुरक्कबात तलाश किए। हिंदुस्तान में सबसे पहली मर्तबह बंगाल कैमिकल कंपनी ने TRINITROBUTYLTOLUOL पेश किया। इसकी ख़ुश्बू देर पा, और कस्तूरी के क़रीब तरीन है।

लाहौर में पापड़ मंडी और अकबरी मंडी कीम्याई अनासिर की ख़रीदो–फ़रोख़्त के बड़े मराकिज़ हैं। पापड़ मंडी में नक़ली कस्तूरी की कम–अज़–कम एक दरजन किस्में मौजूद हैं जिनमें ख़ुश्क ज़र्रात, तेल की मानिंद चिकनी और उड़जाने वाली सयाल क़ीमत के लिहाज़ से इसमें से कोई भी चालीस रुपए औंस से ज़्यादह नहीं। तेल और ख़ुश्क अक़साम की ख़ुश्बू ज़्यादह देरपा होती है। इसलिए अक्सर दवासाज़ों को उन्हें कसरत से इस्तेअमाल करते देखा गया है।

अंग्रेजी दवासाजों के यहां बिरमिंघम के बार्कले लिमिटेड और बंगाल केमिकल की तैयार करदह कस्तूरी की टिंक्चर ज़्यादह मक़बूल है। बिरमिंघम के बार्कले लिमिटेड और साऊथाल ब्रादर्ज़ का दअवा है कि वह यह टिंक्चर असली कस्तूरी से बनाते हैं। जबकि भारती माहिरीन अलअदवियह को शुबह है कि सही क़िस्म की असली कस्तूरी आम हालात में किसी को भी मयस्सर नहीं। ज़रिया ख़्वाह कितना ही यक़ीनी और क़ाबिले एतिमाद क्यू न हो इसमें मिलावट का होना एक लाज़मी अम्र है।

कस्तूरी का कीम्यावी तज्ज़िया:–

हिरन के नाफ़ह से जब कस्तूरी ताज़ह–ताज़ह निकलती है तो वह दूधिया होती है। मगर थोड़े ही अरसे में इसका रंग सुर्ख़ी माइल भूरा हो जाता है इसकी ख़ुश्बू पाएदार और ज़ाएक़ह तल्ख़ होता है। यह अलकुहल में 10 फ़ीसदी और

पानी में 50 फ़ीसदी हल पज़ीर है। अगर इसे गर्म किया जाए तो इससे पेशाब की सी बदबू ख़ारिज होती है। कीम्यावी तज्ज़िये पर एमूनिया, चिक्नाई, मोम, पोटाशियम और सोडियम के क्लोराइड के अलावह इसमें CHOLESTRIN और OLEIN इसमें ALBUMINOIOS के साथ चिपकदार अनासिर भी शामिल होते हैं। कस्तूरी को जब भाप के साथ कशीद किया जाए तो इससे थोड़ी मिक़दार में एक बे रंग तेल बरआमद होता है जिसमें कस्तूरी जैसी ख़ुश्बू होती है। तेल के कीम्यावी तज्ज़ियह पर इसमें KETONES के ख़ानदान के अनासिर पर कीम्यावी आमाल के ज़रिय वह मुरक्कबात पैदा किए गए हैं जिनका ज़िक्र ऊपर किया जा चुका है।

कस्तूरी के कीम्यावी अज्ज़ा में CHOLESTRIN की मौजूदगी पर लोगों ने तवज्जह नहीं दी। यह वही अंसर है जिसे इम्राज़े क़ल्ब का बाइस क़रार दिया जाता है। अगर्चे यह मिक़दार माअमूली होती है लेकिन एक लम्बे अर्से तक इसका इस्तेअमाल तकलीफ़ का बाइस हो सकता है।

जदीद तहक़ीक़ात:

पुराने डाक्टर कस्तूरी के फ़वाइद के बड़े मोअतरफ़ थे। इंग्लिस्तान के हस्पतालों में गर्दन तोड़ बुख़ार, ताऊन और दिक़ के मरीज़ों को आख़िरी मराहिल में कस्तूरी दे कर कमज़ोरी दूर करके बयान किया गया है। लेकिन जदीद तबक़े में मदालियार, रेडी और डेविड के बअद करनल चोपड़ह इसके फ़वाइद के बिल्कुल मुनकिर हैं। वह इसके फ़वाइद को इस क़ाबिल नहीं समझते कि इसे कोई अहमियत दी जाए। तजुर्बात के लिए उनहोंने शिमला की पहाड़ी रियासत थ्योच के राना और क़ाबिले एतिमाद कशमीरी सौदागरों से हासिल की।

उन्होंने बृमिंघम और लंदन से इसका टिंक्चर मंगवायां उन्होंने कस्तूरी को पहले एक दिन आबे मक़तर में भिगोया। इस तरह 75 फ़ीसदी हल हो गई। अगर्चे इस पानी को गर्म करके मज़ीद मिक़दार को हल किया जा सकता है मगर इस अंदेशे से कि इसके मुफ़ीद अज्ज़ा कैल्शियम उड़ न जाएं इसे गर्म न किया गया और ग़ैर हल पज़ीर नबाताती मादे छान कर निकाल दिए गए। करनल चोपड़ह इन असरात का ख़ुलासा यूं बयान करते हैं।

दिमाग़ और आअ़साबी निज़ाम:

तीन मुख़्तलिफ़ सूरतों में तजुर्बात के नतीजे में चूहों, बिल्ली के बच्चों और मैंडक के आअ़साब पर किसी क़िस्म का असर महसूस न किया गया।

दौराने ख़ून:

बिल्ली की टांग में वरीद में 10–20 मिली ग्राम कस्तूरी का महलूल दाख़िल किया गया। इसके बअद ब्लड-प्रेशर में कोई तब्दली न देखी गई। मुख़्तलिफ़ जानवरों के दिल निकाल कर इनको बज़रियह मशीन धड़कन में मसरूफ़ रखा गया। ऐसे दिलों में जब कस्तूरी का टीका लगाया गया तो उनकी रफ़्तार क़ुव्वत और बाक़ाइदगी पर कोई असर न देखा गया। हालांकि ऐसी सूरत में सैंकड़ों अदवियह असर अंदाज होती हैं इनके असरात को जांचने का यह आलमी मेअ़यार मुतअय्यन है।

मैंडक के दिल में बालाई तर्कीब के अलावा टिंक्चर का टीका लगाया गया 1929 में मदालियार और उनके रफ़क़ा बयान करते हैं कि दिल की रफ़्तार और ताक़त में किसी क़िस्म की कोई तब्दीली ज़ाहिर न हुई।

ख़ून के दानों पर असरात:

यह बात अंग्रेज़ डाक्टरों के यहां मशहूर है। बल्कि बअज़ ने लेबारेट्री में मुशाहिदात से साबित किया है कि कस्तूरी की मअमूली मिक़दार के एक घंटे बाद ख़ून में सफ़ेद दानों यानी WHITE BLOOD की मिक़दार बढ़ जाती है। इस अमल की तसदीक़ मदालियार और डेविड ने अपने मुशाहिदात में की। उन्होंने कस्तूरी की टिंक्चर के बीस क़तरे से एक औंस पानी में मिलाकर लोगों को पिलाए और इसके निस्फ़ से एक घंटे बअद ख़ून में सफ़ेद दानों की गिन्ती से मअलूम हुआ कि इनकी तअदाद में मोअतदबा इज़ाफ़ह हुआ है।

इन मुशाहिदात की तसदीक़ के लिए अस्तवाई बीमारियों के इलाज के मशहूर मरकज़ कार माईकल सेटल में ऐसे मरीज़ों को 2 ग्रेन कस्तूरी ख़ाली पेट खिलाई गई जिनमें काला आज़ार या इसी क़िस्म की बअज बीमारियों में सफ़ेद दाने कम थे इनके ख़ून के जुमलह अनासिर का तज्ज़िया एक घंटे के बजाए अढ़ाई घंटों के बअद इसलिए किया गया कि कस्तूरी की ख़ुश्बू से मुतास्सिर होने का अरसह गुज़र जाए। सात रोज़ तक के मुसलसल टेस्ट होते रहे। किसी चीज़ में कोई बहतरी न देखी गई। हत्ता कि ब्लडप्रेशर और नब्ज़ भी वैसे ही रहे।

मुवाज़नह के लिए हस्पताल के अमले के सहत मंद अफ़राद मसलन लेबारेट्री के मसाएदीन को रोज़ानह 2 ग्रेन कस्तूरी खिलाई गई। उनकी नब्ज़, ब्लड प्रेशर और दिल की रफ़तार में कोई तब्दीली वाक़ेअ न हुई। तंदरुस्त अफ़राद ने बयान किया कि कस्तूरी खाने के बअद इनको पेट में ऐसे लगा जैसे कि वहां से कोई बोझा उतर गया है। रियाह निकल गई है और तबीअत का इनक़बाज़ जाता रहा। समझदार अफ़राद ने बताया कि उनको बिल्कुल ऐसे माअलूम हुआ जैसे उन्होंने उम्दह क़िस्म की हाज़मे वाली लाल मिक्सचर पी ली हो। उनके ख़ून के ख़ुर्दबीनी मुआएनों पर कोई ख़ुश्गवार तब्दीली मुशाहिदे में न आ सकी।

निज़ामे तनफ़्फ़ुस पर असरात:

जानवरों को बे–होश करने के बअद उनकी सांस की नालियों के अंदर कस्तूरी के महलूल का इंजक्शन किसी तब्दीली का बाइस न हुआ। लेकिन उन्ही जानवरों को जब कस्तूरी का मुरक्कब सुंघाया गया तो तनफ़्फ़ुस की रफ़तार में वाज़ेह तब्दीली नज़र आई एक लोहे की नलकी के ज़रिए जब कस्तूरी का महलूल बराहे रास्त गले से आगे सांस की नालियों में स्प्रे किया गया तो इससे कोई फ़र्क़ नज़र न आया लेकिन यही स्प्रे जब नाक में किया गया तो जानवर की बेहोशी के बावजूद तनफ़्फ़ुस की रफ़तार बेहतर हो गई। इन मुशाहिदात से यह ज़ाहिर हुआ कि कस्तूरी बतौर दवा के बज़ाते ख़ुद कोई बराहे रास्त असर नहीं रखती। लेकिन जब इसे सूंघा जाए तो यह दिमाग़ में वाक़ेअ मरकज़ शामा को तहरीक दे कर इसके हमसायह मराकिज़ पर भी असर अंदाज़ होती है और तबीअत या तनफ़्फ़ुस में जो भी बेहतरी महसूस होती है। वह इसका बिलावास्तह

अमल है।

ख़ुश्बू को सूंघने में इन्सान की कुव्वते शामा की इस्तेअदाद का पतह चलाया जा चुका है। एक मुहक़्क़िक़ ने तजुर्बात से साबित किया है कि कस्तूरी की 0.02 MG की मिक़दार या एक लीटर पानी में 000.000.00 9, MG कस्तूरी की ख़ुश्बू को इंसानी नाक महसूस कर सकता है।

कस्तूरी की तिब्बी अहमियत:

क़दीम हिंदू तिब्ब और तिब्बे यूनानी में कस्तूरी को इंतिहाई अहमियत हासिल रही है। वैद इसे कमज़ोरी, बुख़ार, सोज़िश, क़ौलिंज, दर्दों की हर क़िस्म में बड़े एतिमाद के साथ इस्तेअमाल करते आए हैं इसके मुक़व्वी क़ल्ब असरात की शोहरत यहां तक है कि जब दिल की बीमारी किसी तौर पर क़ाबू में न आती हो और तमाम दवाइयां बेकार नज़र आ रही हों तो कस्तूरी से मरीज़ की हालत संभल जाती है। हालांकि जदीद भारती माहिरीन इस फ़ाएदे से मुतलक़न मुन्किर हैं।

कस्तूरी हिंदुस्तान में मक़बूल थी और सर टॉम्स रौ की आमद के फ़ौरन बअद सोलहवीं सदी में यौरप पहुंच गई और वहां के अतिब्बा इसके एजाज़ के बड़े मोअतरफ़ रहे हैं क्रोशेनिक ने 1905 में जिस्मानी सोज़िशों के दौरान और ख़ास तौर पर तपे मुहर्रिक़ा, दमह, काली खांसी, रअशा, हिस्टीरिया, मिर्गी, कज़ाज़, हिचकी में मुफ़ीद बताई। इसके बअद सिटिल ने इसे बच्चों के तिशनजी दौरों में क्लोरल हाईडरेट के साथ अनीमा (हुक़ता) की शक्ल में मुफ़ीद असरात के साथ आज़माया।

होम्योपैथिक इलाज:

होम्योपैथिक तरीक़ए इलाज में कस्तूरी की एक से तीन ताक़त हिस्टीरिया के इलाज और आअसाबी असबाब से पैदा होने वाले तिश्नजी दोरों में मुफ़ीद है। इन मरीज़ों को जिनकी तकालीफ़ में सर्दी से इज़ाफ़ह हो, ठंड लगने के बअद जिस्म पर कपकपी तारी रहे ग़शी के दौरे पड़ें। आसाब में तनाओ की कैफ़ियत रहे, कस्तूरी दी जाती है।

घबराहट, बेक़रारी के साथ एसा महसूस हो जैसे ज़बरदस्ती हंसी आ रही है। नाक की जड़ से पूरे सर की जानिब दर्द की लहरें उठ रही हों। मतली के साथ चक्कर आएं। दिल की धड़कन बढ़ती हुई महसूस हो और खाने से जी घबराए। लेकिन कड़वी काफ़ी पीने के ख़्वाहिश मंद हों। मुंह का ज़ाएक़ह ख़राब, छाती में बोझ, हिचकी और पेट में बोझ की कैफ़ियत।

तबीअत जिंसी तअल्लुक़ात की जानिब आमादा हो लेकिन जिस्म में ऐसी सकत मौजूद न हो ख़ास तौर पर ज़ियाबेत्स के मरीज़ों में जब नामर्दी भी मुसल्लत हो जाए और अगर नामुकम्मल सी हमबिस्तरी करें तो इसके बअद शदीद कमज़ोरी और मतली की शिकायत होती है।

ख़वातीन में माहवारी का आग़ाज़े बलूग़त से पहले ही शुरू हो जाता है। अंदाम में जलन और इसके साथ सेलान की शिकायत रहती है और अक्सर

औक़ात ऐसा महसूस होता है जैसे कि माहवारी फिर से आ जाने को है। छाती में बोझ, सांस में रुकावट हो कर दमे की सी कैफ़ियत हो जाती है। बार–बार खांसी के दौरे पड़ते हैं और बलग़म का इख़राज नहीं होता। इन तमाम अलामात के लिए कस्तूरी MUSKOX का इस्तेअमाल मुफ़ीद बयान किया जाता है।

ख़ुश्बू की नफ़्सियाती अहमियत:

इंसानी ज़िंदगी में ख़ुश्बू का तअल्लुक़ ज़मानह क़दीम से चला आ रहा है जब से इन्सान को ख़ुश्बू से रग़बत पैदा हुई, उसने अहमियत के मक़ामात पर जैसे कि इबादत गाहों में इसे इस्तेअमाल किया। बुध मत से लेकर ईसाइयों के गिर्जा घरों तक में मुख़्तलिफ़ ख़ुश्बुएं जलाई जाती हैं। इन मक़ामात पर इस्तेअमाल होने वाली ख़ुश्बुएं नबाताती ज़राए से होती है जैसे कि लोबान, अगर तगर, मुरमक्की, गोगल, हरमल, चंदन, संदल, सनीलुत्तय्यिब, (बालछड़) वग़ैरह। इनका अपना एक रंग है और हम इनकी ख़ुश्बू से इबादत गाहों का तअल्लुक़ महसूस करने लगते हैं। मिस्रियों के मक़ाबिर में लोबान, सअतर, सिर्फ़ जरासीम और कीड़ों मकोड़ों को हलाक करने और मक़बरह को वक़ार देने के लिए इस्तेअमाल होते थे। इबादत गाहों में नजोर जलाने का तज़किरह तौरेत मुक़द्दस में मुतअद्दिद मक़ामात पर मिलता है। बल्कि ख़ुदावंद की बारगाह में पेश करने वाली कुरबानियों को भी मुअत्तर करके पेश किया जाता था।

हिंदुस्तान में आर्यह अक़वाम की आमद के बअद हैवानी ज़राए से हासिल होने वाली ख़ुश्बू से वाक़्फ़ियत पैदा हुई। चूंकि यह एशियाए कोचक से आए थे और वहां पर आहूए मुश्कीं पाया जाता था। इसलिए हिरन का नाफ़ह उनकी वसातत से हिंदुस्तान में आया लेकिन यहां के वैद इसे ख़ुश्बू की बजाए दवा समझने लगे और इसको बतौर ख़ुश्बू मक़बूलियत मयस्सर न आ सकी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुश्बू पसंद थी। उन्होंने हमेशह लोबान, मुर और ऊद को इस्तेअमाल फ़रमाया। लेकिन इनके ख़ुलफ़ा और बअद के ईसाइयों ने पहले तर्के दुनिया करके रहबानियत की इब्तिदा की। फिर गोशह नशीनी के दौरान नहाना धोना, लिबास को साफ़ रखना, नाख़ुन काटने और दाढ़ियों को दुरुस्त करना भी तर्क कर दिया। तारीख़े मज़ाहिब में ऐसे–ऐसे राहिबों का ज़िक्र मिलता है जिनके नाख़ुन बढ़ते–बढ़ते तोते की चोंच जैसे बन गए थे। यौरप मे कुछ सर्दी और कुछ नावाक़्फ़ियत की बदौलत नहाने का रिवाज न था बल्कि वहां पर ग़ुस्ल का तसव्वुर तुर्की में इसलाम की आमद के बअद से शुरू होता है। उन लोगों ने ग़िलाज़त के बाइस जिस्म से आने वाली बदबू को दबाने के लिए ख़ुश्बू का इस्तेमाल शुरू किया। इब्तिदा में यह अपने लिबास को उठाकर बख़ूर की धूनी देते थे। फिर ऐसी सयाल ख़ुश्बुएं ईजाद हुईं, जिनको आसानी से लगाया जा सकता था। अंग्रेज़ी लफ़्ज़ PERFUME के लफ़्ज़ी मअने धुऐं के बग़ैर हैं। फिर उनके लिए कोलोन का मुअत्तर पानी या EAVDECOLGNE ईजाद हुआ।

फूलों की सुहानी ख़ुश्बू को बरक़रार रखने के लिए मलिका नूरजहां ने सबसे पहले इत्र साज़ी की सनअत को रिवाज दिया। फूलों को किसी बे–रंग तेल के

साथ कशीद करके गाढ़ी और गहरी ख़ुश्बू ईजाद हुई जिसे इत्र कहा जाने लगा और हिंदुस्तान के शहर क़न्नौज में यह सनअ़त मुसलमानों ने फ़रोग़ दी और आज भी उनके क़ब्ज़े में है। उनके यहां ज़्यादह तौर पर फूलों की महक को तेल की सूरत दी गई। लेकिन इस्लाम के मुसलसल असरात की बदौलत यह अंबर और कस्तूरी की ख़ुश्बू से आगाह हुए और इनके इत्रयात सबसे गिरां रखते हैं।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले दिन से पाकीज़गी, सफ़ाई, सुथराई और हिफ़ज़ाने सहत की तअलीम दी। मस्जिद नबवी की तअमीर के बअद जब लोग पहला जुमअ पढ़ने आए तो तंग जगह पर हुजूम के बाइस घुटन का एहसास हुआ। उन्होंने इसको फ़ौरी अहमियत दे कर जुमअ वाले दिन गुसल और लिबास की तब्दीली को ज़ुरूरी क़रार दिया और फिर उस रोज़ ख़ुश्बू लगाना सुन्नते नबवी सल्ल० क़रार पाया। उनके यहां ख़ुश्बू की दो ही पसंदीदह क़िस्में थीं। कस्तूरी और ज़ीरा। वह ख़ुद कस्तूरी पसंद करते थे।

इल्मुल आज़ा से मअलूम हुआ कि ख़ुश्बू के ज़र्रे जब नाक में मौजूद आसाब को तहरीक देते हैं तो इससे तबीअत में लताफ़त, जिस्म में सुकून और आसाब में अंगेख़्त महसूस होती है। अगर कोई शख़्स DEPRESSION का शिकार हो या मुज़महिल हो तो बेहतर महसूस करता है। अतिब्बा क़दीम का ख़याल रहा है कि कस्तूरी, अंबर और अगर की ख़ुश्बू जिंसी तौर पर मुहर्रिक है। इन्हीं मुशाहिदात की बिना पर ख़ुश्बू की पसंद और इंतिख़ाब को किसी की शख़सियत का मज़हर क़रार दिया गया है। मसलन ख़्वातीन में जो रात की रानी, गुलाब और इस क़िस्म की ज़्यादह ख़ुश्बू वाली चीजें इस्तेअमाल करती हैं उनकी शख़्सियत दूसरों से तवज्जह की तलबगार होती है। ह्यूलाक एलिस का ख़याल है कि ऐसी ख़ुश्बुऐं पेशःवर औरतों की पसंद होती हैं क्यूंकि अपनी मौजूदगी से दूसरों को मुतवज्जह करना उनकी कारोबारी ज़रूरत होती है। इस मसअले को नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यूं वाज़ेह फ़रमाया।

> "वह औरत जो मर्दों की मज्लिस में ख़ुश्बू लगा कर जाती है वह आवारह है।"

चंबेली, मोतिया, मोल्सिरी की ख़ुश्बू और भीनी-भीनी होती है इनको वह लोग लगाते हैं जो मुनक्कसरुल मिज़ाज होते हैं और वह ज़िंदगी में अपने आपको ख़ुवाह-मख़्वाह का नुमायाँ करना ज़ुरूरी नहीं समझते।

कस्तूरी और अंबर की ख़ुश्बू गहरी, भारी और मद्धम होती है। यह उन लोगों की पसंद होती है जो बावक़ार हों। उनके जज़्बात में ठहराओ हो और वह ख़ुश्बू की पसंद की एहलियत और इस्तेमाल का ज़ौक़ रखते हैं। यह वह लोग हैं जिनकी सलाहियत उनकी कार कर्दगी से नुमायां होती है और उनकी तबीअ़त में ओछापन नहीं होता।

बाज़ार में जितने भी आफ़्सरसटिव लोशन मिलते हैं उनमें आज भी यह सबसे महंगा और पसंद के मुआमले में मक़बूल तरीन है। फ्रांस में तैयार होने वाली हर

महंगी और पसंदीदह ख़ुश्बू की बुनियाद कस्तूरी से उठाई जाती है। अगर्चे ख़ालिस कस्तूरी अब अनक़ा है मगर इसके बावजूद वह ख़ालिस ही को तर्जीह देते हैं और अगर वह थोड़ी सी भी मिल जाए तो नक़ली की मिलावट से मेअ़यार बहरहाल इसी पर रखते हैं।

जदीद नफ़सियात का यह मुताला कस्तूरी के फ़वाइद को वाज़ेह करने के अलावा इस हक़ीक़त का इज़हार करता है नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कस्तूरी को हमेशा बतौर ख़ुश्बू के इस्तेमाल फ़रमाया और जुमला ख़्वास को इसी ज़िम्न में दूसरों के लिए बयान फ़रमाया।

कस्तूरी के तिब्बी फ़वाइद का ग़ैर जानिबदार जाएज़ह:

करनल चोपड़ह इस अम्र पर मुज़िर है कि कस्तूरी में किसी क़िस्म का कोई फ़ाएदह नहीं। अगर कुछ लोग इसके इस्तेअमाल से बेहतर होते हैं तो इसका सबब ख़ुश्बू है। चोपड़ह को अपने तजुर्बाती अवामिल के दौरान इसके फ़वाइ की किसी क़िसम की कोई शहादत मयस्सर न आ सकी। इसके साथ ही नदकरनी जिसने कस्तूरी के बारे में अपना पूरा बाब चोपड़ह की तालीफ़ से नक़ल किया है। इसको मुफ़ीद और मुअस्सिर क़रार दिया है। मज़कारनी ने न सिर्फ़ अतिब्बा क़दीम के तमाम मुशाहिदात की तसदीक़ की है बल्कि वह आयुर्वेदिक अतिब्बा के साथ सुघमकर धवज वग़ैरह के इस्तेअमाल की सिफ़ारिश करता है। वह मदरास के वैद कविराज बशारद इसकी तअ़रीफ़ करता है कि वह कस्तूरी के मुख़्तलिफ़ मुरक्कबात से बच्चों की लाइलाज बीमारियों का इलाज करता है। उसी वैद ने 1925 में हिंदुस्तान के "वैदिक जनरल" में कस्तूरी के मुफ़ीद असरात के बारे में अपने रश्हात क़लम शाया किए। बदक़िस्मती यह है कि वैद तिब्ब में मअ़दनयात का इस्तेअमाल बहुत ज़्यादह है और वह इसी दौरान हड़ताल, मुरदार संग, संख्या को भी कस्तूरी के साथ मुरक्कब करके देते आए हैं। इसलिए यह गुमान किया जा सकता है कि इन नुस्ख़ों, ख़ासतौर पर लाहे भस्म, मकरधवज और हड़ताल के अपने फ़वाइद से कस्तूरी की शोहरत में इज़ाफ़ह हुआ है। ख़ाक्सार ने अपनी तिब्बी तर्बियत के दौरान म्यू हस्पताल लाहौर के शोअबह इम्राज़ मख़्सूसा में संखिया के हज़ारों इंजक्शन आतिश्क के मरीज़ों को लगाए संखिया के मुसलसल इस्तेअमाल से मरीज़ की सहत हमेशह ख़राब होती थी, एक ख़ास मिक़दार देने के लिए मरीज़ को कुछ वक़्फ़ह दिया जाता था ताकि उसका जिस्म सम्याती असरात से निजात पा ले। दिल के मरीज़ों को पेशाब लाने के लिए सेमाब के मुख़्तलिफ़ मुरक्कबात दिए जाते थे। इमराज़े जिल्द और आतिश्क में भी सीमाब देने का दस्तूर था। मगर किसी मरीज़ की तवानाई में कभी इज़ाफ़ह नहीं देखा गया। बल्कि इन अदवियह के अपने मुज़िर असरात इतने ज़्यादह थे कि आहिस्तह–आहिस्तह मतरूक हो गई। यौरप वालों ने तक़रीबन यही सुलूक कस्तूरी के साथ किया है। ब्रिटिश फ़ार्माकूपिया में कस्तूरी, अदवियात की फ़हरिस्त में शामिल थी। इसके इस्तेअमाल के तरीक़े और मुस्लिमह मेअ़यार दर्ज था। इसी तरह अमरीकी फ़ार्माकूपिया में भी कस्तूरी बतौर दवाई शामिल थी। लेकिन अब वह इन दोनों जगहों से ख़ारिज कर दी गई है। क्यूंकि उनकी

दानिस्त में इसे बतौर दवाई इस्तेमाल करने का कोई तिब्बी र्वाज मौजूद नहीं।

इल्मुल अदवियह में हमने प्रोफ़ेसर महबूब रब्बानी और प्रोफ़ेसर नज़ीर अहमद ख़ान से पढ़ा है कस्तूरी के बारे में 1948 में भी प्रोफ़ेसर नज़ीर अहमद के नज़रयात चोपड़ह की तरह थे। उकनी ग्रामी राए में कस्तूरी देने का कोई फ़ाएदह नहीं। अगर कुछ बेहतरी महसूस होती है तो वह इसकी ख़ुश्बू की वजह से है। बल्कि वह सुंबलुत्तय्यिब को भी तिब्बी फ़वाइद से मुबर्रा बयान करते थे।

तिब्बे यूनानी के अहम मुरक्कबात, ख़मीरा आब्रेशम हकीम अलअर्शद वाला, दवाउल मुस्क को ईजाद हुए हज़ार साल से ज़ाइद अरसा हो चुका है। इस तवील अरसह में हज़ारों अदवियह वक़्त के साथ बे–फ़ाएदह क़रार पाकर ग़ायब हो गईं। एक हज़ार साल तक मक़बूल रहना इस अम्र का सुबूत है कि यह फ़िलवाक़ेअ मुफ़ीद है।

खीरा……किस्साअ़ ख़ियार

CUCUMBER
CUCUMIS SATIVUS

खीरा नबातात के मशहूर ख़ानदान CUCURBITACEA का एक ऐसा रुक्न है जो दुनिया के अक्सरों बेशतर मुमालिक में बड़े शौक़ से खाया जाता है। अतिब्बाए हिंद खीरे और ककड़ी को ख़यौन कहते हैं। लुग़त की बअ़ज़ किताबों में क़िस्साअ़ से मुराद ककड़ी ली गई है। जबकि अरब में क़िस्साअ़ का नाम खीरे पर इस्तेअमाल होता देखा गया है। हिंदुस्तान में शक्ल और ज़ाएक़ह के लिहाज़ से खीरे पर इस्तेअमाल होता देखा गया है। हिंदुस्तान में शक्ल और ज़ाएक़ह के लिहाज़ से खीरा और ककड़ी दो मुख़्तलिफ़ चीज़ें हैं लेकिन बहीरए रौम के ख़ित्ता और यौरप में CUCUMBER के नाम से मिलने वाली चीज़ बसा औक़ात खीरे और ककड़ी की कोई मख़लूत जिंस होती है। वह खीरे की तरह मोटी, ककड़ी की मानिंद लम्बी और ज़ाएक़ह दोनों तरह का रखती है। पाकिस्तान और हिंदुस्तान के खीरे की जिल्द चमकदार, साफ़ और मुलायम होती है। जबकि यौरप और अमरीका के खीरों की जिल्द मोटी और दाने दार होती है। इसका रंग गहरा सब्ज़ मगर चमक से महरूम होता है। वहां के लोग अपने घर के बाग़ीचों के अलावह इसे छोटे फ़्रेम बनाकर गमलों की मानिंद काश्त करते हैं। इसका पौदा एक रेंगने वाली बेल होती है। और इस ख़ानदान के दीगर अराकीन ख़रबूज़ह, घिया, तोरी, कद्दू, इंदराइन, ककोड़ा भी तक़रीबन यही आदात रखते हैं। हिमालयह के दामन से लेकर कुमाऊं की वादियों तक खीरे की जंगली क़िस्में भी पाई जाती हैं। जहां यह खुदरौ है। ज़रई माहिरीन ने इसकी काश्त पर अच्छे ख़ासे तजुर्बात किए हैं, पहले ख़याल यह था कि खीरा ककड़ी मौसमे सर्मा की सब्ज़ियां हैं और इनको पंकते वक़्त गर्मी चाहिए मगर अब कुछ ऐसी

सूरतें पैदा हो गई हैं कि अक्सर मुमालिक में यह पूरे साल मिलते हैं। लाहौर में खीरा हर वक़्त मिलता है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि मौसमे गर्मा में एक रुपया किलो ग्राम मिलता है और सर्दी में बीस रुपै तक चला जाता है. पंजाब की ककड़ियां इतनी नर्मो नाज़ुक नहीं होतीं जितनी की भारत के सूबह उत्तर–प्रदेश में पाई जाती हैं। यौरप में इसकी बहुत बड़ी–बड़ी और छोटी क़िस्में मशहूर हैं। हिंद–पाक का खीरा आम तौर पर छे सक आठ इंच लम्बा होता है जबकि ज़रई मुक़ाबले में दो फुट लम्बे खीरे भी देखे गए हैं। इसकी बेहतरीन क़िस्म वह है जो सख़्त हो और दबाने पर पिलपिली न हो। इसे ठंडी जगह पर रखा जाए तो इसकी ताज़गी दो हफ़्तों तक क़ायम रह सकती है।

इरशादे रब्बानी:

واذقُلتم یا موسیٰ لن نصبر علیٰ طعامٍ واحدٍ فادع لنا ربک یخرج لنامما تنبت الارض من بقلها وقثائها و فومها وعدسها وبصلها.قال اتستبدلون الذی هو ادنیٰ بالذی هو خیر. (البقره۔۶۱)

(जब तुमने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि हमारी एक खाने से तसल्ली नहीं होती और चाहा कि वह उनके लिए अपने परवरदिगार को पुकार कर कहे कि वह हमारे लिए वह चीज़ें महैया करे जो ज़मीन से निकलती हैं जैसे कि पत्तों वाली सब्ज़ियां, खीरे, लहसन, मसूर की दाल और प्याज़, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जवाब में कहा कि तुम अच्छी चीज़ें छोड़ कर ख़राब चीज़ें पसंद कर रहे हो)

बनी इस्राईल को आसमान से पका हुआ खाना मनो–सलवा की सूरत में मुहय्या हो रहा था। यह मुरक्कब ख़ुराक की बहतरीन तर्कीब था। जिसमें मन्न से मुराद कई सब्ज़ियां थी जिनमें से एक खुम्बी भी थी। जबकि सलवा में भुने हुए परिंदे थे। इनको महनत किए बग़ैर हासिल होने वाली यह ख़ुराक पसंद न आई और वह ऐसी चीज़ें तलब करने लगे जो मिस्र में हुआ करती थीं। यहां पर फूम के मआनी इख़्तिलाफ़ी मसअलह है। इब्ने कसीर रह॰ की तहक़ीक़ के मुताबिक़ फूम से मुराद गंदुम है। इसके सबूत में इसने जाहिलियत के शोअ़रा के बअज़ शेअर और हज़रत अब्दुल्लह बिन अब्बास रज़ि॰ की रिवायत पेश की है। इसके मुकाबले में लुग़त की अक्सर किताबों में फूम के मअने लहसन बयान किए गए हैं।

किताबे मुक़द्दस:

तौरेत मुक़द्दस में मिस्रियों की सब्ज़ियों का ज़िक्र तक़रीबन इन्ही अलफ़ाज़ में मिलता है जैसे कि यह कुरआन मजीद में मज़कूर हुईं।

......"और सय्यून की बेटी छोड़ दी गई है। जैसी झोंपड़ी ताकिस्तान में और छप्पर ककड़ी के खेत में या इस शहर की मानिंद जो महसूर हो गया हो।" (यसइयाह 1:8)

इरशादाते नबवी सल्ल॰

हज़र अब्दुल्लाह बिन जअफ़र रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं।

رأيتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يأكل القثاء بالرطب

(بخاری، مسلم، ابن ماجہ، ترمذی)

(मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि वह खजूरों के साथ खीरे खा रहे थे।)

अक्सर मुहद्दिसीन ने इसकी तावील यह की है कि खजूर चूंकि गर्म होती है। इसलिए इसके साथ ठंडी तासीर वाला खीरा खाने से यह मुरक्कब तासीर में मोअ़तदिल हो जाता है। चूंकि ख़र्बूजह के साथ या तरबूज के साथ खजूर खाने में तासीर का ज़िक्र मिलता है। इसलिए इसी उसूल को सामने रख कर यह तावील कर ली जाती है। जबकि दूसरी सूरत में यूं भी कहा जा सकता है कि खीरा चूंकि ताज़ह होता है इसलिए इसमें हयातीन "जे" मौजूद है। इन दोनों का मिलाप एक मुकम्मल गिज़ा है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खजूर के साथ खीरा खाते देखने का मुशाहिदह असहाबी रज़ि॰ ने बयान किया। अब इस मुरक्कब को फ़ाएदह हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि॰ की ज़बाने मुबारक से जानिए।

كانت اُمّي تعالجني للسمنة تريد ان تدخلني علىٰ رسول الله صلى الله عليه وسلم فما استقام لها ذالك اكلت القثاء بالرطب فسمنت كاحسن سمنة.

(بخاری، مسلم، ابن ماجہ، نسائی)

(मेरी वालदह यह चाहती थीं कि मैं जब रसूसल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जाऊं तो मोटी होकर जाऊं (क्यूंकि अरब मोटी औरतों को पसंद करते थे) इस ग़र्ज़ के लिए मुतअद्दिद दवाएं दी गई मगर फ़ाएदह न हुआ फिर मैंने खीरा और खजूर खाए और ख़ूब मोटी हो गई।)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

बेहतरीन खीरा पका हुआ होता है। यह जिस्म को ठंडक पहुंचाता है। तबीअत में और ख़ास तौर पर अगर मेअ़दा और आंतों में किसी वजह से हिद्दत महसूस होती हो तो खीरा खाने से सुकून आता है। इमाम ज़हबी रह॰ इसको ख़ियार से जुदा क़रार देते हैं, पेशाब आवर है इसका मुसलसल इस्तेअमाल जिस्मानी कमज़ोरी को दूर करता है।

खीरा खाने से मेअ़दा और आंतों की सोज़िश ख़त्म हो जाती है। इस लिहाज़ से इसे आतिशे हिद्दत को बुझाने वाला क़रार दिया जा सकता है। मसाने की सोज़िश और जलन और पेशाब की जलन को दूर करता है। अगर इसके छिलके पीस कर कुत्ता काटे के मरीज़ को चटाए जाएं तो फ़ाएदह होता है। इसकी ख़ुश्बू बेहोशी में मुफ़ीद है। अक्सर अतिब्बा का ख़याल है कि इस में ठंडक की ज़ियादती बअज़ जिस्मों के लिए नुक़सानदह होती है। ऐसे लोगों को इसको मोअतदिल बनाने के लिए कोई गर्म चीज़ देनी मुनासिब रहती है जैसे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसके साथ खजूर खाते थे। अगर खजूर मयस्सर न हो तो इस्लाह के लिए मुनक़्क़ह इस्तेअमाल किया जा सकता है। बअज़ मुहद्दिसीन खीरे को शहद के साथ खाना ज़्यादह पसंद करते हैं।

कीम्याावी साख़्तः

इसमें एक जौहर FRERSIN पाया जाता है जो गिज़ा को हज़्म करता और पेशाब आवर है। फल में हयातीन बी और जे की किस्म ASCORBIC ACID OXIDASE पाई जाती है। इस वजह से आसाबी कमज़ोरी में मुफ़ीद है। और इमराज़ के ख़िलाफ़ कुव्वते मुदाफ़िअत पैदा करने में मददगार होता है। इससे .....लहमियात को हज़्म करने वाले जौहर अज़ किस्म OXIASESUCCINIC & MALIC DYHYDROGEASES पाए जाते हैं जो जिस्म के अंदर मुतअदिद अवामिल और तहूल के फ़ेएल में कारआमद होते है। इसमें मौजूद ख़ुश्बूदार चीज अल्कुहल में हल करके अलाहिदह की जा सकती है। मगर ख़ुश्बू और कड़वाहट वाले अनासिर के कीम्यावी तज्ज़ियह पर किसी ने ज़्यादह तवज्जह नहीं दी।

खीरे और ककड़ी के बीजों से तेल, बीरोज़ह और मिठास इसकी बअ़ज़ किस्में अलाहिदह की गई हैं और फल में निशास्तह बड़ी कलील मिक़दार में होता है। जबकि बीजों में इसकी माअ़मूली मिक़दार मिलती है। इसलिए जिन बीमारियों में मिठास का इस्तेअमाल मना होता है इनमें इस्तेअमाल किया जा सकता है। इसका पानी कर्मकुश है। इसके पानी से मछलियों को लगने वाले कीड़े और लकड़ी का कीड़ा मर जाते हैं। फल के टुकड़े काट कर कीड़ों के बिल पर डाल दें तो वह मर जाते हैं।

एक सो ग्राम खीरे में कीम्यावी अनासिर की तर्की इस तरह है।

FATS	COPPER	PROTIENS	CALS	MOISTURE	SODIUM
1.8	0.6	10	93.4	13.0	141
POTASSIUM	CALCIUM	MAGNESIUP	PHOSPHORUS	SULPHUR	IRON
141	22-8	9-1	24.1	11.2	7-62
CHLORIDIES	63.5				

अतिब्बाा क़दीम के मुशाहिदातः

सहारनपुर के खीरे लम्बाई में उंगली बराबर होते हैं। राजपूतानह और मालवह में खीरे की एक किस्म फुट भर लम्बी, मोटी, अंदर से नीली या ज़र्द। इसकी सतह पर हरे रंग के छोट–छोटे कांटे होते हैं। यूनानी अतिब्बाअ़ ने बालम नाम के इस खीरे को इलाज और ख़ुराक के लिए बहतरीन क़रार दिया है। अतिब्बा क़दीम का ख़याल था कि इसके बीज को बोने से पहले अगर दूध और शहद में भिगोया जाए तो फल मीठा होता है।

ककड़ी, खीरे से जल्द हज़्म होती है। आंतों की सोज़िश को तस्कीन देता है, प्यास बुझाता है। जिगर से सुद्दे निकालता और पेशाब आवर है, सर दर्द में मुफ़ीद है, गर्मी के दस्तों को फ़ाएदह देता और बअ़द की कमज़ोरी को रफ़ा करता है। गीलानी वग़ैरह की राए में इसे छीले बग़ैर नमक लगा कर खाना ज़्यादह बेहतर है क्यूंकि यह इस तरह जल्द हज़्म होता है। जबकि छीलने के बअ़द यह देर हज़्म बन जाता है। खाना खाने के दौरान और दूध के साथ खाना मुनासिब नहीं।

खीरे का 17 तोलह पानी निकाल कर इसमें 3 तोलह मिसरी मिला कर पीने

से मेअ्दा और आंतों के तमाम सुफ़रावी मादे निकल जाते हैं। यरक़ान को नफ़अ् देता, हैज़ और पेशाब लाता है। खीरे को गर्म राख में देर तक रख कर इसका पानी निकाल कर बुख़ार के मरीज़ों को पिलाना मुफ़ीद है। यह क़ब्ज़ को भी दूर करता है। अगर क़ब्ज़ ज़्यादह हो तो फिर यह मुफ़ीद न होगा।

बालम खीरे का हलवह यूं तय्यार करते है कि गूदा पका कर गलाएं, फिर इसे घी में भूनें। कुल वज़न का चौथाई खांड मिलाएं और मेदह मिलाकर क़वाम बनाएं। इसमें ज़ाफ़रान भी मिलाया जाता है। यह हल बुख़ारों के बअ्द कमज़ोरी में मुफ़ीद है।

खीरे के बीज पेशाब आवर होने के साथ नाली की जलन को दूर करते हैं, वरम जिगर और तिल्ली तहलील करते हैं।। सोज़िश की वजह से पैदा होने वाली खांसी में मुफ़ीद हैं। फेफड़ों के ज़ख़्म मुंदमिल करते हैं और इनकी सूजन दूर करते हैं।

खीरे के रस को ज़ैतून या तिल्ली के तेल में मिलाकर इतना पकाते हैं कि सिर्फ़ तेल रह जाए। यह तेल मसाना की पथरी निकालने के लिए पिलाया जाता है। आअ्साबी कमज़ोरी में इसकी मालिश भी मुफ़ीद बताई जाती है।

अतिब्बा क़दीम में से कुछ उस्तादों ने खीरे और ककड़ी को एक दूसरे से मुख़तलिफ़ क़रार देने के बअद इनके फ़वाइद पर बहस के दौरान तस्लीम किया है कि फ़वाइद यक्सां हैं बाज़ का ख़याल है कि ककड़ी, खीरे से बेहतर फ़ाएदा करती है और बअ्ज़ का ख़याल है कि ककड़ी के मुज़िर असरात कम हैं, लेकिन फ़ाएदह खीरे में ज़्यादह है। इसी बिना पर अतिब्बा ने इनको मुख़तलिफ़ नाम देने के बावजूद इस्तेअमाल में एक ही चीज़ करार दिया है और इनके बीज 'ख़यारैन' के नाम से नुस्ख़ों में लिखा जाते हैं। चहार मग़ज़ कमज़ोरी के नुस्ख़ों के अहम अज्ज़ा हैं, इनमें खीरे के बीज भी शामिल होते हैं।

अतिब्बा जदीद के मुशाहिदात:

फल में ग़िज़ाइयत है और जिस्म के मुल्तहिब मक़ामात को सुकून देता हैं इसके बीज मुफ़र्रह और पेशाब आवर हैं।

यह इन मुन्फ़र्द सब्ज़ियों में से है जिनको खाने के साथ कच्चा खाया जा सकता है। खीरे को छील कर इस पर नमक और काली मिर्च डालने के बअद अगर इस पर लीमूं निचोड़ लिया जाए तो लज़्ज़त के साथ–साथ ग़िज़ाइयत में भी इज़ाफ़ह होता है। यह खाने को जल्द हज़्म करता और भूख बढ़ाता है। खीरे का छिलका हज़्म नहीं होता और इस पर खेतों से खाद वग़ैरा की आलाइशें लगी होती हैं इसलिए खाते वक़्त छिलके को उतार देना ही सही तरीक़ह है।

खीरे और ककड़ी के बीज निकाल कर छिलके उतार कर सुखा लेने के बअद पीस कर शहद में मिलाकर खाने से आंतों की अकसर बीमारियों में सुकून देते हैं और ग़िज़ाइयत मुहैया करते हैं। खीरे की बेल के बत्ते सुखा कर पीस कर इनमें ज़ीरह सियाह मिलाकर भून लेने के बअद पीस कर इनको चाए के चौथाई चम्मच के बराबर नाश्ते के बअद देने से गले की सूजन जाती रहती है और यह

पेशाब आवर है। सन सट्रोक के मरीज़ों को बुख़ार के दौरान खीरे के टुकड़े काट कर सर और चहरे पर मलें।

खीरा, ककड़ी, ख़रबूज़ह और कद्दू के बीज में से हर एक को औंस भर ले कर इनके साथ तुख़्म कासनी दो औंस, खांड, औंस और पानी एक पौंड मिलाकर ख़ूब पकाएं। फिर छान कर इनका क़वाम बनाएं और सिरकह शामिल करें शरबत बना लें। इस शरबत में एक घूंट पानी मिला कर दिन में तीन चार मर्तबह पेशाब की जलन, कमज़ोरी और बुख़ारों के लिए मुफ़ीद है।

गोश्त ...... लहम
MEAT

इंसानी ख़ुराक में गोश्त हमेशह से अहमियत का हामिल रहा है। इब्तिदाए आफ़रीनिश से ख़ुराक का अहम जुज़्व रहा है। इनसानी बुनियादी तौर पर हमः ख़ौर जानवर है। यह गोश्त भी खाता है और सब्ज़ियां भी जबकि जानवरों में जो गोश्त खाते है वह सब्ज़ियाँ नहीं खाते जैसे कि शेर, चीता, भेड़िया, बिल्ली वग़ैरह। लेकिन सब्ज़ी ख़ोर जानवरों को ख़ुराक में मुरक्कब गोश्त मयस्सर आ जाए तो वह इनकार नहीं करते जैसे कि मुर्ग़ियों की जदीद ख़ुराक में ख़ून या मछली का गोश्त भी शामिल किया गया है। ज़िला ओकाड़ा में एक क़त्ल की वारदात में मुल्ज़िमों ने अपने दुश्मनों को क़त्ल करके उनकी लाशों को चारा काटने वाली मशीनों में डाल कर टुकड़े–टुकड़े किया और चारे में मिलाकर ऊंटों को खिला दिया। ऊंटों ने पांच इन्सानों का गोश्त खाया और इसके बाद इनको कोई जिस्मानी तक्लीफ़ नहीं हुई।

कुछ लोग गोश्त खाना पसंद नहीं करते या इनकी मज़हबी ताअलीमात के मुताबिक़ गोश्त हराम है। जैन मत में किसी जान्दार को तकलीफ़ देना और हलाक करना गुनाह है। इसलिए कोई--कोई जैनी अपनी ख़ुराक के लिए किसी जांदार को ज़िबह करने या इसका गोश्त खाने का तसव्वुर भी नहीं कर सकता। यही अक़ाइद बुद्ध मज़हब में भी हैं जिन इलाक़ों में बुद्ध मज़हब की पैरवी की जाती है। वहां गोश्त नहीं खाया जाता। हिंदू मज़हब में भी गोश्त की मुमानिअत बयान की जाती है। इसकी वजह "अहिंसा" का अक़ीदह है लेकिन हिंदुस्तान की क़दीम क़ौमें गोश्त ख़ौर थीं। एशियाए कोचक से आने वाले आर्या अपने साथ गाएं लाए वह इनका गोश्त भी खाते थे। बअद में हिंदू मज़हब ने गाए को माल का दरजह दे दिया और इसकी इज़्ज़त के पेशे नज़र इसको मारना, ज़िबह करना या इसका गोश्त खाना हराम हो गया। भारत में गाए का गोश्त अब भी होता है और इसकी खालों की तिजारत पर हिंदू ताजरान चर्म की इजारह दारी है। जुनूबी हिंद के भील, वस्ती हिंद के अछूत और आदी बासी गोश्त के अलावह बिल्लियां बड़े शौक़ से खाते हैं। मग़रिबी मुमालिक के लोग अपने मज़हब से रोज़–बरोज़ दिल बर्दाश्त हो रहे हैं। कभी वह साधू और महंत बनते हैं। और कभी किसी स्वामी के चेले बन कर "हरे राम हरे कृष्ण" गिरोह बनाते हैं। इसी

किस्म के बअज़ तबक़े गोश्त को हराम क़रार दे कर सब्ज़ी ख़ौर बन गए। हालांकि भारत में वैष्णों कहलाने वाले भी अब गोश्त खाते हैं।

चूंकि गोश्त एक मुकम्मल गिज़ा है। इसलिए जब कोई इसे मुसलसल तर्क कर दे तो इसको लहमियात की कमी होती है और सब्ज़ियों में मौजूद कम गिज़ाई अनासिर से मतलूबात हासिल करने की कोशिश में आंतों का हजम बढ़ जाता है और पेट बड़ा हो जाता है। गोश्त में जिन अनासिर और हयातीन की कमी होती है। इनमें से अक्सर ख़ून और कलेजी में पाए जाते हैं। गोश्त ख़ौर जानवरों को ख़ुदा ने इतनी अक़्ल दी है कि वह अपनी कमी को पूरा करने के लिए पहले शिकार का ख़ून पीते हैं। फिर इसका कलेजा चबाते हैं और इससे वह एक मुकम्मल और मुतवाज़िन गिज़ा हासिल कर लेते हैं। चूंकि इनसानी मेअ़दा ख़ून हज़्म नहीं कर सकता इसलिए इंसानी ख़ुराक की तक्मील के लिए सब्ज़ियां ज़रूरी हो जाती हैं।

खाने के लिए गोश्त का इंतिख़ाब हर मुल्क के लोगों में मुख़तलिफ़ है। लेकिन योरपी मुमालिक में ज़्यादह तर गाए, इसके बअद सुअर और परिंदे शौक़ से खाए जाते हैं। परिंदों से ज़्यादह खपत मछलियों की है। एशियाई मुमालिक में दुंबा, बकरा, भेड़ ज़्यादा पसंद किए जाते हैं। और गाए के गोश्त से मुराद भैंस का गोश्त भी हो सकता है। फ्रांस, ऑस्ट्रिया, जर्मनी और इंगलिस्तान में घोड़े और ख़च्चर का गोश्त इब्तिदा में कुत्तों के लिए होता था। फिर इंसान की ख़ुराक के लिए मिलावट बना और क़ीमा वग़ैरह में इसकी शमूलियत दस्तूर हुई अब इसकी हैसियत इसी तरह है जिस तरह हमारे यहां बड़ा गोश्त, जो लोग कम इस्तिताअ़त रखते हैं। वह क़ीमत के नुक़ता नज़र से बड़ा गोश्त लेते हैं। मग़रिब में घोड़े का गोश्त, मश्रिक़ बुस्ता में गधा, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली और सांप पसंद किए जाते हैं। मौसमे गर्मा में कोरिया के लोग कुत्ते के गोश्त का शोरबह बहुत पसंद करते हैं। सांप का सर काट कर हांग-कांग, थाई लैंड और मलाइशिया वग़ैरह में कमज़ोरी के इलाज के तौर पर खाना मक़बूल है। ऐसे होटल भी देखे गए हैं जिनके वुस्त में मर्तबानों में कई क़िस्म के सांप अल्कुहल में पड़े हैं। ग्राहक जिसको पसंद करे इसके सामने छील कर पका दिया जाता है। चीन और कोरिया में बिल्लियां एक मक़बूल ख़ुराक हैं, हिंदू-पाक के बअ़ज़ क़बाइल शुरू से ही बिल्ली का गोश्त खाते आए हैं। जैसे कि पंजाब के साहिंसी और बरड़, अगर्चे यह अक़वाम अब मुसलमान हो कर इस्लामी नाम इख़्तियार कर चुकी हैं। लेकिन तहक़ीक़ पर मअलूम हुआ है कि तनो-मंद और ख़ूबसूरत बिल्ली देख कर इनकी राल हमेशह टपक जाती है। 1988 के सेलाब के बअद इसी क़िस्म के एक ख़ाना-बदोश घराने में बिल्ली की खाल उतरती देखी गई और लुत्फ़ यह कि इसे बाक़ाएदह इस्लामी तरीक़े से ज़िबह किया गया था। हालांकि इस्लाम में बिल्ली को मारना और इसका खाना भी हराम है।

दरिंदों का गोश्त तौरेत और क़ुरआन में हराम है मगर कई जगह लोग इसे खाते हैं। अलबत्ता इसे मक़बूलियत इसलिए मयस्सर नहीं आ सकी कि वह बदज़ाएक़ह, बदबूदार और बदरंग होता है। अरब में ऊंट का गोश्त, साइबीरिया

में रैंडीर, तिब्बत में सिरा गाए, अफ़रीक़ह में बंदर, हाथी, गैंडा और शेर खाना मक़ामी रिवायत है।

सबसे पसंदीदह जानवर गाए हैं। न्यूज़ी लैंड, ऑस्ट्रेलिया, अरजांटाइन और अमरीका में खाने के लिए गायों की परवरिश करना और इसके बअद इनको काट कर गोश्त को आलमी मंडियों में फ़रोख़्त करना एक बाक़ाएदह सनअ़त है। एक हालिया सर्वे के मुताबिक़ इन मुल्कों में जानवर शुमारी के मुताबिक़ इनकी आबादियों की सूरतहाल यह थी।

अमरीका	2.7 मिलयन गाएं	भारत	255 मिल्यन गाएं
रूस	87 मिलयन गाएं	अरजंटाइना	40 मिलयन गाएं
ब्राज़ील	80 मिलयन गाएं	फ्रांस	20 मिलयन गाएं

भारत में गायों की तअदाद में इज़ाफ़ह इसको आम तौर पर न खाने की वजह से है एक मर्तबह वहां के लोग उनसे इतने तंग आ गए थे कि ज़िला लाहौर और कुसूर के सरहदी देहात से इनको पाकिस्तान में धकेल दिया गया।

गाए के गोश्त में ग्राहक 2 साल से ढाई साल तक का पसंद करते है। उम्र इससे कम हो तो गोश्त लेसदार होता है और बढ़ जाए तो ख़ास तौर पर अरजंटाइन का गोश्त काला पड़ जाता है। अच्छे पले हुए जानवर के ज़िंदा वज़न का 62 फ़ीसदी गोश्त की सूरत में हासिल हो जाता है। अमरीका, चिल्ली, अरजंटाइन में जानवर पालने वाले अपने जानवरों का वज़न बढ़ाने के लिए ख़तरनाक अदविया का इस्तेअमाल कसरत से करते हैं। एक हालिया सरवे के मुताबिक़ इन जानवरों को फ़रबह करने के लिए जो अदवियात दी जाती है इनमें ख़वातीन के जिंसी हारमोन STILBOESTROL ही बअज़ क़िस्में भी शामिल हैं। अमरीकी माहिरीन के मुताबिक़ इस दवाई के असर से पैदा होने वाला गोश्त खाने से सरतान की बीमारी पैदा हो सकती है।

वुस्ती एशियाई मुमालिक में बकरे और भेड़ का गोश्त ज़्यादह खाया जाता है। शिमाल मग़रिबी इलाक़ों में दुंबा ज़्यादह पसंद किया जाता है। जबकि पाकिस्तान में बकरे का गोश्त पसंदीदह है लेकिन गोश्त बेचने वाले भेड़ बकरी एक ही लाठी से हांक लेते हैं।

लाहौर म्यूंस्पिल कॉरपोरेशन के मज़बह में माह नवम्बर 1988 के दौरान जो जानवर ज़िबह किए गए इन की तअदाद इस तरह है।

भैंस	4965	भेड़	48398	बकरे	67707
बैल और गाए	4668	ऊंट	995		

इससे मअलूम होता है कि लाहौर के शहरियों ने कम–अज़–कम 1,26,733 जानवर एक ही माह में खाए। घरों में किया गया और मज़ाफ़ात का गोश्त इसके अलावह।

हिंद–पाक में ज़िबह के लिए लाए जाने जानवर अगर्चे इस ग़र्ज़ के लिए परवरिश किए जाते हैं। लेकिन वह वज़न के हिसाब से नहीं बिकते इसलिए चरवाहे इनकी सेहत की जानिब तवज्जह नहीं देते। गाए, भैंस, बैल और ऊंट में से ज़िबह के लिए लाए जाने वाले जानवरों की अकसरियत बीमार, लाग़र और

बूढ़ी होती है। जब जानवर किसी काम का न रहे तो वह बूचड़ों के हाथ बेच दिया जाता है। मज़बहों में निगरानी के लिए अक्सर शहरों में हैवानात के डाक्टर मुतअय्यन हैं। लेकिन वह अपने फ़राइज़ में ज़्यादह दिल्चस्पी का मज़ाहिरह नहीं करते। इसलिए गोश्त का मेअ़यार पस्त होता है। चंद दुकांदार अपनी ज़ाती शोहरत और गिरां फ़रोशी के शौक़ में अच्छा गोश्त लाते हैं जिसे वह बड़े फ़ख़्र के साथ रोज़आनह के ऐसे ग्राहकों को देते हैं जो क़ीमत में भी मार खाएं और वज़न भी कम लें।

मक्कह मुकर्रिमह में कुछ क़सबात ऐसे हैं जो आम आदमी को गोश्त नहीं देते। कम–अज़–कम तीन किलो देते हैं और वह भी बाज़ार से पांच रियाल ज़्यादह और फिर फ़ख़्र करते हैं कि हम सिर्फ़ मुअ़ज़्ज़िज़ तरीन और शुरफ़ा को सौदा देते हैं और वह भी अपनी मर्ज़ी के भाओ पर।

सिंध के हिंदू छः माह से छोटे बकरों का गोश्त पसंद करते हैं। जिसके गोश्त में रेशा नहीं होता। और आम गोश्त से दस रुपए किलो ज़्यादह पर फ़रोख़्त होता है। और उसे दख़लवान कहते हैं। कश्मीर के बकरे का गोश्त आसानी से नहीं गलता उसे गलाने की तर्कीब यह है कि गोश्त को बासी करके पकाया जाए।

आम तौर पर बकरा, भेड़, दुंबा और ऊंट का गोश्त घरों में पकाया जाता है। ईसाई मज़हब में हराम होने के बावजूद सुअर खाते हैं। परिंदों में सबसे ज़्यादह मुर्ग़ खाए जाते हैं। मौसम सरमा में और क्रिस्मस के अय्याम में टरकी का गोश्त नफ़ासत और तक़रीब की जान होता है। चोपायों में इसके बअद ज़्यादह तौर पर शिकार के जानवरों मसलन हिरन, नील गाए का गोश्त पसंद किया जाता है।

ज़मानए क़दीम में हिरन के कबाब बड़े शौक़ से खाए जाते थे। इस शौक़ ने हिरनों की नस्ल ख़त्म कर दी है। अब इनका मिलना मुहाल होने के साथ शिकार पर इतनी पाबंदियां आयद हैं कि यह गोश्त अनक़ा हो गया है। ख़रगोश आम तौर पर पसंद नहीं किया जाता। ऑस्ट्रेलिया और यौरप में ख़ाकी रंग का जंगली ख़रगोश इतनी ज़्यादह तअदाद में है कि इनको ख़त्म करने के लिए एक मुतअद्दि बीमारी इनमें वबा के तौर पर डाली गई जिससे इनकी आबादी कम हुई।

परिंदों में कबूतर, फ़ाख़तह और मुर्ग़ ज़्यादह मक़बूल हैं। आबी परिंदे कम्याब हैं। और अंधाधुंद शिकार की वजह से अब घरेलू कबूतरों, पाल्तू बटेरों और पोलट्री के मुर्ग़ों के अलावह बाक़ी परिंदे नायाब हैं। अतिब्बा क़दीम नुस्ख़ों में चिड़िया का मग़ज़ या उसका गोश्त कई जगह ज़िक्र किया हैं इसलिए लोग अपनी कमज़ोरियों को दूर करने के लिए चिड़िया खाते हैं। पिशावर में बंदर और तले हुए चिड़े बहुत मक़बूल हैं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी एक मर्तबा चिड़िया के मग़ज़ का ज़िक्र फ़रमाया है। जिससे मअलूम होता है कि इसमें उफ़ादियत मौजूद है।

मश्रिक़ बईद के बअज़ शहरों में बंदर का मग़ज़ खाने का शौक़ पैदा हो गया है। ज़िंदा बंदर और ख़ास तौर पर गोरीला और गबन को पकड़ कर इसके सर में कोई चीज़ मार कर उसे बेहोश किया जाता है फिर उसे शिकंजे में कस

कर इस ज़िंदह जानवर की खोपड़ी खोली जाती है। वहां के अज़िय्यत पसंद शौक़ीन इस शिकंजे के पास कुर्सी लगाकर मग़ज़ पर मसालह डाल कर उसे कच्चा खाते हैं। यह अमल इंतिहाई बेरहमी, ख़तर नाक और तमाम मज़ाहिब की बुनियादी तअलीमात के मनाफ़ी है। हक़ीक़त में इस ग़लीज़ ख़ुराक का कोई असर नहीं। किसी सितम ज़रीफ़ ने लोगों को बेवकूफ़ बनाया है बल्कि वह नौदोलतिये कि जिनको नामो नमूद के लिए फ़ुज़ूल ख़र्ची का शौक़ है। वह इसी क़िस्म की बेहूदह हरकात करते हैं। कभी दो दरजन बटेर पकालिए और उनका गोश्त ठीक से खाने की बजाए उसकी हड्डियों समेत चबाकर थूक देते हैं।

मालरोड लाहौर के एक ताजिर को रोज़ाना की काफ़ी बचत थी। यह दिन का अक्सर हिस्सह आईने के सामने ख़ुद को संवारने में सर्फ़ करते और दिन के हर हिस्से में अपने लिए ख़ुसूसी ग़िज़ाएं तैयार कराते थे। एक रोज़ उनके लिए यख़नी तैयार होती देखी गई। जिसमें बटेर, मुर्ग़, सेब, गाजरें, और चंद ख़ुश्बुएं थीं। यह नुस्ख़ा प्रेशर कुकर में आध घंटा दम–पुख़्त होता रहा। फिर इसमें से एक गिलास यख़नी रोज़ाना शाम चार बजे पी जाती थी। उनकी वफ़ात दिल के दौरे से हुई।

गोश्त की पहचान:

	गोश्त का रंग	चर्बी का रंग
गाए, बैल	सुर्ख़	ज़र्द और ख़ुश्क
बकरी	हल्का सुर्ख़	सफ़ेद
बटेर, दुंबा	हल्का सुर्ख़	सफ़ेद, दुंबे का गोश्त के अंदर भी चर्बी के रेशे मिलते हैं।
भैंस	गहरा सुर्ख़	सफ़ेद
ऊंट	सुर्ख़	हल्का ज़र्द
हिरन	हल्का सुर्ख़	ज़र्द
घोड़ा	गहरा सुर्ख़	सफ़ेद–मगर ज़र्दी माइल
व्हील मछली	निहायत गहरा सुर्ख़	सयाल
इंसान	गुलाबी	सुनहरी ज़र्द

इन उमूर को देखने के बअद गोश्त की उमूमी रंगत, चमक देखी जानी चाहिए। अगर जानवर की कलेजी और फेफड़ा देखने को मिल जाए तो बेहतर है। कलेजी चमकदार, इसके किनारे मज़बूत, मुकम्मल और मुसलसल होने चाहिएं। कलेजी या फेफड़े पर कोई दाग़, आबला, फुंसी, धाओ ख़तरनाक बीमारियों की अलामत हो सकते हैं। गोश्त का रंग गुलाबी, इसकी हड्डियों के जोड़ आसमानी रंग के हों। हड्डी का जोड़ बनाने वाला सिरा जितना नीलगूं होगा गोश्त उतनी जल्दी गलेगा। अगर वह सफ़ेद या सुर्ख़ हो तो यह गोश्त जितना भी पकाएं, गलने में न आए गा।

गोश्त ख़रीदते वक़्त यह बातें तवज्जह में रखी जाएं।

1. गोश्त का रंग न तो ज़र्दी माइल सुर्ख़ी पर हो और न ही बैंगन की तरह का

हो। यअनी PURPLE हो। क्यूंकि बैंगनी रंग का मतलब यह है कि जानवर जिबह न किया गया था।

2. गोश्त की शक्लो सूरत और हैइयत इस तरह हो कि जैसे कोई मुरस्सह फ़र्श, इस्तिलाहन इस शक्ल को MARBELLED APPEARANCE कहते हैं।
3. गोश्त को जब हाथ लगाया जाए तो इसमें मज़बूती और लचक महसूस हो। उंगली न तो अंदर धंसे और न ही पिलपिला महसूस हो और उगंली को गीला न करे।
4. गोश्त को जब उंगली से दबाया जाए तो इसके अंदर हवा की मौजूदगी महसूस न हो।
5. गोश्त से किसी क़िस्म की कोई ख़ुश्बू या बदबू न निकल रही हो।
6. पकाने से गोश्त ज़्यादह न सुकड़े।
7. गोश्त अगर थोड़ी देर पड़ा रहे तो पानी न छोड़े बल्कि पड़ा रहने पर वह मज़ीद ख़ुश्क हो जाए और इसके ऊपर बालाई सतह ख़ुश्क हो जाए। अगर ऐसा न हो तो गोश्त ख़राब है।
8. जब गोश्त पानी छोड़े, रंगत ज़रदी माइल हो जाए और सब्ज़ी माइल होकर इसमें यू तरी आ जाए जैसे खमीरे आटे में होती है, तो इसका मतलब है कि गोश्त ख़राब हो गया।
9. खुली हवा में दो तीन घंटे पड़ा रहने पर गोश्त ख़राब नहीं होता। अगर इस पर पूरा दिन गुज़र जाए तो गर्म इलाक़ों में सड़ांद पैदा हो कर इंसानी इस्तेअमाल के नाक़ाबिल हो जाता है।

गोश्त को नाक़ाबिले इस्तेअमाल बनाने वाली बीमारियां:

आस्मानी किताबों ने जानवर के ज़बीहे के बारे में जो शराइत आयद की हैं वह इसलिए हैं कि इसके खाने वाले किसी तकलीफ़ का शिकार न हो जाएं। सैहयूनी अक़ाइद के मुताबिक जानवर को ज़िबह के बअद तीन दिन के अंदर खाया न जाए तो वह हराम हो जाता है।

इस्लाम ने क़ुरबानी के लिए जानवर का जो मेअ़यार मुक़र्रर किया है वह हर लिहाज़ से मुकम्मल है और एक आम आदमी की सलाहियत के मुताबिक़ है वरनह तफ़सील में जाएं तो क़ुरआन मजीद ने सूरह अलबक़रह में जो फ़हरिस्त अता फ़रमाई है वही जानवरों को इंसानी इस्तेअमाल के क़ाबिल बनाने के लिए काफ़ी है।

बड़े शहरों को हर मज़बह में हैवानात के डाक्टर इस उम्मीद पर मुतअय्यन किए जाते है कि वह ज़िबह से पहले और बअद जानवरों का मुआयना करके उनमें नाक़ाबिले इस्तेअमाल को ज़ाया कर दें। बअ़ज़ शहरों में यह इंतिज़ाम क़ाबिले एतिमाद है और बअ़ज़ जगहों पर लापरवाई देखने में आती है।

जदीद तहक़ीक़ात के मुताबिक़ अगर किसी जानवर में मुंदरजह ज़ैल बीमारियों में से कोई एक हो तो इसे न खाया जाए।

पेट की बीमारियां:

आंतों की सोज़िश, तपे दिक़, पेट के कीड़े FOOD POISONING।

कीम्यावी ज़हरें:

कीड़े मारने वाली दवाएं, झाड़ियों को जलाने वाली दवाएं और विलायती खाद के अलावह बोरिक एसिड और नब्ज़ूइक एसिड के मुरक्कबात अगर किसी जानवर के जिस्म में जा चुके हों तो इसका गोश्त न खाया जाए इसके अलावह फ़ास्फ़ोरस, ज़िंक (जस्त) वग़ैरह क़िस्म के कीम्यात इंसानों के लिए मुज़िर हैं।

मुतअद्दि बीमारियां

अगर किसी जानवर को ANTHRAX की बीमारी हो तो जैसे ही इसका पता चले इसका गोश्त जला दिया जाए। जिस जगह पर उसे ज़िबह किया गया। वहां पर मिट्टी का तेल डाल कर आग जलाई जाए। छुरियां आग में सुर्ख़ की जाएं इनका दस्तह अगर लकड़ी का हो तो जला दिया जाए। इसकी सबसे पहली अलामत यह है कि जानवर को बुख़ार होता है। चलना दूभर होता है। और ज़िबह करने पर जो ख़ून निकलता है इसका रंग तारकोल की मानिंद सियाह होता है। गोश्त भी सियाह होता है। हर वह शख़्स जिसने इस जानवर को या इसकी खाल को हाथ लगाया इस बीमारी के ख़तरे में रहेगा। अगर्चे ऐसे लोगों को बचाने के लिए ख़ुसूसी वैक्सिन भी होती है। लेकिन वह आम तौर पर नायाब है इसलिए गोश्त से तअल्लुक़ में आने वाले हर शख़्स के जिस्म को अच्छी तरह धोने के बअद उसे पिंसलीन के चंद टीके बतौर हिफ़ाज़ती पेशबंदी लगाए जाएं क्यूंकि अगर यह बीमारी लाहिक़ हो जाए तो जान का ख़तरह रहता है।

बावला पन गाए, भैंसों और बकरियों की बीमारी नहीं। अंदरून भाटी लाहौर गेट में एक दुंबा देखा गया जिसे बावले कुत्ते ने काटा था और वह बावला हो गया। लोगों ने उसे ज़िबह कर लिया। बड़ी मुश्किल से उसका गोश्त नज़रे आतिश किया गया।

इरशादाते रब्बानी:

يايها الذين امنوا اوفوا بالعقود. احلت لكم بهيمة الانعام الا مايتلى عليكم غير محلى الصيد. وانتم حرم. ان الله يحكم مايريد. (المائده:١)

(ऐ ईमान लाने वालो! अपने तअदों को वफ़ा किया करो। तुम्हारे लिए बे-ज़बान मवेशी हलाल कर दिए गए सिवाए इसके जिनका तज़किरह अलाहिदह किया गया है। और हराम की हालत में शिकार को हलाल न समझो। अल्लाह तआला जिस तरह मुनासिब या पसंद फ़रमाता है हुक्म सादिर करता है।)

इस आयत में "बहीमतः" ज़ू-मअने लफ़्ज़ है। लोग इसे जानवर के मअने में इस्तेअमाल करते हैं जबकि अल्लामा रागिब ने इसके मअने बे-ज़बान जानवर किए हैं।

وهو الذى سخر البحر لتاكلو منه لحماً طرياً وتستخرجوا منه حلية تلبسونها. (النحل ١٤)

(और वही रब है जिसने तुम्हारे लिएं समंदर को मुतीअ़ कर दिया ताकि तुम इससे ताज़ह गोश्त हासिल करो और इससे मोती निकलते

हैं जिनको तुम ज़ेबो–ज़ीनत के लिए पहनते हो।)

وانظر الى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها لحماً. فلمّا تبيّن له قال اعلم ان الله على كل شئ قدير.
(البقرة:٢٥٩)

(और देखो हड्डियों की तरफ़ कि हम उन्हें कैसे जोड़ते हैं और फिर उनमें गोश्त पिरो देते हैं फिर जब उन पर हक़ीक़त रौशन हो गई तो बोल उठे कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है।)

यह तशरीहुल आ़अज़ा का एक अहम नुक्तह है कि गोश्त का हर हिस्सह दोनों तरफ़ से हड्डियों से इस तरह मुंसलिक होता है जैसे कि उसके रेशे हड्डी से बरआमद होते हैं।

وامددنهم بفاكهة ولحم مما يشتهون.
(الطور:٢٢)

(हमने इन्हें मुसलसल ऐसे मेवे देते रहेंगे और गोश्त, जिनकी वह ख़्वाहिश करेंगे।)

किताबे मुक़द्दसः

किताबे मुक़द्दस में गोश्त का ज़िक्र मुख़तलिफ़ सूरतों में बहुत जगह आया है।

...... मगर तुम गोश्त के साथ ख़ून को जो उसकी जान है न खाना। (पैदाइश 9:4)

जब बनी इस्राईल ने ग़िज़ाई क़िल्लत की शिकायत की तो उनके लिए एक अच्छे खाने की ख़ुशख़बरी दी।

......मैंने बनी इस्राईल का बुड़–बुड़ाना सुन लिया है। सो तू उनसे कह दे कि शाम को तुम गोश्त खाओगे और सुबह को तुम रोटी से सैर होगे।

और तुम जान लोगे कि ख़ुदावंद तुम्हारा ख़ुदा है (ख़ारूजः16:12)

गोश्त की क़िस्मों के बयान में इरशाद हुआ।

...... सब गोश्त यक्सां नहीं। बल्कि आदमियों का गोश्त और है। चोपायों का गोश्त और है। परिंदों का गोश्त और है। मछलियों का गोश्त और है। (क्रंथियों 15:39)

दिलचस्प बात यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत को खाने पीने के मआमले में हमेशह ख़ुदाई इम्दाद मयस्सर रही। कभी इनको मनो सलवा मयस्सर आया और कभी उनको गोश्त मुहैया किया गया। हत्ता कि उनके पूरे लशकर के लिए भी राशन फ़राहम किया गया लेकिन हर जगह इंतिख़ाब में बहतरीन चीज़ गोश्त ही क़रार दी गई।

...... फिर मूसा अलैहि कहने लगा कि जिन लोगों में मैं हूं उनमें छः लाख तो प्यादे ही हैं और तूने कहा है कि मैं इनको इतना गोश्त दूंगा कि वह महीना भर उसे खाते रहेंगे। (गिंती 11:21)

इरशादाते नबवी सल्ल०

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गोश्त को पसंद फ़रमाते थे।

हज़रत अबुलदरदा रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने फ़रमायाः

سيّد طعام اهل الدنيا و اهل الجنة الحم (ابن ماجہ)

(दुनिया और जन्नत के रहने वालों के खानों का सरदार गोश्त है। उन्ही अबुलदरदा रज़ि. से रिवायत है)

مادعی رسول الله صلى الله عليه وسلم الىٰ لحم قطّ الّا اجاب ولا اهدى له لحم قط الّا قبله. (ابن ماجہ)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब भी गोश्त खाने की दावत दी गई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बूल फ़रमाई। जिस किसी ने भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हिसा भेजा। क़बूल फ़रमाया।)

हज़रत अबू हुरैरा बयान फ़रमाते हैं।

اتى رسول الله صلى الله عليه وسلم ذات يوم بلحمٍ فرفع اليه الذراع وكانت تعجبه ننهس منها. (ابن ماجہ۔ترمذی)

(एक दिन रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में गोश्त आया। वह दस्ती का था। क्यूंकि वह आपको पसंद था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसमें से दांतों के साथ नोच कर तनावुल फ़रमा रहे थे)

हज़रत अबदुल्लाह बिन जअफ़र इब्ने ज़ुबैर रज़ि. रिवायत करते हैं।

قد نحر لحم جزوراً وبعيراً انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم قال والقوم يلقون لرسول الله صلى الله عليه وسلم اللحم. يقول اطيب اللحم، لحم الظهر. (ابن ماجہ)

(उन्होंने लोगों के लिए एक ऊंट ज़िबह किया। उन्होंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना और लोग आप के लिए गोश्त निकाल रहे थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे कि बहतरीन गोश्त पुश्त का होता है।)

हज़रत अबदुल्लाह बिन अलहारिस अलजज़ाअ अज़्ज़ुबैदी रज़ि. बयान करते हैं।

اكلنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم طعاماً فى المسجد، قدشوى، فسحنا ايدينا بالحصباء ثم تمنا نصلى ولم نتوضا (ابن ماجہ)

(हमने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह भुना हुआ गोश्त खाया। फिर अपने हाथ पत्थरों से साफ़ करके दोबारह वुज़ू किए बग़ैर नमाज़ पढ़ी।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. एक शख़्स का वाक़िआ बयान करते हैं कि जो हुज़ूरी में पेश हुआ। तो दहशत की वजह से इसका जिस्म फड़क रहा था। आप सल्ल. ने उसे तसल्ली देते हुए फ़रमायाः

فانى لست بملكٍ انما انا ابن امراة تاكل القدير (ابن ماجہ)

(मैं कोई बादशाह तो नहीं बल्कि एक ऐसी औरत का बेटा हूं जो

क़दीद खाया करती थी।) (इब्ने माजा)

अरब के ग़रीब लोग गोश्त को नमक लगाकर धूप में सुखा लेते थे। ताकि जब मयस्सर न हो तो उस ख़ुश्क गोश्त को भिगो कर खालिया करें यह क़दीद कहलाता था। उनकी मुराद यह थी कि मैं एक ग़रीब औरत का बेटा हूं। क़दीद का ज़िक्र अनस बिन मालिक रज़ि॰ की एक मुत्तफ़िक़ अलैहि हदीस में भी आता है जहां एक दरज़ी ने हुज़ूर सल्ल॰ की दअवत की तो ख़ुश्क गोश्त के साथ कद्दू पकाया।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशह सिदीक़ह रज़ि॰ बयान फ़रमाती हैं।

لقد كنا نرفع الكراع. فيا كله رسول الله صلى الله عليه وسلم بعد خمس عشرة من الاضاحى. (ابن ماجہ)

(हम रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए कुरबानी के पाए अलाहिदह रख लेते थे क्यूंकि वह इनको कुरबानी के पंद्रह दिन बअद खाते थे।)

उन (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बैतुल मुबारक की इस ख़बर से मअलूम होता है कि उन (सल्ल॰) को पाए पसंद थे और दस–पंद्रह दिन बअद तक भी वह उनको शौक़ से खाते थे। जानवरों के पैरों में भी ख़ून बनाने के कारख़ाने होते हैं। पाए खाने या उनका शोरबह पीना ख़ून की कमी का बेहतरीन इलाज है। एक और रिवायत में है कुरबानी के गोश्त को महफ़ूज़ रखने का अरसह कम कर दिया गया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं।

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال احلّت لنا ميتتان ودمان. فاما الميتان فالحوت والجراد واما الدمان فالكبد والطحال. (ابن ماجہ)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हमारे लिए दो मुर्दे हलाल हैं और दो ख़ून। मुर्दे से मुराद मछली और टिड्डी से मुराद कलेजी और तिल्ली है।)

हज़रत उमरू बिन रज़ि॰ बिन उम्मियह बयान करते हैं:

(اى النبى صلى الله عليه وسلم يجتنبز من كتف شاةٍ فى يده فدعى الى الصلوٰة فالقاها والمسكين التى يجتبزبها قام ولم يتوضا . (بخاری۔مسلم)

(मैंने नबी सल्लल्लाहो को देखा कि आप सल्ल॰ के हाथ में बकरी का शाना है और इससे गोश्त काट कर खा रहे हैं। आप को नमाज़ के लिए बुलाया गया तो आप सल्ल॰ ने शानह और वह छुरी रखी जिससे गोश्त काट रहे थे। फिर खड़े हुए और दोबारह वुज़ू किए बग़ैर नमाज़ पढ़ी)

भुने गोश्त से आप सल्ल॰ की रग़बत का बयान हज़रत मुग़ीरह बिन श्अबह रज़ि॰ इस तरह करते हैं।

ضفتُ مع رسول الله صلى الله عليه وسلم ذات للية فامر بجنبٍ نشرى ثم اخذ الشفرة فجعل يجزلى بها منه. (ترمذی)

(मैं एक रात रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के यहां महमान था। उन्होंने मेरे लिए बकरी के एक पहलू को ख़ास तौर पर भुनवाया। फिर छुरी ले कर इसमें काट–काट कर मुझको अता करते जाते थे।)

नमाज़ और गोश्त के मसले पर हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बासा रज़ि. बताते हैं।

انتشل النبی صلی اللہ علیہ وسلم عرقاً من قدرٍ فاکل ثم ولم توضا.
(بخاری)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक हांडी से पकने के दौरान गोश्त की एक हड्डी निकाली, उसे खाया, फिर दोबारह वुज़ू किए बग़ैर नमाज़ पढ़ी।)

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि. बयान फ़रमाते हैं।

رایت النبی صلی اللہ علیہ وسلم یاکل دجاجاً. (بخاری)

(मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुर्ग़ी खाते हुए देखा है।)

इस सिलसिले मैं हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि. की एक दअवत का तज़किरह मिलता है जिसमें मुर्ग़ी पकी हुई थी। एक महमान को एतिराज़ था कि मुर्ग़ी अक्सर गंदगी खाती है इसलिए इसको खाना नाजाइज़ है। इनके समझाने पर वह खाने पर राज़ी हो गए। लेकिन ग़िलाज़त खाने वाली मुर्ग़ी या किसी भी जानवर के हराम होने का मसअला बदस्तूर मौजूद है जिसके उलमा ने मुख़्तलिफ़ हल बयान किए है।

इब्ने अबी शैबा हज़रत इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत करते हैं कि इसे तीन दिन तक बंद रख कर साफ़ ग़िज़ा देने के बअद खाया जा सकता है। दूसरे उलमा गंदगी खाने वाले जानवर को चालीस दिन तक मुसफ़्फ़ा ख़ुराक देने के बअद खाने के क़ाबिल क़रार देते हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. बयान करते हैं।

مرانا بمرنالظهران فانفجنا رنباً فسعوا علیها فلغبوا نسعیت حتی ارر کتها فاتیت بها اباطلحة. فذبحها فبعث لورکیها اور قال فخذیها الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقلبها.
(بخاری۔ابن ماجہ)

(हम मराज़ुज़्ज़ुहरान से गुज़र रहे थे कि हमने एक ख़रगोश को छेड़ा। लोग इसके पीछे दौड़े, फिर थक गए। मैं दौड़ा तो मैंने इसको पा लिया। और अबू तलहा रज़ि. (अपने वालिद) के पास लाया। उन्होंने इसे ज़िबह किया और इसके दोनों कूल्हे या रानें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रवाना कीं। उन्होंने क़बूल फ़रमाया)

अगर्चे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़ाती तौर पर गोश्त बहुत पसंद था। इस बारे में इसराफ़ को ना पसंद फ़रमाते थे। जो लोग रोज़ाना और ज़्यादह मिक़दार में गोश्त खाते थे इनको इस आदत से मनाअ

फ़रमाया।

अरकुन्निसा का इलाज:

कमर से ले कर घुटने तक टांग की पिछली तरफ़ एक असब आता है जिसमें अगर दर्द हो तो इसे अर्कुन्निसा कहते हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं:

صمعتُ رسول الله عليه وسلم يقول شفاء عرقِ النساء الية شاةٍ اعرابية تذاب ثم نجز ثلثة اجزاء ثم يشرب على الريق فى كل يحمِ جزءٌ.

(ابن ماجہ۔ مستدرک الحاکم۔ مسند احمد)

(मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि अरबी बकरी की चक्की लेकर इसके तीन हिस्से किए जाएं। इसका एक हिस्सह रोज़ाना सुबह नहार मुंह पी लिया जाए)

हमारे उलमाए किराम ने इलैतः का तर्जुमह दुरुस्त नहीं किया। वह इसका तर्जुमा चक्की करते हैं जबकि जंगली अरबी बकरी की चक्की नहीं होती। दूसरी रिवायात जो कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरू रज़ि. और दूसरे सहाबह रज़ि. से दीगर कुतुब में हैं। दुंबा और बकरी भी मज़कूर हैं हमारी राए में इससे मुराद चक्की नहीं हो सकती। और इतनी चर्बी पीना वैसे भी मुमकिन नहीं. इससे मुराद दुमची और चूतड़ का गोश्त है।

इलैतः से मुराद जिस्म का आख़री हिस्सा क़रार दे कर अब तक दर्जनों मरीज़ों को इस तरह यख़नी पिलाई गई। अल्लाह के फ़ज़ल से इन सबको फ़ाएदह हुआ। इस ख़याल को इस हदीस से भी तक़वियत मिलती है।

हज़रत अबू उबैदह रज़ि. रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اطيب اللحم، نحم الظهر. (بخاری)

(सबसे अच्छा गोश्त पुश्त का होता है)

पुश्त के गोश्त में एक अहम फ़ौक़ियत उसकी हड्डियों का गूदा है। गोश्त काटने के दौरान जब रीढ़ की हड्डी के मुहरे कटते हैं। तो इनके अंदर की जाली दार हड्डी जिसमें इस्फ़ंज की तरह छोटे-छोटे ख़ाने होते हैं। ज़ाहिर हो जाती है। हड्डियों के ऐसे मक़ामात पर ख़ून के सुर्ख़ दाने तैयार होते हैं और इनकी तैयारी में काम आने वाले अज्ज़ह अज़ क़िस्म फ़ौलाद वग़ैरह यहां जमअ रहते हैं। जब यह गोश्त पकाया जाता है तो उबलने की बदौलत मुतअद्दिद कारआमद अज्ज़ा शोरबह में आ जाते हैं और इस तरह पुश्त का गोश्त लहमियात मुहैय्या करने के साथ साथ ख़ूनकी कमी का इलाज़ बन जाता है। शोरबह में मुफ़ीद अनासिर की मौजूदगी के बारे में हज़रत अबू ज़रग़फ़ारी रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

واذا عملت مرقةً فاكثر ماء ه واغترف لجيرانك منها. (ابن ماجہ)

(जब तू सालन पकाए तो इसमें पानी ज़रा ज़्यादा डाल दिया कर और इसका कुछ हिस्सा अपने हमसायों को भी भेज दिया करो।)

दूसरी रिवायत में शोरबा के मुफ़ीद होने का तज़किरा मिल है।

हज़रत बुरीदा बिन उमर सफ़ीना रज़ि. अपने वालिदे मोहतरम और दादा से रिवायत करते हैं कि:

اكلتُ مع رسول الله صلى الله عليه وسلم لحم حبارى (النسائی)

(उन्होंने रसूलल्लाह वसल्लम के हमराह सुर्ख़ाब का गोश्त खाया)

गोश्त के बारे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादाते गिरामी का ख़ुलासा तो इनको बकरे का गोश्त और पाए पसंद थे इसमें थे इसमें से भी वह दस्ती और शाना ज़्यादा पसंद करते थे। यह वह मक़ामात हैं जहां पर रेशे तोटे नहीं होते और गोश्त जल्द गुलता और मुलायत होता है। इसके बाद इनकी पसंद पुश्त का गोश्त था। जिसका रेशा इन से कम मोटा, मगर इसमें ख़ून पैदा करने वाले अज्ज़ा मिलते हैं। उन्होंने शिकार के जानवर और परिंदे ज़्यादा पसंद फ़रमाए। क्यूंकि कुरआन मजीद ने परिंदों के गोश्त को बेहतरीन गोश्त क़रार दिया है। आज कल भी परिंदों के गोश्त को "सफ़ेद गोश्त" के नाम से ज़्यादा पसंद किया जाता है। उन्होंने मुर्ग़ शौक़ से खाया लेकिन गाए के गोश्त को बीमारियों का बाइस क़रार दिया है जो कि मौजूदा तहक़ीक़ात से भी दुरुस्त साबित हुआ। क्यूंकि सुवर के गोश्त के बाद जिस गोश्त में ख़तरनाक तुफ़ैली कीड़े ज़्यादा होते हैं। वह गाए का गोश्त है। माहिरीन हैवानात का मुशाहिदा है कि जो बुराइयां गाए के गोश्त में होती हैं, वही भैंस के गोश्त में भी होती है।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

गोश्त की अल्लाह तआला ने मुतअद्दिद मक़ामात पर फ़ज़ीलत बयान की है। इसलिए गोश्त बिलाशुबह एक मुफ़ीद और मुक़व्वी ग़िज़ा है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसे इस हद तक पसंद फ़रमाते थे कि गोश्त को दुनिया और आख़िरत का बेहतरीन सालन क़रार दिया। वह गोश्त को हर सूरत में पसंद फ़रमाते थे। उन्होंने इसे भून कर खाया। सब्ज़ी के साथ पकवाया। सरीद की शक्ल में इतना मक़बूल रहा कि हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि. से तशबीह दी।

इमाम ज़ुहरवी रह. कहते हैं कि गोश्त खाने से जिस्म को सत्तर क़िस्म की कुव्वतें हासिल होती हैं मुहम्मद बिन वासेअ़ कहते हैं कि गोश्त खाने से बसारत तेज़ होती है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का दस्तूर था कि वह रमज़ान के रोज़े की इफ़्तारी में गोश्त का इस्तेमाल ज़ुरूर करते थे। अगर सफ़र करते थे तो तवानाई को क़ायम रखने के लिए ज़ुरूर गोश्त खाते थे। दिन भर के रोज़े की कमज़ोरी और सफ़र की थकन को दूर करने का इनके पास बेहतरीन नुस्ख़ह गोश्त था।

बेहतरीन गोश्त जानवर के अगले हिस्से का है। जूं-जूं आगे चलते जाएं उफ़ादियत कम होती जाती है। जैसे कि दस्ती सबसे उम्दह है। फिर गर्दन और कल्ला और आख़िर में पिछली टांगें। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दस्ती और शाने का गोश्त पसंद था। गर्दन का गोश्त ज़ाएक़ह के लिहाज़ से निहायत उम्दह, जल्द हज़्म होने वाला है और जिस्म के लिए बोझल नहीं होता। मज़कर

का गोश्त ज़्यादह मुक़व्वी होता है। ख़ास तौर पर जानवर अगर ख़स्सी किया गया हो। बकरी के गोश्त में तवानाई निस्बतन कम होती है। भारी, मुअम्मिर और मोटे जानवर का गोश्त देर हज़्म और नफ़ख़ पैदा करता हैं और मेअ़दा पर बोझ बन जाता है। जिस गोश्त के साथ हड्डी शामिल हो वह ज़्यादह अच्छा होता है। कमर यअ़नी पुश्त के गोश्त में ग़िज़ाइयत काफ़ी होती है। यह ख़ूने सॉलेह पैदा करता है।

गोश्त के असल फ़वाइद इस जानवर पर मुनहस्सिर होते हैं जिससे वह हासिल किया गया। मसलन बकरी का गोश्त ज़्यादह गर्म नहीं होता। यह जल्द हज़्म होता है लेकिन ग़िज़ाइयत में दूसरों से कमतर है। अल्लामा अलजाहिज़ को एक हकीम ने बताया कि बकरी के गोश्त से बचे रहना कि यह ख़यालात में अफ़सुर्दगी, हाज़मा पर बोझ, सुफ़रा में इज़ाफ़ह, ख़ून की ख़राबी और याद–दाश्त में कमज़ोरी का बाइस होता है। अल्लामा जाहिज़ के तबीब के मुशाहिदात इसलिए ग़लत हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

انها هادية الشاة الى البر وابعدها من الازى (ذہبی رحمہ)

(इसी तरह एक और अहम इरशाद मुजाहिद रह॰ से मुरव्वी है।)

रसूलल्लाहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बकरी के गोश्त का सबसे पसंदीदा हिस्सह इसके अगले पैर यअ़नी दस्ती थी।

जालीनूस कहता है कि बेहतरीन गोश्त जवान और दुबले जानवर का है जबकि मोटे और चर्बी वाले जानवर का गोश्त देर में हज़्म होता, ग़िज़ाइयत में कमतर होता है। जानवर के जिस्म का दायां हिस्सह बाएं से ज़्यादह मुफ़ीद होता है।

हज़रत अली रज़ि॰ फ़रमाया करते थे कि गोश्त खाने से इंसान में ख़ुशख़ल्क़ी पैदा होती है। यह रंग को निखारता है। इरशाद फरमाते थे कि गोश्त हक़ीक़त में अपनी मिसाल आप है। क्यूंकि जिसने उसे चालीस दिन छोड़े रखा वह बदख़ल्क़ हो गया। इसका दिल सख़्त हो गया।

ऊंट का गोश्त एक उम्दह क़िस्म की मुतावाज़िन ख़ुराक है। यह गोश्त नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके सहाबा रज़ि॰ को बड़ा मरग़ूब था और वह सफ़रो हिज़्र में तनावुल फ़रमाते थे अलबत्ता एक रिवयात के मुताबिक़ ऊंट का गोश्त खाने के बअद वुज़ू करना ज़ुरूरी है।

हिरन का गोश्त एक मुतावाज़िन और मोअ़तदिल ग़िज़ा है। जिस्म के लिए मुफ़ीद और ज़ुकाम को दूर करता है।

ख़रगोश का गोश्त पेशाब आवर है गुर्दों के पत्थर तहलील करता है। इसका भेजा खाने से रअ़शा में फ़ाएदा होता है।

परिंदों के गोश्त:

मुर्ग़ का गोश्त हज़रत अबू मूसा रज़ि॰ ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खाते देखा। इसलिए वह बड़े शौक़ से इसको खाया करते थे। यह पेट से गंदी हवाएं निकालता है। मेअ़दा के लिए मुसल्लह है। जल्द हज़्म होता और

दिमाग़ के लिए मुक़व्वी है। आवाज़ को निखारता है। रंग साफ़ करता है। अक़्ल बढ़ाता है। ख़ून सॉलेह पैदा करता है। क़ौलंज, दमा, पुरानी खांसी को दूर करता है।

कबूतर का गोश्त ख़ून बढ़ाता, अअ़साबी के लिए मुक़व्वी है। नर का गोश्त आअ़साबी कमज़ोरी रअ़शा, बेहोशी और सकता में मुफ़ीद है। एक ज़ईफ़ हदीस में कबूतरी के गोश्त को कमज़ोरी के लिए इरशाद फ़रमाया गया और हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने अपने ख़ुतबे में कबूतरों को मारने का हुक्म दिया था।

चिड़िया और तलीर का गोश्त। हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ बयान फ़रमाते हैं।

ان النبي صلى الله عليه وسلم قال: مامن انسان يقتل عصفوراً فما فوقه بغير حقه الا سأله عزوجل قيل يا رسول الله وماحقه؟ قال تذبحه فتاكله. ولا تقطع راسه وترمي به. (النسائی)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस किसी ने चिड़िया और या इससे बड़े किसी परिंदे को बिलावजह क़त्ल किया। अल्लाह तआला इससे हिसाब लेगा। मैं ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल॰! इसकी वजह क्या होनी चाहिए? फ़रमाया कि इसे ज़िबह करो। खाओ और इसका सर मत फैंको बल्कि इसे भी खाओ।)

इस मज़मून में सुनन अन्निसाई में उमरू बिन अश्शरीद अपने वालिद मोहतरम से रिवायत करते हैं कि चिड़िया रोज़े हश्र अपने बिला ज्वाज़ क़त्ल की फ़रयाद बारगाहे ख़ुदावंदी में करके ईज़ा पसंदों के लिए अज़ाब का बाइस होगी।

गोश्त का कीम्यावी तज्ज़ियह:

गोश्त खाने का बुनियादी मक़सद लहमियात हासिल करना है जो कि इसमें वाफ़र मिक़दार में होती हैं। जानवरों के गोश्त में आम तौर पर वही चीज़ें होती हैं जो इंसान के अपने गोश्त की साख़्त में होती हैं। चूंकि हर जानवर की ख़ुराक, नस्ल और माहौल दूसरे से मुख़्तलिफ़ होता है। इसलिए गोश्त की कीम्यावी साख़्त में होती हैं। चूंकि हर जानवर की ख़ुराक, नस्ल और माहौल दूसरे से मुख़्तलिफ़ होता है इसलिए गोश्त की कीम्यावी साख़्त में मअमूली फ़र्क़ होता है। जैसे कि सर्द मुमालिक के जानवरो में चिकनाई ज़्यादा होती है। क्यूंकि चर्बी जिस्म की गर्मी को ख़ारिज होने नहीं देती। ज़्यादह तौर पर इस्तेअमाल होने वाली गोश्त की क़िस्मों में अहम कीम्यावी अनासिर की तदवीन इस तरह से होती है।

Chlorine	Sulphur	Phosphorus	Copper	Iron	Magnesium	Calcium	Porassium	Sodium	Calories	Carbohydrate	Fats	Proeiens	
67	280	238	0.24	5.1	27.3	3.6	273	64	260	0	16	25.8	बकरे की रान उबली हुई
62	271	242	0	4.3	36.4	4.3	346	71	292	0	20	25.0	बकरे की रान भुनी हुई
90	300	313	0	7.7	36.0	45.8	407	100.	211	0	7.2	35.2	तीतर भुना हुआ
44	133	175	0	8.5	14.9	7.2	180	40	102	0	5.8	26.8	कबूतर भुना हुआ
43	245	100	.20	1.9	21.6	11.3	210	32	180	0	7.7	26.0	ख़रगोश भुना हुआ
113	330	355	0	2.5	27.6	14.3	427	97	232	0	11.5	30.5	बछड़े का गोश्त भुना हुआ
179	363	292	0	9.3	38.7	19.2	430	136	210	0	8.2	32.5	मुर्ग़ भुना हुआ

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदात:

आम तिब्बी किताबों में गोश्त के फ़वाइद जानवरों के हिसाब से मुंदरजह ज़ैल हैं।

+ गोतश्त ऊंट।

इस की चर्बी का लेप बवासीर में मफ़ीद है। कूल्हे का दर्द अर्क़ुन्निसा, यरक़ान और पेशाब में मुफ़ीद है। जोड़ों के दर्द और बुख़ार में नाफ़ेअ़ है।

+ बटेर का गोश्त:

जिस्मानी आअ़ज़ा को कुव्वत देता है। कमज़ोर हाज़मह और लाग़रों के लिए बेहतरीन है। भूख बढ़ता है। तपे दिक़ में मुफ़ीद है।

+ गोश्त बकरा।

इसके पित्ते का सुर्मा रतौंदी में मुफ़ीद है। छोटे बच्चे का गोश्त कमज़ोर हाज़मा और लाग़रों के लिए बेहतरीन है। भूख बढ़ाता है। तपे दिक़ में मुफ़ीद है।

+ गोश्त बत्तख़:

मुक़व्वी जिस्म और बाह है। गुर्दों को ताक़त देता है। रियाह को दूर करता है। हुकमा ने इसके पर को जलाकर ख़नाज़ीर में तजवीज़ किया है। इसकी बीट को ख़ुश्क करके झाइयों के लिए चेहरे पर लगाने का ज़िक्र किया है।

+ तीतर का गोश्त:

इसकी बीट आंख से सफ़ेदी को दूर करता है। जिल्द के निशान मिटाती है। इकसा गोश्त सर और मेअ़दा को ताक़त देता है। हाफ़्ज़ह के लिए मुफ़ीद है।

+ ख़रगोश का गोश्त:

इसकी यख़नी की भाप देने से गंठिया और नुक़रस में फ़ाएदह होता है। इसका खाना लक़वह और फ़ालिज में मुफ़ीद है।

+ गाए का गोश्त:

मसूढ़ों और होंठ पर वरम पैदा करता है। गंठिया और अक़ुन्निसा में मुज़िर है। ख़ून फ़ासिद पैदा करता है।

+ गोश्त मुर्ग़:

मुफ़र्रह है। हाफ़्ज़ह को बढ़ाता और दिमाग़ को तेज़ करता है। क़ौलिंज को नाफ़ेअ है। सरसाम में मुफ़ीद है। मुर्ग़ी की खाल उतार कर गर्म–गर्म गोश्त सांप काटे पर रखने से दर्द को आराम आता है। आवाज़ को निखारता है।

+ मोर का गोश्त:

इसका ख़ून ज़ख़्मों को अच्छा करता है। इसका पित्ता निकाल कर सिकंजीन के हमराह देने से पुराने दस्त बंद हो जाते हैं। इसकी हड्डी जलाकर इसका मंजन दांतों को चमकाता और ताक़त देता है। मुक़व्वी मेअ़दा है। इसका शोरबह नमूनिया और पसली के दर्द में मुफ़ीद है इसके परों को जलाकर सुर्मह बनाते हैं जो कि ज़अ़फ़े बसारत में मुफ़ीद है।

अतिब्बा क़दीम ने गोश्त की अजीबो–ग़रीब तासीरें बयान की हैं। इनमें से अकसर इनकी मेहनत और मुसलसल मुशाहिदात का नतीजह हैं लेकिन जब उनके यहां कुछ ऐसी क़िस्म के जानवरों के गोश्त की तासीरें मिलती हैं जिनका मयस्सर आना आसान नहीं तो बहुत सा मुआमला मुश्तबह हो जाता है.

वैदिक अतिब्बा के मुशाहिदे:

वैद जानवरों की दो क़िस्में क़रार देते हैं। एक वह जो ख़ुश्की पर रहते हैं और दूसरे आबी जानवर। इनमें आबी जानवरों का गोश्त मुसक्किन, मीठा, सक़ील, भूख को कम करने वाला बलग़म और रियाह पैदा करता है। जंगल में रहने वाले ख़ुश्की के जानवरों की जो आठ ज़ैली क़िस्में बयान की गई हैं इनमें हिरन के ख़ानदान का गोश्त क़ाबिज़, जल्द हज़्म होने वाला, मुक़व्वी और भूख बढ़ाने वाला है। ग़ारों और बिलों में रहने वाले जानवर, जैसे सांप, गोह का गोश्त सक़ील, पेशाब को कम करता है। बिल्ली और शेर के ख़ानदान का गोश्त देर हज़्म होता हैं आंखों के लिए मुफ़ीद है। दरख़्तों पर रहने वाले जानवरों का गोश्त जैसे बंदर, गिलहरी, आंखों के लिए मुफ़ीद, मुक़व्वी, पेशाब आवर, दाफ़ेअ बलग़म और बवासीर है। मोर, मुर्ग़, बटेर और तीतर का गोश्त मीठा, मुफ़र्रह, ठंडक पहुंचाने वाला और जल्द हज़्म हो जाता है। यही फ़वाइद कबूतर, फ़ाख़्ता और कोयल के हैं। शिकारी परिंदों यअनी बाज़, शहबाज़ वग़ैरह का गोश्त सख़्त गर्म, तेज़ाबियत पैदा करता, अल्सर और ज़ुकाम का बाइस है और कमज़ोरी पैदा करने के साथ दिमाग़ के लिए मुज़िर है। चोपायों में बकरी, भेड़ और गाए का गोश्त रियाह को निकालता, मुक़व्वी और ख़ुश ज़ाएक़ह होता है। पानी में तैरने वाले परिंदों मसलन मुर्ग़ाबी, बगला और सारस का गोश्त अगर्चे ठंडक देता है मगर सक़ील है।

परिंदों के गोश्त का शोरबह या यख़ानी कमज़ोरी और गिज़ाई कमी का इलाज है। हिरन का गोश्त भी इसी तरह मुफीद है। इससे मक़सद का फोड़ा (मगन्दर) ठीक हो जाता है। मरीज़ों के लिए गाए का गोश्त इसलिए मुफ़ीद नहीं कि यह देर हज़्म हो जाता है। इससे डाक़्टर आशुतोश मुखर्जी यह नतीजह निकालते हैं कि एशियाए कोचक से आने वाले पुराने हिंदू गाए का गोश्त खाते थे।

वैदिक में यख़नी दवा की हैसियत रखती है। मसलन सर दर्द, आअसाबी बीमारियों में आबी परिंदों यअनी बतख़ वग़ैरह की यख़नी हंसावी घरटिया के नाम से दी जाती है। ककोतादी घरटिया बकरी की यख़नी आअसाबी कमज़ोरी के लिए और इसी ग़र्ज़ से बंदर के गोश्त की यख़नी भी दी जाती है।

वैदिक नुसख़ों में बकरी के 8 किलो गोश्त में 64 किलो पानी में 10 बोटियों के साथ पकाने का तरीक़ह तजवीज़ किया गया है। जब यह पक–पक कर चौथाई रह जाए तो छान कर इसमें दूध, मक्खन और शहद डाल कर फिर पकाया जाए यह गाढ़ा सा मुरक्कब जिस्मानी कमज़ोरियों के लिए दिया जाता है। नुसख़े की दस बोटियों में से अदरक और जौ तो मुफ़ीद है। बाक़ी की उफ़ादियत मुश्तबह है।

+ हंस का गोश्त:

जूद हज़्म है। आवाज़ को ठीक करता है। खांसी, अलसर और दिल की बीमारियों में मुफ़ीद है। गिज़ाइयत काफ़ी है।

+ सारस का गोश्त:–

आसानी से हज़्म नहीं होता।

+ सियाह मुर्ग़ाबी:
  बुख़ार, खांसी, दिक़ यरक़ान में मुफ़ीद है। क़ाबिज़ है।

+ भैंस:
  मुहर्रिक, जूद हज़्म, मुक़व्वी दिल।

+ गाए:
  जूद हज़्म है। हाज़मे को ख़राब करता है। मुक़व्वी है।

+ मगरमछ:
  कमज़ोरी को दूर करता है। अमरीका में बहुत मक़बूल है।

मुर्ग़:

अंडे की सफ़ेदी में 85 फ़ीसदी पानी, अलब्यूमन, चिकनाई, मिठास, लेसे थीन, नमकियात और चिकनाई होते हैं। ज़रदी में 30 फ़ीसदी चिकनाई, फ़ारफ़ोरस और गंधक होते हैं। छिल्का, कैल्शियम, कार्बोनेट, आयोडीन, फ़ासफ़ीट, फ़ौलाद, गंधक और फ़ास्फ़ोरस से मुरक्कब है।

पुराने डाक्टर अंडा और ब्रांडी में दारचीनी का पानी डाल कर मिक्सचर बनाकर नमूनियह और सर्दी लगने के लिए देते हैं। सख़्त उबला हुआ अंडा नुक़सान देह हो सकता है। मुर्ग़ का गोश्त मुक़व्वी, मोलिदे ख़ून, जल्द हज़्म होने वाला यरक़ान में मुफ़ीद है।

+ ख़रगोश:
  ठंडक पहुंचाता है। मेअ़दे और दिल को ताक़त देता है। बुख़ार, यरक़ान, दिक़ और बवासीर में मुफ़ीद है।

+ बकरी:
  मिठास की तरफ़ माइल मुक़व्वी गोश्त, रियाह पैदा करता है। बलग़म बढ़ाता है।

+ चिड़िया:
  मुक़व्वी, सुकून आवर गोश्त है जो दिल और मेअ़दह के लिए मुफ़ीद है।

+ मोर:
  जिनके हाथ पैर सूख जाएं इनके लिए मुफ़ीद है। बदज़ाएक़ह और सक़ील होता है।

+ तीतर:
  नक्सीर को बंद करता है। दिल को ताक़त देता है। याद्दाश्त को बेहतर बनाता है। सुअ हज़्म में मुफ़ीद है।

+ बटेर:
  क़ाबिज़, मुफ़र्रह और मुक़व्वी मेअ़दा है।

+ सरीद:
  नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गोश्त की तअरीफ़ फ़रमाते थे और इसको तमाम खानों का सरदार क़रार देते थे। इसी तरह वह रोटी को भी पसंद करते थे। इन अच्छी चीज़ों को वह एक खाने में जमअ कर लेते थे जिसे सरीद का नाम दिया गया है। इसके अज्ज़ा के बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ रिवायत फ़रमाते हैं।

كاناحب الطعام الىٰ رسول الله صلى الله عليه وسلم الثريد من الخبز، الثريد من الحيس.

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नज़दीक सबसे पसंदीदह खाना सरीद था जो कि रोटी से बनाया जाता था। या हीस से बनाया गया सरीदः)

आम तौर पर सरीद का तरीक़ह यह था कि सालन पकाकर रोटी के टुकड़े इसमें डाल दिए जाते थे। यह ढांप कर थोड़ी देर रखा जाता था। फिर खाते थे। बअ़ज़ औक़ात मक्खन या घी को गर्म करके इसके ऊपर डाला जाता था।

एक और नुसख़ा हज़रत अरवा रज़ि. बयान करते हैं कि हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि. का दस्तूर था।

انها كانت اذا مات الميت من اهلها. فاجتمع لذلك النساء ثم تفرقن الا اهلها وخاصتها امرت ببرمة من تلبينه فطبخت ثم صنعت ثريد. فصبت التلبينة عليها ثم قالت كُن منها. فاني سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول التلبينة بحمة الفوائد المريض تذهب ببعض الحزن.

(हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि. के ख़ानदान में जब कोई वफ़ात होती। और तअ़ज़ियत के लिए आने वाली ख़वातीन रुख़सत हो जातीं और फिर घर के अफ़राद और कुछ ख़ास औरतें रह जातीं तो तलबीना (जौ का दलिया) तैयार करने का हुक्म देतीं। फिर सरीद तैयार किया जाता। सरीद के ऊपर तलबीनह डाल दिया जाता। फ़रमाती थीं कि मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि तलबीना मरीज़ के जुमलह अवारिज़ के लिए मुफ़ीद और गम का बोझ उतार देता है।)

इस नुसख़े में गोश्त, रोटी, जौ का दलिया और दूध शामिल हो गया। उन्होंने इसे ख़ुसूसी तौर पर एक ऐसे मुरक्कब की शक्ल दी जो तवानाई मुहैय्या करने के साथ थकान और दिल से बोझ को उतार देता है।

हीस दर हक़ीक़त हलवे की शक्ल है। फ़तह ख़ैबर के मौक़े पर उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ि. की शादी के वलीमे के लिए हीस का हलवह तैयार किया गया। मुहद्दिसीन में कुछ का ख़याल है कि दअवते वलीमा में खजूर, पनीर और मक्खन से हाज़रीन की तवाज़ेअ की गई। दूसरे लोग बयान करते हैं कि इन सब चीज़ों को पका कर हलवह की शक्ल में पेश किया गया। इस हलवे में एक नुसख़े के मुताबिक़ पनीर की जगह जौ का आटा या पनीर और आटा दोनों शामिल किए जा सकते हैं।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजलिस में अक्सर औक़ात हाज़रीन की तवाज़े के लिए अंदर से एक बड़े पयाले में सरीद तैय्यार करके पेश किया जाता था। यह प्यालह लकड़ी का था जिसकी वुसअ़त का अंदाज़ह इस बात से लगाया जा सकता है कि इसको चार आदमी मिलकर उठाते थे। इस प्याले का ज़िक्र हज़रत अक्रास बिन ज़ुवैब यूं करते हैं।

اوتينا بحفنة كثيرة الثريد والوذر نخبطت بيدى نواحيها واكل رسول الله صلى الله عليه وسلم من بين يديه نقبض بيده اليسرىٰ علىٰ يدى اليمنىٰ ثم قال يا عكراش كل من موضع واحد فانه طعام واحد.

(ترمذی)

(हमारे पास एक बहुत बड़ा प्यालह लाया गया जिसमें बहुत ज़्यादह सरीद और बोटियां थीं और मैं अपना हाथ पयाले के हर तरफ़ घुमा कर खा रहा था कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल अपने आगे से खा रहे थे। उन्होंने अपने बाएं हाथ से मेरे दाएं हाथ को पकड़ा आर फ़रमाया कि एक अक्राश! एक जगह से खा क्यूंकि एक ही क़िस्म का खाना है।)

सरीद के वुस्त में ऊपर मक्खन गर्म करके डाला जाता था। ऐन मुम्किन है कि शोरबा में रोटी तोड़ कर डालने और इसके नर्म हो जाने के बअद इसे फिर से गर्म किया जाता हो और फिर मक्खन डाल कर ढांप दिया जाता था। ताकि मक्खन भाप से पिघल कर प्याले में फैल जाए इस बाब में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. बताते हैं कि एक मर्तबह सरीद खाने के दौरान नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

انه اتی بقصعة من ثرید فقال کلوا من جوانبها ولا تاکلوا من وسطها فان البرکة تنزل من وسطها. (ترمذی۔ابن ماجہ)

(उन्होंने सरीद का एक थाल देते हुए फ़रमाया कि इसके इतराफ़ से खाओ और दरमियान से न खाओ कि बरकत प्याले के दरमियान होती है।)

सरीद की पसंदीदगी का यह आलम था कि इसकी अहमियम के बारे में हज़रत अबू मूसा अलअशअ़री रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

فضل عائشةٌ علی النساء کفضل الثرید علیٰ سائر الطعام. (بخاری۔مسلم)

आएशह रज़ि. को ख़वातीन पर इस तरह फ़ौक़ियत हासिल है जिस तरह सरीद को हर क़िस्म के खानों पर हासिल है।)

सरीद एक मुकम्मल ख़ुराक है।

इब्नुल क़य्युम रह. इस मुरक्कब के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं कि रोटी और गोश्त का यह मिलाप बेहतरीन ग़िज़ा है क्यूंकि इसमें जिस्मानी ज़ुरूरत की तमाम चीज़ें मौजूद हैं और इसके बअद किसी की हाजत नहीं रहती। लोग इस बारे में अकसर सोचते हैं कि वह अपनी ग़िज़ाई ज़ुरयात को पूरा करने या बअ़ज़ औक़ात इज़ाफ़ी तवानाई हासिल करने के लिए क्या खाएं? इस सिलसिले में अतिब्बाए क़दीम ने माउल्लहम की सूरत में गोश्त को कशीद करके इससे जौहर हासिल करने की कोशिश की। जदीद मुशाहिदात में डाक्टर सय्यद फ़र्रुख़ हसन शाह और उलमाए तिब में हकीम कबीरुद्दीन इत्तिफ़ाक़ करते हैं कि माउल्लहम में सिर्फ़ गोश्त के नमकियात होते हैं। कशीद के अमल में लहमियात या उनके एमून्याई तरशे दाख़िल नहीं होते इसलिए माउल्लहम को तवानाई का सरचश्मह क़रार नहीं दिया जा सकता। तवानाई का ज़रियह गोश्त है। इसके साथ रोटी और जौ का इज़ाफ़ह ग़िज़ाई नुक़तए नज़र से इसे मुकम्मल और जामेअ ग़िज़ा बना देता है जो कि जिस्मानी ज़रूरयात के लिए ही नहीं बल्कि इज़ाफ़ी तवानाई का बेहतरीन ज़रियह है।

शवी–कोज़ी–सजी
BARBECUE

ज़मानए क़दीम में गोश्त पकाने की एक सूरत यह है कि पूरा जानवर या इसका कुछ हिस्सह आग पर सेंक कर खा लिया जाए। हर दौर में और इलाक़े में इसकी तरकीब मुख़्तलिफ़ रही है। मसलन यौरप में आग के ऊपर एक स्टेंडर्ड बनाकर जानवर को इसमें पिरो कर फिराया जाता था और इस तरह आग से इसकी हर सिम्त पक जाती थी। बिलोचिस्तान में जानवर को लटका कर नीचे आग जलाई जाती है। क़बाइली इलाक़े में जानवर को गढ़े में डाल कर ऊपर मिट्टी डाल, कर इसके ऊपर आग जलाकर इसको दम–पुख़्त करते हैं 1974 की इस्लामिक कान्फ्रेंस में वज़ीरे आज़म के इशाइयेह पर लाहौर के क़िले में इस्लामिक मुमालिक के सरबराहान को जो खाने पेश किए गए इनमें भुना हुआ गोश्त, बिलोची सजी और क़बाइली तरीक़े से पकाया गया था। इसके लिए छोटी उम्र का तंदरुस्त जानवर पसंद किया जाता था। सऊदी अरब में सालिम दुंबा पका कर इसे कोज़ी कहते हैं। वहां पर ऐसे–ऐसे माहिर बावर्ची हैं कि सालिम ऊंट पका लेते हैं। फिर उसके पेट में बकरे और इनके पेटों में मुर्ग़ियां, अंडे मेवे और बादाम भरे होते हैं। कुरआन मजीद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़ियाफ़त का ज़िक्र करते हुए फ़रमाता है।

ولقد جاءت رسلنا ابراهيم بالبشرىٰ قالو سلماً قال سلمٌ فمالبث ان جاء بعجلٍ حنيذ. (ھود_۶۹)

(हमारे फ़र्सतादह इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास ख़ुशख़बरी ले कर पहुंचे तो उन्होंने उनको सलाम किया। जवाब में भी सलाम हुआ। और उन्होंने महमानों के लिए एक बछड़ा फ़ौरन भून लिया।)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मुअज़्ज़िज़ महमानों की ख़ातिरदारी के लिए सालिम बछड़ा आग पर भूना और यह महमान नवाज़ी की उम्दह तरीन मिसाल थी। इसी तरह तर्मिज़ी रिवायत करते हैं कि जब मुग़ीरह बिन शोअ़बा रज़ि. रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर महमान ठहरे तो उन्होंने बकरी भून कर उनको खिलाई।

उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सलमह रज़ि. रिवायत फ़रमाती हैं।

انها قربت الیٰ رسول الله صلى الله عليه وسلم جنباً مشوياً فاكل منه، ثم قال الى الصلوٰة. وما ترضا. (ترمذی)

(मैंने रसूलल्लाहा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में बकरी का एक पहलू भून कर पेश किया। उन्होंने इसमें से नोश फ़रमाया। फिर नमाज के लिए खड़े हुए लेकिन वुज़ू नहीं किया।)

इसी बाब में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अलहरस रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं:

اكلنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم شواء فى المسجد. (ترمذی)

(हमने रसूलल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम के हमराह मस्जिद में भुना हुआ गोश्त खाया।)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़ातिरदारी और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महमान नवाज़ी से यह मालूम होता है कि जब वह किसी के लिए बेहतरीन खाने का इंतिख़ाब करते थे तो वह भुना हुआ गोश्त होता था।

भुने गोश्त की तफ़सील में जाते हुए इब्नुल क़य्युम रह. फ़रमाते हैं कि एक सूरत इसे धूप में सुखा कर तैय्यार करने की है। दूसरी में कोएलों पर भूना जाए और तीसरी में शोलों से आंच दी जाए।

इनकी तहक़ीक़ के मुताबिक़ बेहतरीन क़िस्म वह है जो कोएलों पर भूनी जाए। इस ग़र्ज़ के लिए बेहतरीन गोश्त एक साल तक की उम्र के दुंबे से हासिल होता है और इसके बअद फ़रबह बछड़ा है।

मक्का मुअज़्ज़मह में लोग सालिम दुंबह पकाने के लिए इसको तंदूर में लटका देते हैं। तंदूर में कच्चे चावलों की परात रखी होती है। गर्म होने पर गोश्त से जो पानी आग में गिरता है। वह परात में गिर कर चावलों को पकाता है। इस तरह दुंबह पकने के साथ इसी के पानी और चर्बी में चावल भी तैय्यार होते हैं। पाकिस्तान में मुर्ग़ का चरग़ा पहले तंदूर में बनाया जाता था। अब BARBECUE की मशीनों से बनता है। चूंकि तेज़ गर्माइश से गोश्त अंदर से नहीं गलता इसलिए मुर्ग़ को पछने लगाकर गलाने वाले मसालेह, दही या सिरकह लगा कर कुछ देर रख कर गोश्त नर्म कर लिया जाता है। इस ज़िम्न में अब बिजली का तंदूर या ELECTRIC OVEN ईजाद हुई। इसके बअद नई चीज़ जो अब रोज़–बरोज़ मक़बूल हो रही है वह MICROVAVE OVEN है। इसमें गर्मी की बनफ़शी शुआएं गोश्त के आरपार हो कर उसे यक्सां पकाती हैं। मग़्रिबी मुल्कों में खाने पकाने, इनको जल्द गर्म करने और चर्ग़ा तैयार करने की यह मशीन अब हर घर की ज़रूरत बन गई है।

एक हालिया तहक़ीक़ के मुताबिक़ ज़्यादह मिक़दार में गोश्त खाने या ज़्यादह पकाने से कैंसर का इम्कान बढ़ जाता है। ग़ालिबन इसीलिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़्यादह गोश्त खाने और रोज़ाना खाने को मुतअद्दि मक़ामात पर नापसंद फ़रमाया।

यख़्नी:

गोश्त को उबाल कर जो पानी हासिल होता है वह आम अलफ़ाज़ में यख़्नी है। अगर्चे सब्ज़ियों के जोशांदे को भी यख़्नी ही कहा जा सकता है। मग़्रिबी खानों में गोश्त के साथ मुख़्तलिफ़ चीज़ें मुरक्कब करके शोरबह या सूप SOUP बनाया जाता है। अगर यह ख़ालिस यख़्नी हो तो इसे CLEAR SOUP या CONSUME कहते हैं। वरनह शोरबे में क्रीम अकसर डाली जाती है। इसके अलावा दाल गोश्त का शोरबह भी मुक़व्वी चीज़ है जो MULLIGETAWANY सूप कहलाती है। चीनी यख़्नियों में खुंबी की यख़्नी और मकई आमीज़ CHICKEN CORN SOUP में मुर्ग़ी की यख़्नी के अलावह गोश्त के टुकड़े, अंडे की सफ़ेदी, मक्की का आटा भी शामिल होते हैं इन इज़ाफ़तों से यह शोरबह एक निहायत मुफ़ीद और मुक़व्वी ग़िज़ा बन जाता है।

यख़ानी बनाने का आम तरीक़ह यह है कि गोश्त के साथ लहसन और मसालेह डाल कर इनको पानी में उस वक़्त तक पकाते हैं जब तक कि वह गोश्त गल जाए। इस ग़र्ज़ के लिए ज़्यादह तौर पर गर्दन का गोश्त पसंद किया जाता है। गर्दन और पुश्त के गोश्त में मअमूल के लहमियात के अलावह ख़ून की तैयारी में काम आने वाले अनासिर भी शामिल होते हैं एक मग़रिबी नुस्ख़े के मुताबिक़ हड्डियों की यख़नी मुफ़ीद चीज़ है। इसका तरीक़ह यह है कि जोड़ बनाने वाली हड्डियों में से किसी के आख़िरी सिरे को तोड़ कर छोटे–छोटे टुकड़े कर लिए जाते हैं। फिर इन टुकड़ों में नमक और पानी डाल कर काफ़ी देर तक पकाया जाता है।

अब यह बात साबित हो चुकी है कि हड्डियों की यह यख़नी ख़ून की कमी को दूर करने का बेहतरीन नुसख़ह है। यह BONE TEA हमारे बुज़ुर्ग प्रोफ़ेसर वासती साहब को बहुत पसंद थी। और म्यू हस्पताल के बच्चा वार्ड में हर सुबह एक देग में बड़े गोश्त की हड्डियां डाल कर दो–तीन घंटे पकाने के बअद सूखा और पुराने इस्हाल में मुब्तिला बच्चों को पिलाया जाता था। यह यख़ानी फ़िलवाक़ेअ मुफ़ीद थी। हमने अय्यामे हमल के दौरान ख़ून की कमी की शिकार सैंकड़ो औरतों को हड्डियों की यख़नी तज्वीज़ की और उनकी यह कमी किसी भी दवाई के बग़ैर जाती रही।

आजकल मुर्ग़ी के पंजों से भी यख़नी तैयार की जाती है। अगर्चे अपनी उफ़ादियत के लिहाज़ से यह चोपायों की यख़नी के बराबर नहीं लेकिन इसको बेकार भी नहीं कहा जा सकता। लाहौर के एक मश्हूर होटल में लोग अरसा दराज़ से "मुर्ग़ यख़नी" के नाम से पंजों की यह यख़नी पी रहे हैं। एक मर्तबा शदीद ज़ुकाम के दौरान यह यख़नी गर्म–गर्म पी गई। यह लज़ीज़ भी थी और मुफ़ीद भी।

यख़नी बनाने के अमल में एक इज़ाफ़ह 1945 की एक नुमाइश में देखा गया। मुरादाबाद (भारत) के एक कारख़ाने ने JUGSOUP के नाम से एक अजीब बर्तन पेश किया। इसके ऊपर वाले ख़ाने में गोश्त रखा जाता है। इसके नीचे वाले बड़े ख़ाने में पानी डाल कर उसे चूल्हे पर रख दिया जाता है। गर्म होने पर पानी से भाप निकल कर ऊपर वाले इस ख़ाने के इर्द–गिर्द गर्दिश करती है जिसमे गोश्त रखा गया था। पानी या भाप बराहे रास्त गोश्त को नहीं लगते। गोश्त तक सिर्फ़ इनकी गर्मी बिलवास्ता आती है। थोड़ी देर के बअद गोश्त पानी छोड़ता है। यह गोश्त का सहीह मअनों में माउल्लहम है जिसमें कोई आमेज़िश नहीं। इस यख़नी में लहमियात और एमोनियाई तरशों की एक मअमूली मिक़दार ज़रूर पाई जाती है। यह आसानी से हज़्म हो सकता है लेकिन वह तवानाई जो गोश्त में पाई जाती है। यह किसी तौर इसका बदल नहीं हो सकता।

यख़नी पकाने में बअज़ लोग सब्ज़ियां या फल भी शामिल कर लेते हैं। इससे कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ता। सिवाए इसके कि इनमें नमक भी शामिल हो गए। यख़नी पकाते वक़्त अगर गोश्त के साथ जौ डाल दिये जाएं तो इसकी उफ़ादियत ख़ुबी और दाल वाली यख़नी के बराबर हो जाती है।

यख़नी बनाने में गोश्त के पानी में हल पज़ीर अज्ज़ाअ, एमोनियाई तिशों का कुछ हिस्सह और फ़राज़ी रौग़न बहरहाल यख़नी और सूप में शामिल होता है। किसी वजह से अगर गोश्त खाना मुमकिन न हो या मरीज़ निगलने या चबाने के क़ाबिल न हो तो ऐसे हालात में यख़नी से तवानाई बहाल करने का काम लिया जा सकता। फ़न्नी तौर पर यह कहा जा सकता है कि यख़नी गोश्त का नेअमुलबदल नहीं लेकिन इसमें हड्डियों के जौहर की मौजूदगी इसे सालन से उफ़ादियत में बेहतर बना देती है। ख़ून की कमी का इलाज हड्डियों की यख़नी से किया जा सकता है। और यह नुस्ख़ह किसी भी दवाई से ज़्यादह मुफ़ीद भी हो या नुक़सानदह भी हो सकते हैं।

माउल्लहम:

अतिब्बा की हर दौर में ख़्वाहिश रही कि मुक़व्वी ग़िज़ाओं में मौजूद ताक़त देने वाले अनासिर को मुख़ातसर करके इनसे ज़्यादा से ज़्यादा फ़ाएदह हासिल करें। गोश्त से तवानाई हासिल होती है लेकिन हर शख़्स दो सैर गोश्त रोज़ाना हज़्म नहीं कर सकता। और इतनी मिक़दार को पेट में डालने से दीगर मसाइल पैदा हो सकते हैं। गोश्त से अगर ताक़त देने वाले अज्ज़ा अलाहिदह हो सकें तो दो सैर के फ़वाइद एक तोलह से हासिल हो जाएं। जाबिर इब्ने हयान ने मालूम किया कि हर दवाई में फ़ाएदह करने वाला अंसर थोड़ी मिक़दार में होता है और बक़ायदह ग़ैर मतलूबह अज्ज़ा या फोक पर मुशतमिल होता है। इस मुफ़ीद अंसर को इसने जुज़्वे आमिल का नाम दिया। जिसे अब ACTIVE PRINCIPAL कहते हैं। अतिब्बा की कोशिश रही है कि वह गोश्त से इसका जुज़्वे आमल निकाल लें। माउल्लहम उस कोशिश की एक शक्ल है।

मुख़्तलिफ़ क़िस्म के गोश्त और पानी एक देग में डाल कर उसको नल्कियों के ज़रिए एक ख़ाली बर्तन से मिला देते हैं। जब देग के नीचे आग जलाई जाती है तो गोश्त और पानी से बुख़ारात भाप की सूरत में उड़ कर नल्कियों के ज़रिए ख़ाली बर्तन की तरफ़ जाते हैं। खाली बर्तन को ठंडे पानी में रखा हाता है। इस तरह बुख़ारात ठंडे हो कर सयाल शक्ल इख़्तियार कर लेते हैं। यह अमले कशीद DISTILLATION है। इसी तरीक़े से अर्क़ भी निकाले जाते हैं।

अतिब्बाए क़दीम ने गोश्त की उफ़ादियत में इज़ाफ़ह करने के लिए मुख़्तलिफ़ दवाएं भी देग में शामिल कीं और उस्तादाने हिक्मत ने माउल्लहम का नाम इसके साथ शामिल अदविया की मुनास्बत से रखना शुरू किया। जैसे माउल्लहम त्यूरी जो कि परिंदों के गोश्त से बना। माउल्लहम अंबरी जिसके नुस्ख़े में अंबर भी शामिल रहा। दौरे हाज़िर में तिब्ब के एक जय्यद फ़ाज़िल हकीम कबीरुद्दीन ने माउलल्लहम मुंजमिद, माउल्लहम बारिद, दो आतिशह, माउल्लहम अंबरी ब नुस्ख़ह कलां, माउल्लहम अंगूरी, माउल्लहम मको कासनी वाला, माउल्लहम चौब चीनी वाला के उनवान से मुख़्तलिफ़ नुसख़े बयान किए हैं। जिनमें से हम दो नुसख़े "क़ुराबा दीन हमदर्द" से पेश करते हैं।

माउ़ल्लहम अंबरी ब–नुस्ख़ह कलां:

आश्ना, अक़्रहिंदी, इलाएची कलां, बुरादा संदल सफ़ेद व सुर्ख़, बर्ग फ़रंजमुश्क, बहमन सफ़ेद, जावितरी, जाएफ़ल, दारचीनी, ज़रबनाद, शक़ाक़ल मिस्री, अशबा मग़रिबी, फ़ुतरासाल्योन, लौंग, कबाब चीनी, गुले सुर्ख़, मुस्तगी रूमी

में से हर एक 10 ग्राम बादर नजविया, गुले गाओ ज़बान 50 ग्राम फ़ी अदद, बालछड़ 5 ग्राम, चौब चीनी 70 ग्राम, ज़ाफ़रान 4 ग्राम, अंबर 3 ग्राम में गोश्त बकरी 600 ग्राम, गोश्त मुर्ग़ 600 ग्राम, गोश्त कबूतर 3 अदद, कंजश्क (बर) 10 अदद को 21 लीटर पानी में पका कर 10 बोतल माउल्लहम हासिल होता है।

अर्क़ माउलल्लहम मको कासनी वाला:

इसमें अज़ख़र मकी, असलुस्सोस, बर्ग गाओ ज़बान, बादआवर्द, बादरंजविया, बादियान ब्रंजासिफ़, शिकाई, ग्लोसिज़, हर एक 50 ग्राम, गुले गाओ ज़बान 25 ग्राम में बकरी का गोश्त 600 ग्राम, आब कासनी और मको 800 मिली लीटर, पानी 9 लीटर मिलाकर अर्क़ की मानिंद कशीद किया जाता है।

हकीम कबीरुद्दीन ने अपनी बयाज़े कबीर में बताया है कि माउल्लहम बनाने में गोश्त के लहमी अज्ज़ा कशीद नहीं होते इसलिए जिस चीज़ को माउलल्लहम के नाम से ख़रीदते हैं। इसमें गोश्त के मुक़व्वी अज्ज़ा मौजूद नहीं होते। अलबत्तह कुछ माअ़दनी नमक ज़रूर पाए जाते हैं या माउलल्लहम के नुसख़े में दूसरी अदवियह शामिल की जाती हैं। इनका अर्क़ शामिल हो जाता है। इस लिहाज़ से देखें तो इससे जो भी फ़ाएदह होगा वह मअ़दनी नम्कियात के असरात से होता है।

डाक्टर सय्यद फ़रख़ हसन शाह साहब ने ग़िज़ाइयत के मसले पर जदीद ज़राए से ख़ुसूसी तहक़ीक़ात की हैं। उन्होंने एक ख़ुसूसी ख़त में बयान फ़रमाया है कि माउल्लहम बनाने या गोश्त को अर्क़ की मानिंद कशीद करने में इसके मुक़व्वी अज्ज़ा यअनी लहमियात और एमूनियाई तर्शे वसूल नहीं होते, माउल्लहम में मअ़दनी नमकियात के अलावह गोश्त में मौजूद फ़राज़ी रौग़न या ESSENTIAL OIL कशीद हो कर आ जाते हैं। इसके अलावह गोश्त का निशास्ता और इज़ाफ़ी दवाओं का निशास्तह तुख़मीर हो कर आ जाते हैं। इसके अलावह गोश्त का निशासतह और इज़ाफ़ी दवाओं का निशास्तह तुख़मीर के अमल से गुज़र कर अल्कुहल में तब्दील हो जाते हैं। इस तरह माउल्लहम में मअ़दनी नमक, फ़राज़ी रौग़न और अल्कुहल पाए जाते हैं। इन्हीं की बदौलत इसमें गोश्त की ख़ुश्बू भी शामिल हो जाती है।

माउल्लहम की कैमिस्ट्री को सामने रख कर इसके फ़वाइद का अंदाज़ह लगाएं तो यह भूख बढ़ाने में मुफ़ीद होगा। पेट से रियाह के इख़राज में मददगर होगा। दिल की बीमारियों, गुर्दों की ख़राबी या इस्हाल से तंदरुस्ती के बअ़द अगर जिस्म में नम्कियात की कमी वाक़ेअ़ हुई हो तो इसका पीना मुफ़ीद है।

माउल्लहम के जिन नुसख़ों का ऊपर तज़्किरह किया गया है उनको सामने रखें तो यह एक मुक़व्वी ग़िज़ा नहीं बल्कि एक बाक़ाएदह दवाई है। जिससे वह तमाम फ़वाइद किसी क़दर हासिल हो सकते हैं जो इन मुफ़रिदात के हैं लेकिन यह गोश्त का अर्क़ बहरहाल नहीं है इसलिए अगर जिस्मानी कमज़ोरी के लिए गोश्त को इस्तेअमाल करना हो तो इसकी बेहतरीन सूरत गोश्त ही है। अलबत्ता बअ़ज़ दवाख़ाने माउल्लहम की तैयारी के दौरान देग में इसका बक़ाया, या तिलछट बतौर मुक़व्वी दवाई तज्वीज़ करते हैं जो कि दुरुस्त और मुफ़ीद है। कमज़ोरियों के लिए यख़नी बेहतरीन चीज़ है।

गोश्त पकाने का उसूलः

बुनियादी तौर पर गोश्त जानबर के अज़लात, उनको हड्डियों से मिलाने वाले रेशों ख़ून की नालियों, आअ़साब, हड्डियों और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बाफ़तों पर मुशतमिल होता है। पकाने का मक़सद यह होता है कि गोश्त नर्म हो जाए और आसानी से चबाया जा सके, इसे कितना नर्म किया जाए, यह मुआमला इलाक़ो और पसंद का है। मसलन सिंध में ज़्यादह नर्म गोश्त खाया जाता है जबकि कशमीर और अ़रब का आ़म गोश्त सख़्त होता है। यौरप में गोश्त खाने के लिए छुरी कांटा इस्तेअमाल किया जाता है जबकि नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने दांतों को मज़बूत रखने के लिए इसे नोच कर खाने की हिदायत फ़रमाई है।

पकाने के लिए गोश्त का इंतिख़ाब इस मक़सद पर मुनहसिर होता है जिसके लिए वह इस्तेअमाल किया जाए गा। जैसे कि शब देग पकाने के लिए बड़े बकरे का गोश्त पसंद किया जाता है क्यूंकि यह बंद बर्तन में रात भर पकता है। अगर वह जल्द गल जाने वाला हुआ तो शोरबे में हल हो जाएगा। यही सूरत हलीम और हरीसा में भी होती है। क्यूंकि इसमें गोश्त को गलाने के बअद अज्नास को घोटा जाता है। घर की हंडिया के लिए छोटी उम्र के बकरे का गोश्त पसंदीदा है। भेड़ का गोश्त खटाई माइल होता है और मजबूरन लिया जाता है। अलबत्तह चिकनाई के शौक़ीन या पुलाओ पकाने के लिए दुंबे का गोश्त पसंद किया जाता है।

गोश्त पकाने का आम तरीक़ह बुनियादी तौर पर चार तरीक़ों पर मुश्तमिल है। उबालना, तलना, दोनों और दम–पुख़्त करना, दम–पुख़्त करने का पुराना तरीक़ह तो यह था कि गोश्त, मसालेह और इज़ाफ़ी अशया देग में डाल कर इसका ढक्कन आटा लगाकर ऐसा कर दिया जाता था कि अंदर से भाप ख़ारिज न हो। इससे बर्तन के अंदर का दरजए हरारत बढ़ जाता है और गोश्त ज़्यादह अच्छी तरह गल जाता है। यह मक़सद अब प्रेशर कुकर से हासिल हो जाता है। जिस में अंदरूनी दबाओ को प्रेशर की ज़ुरूरत के मुताबिक़ पेश किया जा सकता है।

गोश्त के साथ कुछ पानी, प्याज़ और मसालेह डाल कर इसको कुछ देर पकाकर पानी ख़ुश्क किया जाता है। फिर इसमें घी डाल कर भूनते हैं और सब्ज़ी डाल कर दोबारह शोरबे के लिए पानी डाल कर पकाया जाता है।

दूसरी तर्कीब में घी में मसालेह और प्याज़ भून कर इसमें गोश्त डाल दिया जाता है। जब वह गल जाए तो इसमें सब्ज़ी मिला कर पानी डाल कर पकने के लिए रख दिया जाता है।

इस मसले पर डाक्टर सय्यद फ़र्रुख़ हसन शाह साहब से राए ली गई उनकी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ पहले घी डालने से गोश्त ज़्यादह देर तक घी के साथ रहता था। इससे कुछ कीम्यावी मुरक्कबात OXIDATION के अमल से बनते हैं जो गोश्त के लहमियात के साथ मिल कर इसकी गिज़ाई उफ़ादियत को ख़राब करते हैं। शाह साहब के ख़याल में घी का गोश्त के साथ ज़्यादह देर रहना उसे मुज़िरे सहत अज्ज़ा का सुराग़ मिला है। उनके ख़याल में इसे ज़्यादा देर पकाना और ज़्यादह मिक़दार में मुतावातिर गोश्त खाना कैंसर का बाइस हो सकता है।

गोश्त को अगर पानी में उबाला जाए तो इसका दरजह हरारत एक ख़ास हद से आगे नहीं जा सकता। इसलिए अक्सर अज्ज़ा महफ़ूज़ रह जाते हैं। गिज़ाइयत क़ायम रहती है। बल्कि बअज़ ऐसे मुरक्कब भी बन जाते हैं जो मुफ़ीद होते हैं और जल्द हज़्म होता है।

गोश्त को अगर बराहे रास्त फ़्राई किया जाए तो इसके बैरूनी हिस्से के लहमियात की ख़ासी मिक़दार ज़ाया हो जाती है। लेकिन अंदर वाले हिस्सों में से कुछ ऐसी चीज़ें मुरत्तब होती हैं जो मुफ़ीद हैं और बैरूनी हिस्से के नुक़सान की तलाफ़ी हो जाती है।

साइंसी तहक़ीक़ात की पाकिस्तानी कौंसिल लाहौर में किए गए तजुर्बात की रौशनी में गोश्त को घी की मौजूदगी में ज़्यादह देर पकाना नामुनासिब है। गिज़ा के उसूल के मुताबिक़ गोश्त के साथ सब्ज़ी का होना ज़ुरूरी है क्यूंकि अमले इनहज़ाम के दौरान गोश्त का अकसर हिस्सह हज़्म हो जाता है और आंतों के लिए जिस्म से बाहर निकालने के लिए कुछ भी बाक़ी नहीं बचता। गोश्त में जिन गिज़ाई अनासिर और ख़ास तौर पर विटामिन की कमी होती है, उनसे मसाइल पैदा हो जाते हैं। मुसलसल गोश्त खाने से सहत ख़राब, क़ब्ज़ और कमज़ोरी हो जाते हैं। जो सब्ज़ी न खाना चाहें वह फल इस्तेअमाल करें। फलों के बारे में हमारे यहां ग़लत मफ़रूज़ात की कमी नहीं। ऐसे लोग कसरत से देखे हैं जो सुबह के नाश्ते में ज़रूरी लहमियात पर तवज्जह देने की बजाए फल खाते हैं एक साहब बड़ा सा सेब ले कर रात शबनम में रखते हैं। सुबह इसे हाथ में लेकर बाग़ में सैर करते और वापसी में इस उम्मीद पर खाते हैं कि वह तवानाई देगा एक ग़लत मस्ल मशहूर है।

AN APPLE A DAY KEEPS DOCTOR AWAY

सेब में लहमियात और चिकनाई नहीं होते। चंद विटामिन और मिठास के अलावह इसमें अहमियत का कोई गिज़ाई अंसर नहीं होता। प्रोफ़ेसर अब्दुलहमीद मलिक मरहूम फ़रमाया करते थे, तवानाई मुहैय्या करने में शलगम को सेब पर फ़ौक़ियत हासिल है। गोश्त की माअमूली मिक़दार और सब्ज़ियां मिल कर एक जामे मुफ़ीद और मुकम्मल गिज़ा बनते हैं जिसकी बहतरीन मिसाल "मनो सलवा" है। जब ख़ुदा तआला ने ख़ुद गिज़ा का नुस्ख़ा मुरत्तब किया तो इसे बिलाशुबह हर तरह से जामे और मुकम्मल होना था। इसमें मुख़तलिफ़ क़िस्म की सब्ज़ियां और परिंदों के गोश्त शामिल थे। परिंदों का गोश्त चोपायों से अफ़ज़ल है। क्यूंकि मोर के सिवा इसका रेशह मोटा नहीं होता। इसके रेशों के दर्मियान चर्बी नहीं होती। परिंदों की तमाम चर्बी खाल के साथ या पेट के अंदर होती है जिससे आसानी से अलाहिदह करके ख़ुश्क गोश्त हासिल किया जा सकता है इसलिए यह चोपायों से अफ़ज़ल है। जानवरों से हासिल होने वाली चर्बी, दिल, ख़ून की नालियों और पेट के अवारिज़ का बाइस हो सकती है। हाल ही में कुछ मुरक्कब गिज़ाओं में मौजूद गिज़ाई अनासिर का तज्ज़ियह डाक्टर फ़रख़ हसन शाह साहब ने किया है इनमें से चंद चीदह-चीदह गिज़ाओं का मुवाज़नह पेशे ख़िदमत है।

	लहमियात	चिकनाई	निशास्ता	हरारत के हरारे	कैलशियम	फास्फोरस	फौलाद	विटामिन बी	विटामिन सी
साग गोश्त	17 7	20.0	24 5	349	122	56	9 0	10	7
आलू मेथी	18.3	12.4	8.6	219	650	94	5 0	80	17
मटर आलू गोश्त	12.4	19.4	36.5	370	36	56	1 0		-
मोंगरा गोश्त	18.3	25.1	20.7	382	60	45	1.5	-	-
मटर गोश्त	7.7	11.5	4.9	154	14	80	3 0	60	3
पसंदे	15.5	11.1	6.4	188	-	-	-	-	-
नरगिसी कोफ्ता	30.6	7.8	5.2	213	57	247	3.0	100	-
शामी कबाब	-	18.8	15.5	264	79	129	20.0	12	2
गोभी गोश्त	7.5	6.5	3.6	13	110	218	1.1	-	-
गाजर गोश्त	16.4	25.2	32.8	424	-	-	-	-	-
गोभी गोश्त	18.4	30.8	19.6	429	110	218	1.1	-	-
चुकंदर गोश्त	9.6	8.8	5.4	139	164	92	1.0	-	-
दाल चना गोश्त	18.8	13.0	12.3	201	44	95	6 0	15	9
करेला गोश्त	12.9	12.6	4.3	182	64	57	2 0	-	-
कद्दू गोश्त	17.4	19.9	16.1	309	27	69	2.0	17	25
फलियां गोश्त	10.0	15.0	9.9	215	39	150	2.0	-	28
अरवी गोश्त खुश्क	27.6	20.4	45.8	477	66	54	10 0	12	15

जानवरों के मुख़तलिफ़ आअज़ा का जाएज़ह लेने पर मअलूम हुआ है कि फ़ौलाद की सबसे ज़्यादह मिक़दार तिल्ली में और इसके बअद कलेजी में होती है। जस्त फेफड़ों में, तांबा गुर्दों और दिल में होता है।

गोश्त को ज़्यादह देर पकाने और इसकी ग़िज़ाइयत से भरपूर इस्तिफ़ादह करने के लिए हरीसा और हलीम और शब देग हैं। अबू नईम, रुफ़हानी ने हरीसह में तवानाई का तज़किरह एक हदीस की सूरत में किया है। जिनकी सक़ाहत पर मुहद्दिसीन मुश्तबह हैं। हरीसह में हड्डी के बग़ैर गोश्त जौ के साथ ख़ूब पकाने के बाद इतना घोटते हैं कि वह लेसदार हो जाता है। इसे खाते वक़्त घी में तल लिया जाता हैं इसके बरअक्स हलीम में इस तरह के गोश्त में गंदम, दाल, चावल, सियाह लोबियह डाल कर घोटा जाता है। फिर मसालेह डाले जाते हैं। कशमीर में ब्याह शादियों पर एक खाना "गश्ताबह" पकाया जाता है जिसमें कच्चे गोश्त को ओखली में चार पांच घंटे इतना कूटते हैं कि इसमें कोई रेशह या दानह न रहे यह गोश्त लेस पकड़ कर मुलायम हो जाता है। जब उंगली से मलने पर इसमें कोई रेशह या दानह महसूस न हो तो इसमें मसालेह डाल कर निचोड़ते हैं और आम की शक्ल के गोले बनाकर तल कर सख़्त किए जाते हैं। फिर इनका सालन बनाया जाता है जिसमें पानी की बजाए दूध डाला जाता है यह पकवान अपनी ग़िज़ाइयत के लिहाज़ से बड़ा मुफ़ीद है। मगर मुश्किल यह हैं कि इसे पकाने में कम–अज़–कम पंद्रह घंटे लगते हैं। इसका ज़ाएक़ह बिल्कुल भुने हुए गुर्दों जैसा होता है।

बाज़ार में मिलने वाले हरीसह और हलीम के जरासीमी तज़्ये पर इसमें

अनवाओ अक़साम के जरासीम, तुफ़ैली कीड़े, ग़िलाज़त और गंदमी की क़िस्में काफ़ी मिक़दार में मिलती हैं इसलिए इनको खाना सेहत को ख़तरे में डालने वाली बात है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गोश्त पसंद था। उन्होंने इसकी तारीफ़ फ़रमाई। इसे मुफ़ीद क़रार दिया। यह गोश्त की कैमिस्ट्री और इस्तेमाल की सूरतों का सरसरी जाएज़ह और इस अम्र का सबूत है कि उनकी ज़बाने ग्रामी से जब कोई इरशाद सादर होता है तो वह ठोस हक़ीक़त है और इन पर ईमान रखना दुनिया में भी फ़वाइद से लबरेज़ है।

मछली......हूत-समक

FISHES-PISCES

मछली के साथ इन्सानों की दिलचस्पी तक़रीबन उसी दिन से क़ायम है। जब से इनसान ज़मीन पर बाक़ाएदह आबाद हुआ और उसने यहां की चीज़ों को अपनी ज़ुरूरयात के लिए इस्तेअमाल करना सीखा। अंदाज़ह लगाया गया है कि ज़मीन पर मछली का वजूद पिछले 45 करोड़ साल से मौजूद है। माहिरीन हयातियात ने जानवरों को दो अहम क़िस्मों में तक़सीम किया है। एक वह जानवर जो मौसमों को बर्दाश्त करने की एहलियत रखते हैं जैसे कि इन्सान और चौपाए। गर्दो–नवाह का मौसम ख़ुवाह ज़्यादह गर्म हो या ठंडा। उनके अज्साम अपने दरजए हरारत को एक ख़ास हद तक क़ायम रख सकते हैं जबकि दूसरी क़िस्म के हैवानात मौस्मी तग़य्युरात का मुक़ाबलह नहीं कर सकते। जैसे कि मुर्ग़ाबी गर्मी बर्दाश्त नहीं कर सकती। अक्सर कीड़े मकोड़े सर्दी के मौसम में छुप जाते हैं। और जिनको मुनासिब जगह न मिले वह ख़त्म हो जाते हैं। मछली उन जानवरों में से है जो मौस्मी तग़य्युरात का मुक़ाबलह नहीं कर सकती। इस गिरोह को इस्तिलाहन GOLD BLOODED ANIMALS कहते हैं।

इन्सानों की अब तक मछली से दिल्चस्पी ग़िज़ा के तौर पर थी। समंद्रों, दरयाओं और झीलों के क़रीब रहने वाले माअमूली कोशिश से मछलियां पकड़ कर अपने लिए एक अच्छी और मुनासिब ग़िज़ा मुफ़्त हासिल करते रहे हैं। बुनियादी तौर पर मछली का जिस्म लम्बा और चौड़ाई और मोटाई कम, जिस्म के दरमियान रीढ़ की हड्डी और जिस्म के दोनों सिरे गाओदुम होते हैं। लेकिन पाम्फ़्रेट की शक्ल बिल्कुल थाली की मानिंद होती है, अगर्चेह सामने की तरफ़ इसका मुंह और पीछे दुम होती है मगर यह दोनों भी इस ख़ूबसूरती से नस्ब हैं कि इसकी गोलाई ज़्यादह तौर मुतास्सिर नहीं होती।

मछलियों की जिसामत, शक्ल सूरत, नस्लकशी, आदात बल्कि सांस लेने का तरीक़ा हर क़िस्म और इलाक़े में मुख़्तलिफ़ है। एक आम मछली सांस लेने के लिए हमःवक़्त मुंह से पानी पीती और गलफड़ों के रासते मुसलसल मुंह से बाहर निकालती रहती है। इस अमल के दौरान वह पानी में हल शुदह ऑक्सीजन अपने लिए निकाल लेती है। ज़रूरत के मुताबिक़ ऑक्सीजन हासिल करने के

लिए इसे मुसलसल पानी लेना और निकालना पड़ता है। बल्कि वह यह अमल नींद के दौरान भी जारी रखती है।

लेकिन कीचड़ में रहने वाली डोला मछली के एक तरफ़ गलफड़े होते हैं। और दूसरी तरफ़ मैंडक की मानिंद एक फेफड़ा होता है। इस आधा तीतर और आधा बटेर वाली साख़्त के बाइस वह ज़्यादह देर पानी के अंदर नहीं रह सकती। क्यूंकि इसका एक गलफड़ा निस्फ़ सलाहियत की बिना पर ज़्यादह अरसे के लिए कारआमद नहीं रह सकता और अगर वह पानी से बाहर रहना चाहे तो इसका एक फेफड़ा ज़्यादह देर तक साथ नहीं दे सकता।

आम मछली ज़्यादह ऑक्सीजन में ज़िंदा नहीं रह सकती। इसलिए जब वह पानी से बाहल निकलती है तो फ़ौरन ही दम घुटने से हलाक हो जाती है जबकि डोला मछली पानी से बाहर काफ़ी देर ज़िंदह रह सकती है।

व्हील मछली को उलमा हयातियात मछली की बजाए गाए क़रार देते हैं। बड़ी क़िस्म की व्हील बरफ़ानी समंदरों में रहती और सांस लेने के लिए हर आधे घंटे के बअद पानी की सतह के ऊपर आजाती है। ऊपर आकर वह ताज़ा हवा की एक कसीर मिक़दार जिस्म में ज़ख़ीरह कर लेती है। यह ज़ख़ीरह इसकी आध घंटे की ज़ुरूरयात के लिए काफ़ी होता है। इसके बाद वह ज़ख़ीरह लेने ऊपर आती है।

अक्सर मछलियों के पेट में फ़ानूस की शक्ल का एक ग़ुब्बारह होता है जिसे SWIM BLADDER कहते हैं। मछली इसमें हवा का ज़ख़ीरह कर सकती है और यही हवा इसके जिस्म को पानी के ऊपर उठा कर तैरने में भी मददगार होती है। ऐसी मछलियां भी है जिनके फेफड़े हैं। मगरमछ, कछुवा और मैंडक पानी में भी इसी इत्मीनान से रहते हैं जिस इत्मीनान के साथ वह ख़ुश्की पर रहते हैं। अक्सर मछलियां अंडे देती हैं। अंडे लातअदाद होते हैं। अगर तमाम अंडों से बच्चे बरामद हो सकें तो पूरा दरया दो-चार मछलियों की औलाद से ही भर जाए। दूसरे जानवर उनके अंडो को खा जाते हैं। कॉड मछली में तो अजीब बात यह है कि जब तक अंडे से बच्चे न निकलें। नर इनको अपने मुंह में रखे रहता है। इस वजह से वह पूरा अरसह खाने पीने के क़ाबिल नहीं रहता और औलाद की ख़ातिर फ़ाक़हकशी करता है। समंदर के दूसरे जानवर अंडों और इनसे निकलने वाले बच्चों को खाने के शौक़ीन होते हैं। हमारे मुल्क में मछलियों की नस्लकशी अप्रैल से जून तक होती है जबकि चीनी मछलियों की जून से अगस्त तक। इस दौरान मछली को पकड़ना इसकी आइंदा नस्ल को तबाह करने वाली बात है और ज़ुल्म है।

इत्तिफ़ाक़ से इस ज़माने में मछली के गोश्त से एक ख़ास क़िस्म की बदबू भी आती है। हमारे मुल्क में मशहूर है कि अंग्रेज़ी के जिस महीने के नाम में लफ़्ज़ "र" न हो उस महीने में मछली न खाई जाए जैसे कि मई, जून, जोलाई और अगस्त। जबकि सितम्बर, अक्तूबर, नोम्बर, दिसम्बर, जनवरी, फ़रवरी, मार्च और अप्रैल में मछली खाना दुरुस्त है। इत्तिफ़ाक़ से अप्रैल के अलावह यह कहावत मछलियों की अफ़ज़ाइशे नस्ल के प्रोग्राम को सामने रख कर दुरुस्त मअलूम

होती है। तौरेत मुक़द्दस ने इन्सान की ज़मीन पर आबादकारी और सहूलतों के सिलसिले में फ़रमाया।

......"फिर ख़ुदाने कहा कि हम इन्सानों को अपनी सूरत और शबीह की मानिंद बनाएं। और वह समंदर की मछलियों और आस्मान के परिंदों और चोपायों और तमाम ज़मीन और सब जानदारों पर जो ज़मीन पर रेंगते हैं, इख़्तियार रखें" ...... (पैदाइश 1:29)

तूफ़ाने नूह के बाद जब दुनिया की तमाम आबादी ख़त्म हो गई और चंद ईमानदार बाक़ी रह गए, उनको आइंदह के लिए बेहतरीन सहूलतें अता की गईं और इनको फ़रमायाः

......"और तमाम कीड़े जिनसे ज़मीन भरी पड़ी और समंदर की कुल मछलियां तुम्हारे हाथ में की गईं ......(पैदाइश 9:2.3)

यह तो तारीख़ का इब्तिदाई दौर है। ग़ालिबन नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम समंदर के क़रीब रहती होगी। कुरआन मजीद ने दरिया में रहने वाली और समंदर की मछलियों को अलाहिदह बयान फ़रमाया है।

ومایستوی البحران،هذا عذبٌ فراتٌ سائغ شرابه وهذا ملح اجاج. ومن كلّ
تاكلون لحماً طريًا و تستخرجون حلية تلبسونها...... (فاطر:١٢)

(पानी के दो ज़ख़ीरे यकसां नहीं हैं। एक तरफ़ दरिया में मीठा पानी है जिससे कि प्यास बुझती है और पीने में ख़ुशगवार है और दूसरा ऐसा बुरा नमकीन है कि हलक़ को छील दे लेकिन इन दोनों आबी ज़रियों से हमेशा ताज़ह गोश्त हासिल होता और इससे आबदार मोती निकलते हैं जिनको तुम ज़ेवर बनाकर पहनते हो। अब जबकि हम हयातियात के बारे में ज़्यादह मअलूमात रखते हैं, इस नतीजे पर पहुंचे है कि मछलियों की हज़ारों क़िस्में हैं। यह क़िस्में आबो हवा। समंदर या दूसरे पानियों की माहियत के मुताबिक़ बदलती रहती हैं और इनके ज़ाएक़े भी जगह के मुताबिक़ होते हैं। मसलन नदकारनी की तशरीह के मुताबिक़: दरयाई मछली ज़ाएक़ेह में मिठास की तरफ़ माइल, सुफ़रा को बढ़ाती, सक़ील होती और इससे पाख़ाना की मिक़दार में इज़ाफ़ह होता है।

कम गहरे पानी की मछली मीठी लेकिन सुफ़रा को बढ़ाती है।

तालाब और जोहड़ की मछली लज़ीज़ और मुफ़ीद होती है। बंगला देश में जहां समंदर और दरया क़रीब नहीं होते, लोग घरों के क़रीब ख़ुराक के लिए मछलियां पालते हैं।

बड़ी झीलों की मछलियां सक़ील होती हैं।

चश्मों के पानी की मछलियां तासीर में झीलों की मछलियों की तरह होती हैं, कुएं की मछली मुफ़ीद नहीं होती।

इन उमूमी फ़ाएदे के बअद नदकारनी हर क़िस्म की मछली को खाने का मौसम मुतअय्यन करता है। कुएं की मछली मौसम सर्मा के शुरू में खाई जाए। जोहड़ों की मछलियां मौसमे सरमा के आख़िर में। दरयाओं की मछली मौसमे बहार में। जोहड़ों और तालाबों की मछलियां गर्मी के मौसम में, झीलों की मछली बरसात में और चश्मों की मछली ख़िज़ां में ज़्यादा मुफ़ीद होती है।

मअलूम होता है कि नदकारनी के यह मुशाहिदात किसी साइंसी आज़माइश के बाद नहीं बल्कि उसने मग़रिबी घाट के लोगों और वैदों से सुनी सुनाई पर मुरत्तब क़िए हैं। वरनह पाकिस्तान और शिमाली भारत में इस क़िस्म की तक़सीम और मुशाहिदात हुकमा को भी मअलूम नहीं।

क़ुरआन मजीद ने मछलियों की क़िसमों से क़तअनज़र समंदरी हैवानात को इंसानी ख़ुराक के लिए दुरुस्त क़रार दिया है।

احل لکم صید البحر وطعامهٗ...... (المائدہ:۹۶)

(तुम्हारे लिए समंदर के शिकार का खाना हलाल कर दिया गया)

इस आयत की अमली तशरीह और दीगर मसाइल में मुख़तलिफ़ मकातिबे फ़िक्र में इख़्तिलाफ़ है। पानी के तमाम जानवर हलाल हैं मगर नबी. सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुसूसी तौर पर मैंडक को मारने से मनअ फ़रमाया। जिससे यह सनद ली जा सकती है कि खाने की ग़र्ज़ से भी हलाक या ज़िबह करना नाजाइज़ हो गया। शाफ़ई मसलक के लोग इस के बावजूद मैंडक खाते हैं।

मछलियों के बारे में एक अहम एतिराज़ शीआ फ़िक़ह में है। इस नुक़तए नज़र के मुताबिक़ जिन मछिलयों के ऊपर किरन या छिलके न हों इनका खाना नाजाइज़ है। असना अशरी अक़ीदे में मक्खी और इसकी शक्ल की दूसरी मछिलयां नहीं खाई जातीं। मसअले की तहक़ीक़ के सिलसिले में मौलाना सय्यद अबुलहसन नक़वी से रुजूअ किया गया। उनकी राए में किरन वाली मछली की खाल उतारनी ज़रूरी है और झींगा जाइज़ है। क्यूंकि इसके ऊपर एक अलाहिदा छिलका है जिसे पकाने से पहले उतार दिया जाता है। इस्लाम की बुनियादी तअलीमात के मुताबिक़ किसी भी जानवर को खाने से पहले ज़िबह करना ज़रूरी है। लेकिन मछली के बारे में सूरतेहाल मुख़तलिफ़ है।

हज़रत अब्दुल्लह बिन उमर रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया:

احلّت لنا میتتان ودمان. السمک والجراد. والکبد والطحال......

(ابن ماجہ۔ مسند احمد)

(हमारे लिए मछली और टिड्डी का मुर्दह हलाल कर दिया गया और हम दो ख़ून यअनी कलेजी और तिल्ली खा सकते हैं।)

तौरेत मुक़द्दस में मछलियों का ज़िक्र मुतअद्दिद मक़ामात पर मुख़तलिफ़ सूरतों में बार–बार आया है। जब बनी इस्राईल को एक मर्तबह सज़ा दी गई तो दरया की तमाम मछलियां मर गईं। हबक़ूक़ में ख़ुदा तआला की क़ुदरत के ज़िक्र में मछलियों और कीड़ों मकोड़ों की पैदाइश का बयान किया गया।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मछली बहुत पसंद थी और इनके मुअज़्ज़िज़ हवारियों में माहीगीरी का पेशह करने वाले असहाब ज़्यादह थे। इंजील मुक़द्दस में इनके मोअजज़ाते नबुव्वत के ज़िम्न में एक वाक़िआ मज़कूर है। जब इनके यहां महमानों की तअदाद ज़्यादह थी और ख़ुराक कम।

......फिर इसने पांच रोटियां और दो मछलियां लीं और आस्मान की तरफ़ देख कर बरकत दी। और रोटियां तोड़ कर शागिर्दों को दीं.

' और शागिर्दों ने लोगों को और सब खा कर सैर हो गए......

(मती 14:19:20)

इसी तरह मुरक़्क़स की इंजील के बाब 8 में मछलियां और रोटी तक़सीम करने की तफ़सील ज़रा मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में बयान हुईं। अपनी इंजील में लूक़ा सलीब से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सहीह व सालिम उतरने के बअद इनकी तशरीफ़ आवरी का हाल बयान करते हैं।

....तो इसने उनसे कहा, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है। उन्होंने इसे भुनी हुई मछली का क़तला दिया। इसने इनके रू–ब–रू खाया......

(लूक़ा 43 ता 24:41)

इस तशरीफ़ आवरी को यूहन्ना इन अलफ़ाज़ में बयान करते हैं।

......उन्होंने कोइलों की आग और इस पर मछली रखी हुई और रोटी देखी, यसूअ़ ने उनसे कहा कि जो मछलियां तुमने अभी पकड़ी हैं उनमें से कुछ लाओ...... (यूहन्न 21:9:10)

हज़रत यसूअ़ ने जो मछलियां खाने के लिए पसंद फ़रमाईं वह ताज़ह थीं। क्यूंकि मछली अगर बासी हो जाए तो इसमें सड़ांद पैदा हो जाती है और इसको खाना सेहत के लिए नुक़सान दह हो सकता है। इसीलिए क़ुरआन मजीद ने भी खाने के लिए जिस बेहतरीन ग़िज़ा को पसंद फ़रमाया: वह

ومن كلّ تاكلون لحماً طرياً

इत्तिफ़ाक़ से बअ़ज़ अफ़रीक़ी और शिरक़ुल हिंद के इलाक़ों में बासी बल्कि सड़ांद वाली मछली खाने का रिवाज है। यह लोग मछली का अचार भी डालते हैं तो इससे बदबू आती है।

मदीनह मुनव्वरा के हस्पताल में एक शख़्स डाक्टर के पास शिकायत ले कर आया कि बाज़ार में एक आदमी गंदी मछली फ़रोख़्त कर रहा है। चुनांचे सेहते आम्मह का एक मामूर मछली वाले को पकड़ने गया। जब वह माही फ़रोश हस्पताल में दाख़िल हुआ तो बदबू दूर से इसकी आमद की इत्तलाअ़ दे रही थी। अभी इस को लअ़न--तअ़न की जा रही थी कि साथ वाले कमरे से एक मिस्री डाक्टर शोर मचाता आ गया। "वाह वाह, क्या ख़ूबसूरत पकी हुई मछली है।" हम लोग मछली वाले को सज़ा देने का फ़ैसला कर रहे थे कि एक फ़ाज़िल तबीब इसे अपने खाने के लिए न सिर्फ़ यह कि पसंद करने लगे बल्कि पूरी मछली ख़रीद ली। इनको बताया गया कि इसे खाने से कुछ लोग बीमार पड़ चुके हैं लेकिन वह इस क़िस्म की गुफ़्तगू पर तवज्जह देने को तैय्यार न थे।

बाद में देखा गया कि मिस्री मछली को नमक लगा कर लकड़ी के कनस्तरों में कई दिन पड़ा रहने देते हैं। फिर इसमें बदबू निकलती है, फिर कीड़े चलने लगते हैं। इन असहाब का कहना है कि मछली इस वक़्त सहीह मअनों में खाने के लिए तैय्यार होती है...... गोश्त ख़ुवाह किसी क़िस्म का हो, बासी होने पर इसमें PTOMAINE नामी कीम्यावी अन्सर पैदा होता है जो FOOD POISONING

का बाइस होता है। यह बीमारी अभी तक लाइलाज है। इससे मरने वालों की तादाद साठ फ़ीसदी के लग–भग होती है।

पाकिस्तान की मछलियां:

दरयाओं में रौहू , महाशीर, थैला, मोरी छिलके वाली हैं, बग़ैर छिलके के मुल्ही खगा, सिंघाड़ा, एल, सुर्मई और ट्राउट हैं इनमें से हर एक का ज़ाएक़ा और इनमें कांटों की तअदाद मुख़्तलिफ़ होती है। इसलिए बअ़ज़ लोगों की पसंद में ज़ाएक़ेह के अलावा इनें कांटों की तक़सीम बल्कि पकाने का तरीक़ह भी है। लाहौर के पुराने लोग खगा मछली का शोरबा बड़े शौक़ से खाते हैं। बल्कि तल कर खाने वाले रौहू को पसंद करते हैं। मछली के कबाब बनाने के लिए भी इंतिख़ाब मुख़्तलिफ़ होते हैं।

बअ़ज़ समंदरी मछलियां दरयाओं के दहानों से दाख़िल होकर इनमें दूर तक चली जाती हैं। जैसा कि सिंध की पल्ला मछली। यह बहीरए अ़रब के खारी पानी से निकल कर दरयाए सिंध में दाख़िल हो कर गुलाम मुहम्मद बेराज तक चली जाती है। कोटरी, हैदराबाद और सिख्खर के लोगों में पल्ला मछली का बड़ा शौक़ है। ख़याल किया जाता है कि इसे समंदर में अपनी आइंदह नसल महफ़ूज़ नज़र नहीं आती। इसलिए वह अफ़ज़ाइशे नस्ल के लिए दरया के सुस्त रफ़्तार पानी में आती है। जहां इसके फ़ितरी दुश्मनों की तादाद बड़ी कम होती है। कराची के क़रीब समंदर में शाक और व्हील मछलियों की मौजूदगी अकसर मछलियों के लिए मौत का पैग़ाम बन जाती है।

समंदर से हासिल होने वाली मछलियां तक़रीबन वहीं हैं जो दूसरे गर्म मुमालिक में पाई जाती हैं। अलबत्तह पाकिस्तानी साहिलों से झींगे की उम्दा अक़साम हासिल होती हैं जो बरआमद भी की जाती हैं।

घरों में ख़ूबसूरती के लिए मछलियां पालने का शौक़ बढ़ रहा है। इनमें चीन से दरआमदा सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प, कामन कार्प रंग–बिरंगी होने की वजह से बड़ी मक़बूल हैं। हाल ही में अफ़रीक़ह से एक रंगीन मछली टीलापिया दरामद की गई है। चूंकि यह हजम और जिसामत में बढ़ जाती है। इसलिए खाने का रिवाज भी हो रहा है।

जिस तरह बंगलह देश में लोग ज़ाती ज़रूरत के लिए घरों के पास जोहड़ों और तालाबों में मछलियां पालते हैं। इसी तरह पाकिस्तान में माही परवरी के महकमे की कोशिशों से लोग बंजर ज़मीनों में तालाब बनाकर मछलियां परवरिश कर रहे हैं। इस ग़र्ज़ के लिए कोऑपरेटिव बैंकों से इनको आसान शराइत पर क़र्ज़ों की सहूलत हासिल है। अब ज़्यादह से ज़्यादह लोग मछली की उमूमी दिलकशी इसकी अरज़ां क़ीमत होती है। लेकिन आजकल इसकी क़ीमत इतनी ज़्यादह हो गई है कि दरयाओं और समुंदरों से दूर रहने वालों के लिए इस में किफ़ायत की दिलकशी बाक़ी नहीं रही। अलबत्तह छिलके के बग़ैर वाली सिंघाड़ा और मुल्ही काफ़ी सस्ती होती हैं। क्यूंकि इनको फ़िक़ह जअ़फ़रया के मानने वाले वैसे ही खाना पसंद नहीं करते। जबकि दूसरे लोगों को इनका ज़ाएक़ह पसंद नहीं होता। कुछ समंदरी अक़साम को छोड़ कर यह हक़ीक़त है कि छिलके

यअ़नी किरन के बग़ैर वाली मछलियां बदज़ाएक़ह होती हैं और इनमें वह लज़्ज़त नहीं होती। जो किरन वाली मछलियों में पाई जाती है। बल्कि सिंघाड़ा और मलही को ज़्यादह तौर पर होटलों वाले ख़रीदते हैं ताकि कबाब या फ़िंगर फ़िश बनाएं।

कुरआन मजीद में मछली:—

बनी इस्राईल को इनकी मुसलसल शरारतों की वजह से यह सज़ा दी गई कि वह हफ़्ते के दिन मछलियां न पकड़ा करें।

وسئلهم عن القرية التی كانت حاضرة البحر اذ يعدون فی السبت، اذ تاتيهم حيتانهم يوم سبتهم شرّعاً. ويوم لايسبتونلاتاتيهم كذلک تبلوهم بما كانو يفسقون...... (الاعراف÷۱۶۳)

(इनसे पूछो इस बस्ती का हाल जो समुंदर के किनारे आबाद थीं और वह जब हफ़्ते की क़दग़न के बारे में अपनी हुदूद से तजावुज़ करने लगे (इनकी आज़माइश इस तरह की गई कि) वह देखते कि हफ़्ते वाले दिन (जब वह मछलियां पकड़ नहीं सकते) तो पानी में मछलियां ख़ूब तैरती हुई नज़र आतीं। लेकिन बाक़ी दिनों में कोई मछली नज़र न आती। यह ऐसे नाफ़रमानों की आज़माइश थी)

यह क़ौम अपनी ख़बासत में लासानी थी। पैग़म्बरों को झुठलाना, क़त्ल करना, ख़ुदा से कज बहसी करना और शिर्क उनकी रोज़मर्रा की आदात थीं। सज़ा के तौर पर उन पर क़दग़न लगाई गई कि वह हफ़्तह वाले दिन मछलियां न पकड़ा करें। उनकी हिर्स को हवा देने के लिए क़ुदरत ने मछलियों से कहा कि वह हफ़्ते वाले दिन पानी की सतह पर आकर अपनी अददी कसरत का मज़ाहिरह करें। लेकिन जब वह बाक़ी छे दिन पकड़ने जाते तो कोई मछली नज़र न आती वह इस आज़माइश में सब्र का दामन छोड़ बैठे और अज़ाब के मुस्तहिक़ हुए।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हिदायत की गई कि वह मर्दे हक़ की मुलाक़ात के सफ़र में अपना दोपहर का खाना भुनी हुई मछली की सूरत में ले कर जाएं। और समुंदर के किनारे—किनारे सफ़र करें। जिस जगह इनके तोशेदान में रखी हुई मछली फुदक कर समुंदर में चली जाए, वही जगह इस बर्गुज़ीदह बंदे से मुलाक़ात की होगी।

فلما بلغا مجمع بينهما نسيا حوتهما فاتخذ سبيله فی البحر سرباً. فلما جاوزا قال لفتٰه اٰتنا غدائنا لقد لقينا من سفرنا هذانصباً. قال ارئيت اذاوينا الی الصخرة فانی نسيت الحوت. ومآانسٰنيه الاالشيطٰن ان اذكره واتخذ سبيله فی البحر عجباً. (الكهف۶۳_۶۱)

(हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लंच की इस मछली के बारे में हमारे उलमा किराम के दरमियान मुद्दतों बहस रही, कुछ साहिबों को ख़याल था कि इस मछली को पकाने के बाद नमक लगाया गया था और कुछ बुज़ुर्ग नमक की आलूदगी के मुन्किर थे।

कुरआन मजीद ने तीसरा अहम तज़किरह हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के सिलसिले में किया है। यह जब अपनी क़ौम को हिदायत का रास्ता दिखाने में मायूस हो गए और लोगों की तरफ़ से उनके साथ बदतमीज़ी का मज़ाहिरा मुसलसल जारी रहा, तो उन्होंने तंग आकर राहे फ़रार इख़्तियार करने का फ़ैसला कर लिया।

भागने के लिए उन्होंने समुंदर का सफ़र पसंद किया। कश्ती अपने सफ़र के दौरान तूफ़ान में फंस गई और ऐसा मअलूम होने लगा कि अब यह डूब जाने को है। मल्लाहों ने क़याफ़ा लगाया कि कोई ग़ुलाम अपने आक़ा से भाग कर हमारी कश्ती में सवार है। इसलिए समुंदर नाराज़ है। उन्होंने तमाम मुसाफ़िरों के नाम लिख कर कुरआ डाला जो हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के नाम निकला। कश्ती से गुनाह का बोझ उतारने के लिए इनको उठाकर समंदर में फैंक दिया गया। जूंही यह गिरे, एक बड़ी मछली ने इनको निगल लिया। मुम्किन है कि यह मछली व्हील के अक़साम में से हो। इसके पेट में जाकर उन्होंने ख़ुदा के हुज़ूर बार–बार फ़र्याद की और अपनी ग़लती का एतिराफ़ करते हुए मुआफ़ी के तलबगार हुए। कुछ मुद्दत के बाद उनके फ़रार का जुर्म मुआफ़ हुआ और मछली ने उनको किनारे पर उगल दिया। हब्स, फ़ाक़ह कशी और निदामत की वजह से शदीद कमज़ोरी का शिकार थे। इनको कद्दू की बेल की ठंडी छाओं में पनाह मिली। और एक हिरनी इनको आकर दूध पिलाने लगी। इस तरह वह तंदरुस्त हो कर दोबारह अपने फ़र्ज़ पर मअमूर हुए। इस पसे मंज़र के साथ इरशाद हुआ।

وان یونس من المرسلین. اذا بق الی الفلک المشحون فساھم فکان من المدحضین. فالتقمه الحوت وھو ملیم ...... (الصافات۳۹:۴۲)

(यूनुस अलैहिस्सलाम हमारे फ़र्सतादा नबियों में से थे। वह अपने फ़राइज़ से भाग कर कश्ती में सवार हो गए। जब कुरआ अंदाज़ी हुई तो यह समुंदर में फैंकने जाने के क़ाबिल पाए गए। इनको एक मछली ने निगल लिया और वह अपने इस फ़ेएल पर ख़ुद को मलामत करने वालों में से हो गए)

कुरआन मजीद में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को इस वाक़िए की वजह से एक नई कुन्यत "ज़ियुन्नून" से भी पुकारा गया है। सूरह अलक़लम में उनको साहिबुलहूत के नाम से मंसूब करके उनकी परेशानी और निदामत का तज़किरह मिलता है।

मछली और मलेरिया:

मरेलिया पैदा करने वाला मच्छर ठहरे पानी में अंडे देता है। इसलिए खड़े पानी का हर जोहड़, तालाब और झील मच्छर पैदा करने की फैक्ट्री बन जाती है। ज़मानए क़दीम में पानी के इन ज़ख़ीरों और दलदलों के क़रीब रहने वालों को मलेरिया ज़्यादह होता रहा है। हिंदुस्तान के इलाक़ह नागपुर, आसाम, बंगला देश में दरयाओं के डेल्टे और ज़ेरीं सतह के इलाक़े हमेशह से इस बुख़ार की आमाजगाहें रही हैं। जब से मच्छर के मलेरिया फैलाने की ख़बासत का पता चला

है, सहत आम्मा के माहिरीन कोशिश कर रहे हैं कि आबादियों के क़रीब खड़े पानियों के ज़ख़ीरे न हों। पानी को निकाल देना या गढ़ों को मिट्टी डाल कर भर देना एक मुस्तक़िल तर्कीब है। लेकिन जहां पानी ज़्यादह हो और ज़ख़ीरे को ख़ाली करना मुम्किन न हो, अफ़ज़ाइश को रोकने के लिए वहां पर संखया का एक मुरक्कब पेरिस ग्रीन या मिट्टी का तेल या डीज़ल आयल या बे–टेक्स याकरया जूट डालनी ज़रूरी है। यह महंगा और बाक़ाइदह का ख़र्चा है। चीनी साइंस दानों ने इसकी आसान सूरत यह निकाली है कि इन ज़ख़ीरों में मछलियां परवरिश की जाएं।

मछली अपनी आदत के लिहाज़ से मच्छर के बच्चे खाती है। इसलिए जिस पानी में मछली होगी इसमें मच्छर पैदा नहीं होते। इससे सालों पहले हिंद–पाक की मसाजिद के तालाबों में लोगों ने गोल्ड फ़िश नामी सुनहरी मछलियाँ डाली हुई थीं। किसी मस्जिद के तालाब में कभी मच्छरों की अफ़ज़ाइश नहीं हुई।

माहीगीरी:

मछलियां पकड़ने का सब से क़दीम तरीक़ह हाथ से या टोकरी से पकड़ने का है। चूंकि मछली के जिस्म पर लेस लगी होती है इसलिए हाथों में से फिसल जाती है। कम गहरे पानियों में टोकरी डाल कर पकड़ना एक आम तर्कीब है। क़बाइली तहज़ीब में मछली को नेज़े की नोक पर भी दिया जाता रहा है। शौक़ियह पकड़ने वालों ने कुंडी, और बंसी से मछलियां पकड़ी हैं। यह शौक़ अमरीका में बहुत ज़्यादह है। लोग ख़ूबसूरत चर्ख़ियों और नाएलोन की डोरियां लगाकर सारा–सारा दिन पानियों के किनारे बैठे रहते हैं।

मछली के शिकार में सबसे मुश्किल बात इसकी अपनी मौजूदगी थी। एक शख़्स अपने यक़ीन पर घंटों डोरी लटकाए पानी के किनारे बैठा रहता है और ऐन मुम्किन है कि वहां पर मछली कोई भी न हो, लाहौर की वारिस रोड पर तालाब का टिकट लेकर लोग अक्सर बंसियां लटकाए देखे गए मगर मछली कभी किसी के हाथ में नज़र न आई। इस मसले का जदीद हल यह निकला है कि अल्ट्रासाउंड क़िस्म के आलात की मदद से पानी में मछली की मौजूदगी बल्कि इसकी जिसामत तक का पतह चलाया जा सकता है। मछलियां पकड़ने वाले बड़े ट्रेलर इस आले की मदद से मछली का पता चला कर समंदरों में जाल डालते हैं और इनके शिकार की तअदाद इतनी ज़्यादह होती है कि वह दूर–दूर तक मार करते हैं। भारत वाले रोज़ पाकिस्तानी माही गीरों को अपने इलाक़े में मुदाख़लते बेजा पर पकड़ते रहते हैं। और इसी तरह रूसी जहाज़ ख़लीज अरब तक मछलियों के पीछे आते हैं। पाकिस्तानी समंदरों में पाम्फ्रेट, ट्यूना, सोल और चौड़ी मछलियों की उम्दह क़िसमें मिलती हैं और कराची का मछली बंदर इनकी रोज़आना वसूली का बड़ा मरकज़ है।

मछली की कीम्यावी तर्कीब:

दूसरे हैवानों की तरह मछली भी एक हैवान है । जिसके जिस्म में गोश्त, चर्बी मअदनी नमक, विटामिन और हड्डियां होती हैं। आम मछलियों में कीम्यावी

अनासिर की मिक़दार इस तरह है।

	लहमियात	चर्बी और निशास्तह	मादनयात	पानी	गर्मी के हरारे	हज़्म होने का अर्सह
आम मछली	22—30	5	1	63	500.980	4 घंटे
मीठे पानी की पछली	19.43	4.8	0	0	512	4 घंटे
सालमन मछली	15	7	2	76	352	4 घंटे
बेरिंग	10	8	2	80	1455	4 घंटे
चर्बी	18019	0.70	0	0	352	4 घंटे

भारती साइंसदानों ने मछली के कीम्यावी अनासिर का यूं तज्ज़ियह किया हैं।

	नाइट्रोजन	चर्बी	नम्कियात
रौहू	17.5	16.4	2.63
मागौर	18.9	5°0	1.80
काई	23.6	2.84	2.99
संघि	24.56	2.26	2.73
बान	17.9	28.4	0
टांगड़ा	17.2	0.3	1.3

इस मुवाज़नेह को सामने रखें तो लहमियात के लिहाज़ से गाए का गोश्त या बकरी का गोश्त मछली से ज़्यादह ताक़त रखते हैं। इसके बरअक्स हक़ीक़त हाल यह है कि मौसमे सर्मा में लगातार गोश्त खाने के बावजूद कुछ लोग सर्दी महसूस करते रहते हैं। और अगर वह इसकी बजाए मछली खाएं तो उनके जिस्म में सर्दी का मुक़ाबलह करने की ताक़त ज़्यादह हो जाती है।

मछली का तेल और गिज़ाई उफ़ादियत:

एक आम मछली में 80 फ़ीसदी पानी और 14—23 फ़ीसदी के दरमियान लहमियात और नाइट्रोजन के दूसरे मुरक्कबात होते हैं। मअदनयात में कैल्सियम, फ़ास्फ़ोरस, तांबह और आयोडीन मिलते हैं। इनमें हयातीन की मिक़दार अकसर जानदारों से ज़्यादह होती है। मछलियों में चर्बी या चिक्नाई की मिक़दार इस की किस्मों के मुताबिक़ बदलती रही है। अगर्चे इनमें कोलेस्ट्रोल और शहमी तरशे मौजूद होते हैं। लेकिन वह किसी तरह नुक़सान दह नहीं होते। कोलेस्ट्रोल की मिक़दार बराए नाम होती है। ऐसे मुशाहिदात भी मिलते हैं जिनसे माहिरीन का ख़याल है कि मछली से हासिल होने वाली चिकनाइयां और तेल जिस्म में मौजूद कोलेस्ट्रोल की मिक़दार को कम करते हैं। वरनह हैवानी ज़राए से हासिल होने वाली तमाम चिकनाइयां दिल और कोलेस्ट्रोल की ज़्यादती के मरीज़ों के लिए मुज़िर हैं।

मछली का तेल एक मशहूर टॉनिक है। छोटी मछलियां दरया में आई हुई नबातात खाती हैं। ख़ास तौर पर काई में एक सब्ज़ माद्दह CAROTENE पाया जाता है जो हज़्म होने के बअद विटामिन "ऐ" में तब्दील हो जाता है। बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को खाती हैं और इस तरह इनके जिगर में विटामिन "ऐ" का ज़ख़ीरह हो जाता है। पहले ख़याल यह था कि तेल की बेहतरीन क़िस्म और ज़्यादह मिक़दार काड मछली के जिगर में होती है। इस तेल के एक छोटे

चम्मच में विटामिन "ए" के 4500 यूनिट होते हैं। इसके अलावह 500 यूनिट विटामिन "डी" भी होता है। पहले यह तेल नारवे और डनमार्क से आता था। फिर माहीगीरी करने वाले दूसरे मुल्कों ख़ास तौर पर बरतानियह ने भी बरामद शुरू कर दी। पाकिस्तान और हिंद में बेहतरीन तेल बरतानवी कंपनी सेवन सीज़ का क़रार दिया जाता रहा है। इसके बाद पाकिस्तान के एक अदवियाती इदारे ने पहले मछली का तेल, फिर इसका शर्बत तैयार किया, जिनका मयस्सर आना हमेशह ग़ैर यक़ीनी रहा। अब हकूमत ने जो अदवियह ममनू की हैं इनमें मछली का तेल भी शामिल है। जिस्म को ज़ुकाम, खांसी से महफ़ूज़ रखने और उनके इलाज के लिए एक लाजवाब और क़ाबिल एतिमाद चीज़ रही है। इसमें बुराई मछली की बदबू थी लेकिन दो एक मर्तबह पीने के बाद बदबू की नागवारी ख़त्म हो जाती थी।

मज़ीद तहक़ीक़ात पर मअलूम हुआ कि शार्क और हेलीबट के जिगर में इस विटामिन की मिक़दार काड से बहुत ज़्यादह होती है। बल्कि यूं कहिए कि जितनी मिक़दार काड के एक चम्मच में होती है। इतनी इनके एक क़तरे में होती है। आंखों और जिल्द की हिफ़ाज़त और जिस्म की बीमारियों से बचाने के लिए यह तेल अज़हद मुफ़ीद है। अगर यह तेल बरतानियह या नारवे का बना हुआ हो तो उफ़ादियत ज़्यादह होती है। क्यूंकि यह लोग मछलियां बर्फ़ानी समंदरों से पकड़ते हैं। और इन मछलियों में सर्दी का मुक़ाबलह करने की जिस्मानी सलाहियत होती है। जो शख़्स इनके जिगर का तेल पिएगा इसको विटामिन के अलावा सर्दी का मुक़ाबलह करने की सलाहियत, इज़ाफ़े में मयस्सर आ जाएगी। मरहूम करनल इलाही बख़्श ने किसी और दवाई को इस्तेअमाल किए बग़ैर दमे के मुतअद्दिद मरीज़ों का इलाज सिर्फ़ कॉड लीवर ऑयल पिला कर किया।

मछली में निशास्तह बड़ी मामूली मिक़दार में होता है। इसलिए ज़्याबेत्स के मरीज़ इत्मीनान के साथ खा सकते हैं। मछली रंगों को पहचान सकती है। बल्कि इसे चीज़ों की अच्छी ख़ासी शनाख़्त होती है। और यह वस्फ़ अक्सर चोपायों में नहीं होता। मिसाल के तौर पर सांड रंगों में इम्तियाज़ नहीं कर सकता लेकिन बिल फ़ाइटिंग करने वाले इसे सुर्ख़ कपड़ा दिखा कर ग़ुस्सह दिलाते हैं। हालांकि ग़ुस्सह दिलाने के लिए कोई सा कपड़ा इस्तेअमाल किया जा सकता है।

मछलियों के ख़्वास के बारे में जदीद मुशाहिदात:

आरमाच या अरी मतसिया ARLUS ARIUM

जो महज़, मुक़व्वी दिल, हाफ़ज़ेह को बढ़ाती है, रियाह और बलग़म को निकालती है। INDIAL EEL बान मछली – एल

जल्द हज़्म हो जाती है। सुफ़रा को कम करती है।

महाशीर BARBUS SOPHORE:

गोश्त मिठास के साथ कसैला है। बलग़म को निकालता। मुंह और गले की बीमारियों में मुफ़ीद है।

बोइल BOYAL FISH

बुनियादी तौर पर गोश्त ख़ौर है, मुहर्रिक बाह है, नींद लाती है, ज़्यादह खाना ख़ून को ख़राब करता है और एक नज़रिये के मुताबिक़ फुलबहरी का बाइस हो सकती है।

मेटकी या पारबिता BUTTER FISH

दिल को ताक़त देती है। रियाह को निकालती है। मुहर्रिक है।

कटाला CATLA CATLA

ज़ूद हज़्म है, जिस्मानी कमज़ोरियों को दूर करती है।

सफ़ेद शार्क CARSHARDON CARCHRIUS

इसमें आयोडीन और फ़ास्फ़ोरस की मअ़कूल मिक़दार होती है। इसे खाना रौग़न माही से भी ज़्यादह मुफ़ीद है।

देसी हियरिंग — हल्सा

ज़ाएक़ह मिठास में हैं– क्यूंकि इसमें चर्बी ज़्यादह होती है। इसलिए ज़्यादह मिक़दार में हज़्म करनी मुश्किल होती है।

काई ANABAS SCANDEONUS

गोश्त क़ाबिज़ है लेकिन जल्द हज़्म हो जाता है। भूख लगाता है। दिल को ताक़त देता है।

मोरूला मछली MOUROLA FISH

जिस्म में गोश्त पैदा करती है। ताक़त बढ़ाती है और बच्चे वाली औरतों के दूध में इज़ाफ़ह करती है।

भूकानी—मंगन MUGIL PLANICEPS

जिस्म को ठंडक पहुंचाती है। जूद हज़्म है।

नाटा—गोरी मछली TRIDOSHA

भूख लगाती है। कमज़ोरी को दूर करती है।

रौहू – LABEA ROHU

मीठें पानी की मछलियों में बेहतरीन है। गोश्त मिठास की तरफ़ माइल है। तवानाई में इज़ाफ़ह करती है। दिल को ताक़त देती है।

सुरमई SCOMBEROMORUS COMMERSONI

इसके फ़वाइद बिल्कुल कॉड और शार्क वाले हैं।

संगली – SACCHO BRANCHUS

मुहर्रिक बाह, जल्द हज़्म होती है। मुक़व्वी और दूध बढ़ाती है।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

मछली की क़िस्में बेशुमार हैं। इनमें से बेहतरीन वह है जिसका ज़ाएक़ह अच्छा लगे। मिक़दार ख़ुराक ज़्यादह न हो। इसकी जिल्द मोटी न हो। गोश्त न तो ज़्यादह चिकना हो और न ही बासी हो। अच्छी मछली वह है जो साफ़ और चलते हुए पानी में हो। इसकी ख़ुराक आबी नबातात पर मुशतमिल हो। जिस

दरया के पानी पर खुली धूप पड़ती हो, इसका पानी रवा हो या इसमें मौजें उठती रहती हों।

समंदरी मछली में गिज़ाइयत उम्दह होती है इसकी तासीर सर्द लेकिन ज़ूद हज़्म है। बलगम पैदा करती है। गर्म मिज़ाजों की इस्लाह करती है। नमकीन पानी की मछलियां अपने असरात में फ़ज़ीलत रखती हैं। अगर उसे ताज़ह खाया जाए तो पेट को नर्म करती है। और अगर इसे नमक लगा कर देर तक रखा जाए तो छाती में बोझ बढ़ाती है। आवाज़ को निखारती है। इसके खाने से जिस्म में इतनी ताक़त आती है कि वह गहराइयों में जमा ग़िलाज़तों को भी आहिस्तह–आहिस्तह बाहर निकाल देता है। जिसका मतलब यह भी लिया जा सकता है कि जिस्म की कुव्वते मुदाफ़िअत में इज़ाफ़ह करता है। यह फ़ाएदा समंदर के पानी का भी है। क्यूंकि अगर मेअ़दे और आंतों के ज़ख्म का कोई मरीज़ समुंदरी पानी में थोड़ी देर रोज़ाना बैठे तो इसकी बीमारी की शिद्दत यक़ीनन रुक जाती है। बल्कि इसका हुक़ना (अनीमा) लंगड़ी के दर्द यअ़नी शियाटिका (अर्क़ुन्निसा) को दूर करने में मुफ़ीद है। इसलिए ऐसे पानी की पली हुई मछली भी इसी तरह मुफ़ीद है।

इमाम ज़हबी रह० के मुशाहिदात भी तक़रीबन यह हैं, वह कहते हैं कि मुफ़ीद तरीन मछली वह है जो न बहुत छोटी हो और न बड़ी। वह कम गहरे पानियों में रहती हो और उसकी ग़िज़ा के लिए पानी में आबी नबातात मौजूद हों। देर हज़्म है। मिज़ाज की इसलाह करती है। इसके खाने से जिल्द पर दाग़ पड़ सकते हैं। और खुजली पैदा हो सकती है। जिस मछली में कांटे ज़्यादह हों, यहूदी इसको नहीं खाते।

दूध और मछली के बारे में मुख़्तलिफ़ बातें मश्हूर हैं। पुराने ज़माने से यह बात चली आ रही है कि मछली खाने के बाद दूध पीने से बर्स या कोढ़ हो सकते हैं। बअ़ज़ किताबों में यह मुशाहिदात जिबरईल बिन नजतिश्यूअ़ तबीब की तरफ़ से बयान किया गया है इसके मुक़ाबले में जदीद तहक़ीक़ात में लोगों ने काफ़ी मेहनत की है। हमने लंदन यूनिवर्सिटी के इदारह तहक़ीक़ात इमराज़े जिल्द में कुछ अरसा गुज़ारा है। तमाम माहिरीन मुत्तफ़िक़ हैं कि हमें अभी तक बर्स का कोई सबब यक़ीनी तौर पर मअलूम नहीं हो सका और वह दूध और मछली वाले मसले को कोई अहमियत देने पर तैयार न थे। बल्कि बअ़ज़ किताबों में भी यह बात वज़ाहत से आ चुकी है कि मछली और दूध का बर्स से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं इसके बरअक्स इमाम इब्नुल क़य्युम रह० ने मछली के बाद दूध पीने के अंदेशे को ज़बाने रिसालत सल्ल० से बयान किया है। उन्होंने इसके सबूत में कोई हदीस तो बयान नहीं की लेकिन बात जब इस अज़ीम बारगाह से मंसूब है तो इसे सच मानना ईमान की बात ही नहीं बल्कि एक साइंसी हक़ीक़त भी होगी। तिब्बे जदीद अगर इससे मुन्किर है तो यह इसकी अपनी ग़लती है। वह दिन दूर नहीं जब इनको फिर इसे क़बूल करना होगा।

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदात:

हकीम नजमुलग़नी ख़ान एक मछली का अहवाल लिखते हैं जो चार सौ गज़

तक उड़ती है। और बहीरए क़लज़ुम में पाई जाती है। मछली का गोश्त नाज़ुक और लतीफ़ होता है। इसलिए बासी होने पर बादी और मुज़िरे सेहत बन जाता है। "फ़िरदौसुल हिकमत" में बेहतरीन मछली वह क़रार दी गई है जो चलते पानी में रहती हो। इनके नुस्ख़े के मुताबिक़ मछली को पानी की जगह दही में पकाने और थोड़ी सी फिटकरी डाल कर पकाने से इसके कांटे गल जाते हैं। एक और नुसख़े में दही के साथ समुंदर झाग के बड़े–बड़े टुकड़े देगचे में डाल दें। फिर दम पुख़्त करके पकाएं और बहतरीन मुफ़ीद मछली सालन में है क्यूंकि यह जल्द हज़्म हो जाती है। जबकि तली हुई ज़ूद हज़्म है।

मछली जिस्म को फ़र्बह करती है। मुक़व्वी है, दूध बढ़ाती है। सिल, दिक़, ख़ुश्क खांसी, ज़ुअ़फ़े गुर्दह में मुफ़ीद है। मछली खाने या इसका शोरबह पीने से कई ज़हरीले जानवरों के डंग का असर ज़ायल हो जाता है। इसके खाने के बाद प्यास बहुत लगती है। इसको रफ़अ करने के लिए सिरकह की सिकंजीन या थोड़ी सोंठ का इस्तेअमाल मुफ़ीदी होता है।

जिस मछली में छोटे–छोटे कांटे हों इसमें ग़िज़ाइयत कम और मुज़रत ज़्यादा होती है। ख़ाली मछली जल्द हज़्म होती है। रोटी के साथ तो देर लग जाती है। मछली के कबाब अगर कोएलों पर सैंक कर बनाए जाऐं तो सबसे बेहतर हैं।

मछली को बेसन लगा कर तली हुई अगले दिन खाने से इसकी ग़िज़ाइयत ख़राब और पेट के लिए नुक़सान दह होती है। मछली कमज़ोरी को दूर करने के अलावह गुर्दे के लिए नाफ़ेअ है। मदरुलबोल है। वैदों के यहां कुएं की मछली ज़्यादह मुक़व्वी मानी जाती है। चश्मों की मछली इमराज़े चश्म में मुफ़ीद है। इसे मुसलसल खाने से सफ़ेद बाल सियाह हो सकते हैं।

एक नुस्ख़े के मुताबिक़ सैर भर की मछली के पेट को साफ़ करके इसमें अजवाइन एक पाओ भर दें। इसे कढ़ाई में डाल कर बेरी की लकड़ी की आग उस वक़्त तक दें कि जल कर राख हो जाए। इसे पीस कर एक माशह सुबह–शाम देना तपे–दिक़ के लिए मुफ़ीद है।

मछली का गोश्त चिकना, मीठा, भारी, बलग़म बढ़ाने वाला, सुफ़रह में मुफ़ीद और बादी को मिटाता है। खाने से इश्तिहा बढ़ती है। रोहू मछली का सर हंसली से ऊपर की बीमारियों को ख़त्म करता है। क़दीम अतिब्बा ने मछलियों के ख़वास यूं बयान किए हैं।

सलंधा मछली: बलग़म को बढ़ाती और ताक़त देती है। इमराज़े सुफ़रावी को मिटाती है और दिल को ताक़त देती है।

भागकर मछली: मीठी और भारी होती है। बलग़म पैदा करती है।

मोचका मछली: बाद को रफ़ा करती है। भारी बलग़म को पैदा कती है। भूख लगाती है जिनके मेअ़दों में हरारत हो इनको मुफ़ीद है।

हल्सा मछली: चिकनी, भूख बढ़ाती है। सुफ़रा और बलग़म में इज़ाफ़ह करती है।

मोरी मछली: मीठी और कसैली होती है। दिल को मुफ़ीद है।

बॉम मछली: दाफ़ेअ़ बाद है। सुफ़रा और बलग़म को बढ़ाती है। जल्द हज़्म

होती है।

पाठेन मछली: बलग़म ख़त्म करती हैं। ख़ून को दुरुस्त करती है। कोढ़ को मिटाती है।

सनोल मछली: मीठी और कसैली होती है। काबिज़ है, दिल को ताक़त देती है।

कोई मछली: पेशाब का और सुफ़रा में करती है। बलग़म बढ़ाती है। जज़ाम पैदा कर सकती है।

नदी की मछली: तासीर में भारी पाख़ाने को साफ़ और दुरुस्त करती है।

आबशारों की मछली: ताक़त देती है। पेशाब को खुल कर लाती है। बदन को फ़र्बह करती और अक़्ल तेज़ करती है।

तालाब और गड्ढों की मछलियां तासीर में यक्सां हैं। चिकनी, हल्की, मुक़व्वी, बाद और सुफ़रह की मुसल्लह है।

यूनानी अतिब्बा का मुशाहिदह है कि हमेशह मछली खाने से बदन फ़र्बा होता है। तोंद बढ़ती है। इमराज़ सोदादी, ख़ास कर फ़ीलपा का आरिज़ह पैदा होते हैं। बर्स का इमकान रहता है। अअ़साबी और दिमाग़ी इमराज़ पैदा हो सकते हैं। इन चीज़ों से बचने का तरीक़ह यह है कि इसे गाए के घी या बादाम रौग़न या तिल के तेल में तलें और इसके बअद सियाह मिर्च के साथ अदरक का मुरब्बह, गुलक़ंद या जवारिश जालीनूस का इस्तेअमाल होना चाहिए। इसके बाद पानी पीना ख़तरनाक है। प्यास लगे तो सिरकह इसका मुसल्लह है।

नमकीन मछली:– नमक लगा कर सुखाई हुई मछली को तिब में ममक़ूर कहते हैं। यूनानी में इसे समारीस कहते हैं। कभी नमक से नमकीन करने के बअद सिरकह में डालते हैं। बेहतर यह कि नमक, सिरकह और गर्म मसालेह लगा कर भूनी जाए और फिर सुखाएं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को रास्ते में खाने के लिए नमक लगी मछली ही तजवीज़ फ़रमाई गई। इससे मअलूम होता है यह मुफ़ीद और ज़्यादह अरसह तक क़ाबिले इस्तेअमाल रहती है।

अतिब्बा ने नमकीन मछली को बदतरीन क़रार दिया है। कसीफ़ है, इमराज़ सोदावी पैदा करती है। नींद को कम करती है। बदन की खाल को ख़ुश्क करके उतारती है।

नमकीन मछली से टपकने वाले पानी को "माउन्नून" कहते हैं। यह पानी बलग़म को काटता है। यह फ़ाद ज़हर है। मुंह में बदबूदार ज़ख़्म कुल्लियां करने से ठीक हो जाते हैं। इसका हुक़ना शियाटिका और आंतों के ज़ख़्मों को दूर करता है।

मछली के तेल की मालिश करने से यह जल्द से जज़्ब हो जाता है। इसलिए कमज़ोर बच्चों के लिए मुफ़ीद है। बदबू और मछली की सड़ांद की वजह से नाज़ुक मिज़ाजों को ना पसंद होता है और वह मतली महसूस करते हैं। यह आंतों में से भी जल्द जज़्ब हो जाता है। इसके इस्तेअमाल से मरीज़ की कुव्वत क़ायम रहती है। इसका वज़न बढ़ता है और तपे–दिक के इलाज में बड़ी अहमियत रखता है। हगर किसी को इसके पीने से तकलीफ़ हो तो वह नहा कर

जिस्म को खुश्क करके 2 से 4 चम्मच रौग़न माही की मालिश करे। ख़ातिर ख़्वाह फ़वाइद होंगे। मज़मन इम्राज़ मस्लन अत्तहाब मुफ़ासिल, हंजीरां, हड्डियों की सोज़िश जोड़ों के वरम, पुरानी खांसी, दमा, काली खांसी, नक़ाहत और जिल्दी बीमारियों में इसका इस्तेअमाल बड़ी शोहरत रखता है।

अतिब्बा क़दीम ने असाबी बीमारियों मसलन इख़्तिनाक़ुर्रहम, रअ़शा, दर्दसर, शक़ीक़ह असाबी कमज़ोरी में इसे कोनैन और लोहे के साथ मिलाकर बड़े अच्छे नताइज के साथ दिया है।

सटरपटोमाई सेन वग़ैरह की ईजाद से पहले सिल का इलाज मछली का तेल था। हस्पतालों में इसे कीकर की गोंद के साथ खरल करके इसमें दार चीनी का पानी मिला कर मिक्सचर बनाया जाता था जिसे उस ज़माने में टीबी टॉनिक कहते थे। हर मरीज़ को हर सुबह इसका एक गिलास पिलाई जाती थी।

हस्सासियत से पैदा होने वाले जिल्दी इमराज़ में यह तेल बड़ा मुफ़ीद है। क्यूंकि यह सोज़िश और जलन को दूर करता है। ज़ख़्मों को ठीक करने और जलन को दूर करने की सलाहियत की वजह से लोग अब इसे बवासीर के मरहमों में भी शामिल कर रहे हैं। एक अमरीकी दवासाज़ कंपनी ने मुक़ामी मुख़दरात के साथ मछली के तेल को मिलाकर एक ऐसा मरहम बनाया था जो बवासीर की शिद्दत फ़ौरन कम कर देता था।

इनसानी आंख रात के अंधेरे में जिस अमल के ज़रिए देखती है इसमें विटामिन "ए" का बड़ा तअल्लुक़ है। इसकी कमी से रात की बीनाई ज़ाया हो जाती है। आंखों में ख़ुश्की आ जाने से इनमें सोज़िश, ज़ख़्म और अंधापन हो सकता है। ग़िज़ा में अगर विटामिन "ए" की कमी मुसलसल रहे तो जिंल्द खुर्दुरी हो जाती है। तिब्बे जदीद में इसे मैंडक की तरह की जिल्द कहते हैं। इसी तरह गुर्दों में पथरी के इम्कानात बढ़ जाते हैं। जिस्म के अंदर की लुआब दार झिल्लियों की सहत के लिए विटामिन "ऐ" निहायत ज़रूरी हैं अगर यह न हो तो सांस की नालियां किसी भी सोज़िश का मुक़ाबलह नहीं कर सकतीं। और रोज़ मुतवर्रम हो जाती हैं। विटामिन अलिफ़ का सबसे सस्तह और क़ाबिले एतिमाद ज़रियह कॉड लीवर ऑयल का तेल है। इसे पीना इन तमाम ख़राबियों से यक़ीनी हिफ़ाज़त है।

ज़हरीली मछलियां:—

मछलियां आम तौर पर ज़हरीली नहीं होतीं। अकसर मछलियां बग़ैर किसी तरद्दुद के खाई जा सकती हैं। दरया, नहर, तालाब, झील, चश्मह, और कुआँ ऐसी जगहें हैं, जहां की तक़रीबन तमाम मछलियां किसी अंदेशो के बग़ैर खाई जा सकती हैं मगर इस शर्त पर कि वह ताज़ह हों। मछली की ताज़गी देखने का मशहूर तरीक़ह यह है कि इनके कान की हड्डी सुर्ख़ रंग की हो तो मछली ताज़ह होती है। इनका रंग अगर सियाही माइल सुर्ख़, या गहरा सुर्ख़ हो तो मछली बासी होती है।

गाहकों को धोकह देने के लिए अकसर दुकानदार बासी होने पर इनके गलफड़ों पर तेज़ रंग ख़ुद लगा देते हैं। इसका एक आसान तरीक़ह यह है कि

गलफड़ों और पेट को खोल कर क़रीब से सूंघा जाए, बासी मछली की बदबू आ जाए गी।

गोश्त जब बासी हो तो इस में एक कीम्यावी ज़हर PTOMAINE पैदा हो जाता है। इसे खाने से एक कैफ़ियत FOOD POISONING पैदा होती है। ज़िसमें मरीज़ को ब्लड प्रेशर कम और बअज़ औक़ात पेशाब बंद हो जाता है। यह बीमारी बासी और डब्बे का गोश्त खाने वालों को ज़्यादह होती है। चूंकि मुतमद्दन मुमालिक में लोग ज़्यादह तर डब्बे की ग़िज़ाएं खाते हैं। इसलिए उनके यहां इस बीमारी का रिवाज भी ज़्यादह है। अपनी तमाम तर तरक़्क़ियों के बावजूद वह इसका शाफ़ी इलाज तलाश नहीं कर सके। इसलिए अब तक तरीक़ए इलाज यह है कि अलामात का इलाज किया जाए। अकसर मरीज़ तंदरुस्त हो जाते हैं। लेकिन अमरीकह में हर साल तक़रीबन 300 अमवात सिर्फ़ इसी वजह से होती हैं।

क़ुरआन मजीद ने मछली के ज़िक्र में जो अहम बात फ़रमाई वह "लहमन तरिय्यन" यअनी ताज़ह गोश्त और अगर इसे बासी खाया गया, जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सिलसिले में या हज़रत अबू उबैदा बिन अलजराह रज़ि. की रोएदाद में है तो उन्होंने इसे नमक लगा कर गलने सड़ने से महफ़ूज़ कर लिया।

इस बीमारी का आसान और शाफ़ी इलाज मरीज़ को शहद पिलाना है। शहद पेट में मौजूद ज़हरों को यक़ीनी तौर पर ख़त्म कर देता है। पानी की कमी नहीं होने देता और क़ै की वजह से पैदा होने वाली कमज़ोरी को ख़तम कर देता है।

कुछ मछलियों के जिस्म में कीड़ों मकोड़ों की तरह ज़हरीले ग़दूद होते हैं। जिससे यह क़रीब आने वालों को बाक़ाएदह डंग मारती हैं। हमारे मुल्क में पाई जाने वाली संघी मछली इसकी आसान मिसाल है। एक मशहूर मछली जेली फ़िश समुंदरों में पाई जाती है। इसके जिस्म से लम्बे लम्बे धागे निकलते हैं जो ज़हरीले होते हैं जैसे ही यह धागा किसी के जिस्म को लगता है वहां पर सुर्ख़ी नमूदार होती है फिर आबला बनता है। शदीद दर्द होता है। इसके बअद ज़हर जिस्म में दाख़िल हो कर शदीद कमज़ोरी, बेजानी की कैफ़ियत में डूबती कमज़ोर नब्ज़, ठंडे पसीने और पेट में क़ौलंज की तरह का शदीद दर्द होता है। कभी–कभी यह सूरतेहाल मौत का बाइस हो जाती है।

समुंदरी कीड़ा LIRUKANDJI समुंदरी भिड़ शिमाल मश्रिक़ी ऑस्ट्रेलिया के साहिल के क़रीब पाया जाता है। डंग लगने के बाद शदीद दर्द, पेट में क़ौलंज, तमाम जिस्म में शदीद दर्द और मरीज़ देखने में बेहाल लगता है। आम तौर पर इससे मौत नहीं होती लेकिन अज़िय्यत बेपनाह होती है। अब इसके ज़हर को बेकार करने वाले टीके ईजाद हो चुके हैं जिनसे जल्द आराम आ जाता है।

हाल ही में मुशाहिदात से पता चला है कि तुफ़ैली कीड़ों की बअज़ क़िस्में मछलियों के जिस्मों में परवरिश पाती हैं इसलिए मछली को अच्छी तरह धोने और पकाने के बग़ैर अगर खाया जाए जो इस अम्र का इमकान मौजूद है कि इन तुफ़ैली कीड़ों की कोई क़िस्म इंसानों के जिस्म में भी दाख़िल हो जाए।

सबसे ज़्यादह डंग मारने वाली मछली में SYNANCEJA JRACHYNIS

ख़तरनाक है। इसकी कमर पर बयक वक़्त 13 तेज़ कांटे होते हैं जिनमें से हर-एक के नीच ज़हर की थैली होती है जो क़रीब आने वालों का शिकार करने पर हरदम तैयार रहते हैं। इसका ज़हर जिस्म में दाख़िल होने के बअद शदीद तकलीफ़ देती है और सांस बंद होने के बअद मौत हो सकती है। SCORPION FISH LKION FISHES RAYS CANDAL TOAD FISHED WEAVER FISHES TETRAFON FISHES

इन सब मछलियों और शार्क में ऐसी ज़हरें मिलती हैं जिनको खाने से शदीद सम्याती असरात हो सकते हैं। एक साहब ने ख़लीज अरब, बहीरए अरब, और बहीरए केसपिन में मौजूद ज़हरीली मछलियों पर तहक़ीक़ की है। उन्होंने कुछ ज़हरीली किस्में तलाश की हैं जिनकी अलामात बालाई मछलियों की तरह बल्कि ज़्यादह तौर पर और अलर्जी की तरह की हैं, जिनमें से क़ातिल एक आध ही है। मछलियों के डंग से मक़ामी तौर पर ज़ख़्म ख़राब होने के बाद इसमें सोजिश और बाद में तशन्नुज हो सकता है। मछली का डंग आम तौर पर समंदर में तैरने वालों को लगता है। और पाकिस्तान के मज़ाफ़ाती समंदरों में ऐसी मछलियां नहीं होतीं, इन की ज़्यादह आमाजगाहें, ऑस्ट्रेलिया, शरक़ुलहिंद और पानामा के समंदों में हैं। डंग लगने के बाद ज़ख़्म को गर्म पानी और साबुन से अच्छी तरह धोने के बाद इस्प्रिट लगाई जाए। डंग अगर गहरा लगा हो तो तशन्नुज से बचाओ का टीका लगाना ज़रूरी है।

होम्योपैथिक तरीक़ह इलाज में CUTTLE FISH का जौहर इनके अपने उसूल के मुताबिक़ तैयार करके SEPIA के नाम से इस्तेमाल किया जाता है। जिस मरीज़ को पेट के निचले हिस्से में बोझ महसूस होता है और यह बोझ नीचे से ऊपर की तरफ़ और अंदर से बाहर की तरफ़ जाता हुआ लगता है। ख़्वातीन में रहम की दर्दों और ख़ास तौर पर सियाह बालों वालियों में इसके फ़वाइद बेशुमार हैं। जब जिस्म में थकन हो, शक्मी आलात बाहर को गिर रहे हों, चेहरे पर सुस्ती और थकन नज़र आए, रंग ज़र्द, कमर में दर्द हो और घबराहट के साथ ग़शी के दौरे पड़ते हों तो यह दवाई दी जाती है।

मरीज़ ज़हनी तौर पर अपने से प्यार करने वालों से जान छुड़ाता है। चेहरे पर सियाहियां पड़ती हैं। माथे पर फुंसियां, चक्कर, आंखों में सुबह और शाम थकन ज़ाहिर होती है। दांतों में शाम के छः बजे के बाद तुलूए आफ़ताब तक दर्द रहता है। मुंह का ज़ाएक़ह नमकीन होने की वजह से खटाई, सिरकह पसंद होता है। जबकि दूध पीने से मतली होती है। पेट में हवा भरी रहती बवासीर की तरह का ख़ून बहता है। पेशाब में रेत होती है। और इसका रंग सुर्ख़ होता है।

मरजान–मोंगा......लबस्सद

CORALS

अत्तारों के यहां से छोटी–छोटी सुर्ख़ी माइल सख़्त शाख़ें मिलती हैं। देखने में ऐसा लगता है कि जैसे कोई छोटा सा पौदा काट कर सुखाया गया है। इस

ज़ाहिरी शक्लो–सूरत से बहुत से माहिरीन भी धोखा खा गए। चुनांचे मशहूर भारती मुहक़्क़िक़ नदकारनी ने इसे समंद्री झाड़ी बयान किया है। अतिब्बा क़दीम भी इसकी माहियत के बारे में मुश्तबह रहे हैं किसी ने इसे जमादात में से क़रार दिया है और कोई नबातात कहता है।

हालिया तहक़ीक़ात से मालूम हुआ है कि यह एक जानवर के जिस्म का ख़ुश्क ढांचा है। जिसकी मुख़तलिफ़ शकलें हैं। माहिरीने हैवानात अलबहर ने इसे समंदरी कीड़ों की क्लास ANTHOZOA के अफ़राद क़रार दिया है। इनकी मुतअद्दिद क़िस्में बल्कि एक सनफ़ की 1000 शकलें मअलूम हो चुकी हैं। इन जानवरों का एक मुंह होता है। जिसकी शक्ल मस्से की मानिंद होती है। इसके बअद लम्बा मख़रूती पत्थर की तरह का जिस्म है जिसके अतराफ़ में लम्बे–लम्बे धागे होते हैं। जो शिकार को फांसते हैं। इन धागों में ऐसे जौहर पाए जाते हैं जो लम्स में आने वाले कीड़ों को मफ़लूज कर देते हैं। फिर वह उन्हें लपेट कर अपने करीब ला कर खाते हैं।

अतिब्बा ने इसकी शाख़दार और गोल क़िस्में बयान की हैं। दोनों को फ़रसी में लबस्सद कहते हैं और इनके फ़वाइद और असरात भी यक्सां कहे जाते हैं। जबकि जदीद उलमा ने इसकी एक हज़ार से ज़्यादह क़िस्में क़रार देने के बाद तीन अहम शक्लें बयान की हैं। सबसे पहले नर्म मर्जान है SARCOPHYTON फिर नीला मरजान। HELIOPORA है और पत्थर की मानिंद DIPLORIA है। कुछ क़िस्में ऐसी भी है जिनकी शक्ल इनसानी उंगलियों की तरह होती है और इनको "मुर्दह आदमी की उंगलियां" कहते हैं। जबकि शहद की मानिंद और थाली की मानिंद शक्ल की ऐसी क़िस्में इस तरह होती हैं कि एक बड़ी थाली औंधी पड़ी है और इसमें भिड़ों के छत्ते या शहद के छत्ते की मानिंद दर्जनों सुराख़ होते हैं। यह कम गहरे पानियों में मिलते हैं। और लम्बाई में दस फुट तक तवील हो सकते हैं। नीली मरजान बहरे हिंद और बहरुलकाहिल के इलाक़ों में मिलती है। सबसे अहम क़िस्म पथरीली मरजान है। यह अपनी आबादियां बनाकर रहती है और कभी–कभी इसके तनहा जोड़े भी मिलते हैं। समुंदर में जो ज्वारभाटा या तूफ़ान हो तो इसके ज़ोर से यह सतह समंदर पर नज़र आ जाते हैं। वरनह इन की रिहाइश बीस हज़ार फुट तक की गहराई में होती है। जहां पर इन्सान का गुज़र नहीं हो सकता।

पत्थरीले मरजान का रंग ज़र्द, बादामी, सफ़ेद और ज़ैतूनी हो सकता है। बल्कि रंग का इनहसार इस काई पर है जो इस पर उग जाती है। बैरूनी रंग ख़्वाह कोई भी हो। अंदरूनी हिस्सह सफ़ेद होता है। इसका जिस्म ख़ालिस कैल्शियम कारबोनेट से बनता है। माहिरीन ने इनमें खुंबी की तरह, सितारों की मानिंद और बारह सिंघे के सींग की तरह की क़िस्में दरयाफ़्त की हैं।

सियाह मरजान की शक्ल बोतलें साफ़ करने वाले बुरश की मानिंद होती है। यह ज़्यादह तौर पर बहीरए रूम, जज़ाइर ग़रबुलहिंद और पानामा के इतराफ़ में पाया जाता है।

मरजान आम तौर पर अकेला नहीं रहता। हालात ख़ुशगवार हों, ख़ुराक ख़ूब

मिल रही हो और समुंदर में सैलाबी कैफ़ियत न हो तो यह बढ़ने लगते हैं। इनकी बस्तियां एक दूसरे से मुंसिलिक हो कर फैलने लगती हैं और आख़िर कार एक चट्टान की शक्ल अख़्तियार कर लेती हैं। चूंकि बुनियादी तौर पर इनकी साख़्त कैल्शियम सी होती है इसलिए यूं लगता है जैसे कि चूने के पत्थर आपस में जुड़े होते हैं। अगर शदीद तूफ़ान न आए तो यह चट्टान की शक्ल अख़्तियार कर लेती है। उर्फ़ेआम में इनको मरजान के जज़ीरे या CORAL ISLANDS कहते हैं। समुंदर में मरजान की चट्टान क़ायम होने के बअद पनाह की तलाश में आने वाले कीड़े, काई, दूसरी समुंदरी नबातात इनमें शामिल हो कर अपने घर बनाते और मज़बूत और वसीअ़ तर करते रहते हैं। जब तूफ़ानी साइक्लोन आते हैं तो वह इन जज़ीरों के एक तरफ़ उखड़ने लगते हैं। लेकिन वही कुछ दूसरी तरफ़ ज़्यादा मुस्तहकम हो कर जमअ होता रहता है। अगर्चे यह जज़ीरे हज़ारों सालों की मुद्दत में बनते हैं लेकिन पाएदार नहीं होते। इन पर ख़्वाह दरख़्त उग आएं पानी के ज़ख़ीरे नमूदार हो जाएं लेकिन किसी दिन भी रेज़ह–रेज़ह हो जाते हैं। बहरे हिंद के जनूब मग़्रिबी इलाक़ह में अद्दाबरह का जज़ीरा इसकी क़रीबी मिसाल ऑस्ट्रेलिया के साहिल के क़रीब समुंदर में मरजान के जज़ीरे और चट्टानें इतनी ज़्यादह तअदाद में होती हैं कि लोगों ने इसे मरजान के समुंदर" CORAL SEA का नाम दे दिया है। समुंदर का यह क़ता बहरुलकाहिल से शुरू हो कर आस्ट्रेलिया के मश्रिक़ में न्यूगनी तक फैला हुआ है। इसका रक़बह 18,86,000 मुरब्बअ मील है और गहराई 24000 फुट से ज़्यादह है। इस समुंदर में 1942 में अमरीकी बहरिया ने जापानी बहरिया को पहली मर्तबह जंग में शिकस्त दी।

इर्शादाते रब्बानी:–

कुरआन मजीद नें बेहतरीन चीज़ों का ज़िक्र जब किया तो इनमें मरजान को भी शामिल फ़रमाया गया।

يخرج منهما اللؤلؤ والمرجان. (الرحمن:٢٢)

(इन से निकलते हैं मोती और मरजान)

यह इन दो समुंदरों के ज़िक्र में फ़रमया गया जो आपस में मिलते हैं और इनसे यह क़ीमती अनासिर हासिल होते हैं।

यह इन दो समुंदरों के ज़िक्र में फ़रमाया गया जो आपस में मिलते हैं और इनसे यह क़ीमती अनासिर हासिल होते हैं।

كانهن الياقوت والمرجان. فباىّ الاء ربكما تكذّبان (الرحمن:٥٨:٥٩)

(जन्नत में मिलने वाली हूरों की माहियत के बारे में फ़रमाया कि वह अपनी चमक–दमक और जिस्मानी साख़्त में ऐसी होंगी जैसे वह याक़ूत और मरजान से बनी हों फिर तुम अपने रब की कौन–कौन सी नेअ़मतों को झुटलाओ गे।)

कुतुबे मुक़द्दसः

......मरजान से ज़्यादह बेशुबह है। और तेरी मरग़ूब चीज़ों में बे नज़ीर ......

(इम्साल 3:15)

वह चीज़ें जो मुश्किल से मिलती हैं और इनकी क़ीमत ज़्यादा होती है। इस आयत में मरजान को इनमें शामिल किया गया।

......ज़रो मरज़ान की तो कस्रत है लेकिन बेशुबहा सरमाया इल्म वाले होंट हैं...... (इम्साल 20:15)

एक अच्छी बीवी के किरदार की अहमियत के सिलसिले में इरशाद हुआ।

......नेकूकार बीवी किसको मिलती है? क्यूंकि इसकी क़दर मरजान से भी बहुत ज़्यादह है। इसके शौहर के दिल को इस पर एतिमाद है। और इसे मुनाफ़ेअ की कमी न होगी...... (इम्साल 31:10:11)

इन तमाम आयात में मरजान को क़दरों क़ीमत के लिहाज़ से बड़ी अहमियत दी गई। इसको सोना, चांदी, मर, लोबान की तरह क़ीमती और नादर रोज़गार अशया में से ठहराया गया। ऐसा मालूम होता है कि जिस तरह आज हम सोना, चांदी, हीरे और मोती को ज़ेवर के तौर पर पहनते हैं। उस ज़माने के लोग मरजान को भी क़ीमती ज़ेवर गर्दानते थे।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदातः

अल्लाह तआला ने मरजान की बार–बार तअरीफ़ की है। इसलिए इसमें फ़वाइद भी बेशुमार होने चाहिएं। मरजान की बेहतरीन क़िस्म वह है जो सुर्ख़ या सुर्ख़ी माइल हो। मरजान बुनियादी तौर पर मुफ़र्रह है। दिल को तक़वियत देता है तासीर के लिहाज़ से यह मक़ामी तौर पर क़ाबिज़ है और दिल को ताक़त देता है। जिन लोगों को भूल जाने की आदत है उनके लिए मुफ़ीद है।

इब्नुलक़य्युम ने इसका कोई ज़िक्र नहीं किया।

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदातः

इब्तिदाई अय्याम में अतिब्बाए सलफ़ को मरजान के बारे में मुग़ालते रहे। हत्ता कि अहमद फ़ारस आफ़ंदी ने अपनी क़ामूस में इसे मोती की छोटी क़िस्म क़रार दिया है। दूसरे अतिब्बा ने लिखा है कि मरजान एक हुजरी जिस्म है जो दरयाए यमन में किनारों के साथ उगता है और लम्बाई में एक गज़ तक हो सकता है। उनके ख़याल में समुंदरी बुख़ारात जब जम जाते हैं तो यह शाख़दार शक्ल इख़्तियार कर लेते हैं। गीलानी ने इसे नबातात और जमादात के दरमियान एक चीज़ क़रार दिया है।

यह मुक़व्वी और क़ाबिज़ है। जिगर व तहॉल को साफ़ करता है। इसे जला कर पीस कर शहद में मिला कर देने से फ़ालिज, लक़वह और रअशह में फ़ाएदह होता है। निगाह को कुव्वत देता है। इसे घोल कर पिलाना बच्चों को नींद के दौरान डरने से बचाता है। इसे गुलाब के अर्क़ में हल करके मुंह के अंदर लगाने से मुंह पकने में फ़ाएदह होता है। अकसर मरीज़ों को दिन में तीन चार मर्तबह लगाने से शिफ़ह हो गई।

अतिब्बा ने इस्क़ात हमल, मेअ़दह की ख़राबियों और वबाओं से बचाने के लिए गले में मोंगा लटकाने और पेट के ऊपर बांधने की तज्वीज़ भी की है।

वैद इसे भूख-बढ़ाने वाला, हाज़िम और बदन को मोटा करने वाला क़रार देते हैं। उनकी तिब्ब में यह सिल, दिक़, यरक़ान, दमह, खांसी, बुख़ार, पेट की तोंद और आंख की बीमरियों को मिटाता है। बसारत को बढ़ाता है। पेशाब की तकालीफ़ दूर करता है।

इन बीमारियों के इलाज में इसकी तर्कीबे इस्तेमाल जुदा है। मसलन जिस्म को मोटा करने के लिए इसे बालाई के साथ खाया जाए सिल में मक्खन और मिस्री के साथ देते हैं। पेशाब की जलन और रुकावट के लिए दो रत्ती मरजान दूध और मिस्री के साथ दिया जाए। इसको शहद और अदरक के साथ देने से इस्तिहाज़ा का ख़ून रुक जाता है। बारीक पीस कर छिड़कने से ख़ून बहना बंद हो जाता है। दांतों पर मलने से दांत चमकदार हो जाते हैं।

भारती हुकूमत के महकमा तिब्ब के मुशाहिदात के मुताबिक़ इसे अर्क़ गुलाब और बेदे मुश्क में खरल करके रख लिया जाए। यह मुफ़र्रह, मुक़व्वी, क़ाबिज़, हाबिसुद्दाम, मुक़व्वी क़ल्ब और मेअ्दा है। इसे ख़फ़क़ान, वहशतो कर्ब, जर्यान, इस्हाल ख़ूनी में एतिमाद के साथ दिया जा सकता है। मर्जान को जला कर इसकी राख देना भी वैसा ही मुफ़ीद है।

इन तहक़ीक़ात के मुताबिक़ मर्जान की दो क़िस्में हैं। एक तो वह जो बारीक शाख़ों की सूरत में मिलता है इसे शाख़ मर्जान कहते हैं। दूसरी क़िस्म एक सख़्त सी गुलाबी या सुर्ख़ रंग की टिकिया होती है। जिसमें छोटे–छोटे सुराख़ होते हैं। इसे मर्जान, बेख़ मर्जान कहते हैं। चूंकि मर्जान को फ़ारसी में लबसस्द कहते हैं। इसलिए बअ्ज़ किताबों में इसे लबस्साद के नाम से बयान किया गया है। हक़ीक़त में दोनों एक ही चीज़ हैं। अगर्चे अतिब्बा ने इसे खरल करके सफ़ूफ़ की शक्ल में भी इस्तेअमाल किया है। लेकिन तिब्बी मक़ासिद के लिए इसे कोएलों में रख कर जलाया जाए तो यह भस्म ज़्यादह मुफ़ीद रहता है।

कीम्यावी साख़्त:

बुनियादी तौर पर मर्जान की हर क़िस्म कैल्शियम की उम्दह तरीन असनाफ़ से बनी होती है। कीम्यावी तज्ज़ियह पर करनल चोपड़ह ने इसमें कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नेशियम कार्बोनेट और आइरन ऑक्साइड का वजूद पाया। भारती दवा साज़ों के तजज़िया पर इसमें आठ फ़ीसद वह नाम्याती अनासिर हैं जो जानवरों के अज्साम का हिस्सह होते हैं। इनके अलावह कैल्शियम कार्बोनेट 83 फ़ीसदी, मैगनेशियम कार्बोनेट 3.5 फ़ीसदी, आयरन ऑक्साइड तक़रीबन 4.5 फ़ीसद होती है। इसमें फ़ौलाद की मौजूदगी सुर्ख़ रंग का बाइस होती है। मर्जान की साख़्त में कैल्शियम में नम्कियात इसकी तिब्बी उफ़ादियत का सबब बनते हैं, इन्ही की बिना पर इसे तेज़ाबियत को ख़त्म करने वाला, जर्याने ख़ून को रोकने वाला, क़ाबिज़ क़रार दिया जाता है। मैगनेशियम इसे मुलय्यन बनाता है। जबकि फ़ौलाद की मौजूदगी इसे मुक़व्व, आअ्साबी टॉनिक और कमज़ोरी के लिए अक्सीर बना देती है। कैल्शियम और फ़ौलाद की क़ुदरती क़िस्में जिस्मानी फ़वाइद में कीम्यावी या मस्नूई अक़साम से ज़्यादह मुफ़ीद होती हैं।

जदीद मुशाहिदात:

चूंकि यह मक़ामी तौर पर क़ाबिज़ है इसलिए दांतों पर मलने वाले मंजन में डाला जाता है। कीम्यावी साख़्त में मुकीम और फ़ौलाद होने की वजह से इसे पुरानी खांसी, तपे–दिक़, सिल, दमह, पुराने बुख़ारों इम्राज़ गुर्दह व मसाना, सोज़ाक, पेशाब की नाली की सोज़िश और जलन, कारबंकल में कसरत से इस्तेअमाल किया जाता है। कमज़ोरी से पैदा होने वाली बीमारियों, जैसे कि आअ़साबी दर्दों, चक्कर, सर दर्द में भी मुफ़ीद है। इस ग़र्ज़ के लिए मर्जान की जड़ों को खटाई में जला कर इसके सफ़ूफ़ के 3 से 12 ग्रेन सुबह–शाम खाने के बाद दिये जाते हैं। डाक्टर नदकारनी ने पुरानी खांसी और तपे मुहर्रिक़ा के मरीज़ों को इसका लगातार इस्तेअमाल करवाया और अच्छे नताइज हासिल किए।

मर्जान में कैल्शियम की मौजूदगी तेज़ाबों को ख़त्म करने में काम आती है। इसलिए पेट के अल्सर और तेज़ाबियत से होने वाली तबख़ीर मेअ़दा में मुफ़ीद है। सुफ़रावी मादों की ज़्यादती से पैदा होने वाले सर दर्द में बड़े काम की चीज़ है। आयुर्वेदिक इलाज की मुस्तनद किताब भाई रतनावली में वसंत कसुमकार अरसा के नाम से इम्राज़ुलबोल जिंसी कमज़ोरी, जिस्मानी कम्ज़ोरी, सोज़ाक क़दीम और ज़ियाबेत्स के लिए एक नुस्ख़ह है। जिसमें मर्जान, मोती, सोना, क़लई, फ़ौलाद और सकह कुश्तह हालत में, काफूर, संगे जराहत को लम्बे अरसे तक खरल करने के बाद 4 ग्रेन वज़न की गोलियां बनाई जाती हैं जिनको शहद और घी मिलाकर नहार मुंह दिया जाता है। इस नुस्ख़े में सकह और क़लई का कुश्तह ऐसी दवाएं जिन पर अतिब्बा जदीद को ख़तरनाक क़िस्म के एतिराज़ात हैं और इनका इस्तेअमाल नुक़सान का बाइस हो सकता है। अलबत्तह इस नुस्ख़े से मअ़दनयात निकाल दी जाएं तो नुक़सान देह न होगा।

जुनूबी हिंद के डाक्टर पांच मक़ामी बूटियों इक्शू, सारा, कासा, कोसा और दरबा को पीस कर इसमें खांड मिलाकर एक सफ़ूफ़ "कसा वलीहा" के नाम से तैयार करते हैं। यह सफ़ूफ़ पुरानी बीमारियों, जिस्मानी कमज़ोरी, ज़अ़फ़े बाह और जर्यान में मुफ़ीद बताया जाता है। हमारे इल्म में इन बूटियों से कोई वाक़िफ़यत नहीं इसलिए इस नुस्ख़े की उफ़ादियत पर राए देनी मुम्किन नहीं।

हमारे ज़ाती तजुर्बे में मर्जान सोख़्तह कई बार आया है। हमने इसे मंजन में शामिल करके इस्तेअमाल किया है। अज़हद मुफ़ीद है। इसे मंजन में बादाम के छिलको की राख के अलावह अक़रे क़रहा, नमक सांभर और मुस्तगी रूमी भी शामिल थी। मर्जान की राख ज़ख़्मों से बहने वाले ख़ून को बंद करने में लाजवाब है। एक मरीज़ को मुद्दतों थूक के साथ ख़ून आ रहा था। दीगर अदविया के हमराह मर्जान की 4 ग्रीन राख सुबह शाम बड़ी मुफ़ीद रही।

मोती------ लुअ़ लुअ़

PEARLS मरवारीद

PINCTADA MARGARITIFERS

इनसानी ज़ेबाइश के लिए क़ीमती पत्थरों में मोती को बड़ी अहमियत हासिल

है, मोती, सीप के अंदर पाए जाने वाले बग़ैर हड्डी के फ़ालूदे की सी माहियत वाले एक जानवर के जिस्म से तख़लीक़ होता है। तमाम मोतियों का रंग दूधिया होता है। जबकि सियाह, नीले, ज़र्द और कुर्मज़ी रंगों के मोती भी देखे गए हैं। पहले ज़माने के अतिब्बा का ख़याल था कि बरसात के मौसम में सीपी (सदफ़) अपना मुंह खोल कर समुंदर की सतह पर तैरती रहती है। जब बारिश का कोई क़तरा इसमें दाख़िल हो जाए तो वह क़तरा मोती बन जाता है। जदीद तहक़ीक़ात से यह मुशाहिदा दुरुस्त नहीं पाया गया अब मअलूम हुआ है कि सीपी के अंदर एक आबी जानवर MYTILUS MARGARATIFERUS पाया जाता है। जिसको बअ़ज़ PENCTADA MARGARATIFERUS भी कहते हैं। अगर्चे इसकी कई क़िस्में हैं लेकिन ख़लीज अरब के गर्म पानियों में इसकी एक क़िस्म PENCTADA MARTESH पाई जाती है। जिसमें मोती बनाने की सलाहियत दूसरी तमाम क़िस्मों से उम्दह होती है। इसलिए अब तक बहरैन, दुबई और मसक़त के समुंदरों से हासिल होने वाले मोती मेअ़यार में आला और क़ीमत में गिरां रहे हैं। अलावह अज़ीं मोती बहरुलकाहिल, बहरे औक़यानूस, ख़लीज मैक्सिको, ख़लीज केलीफ़ोर्निया, जुनूबी हिंद और सिरीलंका के दर्मियान ख़लीज मनारका और साहिल ओमान से लेकर मसक़त तक भी पाए जाते हैं। इंडोनेशिया के मजमा अलजज़ाइर और सिंगापुर के नवाह में अगर्चे तोभी मिलते हैं लेकिन इनका मेअ़यार बड़ा हल्का होता है। सीपी की बुनियादी तौर पर दो क़िस्में क़रार दी गई हैं। एक वह जो खारे पानी यअ़नी समुंदरों में पाई जाती है और दूसरी वह जो मीठे पानी या दरयाओं में पाई जाती है।

चीन के दरयाओं में मोती वाली सीपी के बारे में लोगों को एक हज़ार क़ब्ल मसीह से मअलूमात हासिल थीं। इनके अलावह बवेरिया की झीलों, अमरीका में दरयाए मिस्सी सिपी में भी मोती वाली सीपी मिलती है मगर इनके मोती मेअ़यार में हल्के और हजम में बहुत ही छोटे होते हैं।

सीपी के अंदर रहने वाले जानवर का जिस्म लुआ़ब दार और मुलायम होता है। न तो इसकी खाल होती है और न ही कोई हड्डी। समुंदर में घूमने फिरने के दौरान अगर कोई रेत का ज़र्रा, कंकर, कीचड़ का टुकड़ा इसके अंदर दाख़िल हो जाए तो इसके नर्म मुलाएम जिस्म को शदीद तकलीफ़ होती है। कुदरत ने इस तकलीफ़ से बचाने के लिए इसके जिस्म में ऐसे लुआ़ब पैदा किया है जो इन अज़िय्यत देने वाले बैरूनी अंसर की चुभन को ख़त्म कर देता हैं। जैसे ही वह ज़र्रह जिस्म से लगता है लेसदार लुआब ख़ारिज होते हैं और इस चीज़ पर जम कर इसे चिकना और नर्म कर देते हैं। जब तक वह अंसर वहां माजूद रहता है, मुख़्तलिफ क़िस्म के लुआब इस पर पड़ते रहते हैं। कुछ अरसे में इस कंकर की माहियत तब्दील हो जाती है और वह दूधिया रंग का गोल चमकदार मोती बन जाता है। जब तक वह जानवर ज़िंदह रहता है, मोती मोम की तरह नर्म होता है। इसके मरने के बाद मोती सख़्त हो जाता है बल्कि वह लोग जो इनका कारोबार करते हैं, सीपी के जानवर को मारने के बाद मोतियों को निकाल कर ख़ास क़िस्म की बूटियों के साथ उबालते हैं जिससे इनमें सख़्ती और चमक आ

जाती है।

सीपी के बैरूनी सख़्त, खुरदुरे ख़ोल के अंदर का वह हिस्सह जहां वह फ़ालूदह नुमा जानवर रहता है, बड़ा मुलाएम और चमकदार होता है बल्कि उसकी साख़्त भी मोती की तरह होती है। इस मुलायम और हमवार जगह पर वह जानवर आराम से रहता है। सीपी का मुंह एक तरफ़ खुल सकता है और दूसरी तरफ़ आम डब्बे की तरह इसमें क़ब्ज़ह लगा होता है इसलिए एक तरफ़ मुंह खुलने के बाद इसके दोनों टुकड़े आपस में जुड़े रहते हैं और इतना ज़्यादह भी नहीं खुल सकता कि कोई दुशमन मुंह डाल सके। या कोई बड़ी चीज़ अंदर दाख़िल हो जाए।

सीपी के अंदर दाख़िल होने वाला बैरूनी अंसर जिस हजम का होगा मोती भी उसी साइज़ का तैय्यार होगा। रेत के छोटे ज़र्रे समुंदरी लहरों के साथ इसके अंदर दाख़िल होते ही रहते हैं, इनसे छोटे–छोटे मोती बनते हैं। जिनको चूरा कह सकते हैं। हत्ता कि ऐसे 300 मोती वज़न में एक ग्राम होते हैं। इस वक़्त तक की मअलूमात के मुताबिक़ सबसे बड़ा मोती 120 ग्राम (10 तोला) वज़न का पाया जा चुका है। मोतियों को वज़न करने का पैमानह अभी तक ग्रेन है अगर्चे हीरों के वज़न क़ैरात से इसका मुक़ाबलह करे तो चार क़ैरात का एक ग्रेन होता है जो कि आशारी निज़ाम में 50 ग्राम बनता है।

मोती एक ज़ेवर है, ख़्वातीन इसका हार बनाकर पहनती आई हैं। फिर बादशाहों और नवाबों के लिबास को चमक दमक देने के लिए मोती इस्तेमाल हुए। हिंदुस्तान के नवाब और राजे अपनी पगड़ियों के इर्द–गिर्द मोतियों की मालाएं लटकते रहे। मुग़ल बादशाह लोगों को इनआम में मोतियों के हार देते थे। हैदराबाद दक्कन के उमरा शेरवानियों में सीपी के बटन लगाकर इनमें मोती जड़ाते थे। क़मीज़ों पर भी मोती के बटन देखे गए हैं। हार और बटन या कलग़ियां बनाने के लिए ज़रूरी है कि मोती एक जैसे हजम और शक्ल के हों। चूंकि यह किसी कारख़ाने में नहीं बनते, इसलिए एक ही शक्ल और वज़न के मोती काफ़ी तादाद में बयक वक़्त मयस्सर आना ख़ासा मुश्किल हो जाता है। जब कोई ताजिर एक ही हजम के कई मोती तलाश करने की महनत करता है तो वह क़ीमत भी इसी हिसाब से लगाता है। मोती अगर छोटे हों तो वह बड़े सस्ते मिलते हैं। इन दिनों सुराख़ के बग़ैर छोटे मोती 100 से 150 रुपया तोला बिकते रहे हैं। हाल में चीन से जौ की शक्ल के मगर ज़रा बड़े मोती कसीर तादाद में आए हैं। इनके छोटे–छोटे हार बड़े मक़बूल हो रहे हैं और क़ीमत भी 150 रुपए तोलह से कम है। मोती जितना बड़ा और चमकदार हो, क़ीमत इसी मुनासिबत से बढ़ जाती है। अगर इत्तिफ़ाक़ से एक ही जिसामत और शक्ल के ज़्यादह मोती मिल जाएं तो इनकी क़ीमत और भी बढ़ जाती है।

मोती निकालने का कारोबार:

मोतियों की याफ़्त और तिजारत पर शारजह, दुबई और बहरैन के अरबों की इजारह दारी रही है। पुराना तरीक़ह यह था कि बादबानी कश्तियों में अरब ताजिर ख़लीज ओमान और अरब में दूर–दूर निकल जाते, इनके साथ पेशहवर

गोता ख़ोर होते थे। उन्होंने सांस बंद करने की मश्क़ की होती थी। इसलिए यह समुंदर में डुबकी लगा कर एक से दो मिनट तक रह सकते थे। सीपी ज़्यादह गहराई में नहीं जाती। इसकी बस्तियां उमूमन 120–48 फुट गहराई में होती हैं। अकसर औक़ात चट्टानों या पत्थरों के साथ चिपकी होती हैं। इसलिए गौताख़ोर गहराई में जाकर इनको ख़ंजर से काट कर पत्थरों से अलाहिदा करके गले में लटके हुए थैले में डाल देते है। बाहर आकर यह थैला ताजिर के सुपुर्द कर दिया जाता है और वह गौता ख़ोर को उजरत डुबकियों के हिसाब से देता है आम तौर पर एक आदमी दिन में 4–5 मर्तबा डुबकी लगाता है। इनको मुसलसल सांस रोकने की वजह से आख़िरकार फेफड़ों की मुतअद्दिद बीमारियां लाहक़ हो जाती हैं। साइंसी तरक़्क़ी के साथ समुंदर से मोती निकालने का काम आसान हो गया। तेज़ रफ़्तार कश्तियां समंदरों को दूर दूर तक खंगाल सकती हैं। जबकि बादबानी कश्तियों में किसी भी अरब के लिए दाएरह कार ज़्यादह वसीअ न था। यह लोग आपस में इलाक़े तक़सीम कर लेते थे और एक शरीफ़ाना ज़बानी मुआहिदे के मुताबिक़ एक दूसरे के इलाक़े में मोती गीरी न करते थे तेज़ रफ़्तार मोटर बोट आई तो इनके साथ गोतह लगाने के सामान आ गए। इनके पास रौशनी, शार्क मछलियों से बचने के लिए बंदूक सीपी काटने के जदीद औज़ार होने की वजह से मोतियों की कसीर तअदाद हासिल करना मुम्किन हो गया है। मगर इस कारोबार में सबसे बड़ी मुश्किल सीपियों का अंधा–धुंध क़त्लेआम है। ज़राए में बेहतरी के साथ ज़्यादह सीपियां हासिल होने की वजह से अब इनकी नस्ल ख़त्म हो रही है। बल्कि ख़लीज अरब के इलाक़े में अब मोती निकालने का काम क़रीब–क़रीब ख़त्म हो गया है। क्यूंकि अब मज़ीद मोती मयस्सर नहीं आ रहे हैं।

मोतियों की मार्किट:

मोतियों की तिजारत पर सबसे बड़ी ज़रब मसनूई मोतियों से पड़ी है। मोती निकालने और बेचने वालों की मंडी बम्बई में थी। मोहम्मद अली रोड के गिर्दो–नवाह में अरब ताजिरों के दफ़ातिर थे, उनके अपने निकाले हुए या गौतह ख़ोरों से ख़रीदे हुए मोती यहां थोक में बिकते थे। इसके बाद इनकी शनाख़्त का तजुर्बह रखने वाले, मेअ़यार, शक्ल, हजम और रंगों के मुताबिक़ इनकी दरजह बंदी करते थे। घटिया और चूरा मोती बाज़ार में दवाई के लिए फ़रोख़्त हो जाते थे, जो गंदम के दाने से बड़े हों उनकी मालाए बन जाती थीं और जिनकी शक्लो सूरत अच्छी हो या मेअ़यार उम्दह हो इनको अच्छी क़ीमत के लिए न्यूयार्क की बैनुल अक़वामी मंडी में भेजा जाता था।

दूसरी जंगे अज़ीम से पहले जापान ने मोतियों की अफ़ज़ाइश में साइंसी पेश रफ़्त करके क़ुदरती मोती की पूरी सनअ़त को तबाह कर दिया। कुछ अरब ताजिरों की बरामदात में गलती से नक़ली CULTURED मोती अमरीका चले गए। अमरीकी ताजिरों ने इन पर धोखा दही और नुक़सान की तलाफ़ी के मुक़दमात करके इनकी कारोबारी साख और सरमाया ख़त्म कर दिया। कई करोड़पती ताजिर दो वक़्त की रोटी से भी लाचार हो गए और कई जेलों में बंद हो गए

और इस तरह मोतियों की तिजारत का मरकज़ बम्बई ख़त्म हो गया। दो-तीन ताजिर मफ़लूकुलहाल होने के बअद सिरीलंका, सियाम और बहरुलकाहिल के जज़ीरों की तरफ़ गए। लेकिन जापानियों ने इनको फिर सर उठाने के क़ाबिल न छोड़ा।

मोती की सनअ़त

इल्मुलहैवानात के माहिरीन ने जब यह पता चलाया कि सीपी में मोती कैसे बनता है तो उन्होंने कोशिश की कि वह इसी अमल को ख़ुद अंजाम दे कर अपनी मर्ज़ी के मोती बना लें इस काम की इब्तिदा चीन में हुई। उन्होंने गाढ़ा कीचड़ तराश कर, लकड़ी के टुकड़े सीपी के अंदर दाख़िल किए जिनसे दो तीन साल के अरसे में मोती बन गए, इस बुनियादी कामयाबी के बाद मोती बनाने का काम मरबूत शक्ल इख़्तियार कर गया। 1890 में जापानी साइंस दान कोकोची ने सीपी के अंदर एक गदा दाख़िल करके इसकी मोती साज़ी की सलाहियत को तहरीक दी। और इस तरह मोती बनाने की रफ़्तार बेहतर हो गई।

जापान के सनअ़त कारों ने तिजारती बुनियादों पर मोती बनाने का काम इस तरह शुरू किया कि समुंदर का पानी काट कर साहिलों पर तअ़मीर करदह तालाबों में ले आए जहां पर ज़ेरेआब पौदे और चट्टानें वग़ैरह बनाकर सीपी को क़ुदरती माहौल मुहैया किया। इस महदूद इलाक़े में सीपियां ले कर इनमें कंकर दाख़िल करके तारीख़ लिख कर डाल दिया जाता और जब तैय्यारी का अरसह मुकम्मल हो जाता तो मोती निकाल लिए जाते। इसमें मज़ीद तरक़्क़ी हुई, तो सीपियां लोहे के पिंजरों में डाल कर इनमें कंकर दाख़िल कर के खेप के हिसाब से समुंदर में डबो दिया जाता। सीपी की बीमारियां मालूम की गईं और हयातियात के माहिरीन इनका इलाज करने के साथ इनकी सलाहियत में इज़ाफ़ों और इस ग़र्ज़ के लिए इनको बेहतरीन ग़िज़ा भी मुहैया करते हैं। जापान में मोती बनाने के आज कल 2140 खेत हैं इनकी कामयाबियों से मुतास्सिर हो कर आस्ट्रेलिया की हुकूमत ने भी अपने यहां हालात को साज़गार पाकर जापानी माहिरीन की ख़िदमात हासिल कीं। 1970 से आस्ट्रेलिया में भी मोती परवरी की सनअ़त बाक़ाइदगी से क़ायम हो चुकी है और अब मोती की शक्ल सूरत, हजम और मेअ़यार अपने बस की बात हो गई है।

इब्तिदाई अय्याम में लोगों को शिकायत थी कि परवरदह मोती जब ज़्यादा देर तक इनसानी जिस्म के साथ रहे तो पसीने के तेज़ाब इसकी बैरूनी सतह को गला देते हैं और इनके ऊपर की तह छिलके की सूरत उतर कर मोती को बदनुमा बना देती है। गोरमिंट कालिज लाहौर में इल्मुलहयात के सरबराह प्रोफ़ैसर डाक्टर मुहम्मद सलीम साहब ने इस सनअ़त का ज़ाती तौर पर मुताअला किय है मोती साज़ी के बारे में उनका इल्म ज़ाती मुशाहिदात पर मबनी है और इनका बयान है कि वह तमाम ख़राबियां अब दूर हो चुकी हैं। परवरदा मोती भी इन्ही तीन क़िस्मों पर मुशतमिल है जिन पर असली मोती होता है। बल्कि उनकी तैयारी का अरसह भी छः माह से कम हो गया है। इसलिए अब क़ुदरती ज़रिया से हासिल किए गए मोती और परवरदह में कोई फ़र्क़ बाक़ी नहीं रहा। इसका

मतलब यह हुआ कि आराइशो ज़ेबाइश के अलावह परवरदह मोती को इलाज के लिए इस्तेअमाल करने में भी कोई अम्र मानेअ नहीं है। यह मोती बहुत सस्ते हैं।

नक़ली मोती:

इब्तिदाई अय्याम में ग़रीब लोगों का शौक़ पूरा करने के लिए शीषे के गोल टुकड़ों को दूधिया रंग और एनिमल के साथ मोती की शक्ल दी जाती रही है ताकि मोती के गहने हर शख़्स की दस्तर्स में हो जाएं, दूर से असली और नक़ली की पहचान फिर भी हो सकती थी। अब शीशे की बजाए प्लास्टिक के मोती बनते हैं जिनकी साख़्त भी इसी रंग से होती है। इसलिए बाद में छिलका उतरने का सवाल ही पैदा नहीं होता। इनकी क़ीमत बराए नाम होने की वजह से अब असली मोती को ख़रीद कर ज़ेवरात में लगाने या इनकी माला गले में पहनने का शौक़ रोज़–बरोज़ ख़त्म हो रहा है।

इरशादाते रब्बानी:

جنّٰت عدنٍ يدخلونها يحلّون فيها من اسادر من ذهبٍ ولؤلؤً ولباسهم فيها حرير...... (فاطر)

(जन्नत में बाग़ात ऐसे हैं कि जो हमें तरोताज़ह रखेंगे। जो इसमें दाख़िल होंगे इनको सोने और मोती के कंगन पहनाए जाएंगे और इनके लिबासों में रेशम होगा)

ويطوف عليهم غلمانٌ لهم كانّهم لؤلؤٌ مكنون...... (الطور:٢٤)

(इनके इर्द–गिर्द उनके ग़ुलाम ऐसे फिरेंगे जैसे कि वह छुपाए हुए मोती हों)

يخرج منهما اللؤلؤ والمرجان...... (الرحمان:٢٢)

(इन दोनों में से मोती और मर्जान निकलते हैं।)

كأمثل اللؤلؤ المكنون. جزاءً بما كانو يعملون (الواقعہ:٢٣-٢٤)

(उन आंखों की मिसाल ऐसी है कि जैसे छुपाए हुए मोती। और यह जज़ा है उनको उन आअ़माल की जो वह करते रहे थे।)

ان اللّٰه يدخل الّذين امنو وعملو الصّٰلحٰت جنّٰتٍ تجرى من تحتها الانهٰر يحلّون فيها من اساور من ذهبٍ وّ لؤلؤاً. ولباسهم فيها حرير. (الحج-٢٣)

(वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए। अल्लाह उनको जन्नत में दाखिल करता है। यह वह जगह है कि जिसके नीचे नहरें बहती हैं। और उनको सोने और मोती के कंगन पहनाए जाएंगे और उनका लिबास रेशम का हेगा।)

وما يستوى البحرانِ هذا عذبٌ فراتٌ سائغ شرابه وهذا ملحٌ احاجٌ ومن كلٍّ تاكلون لحماً طرياً وّ تستخرجون حليةً تلبسونها وترى الفلک فيه مواخر لتبتغوا من فضلهٖ لعلّكم تشكرون. (فاطر-١٢)

(और दरया कभी आपस में एक जैसे बराबर नहीं होते। यह दरया

मीठा और इसका पानी आसानी के साथ गले से उतरने वाला है। और कड़वा नमकीन पानी है। इनमें से हर एक से तुम ताज़ह गोश्त खाते हो, और इससे तुम्हारे लिए पहनने के ज़ेवर निकलते हैं, और कश्तियां इनमें पानी को चीरती हुई चलती हैं। ताकि तुम इसका फ़ज़ल तलाश करो और नेअ़मतों के लिए शुक्र गुज़ार हो जाओ।)

اومن ينشّؤا فی الحليلة. وهو فی الخصام غير مبين (الزخرف:١٨)

(क्या वह शख़्स जो गहनों में पाला जाता है और वह झगड़ों में इस तरह शामिल होता है कि वह ज़ाहिर नहीं होता।)

ويطوف عليهم ولدانٌ مخلّدون اذا رأيتهم حسبتهم لؤلؤاً منشوراً. (الانسان:١٩)

(और उनकी ख़िदमत के लिए उनके इर्द–गिर्द ऐसे नौजवान ख़ादिम हमा वक़्त हाज़िर और तअ़मीले हुक्म पर तैय्यार होंगे और यह हर वक़्त एक ही हालत में होंगे। इनको देखने से यूं लगेगा जैसे बिखरे हुए मोती हों।)

وانزل من السماء مآءً فسالت اودية بقدرها فاحتمل السّيل زبداً اربيًا ومّما يوقدون عليه فل النار ابتغاء حليةً اومتاعٍ زبدٌ مثلهٗ. كذٰلك يضرب الله الحق والباطل فاما الزّبد فيذهب جفاءً و امّا ماينفع الناس فيمكث فی الارض. كذٰلك يضرب الله الامثال...... (الرعد:١٧)

(हमने आसमान से पानी बरसाया जिससे नदी नाले अपनी वुसअ़त के मुताबिक़ फूट निकले, फिर उठालिया इनकी रौ ने झाग चढ़ा हुआ पानी, और उस चीज़ को कि वह आग में झोंकते हैं गहने (या मोतियों के हार) बनाने के लिए या असबाब के झाग हैं इसकी मानिंद, अल्लाह तआ़ला इस तरह हक़ और बातिल को वाज़ेह करने की मिसालें देता है। बातिल नाकारह होने की वजह से झाग की मानिंद बैठ जाता है और वह चीज़ कि लोगों के लिए मुफ़ीद है ज़मीन पर बाक़ी रहती है। इसी तरह अल्लाह तआ़ला मिसालें दे कर वाज़ेह करता है।)

وهو الّذی سخّر البحر لتا كلوا منه لحماً طرياً و تستخرجوا منه حليةً تلبونها وترى الفلك مواخرفيه ولتبتغوا من فضلهٖ ولعلّكم تشكرون. (النحل:١٤)

(यह वही रब है जिसने तुम्हारे लिए दरयाओं को मुसख़्ख़र किया ताकि तुम इनसे ताज़ह गोश्त खाओ और इनसे पहनावे के लिए ज़ेवर हासिल करो और कश्ती पानी को चीरती हुई चलती है ताकि तुम इसका फ़ज़ल तलाश करो यह इसलिए है कि तुम इसकी नेअ़मतों के शुक्र गुज़ार बन जाओ।)

कुतुबे मुक़द्दिसा:

दूसरी आसमानी किताब में भी कुरआन मजीद की मानिंद मोती का ज़िक्र ज़ेवर और ज़ेबाइश के सिलसिले में हैं तौरेत मुक़द्दस ने बनी इस्राईल पर नाज़िल होने वाले मन्न की तशरीह में फ़रमाया:

......और मन्न धनिये की मानिंद था और ऐसे नज़र आता था जैसे मोती, लोग इधर–उधर जाकर इसे जमअ करते (गिंती 11:7–8)

किसी के हुस्न की तारीफ़ और इसे मुज़य्यन करने के बारे में इरशाद हुआ:–

......तेरे गाल मुसलसल जुल्फ़ों में ख़ुश्नुमा हैं और तेरी गर्दन मोतियों के हारों में...... (ग़ज़लुल अलग़िज़ालात 1:10)

इंजील मुक़द्दस में मोती की अहमियत और क़दरो क़ीमत के बयान में इरशाद फ़रमाया:

(...... पाक चीज़ कुत्तों को न दो, और अपने मोती सुवरों के आगे न डालो। ऐसा न हो कि वह इनको पांव तले रौंदें और पलट कर तुमको फाड़ खावें...... (मती 7:6)

मोती की कारोबारी अहमियत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया:

फिर आस्मान की बादशाही इस सौदागरी की मानिंद है जो उम्दह मोतियों की तलाश में था। जब इसे बेश क़ीमत मोती मिला तो उसने जो कुछ उसका था, सब बेच डाला और उसे मोल ले लिया (मती 29:45:46)

औरतों को आराइशो ज़ेबाइश के बारे में नसीहत के सिलसिले में इरशाद फ़रमाया:–

......इसी तरह औरतें हयादार लिबास से शर्म और परहेज़ गारी के साथ अपने आपको संवारें। न कि बाल गूंधने और सोने और मोतियों और क़ीमती पोशाक से...... (तेमथीस 2:9)

दुनिया के मालो अस्बाब में से इन चीज़ों का ख़ुसूसी ज़िक्र किया गया है। जिनके लिए इन्सान लालच और हिर्स में मुब्तिला होता है

......और वह माल यह है, सोना, चांदी, जवाहर, मोती और महीन कत्तानी और अरग़वानी और रेश्मी और क़रमज़ी कपड़े और हर तरह की ख़ुश्बूदार लकड़ियां और हाथी दांत की तरह–तरह की चीज़ें और निहायत बेश क़ीमत लकड़ी और पीतल और लोहे और संगे मरमर की तरह की चीज़ें। (मकाशफ़ा 18:12)

जन्नत की ख़ूबसूरती के बयान में इसकी फ़सील और बुनियादों की तफ़सील में बताया गया कि इस शहरे पनाह की दीवारों में हर क़िस्म के क़ीमती पत्थरों से थीं। मसलन पहली दीवार संगे यशब की, दूसरी नीलम की।

......और बारहवीं याक़ूत की और बारह दरवाज़े बारह मोतियों के थे और हर दरवाज़ह एक मोती का था और शहर की सड़क शफ़्फ़ाफ़ शीशे की मानिंद ख़ालिस सोने की थी...... (मुकाशफ़ा 21:21)

जन्नत की यह तफ़सील नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस हदीस से मिलती-जुलती है जिसमें फ़रमाया गया कि इंसाफ़ करने वालों के लिए जन्नत में ऐसे ख़ेमे तैय्यार किए जाएंगे जो मोती से बड़े होंगे और यह मोती अंदर से ख़ाली होंगे, मक़सद यह है कि अंदर से ख़ाली होने की वजह से इनमें रिहाइश रखनी मुम्किन होगी।

मोती की अहमियत इसका शफ़्फ़ाफ़, चमकदार, बेनिशान और मुलाएम होना है। किताबे मुक़द्दस में किसी जगह मोती को खाने या दवा के तौर पर ज़िक्र नहीं किया गया।

मोती की इंजील मुक़द्दस में सुअरों के आगे मोती डालने का तज़किरा हुआ। मअ़ने लिहाज़ से आयत एक मशहूर हदीस से मिलती है जिसके मुताबिक़ किसी बे-क़दर को इल्म सिखाना बिल्कुल ऐसा है कि जैसे किसी सुअर के गले में सोने, चांदी और मोती का हार डाल दिया जाए।

इरशादाते नबी सल्ल॰:

हज़रत अबू सईद अलख़िदरी रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ادنیٰ اهل الجنة الّذی لهٗ ثمانون الف خادم. واثنتان وسبعون زوجةً وتنصب
لهٗ قبة من لؤلؤ وزبرجد وياقوت كمابين الجابية والصنعاء (ترمذی)

(जन्नत में जाने वाले कमतर शख़्स के लिए भी अस्सी हज़ार ख़ादिम, बहत्तर बीवियां होंगीं और इस के लिए एक ऐसे मस्कन तैय्यार किया जाएगा जो मोती और याक़ूत और ज़मरुद से बना होगा और इसकी वुसअ़त इतनी होगी जितना जाबियह से सनआ़ का फ़ासला है।)

इसी फ़ज़ीलत को हज़रत अबू मूसा अशअरी लिस्साने रिसालत सल्ल॰ से यूं रिवयात करते हैं:-

انَّ للمؤمنين فى الجنة لخيمة من لؤلؤةٍ واحدةٍ مجوفةٍ. عرضها وفى روايةٍ طولها.

(بخاری۔مسلم)

ईमान वालों के लिए जन्नत में ऐसे ख़ेमें नस्ब किए जाएंगे जो एक मोती से बने होंगे और अंदर से ख़ाली होंगे (ताकि रिहाइश मुम्किन हो सके) इनकी चौड़ाई और एक रिवायत में लम्बाई साठ मील होगी।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ रिवायल फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

انَّ اهل الجنة يوضع لهم منابر من نورومنا برمن لؤلؤةٍ ومان برمن ياقوت
وزبر جدٍ وذهبٍ و فضةً...... (مشکوٰۃ المصابیح)

(जन्नत में जाने वालों के लिए उम्दह मिंबर तैय्यार किए गए हैं। जिनमें नूर से बने हुए, मोती से बने हुए, याकूत से बने हुए, ज़मर्रुद से बने हुए और सोने और चांदी से बने हुए होंगे।)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. जन्नत में जाने वालों की शान के बारे में रसूलल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं।

ان علیهم التیجان ان ادنیٰ لؤلؤة منه لتضئ مابین المشرق والمغرب...... (ترمذی)

(इनके लिए ताज होंगे जिनमें सबसे अदना चीज़ मोती होगी। और इसकी चमक मश्रिक़ से मग़रिब तक महसूस हो रही होगी।)

जन्नत की तामीर के सिलसिले में हज़रत में हज़रत अबू–हुरैरह रज़ि. ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना कि:

ان الجنة حصبائها اللؤلؤ والياقوت (احمد۔ترمذی۔داری)

(जन्नत में (रास्तों के इतराफ़ में) जो पत्थर होंगे वह हक़ीक़त में मोती और याक़ूत होंगे)

हज़रत नवास बिन समआन रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोज़ हश्र हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मर्तबह के बारे में फ़रमाया:

اذا طأ طأ راسه قطر واذا رفعه قدره منه مثل جمان كاللؤلؤ ...... (ترمذی)

(जब वह अपना सर नीचे करेंगे तो इससे क़तरे गिरें गे और जब वह सर ऊपर उठाएंगे तो भी क़तरे गिरेंगे और वह मोती की तरह के होंगे।)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. रिवायत फ़रमाते है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन।

كل اناس بامامهم. قال يدعىٰ احدهم فيعطى كتاباً بيمينه ويمدله فى جسده ستون ذراعاً ويبيض وجهه ويجعل علىٰ راسه تاج من لؤلؤ يتلأ لأ فينطلق إلىٰ اصحابه فيرونه من بعده فيقولون اللهم ائتنا بهذا وبارك لنا فى هذا حتى ياتيهم فيقول لهم البشروا الكل رجل منكم مثل هذا. (ترمذی)

(रोज़े हश्र लोग अपने इमामों के साथ होंगे। एक–एक बुलाया जाएगा। जब इसका आअ़माल नामह इसके दाएं हाथ में दिया जाए गा तो इसको सत्तर लिबास पहनाने के अलावा सर पर मोतियों का ताज रखा जाएगा जो चमके गा और चेहरा सफ़ेद होगा इसके साथ इसको पास बुलाएंगे और वह अल्लाह से इसी तरह की फ़ज़ीलत की इसतदआ करेंगे। फिर फ़रमाया जाएगा कि ख़ुश हो जाओ कि सबको ऐसे ही इज़्ज़त मिलेगी।)

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

क़ुरआन मजीद में मोती और इसके फ़वाइद का ज़िक्र है इसके बावजूद मुहद्दिसीन ने इनके फ़वाइद के बारे में कोई तवज्जह नहीं की। मोतियों की माला को हिल्या और मोती को अरबी में लुअ़–लुअ़ कहते हैं लेकिन मुहम्मद अहमद **ज़हबी रह. के अलावह मुतक़द्दिमीन ने इनका कोई ज़िक्र नहीं किया। मोती के बारे में ज़हबी रह. बयान करते हैं:**

"अपनी हरारत के लिहाज़ से यह मोअ़तदिल है और इसकी ठंडक भी मोअ़तदिल है। घबराहट, इज़्तिराब, डर, वहशत और रंज के लिए मुफ़ीद है। इसको खाने से ख़ारिश कम हो जाती है। इसको आंख में डालने से रतूबत का इख़राज ख़त्म हो जाता है। इसे मुंह में रखने से दिल को ताक़त मिलती है। क्यूंकि अल्लाह तआ़ला ने कुरआन मजीद में इसका ज़िक्र किया है।

मुहद्दिस अबू–नईम असफ़हानी ने अहादीसे नबवी का एक शांदार ज़ख़ीरह ज़ाती काविशों से जमअ किया, जिसे उन्होंने "हिल्या का नाम दिया है। जिसके लफ़्ज़ी माअ़ने मोतियों का हार है।

अहादीस में मोती का ज़िक्र बतौर ज़ेवर, लिबास एक ख़ूबसूरत और चमकदार क़ीमती चीज़ के तौर पर आया है। कुरआन मजीद में भी मोती इसी सिफ़त की बिना पर मज़कूर हुआ। मोती के कमालात में इसकी चमक हमवार, मुलाएम, ख़ूबसूरत और जाज़िब होना है। इन्ही सिफ़ात की बिना पर इसकी क़ीमत मुतअय्यन होती है। यह ख़ुवाह कितना ही छोटा क्यूं न हो बेकार नहीं होता। इसलिए अहादीस में इसका ज़िक्र ख़ूबसूरती और क़ीमत के नुक़तए नज़र से किया गया है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसललम ने इसको इलाज में कोई अहमियत नहीं दी। इसकी वजह यह भी हो सकती है कि फ़वाएद मामूली होने के साथ क़ीमत ज़्यादह है या उनकी ग्रामी राए में इसमें दवाई सिफ़त न थी इसलिए उन्होंने किसी बीमारी के इलाज में मोती का ज़िक्र नहीं फ़रमाया।

अतिब्बाए क़दीम के मुशाहिदातः

अतिब्बाए क़दीम ने फ़वाइद और असर के लिहाज़ से मोती को नबातात, हैवानात और पत्थरों के दरमियान की चीज़ क़रार दिया हैं जिसमें इन तीनों के फ़वाइद शामिल हैं, इसे समुंदर से निकालने के दो बेहतरीन मौसम हैं, चैत और बेसाख। जिस मोती में सुराख़ किया गया हो उसे इलाज में इस्तेअमाल न किया जाए।

मोती बुनियादी तौर पर फ़रहत और लताफ़त पैदा करता है। आज़ाए रईसह को कुव्वत देता है। जिस्म के किसी भी हिस्से से किसी भी वजह से और ख़ास तौर पर थूक के साथ आने वाले ख़ून को बंद करता है। मुंह से बदबू दूर करता है। दमा, ख़फ़क़ान, विसवास, जुनून, दिल, जिगर और गुर्दह की बीमारियों में मुफ़ीद है। जिस्म के सुद्दे खोलता है। पथरी को ख़ारिज करता है। यर्क़ान को दूर करता है। सुफ़रावी और ख़ूनी सुद्दे खोलता है। पथरी को ख़ारिज करता है। यर्क़ान को दूर करता है। सुफ़रावी और ख़ूनी दस्तों को बंद करता है। पेशाब की जलन को दूर करता है। बवासीर की वजह से आने वाले और कसरते हैज़ के ख़ून को रोकता है। इब्ने ज़ैद से मनकूल है कि मुंह में साबुत मोती को रख कर चूसने से दिल को ताक़त आती है। मुंह से बदबू दूर होती है और जज़ाम से फ़ाएदह होता है।

ज़मानए क़दीम से आंख के इलाज और सुर्मह बनाने में मोती का इस्तेअमाल

जारी है। कहते हैं कि मोती आंख की सोज़िश को मुंदमिल करता है। नाख़ूनह, ज़ुअफ़े बसारत, जाला और पानी बहने को बंद करता है।

मोती का सफ़ूफ़ दांतों पर मलने से मसूढ़े तंदरुस्त और दांत चमकदार होते हैं। मुक़ामी तौर पर इसके सफ़ूफ़ से ज़ख़्म जल्द भरते हैं। चेहरे से छीप, झाईं, कलफ़ दूर होते हैं। अतिब्बा क़दीम इसके इस्तेअमाल के एक नुस्ख़े में इसे अर्क़े गुलाब या अर्क़े बेद मुश्क में बारह रोज़ खरल करने के बाद दो माशह सुबह नहार मुंह खाने का तरीक़ह बताते हैं।

अरस्तू से मनकूल है कि यह खरल कर्दह मोती बर्स के दाग़ों पर दो तीन मर्तबह लगाने से दाग़ मिट जाते हैं।

तिब्बे यूनानी में मोती का नाम बड़ी अहमियत से लिया जाता है लेकिन किताबों में इसके फ़वाइद और तर्कीब इस्तेअमाल की फ़हरिस्त बड़ी मुख़्तसर है। वैदों और अतिब्बा ने इसके जितने भी फ़वाइद गिनवाए हैं उनमें से कुछ तो इसमें मौजूद कैल्शियम की वजह से हैं और कुछ बराहे रास्त मोती से मुतअल्लिक़ नहीं हैं बल्कि नुसख़ह साज़ी के दौरान इज़ाफ़ी अज्ज़ा से हैं तिब्ब में मोतीं के मशहूर मुरक्कबात आख़िर में दे दिए गए हैं।

कुहलुल जवाहर एक मुफ़ीद सुर्मह है। जिसे आंखों की मुतअद्दिद बीमारियों में मुफ़ीद पाया गया है।

कीम्यावी तज्ज़ियह:

साख़्त के लिहाज से मोती और सीपी में कोई फ़र्क़ नहीं बल्कि बअ्ज़ माहिरीन मर्जान को भी इसी नौइयत से क़रार देते हैं। यह अम्र मुसल्लम है कि इन सबकी साख़्त में इस्तेअमाल होने वाला कीम्यावी अंसर कैल्शियम है। कैल्शियक के जो नमक इसमें पाए जाते हैं इनमें सबसे ज़्यादह कैल्शियम कार्बोनैट या ARAGONITE है। मोती की बैरूनी सतह पर चमक और मुलाइमियत और सीपी के अंदरूनी हिस्से पर चमक, मुलाइमियत और नर्मी जिस चीज़ से आती है इसे NACRE कहते हैं। यह इसे मुलाइम रखती और चमक देती है। इसे एक तरह का चमकदार एनिमल कह सकते हैं।

सीपी की बैरूनी सतह खुरदुरी और सख़्त होती है। इसकी साख़्त में सींग की तरह की एक चीज़ CONCHIOLINE इस्तेअमाल होती है, कीम्यावी तज्ज़ियह से मालूम हुआ है कि इसे खुरदुरी और सख़्त चीज़ में कैल्शियम के अलावह ALBUMINOID भी इस्तेअमाल होते हैं।

मोती को आग में जलाने या भस्म करने के बाद मयस्सर आने वाली चीज़ कैल्शियम है और तक़रीबन यही चीज़ सीपी को जलाने से हासिल होती है इसलिए अतिब्बा क़दीम में से बअ्ज़ उस्तादों की राए थी कि नुस्ख़ों में मोती जैसी गिरां चीज़ रखने की बजाए सीपी तज्वीज़ की जाए क्यूंकि दोनों की कीम्यावी साख़्त और तिब्बी असरात बिल्कुल एक हैं अलबत्ता फ़्रांसीसी में सीपी को भी NACRE कहते हैं। यअ्नी कि यह बज़ाते ख़ुद अनीमल का मजमूअह है।

जदीद मुशाहिदात:

मोती कम गहरे समंदर के रेतीले किनारों के करीब पाया जाता है। अमरीकह में ऐसे बहुत से होटल मौजूद हैं जहां समंदरी ख़ुराक मिलती है। बाज़ होटलों में बंद सीपी गिरां क़ीमत पर ग्राहकों को दी जाती हैं वहां पर मशहूर हैं कि सीपी के अंदर का जानवर खाने से जिस्म को ताक़त आती है। लोग इस ताक़त के हुसूल के शौक़ में सैंकड़ों डालर सर्फ करके यह सीपी लेते हैं। इसे खोल कर अंदरूनी जानवर पर नमक, मिर्च और सिर्कह छिड़क के चम्मच के साथ साबुत का साबुत निगल लेते हैं। इस ज़िम्न में कुछ दिल्चस्प मसाइल भी पैदा हुए। कुछ ग्राहकों ने जब सीपी खोली तो अंदर से मोती बरामद हुए। होटल वालों का कहना था कि हमने सौदा सीपी का किया है। इसलिए मोती हमारी मिल्कियत है। गाहक का मुअक़िकफ़ था कि मैंने बंद सीपी का सौदा किया है, अंदर से जो भी निकले वह मेरा है। मुआमले अदालतों में गए और फ़ैसला हुआ कि ग्राहक जब बंद सीपी ख़रीदे गा तो अंदर से निकलने वाली हर चीज़ इसकी होगी। जबकि होटल वाले अब मीनू में सिर्फ़ अंदर के जानवर की क़ीमत बताते हैं। अंदर से जानवर के अलावह जो कुछ भी निकले गा वह होटल का होगा जबकि ऐसे होटल भी हैं जो पूरी सीपी बेचते हैं, अंदर से जो निकले गा वह ग्राहक की क़िस्मत, लेकिन उनकी की क़ीमत ज़्यादह होती है।

सीपी से मोती निकालने के बाद एक बोटी SASBANIA ACULEATA (चौका) के पत्तों के साथ थोड़ी देर उबालते हैं जिस से मोती सख़्त और चमकदार हो जाता है जबकि बअ़ज जोहरी बसनाया हाथिया और बदागा जिसे नबाताती ज़बान में AGATIGRANDIFLORA कहते हैं और दरयाए गंगा के डेल्टा में पाए जाने वाले फूलों के साथ उबालते हैं।

मोती के तिब्बी फ़वाइद इसको सैने के बाद शुरू होते हैं। बुनियादी तौर पर मोती मुलय्यिन, मुसक्किन, मुफ़र्रह और कै आवर बयान किया गया है सय्यद सफ़ियुद्दीन इसको मुक़व्वी आअ़ज़ाए रईसह, क़ाबिज़, ख़ून को रोकने वाला, मुक़व्वी क़ल्ब, मानेअ़ इमराज़ मुतअद्दी, दिमाग़ी मसाइल जैसे कि विसवास, जुनून, ख़फ़क़ान में मुफ़ीद, ज़ुअ़फ़े मेअ़दह व जिगर व गुर्दों के लिए अक्सीर और जर्यान, कस्रते हैज़, इस्हाल का शाफ़ी इलाज क़रार देते हैं।

वैदिक तिब्ब में मोती को पीस कर इसे चिकना RUMEX VESICARIUS के पत्तों के अर्क़ में खरल किया जाए। फिर लीमूं काट कर इस सफ़ूफ़ को इसके अंदर रख दें। यह लीमूं धान के ढेर में एक हफ़्ते के लिए दबा दें हफ़्तह बाद इस सफ़ूफ़ को खटाई में डाल कर एक घंटह आग दें। निकाल कर इस सफ़ूफ़ के 2 ग्रेन सुबह नाश्ते के बाद दें। यह सफ़ूफ़ मुक्ता भस्म कहलाता है और यक़ीन किया जाता है कि यह जिस्म को ताक़त देता है। खांसी, दमह, तपे-दिक़, हल्के बुख़ारों, मिर्गी, बवासीर, लिकोरिया, आअ़साबी कमज़ोरी दर्द शक़ीक़ह में मुफ़ीद है।

एक दूसरे नुस्ख़े में मोती को लोहे चून, ऊद हिंदी, मीठा तीलिया, सीपारी के साथ अर्क़ सौंफ़ में काफ़ी मुद्दत खरल किया जाता है। यह "पतन ताकारसा" है

इसकी 4 ग्रेन मिक़दार सुबह दी जाती है और कहते हैं कि यह इमराज़ जिगर और मुरारह में अक्सीर है।

इसी तरह का एक आयुर्वैदिक "वसंत कसुमकारारसा" के नाम से मशहूर हैं जिसमें मोती को सीमाब (पारा) के साथ खरल करके इसे चूल्हे पर इस तरह रखें कि बर्तन को बराहे रास्त गर्मी न पहुंचे, बल्कि चूल्हें पर कड़ाही में रेत रखी जाए जिसके अंदर दवाई वाला बर्तन हो। जब ख़ुश्क हो जाए तो इसका एक ग्रेन सुबह–शाम शहद के शर्बत के साथ दिया जाता है और उम्मीद की जाती है कि इससे तपे दिक़ में फ़ाएदह होता है। इसके नुस्ख़े में पारा ग़ैर पसंदीदह असर है। और इसका इस्तेअमाल ख़तरनाक हो सकता है।

जदीद अतिब्बा मोती, मर्जान को भस्म करने के बाद काफ़ूर, दारचीनी, लौंग, सुर्ख़ मिर्च, जंदबेदिस्तर, सौंठ, कस्तूरी और खांड खरल करते हैं। अज्ज़ा के लिहाज़ से यह नुस्ख़ह मुफ़ीद मालूम होता है।

वैद क़लई, सोना, सिक्कह, लोहे चून वग़ैरह के साथ मोती और मर्जान का कुश्तह बनाते हैं। इस नुस्ख़े के अक्सर अज्ज़ाअ मुज़िर सहत हैं।

"दवाउल मुस्क" एक मशहूर मुरक्कब है जिसमें 29 अज्ज़ा हैं। जिनमें अंबर, आब्रेशम कस्तूरी, दरक़ नुक़रह और मोती होते हैं। क़याफ़ह है कि यह मुरक्कब दिल और अअ्साब के लिए मुफ़ीद होगा।

"जवारिश लु लु" में मोती के साथ ज़ीरह, दार चीनी, मुस्तगी रूमी, जंद बेदिस्तर, जटामटसी वग़ैरह शामिल करके तक़वियते क़ल्ब और इस्क़ात हमल को रोकने के लिए देते हैं नुस्ख़ह मुफ़ीद मालूम होता है।

मोती के साथ तिर्फला, ज़ंगार खरल करके ज़्याबेत्स में उफ़ादियत के साथ दिया जाता है। अगर ज़्याबेत्स में फ़ाएदह न भी हो तो कमज़ोरी के लिए मुफ़ीद होगा।

भारत और पाकिस्तान के शफ़ाख़ानों में मोती के जो मुरक्कबात आम तौर पर तैय्यार होते हैं और वह जिनकी उफ़ादियत अरसए दराज़ के इस्तेअमाल से साबित हो चुकी है इनमें मअ्जून जालीनूस लुअ लुई, ख़मीरा मरवारीद, मुफ़र्रह याक़ूती, कुश्ता मरवारीद, कुशता सदफ़, ख़मीरह सदफ़, ज़्यादह शोहरत रखते हैं।

मोती के बारे में आयुर्वैदिक तिब्ब के जदीद नुस्ख़े और मोती को दोबारह अहमियत एक भारती साइंसदान सर, पी॰सी॰मि॰ के मुशाहिदात से माख़ज़ हैं। उन्होंने अपनी तरफ़ से मोती को ऐसी दवाओं से मुरक्कब किया है जो ख़ुद भी मुफ़ीद हैं।

व्हील अंबर WHALE

PHYSETER- MACROCEPHALUS

दुनिया में सबसे बड़ा हैवान व्हील है। कहने में तो इसे मछली ही कहा जाता है। लेकिन यह मछली कम और गाए ज़्यादह है। मछली यह इसलिए है कि पानी में रहती है लेकिन यह अंडे नहीं देती और अपने बच्चों को दुध पिलाती है। यह

गलफड़ों के ज़रिए सांस नहीं लेती। तक़रीबन आध घंटे के बाद सतह समुंदर के ऊपर आकर अगले निस्फ़ घंटे के लिए हवा भर कर डुबकी लगा लेती है। अगर्चेह कुछ मछलियां इससे ज़्यादह अरसह भी सांस रोक सकती हैं।

व्हील को हैवानी दरजह बंदी की क़िस्म CETACEA से क़रार दिया गया है। इस सिन्फ़ के जानवर पानियों में रहते और अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं। इस सिलसिले के बड़े जानवर मसलन व्हील बर्फ़ानी समुंदरों में रहते हैं जबकि छोटे DOLPHINS वग़ैरह आम समुंदरों, दरयाओं और हत्ता कि मीठे पानियों की झीलों में भी मिलते हैं।

माहिरीने हैवानात ने व्हील की मुतअद्दिद क़िस्में बयान की हैं जो एक दूसरे से शक्ल, सूरत, सर की मोटाई और दांतों की तादाद के लिहाज़ से मुख़्तलिफ़ हैं। जिनमें दांतों की तादाद दो से तीन सौ तक हो सकती है। ख़याल किया जाता है कि इब्तिदा में व्हील का तअल्लुक़ ज़मीन पर रेंगने वाले ख़ूंख़ार जानवरों से था लेकिन हालात के नामसाइद होने की बदौलत इसने आहिस्तह–आहिस्तह समंदरों में रिहाइश इख़्तियार कर ली। अंदाज़ह लगाया गया है कि मौजूदह शक्ल को मोअरिज़े वजूद में आए तक़रीबन 70,000,000 साल का अर्सह गुज़रा है। इस तवील अरर्से में इसकी चंद क़िस्में ख़त्म हो गई हैं। इनकी बसारत मअमूली है लेकिन समाअत के लिहाज़ से यह इन्सान से दस गुना ज़्यादह अहलियत रखती है बल्कि यह ऐसी आवाज़ें भी सुन सकती है जिनको इंसानी कान सुनने के क़ाबिल नहीं होते।

व्हील का वज़न और लम्बाई इसकी क़िस्म पर मुनहसिर है और यह 4–3 से 100 फुट तक हो सकती है। यही हाल इनके वज़न का है। अब तक सबसे बड़ी व्हील का वज़न 1,36,000 किलो ग्राम या 150 टन पाया गया है। हाल ही में कराची के साहिलों के पास गर्म पानी में रहने वाली एक व्हील पकड़ी गई है। जिसका वज़न 900 मन पाया गया। कुछ क़िस्में मौसम और ख़ुराक बल्कि ज़चगी के लिए अपने ठिकाने तब्दील करती रहती है। इस नक़्ले मकानी के दौरान इनकी रफ़्तार 35 मील फ़ी घंटह से ज़्यादह भी हो सकती है। मुशाहिदह किया गया है कि इनकी सय्याहत का इलाक़ह 3000 मील तक होता है।

तौरेत मुक़द्दस और क़ुरआन मजीद में एक ऐसी मछली का तज़किरह मिलता है जिसने ख़ुदा के एक बर्गुज़ीदह नबी हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को निगल लिया। वह चंद दिन इसके पेट में रहे। फिर इनको क़ुदरते ख़ुदावंदी से बाहर निकाल लिया गया। इसके मेअदे की साख़्त और चबाने का अंदाज़ह जुदागाना है। व्हील दांत होने के बावजूद शिकार को चबाती नहीं, बल्कि इसे सालिम निगल जाती है। इसके मेअदे में शिकार को रखने और इसको हज़्म करने के कमरे अलाहिदा हैं यही वह बाइस था जिससे हज़रत यूनुस अलैहिस्स्लाम इसके पेट में जाने के बावजूद ज़िंदह रहे।

व्हेल में फ़हमो फ़िरासत दूसरे जांदारों से क़दरे ज़्यादह होती है। अगर्चे इसकी कुछ क़िस्में तन्हाई पसंद हैं। लेकिन मुसीबत के वक़्त एक दूसरे के काम आना इनका ख़ास्सा हैं अगर कोई मछली बीमार हो या ज़ख़्मी हो जाए तो दूसरी मछलियां इसके साथ जिस्म से जिस्म मिलाकर इसे खींच कर ख़तरे वाली

जगह से निकाल ले जाती हैं। ज़चगी के दौरान अपनी बहन का साथ देती हैं। इनमें माम्ता सालों तक मौजूद रहती हैं। मां का दूध धार की सूरत बच्चे के मुंह में ज़बर्दस्ती दाख़िल किया जाता है। बच्चा जवान भी हो जाए तब भी मां से तअ़ल्लुक़ नहीं तोड़ता बल्कि हर परेशानी की हालत में मां के पास आ जाता है।

व्हील की तक़रीबन एक सौ क़िस्मों में से SPERM WHALE के सर से हासिल होने वाला तेल अगर्चे मिक़दार में काफ़ी होता है। लेकिन इसे खाया नहीं जाता। इसे SPERMACETI कहते हैं। यह तेल सनअ़त, सामाने तज़ईन और मरहमें बनाने में काम आता है। जबकि व्हील का गोश्त इनसानी ख़ुराक और जानवरों की ख़ुराक में इस्तेअमाल होता है। इसकी हड्डियों का चूरा खाद में काम आता है।

सप्रम व्हील का फ़ुज़ला एक मशहूर क़ीमती दवाई "अंबर अशहब" है। लोग इसे अफ़रीक़ह और जुनूबी अमरीकह के साहिलों के पास समुंदर में तैरते हुए देख कर इकट्ठा कर लेते हैं शक्लो सूरत से भी किसी जानवर का गोबर माअ़लूम होता है।

व्हील की छोटी क़िस्म डोलफ़िन अक़्लमंद और सोशल है। इसे अगर सिधाया जाए तो बहुत से खेल सीख सकती है। इसकी इस सलाहियत से अमरीकी बहरिया ने फ़ाएदा उठाया है और वह आब्दोज़ों और सुरंगों का पता चलाने के लिए इन मछलियों को काम में ला रहे हैं।

व्हील पकड़ने की सनअ़त बर्तानियह, नारवे और हालैंड से निकल कर अमरीका गई। और अब दुनिया में सबसे बड़े बेड़े जापान और रूस के हैं. इनके पकड़ने में जदीद तोपें, बम और हेली कॉपटर इस्तेअमाल होते हैं। लेकिन इनकी नस्ल के तहफ़्फ़ुज़ के लिए नौउम्र जानवरों या बच्चे वाली मां को पकड़ना मनअ है। हां मौसम में शिकार की तअदाद मुतअय्यन की जाती है और जहां इनकी तअदाद कम होती है। वहां से इनका शिकार ममनूअ़ कर दिया जाता है।

इरशादाते रब्बानी:

وان یونس لمن المرسلین. اذابق الی الفلک المشحون. فاهم فکان من المدحفین. فالتقمه الحوت وهو ملیم. فلولا انه کان من المسبّحین. للبث فی بطنه الیٰ یوم یبعثون...... (الصافات:۱۳۹تا۱۴۴)

(बेशक यूनुस अलैहिस्सलाम हमारे फ़र्स्तादगान में से थे जब वह फ़रार होकर कश्ती पर सवार हो गए तो क़ुरआ़ अंदाज़ी पर वह समुंदर में धकेले जाने के मुस्तहिक़ क़रार पाए। इनको मछली ने निगल लिया और वह अपने आपको मलामत करने लगे और वहां हम्दो सना करते रहे। वह इस मछली के पेट में एक मुकर्रिरा मुद्दत तक महबूस रहे)

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम की जानिब से मुसलसल बे–इल्तिफ़ाती की वजह से तंग आकर अपने मिशन को छोड़ कर वहां से भाग गए। उन्होंने चाहा कि वह कशती में सवार होकर किसी दूर दराज़ बस्ती में चले जाएं जहां लोग इनको न जानते हों। लेकिन समुंदर में शदीद तूफ़ान आ गया। मल्लाहों ने महसूस किया कि हमारे अरशेह पर कोई ऐसा ग़ुलाम है जो अपने आक़ा से भाग कर आया है। चुनांचे उन्होंने ग़ुलाम पता चलाने के लिए तीन

मर्तबह कुरआ अंदाजी की। तीनों मर्तबह हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का नाम निकला और मल्लाहों ने इनको उठा कर समुंदर में फैंक दिया। तूफ़ान थम गया। दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ने एक मछली को मअमूर किया कि वह हज़रत यूनुस अलैहिस्लाम को निगल ले। जैसे ही वह समुंदर में गिरे। मछली ने उनको निगल लिया। उसने न तो उनका गोश्त खाया और न ही उनकी हड्डियां तोड़ीं। मछली के पेट में यह ख़ुदा की हम्द बयान करते, अपने गुनाह की तौबा करते और एक रिवायत के मुताबिक़ बाक़ाएदह नमाज़ पढ़ते रहे। वहां पर उन्होंने मुसलसल मुनाजात और निदामत के एतिराफ़ से अपने रब की ख़फ़गी दूर की और मछली ने उनको किनारे पर उगल दिया। जहां वह अपनी नक़ाहत के दूर होने तक कद्दू की बेल के नीचे पड़े रहे।

इस वाक़िए में हमारी मौजूदह दिल्चस्पी मछली से है। यह मछली जिसामत में इतनी बड़ी थी कि वह एक सालिम शख़्स को चबाए बग़ैर निकल गई। वह तकलीफ़ के बग़ैर वहां चंद दिन रहे यअ़नी वहां इतनी खुली जगह मौजूद थी। इस लिहाज़ से यह मछली सिर्फ़ व्हील हो सकती है।

किताबे मुक़द्दस:

तौरेत मुक़द्दस में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का वाक़िआ बयान करते हुए फ़रमाया गया कि यूहन्ना ख़ुदावंद के हुज़ूर से भाग कर सीस जाने के लिए याफ़ा पहुंचा और वहां से उन्होंने जहाज़ पर किराया दे कर सवारी की। जहाज़ चलते ही आंधी आई और ख़ुदावंद ने शदीद तूफ़ान भेजा और जहाज़ के तबाह होने का अंदेशह पैदा हो गया। जहाज़ को हल्का करने के लिए सामान समुंदर में फैंक दिया गया। मगर तूफ़ान का ज़ोर कम न हुआ। तो उन्होंने कुरआ डाला कि यह अज़ाब किस की वजह से तारी हुआ। कुरआ यूनाह के नाम निकला, उन्होंने एतिराफ़ किया कि वह ख़ुदावंद के हुज़ूर से भागे हैं। उन्होंने ख़ुद मश्वरह दिया कि मुझे उठा कर समुंदर में फैंक दो तो तूफ़ान का ज़ोर ख़त्म हो जाएगा। सो उन्होंने यूनाह को उठा कर समुंदर में फैंक दिया और तलातुम मौक़ूफ़ हुआ।

> ....."तब वह ख़ुदावंद से बहुत डर गए और उनहोंने इसके हुज़ूर कुर्बानी गुज़ारी और नज़रें मानीं, लेकिन ख़ुदावंद ने एक बड़ी मछली मुक़र्रर कर रखी थी की यूनाह को निगल जाए और यूनाह तीन दिन रात मछली के पेट में रहा। तब यूनाह ने मछली के पेट में ख़ुदावंद अपने ख़ुदासे यह दुआ की....." (यूनाह 16:17:1–1:2)

तौरेत मुक़द्दस में मज़्कूर इबादत मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जुमह है। असल दुआ सरयानी ज़बान में है। हक़ीक़त यह है कि ख़ुदावंद की बारगाह में अगर्चे किसी भी मुज़्तरिब की दुआ को पज़ीराई मयस्सर आ सकती है लेकिन दुआ अगर उन्ही अल्फ़ाज़ में अदा की जाए जिनमें यह अदा और क़ुबूल हुई तो इनकी इज़ाफ़ी बरकत भी शामिल होती है। कुरआन मजीद के मुताबिक़ इस दुआ के अलफ़ाज़ यह थे।

لآاِلٰہَ اِلّاانت سبحٰنک انّی کنت من الظّٰالمین۔

(मेरे लिए तेरे सिवा और कोई मअबूद नहीं, तेरी ज़ात पाक, और

वाला सिफ़ात है। अलबत्तह में ही हर नाफ़रमानों में से हुआ।)

इस दुआ का अहम तरीन पहलू क़ुरआन मजीद ने फ़रमाया:

فاستجبنا له ونجّينه من الغم وكذالك ننجي المؤمنين.

(हमने इसकी दुआ को क़ुबूल किया और इसे इस ग़म से निजात दिलवाई जिसमें वह मुब्तिला था। हम अपने ऊपर ईमान रखने वालों को इसी तरह मुसीबत से निकाल लिया करते हैं)

इरशादाते नबवी सल्ल०

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० रिवायत करते हैं:–

بعثنا النبي صلى الله عليه وسلم في ثلثمائة راكب و اميرنا ابو عبيدة بن الجراحؓ. فأتينا الساحل. فاصابنا جوع شديد حتى اكلنا الخبط. فالقى البحر حوتاً (يقال) لهاعنبر. فاكلنا منه شهر. وادّهنا منابودكه: حتى ثابت اجسامنا. فاخذ ابو عبيدة ضلعاً من اضلاعه و حمل رجلاً على بعيره ونصبه فمرّ تحته. (مسلم)

(एक रिवायत में इज़ाफ़ह है कि:

وارسلوامنه الى النبي صلى الله عليه وسلم.

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसललम ने हम तीन सौ सवारों को हज़रत अबू–उबैदह बिन अलजर्राह रज़ि० की क़यादत में गश्त पर रवाना फ़रमाया। हम साहिली इलाक़े की सिम्त निकल गए और हमारा राशन ख़त्म हो गया। गिज़ाई कमी इतनी हो गई कि हमने कांटेदार झाड़ियां भी खाईं। क्या देखते हैं कि समुंदर ने एक बहुत बड़ी मछली साहिल पर फैंक दी। हमने इस मछली को आधा महीना खाया। फिर अबू–उबैदह रज़ि० ने एक रोज़ इस मछली की पसली ली और इसको खड़ा किया, एक शतर सवार आराम से इस पसली के नीचे से गुज़र गया। मदीनह वापस आकर हमने इस मछली का गोश्त नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रवाना किया और उन्होंने इसे क़ुबूल फ़रमाया।)

इस मछली को अंबर का नाम दिया गया। अब की तहक़ीक़ात से मअलूम हुआ है कि दवाओं में इस्तेअमाल होने वाला अंबर या अंबर अशबब इसी मछली का फ़ुज़लह है दिलचस्प बात यह है कि इससे अंबर का सुराग़ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अता फ़रमाया।

तीन सौ फ़ाक़ह ज़दह सवारों ने इस मछली को सुबह–शाम पंदरह दिन खाया। जब मदीना आए तो उनके थैलों में अभी इसका गोश्त मौजूद था। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इसमें से नोश फ़रमाया। क्यूंकि समंदर का शिकार हलाल है। बयान से ज़ाहिर होता है कि यह मछली व्हेल थी।

मुहद्दिसीन के मुशाहिदात:

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि० बिन अलजर्राह के लशकरियों के लिए अंबर का खाना इसलिए हलाल क़रार दिया कि समुंदर का शिकार हलाल है। फिर इसका मुर्दह हलाल है। इस जानवर की मौत समुंदर के अंदर वाक़ेअ नहीं हुई बल्कि लहरों ने जब इसे किनारे पर उछाल दिया तो

उसकी वफ़ात पानी से निकलने के बाइस हुई। इस मसले पर इमाम इब्नुल क़य्युम रह॰ ने फ़िक्ही दलाइल से तवील बहस की है।

अंबर ख़ुश्बू की बेहतरीन क़िस्मों में से है। बअ्ज़ लोग इसे फ़वाइद में कस्तूरी से बेहतर क़रार देते हैं जो कि दुरुस्त नहीं क्यूंकि कस्तूरी की ख़ुश्बू को नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बेहतरीन क़रार दिया है और कस्तूरी का शुमार जन्नत की नेअ्मतों में से है।

अंबर, दिलो दिमाग़, हवासे ख़म्सह और जिस्मानी अअ्ज़ा के लिए मुक़व्वी है। फ़ालिज रअ्शा और लक़वह के अलावह बलग़मी बीमारियों, मेअ्दा के दर्द, रियाही दर्दों और क़ौलंज के लिए मुफ़ीद है। अंबर को ख़ालिस खाया जाए या किसी मअ्जून में मिलाकर इस्तेअमाल करें या इसकी धूनी लेकर यक्सां मुफ़ीद है। इसकी धूनी लेने या बार–बार सूंघने से ज़ुकाम, नज़ला, सर दर्द और दर्दे शक़ीक़ह का आराम आ जाता है।

मुहम्मद अहमद ज़हबी रह॰ भी अंबर को दिल और दिमाग़ को तक़वियत देने वाला क़रार देते हैं। बयान करते हैं कि यह हवास को निखारता है। इसे अर्क़े गुलाब के साथ इस्तेअमाल करें तो दिल की मुतअद्दिद बीमारियों में मुफ़ीद है। लोगों का कहना है कि अंबर ख़ुश्बुओं का बादशाह है। अगर्चे यह मफ़रूज़ा दुरुस्त नहीं लेकिन यह सर और आअ्साब की अक्सर बीमारियों में मुफ़ीद है। यह जुनून नज़ला, कान और नाक की बीमारियों, सीनह के इमराज़, सुआल, दमह और सोज़िशों में हद दर्जा मुफ़ीद है।

अतिब्बा क़दीम के मुशाहिदातः

अतिब्बा क़दीम ने ज़्यादह तर तवज्जह व्हेल मछली की बजाए इससे हासिल होने वाले अंबर की तरफ़ दी है। आईने अक्बरी में अंबर को दरया में उगने वाली नबातात बयान किया गया है। दूसरे अतिब्बा ने इसे नबातात बयान किया है। बाद के अतिब्बा को मग़रिबी जहाज़रानों के मुशाहिदात से यह तो पता चल गया कि अंबर व्हेल मछली का गोबर है लेकिन वह नौइयत पर मुत्तफ़िक़ न हो सके। उनका ख़याल रहा है कि व्हेल मछली जब किसी ख़ास क़िस्म की ग़िज़ा मसलन हैवानात को खाती है तो इससे जो फ़ुज़लह बनता है वह अंबर है। हकीम अल्वी ख़ान ने अंबर में मुतअद्दिद कीड़ों और कोड़ियों के ढांचे देखे, मुम्किन है यह चीज़ें हज़्म न हो सकने की वजह से फ़ुज़लह के रास्ते ख़ारिज की गई हों।

अतिब्बा ने शक्ल के एतिबार से इसकी कई क़िस्में बयान की हैं। जैसे कि ज़र्दी माइल "अंबर अशहब" गोल शक्ल वाला "अंबर शमामह" जिस पर सफ़ेद व सब्ज़ छोटे नुक़्ते हों। वह "अंबर ख़श्ख़ाशी" है। चूंकि इसकी क़ीमत ज़्यादह है इसलिए मिलावट का रिवाज आम है।

अंबर को अरवाह का मुहाफ़िज़ क़रार दिया गया है। बल्कि हवास ख़म्सह ज़ाहिरी व बातिनी को क़वी करता है। बू–अली सैना के नज़्दीक इसमें तक़वियत और तफ़रीह की बड़ी ख़ासियत है जिसमें इसको ख़ुश्बू ज़्यादह मददगार है। गीलानी के मुशाहिदात में कस्तूरी से ज़्यादह मुफ़ीद है। छः रत्ती रोज़ानह तीन

दिन तक खाने से मेअ़दे का दर्द, ख़ुवाह नया हो या पुराना। दूर हो जाता है। इसे गर्म तेलों में मिलाकर सर पर मलने या नस्वार लेने से पुराना नज़ला ज़ुकाम, फ़ालिज और लक़वह में फ़ाएदह होता है। इब्ने रिज़्वान की राए में इसका लेप करने से दर्दे शक़ीक़ह को आराम आ जाता है। यह भूख बढ़ाता है। अंबर की धूनी देने से भी कमर दर्द आम जिस्मानी कमज़ोरी, तबीअ़त का इनक़बाज़ दूर हो जाते हैं। मअ़जून में अंबर शामिल करने से यह आअ़साबी बीममारियों अज़ क़िस्म लक़वा, फ़ालिज, रअ़शह, कज़ाज़ और जुनून में मुफ़ीद है। पुरानी खांसी, फेफड़ों के ज़ख़्म, ज़ुअ़फ़े दिल, ख़फ़क़ान, ग़शी, यर्क़ान, इस्तिस्क़ह और ज़ुअ़फ़े मेअ़दह में मुफ़ीद है।

वैदों के नज़्दीक यह दिल को ताक़त देता है। इसे पान में रख कर खिलाने से बलग़म ख़ारिज होता है। एक नुस्ख़े में अंबर के साथ सोने का वरक़, मोती और शहद खरल करके चटाने से जिस्मानी और मर्दमी ताक़त में इज़ाफ़ह होता है। एक दूसरे नुस्ख़े में लौंग और जाएफ़ल के साथ बादी इमराज़ को दूर करने में दिया जाता है। बिरहमी और संख में शहद मिला कर चटाने से क़ुव्वते हाफ़िज़ह बेहतर होती है। और जुनून जाता रहता है एक मशहूर नुस्ख़ा में अंबर के साथ कस्तूरी, शंगरफ़ और ज़ाफ़रान मिलाकर इसे पान के पत्तों के पानी में खरल करके पसीने बंद करने के लिए देते हैं (इस नुस्ख़े में शंगरफ़ की मौजूदगी नुक़सानात का बाइस हो सकती है।)

हकीम सय्यद सफ़ियुद्दीन ने इसके फ़वाइद का ख़ुलास बयान करते हुए इसे मुफ़र्रेह मुक़व्वी क़ल्बो दिमाग़ क़रार दिया है। यह हरारत अज़ीज़ी को बढ़ाता और बाह को तहरीक देता है। अंबर ज़्यादह तर अअ़साब, दिमाग और दिल की बीमारियों में उफ़ादियत के साथ दिया जाता है चुनांचह फ़ालिज लक़वह, रअ़शह, कज़ाज़, ख़फ़क़ान के इलाज में इस्तेअमाल किया जाता है। ज़ुअ़फ़े मेअ़दह और दर्द मेअ़दा में मुफ़ीद है। इसको आम तौर पर ज़ुअ़फ़े बाह की अदवियह और जिस्मानी ठंडक के इलाज में इस्तेअमाल करते हैं।

तिब्बे यूनानी इसके मशहूर मुरक्कबात, ख़मीरह गाओज़बान अंबरी, मुफ़र्रह निज़ाम, ख़मीरह आब्रेशम हकीम अर्शद वाला। दवाउल मिस्क मोअ़तदिल जवाहर दार हैं। अंबर से मुशतक़ और भी कई मुरक्कबात आज कल मशहूर हैं। कुछ अतिब्बा का ख़याल है कि अंबर ग्रां होने की वजह से अकसर नुस्ख़ों में शामिल नीं किया जाता। इसलिए दवासाज़ नुस्ख़ा में अंबर की जगह इसकी ख़ुशबू शामिल कर लेते हैं। इल्मुलअदवियह की रू से कस्तूरी और अंबर के अकसर फ़वाइद चूंकि इसकी ख़ुशबू की वजह से हैं इसलिए अगर अंबर की बजाए इसकी ख़ुश्बू भी शामिल कर ली जाए तो भी फ़ाएदह हो जाएगा। अतिब्बाए क़दीम गीलानी की राए में इसका धुवां भी वही असरात रखता है जो अंबर खाने के हैं।

तिब्बे जदीद के इब्तिदाई दौर में अंबर नुस्ख़ों में इस्तेअमाल होता रहा है। असली चीज़ के हुसूल में मुश्किल और फ़वाइद के ग़ैर यक़ीनी होने के बाइस आहिस्तह—आहिस्तह मतरूक हो गया।

हकीम नज्मुलग़नी ख़ान ने व्हेल मछली की माहियत और इससे हासिल होने वाले अंबर का बयान जदीद ख़ुतूत पर किया है। वह इसको दूध की तारीफ़ में

बताते हैं, कि यह रोज़ानह साठ सत्तर मन दूध देती है जिस को दोहने के लिए एक ख़ास आला ईजाद करना पड़ा।•इसका दूध गाढ़ा, मुफ़र्रह, शीरीं और ख़ुशज़ाएक़ह होता है। इसको पीने से फ़रहत हासिल होती है बल्कि तजज़िया करने वाले इसे दूसरे किसी भी दूध से ज़्यादह लज़ीज़ क़रार देते हैं।

अतिब्बा का ख़ायाल है कि व्हेल मछली के दूध में बीमारियों को रोकने वाले अजज़ा इसी मिक़दार में होते हैं। जिसमें यह मछली के तेल में होते हैं इसलिए यह दूध मछली के तेल से भी उम्दह और मुफ़ीद होता है। व्हेल का भेजा खाने से दिक़ और सिल में फ़ाएदह होता है। यह सीने के ज़ख़्म मुंदमिल करता है और सीने के अंदर की झीलों को तक़वियत देता है।

वहेल के दूध में चिकनाई की मिक़दार 44 फ़ीसदी के क़रीब होती है। इसलिए इसे हज़्म करना आसान काम नहीं है। बल्कि यूं कहा जा सकता है कि इसके दूध में आधा दूध और आधा मक्खन होता है। अलबत्तह जिस्म में कुव्वते मुदाफ़िअत पैदा कर सकता है। इसलिए यह दूध सीने के इमराज़ ही में नहीं बल्कि इमराज़े चश्म और इमराज़े जिल्द में भी मुफ़ीद होता है।

अतिब्बा जदीद के मुशाहिदात:

मछली के सर में चर्बी का एक ज़ख़ीरह होता है इसे बाहर निकाल कर ख़ुश्क करने के बाद इसमें से निचोड़ कर SPERM OIL निकाल लिया जाता हैं इसके बाद चर्बी के ब्लाक पर कीम्यावी अमल से SPERMACETI नाम की सफ़ेद शफ़्फ़ाफ़ मोम की तरह की चीज़ हासिल की जाती है, जो बेज़ाएक़ह मगर चर्बी की बदबू देती है। जिल्द की ऐसी बीमारियों में इसे मरहम के तौर पर इस्तेअमाल करते हैं जिनमें आबले पड़ते हों या खाल उतरती हों पेशाब की जलन में भी इसे मुसक्किन असरात की वजह से इस्तेअमाल किया जाता रहा है। इसमें बुन्यिादी तौर पर PALMATIC ACID के साथ ACETYL ALCOHOL मुरक्कब होती है। और इन दो की आमेज़िश से मुलायम गिरने वाला मर्हम बना देते हैं। नुस्ख़ों में इसे CETACEUM के नाम से मौसूम किया जाता है।

व्हेल के जिस्म से एक तेल निकाला जाता है जिसे TRAIN OIL कहते हैं। यह तेल पहले मशीनों में पड़ता था। इससे दिए जलते थे और साबुन बनाया जाता था। अब इसे साबुन बनाने के साथ छपाई की सियाही, रंग रौग़न और बनासपती घी की सनअ़त में इस्तेअमाल किया जाता है। बल्कि नक़ली मक्खन की क़िस्म मार्जरेन भी इससे बनती है। जदीद उफ़ादियत में मुंह पर लगाने वाली क्रीम और मोम, बूट पॉलिश भी शामिल हैं व्हेल के BLUBBER और हड्डियों को मशीनों से कुचल कर इनको निचोड़ कर निकाला जाने वाला तेल इसके जिगर के तेल से मुख़्तलिफ़ होता है क्यूंकि जिगर से तेल बराहेरास्त नहीं निकलता बल्कि इसमें कुछ कीम्यावी अजज़ा दाख़िल करके निकाला जाता है। फिर इसको ज़रूरत के मुताबिक़ शक्ल देते हैं इसके जिगर के तेल की सबसे बड़ी ख़ुसूसियत इसमें विटामिन ए की कसीर मिक़दार और विटामिन डी की होती है। आम शख़्स के लिए इस तेल का एक क़तरह भी ज़रूरत से ज़्यादह विटामिन मुहैय्या कर सकता है।

अंबर अशहब:

यह स्प्रम व्हेल का गोबर है जो इसकी बड़ी आंत में शिकार करने पर मिलता है। वरनह बहीरए कल्ज़ुम और अफ़्रीकह के साहिलों के पास गोबर के यह टुकड़े पानी पर तैरते मिल जाते हैं। एक मछली रोज़ानह 750 पौंड गोबर ख़ारिज करती है। जिसका रंग गुलाबी या गहरा होता है। कभी कभी इसमें सफ़ेदी की झलक भी मिलती है। इस झलक वाले को अतिब्बा क़दीम ने बेहतरीन क़रार दिया है और यह सफ़ेदी माइल अशहब कहलाता है। इसमें हल्की सी ख़ुश्बू होती है लेकिन ज़ाएक़ह फीका, गर्म पानी में हल हो जाता है। फराज़ी तेल और चिकनाई में भी हल हो जाता है। लेकिन पानी में हल नहीं होता। कीम्यावी तौर पर अंबर में एक कीम्यावी अंसर AMBREIN मिक़दार का 85 फ़ीसदी पाया जाता है। बक़ायह बिल्लिसान की तरह के मुरक्कबात हैं। अंबर बुनियादी तौर पर मुक़व्वी, दाफ़ेअ अफ़ूनत और दाफ़ेअ क़ौलंज है इसलिए आम जिस्मानी कमज़ोरी, मिर्गी, आअ़साबी कमज़ोरी और हज़यान में दिया जाता है। शदीद बुख़ार के दौरान अंबर देने से मरीज़ की कुव्वते मुदाफ़िअत बेहतर होती है। हैज़ह और ताऊन में मरीज़ बेहाल हो जाता है तो इस मरहले पर अंबर देने से हालत बेहतर हो जाती है। आम तौर पर किसी मिठास में हल करके पांच ग्रेन की मिक़दार में दिया जाता है।

होम्योपैथिक तरीक़ए इलाज:

इस तरीक़ह इलाज में व्हेल मछली से हासिल होने वाली रतूबत AMBRA GRISEA के नाम से इस्तेअमाल की जाती है जिसे माहिरीन अदवियह ने अंबर का नाम भी दिया है। यह दवाई ऐसे कमज़ोर और लाग़िर बच्चों को बड़े वसूक़ से दी जाती है। जो चिड़–चिड़े और बेज़ार नज़र आते हैं। इनके जिस्म में बेहिसी सी रहती हो। जूदो रंज दुबली पतली औरतों में यह मुफ़ीद बताई जाती है जब साथ ही डकारें आती हों, ग़ौते वाली खांसी आए। बड़ी उम्र के लोगों में जब कसरते कार और जिस्मानी कमज़ोरी के एहसास के साथ जिस्म की किसी एक तरफ़ कमज़ोरी, बेहिसी इस तरह महसूस हो कि वह हिस्सा सोया सोया सा लगे। जैसे कि एक हाथ की उंगलियां सुन लगें। मज्लिसी ज़िंगदी नापसंद हो कर गोशह नशीनी को जी चाहै। ज़िंदगी उदास–उदास लगे। तबीअत में शर्मीला पन ज़्यादह, समाअ़त में कमी, बाल गिरें, दांतों से ख़ून निकले, नाक से नक्सीर आए, मसानह में दर्द, पेशाब और पाख़ानह की नालियों में जलन, औरतों में लीकोरिया की शिद्दत रात में ज़्यादह हो। इख़्तिलाजे क़ल्ब बार–बार हो। आवाज़ बैठ जाए और जिस्म पर ख़ारिश होती रहे तो अंबर की इस शक्ल को तजवीज़ किया जाता है।

होम्यो पैथिक तरीक़ह इलाज में अंबदर की एक और क़िस्म ELECTRON AMBER जिसे SUCCINUM भी कहते हैं तज्वीज़ की जाती है. यह बढ़ी हुई तिल्ली, दमह, सर दर्द, छींकों, आंख से पानी बहने, काली खांसी और पुरानी खांसी में दिया जाता है। इसके मरीज़ को बंद जगहों से दहशत होती है।

हलालो हराम

मुसलमानों पर एक आम एतिराज़ हलालो हराम का मसला है। लोग कहते हैं कि इनका मज़हब अपने मानने वालों के लिए मुतअ़द्दिद चीज़ों को ममनूअ़ क़रार दे कर इनको एहसासे महरूमी और एहसासे कमतरी में मुब्तिला करता है। नफ़्सियात की एक इस्तिलाह TABOO बड़ी फ़रावानी से इस्तेअमाल होती है।

> लाहौर में नफ़्सियात के एक यहूदी उस्ताद हुआ करते थे इन दिनों गोरमिंट और एफ़.सी. कालिज की एम.ए. नफ़यात की कुछ क्लासें मुश्तरकं होती थीं, एक दिन गै़र तबई नफ़्सियात पढ़ाते हुए उन्होंने TABOO की तशरीह में बताया कि "जब कोई शख़्स मज़हबी या रिवाजी पाबंदियों की वजह से किसी काम से रोक दिया जाए तो यह अम्र इस के लिए TABOO बन जाता है जिसके नतीजे में बहुत सी ज़हनी बीमारियां पैदा हो जाती हैं जैसे कि जब किसी मुसलमान को सुवर का गोश्त खाने से मनअ़ किया जाता है हालांकि यह एक साफ़ सुथरा जानवर है। इसका गोश्त हर तरह से मुफ़ीद है लेकिन जब कोई शख़्स मज़हबी पाबंदियों की वजह से इस अच्छी चीज़ से महरूम रहता है तो इसमें महरूमी और कमतरी के एहसास पैदा होते हैं।"

इनके यह इरशादात क्लास में मौज़ूऐ बहसो तकरार बन गए। जिसका एक नतीजह यह हुआ कि हम नफ़्सियात में एम.ए. न कर सके।

यह एक प्रोफ़ेसर की गुफ़्तुगू है जिसने अमरीकह से डाक्टरेट की डिग्री ली और वह लोगों की ज़हनी परेशानियों का इलाज करते थे। इनकों मुसलमानों पर तर्स आता था कि इनका मज़हब इनको कितनी अच्छी–अच्छी चीज़ों से महरूम किए जा रहा है। हालांकि सुवर खाना यहूदी मज़हब में भी हराम है बल्कि तौरेत के मुताबिक़ अकसर जानवरों की चर्बी भी हराम है।

मैं अपने बेटे की रेहड़ी पर बिकने वाले कटे हुए फल ले कर देने पर तैय्यार नहीं। क्यूंकि इनमें मक्खियां भिनभिनाती हैं। और गुज़रती हुई मोटरों की धूल पड़ जाने के बाद यह बीमारी का बाइस हो सकते हैं। मैं हरगिज़ यह पसंद न करूंगा कि वह सिगरेट पीना शुरू कर दे क्यूंकि सिगरेट मुतअद्दिद बीमारियों का बाइस होता है। एक मुतमद्दुन मुल्क में रहने और तरक़्क़ी पसंद ख़यालात रखने के बावजूद मेरा मुशाहिदह है कि शराब पीने से मेअ़दह और जिगर ख़राब हो जाते हैं अअ़साब कमज़ोर पड़ जाते हैं। इनसान की कुव्वते एतिमाद जाती रहती है। इसलिए मैं अपने बेटे को शराब और सिगरेट पीने की इजाज़त नहीं दे सकता। कार को तेज़ चलाना हादसात का बाइस हो सकता है। मेरा दिल चाहता है कि मेरा बेटा किसी हादसे में मुलव्विस न हो। इसलिए मैं इसे उस वक़्त तक कार चलाने की इजाज़त नहीं दूंगा। जब तक इसे महारत न हो और मुझे इत्मीनान न हो जाए कि वह इसे मुनासिब रफ़्तार पर ट्रेफ़िक के कवानीन

के मुताबिक़ चला सकता है।

मैं अपने बेटें पर इस क़िस्म की और भी पाबंदिया लगाना पसंद करूंगा। क्या इल्मे नफ़्सियात की रू से मेरी यह तमाम पाबंदियां इसकी शख़्सियत को मस्ख़ कर सकती हैं?

यह तमाम पाबंदियां इसको एक लम्बी सहत मंद और बाइज़्ज़त गुज़ारने में मददगार होंगी। इसलिए यह कहना हरगिज़ दुरुस्त नहीं हो सकता कि इनसे इसकी शख़्यित पर बुरा असर पड़ेगा या वह PSYCHOLOGICAL TABOOS का शिकार हो सकता है अपनी औलाद को अच्छी तर्बियत देना मेरी ज़िम्मेदारी है और जब मैं इसको अपने तजुर्बात के जौहर में यह बताता हूं कि तिजारत में दियानतदारी ग्राहकों को मुतास्सिर करती है और कारोबार में इज़ाफ़ह करती है। तो इसे मेरे तजुर्बे का जौहर तल्ख़ियों से गुज़रे बग़ैर मयस्सर आ जाता है। इसे बददियानती से रोकना कारोबार को तरक़्क़ी देने के लिए है। जब किसी को किसी ऐसे काम से रोका जाए जो इसके लिए नुक़सान का बाइस हो सकता हो तो इस क़िस्म की मुमानिअ़त क़तई तौर पर ज़हनी मसाइल का बाइस नहीं होती बल्कि वह इंसानी ज़हन को सहीह ख़तूत पर चलाने और अच्छाई और बुराई के दरमियान इम्तियाज़ करने की अहलियत देती है। बिलकुल यही हाल इस्लाम में हलालो हराम के मसले का है। जहां तक उसूल का तअल्लुक़ है क़ुरआन मजीद ने हलालो हराम के बारे में अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुनियादी उसूल यह बतलाया।

يامرهم بالمعروف وينههم عن المنكر ويحلّ لهم الطّيّبت ويحرّم عليهم الخبائث. (الاعراف:١٥)

(इनको अच्छे और नेक काम करने की हिदायत करें। बुरे कामों से मना करें और जितनी भी अच्छी चीज़ें हैं, वह इनको ख़ूब खाएं और जो ख़बीस (यानी तकलीफ़ देने वाला हैं) इनसे मना कर दें।"

क़ुरआन मजीद में जितनी चीज़ें अच्छी हैं इनको हलाल कहा है कि जिन से कोई तकलीफ़ हो सकती है वह हराम हैं।

اليوم احلّ لكم الطّيّبت وطعام الذين اوتو الكتب حلّ لكم وطعامكم حلّ لهم. (المائده:٣)

(आज से तुम्हारे लिए तमाम अच्छी चीज़ें हलाल कर दी गईं। तुम्हारे लिए एहले किताब के घरों का खाना जाइज़ है और इनके लिए तुम्हारे घरों का)

इस बाब में इसलाम की क़लबी वुसअ़त का मज़ाहिरह जंगे ख़ैबर में हुआ। जब एक यहूदी औरत अपने घर से बकरे की रान पका कर बारगाहे रिसालत में लाई। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न सिर्फ़ उसे क़ुबूल फ़रमाया बल्कि अपने रुफ़क़ा के हमराह इसे तनावुल फ़रमाया। उस औरत की अपनी कमीनगी

यह थी उसने इस पर ज़हर लगाया था जिससे हज़रत बशीर बिन बराअ रज़ि. शहीद हो गए। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस औरत को अपनी ज़िंदगी पर हमलह करने के जुर्म से मुआफ़ फ़रमा दिया। लेकिन जब हज़रत बशीर रज़ि. वफ़ात पा गए तो उनके क़त्ले अमदह की सज़ा उसे भुगतना पड़ी। इस अफ़सोस नाक शरात के बावजूद उन्होंने यहूदियों के घरों के खाने को कुबूल करने से मनअ नहीं फ़रमाया। इमाम इब्ने तैमियह रहमतुल्लाह इस वाक़िए को इनके ज़बीहे के जुवाज़ के लिए पेश करते हैं। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ह रह. इसकी तफ़सीर में यहां तक जाते हैं कि वह एहले किताब के अलावह सहाबियों के घरों के पकवान भी जाइज़ क़रार देते हैं। अच्छी चीज़ों की खुली छूट देते हुए फिर फ़रमाया:

احلّ لكم صيد البحر وطعامه متاعاً لكم وللسّيارة وحرّم عليكم صيد البرما دمتم حُرُماً (المائده:٩٦)

(तुम्हारे लिए समुंदर का तमाम शिकार हलाल कर दिया गया और यह इजाज़त तुम्हारे लिए और मुसाफ़िरों के लिए बड़ी नेअ्मत होगी। अलबत्तह तुम्हारे लिए ख़ुश्की का शिकार उस वक़्त तक हराम होगा जब तक कि तुम हराम की हालत में हो।)

एहराम की हालत एक वक़्ती पाबंदी है जिसकी मौजूदगी के अलावह जानवरों के हलाल होने की एक और तफसील इस तरह मयस्सर है।

احلت لكم بهيمة الانعام الّاماتيلى عليكم غير محلّى الصيد وانتم حرم. (المائده-١)

(तूम्हारे लिए चुगने वाले तमाम चौपाए हलाल कर दिए गए, सिवाए उन चीज़ों के जो पढ़ी जाती हैं तुम पर। अलबत्तह एहराम की हालत में तुम्हारे लिए शिकार हराम है)

अगली आयात में एहराम के बाद इजाज़त दे दी गई। जहा तक आम ख़ुराक का तअल्लुक़ है, फ़रमाया:—

فكلو ممّا ذكراسم الله عليه ان كنتم بايٰته مؤمنين. (الانعام:٨)

(उन तमाम चीज़ों को खुले दिल से खाओ जिन पर अल्लाह का नाम लिया गया हो बशर्तेकि तुम उसकी हिदायात पर ईमान लाने वाले हो।)

यह बात इस्लाम से शुरू नहीं हुई बल्कि वह तो तौरेत मुक़द्दस की सनद पर यह क़रार देता है कि हमने तक़रीबन उन्ही चीज़ों को मुसलमानें के लिए हलाल या हराम किया है जो बनी इस्राईल के सिलसिले में बयान की गई थीं। अलबत्ता उनमें चंद तब्दीलियां इस तरह से हैं।

كل الطعام كان حِلّا لبنى اسرائيل الا مَا حرم اسرائيل علىٰ نفسه من قبل ان تنزل التوراة. قل فاتوا بالتورٰة فاتلوها ان كنتم صادقين. (آل عمران:٩٣)

(हमने बनी इसराईल पर तमाम खाने हलाल कर दिए थे, सिवाए इन चीज़ों के जिनको यअ़कूब ने इससे पहले अपने ऊपर हराम कर लिया था और यह वाक़िअ़ह तौरेत के उतरने से पहले का है। और अगर तुमको दावह है कि तुम हक़ पर हो तो फिर तौरेत निकाल कर देख लो।)

कुरआन मजीद ने आम हालात में खाने–पीने पर सिर्फ़ एक पाबंदी रखी है वह यह कि साफ़ सुथरी और अच्छी चीज़ें खाई जाएं। ताकि खाने वाला बीमार न पड़ जाए।

इसलाम पर एतिराज़ करना कि वह लोगों को अच्छी चीज़ें खाने से मना करता है, बड़ी नाइंसाफ़ी है। क्यूंकि तौरेत मुक़द्दस में हराम चीज़ों की फ़हरिस्त कुरआन से ज़्यादह तवील है।

किताबे मुक़द्दस में हलाल और हराम का बयान:

......तो बनी इस्राईल से कहो कि सब हैवानात में से जिन जानवरों को तुम खा सकते हो वह यह हैं: जानवरों में जिसके पाऊं अलग और चिरे हुए हों और वह जुगाली करते हैं। या जिनके पाऊं अलग हैं इनमें से तुम उन जानवरों को न खाना यानी ऊंट को क्यूंकि वह जुगाली करता है पर उसके पांव अलग नहीं वह तुम्हारे लिए नापाक है और साख़ान को क्यूंकि वह जुगाली करता है पर इसके पांव अलग नहीं। वह तुम्हारे लिए नापाक है और ख़रगोश को, क्यूंकि वह जुगाली करता है पर इसके पांव अलग नहीं, वह तुम्हारे लिए नापाक है। और सुवर को क्यूंकि इसके पांव अलग और चिरे होते हैं पर वह जुगाली नहीं करता। वह भी तुम्हारे लिए नापाक है। तुम इनका गोश्त न खाना और इनकी लाशों को न छूना। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।"

......"जो जानवर पानी में रहते हैं उनमें से तुम इनको न खाना, यानी समुंदरों और दरयाओं के जानवरों में जिनके पर और छिलके हों तुम इन्हें खाओ लेकिन वह सब जानदार जो पानी यानी समंदरों और दरयाओं, वग़ैरह में चलते फिरते और रहिते हैं लेकिन उनके पर और छिलके नहीं होते वह तुम्हारे लिए मकरूह हैं और तुम्हारे लिए मकरूह ही रहेंगे।

......और परिंदो में मकरूह होने के सबब से कभी खाए न जाएं और जिनसे तुम्हें कराहत आती है। सो यह उक़ाब, इस्तिख़्वान ख़ुवर' और लगड़, और चील और हर क़िस्म के बाज़ और हर क़िस्म के कव्वे और शुत्र मुर्ग़, और चुग़द और कोकल और हर क़िस्म के शाहीन और बूम और बड़गीला और उल्लू। और क़ाज़ और हवासिल और गिध और लक़–लक़ और सब क़िस्म के बगले और हुद–हुद और चमगादड़–"
(अहबार 11:190)

तौरेत मुक़द्दस का यह बयान इसी जगह ख़त्म नहीं होता। आगे जाकर इसी हलालो हराम के मसले में ख़ुदावंद मूसा और हारून को हिदायत फ़रमाते हैं कि वह बनी इस्राईल की ख़ुराक में हलाल और हराम को वाज़ेह करके मतअय्यन कर दें।

......"और सब परदार और रेंगने वाले जानदार जितने चार पांव के बल चलते हैं तुम इन जानदारों को खा सकते हो। जिनके ज़मीन के ऊपर कूदने फांदने को पांव के ऊपर टांगें होती हैं। वह जिन्हें तुम खा सकते हो वह यह हैं। हर क़िस्म की टिड्डी, हर क़िस्म का सलआम और हर क़िसम का झींगर और हर क़िस्म का टिड्डा। यह सब परदार रेंगने वाले जानदार जिनके चार पांव हैं वह तुम्हारे लिए मकरूह है।

......जो कोई इनकी लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।" (अहबार 11:20:28)

......"और ज़मीन पर रेंगने वाले जानवरों में से जो तुम्हारे लिए नापाक हैं वह यह हैं: नेवला और चूहा और हर क़िस्म की छिपकली और जर्दों और गोह और छिपकली और सांड और गिरगट, सब रेंगने वाले जानदारों में से यह तुम्हारे लिए नापाक हैं, जो कोई इनको मरे हुए को छुए, वह शाम तक नापाक रहेगा।" (अहबार 11:29–32)

इससे आगे इरशाद हुआ।

......अगर किसी बरतन से यह लगें तो वह बरतन तोड़ दिया जाए।

तौरेत मुक़द्दस के यह इरशादात यहूदियों और ईसाइयों के लिए यक्सां तौर पर अहकामे ख़ुदावंदी का दरजह रखते हैं। इनकी किताबों की एक तफ़सील क़ुरआन मजीद ने बयान फ़रमाई।

وعلي الذين هادوا حرمنا كلّ ذى ظُفرٍ ومن البقر والغنم حرمنا عليهم شحو مهما الا ماحملت ظهورهما او الحوايا اوما اختلط بعظمٍ ......

(الانعام:١٤٦)

(यहूदियों पर हमने हराम कर दिए तमाम नाख़ुन वाले जानवर और गाए और बकरी की चर्बी भी इन पर हराम कर दी सिवाए इसके जो जानवर की कमर के ऊपर चिपकी हुई हो या अंतड़ियों और हड्डियों के साथ लगी हुई है।)

तौरेत मुक़द्दस ने चीज़ों के हलाल और हराम किए जाने के वाक़िआत और असबाब की तफ़सील बयान नहीं की। लेकिन क़ुरआन मजीद इनकी वाज़ेह हराम का सबब बयान करता है।

فبظلم من الذين هادوا حرمنا عليهم طيّبٰت احلّت لهم وبصدّهم عن سبل الله كثيراً.

(نساء:١٦٠)

(लोगों को राहे रास्त से भटकाने के जुर्म की सज़ा में हमने यहूदियों

पर बहुत सी ऐसी चीज़ें हराम कर दीं जो इनके लिए पहले हलाल थीं।)

सुवर के हराम होने के बारे में किताबे मुक़द्दस में मुतअद्दिद इरशादात मौजूद हैं।

......"पाक चीज़ें कुत्तों को न दो। और अपने मोती सुवरों के आगे न डालो ऐसा न हो कि वह इसको पांव तले रौंदें और पलट कर तुमको फाड़ें–"'

(मती 7:6)

तौरेत और इंजील में सुवर को नापाक और बदतरीन जानवर के तौर पर ज़िक्र किया गया है। मसीही उलमा से दरयाफ़्त किया गया इनमें से हर एक ने बताया कि दीन मसीही की रौ से किसी ईसाई के लिए सुवर खाना जाइज़ नहीं।

किताबे मुक़द्दस के मुताबिक़ ऊंट, सुवर, ख़रगोश, सिंघाड़ा और सुर्मई मछलियां, मगरमछ, अक़ाब, शाहीन, कव्वा, शुतर मुर्ग़, क़ोयल, चुग़द, क़ाज़, गिध, चील, लक़–लक़, बगले, हुद–हुद, चमगादड़, छपकली, नेवला, चूहा, जरज़ून, गोह, सांड, गिरगिट मतलक़न हराम हैं इनको हाथ लगाने वाला भी नापाक हो जाता है। यह अगर खाने पीने के किसी बरतन को मिस करें तो वह बरतन तोड़ दिया जाए।

दूसरी तरफ़ इस्लाम ने इस फ़हरिस्त में शुतर मुर्ग़, क़ाज़, ख़रगोश, ऊंट लक़लक़, मुर्ग़ाबियां, मछलियां हलाल क़रार दिए हैं इसका मतलब यह भी हुआ कि इस्लाम में हराम चीज़ों की फ़हरिस्त यहूदी और ईसाई मज़ाहिब से कम है।

कुछ जानवरों का गोश्त तौरेत और इंजील के मुताबिक़ मना है लेकिन ईसाई सुवर बड़े एहतमाम से खाते हैं। क्रिस्मस पर टरकी को ख़सूसी तौर पर पकाया जाता है। जबकि ख़ुदावंद ने इसको नापाक अशया की फ़हरिस्त में रखा है। अगर कोई शख़्स यहूदह या ईसाई मज़हब इख़्तियार करने के बावजूद अपने मज़हब के मुतअय्यन करदह रास्ते पर नहीं चलता तो यह किसी और का क़ुसूर नहीं। और इनके मुक़ाबले में अगर मुसलमान अपने मज़हब पर चलते हैं, और इनके दीन पर जो चीज़ें हराम की हैं। वह इन पर अमल करते हैं तो इसमें बुरा मनाने की कोई बात नहीं। यह बात तवज्जह में रहे कि इस्लाम ने ज़िस किसी चीज़ को हराम किया है उसका यह हुक्म सेहत और तंदरुस्ती के नुक़तए नज़र से है। और अगर कोई इसके ख़िलाफ़ चलेगा तो इसके बीमार होने के इमकानात मौजूद हैं।

क़ुरआन मजीद की हराम करदह चीज़ें:

क़ुरआन बुनियादी तौर पर एक अमली किताब है इसमें किसी मआमले की ग़ैर ज़ुरूरी तफ़सील नहीं। वह बात उसूल तक करता है। तफ़सील तै करना मानने वालों के लिए छोड़ देता है। या वह अपने पैग़म्बरों से तवक़्क़ोअ करता है कि वह मसले की तफ़सील से लोगों को आगाह करें। जैसे कि ज़कात, क़ुरआन की रू से ज़कात देना ज़रूरी है, कितना सरमायह जमा हो तो इस पर ज़कात वाजिब होती है और वह कितनी हो। यह तफ़सीलात शारेह अलैहिस्सलाम ने बताईं।

लेकिन हराम चीज़ों के बारे में वह एक वाज़ेह, एक मुकम्मल फ़हरिस्त यूं जारी करता है।

حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما اهلّ لغير الله به والمنخنقة والموقوذة والمتردية والنطيحة وما اكل السبع الّا ما ذكّيتم. وما ذبح على النصب و ان تستقسموا بالازلام. ذالكم فسق...... فمن اضطرنى مخمصة غير متجانفٍ الاثم. فان الله غفورٌ رحيم. يسئلونك ماذا احلّ لهم. قل احلّ لكم الطيبات. (المائدہ:۳-۴)

(हराम कर दिया गया तुम पर मुर्दार, ख़ून, सुवर का गोश्त और हर वह चीज़ जो अल्लाह के अलावह दी गई हो और गला घोंटा हुआ। लाठी से मारा हुआ, बुलंदी से गिरा हुआ, टक्कर मारा हुआ और दरिंदे का खाया हुआ। मगर कि जिनको तुम ज़िबह कर लो, और जो ज़िबह किया गया हो स्थानों के पास और यह कि तुम क़िस्मत मालूम करो तीरों से, क्यूंकि यह तमाम चीज़ें फ़िस्क़ हैं...... और अगर कोई मजबूरी की हालते इज़तरारी में हो भूख से और वह गुनाह की तरफ़ झुकने का कुसूर न रखता हो तो (वह कोई रू गरदानी उन अहकाम की करने पर मजबूर हो जाए तो) अल्लाह तआला मुआफ़ कर देने वाला महरबान है।)

अगर्चेह यह फ़ेहरिस्त जामेअ और मुकम्मल है लेकिन ताकीद मज़ीद के तौर पर दो एक दफ़ा समझाने के लिए फिर से बयान कर दी गई जैसे कि ख़ून तो बिलाशुबह हराम है मगर इसकी नौइयत क्या होगी?

قل لا اجد فى ما اوحى الىّ محرّم علىٰ طاعم يطعمه الّا ان يكون ميتةً او دما مسفوحاً اولحم خنزير فانه رجسٌ او فسقاً اهلّ لغير الله به. (الانعام:۱۴۳)

(इस फ़हरिस्त में मज़कूरह तमाम चीज़ें बिलकुल वही हैं जिनका ज़िक्र सूरह अलमाइदा में पहले आ चुका है। बल्कि कुरआन मजीद अपनी इब्तिदा ही में मुख़्तसर फ़हरिसत दे देता है। लेकिन इसमें चूंकि वहां भी इनका ज़िक्र बर सबीले तज़किरह था इसलिए तफ़सील किसी अगले मौक़अ के लिए उठा रखी गई। इस आयत में हलालो हराम की मामूल की फ़हरिस्त के साथ इज़तरारी कैफ़ियत का मसला भी उठाया गया। अगर्चेह यह बात सूरह अलमइदह में भी आई लेकिन यहां दूसरी सूरत में है

ياايها الّذين امنوا كلوا من طيّبات مارزقنكم واشكروا الله ان كنتم ايّاه تعبدون. انما حرّما عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما اهلّ به لغير الله. فمن اضطرّ غير باغ ولاعاد فلااثم عليه. ان الله غفور رحيم. (البقره:۱۷۳)

(ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, इस रिज़्क़ में से अच्छी चीज़ें खाओ जो हमने तुम्हें दिया है। फिर अल्लाह का शुक्र अदा करो और इसी की इबादत करो। उसने तुम पर मुर्दार, ख़ून, सुंवर का गोश्त और हर वह चीज जो अल्लाह के अलावह किसी और के नाम पर दी गई हो हराम

कर दी है और अगर तुम किसी अज़्तरारी कैफ़ियत में मुब्तिला हो और तुम्हारा इरादह उसके अहकाम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी का न हो और तुम इस फ़हरिस्त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी हमेशह के लिए करने का इरादा न रखते हो तो तुम पर कोई गुनाह न होगा। क्यूंकि अल्लाह तआला मुआफ़ करने वाला महरबान है)

इज़्तरारी कैफ़ियत का तर्जुमह हर दौर के उलमा ने अपनी समझ के मुताबिक़ किया है। कुछ के ख़याल में यह वह कैफ़ियत है जब जान का अंदेशह हो। मगर इसके साथ इसी आयत की रौशनी में चंद शराइत भी आयद होती हैं।

1. मरीज़ की हालत तशवीशनाक कहो।
2. मजबूरी की वजह से किसी हराम चीज़ का इस्तेअमाल किया जा सकता है। बशर्तेकि मरीज़ इसे ख़ुदा के अहकाम को टालने की तर्कीब क़रार न दे।
3. हराम चीज़ का इस्तेअमाल एक मुक़र्रिरह मुद्दत के लिए हो। हमेशह के लिए न हो।
4. मरीज़ ख़ुद ही फ़ैसला न करे कि उसकी बीमारी फ़ुलां हराम चीज़ से ठीक हो जाएगी। इसलिए वह इसे खाना शुरू करे और फिर अपनी मर्ज़ी की मिक़दार में लामहदूद अरसह तक खाता रहे। यह फ़ैसलह किसी मुस्तनद और हाज़िक़ तबीब ने किया हो जो इस चीज़ की मिक़दार और अरसह इस्तेअमाल वाज़ेह तौर पर मुतअय्यन करे।

इस्लाम की अपनी वुसअ़ते नज़र का यह आलम है कि वह मुतलक़न किसी चीज़ को भी तिब्बी ज़रूरतों के लिए इस्तेअमाल करने की इजाज़त देता है लेकिन पते की एक बात हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं।

ان الله لم يجعل شفاء كم فيما حرّم عليكم...... (بخاری)

(अल्लाह तआला ने किसी हराम चीज़ में शिफ़ा नहीं रखी)

अगर कोई हराम चीज़ से इलाज करना चाहता है, हमारी तरफ़ से इजाज़त है मगर यह जान लो कि इसमें फ़ाएदह हरगिज़ नहीं है।

महरमाते नबवी सल्ल.:—

क़ुरआन मजीद ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नेकी की तरफ़ बुलाने और बुराई से रोकने की ज़िम्मेदारी भी तजवीज़ फ़रमाई थी। उन्होंने मुंदरजा ज़ैल चीज़ों की वज़ाहत फ़रमाते हुए इनको हराम क़रार दिया।

(نهیٰ رسول الله صلی الله علیه وسلم عن اكل الجلالة والبانها وفی رواية ابی داؤد. قال نهیٰ عن ركوب الجلالة) (ترمذی۔ابوداؤد)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गंदगी खाने वाले जानवर को खाने और उसका दूध पीने से मना फ़रमाया। एक रिवायत में अबूदाऊद ने यह इज़ाफ़ह किया है कि गंदगी खाने वाले जानवर पर सवारी से भी मनअ फ़रमाया।)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन शबल रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं।

ان النبی صلی الله علیه وسلم نهیٰ عن اكل اللحم الضب (ترمذی)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गोह का गोश्त खाने से मनअ फ़रमाया)

अहादीस में गोह के गोश्त वाला मसअला मुतअद्दिद मुक़ामात पर आया है। बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. बताते हैं कि इनको ख़ालिद बिन वलीद रज़ि. ने बयान किया कि उन्होंने अपनी ख़ालह उम्मुलमोमिनीन मैमूनह रज़ि. के घर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह उनके दस्तरख़्वान पर भुनी हुई गोह देखी जिसे हुज़ूर ने खाने से इनकार कर दिया। ख़ालिद रज़ि. ने पूछा कि क्या यह हराम हैं। उन्होंने फ़रमाया कि मैं इसे हराम नहीं कहता। लेकिन मैं इसे खाना पसंद नहीं करता क्यूंकि यह मेरे मुल्क में नहीं होती। चुनांचे ख़ालिद रज़ि. ने हुज़ूरे अकरम सल्ल. के घर में उनकी नज़र के सामने गोह खाई।

एक और रिवायत में एक सहाबी (रज़ि.) पराठे पका कर लाए। मगर उन्होंने घी गोह की खाल के मुश्कीज़ह में रखा था इसलिए तनावुल न फ़रमाए गए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

كلّ ذاناب من السباع فاكله حرام. (بخاری ومسلم وابن ماجہ)

(इसी मौज़ूअ पर एक लफ़सीली इरशादे ग्रामी हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. से यूं मुरव्वी है।)

نهىٰ وسول الله صلى الله عيه وسلم عن كل ذى ناب من السباع و كل ذى ملخب من الطير۔ (مسلم۔ابن ماجہ)

(रसूलल्लल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमु ने कुचली वाले हर दरिंदे और पंजह के साथ शिकार करने वाले परिंदों को खाने से मना फ़रमाया।)

यह रिवायत इमाम मालिक रह., अबू दाऊद, अन्निसाई में भी इसी तरह है अलबत्तह उनकी किताबों में अबू सअलबा ख़श्नी रज़ि. रावी हैं।

हज़रत अबू सअल रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं:

حرم رسول الله صلى الله عليه وسلم لحم الحمرا لاهلية. (بخاری، مسلم)

(इसी मौज़ूअ की मज़ीद तफ़सील हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. यूं अता फ़रमाते हैं:)

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهىٰ يوم خيبر عن لحوم الحمر الاهيلة واذن فى لحوم الخيل. (بخاری۔مسلم)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर वाले दिन इन घरेलू गिधों के गोश्त को हराम फ़रमाया। जबकि घोड़े के गोश्त की इजाज़त दी।)

फ़तह ख़ैबर के मौक़ेअ पर यहूदियों के बहुत से गधे माले ग़नीमत में हाथ आए। और लोगों ने उनका गोश्त पकाना शुरू किया ही था कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जानिब मुनादी हुई कि घरेलू गधे का गोश्त हराम है जिस पर लोगों ने अपनी हांडियां उलट दीं।

घोड़े का गोश्त जाइज़ क़रार दिया था और हज़रत आएशा रज़ि. की एक रिवायत में एक मर्तबह अहदे रिसालत में मदीनह मुनव्वरह में घोड़ा पकाया गया।

मुफ़स्सिरीन के नज़दीक घोड़े को खाना इसलिए पसंदीदा नहीं कि क़ुरआन मजीद ने इसे सवारी का जानवर क़रार दिया है। इसलिए इनको खाने का मतलब इसका ग़लत एस्तेअमाल हो सकता है। चुनांचे इस मसअ्ले की मज़ीद वज़ाहत में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं।

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهىٰ عن اكل لحوم الخيل والبغال والحمير.
(نسائی۔ ابوداؤد)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घोड़े, ख़च्चर और गधे के गोश्त को खाने से मना फ़रमाया)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. रिवयात फ़रमाते हैं:

ان النبى صلى الله عليه و   نهىٰ عن اكل الهوة واكل ثمنها.
(ابوداؤد۔ ترمذی)

(नबी सल्लल्लाहो लैहि वसल्लम ने बि   का गोश्त खाने और इसकी क़ीमत की रक़म को खाने से मना फ   या।)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह र. . रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस चीज़ को समुंदर फैंक दे या पानी के हट जाने से वह तुम्हें मयस्सर आ जाए उसे खालो।

وماما ت فيه طفاً فلاتاكلوه.
(ابوداؤد۔ ابن ماجہ)

(और जो इसमें मरकर तैरने लगे इसको न खाओ।)

यह इरशादे ग्रामी एक अहम साइंसी मसअलह है क्यूंकि दरया या समंदर में पानी में ग़िलाज़त या आजकल के ज़माने में जोहरी तवानाई का माद्दा या पेट्रोल पड़ जाने से समुंदरी हयात के मुतअद्दिद अराकीन हलाक हो कर पानी के ऊपर तैरने लगते हैं यह तमाम जानवर बीमारी फैला सकते हैं और इनको खाना ख़तरनाक होता है। हाल ही में मुर्ग़ियों की ख़ुराक में ऐसी मछलियों का गोश्त शामिल किया गया जो जोहरी तवानाई से आलूदह थीं। इसी वजह से दुनिया के कई मुल्कों में करोड़ों मुर्ग़ियां हलाक हो गईं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं:

نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن قتل اربع من الدواب النملة. والنحلة والهدهد والصور.
(ابوداؤد۔ ترمذی)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलेहि वसल्लम ने चार जानवरों को क़त्ल करने से मना फ़रमाया, च्यूंटी, शहद की मक्खी, हुदहुद और चिड़ी ममोला)

हज़रत उस्मान बिन अब्दुर्रहमान रज़ि. रिवायत करते हैं कि:

ان طبيباً ذكر ضفدعاً فى داوء. عند رسول الله صلى الله عليه وسلم فنهاه عن قتلها.
(مسند احمد۔ ابوداؤد۔ النسائی)

(एक हकीम ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रू-बरू एक

नुस्ख़ो में मैंडक डालने का ज़िक्र किया! हुज़ूर सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने मैंडक को मारने से मना फ़रमाया।)

क़ुरआन मजीद ने समुंदर के तमाम जानवर हलाल क़रार दिए हैं। इस उसूल के मुताबिक़ मैंडक का खाना जाइज़ हो सकता है लेकिन इस रिवायत के मुताबिक़ मैंडक को चूंकि मारना मना फ़रमाया गया इसलिए उलमा जम्हूर इसको किसी भी ग़र्ज़ से मारना नाजाइज़ क़रार देते हैं। जबकि इमाम शाफ़ई रह. के अक़ीदे में मैंडक खाना जाइज़ है। इनके इस्तदलाल के मुताबिक़ मैंडक दवा के तौर पर नामुनासिब क़रार देता है चूंकि इसको न तो हराम किया गया और न ही मकरूह बयान हुआ इसलिए खाने में कोई मज़ाइक़ह नहीं समझा जाता। अलबत्तह दीगर अइम्मा के मुक़ल्लिदीन के नज़दीक नाजाइज़ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं।

ان رسول الله عليه وسلم قال ماقطع من البهيمة وهو حيّة. فما قطع منها فهو ميتة. (ابن ماجہ)

(अगर ज़िंदह जानवर के जिस्म से कोई टुकड़ा काट लिया जाए तो वह मुरदार है।)

इस अम्र की मज़ीद तफ़सील हज़रत तमीम अद्दारी रज़ि. की एक रिवायत में मज़हर है।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

يكون فى اخر الزمان قوم يحبّون اسنة الابل ويقطعون اذناب الغنم الا فما قطع من حىّ فهو ميت. (ابن ماجہ)

(आख़ारी ज़माने में ऐसे लोग भी होंगे जो ऊंटों के कोहान और बकरियों की दुमें काट लेंगे। इस हक़ीक़त से ख़बरदार रहो कि ज़िंदह जानवर के जिस्म से जो कुछ भी काटा जाएगा वह मुर्दार है।)

हज़रत ख़ज़ीमह बिन जुज़अ रज़ि. रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और जानवरों के बारे में पूछा।

ماتقول فى الثعلب قال ومن يا كل الثعلب. قلتُ يا رسول الله ماتقول فى الذئب. قال ويا كل الذئب احد فيه خير. (ابن ماجہ)

(आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या फ़रमाते हैं लोमड़ी के बारे में? फ़रमाया कि भला कोई लोमड़ी भी खाता है? फिर पूछा कि ए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भेड़िए के बारे में फ़रमाइए? फ़रमाया कि कभी कोई भला आदमी भेड़िया भी खाता है?)

इमाम शाफ़ई रह. लोमड़ी को हलाल बयान करते हैं क्यूंकि इनको इस हदीस के सिलसिले में एक जगह शुबह है। हालांकि लोमड़ी शिकार करती है और कुचली वाला जानवर होने की वजह से भी हराम है। बिज्जू की सूरतेहाल भी बअज़ उलमा के नज़दीक मुश्तबह है। अबू हनीफ़ह रह. इसे दांत वाला जानवर क़रार दे कर हराम बताते हैं। जबकि अब्दुर्रहमान बिन अबी अम्मारह. हज़रत जाबिर रज़ि. से पूछ कर हलाल कहते हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं।

ومن ياكل الغراب وقدسماه رسول الله صلى الله عليه وسلم فاسقا. والله ماهو من الطيبات. (ابن ماجه)

(भला कव्वा कौन खा सकता है। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे फ़ासिक़ क़रार दिया। इसलिए वह पाक जानवरों में से हरगिज़ नहीं।)

बअ़ज़ उलमा ने उस कव्वे को हराम कहा है जो शहरों में रहता और मुर्दार खाता है लेकिन खेतों का कव्वा जिसे अक़अक़ कहते हैं इसे हलाल कहा गया है। लेकिन इस मसले का हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि. ने इस रिवायत के ज़रिए फ़ैसला कर दिया।

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الحية فاسقة والعقوب فاسق والفارة فاسق والغراب فاسق. (ابن ماجه)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सांप, बिच्छू, चूहा और कव्वा फ़ासिक़ हैं।)

हज़रत आएशह रज़ि. से इस हदीस के रावी क़ासिम रज़ि. हैं। किसी ने उनसे कव्वा खाने के बारे में पूछा तो फ़रमाया कि इसे कौन खाएगा जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे फ़ासिक़ क़रार दिया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. की मज्लिस में हलाल और हराम का तज़किरा हो रहा था कि उन्होंने कुरआन मजीद की एक आयत पढ़ कर मसले को वाज़ेह करने की कोशिश की। इस दौरान एक बुज़ुर्ग जो वहां बैठे थे। उन्होंने हज़रत अबूहुरैरह रज़ि. से यह हदीस बयान की।

ذكر القنفذ عند رسوله الله صلى الله عليه وسلم فقال خبيث من الخبائث. فقال ابن عمر ان كان قال هذا رسول الله صلى الله عليه وسلم فهو كما قال. (ابوداؤد)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजिलस में ख़ारपुश्त का ज़िक्र हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लोगों को अज़िय्यत देने वालों में से एक ख़बीस है (जिसे नापाक और गंदी चीज भी तर्जुमा किया गया है।) इबने उमर रज़ि. ने कहा कि अगर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है तो फिर यह वही कुछ यअ़नी ख़बीस है जो उन्होंने फ़रमाया)

इस्लाम के महरमातः

कुरआन मजीद ने उन चीज़ों को हराम क़रार दिया है।

"मुरदार, ख़ून, बहता हुआ ख़ून, सूवर, गैरल्लाह के नाम पर दिया गया जानवर, गला घोंटा हुआ, लाठी से मारा हुआ, बुलंदी से गिरा हुआ, टक्कर मारा हुआ, दरिंदे का खाया हुआ। बुतों और मंदिरों के स्थानों का ज़बीहा और शराब।"

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न उन चीज़ों की वज़ाहत, मुशाहिदात और वही इलाही के बाद कुछ मज़ीद चीज़ों को हराम क़रार दिया है। इनमेंः–

"गंदगी खाने वाला, गोह, कुचली वाले जानवर, हर पंजाकश

परिंदा, ख़च्चर, घरेलू गधा, बिल्ली, अपने आप मर कर तैरने वाली मछली, च्यूंटी, हुद–हुद, चिड़ी ममोला, शहद की मक्खी, कव्वा, चूहा, कंडयाल, बिज्जू, लोमड़ी, भेड़िया, मैंडक, ज़िंदा जानवर के जिस्म से काटा हुआ गोश्त, जिस चीज़ में कुत्ता मुंह डाल जाए।"

हराम की साइंसी हैसियत

शराब की हुरमत:–

कुरआन मजीद ने इब्तिदाई दौर में सिर्फ़ शराब और मुनश्यिात के बारे में इरशाद फ़रमाया कि लोग नशे की हालत में नमाज़ न पढ़ें । जब लोग इतनी बात समझ गए तो फिर फ़रमाया कि शराब में फ़वाइद यक़ीनन हैं लेकिन नुक़सान फ़ाएदे से ज़्यादह हैं। इसलिए शराब को इस्तेअमाल न किया जाए। यहां हर बात को समझाया गया कि शराब पीने से बहुत सा नुक़सान हो सकता है। फिर वाज़ेह तौर पर फ़रमाया:

يايها الذين امنو انما الخمر والميسرو والانصاب والازلام. رجسٌ من عمل الشيطان فاجتنبوه. لعلكم تفلحون. (المائدہ:۹۰)

(ऐ ईमान वालो! यह जान लो कि शराब, जुआ, बुतों के स्थान और फ़ाल निकालने वाले तीर ग़िलाज़त हैं और यह शैतान के कारनामे हैं, इनसे बचते रहो ताकि तुम फ़लाह पाओ)

"तुफ़लिहून" से मुराद सिर्फ़ फ़लाह पाना ही नहीं बल्कि पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ारना भी है। यानी अगर तुम इन ख़बीस चीज़ों से बचे रहो तो तुम एक बड़ी ख़ुशगवार और पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ारो गे।

हज़रत अनस (रज़ि)• बिन मालिक (रज़ि•) ने बुख़ारी की एक लम्बी रिवायत में बताया है कि वह एक मजलिस में साक़ी गिरी कर रहे थे कि बाहर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मन्नाद ने ऐलान किया कि शराब हराम कर दी गई है। कुछ लोगों के हाथों में जाम थे, उन्होंने वज जाम फैंक दिए। एक और रिवायत के मुताबिक़ जिस रोज़ शराब के हराम होने का ऐलान हुआ। लोगों ने अपने मटके नालियों में बहा दिए और मदीनह की तमाम नालियों में शराब बह रही थी।

हज़रत तारिक़ बिन सुवैद अलहिज़रमी रज़ि• बयान करते हैं कि

قلت يا رسول الله ان بارضنا اعناباً نعتصرها تشرت منها؟ قال لا. فراجعته، قلت: انا نستشفى للمريض. قال: ان ذٰلک ليس بشفاء ولكنه داء..

(مسلم، ابوداؤد، ترمذی)

(मैं रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा कि ए अल्लाह के रसूल! हमारे मुल्क में अंगूर बहुत होते हैं क्या हम इनको निचोड़ कर पी लिया करें? उन्होंने फ़रमाया नहीं। फिर आया और पूछा कि हम अंगूर के इस पानी से मरीज़ का इलाज करते हैं, उन्होंने (सल्ल•) फ़रमाया कि यह हरगिज़ दवाई नहीं

बल्कि यह बज़ाते ख़ुद एक बीमारी है।)

अंगूर का पानी निचोड़ कर इसे थोड़ी देर पड़ा रहने देने से इसमें ख़मीर पैदा हो कर अंगूर का ग्लूकोज़ अलकुहल में तब्दील हो जाता है। जिसे WINE कहते हैं। हिंदुस्तान में लोग कच्चे नारियल उतार कर उनका पानी निकाल कर लटका देते हैं। दो दिन में यह पानी बदबूदार और बदज़ाएक़ह हो जाता है। नारियल की मिठास अलकुहल में तब्दील होकर नशा आवर बन जाती है। यौरप में जरमनी, फ्रांस, इटली और स्पेन का एक हिस्सह अंगूर की पैदावार के लिए मशहूर है। यहां के ज़मींदार अंगूर काटने के बाद इनको पैरों से मसलते हैं। फिर इस अर्क़ को लकड़ी के बड़े-बड़े मटकों में डाल कर ख़मीर लगा कर बंद कर देते हैं। चंद दिन में वाइन बन जाती है। सब लोग पी कर जश्न मनाते हैं। अंगूर के तख़मीर शुदा रस को जब कशीद किया जाता है तो ब्रांडी बनती है। जौ के पानी की शराब की कशीद व्हिस्की होती है।

हज़रत आएशह सिद्दीक़ह रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

كلّ مُسكرٍ حرام. وما أسكر الفرق فمل الكف منه حرم (ترمذی،ابوداؤد)

(हर नशहआवर चीज़ हराम है। जो चीज़ बुनियादी तौर पर नशह देने वाली है उसकी एक चुटकी भी हराम है।)

इस सिलसिले में और भी बहुत सी अहादीस मिलती हैं जिनका उमूमी मतन यह है कि:—

"इसकी मिक़दार ख़ुवाह थोड़ी हो या ज़्यादह दोनों सूरतों में हराम है।"

अहादीस में नशह आवर चीज़ की ख़ूबसूरत तअरीफ़ मिलती है।

كلّ مُسكرٍ خمرٌ و كلّ خمرٍ حرام (ابن ماجہ)

(हर नशह आवर चीज़ ख़मर है और हर ख़मर हराम है)

इस तअरीफ़ के बाद शराब पीने का कोई जुवाज़ बाक़ी नहीं रहता। बल्कि इसका तिब्बी हैसियत के बारे में हज़रत तारिक़ बिन सुवैद अलहज़रमी रज़ि॰ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बाने गिरामी से यूं बयान करते हैं:

من تداوى بالخمر فلاشفاه الله. (ابونعیم)

(जिसने किसी बीमारी के इलाज में शराब को बतौर दवा इस्तेअमाल किया, उसे अल्लाह तआला से शिफ़ा में बर्कत न होगी।)

दुनिया के अकसरो बेश्तर मुमालिक में शराब को बड़ी मक़बूलियत हासिल है। इस मक़बूलियत को देखें तो ख़याल आता है कि जिस चीज़ को एक ज़मानह इस्तेअमाल कर रहा है वह इतनी बुरी तो न होगी बल्कि आजकल हालत तो यहां तक पहुंचती है कि अकसर मुमालिक में शादी, ग़मी, त्यौहारों और हत्ता के मजलिसी ज़िंदगी में शराब एक रोज़मर्रह का मअमूल बन चुकी है। इन मआशरों में शराब न पीने वाला हैरत से देखा जाता है। क्या इनको इस आदत से कोई नुक़सान होता है।

भारत में हुकूमत ने शराबनोशी के ख़िलाफ़ बाक़ाएदह मुहिम शुरू की है।

1940 में बम्बई की हिंदू विज़ारत ने सूबह बम्बई, इसकी बंदरगाह और क्लाबों में शराब नोशी पर मुकम्मल पाबंदी लगा दी थी।

शराब पीने से मेअ्दे की झिल्लियां वरम कर जाती हैं तेज़ाबियत बढ़ती है। जिगर ख़राब होता है और आहिस्तह–आहिस्तह काम बंद करके मौत का बाइस बनता है। इस बीमारी का नाम शराब की मुनासबत से ALCOHOLOC CIRRHOSIS है आंखों के आअ्साब में सोज़िश से ज़ुअफ़े बसारत जिस्म के तमाम आअ्साब में सोज़िश और जिस्म में आम कमज़ोरी लाहिक़ हो जाती है। जदीद तरीन तहक़ीक़ात से अब यह बात पायए सबूत तक पहुंच गई है कि शराब के हर गिलास से दिमाग़ के आअ्साब ख़त्म होते हैं जो आअ्साब ज़ाया होते हैं वह दोबारह पैदा नहीं होते।। लेकिन यह एक ऐसा नुक़्स है जिसकी न तो तलाफ़ी की जा सकती है और न ही इलाज से कोई फ़ाएदह होगा। इस इनहतात से याददाश्त, कुव्वते फ़ैसलह, आअ्साबी निज़ाम रोज़--बरोज़ कमज़ोर पड़ने लगते हैं। और कुछ अरसे के बाद एक पढ़े–लिखे मुअज़्ज़िज़ आदमी का बक़ायह चुग़द रह जाता है।

इंग्लिसतान के बादशाह जार्ज शशुम के फेफड़ों से सरतान निकालने वाले अज़ीम बरतानवी सरजन सर का ख़िताब पाने के बाद कसरते शराब नोशी के बाद अपने घर के दरवाज़े पर बेहोश पाए गए। चोरों ने जब खुला दरवाज़ह और बेहोश मालिक देखा तो सारा कुछ ले गए। कुछ अरसेह बाद यह दिमाग़ी अवारिज़ में मुब्तिला हो कर पागल ख़ाने को सिधारे और वहीं वफ़ात पाई।

1936 में बरलन में दुनिया भर के माहिरीने तिब्ब की बैनुल अक़वामी कान्फ्रेंस हुई। शहरियों के डिनर में इन उलमाए फ़न ने शराब की इतनी मिक़दार हज़्म की कि किताबों में इसको पढ़ कर हैरत होती है। जब यह लोग बाहर निकले तो उनके इस्तक़बाल के लिए उचक्के, जेबतराश और तवाइफ़ें भी मौजूद थीं। अगली सुबह न किसी के पास घड़ी थी और न बटवा। कान्फ्रेंस के मुंतज़िमीन को इन तमाम मुअज़्ज़ीन के लिए वापसी का किरायह अदा करना पड़ा। कुछ ऐसे थे जो कई दिनों तक सफ़र के क़ाबिल न हुए और हस्पतालों की ज़ीनत बने रहे।

जो पीके थाने न गए वह बादह ख़ुवार निकले

पुराने डाक्टर नमूनियह, ज़ुकाम, सर्दी लगने में बच्चों को ब्रांडी देते थे। हर हस्पताल के मेडिकल वार्ड में ब्रांडी की बोतल मौजूद रहती थी। डाक्र नुस्खों में इसे SPT.VIN.GALLCI के नाम से लिखते थे। अमरीकह के माहिरीने इल्मुल इमराज़ ने यह साबित किया है कि ब्रांडी की मौजूदगी में जिस्म का दिफ़ाई निज़ाम मफ़लूज हो जाता है। ख़ास तौर पर फेफड़ों की सोज़िश में ख़ून के सफ़ेद दाने ग़ैर मुतहर्रिक हो जाते हैं और इस तरह बीमारी की तख़ारीबी कार्रवाई किसी मज़ाहेमत के बग़ैर भरपूर नुक़सान का बाइस हो जाती है। आज के मुशाहिदात नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद का सबूत हैं कि यह दवा नहीं बल्कि बज़ाते ख़ुद बीमारी है।

मुरदारः

कुरआन मजीद ने उस जानवर को जो अपने आप मर गया हो, खाने के क़ाबिल क़रार दिया है। जब कोई जानवर बीमार हो कर मरता है तो ऐन मुमकिन है कि उसका गोश्त खाने वालों को भी वह बीमारी लग जाए। जानवरों की ज़्यादह तर बीमारियां जरासीमी या वाएरस की सोज़िश से होती हैं।

सबसे पहला इमकान यह है कि मुर्दह जानवर के जिस्म से जरासीम खाने वाले के जिस्म में दाख़िल हो कर इसे बीमार कर दें। इस बीमारी के ख़तरनाक होने की ताज़ा तरीन शहादत जानवर की मौत है। जानवरों की कई बीमारियों के जरासीम इन्सानों के लिए ख़तरनाक नहीं होते लेकिन उनके गोश्त में सड़ांद तो बहरहाल होगी जो कि किसी भी तंदरुस्त फ़र्द को बीमार कर सकती है।

मरने के बाद जानवर का पोस्टमार्टम करके बाइसे मौत का पता चलाया जा सकता है। बीमारी का पता चलने के बाद यह भी पता चल सकता है कि यह बीमारी खाने को मुतास्सिर कर सकती है या नहीं। इसकी मिसाल एक मुर्ग़ी ले लीजिए। अगर आपकी मुर्ग़ी मर जाए तो इसे पहले जानवरों के किसी डाक्टर के पास ले जाएं जो इसका पोस्ट मार्टम करे फिर जिस्म के कुछ हिस्सों का ख़ुर्दबीनी मुआएना करवाईये। इन तमाम कामों के इख़राजात और वक़्त को तवज्जह में रखने के बाद फ़ैसलह आसान है कि जो जानवर किसी बीमारी से मर गया उसका गोश्त खाना किसी तंदरुस्त इंसान के लिए महफ़ूज़ नहीं।

मुर्दह जानवर के गोश्त में एक और अहम मसला ख़ून का है। जानवर को जब ज़िबह किया जाता है तो उसके जिस्म का सारा ख़ून निकल जाता है। मुर्दार के जिस्म में उसका सारा ख़ून अंदर मौजूद होता है। जिससे गोश्त जल्द ख़राब होता और गोश्त में कीम्यावी तौर पर ऐसे ज़हरीले अनासिर पैदा होते हैं जिनका इस्तेअमाल तंदरुस्ती के ख़िलाफ़ है।

ख़ूनः—

कुरआन मजीद ने हराम किया है एक जगह इसकी वज़ाहत यूं फ़रमाई कि ख़ून से मुराद वह ख़ून है जो बहने की सलाहियत रखता हो।

किसी ज़िंदह जिस्म से निकलने के बाद ख़ून फ़ौरन जम जाता है। जमने के बाद जो लोथड़ा CLOT बनता है इसमें मौजूद लहमियात को हज़्म करने वाले जौहर इनसांनी मेअदे में नहीं होते। बिल्ली, कुत्ता, शेर, चीता, भेड़िया वग़ैरह ख़ूंख़ार जानवरों के जिस्म में इसको हज़्म करने की सलाहियत पाई जाती है लेकिन इन्सान के जिस्म में नहीं होती। इसलिए अगर कोई इन्सान ख़ून पिएगा तो ख़ून उसके मेअदे में जाकर जम कर वहां हज़्म करने वाले जौहरों को भी नाकारह कर दे गा। इस तरह ख़ून न सिर्फ़ यह कि ख़ुद हज़्म न होगा बल्कि अपने बाद आने वाली ग़िज़ा को भी नाक़ाबिले हज़्म बना देता है। निज़ामे इनहज़ाम को कुछ अरसा के लिए ख़राब करने के बाद जिस्म आख़िर कार ख़ून को बाहर निकाल देता है। ऐन मुमकिन है कि इस अमल के दौरान क़ौलिंज की शिकायत भी पैदा हो जाए।

माहिरीन को यह पता चले ज़्यादह अरसा नहीं गुज़रा कि इंसानी जिस्म में

ख़ून को हज़्म करने की इस्तेअदाद नहीं होती। लेकिन हज़ारों साल पहले कुरआन मजीद ने ख़ून पीने को हराम क़रार दिया। बल्कि इस ज़िम्न में फ़न्नी अहमियत का मसला यह है कि जिस जानवर का ख़ून उसके जिस्म में मौजूद रहे उसका गोश्त जल्द ख़राब हो जाता है। और इसमें कीम्यावी ज़हरें पैदा हो जाती हैं। क्यूंकि ख़ून जरासीम के फैलाओ के लिए बेहतरीन ज़रियह है। लेबॉरेट्रियों में जब किसी मरीज़ की पीप टेस्ट करते हैं तो इसे ख़ून से तैय्यार करदह एक मुरक्कब में डाल देते हैं। पीप के जरासीम एक ही दिन में करोड़ों की तअदाद में बढ़ जाते हैं। जब इनकी तादाद ज़्यादह होती है तो इनकी न सिर्फ़ शनाख़्त आसान हो जाती है बल्कि इन पर मुख़्तलिफ़ दवाइयां डाल कर देखा जा सकता है कि वह किस तरह से मरते हैं इस तरह बीमारी का बाइस पता चलने के साथ इलाज भी मालूम हो जाता है। इस अमल में पते की बात यह है कि जरासीम ख़ून पर फलते फूलते हैं। इसलिए ख़ून का इस्तेअमाल मुतअद्दिद ख़तरात का बाइस हो सकता है।

सुवर का गोश्त:

कुरआन मजीद ने वाज़ेह और ग़ैर मुबहम अलफ़ाज़ में पांच मक़ामात पर सुवर के गोश्त को हराम क़रार दिया है। हिंदू अगर गाए का गोश्त नहीं खाते या सिख अगर मोर नहीं खाते तो वह इसे मुतबर्रक मानते हैं। इस्लाम ने सुवर के गोश्त को नजिस होने की वजह से हराम किया है। चूंकि इसलाम का कोई हुक्म हिकमत से ख़ाली नहीं होता इसलिए यक़ीन औइ ईमान का तक़ाज़ह तो यह हैं कि इस पर मनो अन यक़ीन कर लिया जाए लेकिन वह लोग जो वजूहात जानने का शौक़ रखते हैं या इसलाम को नहीं मानते और वह हैरान है कि आज कल के पले हुए सुवर, जिनका गोश्त डाक्टर चैक करने के बाद खाने की इजाज़त देते हैं, कैसे मुज़िर हो सकते हैं?"

सुवर को वह तमाम बीमारियां लाहक़ होती हैं जो इन्सानों को हो सकती हैं। मसलन इसकी ख़ून की नालियों में मोटाई आती है। उसे दिल का दौरा पड़ता है। उसे ब्लड प्रेशर होता है और जिस घर में सुवर मौजूद हो या जो उसे खाएं उसका वजूद उनके लिए हर वक़्त ख़तरे का बाइस यूं होगा कि वह अपने घूमने फिरने के दौरान बाहर से मुतअद्दिद बीमारियां ला सकता है। और यह बीमारियां वह अपने घर वालों को मुंतक़िल करने की अहलियत रखता है जबकि गाए, भैंस, बकरी और मुर्ग़ियों की अकसरो बेश्तर बीमारियां इनसानों पर असर अंदाज़ नहीं होतीं। जैसे कि मेरी तमाम मुर्ग़ियां मुतअद्दी बीमारी से मर सकती हैं लेकिन इसके बावजूद मेरे एहले ख़ानह को कोई ख़तरह न होगा। जबकि अगर इस क़िस्म की कोई बीमारी सुवरों में फैल जाए जो इनको रखने और खाने वाले महफ़ूज़ न होंगे।

सुवर को हैज़ह होता है, चेचक निकलती है, जिल्दी बीमारियां होती हैं। इसकी आंतों में मुतअद्दिद अक़साम के तुफ़ैली कीड़े परवरिश पाते हैं। जिनके अंडे मक्खियों के ज़रिए क़रीब के लोगों तक चले जाते हैं। सुराखों के लिहाज़ से हमःख़ोर है जिसे OMNIVOROUS कहते हैं। यह सब्ज़ी भी खाता है और ख़ूंख़ार भी है। यह अपना पाख़ाना भी खा सकता है और अपने बच्चे भी, जंगली

सुवरों में बावला पन भी पाया जाता है। इसकी आदात क़रीब रहने वालों और इसका गोश्त खाने वालों के लिए मुस्तिक़िल ख़तरे का बाइस रहती हैं।

जानवर के अज्साम पर परवरिश पाने वाले तुफ़ैली कीड़ों की एक क़िस्म TAENIA SOLUUM ज़्यादह तौर पर सुवर में मौजूद होती है। यह कीड़ा ख़ुराक के साथ बल्कि जिस्म में किसी भी सुराख़ के रास्ते दाख़िल हो कर आंतों, गोश्त या जोड़ों में अपना घर बना लेता है। अगर यह आंतों में हो तो इसे मुतअद्दिद दवाओं की मदद से हलाक किया जा सकता है। मगर जब यह गोश्त में जाकर अपने इर्द–गिर्द एक हिफ़ाज़ती दीवार बना लेता है तो फिर किसी दवाई का उस तक पहुंचना मुमकिन नहीं रहता। यही मुश्किल जोड़ों में बैठ जाने वाले कीड़ों से होती है। गोश्त या जोड़ में इस कीड़े की मौजूदगी मुसलसल दर्द, वरम, अकड़न पैदा करते हैं। मसलन अगर यह टांग के गोश्त में कहीं जागुज़ीं हो तो वह जिस्म का बोझ बर्दाश्त नहीं करती और दर्द की वजह से नींद और चैन उड़ जाते हैं।

इसी क़िस्म का एक और तुफ़ैली कीड़ा TAENIA SGINATA है। यह सुवर के अलावह गाए के गोश्त में भी मिलता है। लेकिन यह इनसानी जिस्म में ज़्यादह तर खाने के साथ दाख़िल होता है। चूंकि गाए का गोश्त हमेशह पका कर इस्तेअमाल होता है। इसलिए गाए के गोश्त के ज़रिए जिस्म में इसका दाख़ला मुमकिन नहीं रहता। रहबरे कामिल सल्ल. ने इस ख़तरे को भी महसूस फ़रमाया और गाए के दूध और मक्खन को पसंद करने के बावजूद गाए के गोश्त को बीमारी का बाइस क़रार दिया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम ने फ़रमाय:

عليكم بالبان البقر فانها دواء واسمانها فانها شفاء واياكم ولحومها. فان لحومها داء. (ابن السنی، ابونعیم، مستدرک الحاکم)

(तुम्हारे फ़ाएदे के लिए गाए का दूध है। क्यूंकि यह दूध और इसका मक्खन मुफ़ीद दवाए हैं। अलबत्तह इसके गोश्त में बीमारी है इससे बचो।)

तक़रीबन यही अलफ़ाज़ मुहम्मद अहमद ज़हबी रह. ने हज़रत सुहैब रज़ि. से रिवायत किए हैं कि जबकि हज़रत मलिका बिंत उमरू रज़ि. रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

البان لبقر شفاء وسمنها دواء ولحومهاداء. (طبرانی)

(गाए के दूध में शिफ़ा है। इसका मक्खन एक उमदा दवाई है और इसका गोश्त बीमारी का बाइस होता है।)

यहां गाए के गोश्त को हराम नहीं किया गया बल्कि मशवरह दिया गया है कि तुम बेशक खालो मगर ऐसा करने से तुम बीमार हो सकते हो।

गाए के गोश्त के बारे में मुहद्दिसीन ने मुतअद्दिद नागवार मुशाहिदात बयान किए हैं जिनका ज़्यादह तर तअल्लुक़ गोश्त के अपने असरात से है। जिनकी तफ़सील गोश्त के फ़वाइद के सिलसिले में अर्ज़ होगी। अलबत्तह इब्नुलक़य्युम

रह॰ ने इसे दाउलफ़ील और सरतान का बाइस क़रार दिया है। दाउलफ़ी का मतलब यह है कि जिस्म के बअ्ज़ हिस्सों पर वरम नमूदार होगा यह वरम लमग़ाई निज़ाम में तुफ़ैली कीड़ों की वजह से रुकावट से पैदा होती है। जिन से मश्हूर WUCHERIA BANCROFTI GUINEA WORD हैं अफ़्रीक़ह और मिस्र में बलहारज़िया एक अहम मूज़ी कीड़ा है। गाए के गोश्त में पाए जाने वाले यह और दूसरे तुफ़ैली कीड़े दूसरे जानवरों की निस्बत सुवर के गोश्त में ज़्यादा पाए जाते हैं।

आंतों और जिगर में पलने वाला एक ख़तरनाक कीड़ा FASCIOLOPSIS BUSKI सुवर और कुत्ते के जिस्म में पाया जाता है। इसकी वजह से इस्हाल, पेट दर्द और मौत हो सकती हैं। यह कीड़ा कुत्तों और सुवरों के क़रीब रहने से इनसानी जिस्म में दाख़िल हो कर ज़िंदगी भर की अज़िय्यत का बाइस बनता है।

यौरप में जानवर इतने नहीं होते कि वहां के लोगों की ग़िज़ाई ज़ुरूरयात पूरी हो सकें इसलिए इनकी रसद आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, चिल्ली, अरजंटाइन, कीनिया वग़ैरह से दरामद होती है। जंगे अज़ीम से पहले जर्मनी के लिए गोश्त अरजंटाइन से आता था। जब यह देखा गया कि वहां के सुवर के गोश्त की वजह से लोगों में जोड़ों की बीमारियां पैदा हो रही हैं तो जर्मन हुकूमत ने चाहा कि गोश्त का हर टुकड़ा तरसील से पहले ख़ुर्दबीनी मुआएने से गुज़रे। अगर्चे यह एक महंगा काम था लेकिन इस ख़तरनाक बीमारी से बचाओ की सिर्फ़ एक ही तर्कीब मुमकिन थी। चुनांचे जर्मनी जाने वाले गोश्त की क़ीमत में इज़ाफ़ह हुआ और माहिरीन ने हर सपलाई के साथ सर्टीफ़िकेट दिया कि इसमें तुफ़ैली कीड़े नहीं। कुछ अरसह बअद देखा गया कि तमाम एहतियातों के बावजूद कीड़ो से पैदा होने वाली बीमारियों की शरह बदस्तूर वही है जो इससे पहले थी। अब अक्सर मुमालिक में सुवर का गोश्त तवील तिब्बी मुआएने के बअद बाज़ार में आता है।

अगर्चेह यह सारी पेश बंदियां ख़ुशफ़हमी से ज़्यादह कुछ और नहीं और अगर हम मान भी लें कि इन कोशिशों के बाद गोश्त में अब कीड़े न होंगे तो इसके गोश्त की साख़्त में शामिल चर्बी के दाने इस गोश्त को दिल की बीमारियों में नामुनासिब ग़िज़ा बना देते हैं।

कमज़ोर सुवर के गोश्त से भी हिद्दत के 544 हरारे पैदा होते हैं जबकि बकरे के गोश्त में यह 245 होते हैं। बहुत से तरीक़े ऐसे हैं जिनकी मदद से इस गोश्त की मुज़रत कम की जा सकती है। सवाल यह पैदा होता है कि जब यह गोश्त आम हालात में महफ़ूज़ नहीं तो फिर ऐसी क्या तकलीफ़ है कि ज़रूर इसी को खाने के क़ाबिल बनाया जाए, जबकि यह सारा तरद्दुद एक आम आदमी के बस की बात नहीं।

सुवर का गोश्त खाने से दिल की बीमारियों और ब्लड प्रेशर का अंदेशह बढ़ जाता है। इसे खाने वालों को जोड़ो की तकालीफ़ हमेशा रहती है और सबसे बड़ी चीज़ यह है कि इसे खाने वाला हमेशह बे–ग़ैरत होता है।

गला घोंट कर मारा हुआ:

जिस जानवर को गला घोंट कर मारा गया हो उसके जिस्म का सारा ख़ून

इसके अंदर ही रह जाएगा। ख़ून अंदर रहने की वजह से गोश्त जल्द ख़राब होगा और इसका रंग गहरा सुर्ख़ होगा। जिसकी वजह से वह बदनुमा और ज़ाएक़ह में ख़राब होगा।

सांस की आम्दो रफ़्त ज़बरदस्ती बंद होने की वजह से ख़ून में कुछ कीम्यावी तब्दीलियां वाक़ेअ होती हैं। जिनकी वजह से गोश्त में ऐसी तब्दीलियां आती हैं जिनकी वजह से इसे खाना मुज़िरे सेहत हो जाता है।

चोट ख़ुवाह किसी क़िस्म की हो, इसके नतीजे में हस्टामिन पैदा होती है। इसकी बदबू गोश्त में बस जाती है। हस्टामीन के असरात और इसके नुक़सानात अलग उनवान तले बयान किए जा रहे हैं।

बुलंदी से गिरा हुआ, लाठी से मारा हुआ और टक्कर खाया हुआ जानवरः—

जब किसी जानवर या इन्सान के चोट लगती है तो उस चोट के दर्द और दहशत से जिस्म में कुछ तब्दीलियां वाक़ेअ होती हैं। मिसाल के तौर पर जब एक शखस किसी मोटर से टकराता है तो उसके जिस्म पर कुछ चोटें आती हैं। ख़्वाह उसकी कोई हड्डी भी न टूटे या जिस्म का कोई हिस्सह कुचला न जाए। इसके बावजूद इस टकराओ की दहशत और दर्द से इसका रंग उड़ जाता है। नब्ज़ कमज़ोर और सुस्त पड़ जाती है। ठंडे पसीने आते हैं मुंह ख़ुश्क हो जाता है और सर्दी लगती है, मदहोशी तारी होती है। होंटों पर पपड़ियां जमने लगती हैं इसे तिब में SURGICAL SHOCK कहते हैं।

मरीज़ का ब्लड प्रेशर गिरने के साथ आंखों की पुतलियां फैल जाती हैं। इसको एहसास होता है कि वह मरने वाला है। अगर्चेह चोट ख़तरनाक न भी हो तो भी इस कैफ़ियत से मौत हो सकती है। यह सूरतेहाल चोट की दहशत और जिस्म के आअ़साब के कुचले जाने से वाक़ेअ होती है। वरना हमने फ़सादात और कशमीर की जंगे आज़ादी में सैंकड़ों ज़ख़्म देखे हैं जिनको गोली लग जाने पर एहसास तक न हुआ। क्यूंकि वह सुरअ़त से निकल जाती है। जबकि इसके मुक़ाबले में किसी का पैर अगर गड्ढे के नीचे कुचला जाए तो अज़ियत, दहशत और दर्द ज़्यादह होते हैं। लाठियों की मार चाकू से ज़्यादा तकलीफ़ देह होती है।

चोट लगने के बअद हर हिस्सह पर पहले सुर्ख़ी आती है। फिर वरम हो जाता है। फिर यह जगह नीली पड़ जाती है। यह सब कुछ झीलों में ख़ून की नालियां फट जाने से या इनके फैल जाने से होता है। इसलिए चोट लगने के बाद अगर गर्म पानी या ईंट से सिंकाई की जाए तो वरम ज़्यादह होगा। बल्कि पहले चौबीस घंटों के दर्मियान जितना ज़्यादह सैंक किया जाएगा वरम में उतना ही इज़ाफ़ह होगा। क्यूंकि गरमाने से ख़ून का दौरह बढ़ता है। इसके मुक़ाबले में इसी जगह पर अगर ठंडा पानी रखा जाए या बर्फ़ मली जाए तो सूजन में हर लहज़ा कमी आती जाएगी। चौबीस घंटों के बाद सैंक देने का मतलब यह है कि वहां पर जमाशुदह ख़ून वापस नालियों में चला जाए। कहते हैं कि चोट लगने के बारे में यह मुशाहिदात जदीद इल्मुलइमराज़ का एक शानदार कारनामह है।

पुराने लोगों में चोट लगने के बाद गर्म-गर्म दूध पिलाने और सैंक देने का रिवाज था। चोट पर लगाने के लिए लेप किए जाते हैं जिनसे दौराने ख़ून में इज़ाफ़ह होता था। इसके बरअक्स जंगे उहद के दौरान जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुंद आलात और पत्थरों से ज़ख़्म आए उनके इलाज में सबसे पहला काम ज़ख़्मों को धोना और इन पर बार बार ठंडा पानी डालना हुआ। जिसका फ़ाएदा यह हुआ कि वहां इंजमादे ख़ून न हो सका। बहतर पहली तिब्बी इमदाद की वजह से न तो ज़ख़्मो में सोज़िश हुई न ही वरम आया और न ही शाक की अलामात ज़ाहिर हुईं।

चोट लगने के बाद और दहशत के बाइस जिस्मानी बाफ़्तों में एक कीम्यावी अंसर HISTAMINE पैदा होता है। सदमे से पैदा होने वाली तमाम अलामात हिस्टामीन के तिब्बी असरात हैं। अगर किसी तंदरुस्त शख़्स को हिस्टामीन का टीका लगा दिया जाए तो सदमे की पूरी कैफ़ियत पैदा हो जाती है। हत्ता कि हस्सासियत से पैदा होने वाली जिल्दी बीमारी ALLERGY URTICARIA में भी जिस्म पर पित्ती इसी हिस्टामीन की वजह से होती हे। जब कोई शख़्स जंगल में किसी दरिंदे को देख कर दहशत का शिकार होता है तो इस अमल से भी हिस्टामीन पैदा होती है। जब हिस्टामीन पैदा होती हे तो दरिंदे इसकी ख़ुश्बू एक फ़ासले से सूंघ सकते हैं। मसलन शेर को जब जंगल में किसी तरफ़ से हिस्टामीन की ख़ुश्बू महसूस होती है तो वह जान लेता है कि क़रीब में कोई ऐसा जानवर मौजूद है जो उसकी मौजूदगी से दहशत में मुब्तला हो गया। वह ख़ुश्बू की सिम्त सफ़र करता हुआ शिकार को दबोच लेता है। हालांकि इब्तिदा में शिकार इसके दाएरह निगाह में न था।

जानवरों में चोट खाने या ख़ास तौर पर कुंद आलह से मजरूह होने के बअद हिस्टामीन की पैदाइश की वजह से ख़ून की नालियां फैल जाती हैं और ब्लड प्रेशर गिर जाता है। गोश्त का रंग गहरा सुर्ख़ हो जाता है और इसमें हिस्टामीन की बू बस जाती है। कुरआन मजीद ने बुलंदी से गिरे हुए, लाठी से मारे हुए और टकरा कर गिरे हुए ज़ख़्मी जानवर को खाना हराम क़रार दिया है। इसलाम की यह पाबंदी ठोस साइंसी हक़ीक़त पर मबनी है। इस्लाम ने इन तमाम कैफ़ियात का अहाता कर दिया जिनमें हिस्टामीन पैदा होती है और जिस्म को मुतास्सिर करती है। वह तमाम हालात जिनमें मजरूह होने के बाद हिस्टामीन पैदा होती है। गोश्त को बदज़ाएकह, बदरंग और मुज़िरे सहत बना देते हैं।

कुरआन मजीद ने तिब्बी ज़बान में BLUNT INJURIES में ज़ख़्मी होने वाले जानवरों का गोश्त हराम क़रार दे कर अपने मानने वालों के लिए बीमारियों से बचाओ का एक अहम मंसूबह पेश किया है। हराम जानवरों की फ़हरिस्त में इनकी कैफ़ियात को देख कर हमको बहुत पहले यह एहसास हो जाना चाहिए था कि इन तमाम हालात में ऐसी क़दरे मुश्तर्क है जो इस तरह ज़ख़्मी होने वाले जानवर के गोश्त को खाने वालों के लिए मुज़िरे सेहत बना देती है। इन जानवरों को इनसानी इस्तेअमाल के नाक़ाबिल क़रार देना इस्लाम का एक अहम साइंसी एहसान है।

दरिंदों के खाए हुए जानवर:

क़ुरआन मजीद ने हर उस जानवर के गोश्त को हराम क़रार दिया है जिसको किसी दरिंदे ने फाड़ खाया हो इसके लिए यह ज़रूरी नहीं कि दरिंदे ने इसको हलाक भी किया हो। जैसे कि अगर किसी भेड़ को भेड़िया खाना शुरू करे और लोग अगर उसे बचा लें। भेड़ अगर्चेह ज़िंदह बचा ली गई लेकिन भेड़िये ने उसके जिस्म में अपने दांत दाख़िल किए। इस भेड़ का गोश्त इस्लामी तअलीमात के मुताबिक़ हराम है।

जब किसी ज़िंदा जानवर पर कोई दरिंदह हमलह आवर होता है तो दरिंदे की आमद और उसका हमलह जानवर के जिस्म में दहशत के तमाम तिब्बी अफ़आल को अमल में ले आता है। हिस्टामीन की पैदाइश दहशत के साथ–साथ ज़ख़्मों, उनकी तकलीफ़ से बढ़ जाती है। इस जानवर के जिस्म में हिस्टामीन की मौजूदगी उसे इन्सानी इस्तेअमाल के क़ाबिल बना देती है।

दरिंदों के मुंह में बावलापन के जरासीम होते हैं। शहरों मे रहने वाले कुत्तों में भी बावलापन के जरासीम जंगलों के दरिंदों के ज़रिए दाख़िल होते हैं। जब कोई भेड़िया, लोमड़ी, गीदड़, जंगली बिल्ली, चीता या शेर किसी जानवर को मुंह मारते हैं तो अपने दांतों के साथ उसके जिस्म मं बावलापन के जरासीम दाख़िल कर देते हैं बावलापन या RABIES इन अफ़सोस नाक बीमारियों में से है जिसका कोई मरीज़ आज तक ज़िंदह नहीं बचा। जिस शख़्स को बावलापन का हमलह हो जाए, किसी भी इलाज से उसकी जान नहीं बच सकती।

इसलाम को इस अम्र का इब्तिदा ही से एहसास था कि दरिंदों के ज़रिए फैलने वाले बावलेपन का इलाज मुमकिन न होगा। इसलिए उसने अपने मानने वालों को बावलापन से बचाओ के तीन अहम तरीक़े बताए।

1. घरों में कुत्ते न रखे जाएं। आवारह कुत्ते हलाक कर दिए जाएं।
2. जिस बरतन में कुत्ता मुंह डाले उसे कम अज़ कम सात मर्तबह धोया जाए जिनमें से एक मर्तबह मिट्टी से हो।
3. जिस जानवर के जिस्म में कुत्ता और उसकी बिरादरी के किसी दरिंदे का थूक दाख़िल हो जाए उसे न खाया जाए।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक हंगामी हुक्म के तहत मदीना के तमाम कुत्ते हलाक करवा दिए। फिर फ़रमाया जिस घर में कुत्ता होगा उस घर मे रहमत का फ़रिश्तह दाख़िल न होगा। दूसरे अलफ़ाज़ में कुत्ते का वजूद एहले ख़ानह के लिए हमेशह ज़हमत का बाइस होगा।

लाहौर छावनी के एक माडर्न घराने में "निशी" नामी एक मुख़्तसर सी रूसी नस्ल की कुतिया पली थी। यह घर के तमाम अफ़राद की दुलारी थी। बच्चे तमाम दिन इससे खेलते रहते और उसे गुस्से में आने की आदत न थी। उस घनारे के एक बच्चे को तिशनजी दौरे पड़े। डाक्टरों में तशख़ीस मुश्तबह रही और बच्चा मर गया। चंद दिनों बअद इसी क़िस्म की अलामात दूसरे बच्चे में पैदा हुई। उस बच्चे को हस्पताल में दिखाया तो बावलापन तश्ख़ीस हुई यह बच्चह भी फ़ौत हो गया।

कुतिया उनके घर की पली हुई थी। उसे मुतअद्दी बीमारियों और बावलेपन से

बचाओ के टीके लगे हुए थे। यह कुतिया घर से बाहर नहीं जाती थी कि दूसरे कुत्तों से बीमारी हासिल कर लेती। उसने किसी बच्चे को नहीं काटा। हमने उस कुतिया का ज़ाती तौर पर मुआएनह किया। उसके दांत बड़े छोटे और इतने मज़बूत न थे कि किसी को नुक़सान पहुंचा सके लेकिन उसकी क़ुर्बत दो बच्चों की मौत का बाइस बनी। दूसरों के इतमीनान के लिए उस कुतिया को हलाक करके उसका पोस्ट मार्टम करवाया गया, मुशाहिदेह से मअलूम हुआ कि कुतिया के जिस्म में बावलेपन के जरासीम मौजूद थे और वह दूसरों को इसमें मुब्तिला करने की इस्तेअदाद रखती थी।

माहिरीन इल्मे जरासीम में से अक्सर का ख़याल रहा है कि यह बीमारी दरिंदों से उस वक़्त हो सकती है जब उनके अपने जिस्म में जरासीम किसी और ज़रिये से दाख़िल हो चुके हों। और जब जरासीम अंदर दाख़िल हो जाएं तो इस दरिंदे की मौत दस दिन के अंदर वाक़ेअ हो जाती है। जरासीम जिस्म में मौजूद रहने के बअद इस दरिंदे को बीमार न करें ऐसा मुमकिन नहीं, लेकिन अमरीकह में चमगादड़ों की एक क़िस्म दरयाफ़्त हुई है जो ख़ुद मुब्तिला हुए बग़ैर बावलेपन के जरासीम दूसरों तक मुंतक़िल कर सकती है। माहिरीन को कुत्ते वग़ैरह पर ऐसा स्टोर होने का एतिराफ़ नहीं लेकिन लाहौर छावनी की कुतिया ही नहीं, हमारे ज़ाती मुशाहिदे में ऐसे दर्जनों वाक़िआत मौजूद हैं, जहां दरिंदा ख़ुद बीमार न था और न ही बाद में हुआ, मगर दूसरों को बीमार किया। अमरीका में फ़्लोरी नामी लड़की का एक शर्मनाक वाक़िअह तिब्बी किताबों में मज़्कूर है। महज़ कुत्ते के क़ुर्ब की वजह से बावलापन हुआ और उसका कुत्ता बीमारियों से महफ़ूज़ कर लिया गया था और दूसरे कुत्तों से उसका राब्तह भी न था।

यह मुशाहिदात इस अम्र का सबूत हैं कि किसी दरिंदे का थूक बावलापन ही नहीं बल्कि दूसरी कई बीमारियों का बाइस हो सकता है। इसलिए किसी ऐसे जानवर का गोश्त खाना जिस के जिस्म में दरिंदे का थूक दाख़िल हो गया हों, इनसानी ज़िंदगी के लिए ख़तरनाक हो सकता है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस उसूल को अमली शक्ल अता फ़रमाते हुए कुचली वाले हर दरिंदे को खाना भी हराम क़रार दिया है। अहादीस में वज़ाहत के लिए लोमड़ी और भेड़िये का ज़िक्र भी मौजूद है।

हराम चीज़ों की माहियत

इस्लाम ने सिर्फ़ वह चीज़ें हराम की हैं जिनको खाना इनसानी सेहत के लिए नुक़सानदेह हो सकता है। क़ुरआन ने उसूल बता दिए। नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने इनको मज़ीद वाज़ेह फ़रमाया फ़िक़्ह जअफ़रया की किताब "तोहफ़तुल अवाम" में हराम चीज़ों की एक मुफ़ीद फ़हरिस्त दी गई है जिससे दूसरों को मअमूली इख़्तिलाफ़ है वह यह हैं:–

कुत्ता, सुवर, बिल्ली, चूहा, जौंक, घूंस, कछुआ, शेर, चीता, गुर्ग, गैंडा, हाथी, रीछ, गीदड़, चर्ख़, लगड़ बगड़, लोमड़ी, बिच्छू, चील, बाज़, शाहीन, चमगादड़, बिच्छू, मैंडक, घड़याल, मकड़ी, छिपकली, सांप, केकड़ा, मच्छर, मक्खी खाने हराम हैं।

गंदगी खाने वाले तमाम जानवर हराम हैं अगर हलाल जानवर गंदगी खा रहे हों तो उनका खाना भी हराम है। इनको काबिले ख़ुराक बनाने के अमल को "इस्तबरा" कहते हैं, इसकी तर्कीब यह है कि इन जानवरों को कुछ अरसह के लिए ऐसे हालात में रखा जाए कि वह साफ़ चीज़ें खाएं। और अगर साबक़ह अरसे के लिए ऐसे हालात में रखा जाए कि वह साफ़ चीज़ें खाएं। और अगर साबक़ह ख़ुराक से इनको कोई बीमारी लाहिक़ हुई है तो इसकी अलामात ज़ाहिर हो जाएं।। यह एक मअक़ूल और फ़न्नी लिहाज़ से काबिले यक़ीन तरीक़ह है जिसमें ऊंट को चालीस दिन, गाए को बीस दिन, भेड़ बकरी को दस दिन और घरेलू मुर्ग़ को तीन दिन ज़ेरे मुशाहिदह रखा जाए। अगर जानवर यह अरसा तंदरुस्ती की हालत में गुज़ार ले तो इसका खाना दुरुस्त यानी जाइज़ है। वरनह तल्फ़ कर दिया जाए क्यूंकि वह इनसानी इस्तेअमाल के नाक़ाबिल हो गया।

ज़िबह STICKING

जानवरो को क़ाबिले ख़ुराक बनाने के लिए यह ज़रूरी है कि वह पहले हलाक किए जाएं ज़िंदह जानवर के जिस्म से गोश्त का कोई टुकड़ा काटना बे–रहमी और नुक़सान है क्यूंकि टुकड़ा काटने के बअद ज़ख़्म से बहने वाला ख़ून इसे हलाक कर सकता है। ख़ून बंद कर लिया जाए तो बअद में इसे ज़ख़्म का बाक़ाएदह इलाज ज़रूरी है। आम हालात में इस जानवर की सेहत दुरुस्त न रहेगी और अगर वह मरने से बच गया तो आइंदह किसी काम का ही नहीं बल्कि शायद इसका बक़ायह गोश्त भी बेकार हो जाए।

आस्मानी किताबों में इस ज़िम्न में कोई वाज़ेह इरशाद नहीं मिलता। अलब्ता इस्लाम वह पहला ज़ाबतए हयात है जिसने गोश्त को इनसानी इस्तेअमाल में लाने का आसान और क़ाबिले अमल तरीक़ह सिखलाया।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मदीनह मुनव्वराह में जलवा अफ़रोज़ हुए तो इनके एक मुशाहिदे के बारे में हज़रत अबू वाक़िद अल्लसी रज़ि॰ बयान फ़रमाते हैं:

قدم رسول الله صلى الله عليه واله وسلم المدينة وبهاناسٌ يعمدون الى اليات الغنم واسمنة الابل يحبّونها. فقال ماقطع من البهيمة فهو حيّة فهو معيتة. (احمد، ترمذی)

(जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीनह मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो वहां के लोग ज़िंदह बकरी के चूतड़ और ज़िंदह ऊंटों के कोहान काट लिया करते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके मुतअल्लिक़ फ़रमायाः ज़िंदह जानवर के जिस्म से अगर टुकड़ा काट लिया जाए तो वह गोश्त मुर्दार है।")

इसी सिलसिले में एक वाज़ेह हुक्म हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से यूं मनक़ूल है:–

ان النبیّ صلى الله عليه وسلم قال: ماقطع من بهيمة وهى حيّة. فما قطع منها فهو ميتة. (ابن ماجہ)

(नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस किसी ने ज़िंदह जानवर के जिस्म से जो टुकड़ा काटा, वह मुर्दार है।)

जानवरों पर ज़ुल्म को रोकने और ख़ुराक को एक अच्छी और नफ़ीस शक्ल देने में इस्लाम ने उस उसूल को जारी करके अख़लाक़ और तिब्ब में अहम करनामह सर अंजाम दिया है।

जानवरों को क़ाबिले ख़ुराक बनाने के लिए ज़मानए क़दीम से लेकर आज तक मुख़्तलिफ़ सूरतें इस्तेअमाल में रही है। इब्तिदाई दौर के इंसान जानवर को पत्थर मार कर कुचल कर हलाक करते थे। बड़े जानवरों को हलाक करने का सिलसिला तवील भी हो सकता था। और जानवर के लिए तकलीफ़ दह भी। इस अमल में तिब्बी एतिराज़ यह था कि जानवर के मजरूह होने और कुचले जाने के अमल के दौरान सदमे की कैफ़ियत की वजह से उसके जिस्म में हिस्टामीन पैदा होती थी जो ख़ून की नालियों को फैला देती है। ऐसे जानवर के जिस्म से दहशत की वजह से पूरा ख़ून ख़ारिज नहीं होता और इसका गोश्त बदमज़ह और जल्द ख़राब हो जाता है।

ज़मीन पर इन्सानों की आबादकारी के इब्तिदाई अय्याम ही में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बाक़ाएदह हिदायत जारी हुई कि जानवरों को इस तरह अज़िय्यत दे कर हलाक करने की बजाए बाक़ाएदह तौर पर ज़िबह किया जाए।

......"और अब्राहम ने हाथ बढ़ाकर छुरी ली कि अपने बेटे को ज़िबह करे।"

(पैदाइश 10:22)

तौरेत मुक़द्दस में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मन्सूब है कि वह जब ज़िबह करने के लिए निकले तो उन्होंने बाक़ाएदा छुरी ली। इसी बाब में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ख़ून को छुपाने के सिलसिले में बयान हुआ कि उन्होंने एक बकरा ज़िबह किया और इनकी क़बा को इस बकरे के ख़ून में तर किया। अहबार में काहिन को हिदायत की गई कि वह सोख़्तनी क़ुर्बानी के जानवर को ज़िबह करके पाक करे।

कुरआन मजीद ने ज़िबह के लिए "ज़किय्यत" का लफ़्ज़ इस्तेअमाल किया है जिसके मअ़ने पाक करना है। क्यूंकि जानवर के गोश्त को ज़िबह करके आलाइशों से साफ़ करके इंसानी इस्तेअमाल के क़ाबिल बनाना इसे पाक करना है और यह अमल तौरेत मुक़द्दस और कुरआ़न मजीद की तालीमत के मुताबिक़ है।

बुख़ारी रह० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बअ़सत से पहले का एक वाक़िअह बयान किया है जिसमें एक दावत में गोश्त पकाया गया। वहां परकिताबे मुक़द्दस के एक आलिम जनाब ज़ैद बिन उमरू बिन नफ़ील भी मौजूद थे। उन्होंने फ़रमाया कि ऐसा कोई गोश्त नहीं खाता जो अल्लाह के नाम पर ज़िबह न किया गया हो। या वह किसी बुत के स्थान पर ज़िबह किया गया हो। इस वाक़िए से यह भी पता चलता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने ज़िबह की वही सूरत मुक़र्रर की थी जिसे इसलाम ने तर्वीज दिया।

जानवरों को लाठियों, पत्थरों और छुरियों से ज़ख़्मी, करने के बअद एक

तरीक़ा गर्दन मारने का ईजाद हुआ।

यहूदियों में जानवरों का ज़बीहा:–

मुसलमानों के अलावह यहूद एक ऐसी क़ौम है जो अपनी इल्हामी कुतुब पर पूरी तरह ईमान रखती और हलाल हराम की हिदायात पर पूरी तरह अमल करती है। अगर्चेह तौरेत पर ईसाई भी ईमान रखते हैं लेकिन वह हराम चीज़ों को खाते हैं। हालांकि पोलोस रसूल और सेंटपॉल ने हराम जानवरों की मुफ़स्सल फ़हरिस्त मुरत्तिब की थी मगर ईसाइयों में इसको अमली ज़िंदगी में कोई अहमियत नहीं। यहूदी जानवर को इसी तरह ज़िबह करते हैं जिस तरह इस्लाम में किया जाता है। बल्कि यह इस मुआमले में यहां तक मोहतात हैं कि हराम चीज़ों और ज़बीहा के मेअ़यार पर निगरानी रखने के लिए हर इलाक़े में एक सेहयूनी कोन्सिल VAAD HA KASHRUTH मुक़र्रर की जाती है। इनकी ज़बान में कशरूथ या कफ़रूथ के मअ़ने खाने पीने की चीज़ों को शरीअ़ते मूसा अलैहिस्सलाम के मुताबिक़ मुनज़्ज़म करना है। यह कमेटी मुसतनद और तर्बियत याफ़तह यहूदियों को तर्बियत नामे जारी करती है जो सही तरीक़े पर ज़िबह किए हुए जानवर फ़रोख़्त करते हैं। दुकानों पर हलाल गोश्त की फ़रोख़्त पर निगरानी रखने के लिए इंस्पेक्टर मुक़र्रर किए जाते हैं जिनको MASHGIHIM कहते है।

क़ाबिले ख़ुराक जानवरों को तौरेत मुक़द्दस की ताअलीमात की रौशनी में ज़िबह करने के लिए मज़बहों पर यह शराइत आइद होती हैं।

1. जानवर चोपाया हो। उसके खुर फटे हुए हों। वह जुगाली करता हो।
2. जानवर हराम जानवरों की इस फ़हरिस्त में शामिल न हो जो तौरेत के अबवाब गिंती, इसतस्ना, अहबार, पैदाइश और ख़रूज में मज़कूर है।
3. परिंदों की फ़हरिस्त हराम में शामिल न हो।
4. ज़िबह करने वाला आलिमे दीन हो। और उसने ज़िबह करने की बाक़ाएदा तिर्बियत हासिल की हो। ऐसे आलिम को SOHET कहते हैं।
5. ज़िबह करने वाली छुरी की धार उस्तरे की मानिंद तेज़ हो। इस पर दंदाने न हों।
6. जानवर को लिटा कर सर से नीचे गर्दन पर छुरी एक मर्तबा एक ही सिम्त चलाई जाए।
   इस अमल में न ही ज़्यादह ज़ोर लगाया जाए और न छुरी को बार–बार चलाया जाए। अगर जानवर की रगें एक ही हरकत से न कट सकें तो गोश्त हराम हो जाएगा।
7. ज़िबह करने वाला अपने अमल के दौरान ख़ुसूसी दुआ के कलमात इबरानी ज़बान में अदा करे।
8. ज़िबह करने के बाद जानवर को नमक लगाया जाए ताकि जिस्म से सारा ख़ून बाहर निकल आए।
9. जानवर का ज़िबह के बाद मुआएनह करके देखा जाए कि वह सहीह तरीक़े से ज़िबह किया गया हो और उसकी टांग के साथ एक सर्टिफ़िकेट लगाया जाए जिस पर इब्रानी ज़बान में लफ़्ज़ KOSCHER LAPESACH (खाने के

लिए पास कर दिया गया) के अलावह ड्राइंग की शक्ल में एक मार्कह और ज़िबह करने वाले का नाम तारीख़, जगह मरकूम होती है।

10. इस पाक गोश्त की पिछली टांगों से ISCHIATIC NERVE खींच कर निकाल दिया जाए कि वह हराम है।

11. ऐसे पाक गोश्त को इन बर्तनों में पकाया जाए जिनमें कभी कोई हराम चीज़ पकी हो या गोश्त पकाने में दूध शामिल न किया जाए।

लंदन के इलाक़ह ईस्ट एंड में अब्दुल्लाह नामी यहूदी क़स्साब का बड़ा वसीअ़ कारोबार था। यहूदियों के अल.वह मुसलमान भी इसी से गोश्त लेते थे। एक मर्तबह उसकी दुकान से मुर्ग़ी ख़रीदी गई तो उसकी टांग के साथ ज़बीहा की अच्छाई और ज़िबह करने वाले की तसदीक़ का फ़ीता भी मुन्सिलिक था।

यहूदियों के ज़बीहा पर योरप के नाम निहाद इंसान दोस्त ईसाइयों को अकसर एतिराज़ रहा है। इंस्दादे बेरहमी की अंजुमनों ने इस ज़बीहे को ज़ुल्म क़रार दे कर कई मर्तबह इस पर पाबंदियां लगवाईं। इंग्लिस्तान में भी एक मर्तबा इसी क़िस्म की तहरीक चली और अख़बारात में कई मज़मून शाए हुए। इस पर बरतानियह में इल्मे तिब के मशहूर उस्ताद और मलिकाए बरतानिया के सरकारी मुआलिज लार्ड हारवर्ड ने लिखा:—

> "मैं ने ज़िबह करने का सेहयूनी तरीक़ह देखा है। इसमें जानवर की मौत और दर्दोअलम के बग़ैर इतने सुकून से होती है कि मैं ख़ुदा से दुआ करता हूं कि वह ऐसी आसान मौत मुझे भी दे।"

इसकी वजह यह है कि सुन्नते इब्राहीमी के मुताबिक़ ज़िबह करने में ख़ून की अहम नालियां फ़ौरन कट जाती हैं और जानवर फ़ौरन बेहोश हो जाता है। मअमूली तड़पना अगर हो भी तो वह होश की हालत में नहीं होता। इसलिए जानवर को क़ाबिले ख़ुराक बनाने का सहयूनी तरीक़ह सबसे आसान और अज़िय्यत के बग़ैर है।

सैहयुनी ज़बीहा और इस्लामः

यहूदियों का ज़िबह करने का तरीक़ह सुन्नते इब्राहीमी के ऐन मुताबिक़ है। वह सहीह जगह से ज़िबह करते और इस अमल के दौरान अल्लाह का नाम लेते हैं। क़ुरआन मजीद ने ज़िबह करने की जो शराइत मुक़र्रर की हैं उनके मुताबिक़:

> فكلوا مما ذكر اسم الله عليه ان كنتم بآياته مؤمنن. (الانعام:٥)
>
> (तुम इन चीज़ों को बेखटके खाओ जिन पर अल्लाह का नाम लिया गया हो और यह उस सूरत में है कि तुम उसकी निशानियों पर ईमान रखने वाले हो।)

जहां तक ज़िबह करने और ख़ुदा का नाम लेने का तअल्लुक़ है वह सहीह इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ है। चूंकि वह ख़ुदा का नाम इब्रानी में लेते हैं इसलिए बअ़ज़ फ़ुक़हा को इस पर एतिराज़ रहा है। मसअले की तहक़ीक़ के लिए हमने एक मर्तबह उस ज़माने के जय्यद उलमा से दरयाफ़्त किया। हज़रत मौलाना सय्यद अबुलआला मौदूदी रह. ने अपनी "तफ़हीमुल कुरआन"

में यहूदी और ईसाई के ज़बीहे को जाइज़ क़रार दिया है। मरहूम ने मुलाक़ात पर भी इसको दुरुस्त क़रार दिया। हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह अनवर रह. की ग्रामी राए में न सिर्फ़ यह कि यहूदी का बल्कि उनकी दानिस्त में इमाम अबू हनीफ़ा रह. की तअलीमात के मुताबिक़ ईसाई और साइबी का ज़बीहा जाइज़ था। शआ उलमा में हज़रत मौलाना आक़ाए सय्यद बाहरवी अलअख़बारी रह. की राए में क़ोले इमाम के मुताबिक़ ग़ैर मुस्लिम का ज़बीहा मतलक़न हराम था। शिआ आलिम हज़रत अल्लामा अब्बास हैदर आबिदी के नज़दीक अगर अल्लाह का नाम लिया जाए और इब्राहीमी तरीक़ह से ज़िबह किया जाए और ज़िबह करने वाला बुत परस्त या मुश्रिक न हो तो उसे खाना जाइज़ है। दूसरे शिआ उलमा इसे हराम क़रार देते हैं।

हज़रत मौलाना अताउल्लाह हनीफ़ रह. से जब पूछा गया तो उन्होंने जवाब में इमाम इब्ने तैमियह रह. की किताब "फ़तावा मिस्रियह" निकाल ली। इब्ने तैमिया रह. इस्तदलाल देते हैं कि कुरआन मजीद ने एहले किताब के घरों का खाना सूरतुल माएदह में हलाल क़रार दिया है और इसी तअमील में फ़तह ख़ैबर वाले दिन नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने एक यहूदी औरत से इसके घर की भुनी हुई बकरी की रान चूंकि क़बूल फ़रमाई और मैअ सहाबह किराम रज़ि. इसे तनावुल फ़रमाया और यह वाक़िआ ग़ैर मुस्लिमों के ज़बीहे का जुवाज़ है। अगर्चेह इस वाक़िए में यहूदिया ने गोश्त में ज़हर मिला दिया था और यह ज़हर एक सहाबी रज़ि. की शहादत का बाइस हुआ। बेशक यहूदियों के घर के खाने से नाख़ुश्गवार हादसात का इमकान मौजूद है लेकिन सरवरे काएनात सल्ल. ने इस बाब में मज़ीद कोई हुक्म सादिर न फ़रमाया।

इस मसअले की मज़ीद तहक़ीक़ इन दिनों फिर से की गई। ताकि अगर कोई पेशरफ़्त किसी जगह होती हो तो मअलूम हो जाएं हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हुसैन नईमी इरशाद फ़रमाते हैं कि अहले किताब का ज़बीहा हलाल है। बशर्तेकि वह मुश्रिक न हों। और जानवर को हमारे तरीक़े के मुताबिक़ गले से ज़िबह करें। और ऐसा करते वक़्त ख़ुदा का नाम लें ख़ुवाह किसी ज़बान में हो। अल्लामह सय्यद रूहुल्लाह अलख़ुमैनी के फ़तवे "तौज़ीहुल मसाइल" हज़रत मौलाना सय्यद सफ़दर हुसैन नजफ़ी ने मुरत्तब किए हैं। उनकी राए में ज़िबह करने वाले के लिए मुसलमान होना ज़रूरी है। गर्दन की चार बड़ी रगें काटी जाएं और अल्लाह का नाम लिया जाए।

इस्लाम में ज़बीहा का तसव्वुर और अमल:

ज़िबह करने का बुनियादी मक़सद यह है कि हलाल जानवर का गोश्त ऐसी सूरत में हासलि किया जाए कि वह ख़राब न हो। उसकी रंगत और ज़ाएक़ा ख़ुश्गवार रहें और वह गोश्त कुछ अरसह क़ाबिले ख़ुराक रहे। जानवर को अगर अज़िय्यत दे कर ज़िबह किया जाए या उसके जिस्म से पूरा ख़ून न निकले तो हिस्टामीन की पैदाइश और जिस्म में ख़ून का बक़ायह रह जाने के बअद ऐसा गोश्त इंसानी इस्तेअमाल के लिए मुनासिब न रहेगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. फ़रमाते हैं:—

ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ والہ وسلم امر ان تحذالشفار وان تواری عنالبہائم. وقال. اذاذبح احدکم فلیجھز. (احمد، ابن ماجہ)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया, छुरियां ख़ूब तेज़ की जाएं और इनको जानवरों से छुपाकर ले जाएं और जब ज़िबह करो, तो जल्द कर डालो।)

इसी सिलसिले में हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि. नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद बयान फ़रमाते हैं:–

ان اللہ کتب الاحسان علیٰ کلّ شیٔ. فاذا قتلتم فاحسنو القتلہ فاذا ذبحتم فاحسنو الذبح. ولیجد شفرتہ ولیرحذبیحتہ (احمد، مسلم، النسائی، ابن ماجہ)

(अल्लाह तआला ने चीज़ पर एहसान करने की हिदायत फ़रमाई, अगर तुम किसी को क़त्ल भी करो तो उसे भी जल्द अज़ जल्द अंजाम दो और अगर ज़िबह करने लगो तो भी चाबुक दस्ती से करो। छुरी को अच्छी तरह तेज़ करो और ज़बीहा को आराम दो।)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं।

بعث رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بدیل بن ورقاالخزاعی علی جمل اورق. یصیح فی فجاج منیٰ: الاان الزکاۃ فی الحلق و اللبّۃ. ولاتعجلو الانفس ان تزحق. وایام منیٰ ایام اکلٍ وشربٍ ویعالٍ. (الدارقطنی)

(रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बुदैल बिन वरक़ा रज़ि. अलख़ाज़ाई को एक ख़ाकिस्तरी ऊंट पर भेजा कि वह मिना की गलियों में ऐलान करदे कि ज़कात (जानवर को पाक करना या ज़िबह करना) हलक़ और मनहर पर है और जानवर की खाल उतारने में जल्द बाज़ी न करो। मिना का क़याम, खाने पीने और खेल कूद के लिए है।)

यहां भी ज़िबह को जानवर का पाक करना क़रार दिया और ज़िबह करने वाले को हिदायत फ़रमाई गई कि जानवर जब तक ठंडा न हो जाए उसकी खाल न उतारी जाए ताकि उसकी जान आराम से निकले। ज़िबह करने की दूसरी सूरतों के बारे में इरशाद गिरामी इस तरह हैं।

عن محمد بن صفوانؓ انہٗ مرّعلی النبی صلی اللہ علیہ وسلم بارنبین معلّقھما. فقال یا رسول اللہ انّی اصبت ھٰذین الارنبین فلم اجد حدیدۃ ازکیھمابھا. فزکّیھمابنمروۃٍ افاکلٍ قال کل. (ابن ماجہ)

(मुहम्मद बिन सफ़वान बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से गुज़रा मैं ने दो ख़रगोश लटकाए हुए थे। पूछा कि या रसूलल्लाह सल्ल. मैं ने इन दोनों को पाया और लोहे की कोई चीज़ न मिली कि इनको ज़िबह करता। फिर मैंने एक सफ़ेद तेज़ पत्थर से इनको ज़िबह किया। क्या मैं इनको खाऊं? आप सल्ल.

ने फ़रमायाः खा लो।)

कअ़ब बिन मालिक रज़ि॰ बयान करते हैं:

انهٗ كان له غنم ترعىٰ بسلع فابصوت جارية لنا بشاةٍمن غنمنا مرتاً. فكسرت حجرًا. فذبحتهابه. فسائل النبى صلى الله عليه وسلم فامره باكلها (بخاری)

(मेरा रेवड़ सलअ़ा पहाड़ पर चरता था। मेरी लौंडी ने देखा कि एक बकरी मर रही है। उसने एक पत्थर तोड़ा और उससे ज़िबह कर दिया। इस बारे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया। आपने इसे खाने का हुक्म दिया।)

अदी बिन हातिम रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि मैंने पूछाः

يا رسول الله اريت اهدنا صيداً اوليس معهٗ سكّين. يذبح بالمروة وشقة العصا. فقال امرار الدم بم شئت واذكر اسم الله. (ابوداؤد۔النسائی)

(ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल॰! फ़रमाइए अगर हम कोई शिकार पाएं और हमारे पास छुरी न हो तो क्या हम पत्थर या लकड़ी के टुकड़े से ज़िबह कर लें? आप ने फ़रमाया कि जिसके साथ तेरा जी चाहे ख़ून बहाले और अल्लाह का नाम ले ले।)

ज़बीहा की साइंसी हैसियतः

इस्लाम ने जानवरों को क़ाबिले ख़ुराक बनाने की बुनियादी शर्त यह क़रार दी है कि उसके जिस्म से सारा ख़ून बाहर निकल जाए आम हालात में इस ग़र्ज़ के लिए गरदन के सामने की तरफ़ ख़ून की चार नालियां JUGUR VEINS CAROTID ARTERIES के साथ शह रग भी काट दी जाए। इस अमल की वजह से जानवर फ़ौरन बेहोश हो जाता है। दिल से सरको जाने वाली दोनों तरफ़ की बड़ी शर्यानें और वरीदें कट जाने से ख़ून तेज़ी से निकलने लगता है। अब वह तड़पने लगता है। क्यूंकि दिमाग़ का जिस्म के अज़लात से तअल्लुक़ हराम मग़ज़ की मअरफ़त क़ायम रहता है। जानवर के बाज़ू और टांगें ज़ोर से हिलते हैं तो इनके आख़री किनारों में रुका हुआ ख़ून भी वहां से निकल जाता है।

बर्रेसग़ीर में सिर्फ़ सिख गोश्त खाते थे। और वह जानवर को खड़ा करके उसकी गर्दन पर तलवार का वार करके सर उतार देते थे। इसे वह अपनी ज़बान में "झटका" कहते थे और ऐसा गोश्त महा प्रशाद कहलाता था। झटका करने में जानवर की रीढ़ की हड्डी कट जाने के बाइस दिमाग़ का जिस्म से तअल्लुक़ मुक़तअ़ हो जाता था और जानवर के अज़लात बेहरकत हो जाते थे। ज़ख़्म से इतना ही ख़ून निकलता है जितना कि आस–पास मौजूद हो ऐसे जानवर के जिस्म में ख़ून की काफ़ी मिक़दार बाक़ी रह जाती है। गोश्त बद–रंग, और बदज़ाएक़ह होता है। इसे पकाते वक़्त एक अजीब क़िस्म की बदबूदार सड़ांद आती है।

योरपी मुमालिक में मुद्दतों जानवरों का झटका किया जाता था। फिर उन्होंने इसे जदीद शक्ल देते हुए GUILLOTINE बना ली। जानवर को कटहरे पर खड़ा

किया जाता है और ऊपर से एक भारी छुरा गिर कर सर को तन से जुदा कर देता है। तजुर्बात से मालूम हुआ कि मशीन से इस तरह का काटा हुआ गोश्त जल्द ख़राब हो जाता है। चूंकि ख़ून इसके अंदर रह जाता है इसलिए पकाते वक़्त बदबू देता है।

जानवरों को जिबह करने का जदीद मरकज BBOTAIRE कहलाता है। जानवर को अंदर ले जा कर उसके सर में एक वज़नी हथोड़ा मारा जाता है या दिमाग़ पर बिल्ली का करंट लगाया जाता है। इस जकड़े हुए मजरूह और बे–होश जानवर की गर्दन पर आरी की मानिंद एक तेज़ छुरी मशीन से फिर कर इस्लामीं तरीक़े की भौंडी नक़ल में निस्फ़ गर्दन काट देती है। जदीद ज़िबह का उसूल यह है कि जानवर के जिस्म से ख़ून निकल जाए इस अमल में मशीनी मदद मयस्सर होने के बावजूद चार–पांच मिनट लग जाते हैं। लाहौर के बूचड़ ख़ाने में हाथ से इस्लामी तरीक़ह से ज़िबह करने में भेड़ बकरी पर एक मिनट लगता है और गाए भैंस पर तीन–चार मिन्ट सर्फ़ होते हैं।

जदीद तरीक़े से ज़िबह करने में जानवर को बेहोश करने के लिए जो stunning दिमाग़ी चोट या बिजली के झटके से लगाई जाती है। वह इसे जिस्मानी सदमह या SURGICAL SHOCK की कैफ़ियत में मुब्तिला करके हिस्टामीन की पैदाइश का बाइस बनता है और इस तरह यह गोश्त कुरआन की ममनूआ फ़हरिस्त के लाठी से मारे हुए और टक्कर खाए हुए जानवरों में आ जाता है। इन तमाम जानवरों का गोश्त निहायत बदमज़ह होता है। यौरप में हिसे ज़ाएक़ा रखने वाले कई दोस्तों को कोशिश के साथ एक रोज़ ताज़ह ज़िबह किया हुआ गोश्त और दूसरे रोज़ मशीन का मज़बूहा किखलाया गया। इन सब ने इत्तिफ़ाक़ किया कि ज़िबह किये हुए गोश्त में जो लज़्ज़त है वह दूसरे में नहीं।

ज़िबह करने का इसलामी तरीक़ह जानवरों के लिए आरामदह और खाने वालों के लिए महफ़ूज़ तरीन है।

....